WHITE BOOK

COACH UP IAS

YOUR SELECTION Is OUR BUSINESS

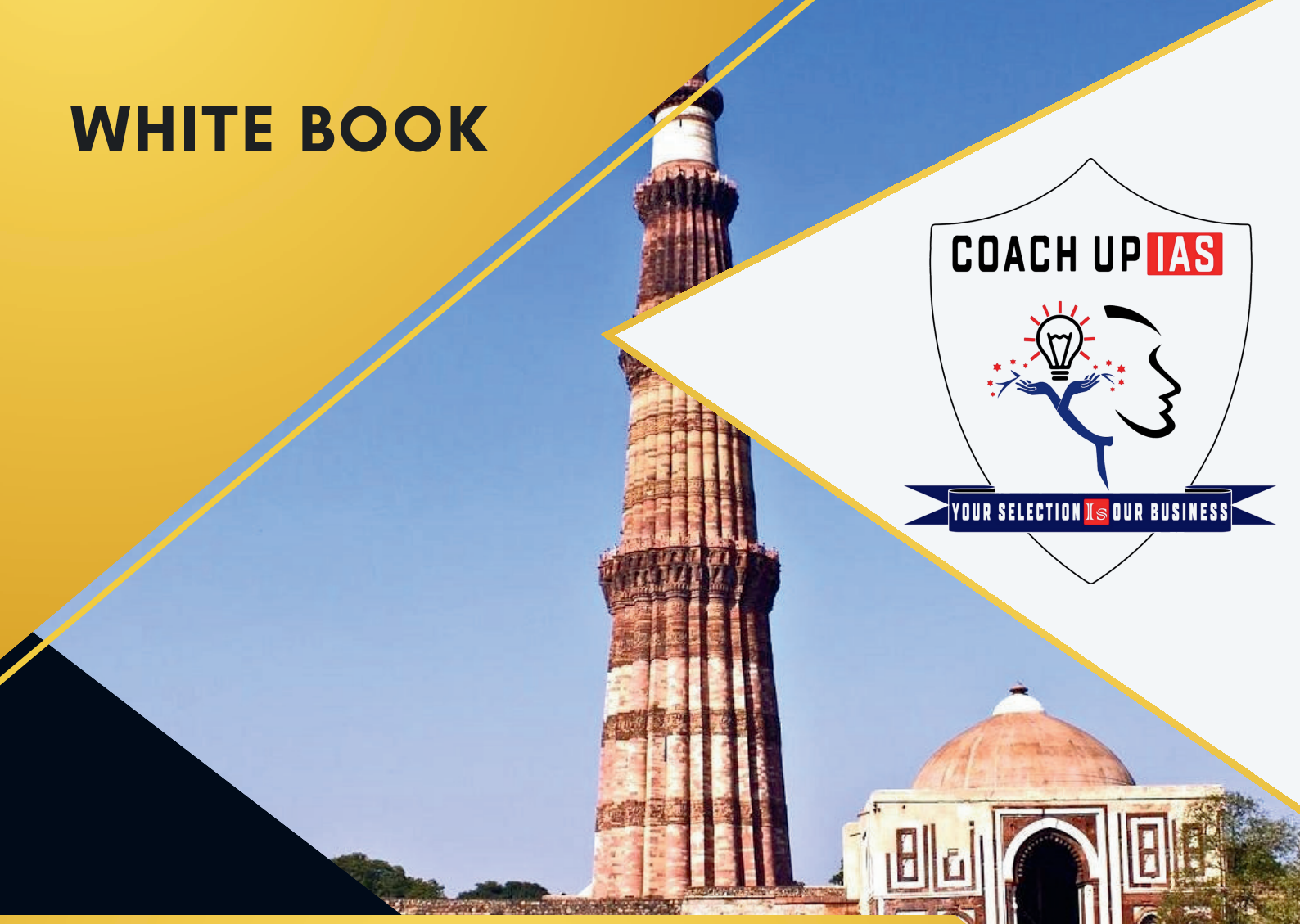

मध्यकालीन इतिहास

सिविल सेवा परीक्षा के लिए

IAS COACH ASHUTOSH SRIVASTAVA

IAS COACH MANISH SHUKLA

8009803231 / 9236569979

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

मध्यकालीन इतिहास

प्रारंभिक मध्यकालीन भारत

सामंतवाद

- **सामंतवाद** मध्ययुगीन यूरोप में कानूनी और सैन्य प्रणालियों का एक संयोजन था जो **9वीं और 15वीं शताब्दी ईस्वी** के बीच बड़े पैमाने पर फला-फूला। यह एक ऐसी प्रणाली थी जिसमें **राजा कुलीनों को भूमि प्रदान करता था, जो बाद में सैन्य और अन्य सेवाओं की मांग के बदले में** उसे अपने जागीरदारों (श्रद्धांजलि और निष्ठा की शर्तों पर भूमि के धारक) को दे देते थे।
- भारतीय उपमहाद्वीप में प्रारंभिक मध्यकाल में भी ऐसी ही एक व्यवस्था विकसित हुई, जहाँ कमज़ोर राजा मुद्रा में भुगतान करने के बजाय भूमि अनुदान के माध्यम से क्षतिपूर्ति करते थे। लेकिन, भारतीय सामंतवाद की प्रकृति यूरोपीय सामंतवाद की संरचना से बिल्कुल अलग थी और इतिहासकार इसे एक बिल्कुल अलग व्यवस्था मानते हैं।

भारत में सामंतवाद

- **भारत में सामंतवाद की शुरुआत प्रारंभिक मध्यकाल के आगमन के साथ हुई**, जब गुप्त काल के अंत में शहरी केंद्रों और व्यावसायिक गतिविधियों में गिरावट के कारण **गाँव आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो गए** ।
- पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान, राजाओं ने **ब्राह्मणों (जिन्हें ब्रह्मदेय कहा जाता था), विद्वानों और अन्य धार्मिक संस्थाओं को निःशुल्क भूमि दान करना** शुरू कर दिया , जिससे भूमि का स्वामित्व और राजस्व एकत्र करने का अधिकार प्राप्त हुआ।
- ब्राह्मणों को भूमि दान देने की प्रथा एक प्रथा थी, जिसे **धर्मशास्त्रों, महाकाव्यों और पुराणों** में दिए गए आदेशों द्वारा पवित्र माना गया था ।
- **महाभारत के अनुशासन पर्व में** भूमि दान (भूमिदान प्रमाण) की प्रशंसा में एक पूरा अध्याय समर्पित है। इससे उन्हें कृषकों से सीधा संबंध और नियंत्रण स्थापित करने में मदद मिली।
- **सामंतवाद के विकास के साथ, भूमि पर सामुदायिक अधिकार कम होते गए** । चरागाह, दलदली भूमि और जंगल राजा द्वारा दान में दिए गए। इस प्रकार, एक **मध्यम श्रेणी के भूस्वामी वर्ग का उदय हुआ और किसानों ने अपने भूमि अधिकार खो दिए। उन्हें भारी कर** देने और **बेगार** करने के लिए मजबूर किया गया । उनकी स्थिति दासों जैसी हो गई। भूमि के आगे हस्तांतरण की संभावना थी और वास्तव में ऐसा हुआ भी।
- **राजस्व अधिकारों के हस्तांतरण के साथ-साथ, इस व्यवस्था के परिणामस्वरूप प्रशासनिक अधिकार भी विशेष रूप से ब्राह्मणों को हस्तांतरित हो गए।** इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मण सामंतों की संख्या में वृद्धि हुई। इसके अलावा, राजस्व और प्रशासनिक शक्तियों के हस्तांतरण के परिणामस्वरूप **राज्य का विघटन हुआ और राजा की शक्ति कमजोर हुई।**
- भारतीय सामंतवाद की विशेषताओं को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:
- **राजनीतिक विकेंद्रीकरण:** भूमि अनुदान के रूप में प्राप्त विकेंद्रीकरण धीरे-धीरे एक विशिष्ट शाखाबद्ध राजनीतिक संगठन में बदल गया, जो सामंत, महासामंत आदि जैसे अर्ध-स्वायत्त शासकों से बना था।
- **नए वर्ग का उदय:** सामंतवाद के परिणामस्वरूप भूस्वामी बिचौलियों का उदय हुआ जो एक प्रमुख सामाजिक समूह बन गए।
- प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में यह अनुपस्थित था और भूमि अनुदान की प्रथा से जुड़ा था, जिसकी शुरुआत सातवाहनों से हुई थी।
- **कृषि संरचना में परिवर्तन:** छठी शताब्दी ईस्वी से सामंतवाद के विकास के साथ, किसान लाभार्थियों को दी गई भूमि पर ही अड़े रहे। इससे जनसंख्या में गतिहीनता आई और परिणामस्वरूप शेष विश्व से अलगाव हो गया। इसका गहरा प्रभाव स्थानीय रीति-रिवाजों, भाषाओं और अनुष्ठानों के विकास में पड़ा।

भूमि अनुदान में परिवर्तन

- **मौर्योत्तर** काल से , **भूमि अनुदानों में राजस्व के सभी स्रोतों का हस्तांतरण और पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों का त्याग शामिल था।**
- दूसरी शताब्दी ईस्वी के अनुदानों में राजा के नियंत्रण को केवल नमक पर हस्तांतरित करने का उल्लेख है, जिसका अर्थ है कि उसने राजस्व के कुछ अन्य स्रोतों को भी अपने पास रखा। लेकिन कुछ अन्य अनुदानों में,

यह दर्ज किया गया है कि दाता (राजा) ने राजस्व के लगभग सभी स्रोतों, जिनमें चारागाह, खदानें, छिपे हुए खजाने और जमाएँ शामिल हैं, **पर अपना नियंत्रण छोड़ दिया।**

- तब, दानकर्ता न केवल अपना राजस्व त्याग देता था, बल्कि दान किए गए **गाँवों के निवासियों पर शासन करने का अधिकार भी त्याग देता था। गुप्त काल में यह प्रथा और भी प्रचलित** हो गई ।
- गुप्त काल में ब्राह्मणों को दिए गए स्पष्ट रूप से बसे हुए गाँवों के अनुदानों के कई उदाहरण मिलते हैं। ऐसे अनुदानों में, कृषकों और कारीगरों सहित निवासियों से, उनके संबंधित शासकों द्वारा स्पष्ट रूप से न केवल दान पाने वालों को प्रथागत कर देने, बल्कि उनके आदेशों का पालन करने का भी अनुरोध किया जाता था। यह सब राज्य की प्रशासनिक शक्ति के समर्पण का स्पष्ट प्रमाण है।
- **राजा की संप्रभुता** का एक महत्वपूर्ण पहलू यह था कि वह **अपराधियों को दण्ड देने का अधिकार अपने पास रखता था**। गुप्तोत्तर काल में **, राजा ने न केवल यह अधिकार, बल्कि परिवार, संपत्ति, व्यक्ति आदि के विरुद्ध सभी अपराधों के लिए दण्ड देने का अधिकार भी ब्राह्मणों को सौंप दिया।**

भारत और विश्व संबंध

अरबों

- अरब **दुनिया के प्रमुख जनसंख्या समूहों** में से एक हैं । उनका मुख्य निवास **पश्चिमी एशिया, उत्तरी अफ्रीका, अफ्रीका के हॉर्न और पश्चिमी हिंद महासागर के द्वीपों के** अरब राज्यों में है । इस्लाम-पूर्व काल से ही अरबों के भारतीयों के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यावसायिक संबंध रहे हैं। ये संबंध अरब सागर के पार व्यापार और वाणिज्य के माध्यम से स्थापित हुए थे।
- मसाले **और अन्य विदेशी उष्णकटिबंधीय उत्पाद** भारत और अरब जगत के बीच व्यापार और वाणिज्य का मुख्य आधार थे। अरब जगत से आयातित उत्पादों में **कॉफ़ी, घोड़े और अन्य भूमध्यसागरीय उत्पाद शामिल थे।** इसलिए, व्यापार को सुरक्षित करने के लिए, अरब व्यापारियों ने भारत के पश्चिमी तट पर अपनी स्थायी बस्तियाँ बनाईं। इन बस्तियों ने भारत-अरब सांस्कृतिक संबंधों के आदान-प्रदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत के साथ अरब संपर्क

- जैसा कि ऊपर बताया गया है, प्रारंभिक काल में **अरब लोग भारतीय वस्तुओं को यूरोपीय देशों तक पहुँचाने के माध्यम के रूप में कार्य करते थे।** लेकिन अरब जगत में इस्लाम के उदय के साथ, उन्होंने अपने आस-पड़ोस में अपना प्रभाव फैलाना शुरू कर दिया। **सीरिया, फ़िलिस्तीन, मिस्र और फ़ारस पर विजय प्राप्त करने के बाद, उनकी नज़र भारत पर पड़ी, जो उस समय समृद्ध और समृद्ध था।**
- आठवीं शताब्दी में भारत पर अरबों के आक्रमण के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी अनुकूल थीं। उत्तर भारत में हर्षवर्धन के पतन के बाद, राजनीतिक वातावरण अत्यधिक अस्थिर था। देश के दक्षिणी भाग में व्यापारिक संबंधों के माध्यम से इस्लाम पहले ही भारत में अपने पैर जमा चुका था।

सिंध की स्थिति

- अरब आक्रमणों से बहुत पहले , **सिंध का क्षेत्र हिंदू और बौद्ध दोनों ही धर्मों के बीच सत्ता और प्रभाव के संघर्ष में उलझा हुआ था**। 622 ईस्वी तक, सिंध बौद्ध **राय वंश** के अधीन था । राय वंश के एक ब्राह्मण मंत्री ने गद्दी हथिया ली और खुद को राजा घोषित कर दिया। उसने अपनी राजधानी **ब्राह्मणाबाद से शासन किया।** उसके शासनकाल में नागरिक अशांति रही, जो उसके पुत्र दाहिर के शासनकाल में और भी बदतर हो गई। 712 ईस्वी में अरब आक्रमण का सामना **दाहिर को ही करना पड़ा।**

सिंध पर अरब विजय

- आठवीं शताब्दी में, **अरब जगत पर सीरिया की इस्लामी खिलाफत का शासन था। खिलाफत के एक सेनापति मुहम्मद बिन कासिम को खलीफा अल-वालिद प्रथम ने भारत पर विजय प्राप्त करने के लिए भेजा था।** अरब में कट्टर मुस्लिम शासकों का मुख्य उद्देश्य इस्लाम को मजबूत करना और इस्लाम स्वीकार न करने वालों को दंडित करना था।
- उसने देबल, एक प्राचीन बंदरगाह शहर (आधुनिक कराची के पास) पर हमला किया और बंदरगाह शहर के प्रभारी **राजा दाहिर के भतीजे को पराजित किया । शहर की संपत्ति लूट ली गई और इस्लाम स्वीकार करने से इनकार करने वाले सभी लोगों को बेरहमी से मार डाला गया। देबल के बाद, कासिम ने सिंधु नदी पार की और** राजा दाहिर से युद्ध किया। दाहिर ने सराहनीय लड़ाई लड़ी, लेकिन **अरोर के युद्ध (712)** में पराजित

होकर मारा गया । ब्राह्मणाबाद से भारी संपत्ति लूटी गई और इससे सिंध के हिंदू साम्राज्य का अंत हो गया।

विजय का महत्व

- सिंध की विजय के बाद, **सिंध और मुल्तान क्षेत्र में इस्लाम की स्थापना हुई** । हालाँकि, शक्तिशाली राजपूत शासकों के कारण अरबों का प्रभाव पूर्व और उत्तर तक नहीं पहुँच सका, फिर भी यह भारत में इस्लामी आक्रमण का पहला उदाहरण था।
- इसने **दो अलग-अलग संस्कृतियों के बीच परस्पर क्रिया और इंडो-इस्लामिक संस्कृति के विकास को** भी जन्म दिया । इस प्रकार, सिंध सूफीवाद का जन्मस्थान था, जो मध्य युग में भक्ति आंदोलन के उद्भव से संबंधित था।
- सिंध पर अरबों की विजय का महत्व इस्लाम द्वारा हिंदू धर्म के प्रति दिखाई गई सहिष्णुता में भी निहित है। अरब शासकों ने हिंदू धार्मिक प्रथाओं को अछूता छोड़ दिया। इस्लामी आक्रमणकारियों द्वारा हिंदुओं पर अत्याचार **महमूद गजनवी के आक्रमण के बहुत बाद में शुरू हुआ।**
- सिंध प्रांत पहले एक रेगिस्तानी इलाका था जहाँ व्यापार और वाणिज्य बहुत कम था। **अरबों के कब्जे के कारण ऊँट और घोड़े यहाँ आने लगे, जिनका इस्तेमाल व्यापार के लिए किया जाने लगा** । अरबों के निवेश से इस क्षेत्र में विकास और समृद्धि आई।
- दशमलव प्रणाली **, जो आधुनिक गणित का आधार है और जो 5वीं शताब्दी में भारत में विकसित हुई, इस अवधि के दौरान अरब जगत तक पहुंची** और बाद में अरबी अंकों के रूप में जानी गई।
- खगोल विज्ञान और गणित से संबंधित कई भारतीय कृतियों का अरबी में भी अनुवाद किया गया। खगोल विज्ञान पर प्रसिद्ध कृति, सूर्य-सिद्धांत, इनमें से एक थी। चरक और सुश्रुत की औषधियों से संबंधित कृतियों का भी अनुवाद किया गया। कलिला वा-दिम्ना या पंचतंत्र जैसी कई संस्कृत साहित्यिक कृतियों का अरबी में अनुवाद किया गया और पश्चिम में ईसप की दंतकथाओं का आधार बनीं।

अफ्रीका

- भारतीय उपमहाद्वीप और अफ्रीका हिंद महासागर द्वारा अलग किए गए हैं। अफ्रीका के पूर्वी तट और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच भौगोलिक निकटता ने प्राचीन काल से ही इन संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। **भारतीय व्यापारी अफ्रीका से सोने और मुलायम नक्काशीदार हाथीदांत के बदले कपास, काँच के मोतियों और अन्य वस्तुओं का व्यापार करते थे।** प्राचीन अफ्रीकी राज्यों में भारतीय कला और वास्तुकला का महत्वपूर्ण प्रभाव दोनों सभ्यताओं के बीच व्यापार विकास के स्तर को दर्शाता है। धीरे-धीरे, हिंद महासागर क्षेत्र में व्यापार मार्ग स्थापित हुए और अफ्रीकी बंदरगाह भारतीय और यूरोपीय वस्तुओं के आदान-प्रदान के प्रमुख केंद्र बन गए।

पूर्व एशिया

भारत और चीन

- प्रारंभिक मध्यकाल में भारत से चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार दोनों देशों के बीच संपर्क का केंद्र बिंदु था। तांत्रिक **बौद्ध** धर्म, जिसे वज्रयान शाखा के रूप में भी जाना जाता है, तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में अभी भी प्रचलित है और चीन में सबसे लोकप्रिय था। बौद्ध धर्म के साथ-साथ, भारतीय वास्तुकला, जैसे पैगोडा और युद्ध कला भी चीनी संस्कृति में फैल गई।
- पहली शताब्दी से ही, कई भारतीय और चीनी विद्वानों और भिक्षुओं ने दोनों देशों के बीच यात्राएँ कीं। चीन के दो सबसे प्रसिद्ध यात्री थे - **फ़ाहियान (फ़ा हियान), एक बौद्ध भिक्षु जिन्होंने पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में गुप्त वंश के दौरान यात्रा की थी, और ह्वेनसांग, जिन्होंने हर्षवर्धन** के शासनकाल के दौरान लगभग 17 वर्ष भारत में बिताए थे ।
- चोलों के दक्षिणी साम्राज्य ने भी चीनी शासकों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे। यह **चोलों की मातृभूमि** (अर्थात वर्तमान तमिलनाडु के तंजावुर, तिरुवरूर और पुदुक्कोट्टई ज़िले) में बड़ी संख्या में प्राचीन चीनी सिक्कों की खोज से स्पष्ट होता है। राजराजा चोल और उनके पुत्र राजेंद्र चोल के शासनकाल में, चोलों ने **चीन के सोंग राजवंश के साथ मज़बूत व्यापारिक संबंध स्थापित किए।** चोल नौसेना ने इंडोनेशिया और मलेशिया के श्री विजय साम्राज्य पर विजय प्राप्त की और इस प्रकार, चीन के लिए एक समुद्री व्यापार मार्ग सुरक्षित कर लिया।

भारत और जापान

- चीन की तरह, **बौद्ध धर्म भारत और जापान के बीच प्राचीन संबंधों में एक मज़बूत कारक रहा है** । यह आज भी जापान के प्रमुख धर्मों में से एक है। **बौद्ध धर्म के साथ-साथ, भारतीय संस्कृति और धर्म के कई पहलू भी जापान में फैले** । जापानी धर्मशास्त्र में भारतीय देवी-देवताओं को विभिन्न रूपों में शामिल किया गया है।

- भारत और जापान के बीच बौद्ध धर्म के जुड़ाव के कारण भिक्षु और विद्वान अक्सर दोनों देशों के बीच यात्राएँ करते थे। **भारत में नालंदा विश्वविद्यालय के प्राचीन अभिलेखों में जापान से आए विद्वानों और विद्यार्थियों का वर्णन मिलता है।** भारतीय उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध जापानी यात्री **तेनजीकू तोकुबेई थे।**

भारत और कोरिया

- भारत और कोरिया के बीच ऐतिहासिक संबंध रहे हैं। अन्य पूर्वी एशियाई देशों की तरह, **बौद्ध धर्म कोरिया और भारत के बीच संबंधों का आधार रहा है** । ऐसा माना जाता है कि कोरिया में बौद्ध धर्म का आगमन चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ था। ऐसा माना जाता है कि **बौद्ध धर्म भारत से चीन होते हुए कोरिया पहुँचा** । आठवीं शताब्दी के बाद से, कई कोरियाई भिक्षु भारत आए।
- एक कोरियाई राजकुमारी के बारे में भी किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिसने भारत के राजा से विवाह किया और इस प्रकार घनिष्ठ संबंध स्थापित किए। कोरियाई राजकुमारी की कब्र के अंदर मिले **'दोहरी मछली'** जैसे कुछ पुरातात्विक साक्ष्य भी हैं , जो उसी समय मध्य भारत में भी प्रचलित थे, और इस किंवदंती की पुष्टि करते हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया

- मध्यकाल के दौरान, श्रीलंका, मलेशिया और इंडोनेशिया के दक्षिण-पूर्वी द्वीप भारतीय प्रभाव में आ गए। चोल वंश अपनी श्रेष्ठ नौसैनिक शक्ति के माध्यम से सबसे पहले अपना प्रभाव फैलाने वाले शासक थे। प्रभाव का प्रसार **तीन चरणों में हुआ:**
  - **सैन्य पहलू:** चोल, पल्लव और पांड्य के दक्षिणी राज्य दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीपों की तुलना में सैन्य दृष्टि से श्रेष्ठ थे। इन द्वीपों पर नियंत्रण इन राज्यों के लिए किसी भी बाहरी खतरे को विफल करने और सुरक्षित व्यापार सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक था।
  - **व्यापारिक संबंध:** बंदरगाहों और जहाज निर्माण उद्योग के विकास के कारण, भारत और इन द्वीपों के बीच व्यापार कई गुना बढ़ गया। दक्षिण-पूर्व एशियाई द्वीप अफ्रीका-भारत-चीन व्यापार मार्गों के लिए व्यापारिक चौकियों के रूप में भी काम करते थे।
  - **सांस्कृतिक प्रसार:** व्यापारियों के साथ-साथ, हिंदू और बौद्ध पुजारी और भिक्षु भी दक्षिण-पूर्व एशिया में गए, जिन्होंने अपने धर्म और संस्कृति का प्रचार किया। यह इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार और कंबोडिया में अंगकोरवाट जैसे विशाल मंदिरों की उपस्थिति से स्पष्ट है। एक अन्य प्रसिद्ध मंदिर बुद्ध को समर्पित बोरोबुदुर मंदिर है। रामायण और महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्य साहित्य, लोक-कला, नाटकों आदि के लिए पसंदीदा विषय प्रदान करते रहे हैं।

संबंधों का महत्व

- जबकि **भारत में बौद्ध धर्म का पतन हुआ, दक्षिण-पूर्व एशिया में** इसका विकास हुआ।
- **विभिन्न संस्कृतियों के आपसी मेल-मिलाप के** परिणामस्वरूप इस क्षेत्र के लोगों के बीच ऐतिहासिक संबंध स्थापित हुए हैं, जो भारत की 'सॉफ्ट पावर' के प्रयोग में सहायक है।
- इंडोनेशिया और थाईलैंड जैसे देशों में भारतीय मूल के शीर्ष नेता थे, जिन्होंने **भारत को स्वतंत्रता संग्राम के** साथ-साथ वैश्विक एजेंडे में भी मदद की।
- दक्षिण-पूर्व एशिया एक महत्वपूर्ण व्यापारिक समूह (आसियान) के रूप में उभरा है , और भारत आसियान का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है।

त्रिपक्षीय संघर्ष

- 9 वीं शताब्दी ईसवी में **, उत्तरी भारत पर नियंत्रण के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष , जिसे कन्नौज त्रिभुज युद्ध** के रूप में भी जाना जाता है , **प्रतिहार साम्राज्य , पाल साम्राज्य और राष्ट्रकूट साम्राज्य के बीच हुआ था।**
- **पाल राजा धर्मपाल और परिथा राजा वत्सराज के बीच कन्नौज पर प्रभुत्व** के लिए संघर्ष हुआ । वत्सराज विजयी हुआ , लेकिन **बाद में राष्ट्रकूट राजा ध्रुव प्रथम से पराजित हो गया।** ध्रुव प्रथम के दक्षिण लौटने के बाद, धर्मपाल ने कन्नौज पर फिर से अधिकार कर लिया, लेकिन उसका कब्ज़ा ज़्यादा समय तक नहीं रहा।
- लगभग दो शताब्दियों तक कन्नौज पर नियंत्रण के लिए **राज्यों के बीच लगातार त्रिपक्षीय संघर्ष** चलता रहा ।

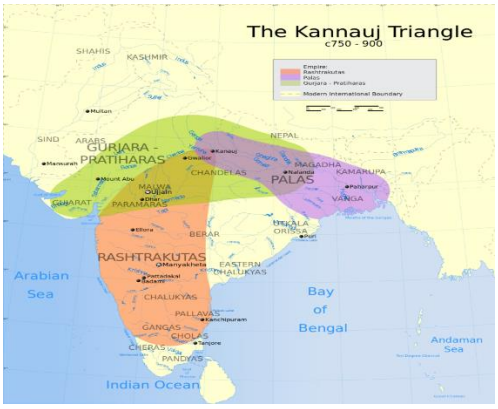

Significance of Kannauj

- **कन्नौज गंगा व्यापार मार्ग पर स्थित था** और **'रेशम मार्ग' से जुड़ा** था । इसने कन्नौज को सामरिक और व्यावसायिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। यह उत्तर भारत में हर्षवर्धन के साम्राज्य की तत्कालीन राजधानी भी थी।
- इस प्रकार, तीनों राज्यों ने कन्नौज की विशाल **आर्थिक और सामरिक संभावनाओं का लाभ उठाने के लिए एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध लड़ा।**

त्रिपक्षीय संघर्ष के कारण

- **गुजरात और मालवा पर नियंत्रण पाने के लिए** , ये क्षेत्र समुद्र तट के निकट होने के कारण **विदेशी व्यापार** के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे ।
- भारतीय राजनीति में प्रतिष्ठा के प्रतीक **कन्नौज पर आधिपत्य प्राप्त करना ।**
- **गंगा घाटी के विशाल संसाधनों** पर नियंत्रण प्राप्त करना **।**
- अपनी शक्ति के प्रभाव से सुन्दर राज्यों को प्रभावित करने की इच्छा।
- **युद्ध लूट की** लालसा , विशाल सेना को बनाए रखने का एक प्रमुख स्रोत।

त्रिपक्षीय संघर्ष - चरण I

- कन्नौज पर नियंत्रण के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट राजवंशों के बीच त्रिपक्षीय **संघर्ष हुआ।**
- त्रिपक्षीय संघर्ष का पहला चरण 790 ई. के आसपास धर्मपाल **और वत्सराज के बीच** संघर्ष के साथ शुरू हुआ ।
- प्रयाग में धर्मपाल और प्रतिहार राजा **वत्सराज** के बीच हुए युद्ध में धर्मपाल की हार हुई।
- कुछ समय बाद वत्सराज को राष्ट्रकूट राजा **ध्रुव ने पराजित कर दिया।**
- वत्सराज के पतन के बाद धर्मपाल ने **कन्नौज पर अधिकार कर लिया, लेकिन वह फिर से ध्रुव से पराजित हो गया।**
- दूसरी ओर, ध्रुव अपनी जीत को सुदृढ़ करने में असमर्थ रहे, क्योंकि उन्हें अपना राज्य बचाने के लिए दक्षिण की ओर लौटना था।
- 793 ई. में ध्रुव की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार संघर्ष के कारण राष्ट्रकूट वंश तबाह हो गया।
- उत्तरी भारत से शीघ्रता से पीछे हटकर राष्ट्रकूटों ने न केवल पालों के विरोधियों, प्रतिहारों को नष्ट कर दिया, बल्कि पालों को अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा अवसर भी प्रदान किया।
- धर्मपाल ने स्थिति का फायदा उठाया और **चक्रायुध को** सिंहासन पर बिठाकर, कन्नौज पर कब्ज़ा कर लिया।
- धर्मपाल ने कई सफल अभियानों के माध्यम से स्वयं को लगभग सम्पूर्ण उत्तरी भारत का स्वामी स्थापित कर लिया।

त्रिपक्षीय संघर्ष - चरण II

- वत्सराज के उत्तराधिकारी, प्रतिहार शासक **नागभट्ट द्वितीय ने कनौज पर आक्रमण किया और उसके शासक चक्रायुध को निष्कासित कर दिया और वहां नियंत्रण स्थापित किया।**
- चूंकि चक्रायुध धर्मपाल का आश्रित था, इसलिए नागभट्ट द्वितीय और धर्मपाल के बीच युद्ध अपरिहार्य था।
- नागभट्ट द्वितीय ने मुंगेर के निकट एक युद्ध में धर्मपाल को हराया।

- नागभट्ट द्वितीय द्वारा कन्नौज पर कब्ज़ा करने के बाद, शहर के लिए लड़ाई तेज़ हो गई।
- उनकी जीत अल्पकालिक थी, क्योंकि उन्हें ध्रुव के उत्तराधिकारी गोविंद तृतीय (राष्ट्रकूट राजा) ने शीघ्र ही परास्त कर दिया।
- **इस विजय के तुरंत बाद गोविंद तृतीय** दक्कन के लिए रवाना हो गये।
- 9वीं शताब्दी के अंत तक, पालों के साथ-साथ राष्ट्रकूटों की शक्ति भी क्षीण होने लगी थी।
- त्रिपक्षीय संघर्ष के अंत तक प्रतिहार विजयी हुए और उन्होंने स्वयं को मध्य भारत के शासक के रूप में स्थापित कर लिया ।

त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम

- कन्नौज के लिए यह त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग **दो सौ वर्षों** तक चला और अंततः इसका परिणाम **गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय के पक्ष में रहा,** जिन्होंने कन्नौज को गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की **राजधानी बनाया । इस साम्राज्य ने लगभग तीन शताब्दियों तक शासन किया।**
- इसने अंततः तीनों राजवंशों को कमजोर बना दिया, जिसके परिणामस्वरूप देश का राजनीतिक विघटन हुआ और मध्यपूर्व से इस्लामी आक्रमणकारियों को भारत में साम्राज्य स्थापित करने में लाभ हुआ।

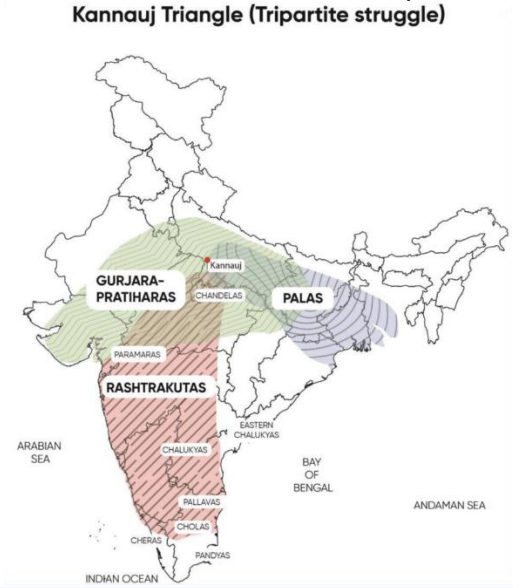

पाल राजवंश

पाल राजवंश

- गौड़ राजा शशांक की मृत्यु के बाद, बंगाल लगभग एक शताब्दी तक अराजकता और अव्यवस्था के दौर से गुज़रा। आंतरिक अव्यवस्था ने बंगाल को बाहरी आक्रमणों के प्रति संवेदनशील बना दिया।
- **अराजकता के माहौल को खत्म करने के लिए, गौड़ के प्रमुख सदस्यों ने एक सभा में बैठक की और गोपाल को अपना राजा चुना**। इस प्रकार, गोपाल (जिन्हें गोपाल-I के नाम से भी जाना जाता है) लगभग 750 ईस्वी में बंगाल के **प्रसिद्ध पाल राजवंश के संस्थापक बने ।**

राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र

- **धर्मपाल गोपाल प्रथम के उत्तराधिकारी बने** और पाल वंश के सबसे योग्य शासक माने जाते थे। उनकी सैन्य बुद्धि बहुत तेज़ थी और उन्होंने कई राज्यों पर विजय प्राप्त की। यहाँ तक कि उन्होंने **कन्नौज के तत्कालीन राजकुमार को गद्दी से उतारकर** अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। उनका लंबा और गौरवशाली शासन लगभग 30 वर्षों तक चला।
- **देवपाल भी अपने पिता की तरह एक पराक्रमी शासक था। उसने हूणों और कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार राजा** के विरुद्ध सफलतापूर्वक युद्ध किया । उसके राज्यक्षेत्र **में उत्तर में कंबोज से लेकर दक्षिण में विंध्य पर्वत तक का** विशाल क्षेत्र शामिल था । सुमात्रा के राजा **ने भी उसके दरबार में एक राजदूत भेजा था।**
- देवपाल की मृत्यु ने पाल वंश के अंत की शुरुआत कर दी। हालाँकि उनके उत्तराधिकारी महिपाल ने राज्य पर नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन उत्तराधिकारी राजा कमज़ोर थे और धीरे-धीरे पड़ोसी राज्यों के दबाव के आगे झुक गए।

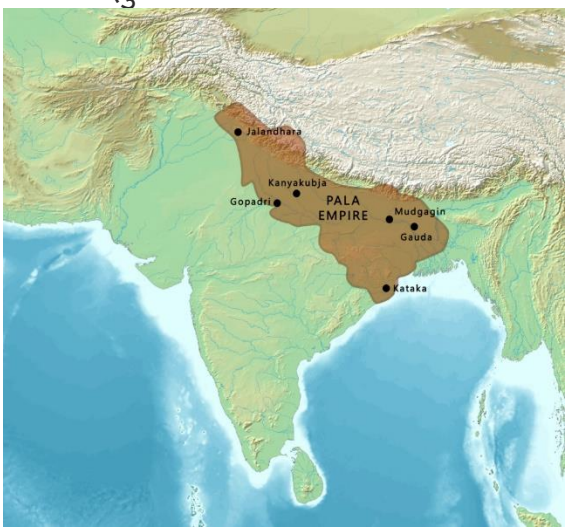

पाल वंश के प्रमुख शासक

- **गोपाल (750-770 ई.):**
- पाल **राजवंश की** स्थापना **गोपाल ने की थी, जो राज्य के प्रथम सम्राट भी थे।**

- उन्होंने बंगाल को अपने नियंत्रण में एकीकृत किया और यहां तक कि **मगध (बिहार) को** भी अपने नियंत्रण में लाया।
- **बिहार के ओदंतपुरी** में मठ की स्थापना **गोपाल** ने की थी ।
- उन्हें धर्म परिवर्तन करने के बाद **बंगाल का** पहला बौद्ध सम्राट माना जाता है ।
- उनके शासनकाल में कन्नौज और उत्तर भारत पर नियंत्रण के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के बीच **त्रिपक्षीय संघर्ष** हुआ ।
- **Dharmapala (770-810 AD):**
- **धर्मपाल ने** लगभग 770 ई. में **गोपाल का** स्थान लिया ।
- **धर्मपाल पाल साम्राज्य** का दूसरा शासक था । वह **गोपाल** का पुत्र था ।
- **उन्होंने प्रतिहारों** और राष्ट्रकूटों के विरुद्ध कई लड़ाइयाँ लड़ीं ।
- धर्मपाल ने **कन्नौज** पर कब्जा कर लिया और एक **भव्य दरबार का आयोजन किया।**
- उन्होंने उस काल की सबसे बड़ी शाही उपाधियाँ ग्रहण कीं, जिनमें **परमभट्टारक, परमेश्वर** और **महाराजाधिराज शामिल थे।**
- **Devapala (810–850 AD):**
- **देवपाल, धर्मपाल और** राष्ट्रकूट वंश की राजकुमारी रन्नदेवी का पुत्र था ।
- **देवपाल ने असम, ओडिशा और कामरूप** राज्यों सहित पूर्वी भारत तक साम्राज्य का विस्तार किया था ।
- उन्होंने **मगध** में मंदिरों सहित कई **मठों का निर्माण कराया था।**
- **देवपाल ने उत्तर,** दक्कन **और** प्रायद्वीप में छापे मारे ।
- **फार्म I:**
- 988 ई. में **महिपाल प्रथम** सिंहासन पर बैठा।
- जब **महिपाल प्रथम** सत्ता में आया, तो **पाल साम्राज्य एक बार फिर फलने-फूलने लगा और उसने बंगाल** और **बिहार** के उत्तरी और पूर्वी भागों पर पुनः अधिकार कर लिया ।
- ऐसा माना जाता है कि अपने भाइयों **स्तिरपाल** और वसंतपाल के साथ मिलकर **महीपाल प्रथम ने वाराणसी पर विजय प्राप्त की थी।**

प्रशासन

- पाल शासन **राजतंत्रात्मक प्रकृति का** था और राजा ही समस्त शक्ति का केंद्र होता था। पाल राजाओं ने सामान्यतः **महाराजाधिराज, परमेश्वर और परमवत्तारक** जैसी शाही उपाधियाँ धारण कीं । पाल राजाओं ने राज्य के बेहतर प्रशासन के लिए **प्रधानमंत्रियों की भी नियुक्ति की ।**
- प्रशासनिक दृष्टि से, **पाल साम्राज्य कई भुक्तियों (प्रांतों) में विभाजित था** । भुक्तियों को आगे **विषयों (विभागों)** और **मंडलों (ज़िलों)** में विभाजित किया गया था । छोटी इकाइयों को **खंडाला, भाग, वृत्ति, चतुरक और पट्टक** के नाम से जाना जाता था । इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रशासन ने निचले स्तर से लेकर शाही दरबार तक व्यापक क्षेत्र को कवर किया था।

धर्म

- पाल **राजा बौद्ध धर्म की महायान शाखा के संरक्षक थे । गोपाल प्रथम एक कट्टर बौद्ध थे और उन्होंने ओदंतपुरी में** प्रसिद्ध मठ का निर्माण कराया था ।
- उनके पुत्र **धर्मपाल ने** प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक **हरिभद्र को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनाया।** उन्होंने प्रसिद्ध **विक्रमशिला मठ (भागलपुर, बिहार के पास स्थित) और सोमपुरा महाविहार बांग्लादेश की** स्थापना की ।
- उनकी मृत्यु के बाद, **देवपाल ने सोमपुरा महाविहार की वास्तुकला को** पुनर्स्थापित और विस्तारित किया , जिसमें **रामायण और महाभारत महाकाव्यों** के कई विषय शामिल थे ।
- **महिपाल प्रथम ने** जीर्णोद्धार कार्य जारी रखा तथा बोधगया, सारनाथ और नालंदा में कई पवित्र संरचनाओं के निर्माण और मरम्मत का आदेश दिया।
- **बौद्ध धर्म के अलावा, बाद के पाल राजवंशों ने शैव तपस्वियों को भी समर्थन दिया । नारायण पाल ने स्वयं शिव मंदिर की स्थापना की और ब्राह्मणों को संरक्षण दिया** । बौद्ध देवताओं की मूर्तियों के अलावा, पाल राजवंश के बाद के शासनकाल में विष्णु, शिव और सरस्वती की मूर्तियों का भी निर्माण किया गया।

अर्थव्यवस्था

- पालों का शासनकाल **सामान्य आर्थिक और भौतिक समृद्धि** से चिह्नित था । पाल काल में **कृषि मुख्य व्यवसाय था । पाल राजाओं ने किसानों को खेती के लिए भूमि प्रदान की और लोगों की आय का मुख्य स्रोत उन्हें दी गई भूमि से प्राप्त कृषि उत्पाद थे। इस काल**

में, बंगाल में धान की खेती अर्थव्यवस्था का प्रमुख स्रोत बन गई थी । इसका उल्लेख देवपाल के 'मुंगेर (मुंगेर) शिलालेख' और **नारायणपाल के "भागलपुर शिलालेख"** में मिलता है ।

- कृषि के अलावा, **खनिज संसाधन भी** पाल काल की अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक थे। हालाँकि **लौह अयस्क का उपयोग अभी भी बहुत व्यापक नहीं था**, फिर भी अयस्क को गलाने की प्रक्रिया बंगाल के लोगों को अच्छी तरह से ज्ञात थी। पाल साम्राज्य के विभिन्न भागों में **तांबे के भंडार और मोती** भी पाए गए।
- पाल वंश के शासनकाल में बंगाल में **कृषि-आधारित उद्योग** फल-फूल रहे थे। पाल काल में **वस्त्र उद्योग फल-फूल रहा था और सूती वस्त्र** बंगाल का प्रमुख उद्योग था। इस काल में **रेशम उद्योग** भी बंगाल में बहुत लोकप्रिय था और इसने न केवल घरेलू बाजार, बल्कि विदेशी बाजार की भी पूर्ति की।
- यद्यपि पाल काल के दौरान अर्थव्यवस्था फली-फूली थी, फिर भी व्यापार और वाणिज्य में सामान्य गिरावट आई थी। व्यापार के स्तर में गिरावट पाल काल के सिक्कों से स्पष्ट है। **सोने और चाँदी के सिक्कों की कमी के कारण तांबे के सिक्कों पर निर्भरता बढ़ गई** । इसके परिणामस्वरूप विदेशी व्यापार में भारी गिरावट आई। परिणामस्वरूप, आर्थिक व्यवस्था **पूरी तरह से कृषि पर निर्भर हो गई और फलती-फूलती कृषि अर्थव्यवस्था ने सामंतवादी समाज को जन्म दिया** । इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि पाल काल के दौरान कृषि अर्थव्यवस्था और सामंतवाद एक साथ विकसित हुए।

साहित्य

- पाल राजाओं ने कई **संस्कृत और बौद्ध विद्वानों को** संरक्षण दिया , जिनमें से कुछ को उनके अधिकारी भी नियुक्त किया गया था।
- गौड़ **रीति** रचना शैली का विकास पाल वंश के शासनकाल में हुआ। उनके शासनकाल में अनेक **बौद्ध तांत्रिक कृतियों का** लेखन और अनुवाद हुआ। तिब्बत क्षेत्र में आज भी उनका विशिष्ट प्रभाव है।
- **जिमुतवाहन, संध्याकर नंदी, माधवकर, सुरेश्वर और चक्रपाणि दत्त** पाल काल के कुछ महत्वपूर्ण विद्वान हैं।
- प्रोटो-बंगाली भाषा के प्रथम संकेत पाल शासन के दौरान रचित **चर्यापदों में भी देखे जा सकते हैं।**

कला और वास्तुकला

- पाल काल की मूर्तिकला कला को भारतीय कला में एक विशिष्ट चरण माना जाता है और यह **बंगाल के मूर्तिकारों** की कलात्मक प्रतिभा के प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध है । यह काफी हद तक **गुप्त कला से प्रभावित और प्रेरित** थी । जैसा कि पहले चर्चा की गई है, **बौद्ध पाल शासकों ने कई मठों और अन्य पवित्र संरचनाओं का निर्माण किया**। वर्तमान बांग्लादेश में स्थित सोमपुरा **महाविहार को** विश्व धरोहर स्थल का दर्जा दिया गया है। **विक्रमशिला, ओदंतपुरी और जगद्दला सहित अन्य विहारों की विशाल संरचनाएँ पाल काल की अन्य उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।**
- पाल काल में निर्मित मंदिरों में विशिष्ट वंगा शैली का चित्रण मिलता है। **बर्दवान जिले के बराकर स्थित सिद्धेश्वर महादेव मंदिर** प्रारंभिक पाल शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सजावटी उद्देश्यों के लिए **टेराकोटा मूर्तिकला** बहुत लोकप्रिय थी। चित्रकला में, **भित्तिचित्र भित्ति चित्रों के लिए अत्यधिक लोकप्रिय थे।** इस काल में लघु चित्रकला का भी उल्लेखनीय विकास हुआ।

Gurjara-Pratihara Dynasty

- प्रतिहार वंश, जिसे गुर्जर-प्रतिहार वंश के नाम से भी जाना जाता है, ने 18वीं शताब्दी के मध्य से 18वीं शताब्दी तक **उत्तर भारत के** अधिकांश भाग पर शासन किया । ऐसा माना जाता है कि **उन्होंने पहले उज्जैन से शासन किया और बाद में कन्नौज में अपनी राजधानी स्थापित की।**
- इस राजवंश के संस्थापक **6वीं शताब्दी में हरिचंद्र थे** ।
- **नागभट्ट प्रथम (730-756 ई.) इस वंश का पहला महत्वपूर्ण शासक** थाजिसका शासन मंडोर (जोधपुर) से लेकर मालवा, ग्वालियर और भरूच तक फैला था। उसकी राजधानी **मालवा में अवन्ति थी।**

राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र

- मोहम्मद कासिम द्वारा सिंध विजय के बाद, **सिंधु नदी के पूर्व की ओर बढ़ रही अरब सेनाओं को रोकने में गुर्जर-प्रतिहारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।** नागभट्ट **प्रथम ने जुनैद और तामिन के नेतृत्व वाली अरब सेनाओं को पराजित किया**, जिन्होंने भारत में खिलाफत अभियानों के दौरान अपना प्रभाव बढ़ाने की कोशिश की थी।
- नागभट्ट **प्रथम के बाद वत्सराज ने** कन्नौज पर कब्ज़ा कर लिया और इस तरह बंगाल के पालों के साथ सीधे

संघर्ष में आ गया। हालाँकि उसने धर्मपाल को पराजित किया , लेकिन 786 ई. में राष्ट्रकूट राजा ध्रुव ने उसे परास्त कर दिया।

- **वत्सराज के बाद नागभट्ट द्वितीय ने शासन किया।** नागभट्ट द्वितीय के शासन में, गुर्जर-प्रतिहार उत्तर भारत का **सबसे शक्तिशाली राजवंश बन गया। नागभट्ट द्वितीय को सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण** के लिए याद किया जाता है , जिसे जुनैद के नेतृत्व में खिलाफत की सेनाओं ने नष्ट कर दिया था। पुनर्निर्मित संरचना **लाल बलुआ पत्थर** से बनी एक विशाल संरचना थी जिसे महमूद गजनवी ने फिर से नष्ट कर दिया था ।
- **नागभट्ट द्वितीय के बाद उनके पुत्र रामभद्र ने गद्दी संभाली** , और **उनके बाद उनके पुत्र मिहिर भोज ने गद्दी संभाली** । भोज और उनके उत्तराधिकारी **महेंद्रपाल प्रथम के अधीन,** प्रतिहार साम्राज्य समृद्धि और शक्ति के अपने चरम पर पहुँच गया।
- महेंद्रपाल के शासनकाल में, इसका क्षेत्रफल गुप्त साम्राज्य के बराबर था। यह पश्चिम में सिंध की सीमा से लेकर पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा के पार के क्षेत्रों तक फैला हुआ था।
- क्षेत्रों के इस विस्तार ने भारतीय उपमहाद्वीप पर नियंत्रण के लिए पाल और **राष्ट्रकूट** साम्राज्यों के साथ **त्रिपक्षीय सत्ता संघर्ष को जन्म दिया। इस काल में, प्रतिहार शासकों ने महाराजाधिराज (भारत के राजाओं का महान राजा) की शाही उपाधियाँ धारण कीं।**

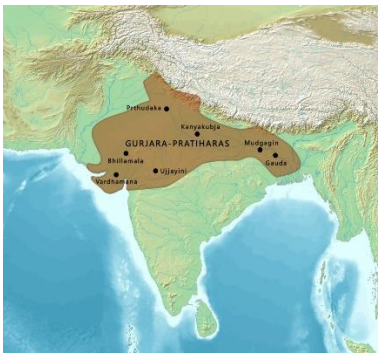

प्रतिहारों के प्रमुख शासक

- **नागभट्ट I (730 – 760 ई.):**
  - **प्रतिहार वंश की** भव्यता की नींव **नागभट्ट** प्रथम ने रखी , जिन्होंने **730-756 ई. के बीच शासन किया।**
  - अरबों के साथ सफल टकराव के कारण उनका शासन प्रमुख था ।
  - जब **खिलाफत का** प्रचार हो रहा था तब उन्होंने **अरबों को पराजित किया।**
  - **उन्होंने गुजरात से ग्वालियर तक** फैले साम्राज्य की स्थापना की और **सिंध के पूर्व** की ओर **अरब आक्रमणों को चुनौती दी।**
  - उन्होंने राष्ट्रकूट शासक **दंतिदुर्ग** के विरुद्ध भी युद्ध किया और पराजित हुए।
  - **इसके विपरीत, दंतिदुर्ग** की सफलता अल्पकालिक थी और **नागभट्ट ने** अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक दूरगामी साम्राज्य छोड़ा जिसमें **गुजरात, मालवा** और **राजपूताना के कुछ हिस्से शामिल थे।**
  - **नागभट्ट प्रथम के** उत्तराधिकारी उनके भाई के पुत्र **कक्कुका और देवराज थे।**
- **वत्सराज (780 – 800 ई.):**
  - **देवराज** के बाद उनके पुत्र **वत्सराज** ने शासन संभाला जो एक प्रभावशाली शासक साबित हुआ।
  - उन्होंने **775 से 805 ईस्वी तक शासन किया।** ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली थी और उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया था।
  - **वह पश्चिमी भारत** में अपने साम्राज्यवादी करियर के कगार पर थे ।
  - **उसने उत्तर भारत** के एक बड़े हिस्से पर अपना नियंत्रण बढ़ा लिया ।
  - उत्तरी भारत का शासक बनने के प्रयास में उसने भाण्डी नामक शासक वंश को **, जो संभवतः वर्धन वंश से संबंधित था,** पराजित करके **कन्नौज** और **मध्य राजपुत्र** तक के प्रदेशों पर कब्जा कर लिया।
  - **कन्नौज (पश्चिमी उत्तर प्रदेश) उनकी राजधानी बनी।**
  - **कन्नौज** पर कब्ज़ा करने की उनकी महत्वाकांक्षा ने उन्हें **बंगाल के पाल शासक धर्मपाल और राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के** साथ संघर्ष में डाल दिया ।
  - त्रिपक्षीय संघर्ष में, **धर्मपाल (पाल राजा)** वत्सराज से पराजित हुआ **, जिसे बाद में ध्रुव (राष्ट्रकूट राजा)** ने पराजित किया ।
  - वह **दोआब क्षेत्र** में **धर्मपाल को** पराजित करने में सफल रहा और **गंगा यमुना घाटी** सहित **उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की।**
  - **बाद में धुर्व ने उसे हरा दिया और कन्नौज पर कब्ज़ा कर लिया।**
  - **वत्सराज** का उत्तराधिकारी **नागभट्ट द्वितीय था।**
- **नागभट्ट II (800 – 833 ई.):**

- **वत्सराज के** उत्तराधिकारी **नागभट्ट द्वितीय ने सिंध, आंध्र, विदर्भ पर** विजय प्राप्त करके साम्राज्य की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनर्जीवित किया ।
- ध्रुव द्वारा वत्सराज की पराजय के बाद **प्रतिहार साम्राज्य केवल राजपूताना** तक ही सीमित रह गया ।
- **नागभट्ट द्वितीय ने** साम्राज्य की विजय और विस्तार की नीति को पुनर्जीवित किया।
- उसने आंध्र, सैंधव, विदर्भ और कलिंग के शासकों को पराजित किया **।**
- उन्होंने उत्तर में **मत्स्य , पूर्व में वत्स और पश्चिम में तुरुस्का (मुसलमान) को अपने अधीन कर लिया।**
- **नागभट्ट ने कन्नौज** पर आक्रमण किया और **चक्रायुध को** पराजित कर उस पर कब्ज़ा कर लिया।
- वह **धर्मपाल को हराने में भी सफल रहा और बिहार के मुंगेर** तक उसके क्षेत्र में प्रवेश कर गया , लेकिन वह अपनी सफलता का आनंद अधिक समय तक नहीं ले सका।
- **नागभट्ट द्वितीय को शुरू में राष्ट्रकूट शासक गोविंदा तृतीय** ने हराया था , लेकिन बाद में **मालवा को** राष्ट्रकूटों से पुनः प्राप्त कर लिया **।**
- **उन्होंने गुजरात के सोमनाथ में** महान शिव मंदिर का पुनर्निर्माण कराया , जिसे **सिंध से आए अरब आक्रमण** में ध्वस्त कर दिया गया था ।
- **कन्नौज गुर्जर प्रतिहार राज्य** का केंद्र बन गया , जिसने अपनी शक्ति के चरम के दौरान **उत्तरी भारत के अधिकांश हिस्से को कवर किया था।**
- **नागभट्ट द्वितीय** के पुत्र और उत्तराधिकारी **रामभद्र** अयोग्य साबित हुए और संभवतः पाल शासक देवपाल के हाथों अपने कुछ क्षेत्र खो दिए।
- **उसके बाद उसका पुत्र मिहिरभोज** राजा बना जो एक महत्वाकांक्षी शासक साबित हुआ।
- **नागभट्ट का** नियंत्रण **मालवा, राजपूताना** और **गुजरात के कुछ हिस्सों तक फैल गया।**
- बाद में नागभट्ट द्वितीय सहित गुर्जर-प्रतिहार राजा, कनौज क्षेत्र में चले गए।
- भोज I /मिहिर भोज (836 – 885 ई.):
- सबसे प्रसिद्ध गुर्जर-प्रतिहार राजा नागभट्ट द्वितीय के पोते भोज थे।
- **मिहिरभोज** के राज्याभिषेक के साथ प्रतिहारों के इतिहास का एक गौरवशाली अध्याय शुरू होता है ।
- **मिहिरभोज 836 ई.** में सिंहासन पर बैठे ।
- उन्होंने **46 वर्षों** से अधिक समय तक **प्रतिहारों पर** शासन किया और उन्हें उनका सबसे लोकप्रिय राजा माना जाता है।
- **उन्होंने अपने पूर्वजों से प्राप्त साम्राज्य को पुनर्गठित और समेकित किया तथा प्रतिहारों** के लिए समृद्धि के युग की शुरुआत की ।
- **कन्नौज , जिसे महोदया** के नाम से भी जाना जाता था , उसके साम्राज्य की राजधानी मानी जाती थी।
- **महोदया** में स्कंधवारा **सैन्य शिविर का उल्लेख बराह ताम्रपत्र शिलालेख** में किया गया है ।
- **वह वैष्णव धर्म** के महान अनुयायी थे और उन्होंने **"आदिवराह"** की उपाधि धारण की थी ।
- सिंध के अरब **, चांडाल और कलचुरी** सभी ने उसकी सर्वोच्चता को स्वीकार किया।
- **अरब यात्रियों** के अनुसार प्रतिहार शासकों के पास **भारत की सबसे शक्तिशाली घुड़सवार सेना थी।**
- **अरब यात्री** अल **-मसूदी ने उन्हें "राजा बौरा" की** उपाधि दी ।
- **Mahendrapala (885 – 910 AD):**
- **उन्होंने प्रतिहार साम्राज्य** के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया , जो **नर्मदा के पार उत्तर में हिमालय तक, पूर्व में बंगाल तक और पश्चिम में सिंध सीमा तक फैला हुआ था।**
- उन्हें **"आर्यावर्त के महाराजाधिराज"** (उत्तरी भारत के महान राजा) की उपाधि प्रदान की गई।
- प्रसिद्ध **संस्कृत कवि** और **आलोचक राजशेखर** उनके दरबार में उपस्थित थे।
- कर्रपुरमंजरी (सौरासेनी प्राकृत में लिखित), काव्य मीमांसा, बालभारत, भृंजिका, विधासलभंजिका, प्रपंच पांडव और अन्य रचनाएँ उनकी कृतियों में से हैं।
- महिपाल I (913 – 944 ई.): □ कर्रपुरमंजरी (सौरासेनी प्राकृत **में लिखित), काव्य मीमांसा, बालभारत, भृंजिका, विधासलभंजिका, प्रपंच पांडव और अन्य रचनाएँ उनकी कृतियों में से हैं।**
  - **महिपाल I (913 - 944 ई.):**
- उनके शासन काल में **प्रतिहारों का** पतन शुरू हो गया।
- राष्ट्रकूट राजा इंद्र तृतीय ने उसे हराया और कन्नौज को तबाह कर दिया।
- **अल-मसूदी** अपने वृत्तांतों में लिखते हैं कि **प्रतिहार साम्राज्य की** "समुद्र तक पहुंच नहीं थी", जिसके

कारण **राष्ट्रकूटों ने गुजरात** पर प्रभुत्व हासिल कर लिया ।

- **Rajyapala (960 – 1018 AD):**
- **राष्ट्रकूट के कृष्ण तृतीय ने** प्रतिहार राजा को हराया।
- जब महमूद गजनी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, तो राजयपाल को युद्ध छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- **विंध्यधर चंदेला** वह व्यक्ति था जिसने उसकी हत्या की थी।
- **Yashpala (1024 – 1036 AD):**
- उन्होंने **प्रतिहार वंश के** अंतिम शासक के रूप में कार्य किया।
- लगभग 1090 ई. में गंधावालों ने कन्नौज पर अधिकार कर लिया।
- **राष्ट्रकूटों के** खिलाफ जीत का जश्न मनाने के लिए **युवराज** के दरबार में **राजशेखर के नाटक,** विद्धशलाभंजिका **का मंचन किया गया था।**

प्रशासन

- अन्य राज्यों की तरह, प्रतिहार राजाओं का प्रशासन **भी राजतंत्रात्मक** था । राजा राज्य में सर्वोच्च पद पर होता था और उसके पास अपार शक्तियाँ होती थीं।
- **उन्होंने 'परमेश्वर' और 'महाराजाधिराज** ' जैसी बड़ी उपाधियाँ धारण कीं ।
- राजाओं द्वारा विभिन्न **सामंतों की नियुक्ति की जाती थी। सामंत आवश्यकता पड़ने पर अपने राजाओं को सैन्य सहायता प्रदान करते थे** । हालाँकि, प्रशासन के मामलों में उच्च अधिकारियों की सलाह ली जाती थी, लेकिन उस काल के अभिलेखों में **मंत्रिपरिषद या मंत्रियों का कोई उल्लेख नहीं मिलता।**
- **प्रतिहारों के प्रशासन में आठ प्रकार के विभिन्न अधिकारी** होते हैं जैसे
- **कोट्टापाल:** किले का सर्वोच्च अधिकारी।
- **तंत्रपाल:** सामंत राज्यों में राजा का प्रतिनिधि।
- **दण्डपाशिक:** पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी था।
- **दंडनायक:** सैन्य और न्याय विभाग की देखभाल करना।
- **दूतक:** राजा के आदेश और अनुदान को निर्दिष्ट व्यक्तियों तक पहुंचाना।
- **भंगिका:** वह अधिकारी था जो दान और अनुदान के आदेश लिखता था।
- **व्यानहारिना:** संभवतः कोई कानूनी विशेषज्ञ था और कानूनी सलाह देता था।
- **बलधिक्रत:** सेना का प्रमुख था।

- राज्य **कई भुक्ति या प्रान्तों में विभाजित था** । प्रत्येक भुक्ति में कई **मंडल** होते थे और प्रत्येक मंडल में कई **नगर और कई गाँव** होते थे । इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि प्रतिहार शासकों ने प्रशासनिक सुविधा के लिए अपने साम्राज्य को विभिन्न इकाइयों में संगठित किया था।
- **प्रतिहार साम्राज्य के गाँवों का प्रशासन स्थानीय स्तर पर होता था** । गाँव **के बुजुर्गों को महात्तर कहा जाता था** और वे गाँव के प्रशासन की देखभाल करते थे। ग्रामपति राज्य का **एक अधिकारी होता था जो ग्राम प्रशासन के मामलों में सलाह देता था।**
- **नगर का प्रशासन परिषदों द्वारा देखा जाता था, जिन्हें प्रतिहारों** के अभिलेखों में **गोष्ठी, पंचकुला, संवियक** और **उत्तर सोभा** कहा गया है ।
- यह देखा जा सकता है कि प्रतिहारों का प्रशासन काफी कुशल था। इसी कुशल प्रशासन के कारण प्रतिहार अरबों के आक्रमणों से भारत की रक्षा करने में सक्षम थे।

समाज

- **गुर्जर-प्रतिहार काल में भारत में जाति व्यवस्था** प्रचलित थी और **वैदिक काल** की सभी चार जातियों का उल्लेख शिलालेखों में भी मिलता है।
- शिलालेख में **ब्राह्मणों को विप्र कहा गया है तथा क्षत्रियों** के लिए कई **प्राकृत शब्दों का** प्रयोग किया गया है ।
- प्रत्येक जाति के लोग अलग-अलग वर्गों में विभाजित थे।
- **ब्राह्मणों में चतुर्वेद** और **भट्ट** समूह प्रमुख थे ।
- **वैश्यों** में कंचुक और **वकाटा** समूह प्रमुख थे ।
- अरब लेखक **इब्दा खुरदादब ने प्रतिहारों** के समय में **सात जातियों का** उल्लेख किया है ।
- उनके अनुसार, सवाकुफ्रिया, ब्राह्मण, कटारिया, सुदरिया, बंदलिया और लबला वर्ग मौजूद थे ।
- **राजा का चयन सवाकुफरिया वर्ग** से किया जाता था जबकि **ब्राह्मण वर्ग के लोग शराब** नहीं पीते थे तथा अपने पुत्रों का विवाह **कटारिया वर्ग** की पुत्रियों से करते थे ।
- कटारिया **वर्ग को क्षत्रिय** माना जाता था ।
- **सुदरिया** के लोगों को **शूद्र** माना जाता था और वे आमतौर पर **खेती या पशुपालन करते थे।**
- **बसुरिया वर्ग वैश्य वर्ग** था जिसका कर्तव्य अन्य वर्गों की सेवा करना था।

- **संडीला वर्ग** के लोग चाण्डालों का काम करते थे।
- **लाहुडा वर्ग** एक निम्न और घुमक्कड़ जनजाति थी।
- अरब लेखक के उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि **वैश्यों ने सुदारों का काम किया** और **सुदारों ने वैश्यों का काम किया।**
- ऐसा प्रतीत होता है कि जाति व्यवस्था धीरे-धीरे अच्छे ढंग से टूट रही थी।
- ब्राह्मणों **ने क्षत्रिय लड़कियों** से विवाह करना शुरू कर दिया और **वैश्यों ने** शूद्रों के कार्य भी करने शुरू कर दिए।
- इस काल में मुस्लिम आक्रमण प्रारम्भ हो चुके थे और विजित राज्यों के अनेक हिन्दू इस्लाम के अनुयायी बन रहे थे।
- ऐसा भी प्रतीत होता है कि हिंदू समाज ने ऐसे हिंदुओं के शुद्धिकरण की अनुमति दी थी।
- **स्मृति घण्डरायण व्रत, 'बिलादुरी' तथा अलुबर्नी** और अन्य मुस्लिम लेखकों की रचनाएँ भी इस तथ्य की पुष्टि करती हैं।
- **अंतर्जातीय विवाह** के कुछ संदर्भ भी मिले हैं।
- प्रमुख संस्कृत विद्वान राजशेखर ने अवंती सुंदरी नामक क्षत्रिय कन्या से विवाह किया था।
- राजा और धनी वर्ग **बहुविवाह प्रथा का पालन करते थे।**
- हालाँकि, आमतौर पर पुरुषों की एक ही पत्नी होती थी।
- कुछ संदर्भों से यह भी ज्ञात होता है कि पति की मृत्यु पर महिलाओं ने अपने पति के साथ स्वयं को भी जला लिया था।
- इस प्रकार, **सती प्रथा** वहां मौजूद थी, हालांकि यह बहुत अधिक प्रचलित नहीं थी।
- शाही परिवारों की महिलाओं में **पर्दा प्रथा** नहीं थी ।
- **राजशेखर** के अनुसार महिलाएं **संगीत, नृत्य और चित्रकला सीखती थीं।**
- महिलाएं आभूषणों की बहुत शौकीन थीं और तेल और सौंदर्य प्रसाधनों का भी इस्तेमाल करती थीं।
- अमीर परिवारों के लोग बहुत पतले कपड़े पहनते थे।

धर्म

- प्रतिहारों का काल **हिंदू धर्म की उन्नति का काल** था । उनके शासनकाल में हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदायों ने उन्नति की। **वैष्णव, शैव, शाक्त और सूर्य** हिंदू धर्म के प्रमुख संप्रदाय थे, जो इस काल में प्रचलित थे।
- इन संप्रदायों के लोग **मंदिरों और मूर्तियों का निर्माण एक पवित्र कर्तव्य** मानते थे । राजाओं और अन्य धनी लोगों ने मंदिरों के निर्माण के लिए उदारतापूर्वक दान दिया।
- इस अवधि के दौरान **बौद्ध धर्म और जैन धर्म का पतन हो रहा था,** जबकि **ब्राह्मण धर्म प्रगति कर रहा था ।**

अर्थव्यवस्था

- प्रतिहार शासन में अर्थव्यवस्था **मुख्यतः कृषि प्रधान** थी । सरकारी राजस्व का प्रमुख स्रोत **कृषि उत्पादन पर लगाया जाने वाला कर** था ।
- सामंती व्यवस्था अत्यधिक प्रचलित थी और अधीनस्थ सामंतों या सरदारों द्वारा गुर्जर राजा को दिए जाने वाले सामंती करों की व्यवस्था सीमाओं पर तैनात स्थायी सेनाओं द्वारा की जाती थी।
- प्रतिहार काल की विशेषता **सरकारी प्राधिकार का उच्च विकेन्द्रीकरण , वि-शहरीकरण तथा आर्थिक गतिविधियों का अन्तर्राष्ट्रीय से स्थानीय स्तर पर हस्तांतरण** भी था ।
- ऐसा प्रतीत होता है कि गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य में **सोने के सिक्कों का अभाव** था । **तांबे के सिक्कों से ही खरीदारी की जाती थी** और उस काल में यही विनिमय का प्रमुख माध्यम था।

कला और वास्तुकला

- गुर्जर **-प्रतिहार** शासक कला, वास्तुकला और साहित्य के महान संरक्षक थे।
- मिहिर भोज इस वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- इस काल की उल्लेखनीय मूर्तियों में **विष्णु का विश्वरूप** रूप और **कन्नौज** से प्राप्त **शिव-पार्वती विवाह की मूर्तियाँ शामिल हैं।**
- **ओसियां, आभानेरी** और **कोटा** में स्थित मंदिरों की दीवारों पर भी **सुंदर नक्काशीदार पैनल देखे जा सकते हैं।**
- **ग्वालियर संग्रहालय** में प्रदर्शित **सुरसुंदरी** नामक महिला आकृति **गुर्जर-प्रतिहार कला** की सबसे आकर्षक मूर्तियों में से एक है ।
- प्रारंभिक **प्रतिहारों** को सामान्यतः सबसे महत्वपूर्ण **वास्तुशिल्पीय कार्यों का श्रेय दिया जाता है, जो गुर्जर के मध्य** में **ओसियां** में , पूर्व में **चित्तौड़ के महान किले में** तथा आधुनिक **गुजरात** की सीमा के पास **दक्षिण में रोड़ा** में हैं , जिसे **प्रतिहारों ने 8 वीं शताब्दी** के अंत तक अपने अधीन कर लिया था ।

- वे **उत्तर-मध्य भारत तक भी पहुंच गए थे, जहां ग्वालियर के आसपास के कई मंदिर ओसियां** के बाद के कार्यों के समान हैं ।
- **ग्वालियर किले** में असाधारण **तेली-का-मंदिर** सबसे पुराना जीवित बड़े पैमाने **का प्रतिहार कार्य है।**
- **ओसियां के** प्रारंभिक कार्यों में **पांच-खंडीय मूलप्रसाद** हैं , जिनमें **बरामदा** और **खुला हॉल है** , लेकिन कोई **बरामदा या प्रदक्षिणा पथ** नहीं है और कई में **पांच-मंदिर परिसर (पंच-यतन) हैं।**
- केंद्रीय प्रक्षेपणों में देवता की प्रमुख अभिव्यक्तियों के लिए **घन-द्वारों** के अतिरिक्त ।
- **खुले हॉल वेदिकाओं** से घिरे होते हैं, जिनमें **'सीट-बैक'** को सहारा देने वाले कटे हुए **पूर्ण-कलश स्तंभ** होते हैं और उनके आंतरिक स्तंभ, उभारों के साथ वर्गाकार होते हैं, जिनमें अक्सर शीर्ष और आधार दोनों के लिए **पूर्ण-कलश** होते हैं , जो हॉल के केंद्र में आवश्यक अतिरिक्त ऊंचाई प्रदान करते हैं, जैसा कि **सूर्य मंदिर** और **हरि-हर । में है।**
- **हरि-हर तृतीय** का मंदिर द्वार गैर-वास्तुशिल्पीय रचनाओं का विशिष्ट उदाहरण है, जिसमें **गंगा** और **यमुना** तथा **दिक्पालों** से **कमल,** मो ती और **मिथुन के आकार के खंभे** उठते हैं , लेकिन सूर्य के समृद्ध उत्कीर्ण स्तंभ एक प्रसाद का समर्थन करते हैं।
- **हरि-हारा तृतीय** के बरामदों और बालकनियों की छतें सपाट हैं और बाद के हॉलों में भी बिना किसी अतिरिक्त अधिरचना के दो या तीन स्लैब एक दूसरे पर आरोपित हैं।
- प्रारंभिक छतें **सपाट थीं, बाद की छतें घुमावदार** और नक्काशी से **अलंकृत थीं ।**
- **हरि-हारा तृतीय का** नौ-वर्गाकार हॉल अपने घुमावदार पार्श्व मेहराबों के कारण अद्वितीय है।
- **रोदा** के अधिकांश कार्यों में **पांच-खंड वाले मूलप्रसाद** हैं , जिनमें चलने-फिरने की व्यवस्था नहीं है **,** जैसा कि ओसियां के मंदिरों में है, लेकिन उनमें आम तौर पर केवल एक बरामदा होता है।
- कभी-कभी मंच के साथ, उनमें अन्यत्र प्रारंभिक **प्रतिहार** कार्यों के विपरीत **आधार होते हैं।**
- उदाहरण के लिए, रोड़ा में वास्तुकला के एक नमूने में एक अर्ध-**कुंभ , एक धँसा हुआ क्षेत्र और एक अलंकृत फर्श स्लैब के साथ एक स्लैब जैसा चबूतरा है, जिसके ऊपर एक छोटा पद्म है, और ये सभी एक भारी ददो के नीचे हैं जिसमें खुर, कैशा** और **कपोत** शामिल हैं । दीवारों पर आमतौर पर केवल **घन-द्वार ही उभरे होते हैं।**
- **शिखर** सभी **लैटिना किस्म के हैं, जो अपनी बौनी रूपरेखा और बोल्ड केंद्रीय पट्टियों के कारण ओसियां** के प्रमुख प्रकार के समान हैं ।
- **पोर्च में** कभी-कभी **मैत्रकों** की तरह मोटे ब्लाइंड डॉर्मर्स के साथ एक दूसरे पर आरोपित स्तरों में **ढलवाँ छतें होती हैं।**
- **स्तंभ आमतौर पर पूर्ण-कलश शीर्षों** के साथ वर्गाकार प्रकार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और **रोडा IV और III के अभयारण्य द्वार** क्रमशः गैर-वास्तुशिल्पीय और वास्तुशिल्पीय दृष्टिकोणों का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करते हैं - उत्तरार्द्ध के गहरे नक्काशीदार भित्तिस्तंभ, बाहर संलग्न स्तंभों के प्रकार के अनुरूप हैं, जो प्रसाद रूपांकन के साथ आत्मसात किए गए पांच आलों का एक विशेष रूप से सुरुचिपूर्ण समूह रखते हैं।
- **शक्ति पंथ** को समर्पित, **ग्वालियर स्थित तेली का मंदिर** एक ऊंचा आयताकार **मूलप्रसाद** , एक **दोहरा आयताकार शिखर** और एक **बंद बरामदा है।**
- पीछे की ओर दो मुख्य उभार हैं, जिनमें **घनद्वार** हैं, जिनमें स्तरित **कपोत** और **लघु चंद्राकार द्वार** हैं , जो पार्श्वों की तरह हैं **, तथा जिनके दोनों ओर शिखर** जैसी विभिन्न **अधिसंरचनाओं** से युक्त एक-एक कंगूरे हैं।
- एक साधारण मंच और चरणबद्ध आधार पर, अपरंपरागत दाडो में कैशा और कपोता के साथ दोहरी मंदी है।
- **बरामदे** के ऊपर सीढ़ीनुमा **अधिरचना** आधुनिक है, लेकिन **तेली-का-मंदिर के समकालीन आउवा के कामेश्वर** में **फमसाना छत** का सबसे पुराना जीवित उदाहरण है , जिसके उदाहरण संभवतः मैत्रक परंपरा में पाए जाते हैं।
- इस प्रकार, इन प्रारंभिक कार्यों में परिपक्व उत्तरी परिसर के विभिन्न तत्व प्रकट हुए थे - लैटिना **मूलप्रसाद,** जिसमें विभिन्न तलों में **प्रदक्षिणापथ, बालकनियाँ, पूर्ण वेदिका** के साथ **खुले हॉल** और मूलप्रसाद से मेल खाते बंद हॉल, फमसाना छतें, विविध **पूर्ण-कलश** या **पद्म-कुंभ शीर्षों** के साथ **समृद्ध रूप से मुखयुक्त आधार थे।**

- अपने विकास के अगले चरण में **प्रतिहारों ने अपना ध्यान आधार** और **अधिरचना** के विस्तार की ओर लगाया ।
- **बारोली स्थित घाटेश्वर के** चौकोर बरामदे पर दो रजिस्टरों में एक **फामसाणा है ,** जिसके कोनों पर **विस्तृत एडिकुल** और **लघु लैटिना शिखर** लगे हुए हैं ।
- इस और कई अन्य विशेषताओं में **बारोली मंदिर** विशेष रूप से चंदेलों की भव्य प्रथा का पूर्वानुमान करता है:
- शिखर अब तक की तुलना में अधिक ऊंचा, अधिक **सुंदर रूप से घुमावदार है, तथा इसमें केंद्रीय पट्टियां हैं जो आमलक के आधार** क्षेत्र तक पहुंचती हैं ।
- आंशिक रूप से उत्खनित **ग्यारसपुर मंदिर** योजना में अधिक उन्नत है, जिसमें **एक प्रदक्षिणा पथ के** साथ-साथ **एक बरामदा** और बालकनी तथा बरामदे के साथ एक बंद हॉल है, जो इसे क्रूस के आकार का बनाता है।
- इसका **शिखर,** जिसके आधार पर नौ लघु लैटिना आकृतियां स्थित हैं, संभवतः प्रतिहार साम्राज्य के केंद्रीय क्षेत्र में सबसे पुराना जीवित सेखड़ी उदाहरण है।
- हॉल और बरामदे दोनों की छतें **फमसाना हैं। कैशा** और **कपोत** के साथ ददो एक ऊंचे मंच पर बना हुआ है।
- जगत स्थित अंबिका **मठ,** अब तक प्राप्त विभिन्न तत्वों के आगे विस्तार और संश्लेषण का एक प्रारंभिक और उत्कृष्ट उदाहरण है: पांच-खंड वाला **मूलप्रसाद** , जिसमें **घूमने योग्य** और **समबाहु उभार हैं** , जो इसके शेखरी शिखर की समूहबद्ध संरचना के प्रत्युत्तर में अग्रभाग तत्वों के **विकर्ण** और **अष्टकोणीय** समूहन का संकेत देते हैं , मूलप्रसाद से मेल खाते हुए समृद्ध रूप से विस्तृत कंगूरे के साथ **फमसाना-छत वाला, क्रूस के आकार का बंद हॉल** , ऊंची वेदिका वाला **बरामदा , आसन के समान आवरण और प्रमुख चड्या, प्रमुख कोष्ठक शीर्षों** के साथ **विस्तृत रूप से नक्काशीदार पूर्ण-कलश स्तंभ ।**
- **किराडू** स्थित विष्णु और **सोमेश्वर मंदिर को प्रतिहार परम्परा** की और भी अधिक भव्य परिणति का प्रतिनिधि माना जा सकता है ।

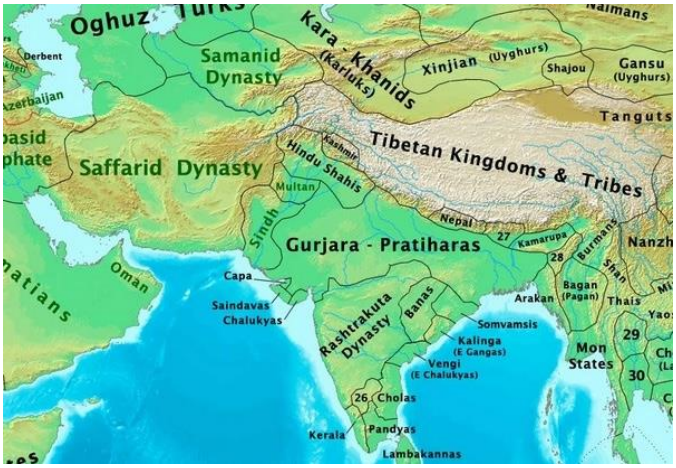

राजवंश का महत्व

- मध्यकाल में भारत पर शासन करने वाले सभी **राजपूत वंशों में, गुर्जर-प्रतिहार वंश का रिकॉर्ड सबसे प्रभावशाली था** । अपने चरम पर, प्रतिहारों का प्रभाव **पंजाब से मध्य भारत और काठियावाड़ से उत्तरी बंगाल तक फैला हुआ था।**
- तीन शताब्दियों तक, वे भारत की रक्षा के मुख्य आधार रहे और **अरब आक्रमणकारियों के प्रयासों को विफल किया** । उन्होंने शक्तिशाली हर्ष वंश के पतन के बाद भारत के राजनीतिक एकीकरण के सपने को कुछ समय के लिए पुनर्जीवित किया।
- ऐसा कहा जाता है कि देश पर इस्लामी कब्जे से पहले गुर्जर-प्रतिहार राजवंश **उत्तरी भारत का अंतिम महान शाही हिंदू राजवंश था।**
- गुर्जर-प्रतिहारों का साम्राज्य न केवल विशाल प्रादेशिक विस्तार वाला था, बल्कि जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, यह सबसे अच्छे प्रशासित साम्राज्यों में से एक था। राजा न केवल महान योद्धा थे, बल्कि कला और साहित्य के उदार संरक्षक भी थे।
- प्रतिहार राजवंश में अपार **राजनीतिक एवं सैन्य प्रतिभा** विद्यमान थी । प्रसिद्ध प्रतिहार राजा **वत्सराज, नागभट्ट द्वितीय, भोजदेव (मिहिरा भोज प्रथम) और महेंद्रपाल** निश्चित रूप से भारत के इतिहास में विशेष उल्लेख के पात्र हैं।
- यह विशेष रूप से स्मरणीय है कि गुर्जर-प्रतिहारों को पालों और राष्ट्रकूटों के साथ **त्रिपक्षीय संघर्ष** के अंतर्गत अपनी शक्ति का निर्माण करना पड़ा था । वे प्रजा के कल्याण के लिए जाने जाते थे।

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट वंश (753 - 982 ई.) ने **छठी और दसवीं शताब्दी ई. के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर शासन किया।**
- राष्ट्रकूट **साम्राज्य ने 10 वीं शताब्दी** के अंत तक लगभग **200 वर्षों** तक दक्कन पर प्रभुत्व बनाए रखा तथा विभिन्न समयों पर उत्तर और दक्षिण भारत के क्षेत्रों पर भी नियंत्रण किया।
- चालुक्य राजाओं के शिलालेखों से यह अनुमान लगाया जाता है कि राष्ट्रकूट प्रारम्भ में **चालुक्यों के सामंत थे।**
- इस राजवंश की **स्थापना आठवीं शताब्दी के मध्य में दंतिदुर्ग ने की** थी , जो चालुक्य राजाओं के सामंतों में से एक थे। उन्होंने युद्ध में आगे बढ़कर **कीर्तिवर्मन द्वितीय को पराजित** किया, इस प्रकार चालुक्यों की मुख्य शाखा का अंत हो गया। इसी के साथ दक्कन में राष्ट्रकूट साम्राज्य की शुरुआत हुई।
- Danti Durg performed a ritual called **Hiranya-garbha.**
- उत्तर भारत में कोई भी शक्ति इतनी मजबूत नहीं थी कि वह दक्कन के मामलों में हस्तक्षेप कर सके, जिससे **राष्ट्रकूटों के उदय का अवसर मिला।**

राजनीतिक प्रभाव का विस्तार

- राष्ट्रकूट साम्राज्य के केन्द्र में **आधुनिक कर्नाटक, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्से** शामिल थे ।
- राजवंश के **संस्थापक दंतिदुर्ग ने संभवतः बरार के अचलपुरा** (महाराष्ट्र में आधुनिक एलिचपुर) से शासन किया था।
- उनके **बाद कृष्ण प्रथम शासक** बने , जिन्होंने वर्तमान कर्नाटक और कोंकण के बड़े हिस्से को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- **9वीं शताब्दी में ध्रुव** के शासन में , राष्ट्रकूट साम्राज्य एक विशाल साम्राज्य के रूप में विस्तारित हुआ, जिसने **कावेरी नदी और मध्य भारत के बीच के लगभग पूरे क्षेत्र को अपने में समाहित कर लिया। उन्होंने कन्नौज तक** सफल अभियानों का नेतृत्व किया और त्रिपक्षीय संघर्ष में गुर्जर-प्रतिहारों और बंगाल के पालों को पराजित किया। उन्होंने पूर्वी चालुक्यों को भी अपने अधीन किया और तलकाड के गंगों को अपने अधीन कर लिया।
- इतिहासकारों के अनुसार, **उनके शासनकाल के दौरान राष्ट्रकूट एक अखिल भारतीय शक्ति बन गए** ।
- **गोविंद तृतीय** के सिंहासनारोहण ने राष्ट्रकूटों के लिए सफलता के एक शानदार युग का सूत्रपात किया। उन्होंने उपजाऊ गंगा के मैदानों पर नियंत्रण के लिए राष्ट्रकूटों, पालों और प्रतिहारों के बीच त्रिकोणीय संघर्ष में भी सक्रिय भाग लिया। **संजन शिलालेख** में वर्णित अनुसार , उन्होंने प्रतिहार सम्राट **नागभट्ट द्वितीय** और पाल सम्राट **धर्मपाल** पर विजय प्राप्त की। उनके सैन्य कारनामों की तुलना अक्सर सिकंदर महान के कारनामों से की जाती है।
- उनके शासनकाल में राष्ट्रकूट साम्राज्य केप कोमोरिन से कन्नौज तक और बनारस से भरूच तक के क्षेत्रों में फैल गया।
- **गोविंदा तृतीय के उत्तराधिकारी अमोघवर्ष प्रथम ने महाराष्ट्र के मान्यखेत को** अपनी राजधानी बनाया और एक विशाल साम्राज्य पर शासन किया। वह कला, साहित्य और धर्म के महान संरक्षक थे। राष्ट्रकूट राजा **अमोघवर्ष प्रथम का** जन्म 800 ईस्वी में नर्मदा नदी के किनारे एक सैन्य शिविर में हुआ था, जब **उनके पिता गोविंदा द्वितीय** उत्तर भारत के सफल अभियान के बाद लौट रहे थे।
- **अमोघवर्ष प्रथम** कन्नड़ और संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। **उनकी रचना** कविराजमार्ग कन्नड़ काव्यशास्त्र में एक मील का पत्थर मानी जाती है।
- उनके धार्मिक स्वभाव, कला और साहित्य में उनकी रुचि और शांतिप्रिय स्वभाव के कारण, उनकी तुलना अक्सर

महान सम्राट अशोक से की जाती है और उन्हें प्यार से **'दक्षिण का अशोक' कहा जाता है।**

राष्ट्रकूटों के प्रमुख शासक

- **दंतिदुर्ग:**
- **दंतिदुर्ग राष्ट्रकूट** साम्राज्य का संस्थापक था जिसने अपनी राजधानी आधुनिक शोलापुर के निकट **मान्यखेत** या **मालखेड में स्थापित की थी। वह कर्क द्वितीय** का समकालीन प्रतीत होता है ।
- **दंतिदुर्ग ने पल्लवों** की राजधानी **कांची पर** आक्रमण किया और **नंदिवर्मन पल्लवमल्ल** के साथ गठबंधन किया ।
- **दंतिदुर्ग ने 753 ई.** में विशाल **चालुक्य साम्राज्य** के बाहरी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और फिर साम्राज्य के हृदय पर आक्रमण कर **कीर्तिवर्मन को आसानी से पराजित कर दिया।**
- **754 ई.** के समनगढ़ शिलालेख **में** दर्ज है कि **दंतिदुर्ग ने बादामी** के
  अंतिम **चालुक्य** शासक कीर्तिवर्मन **द्वितीय** को उखाड़ फेंका और पूर्ण शाही पद ग्रहण किया तथा स्वयं का वर्णन इस प्रकार किया:
  - **पृथ्वीवल्लभ,**
  - **महाराजाधिराज,**
  - **परमेश्वर, और**
  - **परमभट्टारक.**
- **दंतिदुर्ग ने अपने क्षेत्र का वर्णन चार लाख गांवों के रूप में किया है, जिसमें संभवतः बादामी** के **चालुक्य साम्राज्य** के आधे से कुछ अधिक भाग पर उसका आधिपत्य शामिल था ।
- **दंतिदुर्ग की निःसंतान मृत्यु हो गई, जिसके कारण उसके चाचा कृष्णराज प्रथम** और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच विवाद हुआ ।
- **Krishnaraja I:**
- **कृष्णराज प्रथम** अपनी लोकप्रियता के कारण **756 ई.** में सिंहासन पर कब्जा करने में सफल रहे ।
- **उन्हें शुभतुंग (समृद्धि में उच्च)** और **अकालवर्ष (निरंतर वर्षा करने वाला)** की उपाधियाँ प्राप्त थीं, जिनका उल्लेख **772 ई.** के **कृष्णराज प्रथम के भंडक** शिलालेख में मिलता है ।
- उनके अधीन नव स्थापित **राष्ट्रकूट** साम्राज्य का सभी दिशाओं में विस्तार हुआ।
- **उन्होंने बादामी के चालुक्यों को** उखाड़ फेंकने से शुरुआत की ।
- **772 ई. की भण्डक प्लेटों से** पता चलता है कि सम्पूर्ण **मध्य प्रदेश** उसके शासन के अधीन था।
- **दक्षिणी कोंकणा को भी कृष्णराज प्रथम** ने जीतकर अपने अधीन कर लिया।
- **उन्होंने गंग राज्य** पर आधिपत्य स्थापित करके दक्षिण दिशा में भी अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।
- **इस प्रकार, कृष्णराज प्रथम** के अधीन राष्ट्रकूट साम्राज्य का विस्तार **आधुनिक** महाराष्ट्र राज्य के सम्पूर्ण भाग, **कर्नाटक के एक बड़े भाग, आंध्र प्रदेश,** पूर्व में वेंगी **तक** फैला हुआ माना जा सकता है, जो इसका प्रभुत्व था, तथा **मध्य प्रदेश का एक बड़ा भाग भी इसमें शामिल था।**
- **कृष्णराज प्रथम की मृत्यु 772 ई.** और **775 ई.** के बीच हुई और उनके बाद उनके पुत्र **गोविंद द्वितीय** सिंहासन पर बैठे ।
- **गोविंदा द्वितीय:**
- **गोविंद द्वितीय (774-780 ई.) को प्रभुतावर्ष (प्रचुर वर्षा करने वाला)** और **विक्रमावलोक (वीर रूप वाला व्यक्ति) की** उपाधियाँ प्राप्त हैं ।
- बाद में प्राप्त कुछ अनुदानों में उनका नाम **छोड़ दिया गया है।**
- **यह उनके और उनके छोटे भाई ध्रुव** के बीच सिंहासन के लिए गृह युद्ध के कारण हुआ था, जो **नासिक** और **खानदेश** के क्षेत्र में राज्यपाल के रूप में शासन कर रहे थे।
- भाइयों के बीच पहला युद्ध **गोविंदा द्वितीय के लिए विनाशकारी रूप से समाप्त हुआ।**
- **ध्रुव:**
- **ध्रुव (780 – 793 ई.)** ने ये उपाधियाँ धारण कीं:
  - **निरुपमा (अद्वितीय)**
  - **काली-वल्लभ (युद्ध निधि)**
  - **धारावर्षा (भारी वर्षा)**
  - **श्रीवल्लभ (भाग्य के पसंदीदा)**
- **ध्रुव ने** सिंहासन प्राप्त करने के बाद, उन सभी राजाओं को कठोर दंड दिया, जिन्होंने गृहयुद्ध में **गोविंद द्वितीय की सहायता की थी।**
- उन्होंने अपने जीवनकाल में ही अपने **छोटे** लेकिन सबसे योग्य पुत्र **गोविंद तृतीय को राजा बना दिया।**
- **गोविंदा तृतीय:**

- **गोविंद तृतीय (793-814)** महानतम **राष्ट्रकूट** शासकों में से एक बने, जिनके पास ये उपाधियाँ थीं:
  - **जगत्तुंगा (दुनिया में प्रमुख)**
  - **कीर्ति-नारायण (प्रसिद्धि के संबंध में स्वयं नारायण)**
  - **जनवल्लभ (लोगों का पसंदीदा)**
  - **त्रिभुवनाधवला (तीनों लोकों में पवित्र)**
  - **प्रभुतावर्षा (प्रचुर वर्षा करने वाला)**
  - **Shrivallabha**
- उन्होंने सबसे पहले दक्षिण में अपने बड़े भाइयों के विद्रोह को दबाया।
- उत्तर में, **कन्नौज के नागभट्ट के विरुद्ध सफल अभियान और कोसल, कलिंग, वेंगी, दहला** और **ओद्रका** के साथ-साथ **मालवा** पर कब्ज़ा करने के बाद, **गोविंदा तृतीय ने** पुनः दक्षिण की ओर रुख किया।
- अपने पिता की अपेक्षाओं से भी बेहतर प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने कूटनीति और युद्धक्षेत्र दोनों में अपने कौशल के माध्यम से **राष्ट्रकूट** साम्राज्य की ख्याति **हिमालय से लेकर केप कोमोरिन तक फैला दी।**
- **गोविंदा के** उत्तराधिकारी उनके एकमात्र पुत्र **महाराजा सर्व बने, जिन्हें अमोघवर्ष प्रथम** के नाम से जाना जाता है ।

- **अमोघवर्ष प्रथम:**

- **अमोघवर्ष प्रथम (814-878 ई.) ने अपने पिता की तरह स्वयं को राष्ट्रकूट** सम्राटों में सबसे महान साबित किया ।
- उनके पास ये उपाधियाँ थीं:
  - **Nripatunga (exalted among kings)**
  - **अतिशयधवल (आचरण में अद्भुत श्वेत)**
  - **महाराजा-शंदा (महान राजाओं में सर्वश्रेष्ठ)**
  - **वीर-नारायण (वीर नारायण)**
- समकालीन भारत की धार्मिक परंपराओं में उनकी गहरी रुचि थी और वे अपना समय जैन भिक्षुओं की संगति और अन्य आध्यात्मिक साधनाओं में व्यतीत करते थे।
- **उनके शिलालेखों में उन्हें जैन धर्म** के सबसे प्रमुख अनुयायियों में गिना गया है ।
- वे न केवल स्वयं एक लेखक थे बल्कि **लेखकों के संरक्षक** भी थे ।
- **आदिपुराण के लेखक जिनसेना**, **अमोघवर्ष प्रथम** के **जैन उपदेशकों** में से थे ।
- उन्होंने न केवल जैन धर्म को बढ़ावा दिया बल्कि ब्राह्मण धर्म को भी बढ़ावा दिया और अपनी प्रजा के कल्याण के लिए कई अनुष्ठान भी किए।
- उनकी मृत्यु के बाद लगभग **879 ई. में उनके पुत्र कृष्ण द्वितीय ने सिंहासनारूढ़ किया।**

- **कृष्ण द्वितीय:**

- **Krishna II (878–914 CE)** had the titles **Akalavarsha** and **Shubhatunga.**
- वह विद्रोहों को रोकने में पूरी तरह सफल नहीं रहे।
- उनके शासनकाल की एकमात्र सफलता लता वायसराय का अंत था।
- **वेंगी** और **चोलों के** विरुद्ध उसने जो युद्ध किये, उनसे उसे कुल मिलाकर केवल **विपत्ति, अपमान** और कुछ समय के लिए **निर्वासन ही मिला।**

- **इंद्र तृतीय:**

- **इंद्र तृतीय 915 ई.** में राजा बने । इंद्र तृतीय की ये उपाधियाँ थीं:
  - **नित्यवर्षा (निरंतर वर्षा करने वाला)**
  - **Rattakandarapa**
  - **Kirti-Narayana**
  - **Rajamarathanda**
- **अमोघवर्ष** प्रथम के पोते **इंद्र तृतीय ने** साम्राज्य की पुनः स्थापना की।
- **राष्ट्रकूट** सेनाओं का **लता** और **मालवा से होते हुए कालपी** और **कन्नौज** तक आगे बढ़ना तथा **महीपाल** को गद्दी से उतारना , निस्संदेह, **इंद्र की महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धियां थीं।**
- **915 ई. में महीपाल** की पराजय और **कन्नौज** की लूट के बाद, इंद्र तृतीय अपने समय का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- **इंद्र तृतीय का शासनकाल 927 ई.** के अंत में समाप्त हो गया ।
- **उनके बाद उनके पुत्र अमोघवर्ष द्वितीय** सिंहासन पर बैठे और **सिलाहारा अपराजिता (997 ई.) के भण्डाना** अनुदान के अनुसार एक वर्ष तक शासन किया ।

- **कृष्ण तृतीय:**

- **कृष्ण तृतीय** प्रतिभाशाली शासकों की पंक्ति में अंतिम थे।
- **कृष्ण तृतीय ने चोल राजा परान्तक प्रथम (949 ई.) को** पराजित किया , **चोल साम्राज्य** के उत्तरी भाग पर कब्जा कर लिया और **चोल राज्य को** अपने सेवकों में बांट दिया।
- **इसके बाद उन्होंने रामेश्वरम** की ओर प्रस्थान किया और वहां एक **विजय स्तम्भ** स्थापित किया तथा एक मंदिर का निर्माण कराया।

- **उनकी मृत्यु के बाद, 966 ई. के** अंत में या **967 ई. के** आरंभ में उनके सभी विरोधी उनके उत्तराधिकारी सौतेले भाई खोट्टिग के विरुद्ध एकजुट हो गए। **972 ई. में परमार राजाओं** ने राष्ट्रकूटों की राजधानी **मान्यखेत को** लूटा, जलाया और **समाट को मान्यखेत** छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा ।

प्रशासन

- अन्य समकालीन राज्यों की तरह, राष्ट्रकूट प्रशासन भी **राजतंत्रात्मक था, जिसमें राजा को सभी सर्वोच्च शक्तियां प्राप्त थीं** ।
- राजा के अधीन मुख्यमंत्री (महासंधिविग्रही) एक महत्वपूर्ण पद ग्रहण करता था। प्रशासन **के** क्रम में मुख्यमंत्री के बाद **सेनापति (दंडनायक)** , **विदेश मंत्री (महाक्षपटलधिकृत)** और एक **प्रधानमंत्री (महामात्य या पूर्णमात्य) होते थे।**
- **समाट और सामंत आधारित प्रशासन:**
- एक शक्तिशाली राजतंत्र साम्राज्य का मूल था, जिसे बड़ी संख्या में सामंतों की सहायता प्राप्त थी।
  - **दिलचस्प बात यह है कि प्रत्येक राष्ट्रकूट** राजा के शासनकाल की परिपक्वता के साथ राज्य अधिक से अधिक सामंतवादी होता जा रहा था ।
- इन राज्यों में प्रशासन की प्रणाली **गुप्त साम्राज्य** और उत्तर में **हर्ष साम्राज्य** तथा दक्कन में **चालुक्यों के विचारों और प्रथाओं पर आधारित थी।**
- पहले की तरह, सम्राट ही प्रशासन के प्रमुख और सशस्त्र बलों के कमांडर-इन-चीफ सहित सभी शक्तियों का स्रोत था।
- **कानून एवं व्यवस्था:**
- राजा राज्य के भीतर **कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था और अपने परिवार, मंत्रियों, जागीरदारों, सामंतों, अधिकारियों और सेवकों से पूर्ण निष्ठा और आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता था।**
- **वंशानुगत उत्तराधिकार प्रणाली:**
- राजा का पद सामान्यतः वंशानुगत था, लेकिन उत्तराधिकार के नियम कठोर रूप से निश्चित नहीं थे।
- सबसे बड़ा बेटा अक्सर सफल होता था, लेकिन कई बार ऐसे भी उदाहरण थे जब सबसे बड़े बेटे को अपने छोटे भाइयों से लड़ना पड़ता था और कभी-कभी वह उनसे हार जाता था।
  - इस प्रकार, **राष्ट्रकूट** शासक **ध्रुव** और **गोविंद चतुर्थ ने** अपने बड़े भाइयों को पदच्युत कर दिया।
- राजाओं को आम तौर पर प्रमुख परिवारों से चुने गए कई वंशानुगत मंत्रियों द्वारा सलाह और सहायता दी जाती थी।
- **महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद:**
- **अभिलेखीय और साहित्यिक अभिलेखों** से ऐसा प्रतीत होता है कि लगभग हर राज्य में एक **मुख्यमंत्री,** एक विदेश मंत्री, एक **राजस्व मंत्री** और **कोषाध्यक्ष, सशस्त्र बलों का प्रमुख, मुख्य न्यायाधीश** और **पुरोहित होते थे।**
- **प्रशासनिक क्षेत्र का विभाजन:**
- **राष्ट्रकूट साम्राज्य** में प्रत्यक्ष रूप से प्रशासित क्षेत्रों को विभाजित किया गया था:
  - Rashtra (province)
  - विषय
  - Bhukti
- **अमोघवर्ष प्रथम के राज्य में सोलह 'राष्ट्र'** शामिल थे । राष्ट्र पर एक **राष्ट्रपति का** शासन था और विषय पर एक **विषयपति का।** ग्राम या गाँव सबसे निचला विभाग था जिसका पर्यवेक्षण एक **ग्रामपति या प्रभु गवुंद द्वारा किया जाता था।**
- **विभाजित क्षेत्र का प्रशासन:**
- विषय **, विषयपति** के अधीन एक आधुनिक जिले के समान था , तथा **भुक्ति** उससे छोटी इकाई थी।
- **राष्ट्रकूट** प्रशासन में प्रांतीय गवर्नरों और जिला स्तर के गवर्नरों को क्रमशः **राष्ट्रमहात्तार** और **विषयमहात्तार** नामक सहायकों का एक निकाय सहायता प्रदान करता था।
- इन छोटी इकाइयों और उनके प्रशासकों की भूमिकाएं और शक्तियां स्पष्ट नहीं हैं।
- **ऐसा प्रतीत होता है कि उनका प्राथमिक उद्देश्य भू-राजस्व** की वसूली तथा **कानून-व्यवस्था** पर ध्यान देना था।
- **ऐसा प्रतीत होता है कि सभी अधिकारियों को किराया-मुक्त भूमि** का अनुदान देकर भुगतान किया जाता था ।
- गाँव प्रशासन की मूल इकाई था। गाँव का प्रशासन ग्राम प्रधान और ग्राम लेखाकार द्वारा चलाया जाता था, जिनके पद सामान्यतः वंशानुगत होते थे।
- उन्हें **लगान-मुक्त भूमि का अनुदान दिया गया।**
- मुखिया को अक्सर अपने कर्तव्यों में **गांव के बुजुर्ग द्वारा मदद दी जाती थी , जिन्हें ग्राम-महाजन या ग्राम-महात्तारा** कहा जाता था ।
- **राष्ट्रकूट साम्राज्य** में , विशेष रूप से **कर्नाटक** में , स्थानीय स्कूलों, तालाबों, मंदिरों और

सड़कों का प्रबंधन करने के लिए ग्राम समितियां थीं, जो मुखिया के साथ निकट सहयोग करती थीं और राजस्व संग्रह का एक विशेष प्रतिशत प्राप्त करती थीं।

- शहरों में भी ऐसी ही समितियाँ होती थीं, जिनमें व्यापार संघों के प्रमुख भी शामिल होते थे।
- शहरों और उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था की जिम्मेदारी **कोष्टपाल** या **कोतवाल की होती थी।**
- छोटे-मोटे सरदारों और बढ़ती हुई वंशानुगत शक्तियों ने ग्राम समितियों की शक्ति को कमज़ोर कर दिया। केंद्रीय शासन के लिए भी उन पर अपना अधिकार जताना और उन्हें नियंत्रित करना मुश्किल हो गया। इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार सामंतवादी होती जा रही थी।

- **राष्ट्रकूट की रक्षा इकाइयाँ:**
- राष्ट्रकूट **राजाओं के** पास बड़ी और **सुव्यवस्थित पैदल सेना, घुड़सवार सेना** और **बड़ी संख्या में युद्ध-हाथी थे, जिनका उल्लेख अरब यात्रियों के इतिहास** में मिलता है ।
- विशाल सशस्त्र सेनाएं सीधे तौर पर राजा की शान-शौकत और शक्ति से जुड़ी थीं, जो युद्ध के युग में साम्राज्य के रखरखाव और विस्तार के लिए भी आवश्यक थी।
- राष्ट्रकूट अपनी सेना में **अरब, पश्चिम एशिया** और **मध्य एशिया** से आयातित बड़ी संख्या में घोड़ों के लिए प्रसिद्ध थे **।**
- **राष्ट्रकूटों** की वास्तविक शक्ति उनके कई किलों से परिलक्षित होती है, जिनमें विशेष सैन्य टुकड़ियाँ और स्वतंत्र सेनापति तैनात थे।
- पैदल सेना में नियमित और अनियमित सैनिक तथा जागीरदार प्रमुखों द्वारा प्रदान की गई सेना शामिल थी।
- नियमित सेनाएं प्रायः वंशानुगत होती थीं और कभी-कभी पूरे भारत के विभिन्न क्षेत्रों से ली जाती थीं।
- ऐसे युद्ध रथों का कोई उल्लेख नहीं है जो उपयोग से बाहर हो गए हों।

अर्थव्यवस्था

- राष्ट्रकूट साम्राज्य की अर्थव्यवस्था **कृषि और प्राकृतिक उपज , प्रदेशों की अधीनता से प्राप्त धन और विनिर्माण उद्योगों** से प्राप्त राजस्व पर आधारित थी। कपास दक्षिणी गुजरात, खानदेश और बरार के राष्ट्रकूट क्षेत्रों की **प्रमुख फसल थी ।**
- **उज्जैन, पैठण और तगर वस्त्र उद्योग के महत्वपूर्ण केंद्र थे** । मलमल का कपड़ा पैठण और वारंगल में बुना जाता था। **सूती धागे और कपड़े का निर्यात भरूच बंदरगाह से किया जाता था** । दक्कन की मिट्टी, हालाँकि गंगा के मैदानों जितनी उपजाऊ नहीं थी, फिर भी खनिजों से भरपूर थी।
- **कुडप्पा, बेल्लारी, अहमदनगर, बीजापुर और धारवाड़ की तांबे की खदानें** आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत थीं और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। **हीरे कुरनूल और गोलकुंडा में खनन किए जाते थे और राजधानी मान्यखेत और देवगिरि** हीरा और आभूषण व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र थे।
- चमड़ा **और चर्मशोधन उद्योग भी गुजरात** और उत्तरी महाराष्ट्र के कई क्षेत्रों में समृद्ध हुआ।
- राष्ट्रकूट साम्राज्य उपमहाद्वीप के अधिकांश पश्चिमी समुद्री तट पर नियंत्रण रखता था जिससे समुद्री व्यापार भी सुगम होता था। साम्राज्य को **भरूच बंदरगाह** से अच्छी-खासी आय होती थी , जो उस समय दुनिया के सबसे प्रमुख बंदरगाहों में से एक था। उनके शासनकाल में, कलाकार और शिल्पकार व्यक्तिगत व्यवसायों के बजाय निगमों (गिल्ड) के रूप में कार्य करते थे।

साहित्य

- **राष्ट्रकूट काल सामान्यतः दक्षिण भारतीय साहित्य और विशेष रूप से कन्नड़ साहित्य के** विकास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग था । कन्नड़ राष्ट्रकूटों की **दरबारी भाषा थी और उनके अभिलेख अधिकांशतः कन्नड़ भाषा में उत्कीर्ण थे।**
- हालाँकि, कुछ राजकीय अभिलेख **संस्कृत में भी** लिखे गए थे । कन्नड़ भाषा में काव्यशास्त्र की सबसे प्राचीन कृति, **कविराजमार्ग, अमोघवर्ष प्रथम के समय लिखी गई थी । आदिकवि पंपा** , जिन्हें कन्नड़ के महानतम लेखकों में से एक माना जाता है, राष्ट्रकूट शासन के दौरान **आदिपुराण** के लिए प्रसिद्ध हुए ।
- राष्ट्रकूट काल के शिलालेख अत्यंत गौरवशाली हैं। राष्ट्रकूट शिलालेखों की एक उल्लेखनीय विशेषता **संदेशों की साहित्यिक विषयवस्तु** है ।
- उदाहरण के लिए, प्रतिहार राजा महिपाल को हराने के लिए मालवा में राष्ट्रकूट सेना के मार्च को एक समृद्ध शहर (महोदय) को कुशस्थली (घास का मैदान) में बदलने के रूप में वर्णित किया गया है।

कला और वास्तुकला

- राष्ट्रकूटों की कला और स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरण **एलोरा और एलिफेंटा** में पाए जाते हैं । एलोरा में, सबसे उल्लेखनीय विशेषता **कैलास मंदिर है। इसकी**

खुदाई राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम के शासनकाल में हुई थी। यह एक अखंड तरीके से ऊपर से नीचे की ओर उत्खनित तीन मंजिला मंदिर के रूप में निर्मित है।

- कैलास **मंदिर अपनी सुंदर मूर्तियों के कारण एक वास्तुशिल्प चमत्कार माना जाता है**। कैलास मंदिर की सामान्य विशेषता मंदिर निर्माण की द्रविड़ शैली से मिलती जुलती है।
- राष्ट्रकूटों की मूर्तिकला कला **मुंबई के पास एलिफेंटा द्वीप समूह** में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची । एलोरा और एलिफेंटा की मूर्तियाँ आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर **द्वारपालों** की सजीव आकृतियाँ हैं । गर्भगृह के चारों ओर प्राकार की दीवारों पर **शिव की विभिन्न आकृतियों - नटराज, गंगाधर, अर्धनारीश्वर और सोमस्कंद - की** मूर्तियाँ उकेरी गई हैं ।

राजवंश का महत्व

- **मान्यखेत (मालखेड़ा) के राष्ट्रकूटों के शासन का** भारत पर, विशेषकर उत्तरी भागों पर बहुत प्रभाव पड़ा।
- सुलेमान और अल मसूदी जैसे अरब **विद्वानों ने लिखा है कि राष्ट्रकूट साम्राज्य समकालीन भारत में सबसे बड़ा था** और सुलेमान ने इसे दुनिया के चार महान समकालीन साम्राज्यों में स्थान दिया।
- 10वीं शताब्दी में **अल मसूदी** द्वारा लिखे गए यात्रा वृत्तांत के अनुसार , **अधिकांश राजा राष्ट्रकूट सम्राटों को श्रद्धांजलि देते थे।**
- **राष्ट्रकूट राजाओं ने 'राजाधिराज'** की उपाधि धारण की, जिनके पास सबसे शक्तिशाली सेनाएं थीं और जिनका राज्य **कोंकण से सिंध तक फैला हुआ था।**
- उनका शासन दक्षिण भारतीय साहित्यिक परंपराओं और गुफा-वास्तुकला के चमत्कारों के विकास का स्वर्णिम काल था।

राजपूत (राजपूत राजवंश)

- राजपूत (जिसका अर्थ है **राजा-पुत्र** या 'राजा का बेटा') एक योद्धा वंश है जो **उत्तर भारत के शासक हिंदू योद्धा वर्ग के वंशज होने का दावा करता है। उनका शासन पश्चिमी, मध्य और उत्तरी भारत से लेकर पाकिस्तान के कुछ हिस्सों तक** फैला हुआ था ।
- राजपूतों का उदय **छठी से बारहवीं शताब्दी के दौरान हुआ। 20वीं शताब्दी तक, राजपूतों ने राजस्थान और सौराष्ट्र** की अधिकांश रियासतों पर शासन किया ।
- **राजपूतों ने युद्ध को अपना मुख्य व्यवसाय** बनाया और संकट के समय अदम्य साहस का परिचय दिया। हालाँकि, वे जनहित को शासक वर्ग के हित से जोड़ने में विफल रहे। भारत के लिए इसका सबसे गंभीर परिणाम यह हुआ कि जब विदेशी आक्रमणकारियों ने भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा से आक्रमण करना शुरू किया, तो भारतीय समाज आसानी से बिखर गया।
- हर्ष की मृत्यु (647 ई.) और उत्तर भारत पर मुस्लिम विजय के बीच के काल को मध्यकालीन इतिहासकार अक्सर राजपूत काल कहते हैं, जो एक हद तक ग़लत है। हालाँकि उनका समाज पर प्रभाव ज़रूर पड़ा, फिर भी वे भारतीय समाज का एक छोटा-सा हिस्सा ही थे।

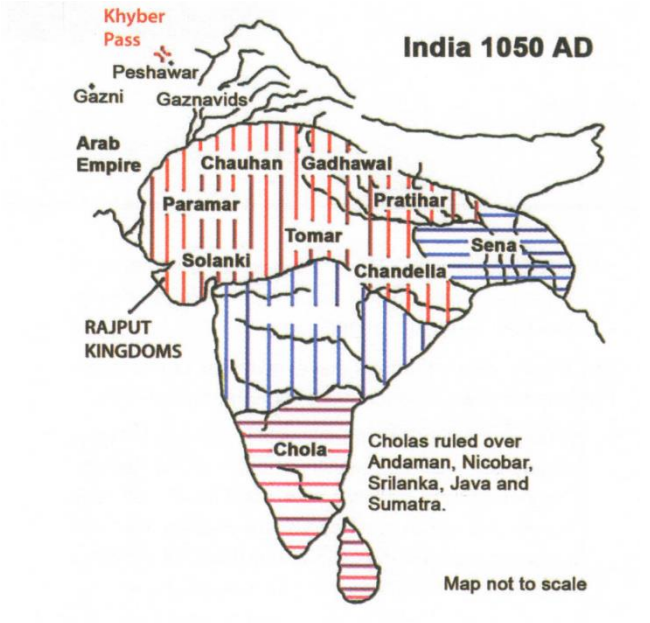

राजपूतों की उत्पत्ति

- राजपूतों की उत्पत्ति इतिहासकारों के बीच एक गरमागरम बहस का विषय है। दो सबसे प्रसिद्ध सिद्धांत इस प्रकार हैं:

1. कुछ राजपूत अपनी उत्पत्ति **पौराणिक सूर्यवंश और चंद्रवंश से मानते हैं। वे वैदिक प्रसिद्धि वाले क्षत्रियों** के वंशज होने का दावा करते हैं। 'राजपूत' शब्द संस्कृत शब्द राजपुत्र से लिया गया प्रतीत होता है। **बाण** इस शब्द का प्रयोग **उच्च कुल के क्षत्रिय** के लिए करते हैं । राजपूतों के छत्तीस शाही क्षत्रिय कुलों का उल्लेख पवित्र ग्रंथों, पुराणों और दो महान भारतीय महाकाव्यों, महाभारत और रामायण में मिलता है। **राजपूतों की तीन मूल वंशावली सूर्यवंशी, चंद्रवंशी और अग्निवंशी हैं** । इन बिंदुओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि राजपुत्र या राजपूत शब्द प्राचीन काल में जाना जाता था।
2. **अंगुलिका सिद्धांत:** कवि **चंदबरदाई ने** अपनी काव्य रचना 'पृथ्वीराज रासो' में एक किंवदंती दी है कि परमार, चौहान, प्रतिहार और चालुक्य वंश के राजपूत **आबू पर्वत पर स्थित वशिष्ठ के यज्ञ कुण्ड** से आए थे । इसे अग्निकुल उत्पत्ति का सिद्धांत कहा जाता है। कुछ राजपूत आज भी अपने '**अग्निकुल मूल**' का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते हैं।

- ऊपर दिए गए सिद्धांतों में **पौराणिक** अर्थ छिपा है। निम्नलिखित दो सिद्धांतों में कुछ तथ्यात्मक वैधता है:

1. भारतीय समाज में क्षत्रियों की विभिन्न नृवंशविज्ञान और परंपराएं **राजपूतों के आर्य मूल की** ओर इशारा करती हैं ।
   - राजपूतों द्वारा किया जाने वाला अश्वमेध यज्ञ, सती प्रथा और सूर्य पूजा हिंदू समाज में गहराई से समाहित थे। राजपूत वंश की क्षत्रिय उत्पत्ति का यह सिद्धांत अब अधिक स्वीकार्य है।
2. इतिहासकारों का एक समूह यह भी बताता है कि राजपूत **शक, हूण, कुषाण और गुर्जर के वंशज** थे , जो यहीं बस गए और हिंदू धर्म का पालन करने लगे।
   - कुछ इतिहासकारों ने आगे सुझाव दिया है कि पाँचवीं और छठी शताब्दी में हूणों और अन्य विदेशी जनजातियों

के आक्रमण ने उत्तर में भारतीय समाज की नींव हिला दी। इससे जातियों और शासक परिवारों में पुनर्व्यवस्था आई। जब संतुलन स्थापित हुआ, तो पाया गया कि विभिन्न जातियों के लोग एक साथ मिल गए, जिन्हें राजपूत कहा गया। हालाँकि, राजपूतों के विदेशी मूल के सिद्धांत को कम मान्यता प्राप्त है।

राजपूत राज्य और राजवंश

हिंदूशाही राजवंश

- इस राजवंश ने **अफ़गानिस्तान और पंजाब के कुछ हिस्सों पर शासन किया** ।
- **जयपाल इसके पहले राजपूत राजा थे** जिन्होंने अंतिम ब्राह्मण राजा भीमदेव का उत्तराधिकारी बनकर राज किया। 1001 ई. में, उन्हें **महमूद गजनवी ने पराजित किया** जिसके बाद उन्होंने आत्मदाह कर लिया।
- उनके उत्तराधिकारी **आनंद पाल ने** भी महमूद के खिलाफ लड़ाई लड़ी लेकिन वह भी 1008 में **वैहिंद की लड़ाई में हार गए।**
- इसके अंतिम राजा **भीमपाल** की मृत्यु 1024 ई. में हुई। उन्होंने 964 ई. से 1026 ई. तक शासन किया।

चौहान वंश

- चौहानों ने 956 से 1192 ई. के बीच **वर्तमान राजस्थान के पूर्वी भागों पर शासन किया, जिसकी राजधानी अजमेर थी, तथा बाद में उन्होंने अपना क्षेत्र आधुनिक पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और दिल्ली के कुछ हिस्सों तक विस्तारित किया।**
- इस राजपूत राजवंश की **स्थापना सिंहराज ने की** थी , जिन्हें **अजमेर शहर के संस्थापक के रूप में जाना जाता है।**
- **पृथ्वीराज चौहान को** सभी चौहान शासकों में सबसे महान माना जाता है। उनके शासनकाल में, राज्य का विस्तार दिल्ली, अजमेर, आधुनिक रोहिलखंड, कालिंजर, हांसी, कालपी और महोबा तक था। उन्होंने पंजाब के गजनवी शासक से भटिंडा (पंजाब में) पर विजय प्राप्त की और तराइन के प्रथम युद्ध (1191) में मुहम्मद गोरी को हराया। हालाँकि, तराइन के द्वितीय युद्ध (1192) **में उनकी हार हुई ।**

सोलंकी राजवंश (गुजरात का चालुक्य राजवंश)

- **सोलंकी ने 945 और 1297 ई. के बीच** वर्तमान भारतीय राज्य गुजरात पर अपना शासन स्थापित किया ।
- **मूलराज के शासनकाल** में उनका राज्य प्रमुखता से उभरा । उन्होंने अपनी राजधानी **अन्हिलवाड़ा** में स्थापित की ।

परमार वंश

- **उपेन्द्र (कृष्णराज)** इस वंश के संस्थापक थे।
- **भोज** इस वंश का सबसे प्रमुख शासक था। उसने **भोजपुर शहर का निर्माण कराया** और **भोजशाला की स्थापना की, जो संस्कृत अध्ययन का केंद्र था** । परमार शासन के दौरान मालवा को राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा का उच्च स्तर प्राप्त था।
- परमारों ने **संस्कृत कवियों और विद्वानों को संरक्षण दिया** । महान शासक भोज स्वयं एक प्रसिद्ध विद्वान थे।
- अधिकांश परमार राजा **शैव** थे और उन्होंने कई शिव मंदिर स्थापित किये, यद्यपि उन्होंने जैन विद्वानों को भी संरक्षण दिया।

चंदेला राजवंश

- इस राजपूत वंश की **स्थापना जयशक्ति ने की थी। उन्होंने महोबा को अपनी राजधानी बनाकर बुंदेलखंड के** क्षेत्रों पर शासन किया ।
- चंदेल अपनी कला और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं, विशेष रूप से उनकी सांस्कृतिक राजधानी **खजुराहो** के मंदिरों के लिए ।
- अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बुंदेलखंड पर विजय प्राप्त करने के बाद यह राजवंश समाप्त हो गया।

Gahadavala Dynasty

- इस राजपूत राजवंश ने 11वीं शताब्दी के अंत से शुरू होकर **लगभग सौ वर्षों तक कन्नौज राज्य पर शासन किया ।**
- **जयचंद्र** , राजवंश के अंतिम शक्तिशाली राजा थे, जिन्हें कुतुबुद्दीन ऐबक के नेतृत्व में गौरी आक्रमण का सामना करना पड़ा। **1194 ई. में चंदावर के युद्ध में वे पराजित हुए और मारे गए** ।

राजवंश ध्वज

- उन्होंने **16वीं शताब्दी** से **बुंदेलखंड पर** शासन किया ।
- मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले में स्थित **ओरछा** के आसपास के क्षेत्रों में बुंदेला राजवंश एक प्रमुख शक्ति थी।
- इस राजवंश की स्थापना **हेमकरण** नामक एक राजपूत राजा ने लगभग 1048 ई. में की थी।
- **औरंगजेब** के नेतृत्व में मुगलों द्वारा ओरछा पर कब्जा करने के साथ ही बुंदेला राजवंश का अंत हो गया।

तोमर राजवंश

- तोमर वंश, उत्तर भारत के प्रारंभिक मध्ययुगीन छोटे शासक परिवारों में से एक था। इस वंश का इतिहास बिखरे हुए स्रोतों से ज्ञात है, और इसके इतिहास का विस्तृत विवरण देना असंभव है। पौराणिक साक्ष्य (पुराणों के लेखन) इसके प्रारंभिक स्थान को हिमालय क्षेत्र में दर्शाते हैं।
- भाट परंपरा के अनुसार, यह **राजवंश 36 राजपूत कबीलों में से एक था।** इस वंश का इतिहास **11वीं शताब्दी ईस्वी में दिल्ली शहर की स्थापना करने वाले** अनंगपाल **के शासनकाल** और 1164 में दिल्ली के चौहान (चाहमान) साम्राज्य में शामिल होने के बीच के काल तक फैला हुआ है।
- यद्यपि बाद में दिल्ली निर्णायक रूप से चौहान साम्राज्य का हिस्सा बन गई, लेकिन मुद्राशास्त्रीय और तुलनात्मक रूप से बाद के साहित्यिक साक्ष्य संकेत देते हैं कि **अनंगपाल और मदनपाल** जैसे तोमर राजा सामंतों के रूप में शासन करते रहे, संभवतः 1192-93 में मुसलमानों द्वारा दिल्ली पर अंतिम विजय तक।

अन्य राजपूत राज्य

- **Parihara Dynasty of Kannauj:**
  - 816 ई. में कन्नौज पर विजय प्राप्त की, जो लगभग एक शताब्दी तक इसकी राजधानी रही, 10वीं शताब्दी में इसका पतन हो गया।
- **Bargujar/Badgujar Dynasty of Rajgarh:**
  - सबसे प्राचीन **सूर्यवंशी राजपूत जनजातियों** में से एक , बड़गुर्जरों ने कई स्मारकों का निर्माण किया, जिनमें प्रसिद्ध **नीलकंठ मंदिर** , जो अब सरिस्का टाइगर रिजर्व में है, कालिंजर में नीलकंठ महादेव मंदिर, अंबर किला और अलवर, माछरी, सवाई माधोपुर में कई अन्य महल और किले शामिल हैं।
  - नीलकंठ या राजोरगढ़, बड़गुजर जनजाति की राजधानी थी। उन्हें **महान गुज्जर भी कहा जाता था।**
- **कुमाऊँ का चंद राजवंश:**
  - **वे उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र** के मध्ययुगीन राजपूत शासक वंश थे ।
- **Jarrals of Kalanaur and Jammu & Kashmir:**
  - राजा नकाशिमा ने कलानौर राज्य की स्थापना की और कलानौर के पहले राजा बने। जर्राल वंश ने 750 वर्षों तक शासन किया। वे चंद्रवंशी वंश के थे।
- **Katoch Dynasty of Kangra:**
  - कटोच चंद्रवंशी राजपूत वंश का एक कबीला है। उनका पारंपरिक निवास क्षेत्र जालंधर स्थित त्रिगर्त साम्राज्य और कांगड़ा किले में था।
  - **उन्होंने हिमाचल प्रदेश के** अधिकांश भाग और पंजाब के कुछ हिस्सों पर शासन किया ।
- **नूरपुर के पठानिया:**
  - 11वीं शताब्दी से 1849 तक **उत्तरी पंजाब और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन किया।**
- **मेवाड़ (उदयपुर) के सिसोदिया:**
  - **सूर्यवंशी वंश का एक भारतीय राजपूत वंश जिसने राजस्थान में मेवाड़** राज्य पर शासन किया ।
- **जयपुर के कछवाहा:**
  - **उन्होंने अलवर, अम्बर (जयपुर) और मैहर** जैसे कई राज्यों और रियासतों पर शासन किया ।
- **मारवाड़ के राठौड़ (जोधपुर और बीकानेर):**
  - उन्होंने कई राज्यों पर शासन किया और स्वयं को सूर्यवंश वंश का वंशज होने का दावा किया।
- **कच्छ के जडेजा:**
  - चंद्रवंशी वंश का हिस्सा माने जाने वाले जडेजा ने 1540 से 1948 तक कच्छ रियासत पर शासन किया।
- झालावाड़, कोटा और बूंदी के **हाड़ा ।**
- **जैसलमेर के भाटी:**
  - They identify themselves as a Chandravanshi Kshatriya clan.

- **Shekhawats of Shekhawati:**
  - शेखावत राजपूतों ने शेखावाटी क्षेत्र पर 500 वर्षों से अधिक समय तक शासन किया।
- जम्मू और कश्मीर का **डोगरा राजवंश ।**

राजपूतों के अधीन समाज

- **धर्म**
  - राजपूत हिंदू धर्म **के कट्टर अनुयायी थे ।**
  - उन्होंने बौद्ध और जैन धर्म को भी संरक्षण दिया।
  - उनके काल में भक्ति पंथ का प्रारम्भ हुआ।
- **सरकार**
  - राजपूत समाज अपनी संगठनात्मक संरचना में **सामंती था।**
  - प्रत्येक राज्य बड़ी संख्या में जागीरों में विभाजित था, जो जागीरदारों के पास होते थे।
- **इस काल की प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ**
  - Kalhana's Rajatarangin – 'River of Kings'
  - जयदेव का गीत गोविंदम - चरवाहे का गीत
  - Somadeva's Kathasaritasagar
  - पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चंदबरदाई ने पृथ्वीराज रासो की रचना की जिसमें उन्होंने पृथ्वीराज चौहान के सैन्य कारनामों का उल्लेख किया है।
  - भास्कराचार्य ने खगोल विज्ञान पर एक पुस्तक सिद्धांत शिरोमणि लिखी।
  - राजशेखर - महेंद्रपाल और महीपाल के दरबारी कवि। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाएँ कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा और बालरामायण थीं।
- **कला और वास्तुकला**
  - भित्ति चित्र और लघु चित्र लोकप्रिय थे।
  - खजुराहो के मंदिर
  - भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर
  - कोणार्क का सूर्य मंदिर
  - माउंट आबू में दिलवाड़ा मंदिर

राजपूतों की सीमाएँ

- राजपूत समाज **अपनी संगठनात्मक संरचना में सामंती** था । यह **विभिन्न कुलों और राज्यों में विभाजित** था । प्रत्येक राज्य पर एक या एक से अधिक वंशानुगत शासक घरानों का शासन था।
- वे **आपस में लड़ते रहे और इस प्रक्रिया में खुद को थकाते रहे** । साथ ही, उनमें **राजनीतिक दूरदर्शिता और दूरदर्शिता का अभाव था और राष्ट्रीय चेतना का अभाव था** । वे राजनीतिक एकता की बजाय व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्राथमिकता देते थे। भूमि के लिए कोई लिखित कानून नहीं था और अधिकांश राजपूत राज्यों का शासन स्थानीय रीति-रिवाजों और परंपराओं के आधार पर चलता था।
- इसके अलावा, राजपूत **अनुकरणीय साहस और वीरता** के लिए जाने जाते थे । वे **ईमानदार, उदार और मेहमाननवाज़ थे और अपने वचन के पक्के थे** । उन्होंने अपने **गौरव को सबसे ऊपर** रखा और युद्ध में छल-कपट के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। ये सिद्धांत तब काम आए जब वे आपस में लड़े, लेकिन जब उन्होंने कट्टर मुस्लिम आक्रमणकारियों से लड़ाई लड़ी, तो ये सिद्धांत बेमानी साबित हुए।
- इस काल में विकसित हुई एक चिंताजनक विशेषता **जाति व्यवस्था की कठोरता और अनेक उपजातियों का निर्माण** थी । ब्राह्मण और क्षत्रिय समाज में सर्वोच्च स्थान पर बने रहे। इसका एक प्रमुख परिणाम यह हुआ कि आम जनता शासक वर्गों से जुड़ने में असमर्थ हो गई।
- उपरोक्त सभी कारणों ने मुस्लिम आक्रमणकारियों के लिए रास्ता आसान कर दिया और जब उन्होंने भारत पर आक्रमण किया तो आंतरिक कमजोरी के कारण भारतीय समाज ध्वस्त हो गया।

राजपूतों का महत्व

- राजपूतों के महत्व का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि **मुस्लिम आक्रमण के विरुद्ध राजपूत ही हिंदू धर्म और संस्कृति के प्रमुख रक्षक थे।** विपत्ति के समय राजपूतों के शौर्य और साहस ने **पीढ़ी दर पीढ़ी प्रेरणा दी है और आज भी दे रहे हैं।** वे महान योद्धा थे और उन्होंने अपने परिवार, कुल और क्षेत्रीय नेताओं के सम्मान के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी।
- राजपूत **महिलाओं को समाज में पर्याप्त स्वतंत्रता और सम्मान प्राप्त था।** वे **अपनी पवित्रता और पति के प्रति समर्पण के लिए जानी जाती** थीं । अपनी इज्जत बचाने के लिए उन्होंने गर्व के साथ **जौहर किया।**

10 महत्वपूर्ण राजपूत साम्राज्य

राज्यों	अवधि	पूंजी	संस्थापक
Chauhan/Chahaman	700 – 1192 ई.	दिल्ली	वासुदेव
Pratihara/Parihar	730 – 1036 ई.	Avanti, Kannauj	नागभट्ट प्रथम
पवार/परमार	790- 1150 ई.	Ujjain, Dhar	सीक द्वितीय 'श्री हर्ष
चौयुक्या/सोलंकी	942 – 1187 ई.	Anihalavada	मूलराज प्रथम
Rastrakuta	752 – 973 ई.	मलखंड/मान्यखेता	दंतिदुर्ग (दंती वर्मन द्वितीय)
Kalchuri/Haihaya	850 – 1211 ई.	त्रिपुरी	कोक्कला ।
Gadhawal/Rathor	1090 – 1194 ई.	Kannauj	चंद्रदेव
लेना	700 – 120ज़/	ढिल्लिका	–
Guhilota/Sisodiya	800 – 1930 ई.	चित्तौड़	बप्पा रावतल, हम्मीर प्रथम

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रख्यात जैन विद्वान **हेमचंद्र** (1089-1172) को सोलंकी राजा जयसिंह सिद्धराज के काल में प्रसिद्धि मिली। हालाँकि, वे उनके उत्तराधिकारी कुमारपाल के दरबार में सलाहकार के रूप में सुशोभित हुए।
- The **greatest Pratihara king was Mihirbhoj** (836-885 AD).
- अजमेर के शासक पृथ्वीराज तृतीय को सामान्यतः पृथ्वीराज चौहान के नाम से जाना जाता था।
- **हम्मीर महाकाव्य** के अनुसार चौहान सूर्य के पुत्र 'चहमान' के वंशज थे।
- **आल्हा-ऊदल महोबा से संबंधित थे** । वे चंदेल राजा परमारदेव (1165-1203 ई.) के सेनापति थे, जिनकी मृत्यु पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध के दौरान हुई थी।
- अनंगपाल तोमर राजपूत (तोमर राजवंश), जो मूल रूप से गुर्जर-प्रतिहारों के सामंत थे, ने 736 ईस्वी में ढिल्लिका (आधुनिक दिल्ली) शहर की स्थापना की।
- **धंगदेव** , जिन्हें धंग के नाम से भी जाना जाता है, जेजाकभुक्ति के चंदेल वंश के राजा थे। उसके शासनकाल के दौरान खजुराहो के दो भव्य मंदिर **-विश्वनाथ और पार्श्वनाथ का** निर्माण किया गया। उन्होंने 999 ई. में **कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण कराया।**
- जेजाकभुक्ति बुंदेलखंड का प्राचीन नाम था।
- गोविंदा चंद्र गढ़वाल की रानी **कुमारदेवी** बौद्ध थीं। उन्होंने **सारनाथ में धर्म चक्र जैन विहार का निर्माण कराया।**

Kingdoms of South India

चोल राजवंश

- मध्यकालीन दक्षिण भारत का इतिहास समाज के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों के अध्ययन में अपना अलग स्थान रखता है। उत्तर में मध्यकालीन भारत का इतिहास उभरते और गिरते साम्राज्यों के कारण **अत्यधिक उथल-पुथल से भरा है । लेकिन मध्यकालीन दक्षिण का इतिहास अपेक्षाकृत स्थिर है** ।
- संगम युग के दौरान तमिल **देश पर तीन राजवंशों अर्थात् चेर, चोल और पांड्यों का शासन था ।**
- इन राजवंशों के राजनीतिक इतिहास का पता संगम साहित्य **जैसे साहित्यिक संदर्भों , मेगस्थनीज, स्ट्रैबो, प्लिनी और टॉलेमी जैसे यूनानी लेखकों के अभिलेखों, अशोक के शिलालेखों,** जिनमें मौर्य साम्राज्य के दक्षिण में **चेर, चोल और पांड्य शासकों का उल्लेख है, तथा कलिंग के खारवेल के** हाथीगुम्फा शिलालेख से लगाया जा सकता है।

चोल राजवंश

- **पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के कुछ समय बाद गुप्त वंश** के अंत के बाद , पूरे उपमहाद्वीप में राजनीतिक विखंडन की प्रक्रिया शुरू हुई। सामंतों और अधीनस्थ शक्तियों ने स्वतंत्र होने के अवसर का लाभ उठाया, जिसके परिणामस्वरूप **छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ** । छोटे राज्यों के उदय ने राजनीतिक वर्चस्व हासिल करने के लिए प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ा दिया।
- **नौवीं शताब्दी ईस्वी तक कांची के पल्लव, बादामी के चालुक्य और मदुरै के पांड्य तीन प्रमुख राज्य बनकर उभरे। गुप्तों के बाद के इस चरण में कृषि अर्थव्यवस्था का और भी अधिक विस्तार हुआ। हम पल्लवों के शासन में तमिलनाडु में** और **बादामी के चालुक्यों के शासन में कर्नाटक** में शिव और विष्णु के पाषाण मंदिरों के निर्माण की शुरुआत के साथ **विजयी ब्राह्मणवाद** की प्रगति भी देखते हैं।

बाद के चोल

- **संगम युग के अंत के बाद, चोल उरईयूर में सामंत बन गए। 9वीं शताब्दी ईस्वी** में दक्षिण भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करके वे फिर से प्रमुखता में आए । **तंजौर चोल साम्राज्य की राजधानी बना।**
- **चोलों ने श्रीलंका और मलय प्रायद्वीप में अपना प्रभुत्व बढ़ाया।** इन चोलों ने दक्षिण पूर्व एशियाई देशों पर अपना उपनिवेश स्थापित किया और उस समय उनके पास दुनिया की सबसे शक्तिशाली सेना और नौसेना थी।

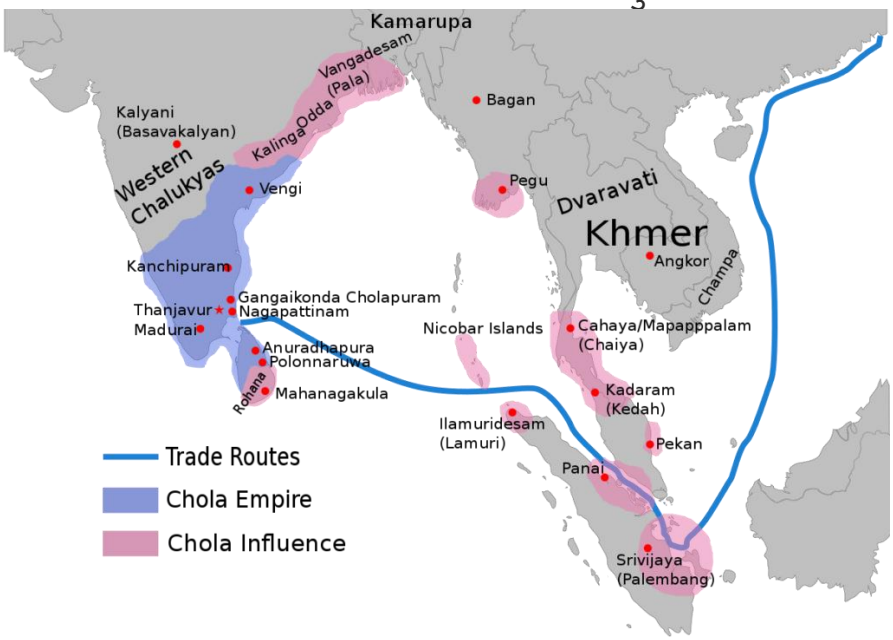

चोल वंश के महत्वपूर्ण शासक

Vijayalaya Chola (848- 871 AD)

- **विजयालय चोल शाही चोल साम्राज्य के संस्थापक थे । उन्होंने कावेरी नदी के उत्तर** में स्थित क्षेत्र पर शासन किया । विजयालय ने पांड्यों और पल्लवों के बीच संघर्ष का लाभ उठाया और **तंजावुर और आसपास के क्षेत्रों को एलंगो मुत्तरैयारों से जीतकर** प्रसिद्धि प्राप्त की , जो मुत्तरैयार वंश के अंतिम शासक थे।
- **तंजावुर पर कब्ज़ा करने के बाद, विजयालय ने देवी निशुंभसुदिनी (दुर्गा)** का एक मंदिर बनवाया । उसने **तंजावुर शहर का जीर्णोद्धार** भी करवाया ।
- विजयालय द्वारा तंजावुर पर कब्ज़ा करने के कुछ समय बाद, पांड्य राजा वरगुणवर्मन द्वितीय और पल्लव राजा नंदीवर्मन तृतीय ने विजयालय के अधीन चोल शक्ति की बढ़ती ताकत को कम करने के लिए हाथ मिला लिया।
- विजयालय चोल, जो कई युद्धों में विजयी रहा था, बूढ़ा हो रहा था और इसलिए उसने सेना का नियंत्रण युवराज **आदित्य प्रथम** को सौंप दिया । 871 ई. में अपने पिता की मृत्यु के बाद, आदित्य प्रथम ने उनके स्थान पर सम्राट का पदभार संभाला।
- **नरत्तमलाई, पुदुक्कोट्टई** में एक सोलेश्वर मंदिर है जिसका श्रेय विजयालय को जाता है।

चोल राजा प्रथम (985 – 1014 ई.)

- **राजराजा चोल प्रथम, जिनका जन्म अरुलमोझी वर्मन के रूप में हुआ था** , चोल साम्राज्य के महानतम सम्राटों में से एक थे जिन्होंने **985 और 1014 ईस्वी के बीच शासन किया।**
- उनके शासनकाल में, चोलों का **विस्तार दक्षिण भारत से आगे उत्तर में कलिंग से लेकर दक्षिण में श्रीलंका तक फैला हुआ था।** राजराज प्रथम के पास एक **मजबूत सेना और एक विशाल नौसेना** थी । उन्होंने उत्तर में चालुक्यों और दक्षिण में पांड्यों के साथ कई युद्ध लड़े।
- वे **हिंदू धर्म के शैव संप्रदाय के** अनुयायी थे , लेकिन **अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु** थे । 1010 में, राजराजा ने **तंजावुर में भगवान शिव को समर्पित बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने नागपट्टिनम में** एक बौद्ध मठ के निर्माण में भी मदद की ।
- राजराज प्रथम ने अपने शासनकाल में कई सफल सैन्य विजय अभियानों में भाग लिया। राजराज प्रथम के अधीन चोल साम्राज्य का विस्तार तमिलनाडु के पांड्य, चेर और तोंडईमंडलम क्षेत्रों, गंगावडी, नोलम्बपडी और सीलोन के उत्तरी भाग तक फैला हुआ था। **राजराज की अंतिम सैन्य उपलब्धि मालदीव द्वीप समूह के विरुद्ध एक नौसैनिक अभियान था।**
- राजराजा चोल प्रथम की मृत्यु 1014 ई. में हुई और **उनके पुत्र राजेंद्र चोल ने उनका स्थान लिया** , जिन्हें 1012 ई. में युवराज घोषित किया गया।
- राजराजा चोल-I के अधीन संगठित शक्तिशाली स्थायी सेना और विशाल नौसेना ने राजेंद्र चोल के अधीन और भी अधिक ऊंचाइयां हासिल कीं।

राजेंद्र चोल-I (1014-44 ईस्वी)

- राजेंद्र चोल को दक्षिण भारत के महानतम शासकों और सेनापतियों में से एक माना जाता है। उन्होंने **1014 ई** . में अपने पिता राजराजा चोल प्रथम का उत्तराधिकारी बना।
- राजेंद्र ने अपने पिता के शासनकाल में अपने सैन्य नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन किया था। शासक बनने के बाद, उन्होंने **अपने पिता की आक्रामक विजय और विस्तार की नीति को जारी रखा** ।
- **उत्तर की ओर गंगा नदी तक पहुंचने और मालदीव और श्रीलंका तक** आगे बढ़ने के अलावा , उन्होंने **मलेशिया, इंडोनेशिया और दक्षिणी थाईलैंड में श्रीविजय के दक्षिण-पूर्व एशियाई क्षेत्रों पर** भी आक्रमण किया, जिससे चोल साम्राज्य भारत के सबसे शक्तिशाली साम्राज्यों में से एक बन गया।
- उनकी महत्वपूर्ण विजयें इस प्रकार हैं:
  - जब श्रीलंका के राजा महिंदा V ने चोलों से श्रीलंका के उत्तरी भाग को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया, तो राजेंद्र ने उसे पराजित कर दिया और दक्षिणी श्रीलंका पर भी कब्जा कर लिया, इस प्रकार **पूरे श्रीलंका पर नियंत्रण कर लिया।**
  - उन्होंने चेर और पांड्य देशों पर चोल अधिकार पुनः स्थापित किया।
  - उन्होंने पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह द्वितीय को पराजित किया और परिणामस्वरूप, तुंगभद्रा नदी को चोलों और चालुक्यों के बीच सीमा के रूप में मान्यता दी गई।

- उनका सबसे महत्वपूर्ण सैन्य अभियान उत्तर भारत का था। चोल सेना ने रास्ते में कई शासकों को हराकर **गंगा नदी पार की । राजेंद्र ने बंगाल के महिपाल प्रथम को हराया।** इस सफल उत्तर-भारतीय अभियान की स्मृति में, **राजेंद्र ने गंगईकोंडचोलपुरम शहर की स्थापना की और शहर में प्रसिद्ध रामेश्वरम मंदिर का निर्माण कराया** । उन्होंने शहर के पश्चिमी भाग में चोलगंगम नामक एक विशाल सिंचाई तालाब का भी उत्खनन करवाया।
- राजेंद्र का एक और प्रसिद्ध अभियान **कदरम या श्रीविजय का उनका नौसैनिक अभियान** था । इस अभियान का वास्तविक उद्देश्य बताना मुश्किल है। यह नौसैनिक अभियान पूरी तरह सफल रहा क्योंकि चोल सेना ने कई स्थानों पर कब्ज़ा कर लिया। लेकिन यह केवल अस्थायी था और इन स्थानों पर स्थायी कब्ज़ा करने की कोई योजना नहीं थी। **उन्होंने कदरमकोंडन की उपाधि धारण की।**
- अपने पिता की तरह, **राजेंद्र प्रथम भी शैव धर्म का पालन करते थे । उन्होंने नई राजधानी गंगईकोंडा चोलपुरम में भगवान शिव का** एक मंदिर बनवाया और इस मंदिर तथा **चिदंबरम स्थित भगवान नटराज मंदिर को उदारतापूर्वक दान दिया।**
- राजेन्द्र प्रथम वैष्णव और बौद्ध संप्रदायों सहित **अन्य धर्मों और संप्रदायों के प्रति सहिष्णु थे।**
- **उन्होंने अपने साम्राज्य में कई शैक्षणिक संस्थान स्थापित किये, इसके लिए उन्हें पंडित चोल की** उपाधि मिली ।
- राजेन्द्र प्रथम की मृत्यु के बाद उसके तीन उत्तराधिकारी भी शीघ्र ही मारे गये।

सिलाई चोला।

- **राजेंद्र चोल के पोते कुलथुंगा चोल** प्रथम ने शाही चोलों की विरासत को संरक्षित किया।
- उन्होंने कई करों को समाप्त कर दिया और सुंगम तवित्ती की उपाधि प्राप्त की।
- उन्होंने चीन में व्यापार दूतावास भेजे
- उन्होंने वेंगी साम्राज्य को चोल साम्राज्य के साथ एकीकृत किया।
- वे रामानुजाचार्य के समकालीन थे।

राजेंद्र तृतीय

- **राजेंद्र तृतीय अंतिम चोल राजा** थे जिन्हें **जटावर्मन सुंदरपंड्या द्वितीय ने हराया था**
- चोल साम्राज्य के खंडहरों पर पांड्य और होयसला साम्राज्य अस्तित्व में आये।

राजनीति

- चोलों के अधीन शासन व्यवस्था **राजतंत्रीय थी। गंगईकोंडा चोलपुरम** और तंजावुर के अलावा **, राजेंद्र प्रथम के अधीन मदुरै और कांचीपुरम क्षेत्रीय राजधानियों** के रूप में कार्य करते थे जहाँ कभी-कभी दरबार लगते थे।
- राजा **सर्वोच्च था और उसके पास पूर्ण अधिकार था** और वह आवश्यकतानुसार अधिकारियों को मौखिक आदेश जारी करता था। चूँकि **कोई औपचारिक विधायी प्रक्रिया नहीं** थी , इसलिए राजा के आदेश की निष्पक्षता उसके **अंतर्ज्ञान, नैतिकता और विश्वास पर निर्भर करती थी।**

प्रशासन

- चोल राजत्व **वंशानुगत प्रकृति का** था । राजा समस्त शक्ति का केंद्र था और निर्णय लेने की सारी शक्ति उसी में निहित थी, हालाँकि विभिन्न मामलों में उसे **मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता और सलाह दी जाती थी।**
- चोल साम्राज्य **प्रांतीय, जिला और स्थानीय प्रशासन में विभाजित था। इसमें पेरुंदनम और सिरुदनम नामक** विभिन्न अधिकारियों से युक्त एक विस्तृत प्रशासनिक तंत्र था ।

प्रांतीय प्रशासन

- चोल साम्राज्य को **मंडलमों** में विभाजित किया गया था और प्रत्येक मंडलम को **वलनाडस और नाडस** में विभाजित किया गया था । प्रत्येक नाडु में अनेक **स्वायत्त गाँव** थे ।
- शाही **राजकुमार या अधिकारी मंडलम के प्रभारी होते थे । वलनाडु पेरियानात्तर के अधीन था** और **नाडु नत्तर के अधीन । शहर को नगरम के नाम से जाना जाता था और यह नगरत्तर** नामक एक परिषद के प्रशासन के अधीन था ।

ग्राम सभाएँ

- **सभाओं और उनकी समितियों के साथ ग्राम स्वायत्तता की प्रणाली** युगों से विकसित हुई और चोल शासन के दौरान अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई।
- **उत्तरमेरुर** में मिले **परांतक प्रथम** काल के दो शिलालेखों में ग्राम सभाओं के गठन और कार्यों का विवरण मिलता है। **स्थानीय प्रशासन ग्राम में निहित था** । ग्राम प्रशासन काफी शक्तिशाली था और उसके पास **राजस्व एकत्र करने का अधिकार था।**
- **मूलतः दो प्रकार के गांव** थे ।
  - पहले प्रकार को **उर** कहा जाता था । इस प्रकार के गाँव में **विभिन्न जातियों के लोग रहते** थे ।
  - दूसरे प्रकार के गाँव को **अग्रहार** कहा जाता था । इस प्रकार के गाँवों में **केवल ब्राह्मण जाति के लोग ही बसते थे। अग्रहार की** अधिकांश भूमि कर-मुक्त थी।
- **गाँव के कामकाज** का प्रबंधन **कार्यकारी समितियों** द्वारा किया जाता था । इस समिति में **केवल शिक्षित और संपत्ति के मालिक व्यक्ति ही** लॉटरी द्वारा या चक्रानुक्रम से चुने जाते थे। इन सदस्यों को **हर तीन साल में सेवानिवृत्त होना पड़ता था।**
- कानून और व्यवस्था, न्याय आदि के रखरखाव के लिए भूमि राजस्व के आकलन और संग्रह में सहायता के लिए अन्य समितियां भी थीं। महत्वपूर्ण समितियों में से एक **टैंक समिति थी जो खेतों में पानी के वितरण की** देखभाल करती थी ।
- महासभा नई ज़मीनें बसा सकती थी और उन पर मालिकाना हक़ जमा सकती थी । वह गाँव के लिए ऋण भी जुटा सकती थी और कर भी लगा सकती थी।
- चोल गांवों द्वारा प्राप्त स्वशासन एक सुविचारित प्रणाली थी।

सैन्य

- चोलों के पास एक **नियमित स्थायी सेना** थी , जिसका **सर्वोच्च सेनापति राजा होता था** । सेना में **हाथी, घुड़सवार सेना, पैदल सेना और नौसेना** शामिल थी ।
- चोल सेना पूरे देश में फैली हुई थी और **स्थानीय सैन्य चौकियों या सैन्य शिविरों में तैनात थी जिन्हें कोडगाम कहा जाता था** । चोल सेना में कई युद्ध हाथी भी होते थे क्योंकि वे युद्धों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।
- चोल सेना ने **धनुष, तलवार, भाले, बरछे और ढाल** जैसे हथियारों का इस्तेमाल किया जो स्टील से बने थे।
- शिलालेखों में लगभग **सत्तर रेजिमेंटों का उल्लेख है, जिनमें से शाही सैनिकों को कैक्कोलापेरुम्पदई** कहा जाता था । शाही सैनिकों के पास **राजा की रक्षा के लिए वेलैक्करर नामक निजी सेनाएँ** होती थीं ।
- चोलों ने अपनी नौसेना पर विशेष ध्यान दिया, जिसने चोल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तमिलों की नौसैनिक उपलब्धियाँ चोलों के शासनकाल में अपने चरम पर पहुँचीं, जब उन्होंने **मालाबार और कोरोमंडल तट पर नियंत्रण कर लिया।**

आय

- राजस्व **विभाग, जिसे पुरवुवरिथिनैक्कलम कहा जाता था** , सुस्थापित था। राजस्व निर्धारण के लिए सभी भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण और वर्गीकरण किया जाता था। **आवासीय भूमि और मंदिर की भूमि को करों से मुक्त रखा जाता था।** कर की दरें मिट्टी की उर्वरता और भूमि की स्थिति के आधार पर **तय की जाती थीं ।**
  - विभिन्न कर: **इराई, कनिकादान, इरैकट्टिना-कनिकदान और कदमी।**
  - **कुडिमई:** खेती करने वाले काश्तकारों द्वारा सरकार और जमींदारों को दिया जाने वाला कर, जिन्हें उदयन, अरायन और किलावर जैसी सम्मानजनक उपाधियाँ दी जाती थीं।
  - **ओपाती:** यह राजा और स्थानीय प्रमुखों द्वारा लगाया और एकत्र किया जाता था।
  - **वस्तु के रूप में भुगतान किया गया कर** : वस्तु के रूप में भुगतान किया गया कर
- भूमि राजस्व के अलावा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाए जाने वाले माल पर **चुंगी और सीमा शुल्क , विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक कर, न्यायिक जुर्माना और विवाह जैसे समारोहों और अवसरों पर लगाए जाने वाले शुल्क भी** थे ।
- भूमि माप की विभिन्न इकाइयाँ **हैं कुली, मा, वेलि, पट्टी, पदगम, आदि।**

- मुख्य सरकारी व्यय **राजा और उसके दरबार पर व्यय, सेना और नौसेना का रखरखाव तथा सड़कों, सिंचाई टैंकों और नहरों के निर्माण पर व्यय थे।**

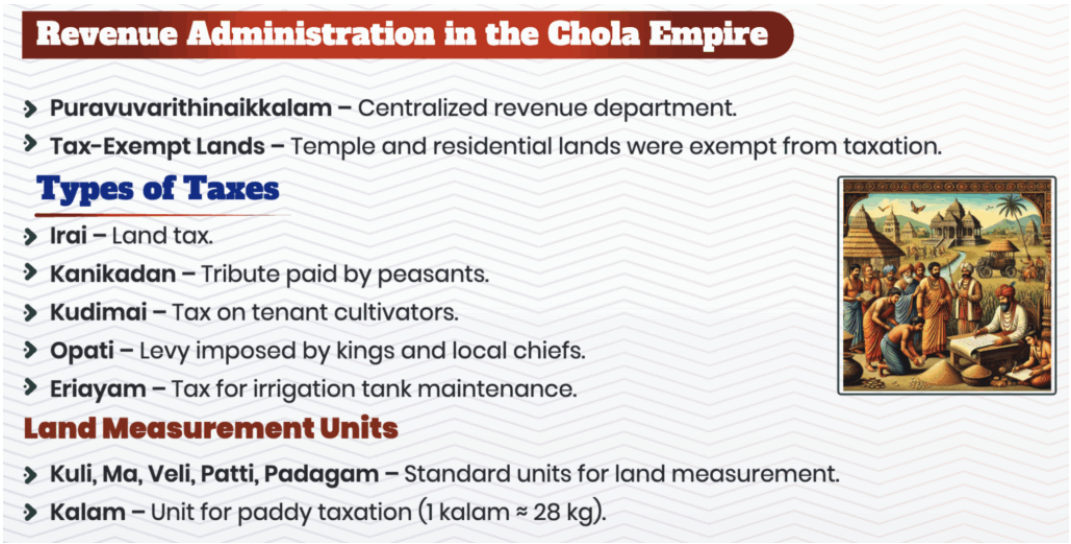

धर्म

- **चोल हिंदू धर्म के अनुयायी थे।** उन्होंने कई मंदिर बनवाए और इन मंदिरों को उदारतापूर्वक दान दिया। चोल काल में **शैव और वैष्णव दोनों ही धर्म फलते-फूलते रहे ।**
- चोल राजाओं और रानियों के संरक्षण में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ। इस काल में मंदिर आर्थिक गतिविधियों के केंद्र बने रहे। इस काल में मठों का बहुत प्रभाव था **।**
- इस समय के दौरान अनेक मंदिरों के निर्माण के अतिरिक्त, **नागपट्टिनम में चूड़ामणि विहार जैसे बौद्ध मठों का** भी निर्माण किया गया।
- हालाँकि, विभिन्न धर्मों की उपस्थिति के बावजूद, ईश्वर या धर्म के नाम पर हिंसा की कोई बड़ी घटना नहीं हुई।

अर्थव्यवस्था

- चोल साम्राज्य की आय का मुख्य स्रोत **भूमि और व्यापार कर से प्राप्त राजस्व** था । कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय बना रहा।
- प्रारंभिक चोल शासकों की राजधानी **उरईयूर एक प्रसिद्ध सूती वस्त्र केंद्र** था , जहां से सूती कपड़े विदेशों को निर्यात किए जाते थे।
- चोल राजाओं ने **बुनाई उद्योग** के विकास में गहरी रुचि दिखाई क्योंकि बुनाई से चोल साम्राज्य को भारी राजस्व प्राप्त होता था। चोल शासन के दौरान **रेशम बुनाई का स्तर ऊँचा था। कांचीपुरम एक प्रमुख रेशम नगर के रूप में विकसित हुआ** और अपनी उच्च गुणवत्ता वाली रेशम बुनाई के लिए प्रसिद्ध हुआ। उच्च उत्कृष्टता ने **आभूषण और धातु उद्योगों को** प्रमुखता प्रदान की।
- व्यापारियों ने खुद को श्रेणियों में संगठित कर लिया। इनमें से सबसे प्रसिद्ध **श्रेणी मणिग्रामम और अय्यावोले** श्रेणी थी, और साथ ही **अंजुवन्नम और वलंजियार** जैसी अन्य श्रेणियाँ भी अस्तित्व में थीं।
- **समुद्री नमक का निर्माण सरकारी पर्यवेक्षण और नियंत्रण में किया जाता था ।**

सिंचाई

- **उपाय:** चोलों ने प्रचलित सिंचाई प्रणाली में सुधार के लिए उपाय किये।
  - उन्होंने पानी वितरित करने के लिए **बारी-बारी से प्रणाली का अभ्यास किया।**
- **वटिवायक्कल:**
  - यह एक **क्रॉस-क्रॉस** चैनल था, जो कावेरी डेल्टा में वर्षा जल का उपयोग करने का एक पारंपरिक तरीका था।
  - वती एक **जल निकासी चैनल** है (उत्तर-दक्षिण दिशा में), और **वायक्कल** एक आपूर्ति चैनल है (पूर्व-पश्चिम दिशा में)।
    - **उत्तमचोलावयक्कल, पंच-वनमदेवी-वयक्कल और गणवथी-वयक्कल:** राजाओं, रानियों और देवताओं के नाम पर नहरें।
    - **उर-वैक्कल:** भूस्वामियों द्वारा संयुक्त रूप से स्वामित्व वाली नहर।

- **नट्टू-वयक्कल:** नाडु स्तर की नहरें।
- **सिंचाई टैंक:** चोलवारिधि, कलियानेरी, वैरामेगाटाका और राजेंद्र चोलपेरियारी।
- **ऐनुत्रुवप्पेरी पुडुकोट्टई** के व्यापारियों के एक समूह, **वलंसियार** द्वारा निर्मित एक सिंचाई टैंक था ।

Irrigation System

- **Kallanai Dam** (originally built by the Early Cholas) was improved for better water management.
- **Vativaykkal System** – Network of irrigation canals in the Kaveri delta:
  - **Vati** – Drainage channels (north-south).
  - **Vaykkal** – Supply channels (east-west).
- **Canal Ownership:**
  - **Ur-vaykkal** – Jointly owned by local landowners.
  - **Nattu-vaykkal** – Managed at the Nadu (regional) level.

जल प्रबंधन

- **जल अधिकार: उनके पास विभिन्न प्रकार के जल अधिकार** प्रदान करने की एक प्रणाली थी ।
- दान और बंदोबस्ती के रूप में भूमि लेनदेन के **साथ-साथ जल अधिकार भी जुड़े** थे ।
- **निःशुल्क श्रम की प्रथा:** सिंचाई टैंकों के आवधिक और मौसमी रखरखाव के लिए **निःशुल्क श्रम** की प्रथा प्रचलित थी।
- **वेट्टी और अमनजी:** ग्राम स्तर पर सार्वजनिक कार्यों से संबंधित निःशुल्क श्रम के रूप।
- **संबंधित शर्तें:**
- **निरक्किन्तावरु:** यह जल के आवंटन से संबंधित है।
- **कुमिज़ और तलाइवे:** पानी छोड़ने के लिए चैनल और प्रवेश द्वार।
- **तलैवायर, तलैवाय-चनरार और एरी-अरैयारकल:** ये वे समूह थे जो नदियों या तालाबों से मुख्य चैनल और जलद्वार के माध्यम से पानी छोड़ने के लिए जिम्मेदार थे।
- **कुलत्तर:** वे कुलम के प्रभारी लोगों का एक समूह हैं।
- **एर्नाकुलम:** साझा स्वामित्व वाला गांव का तालाब (हमारा तालाब)।
- **एरियायम:** ग्राम सभाओं द्वारा एकत्रित किया जाने वाला कर, जिसका उपयोग सिंचाई टैंकों की मरम्मत के लिए किया जाता था।

व्यापार

- **व्यापार में वृद्धि:** कृषि और शिल्पकला गतिविधियों में उत्पादन में वृद्धि के कारण व्यापार में वृद्धि हुई।
- **व्यापारियों से संबंधित शब्द:**
- **गरवेरा और गौड़/गवुंदा:** व्यापारिक जातियाँ।
- **अंजुवन्नत्तर:** वे समुद्री व्यापारी थे जिनमें यहूदी, ईसाई और मुस्लिम सहित पश्चिम एशियाई लोग शामिल थे, जो पश्चिमी तट के बंदरगाह शहरों में बस गए थे।
- **मणिग्रामत्तर:** वे अंदरूनी इलाकों के व्यापारी थे और कोडुम्बलुर, उरईयूर, कोविलपट्टी, पिरानमलाई और अन्य जैसे आंतरिक शहरों में बस गए थे।
- **ऐनुत्रुवर, दिसाई-अयिरात्तु-ऐनुत्रुवर और वैलनसियार:** दोनों के विलय के बाद अंजुवन्नाट्टर और मणिग्रामत्तार के लिए सामान्य बैनर।
- **समुद्री व्यापार केंद्र:** मुनाई-संताई (पुदुक्कोट्टई), मायलापुर और तिरुवोत्रियूर (चेन्नई), नागपट्टिनम, विशाखापट्टिनम और कृष्णपट्टिनम (दक्षिण नेल्लोर)।
- **पेरुवाज़िस:** ट्रंक सड़कें।

- **निर्यात की वस्तुएँ:** चंदन, आबनूस, मसाले, कीमती रत्न, काली मिर्च, तेल, धान, अनाज और नमक।
- **आयात की वस्तुएँ:** कपूर, तांबा, टिन, पारा, आदि।

समाज

- चूँकि **जाति व्यवस्था व्यापक रूप से प्रचलित थी, क्षत्रियों को समाज में विशेष विशेषाधिकार प्राप्त थे।** चोल काल के अभिलेखों में **जातियों को वलंगई और इदंगई जातियों में वर्गीकृत किया गया है।** इस विभाजन के बावजूद, चोल लोगों के सामाजिक-धार्मिक जीवन में विभिन्न जातियों और उपजातियों के बीच सहयोग था।
- **हालाँकि, महिलाओं की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ** । सती **प्रथा** , एक ऐसी प्रथा जिसमें विधवा अपने पति की मृत्यु पर आत्मदाह कर लेती है, राजघरानों में प्रचलित थी। इसी काल में **मंदिरों में देवदासी प्रथा या नर्तकियों की प्रथा शुरू हुई।**
- कृषि अधिकांश लोगों का मुख्य व्यवसाय बना रहा, इसलिए किसान समाज में सर्वोच्च स्थान रखते थे। वन भूमि के पुनर्ग्रहण और सिंचाई तालाबों के निर्माण एवं रखरखाव ने कृषि समृद्धि को बढ़ावा दिया।
- **सड़कों के सुधार, पेरुवाज़ी** और व्यापारी संघों के निर्माण से व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि हुई । बुनाई उद्योग, विशेष रूप से कांची में रेशम बुनाई, फल-फूल रही थी। चोल शासन के दौरान, बुनकरों ने स्वयं को संघों में संगठित करना शुरू कर दिया और कस्बों में अपनी आवासीय बस्तियाँ स्थापित करने में सक्षम हुए।
- कांचीपुरम और मामल्लपुरम जैसे बड़े व्यापार केंद्रों में **'नगरम' नामक व्यापारियों के स्थानीय संगठन** भी थे ।
- मंदिरों और बर्तनों के लिए मूर्तियों की भारी माँग के कारण धातुकर्म का भी विकास हुआ। विभिन्न मूल्यवर्गों के सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के प्रचुर मात्रा में जारी किए गए।
- **चोल साम्राज्य और चीन, सुमात्रा, जावा और अरब के बीच व्यापारिक संपर्क** व्यापक थे। घुड़सवार सेना को मज़बूत करने के लिए **बड़ी संख्या में अरबी घोड़ों का आयात किया जाता था ।**

साहित्य

- **तमिल साहित्य का विकास चोल काल में अपने चरम पर पहुंच** गया ।
- कंबन द्वारा रचित रामायण **और सेक्किलर द्वारा रचित पेरियापुराणम या तिरुत्तोंदर पुराणम** इस युग की दो उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।
- **ओट्टाकुट्टन ने कुलोथुंगा चोलन उला नामक कविता लिखी** , जिसमें चोल राजा के गुणों का गुणगान किया गया था।
- **जयम कोंडार द्वारा लिखित कलिंगट्टुप्पारानी में चोल राजा कुलोत्तुंग प्रथम द्वारा लड़े गए कलिंग युद्ध का** वर्णन है । व्याकरणविद **बुद्धमित्र ने तमिल व्याकरण पर विरसोलियम नामक एक ग्रंथ लिखा** ।
- **तिरुत्तक्कतेवर की जीवकचिंतामणि** और **तोलामोली की सुलामणि** गैर-हिंदू लेखकों की कुछ उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।
- **तमिल व्याकरण पर** चोलकालीन कृति **"नन्नुल** " में व्याकरण की सभी पाँच शाखाओं का विवेचन किया गया है। इसे आज भी प्रासंगिक माना जाता है और यह तमिल साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित मानक व्याकरणों में से एक है।
- चोल राजाओं ने मंदिरों के आसपास **शैक्षणिक संस्थान स्थापित करने में बहुत रुचि ली।**
- एन्नयिराम के शिलालेख में इन स्थानों पर स्थित **महाविद्यालयों के बारे में महत्वपूर्ण विवरण मिलते हैं** । वेदों और महाकाव्यों के अलावा, इन संस्थानों में गणित और चिकित्सा जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। इन संस्थानों को चलाने के लिए **भूमि दान की जाती थी।**
- **चोल राजा वीरराजेंद्र ने मंदिर के भीतर जननमंडप में** वेदों, शास्त्रों, व्याकरण और रूपावतार के अध्ययन के लिए एक विद्यालय स्थापित किया था। छात्रों के लिए भोजन की व्यवस्था के साथ **छात्रावास भी उपलब्ध थे।**
- **कम्बा कुलोथुंगा चोल-III के शासनकाल के दौरान फला-फूला।** यह वह युग था जब महान तेलुगु कवियों तिक्कना, केतना, माराना और सोमना ने अपने योगदान से साहित्य को समृद्ध किया।

कला और वास्तुकला

- चोलों ने **द्रविड़ कला और स्थापत्य शैली के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।** उन्होंने **विशाल मंदिर** बनवाए और अपनी भव्य मंदिर स्थापत्य कला के साथ-साथ उत्कृष्ट कारीगरी के लिए भी जाने जाते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार, **जेम्स**

फर्ग्यूसन ने एक बार टिप्पणी की थी, "चोल कलाकार दैत्यों की तरह कल्पना करते थे और जौहरियों की तरह काम पूरा करते थे। "

- **राजराजा चोल** और उनके पुत्र **राजेंद्र चोल प्रथम** की विजयों से मंदिर निर्माण को बहुत गति मिली। चोल कला में एक नया विकास, जो बाद के समय में द्रविड़ वास्तुकला की विशेषता बन गया, वह था मंदिर के प्रांगण में **गोपुरम नामक एक विशाल प्रवेश द्वार का निर्माण।**
- **राजराजा प्रथम द्वारा निर्मित तंजावुर स्थित बृहदेश्वर मंदिर** दक्षिण भारतीय कला और वास्तुकला का उत्कृष्ट प्रदर्शन है।
  - इसमें **विमान, अर्धमंडप, महामंडप** और सामने एक **बड़ा मंडप है जिसे नंदीमंडप** के नाम से जाना जाता है ।
- **गंगईकोंडचोलपुरम का शिव मंदिर राजेंद्र प्रथम द्वारा बनाया गया था,** और दारासुरम **मंदिर राजराजा द्वितीय द्वारा बनाया गया था** ।
- **तंजावुर जिले के दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर** और त्रिभुवनम **में कम्पाहरेश्वर मंदिर** बाद के चोल मंदिरों के उदाहरण हैं।
  - बृहदेश्वर **मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर** और **दारासुरम स्थित ऐरावतेश्वर मंदिर को** यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थलों में सूचीबद्ध किया गया है और इन्हें महान जीवित चोल मंदिर कहा जाता है ।
- **चोलों ने कांस्य मूर्तिकला** कला में भी उल्लेखनीय योगदान दिया । तंजौर और गंगईकोंडचोलपुरम के चोल मंदिरों की दीवारों पर असाधारण कारीगरी वाली विशाल आकार की अनेक मूर्तियाँ हैं। **नटराज या नृत्यरत शिव की कांस्य प्रतिमा** एक अनमोल रत्न थी।
- चोल **चित्रकलाएं नार्थमलाई और तंजावुर मंदिरों की दीवारों** पर भी पाई गई ।

Cire-perdu Or lost-wax

Nataraja

Ardhanarisvara Murti

राजवंश का महत्व

- तमिल साहित्य के विकास में चोलों के सहयोग **और मंदिर वास्तुकला के प्रति उनके जुनून के** परिणामस्वरूप तमिल साहित्य और मंदिर वास्तुकला के क्षेत्र में कई उत्कृष्ट कृतियाँ सामने आईं।
- चोल शासकों ने मंदिरों को न केवल पूजा स्थल के रूप में, बल्कि **आर्थिक और शैक्षिक गतिविधियों के केंद्र** के रूप में भी देखा । चोल कला शैली दक्षिण-पूर्व एशिया में फैली और वहाँ की कला और वास्तुकला को प्रभावित किया।

चोल शिलालेखों में भूमि की कई श्रेणियों का उल्लेख है

Vellanvagai	गैर-ब्राह्मण किसान स्वामियों की भूमि
Brahmadeya	ब्राह्मणों को भूमि दान में दी गई
Shalabhoga	स्कूल के रखरखाव के लिए भूमि

Devadana, Tirunamattukkani	देवताओं/मंदिरों को दान की गई भूमि
पल्लीच्छंदम	जैन संस्थाओं को दान की गई भूमि

भूमि अनुदान के प्रकार

अग्रहारा	मुख्यतः ब्राह्मणों के कब्जे में एक लगान-मुक्त गाँव
Devadana	ब्राह्मण मंदिरों के देवताओं को दान में दी गई किराए-मुक्त भूमि। इसका जैन और बौद्ध समकक्ष पल्लीचं
Shasanas	भूमि अनुदान, अक्सर कर-शासन, यानी किराया देने वाली भूमि अनुदान
Brahmadeya	ब्राह्मणों या ब्राह्मणों के समूहों को उपहार में दी गई भूमि

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- प्रसिद्ध **विरुपाक्ष मंदिर** हम्पी में स्थित है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है, जिन्हें वहाँ विरुपाक्ष के नाम से जाना जाता है।
- **पंचायतन** शब्द मंदिर निर्माण की एक शैली को संदर्भित करता है।
- **चोलों के अधीन ग्राम प्रशासन** के बारे में बहुत सारी जानकारी **उत्तरमेरुर** के शिलालेख से मिलती है ।
- **नटराज को** दक्षिण भारत के स्थपतियों द्वारा, विशेष रूप से चोल काल के दौरान, बनाई गई विश्व की सबसे महान प्रतिमा-रचना माना जाता है।
- **शिव की दक्षिणामूर्ति मूर्ति में** उन्हें एक मार्गदर्शक (गुरु, शिक्षक) के रूप में दर्शाया गया है।
- चोल राजा कुलोत्तुंग प्रथम के शासनकाल में 1077 में चोल ने 72 व्यापारियों का सद्भावना मिशन चीन भेजा था।
- राजेंद्र प्रथम ने बंगाल की खाड़ी को **'चोल झील' में परिवर्तित कर दिया।**
- **कुलोत्तुंग प्रथम ने** श्रीलंका को पूर्ण स्वतंत्रता दी तथा अपनी पुत्री का विवाह सिंहल राजकुमार विजयबाहु से कराया।
- **प्राचीन भारत का तगर व्यापार केंद्र** कल्याण को वेंगी से जोड़ने वाले व्यापार मार्ग पर था।
- **कुरल को** तमिल साहित्य की बाइबिल और लघुवेद माना जाता है। इसकी रचना प्रसिद्ध कवि तिरुवल्लुवर ने की थी।
- दक्षिण भारत का प्रसिद्ध **तक्कोलम युद्ध** चोल राजा परंतक प्रथम और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय के बीच तक्कोलम में लड़ा गया (949 ई.)। इसमें चोल पराजित हुए।
- चोल साम्राज्य को अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति **मलिक काफूर ने तबाह कर दिया था।**
- **वेंगी नदी** पाण्ड्य राज्य की जीवन रेखा थी।
- संगम ग्रंथों के अनुसार **कोन, को और मन्नान** शब्द राजा के लिए प्रयुक्त होते थे।
- **कावेरी नदी** , जिसे **पोन्नी (स्वर्णिम) नदी** भी कहा जाता है , का चोल संस्कृति में एक विशेष स्थान था। कावेरी में आने वाली वार्षिक बाढ़, **आदिपेरुक्कु** नामक उत्सव का अवसर होती थी , जिसमें पूरा देश भाग लेता था।

चेर राजवंश

चेर राजवंश

- संगम काल के दौरान चेर **राजवंश या चेरों ने आधुनिक केरल के कुछ हिस्सों पर शासन किया**। उनकी **राजधानी वंजी थी** और उनके महत्वपूर्ण **बंदरगाह तोंडी और मुसिरी थे। चेरों का प्रतीक चिन्ह 'धनुष और बाण'** था ।
- चेर राजाओं को **"केरलपुत्र"** (केरल के पुत्र) के रूप में भी जाना जाता था।
- **उथियान चेरालाथन सबसे पहला ज्ञात चेर शासक है।** उनका शासन आधार केरल के कुट्टनाड में कुझुमुर में था।
- जबकि, **कुलशेखर अलवर** बाद के चेर साम्राज्य का पहला राजा था, जो बाद में कुलशेखर राजवंश के रूप में विकसित हुआ।
- पांच शताब्दियों से अधिक समय तक चेर राजा का कोई नामोनिशान नहीं था, लेकिन कुलशेखर अलवर प्रकट हुए, जिन्होंने चेर के वंशज होने का दावा किया।
  - संभवतः उन्होंने वर्तमान केरल राज्य के **तिरुवंचिक्कुलम से लगभग 800 ई. में शासन किया था और उन्होंने 20 वर्षों से अधिक समय तक शासन किया था।**
  - तब राजगद्दी रामवर्मा के पास थी ; कुलशेखर पेरुमल, रामर तिरुवती, या कुलशेखर कोयिलाधिकारिकल उनका नाम था।
  - उनका कार्यकाल राजनीतिक उथल-पुथल और असुरक्षा से भरा रहा।
  - वह परवर्ती चेर वंश का **अंतिम शासक था।**
- प्रथम शताब्दी ई. के पुगलुर **शिलालेख में** चेर शासकों की **तीन पीढ़ियों** का उल्लेख है। इस राजवंश के प्रसिद्ध शासक **चेरालाथन, सोररू उधियान चेरालाथन, इमायावरंबन नेदुम चेरालाथन और चेरन सेनगुट्टुवन थे।**
- **चेरन सेनगुट्टुवन दूसरी शताब्दी ईस्वी के थे।** उनकी सैन्य उपलब्धियों में, **हिमालय पर उनका अभियान** उल्लेखनीय था। उन्होंने कई उत्तर भारतीय राजाओं को हराया। **सेनगुट्टुवन ने तमिलनाडु में पट्टिनी पंथ या कन्नगी की आदर्श पत्नी के रूप में पूजा शुरू की**। दूसरी शताब्दी ईस्वी के बाद, चेर शक्ति का पतन हो गया और आठवीं शताब्दी ईस्वी तक हमें उनके इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी है।
- आज चेरों के बारे में जो कुछ भी ज्ञात है, वह संगम साहित्य के ग्रंथों से ही है । सबसे आम स्रोतों में **पथित्रुपट्टू** , **अकनानुरू** और **पूरननुरू शामिल हैं।**

बाद के चेरा

- चेर साम्राज्य को 9वीं शताब्दी ईस्वी से **अलवर के राजा कुलशेखर वर्मन के** शासनकाल में अपना महत्व प्राप्त हुआ , जिन्होंने 800 ईस्वी में अपने पिता **थिदविराधन के उत्तराधिकारी के रूप में शासन किया। उन्होंने महोदयपुरम में नई राजधानी से द्वितीय चेर साम्राज्य की** स्थापना की ।
- यद्यपि उन्होंने नया राज्य स्थापित किया, लेकिन फिर भी उनका प्रभाव उनके राज्य में पहले से मौजूद आर्य-ब्राह्मण बस्तियों और **'नादुवाज़्ही'** नामक वंशानुगत सरदारों की शक्ति से बाधित था।
- दूसरे **चेरों ने पल्लवों के विरुद्ध चोलों के साथ गठबंधन किया** , तथा **8वीं-10वीं शताब्दी के बीच चोलों के विरुद्ध पाण्ड्यों के साथ गठबंधन किया।**
- अपने शासन की अंतिम शताब्दियों तक, **कुलशेखर,** उत्तरवर्ती चोल शक्ति के विरुद्ध, श्रीलंका के पाण्ड्यों और लंबकन्नों के सक्रिय सहयोगी बन गये।

राजनीति और प्रशासन

- इस साम्राज्य में राजा **सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली व्यक्ति था । फिर भी, उसकी शक्ति मंत्रिपरिषद** और दरबार के विद्वानों की उपस्थिति से सीमित थी ।
- राजा आम लोगों की समस्याएं सुनने और उनका मौके पर ही निवारण करने के लिए **प्रतिदिन दरबार लगाते थे।**
- अगली महत्वपूर्ण संस्था **मनराम** के नाम से जानी जाती थी जो चेर साम्राज्य के **प्रत्येक गांव में कार्य करती थी।**

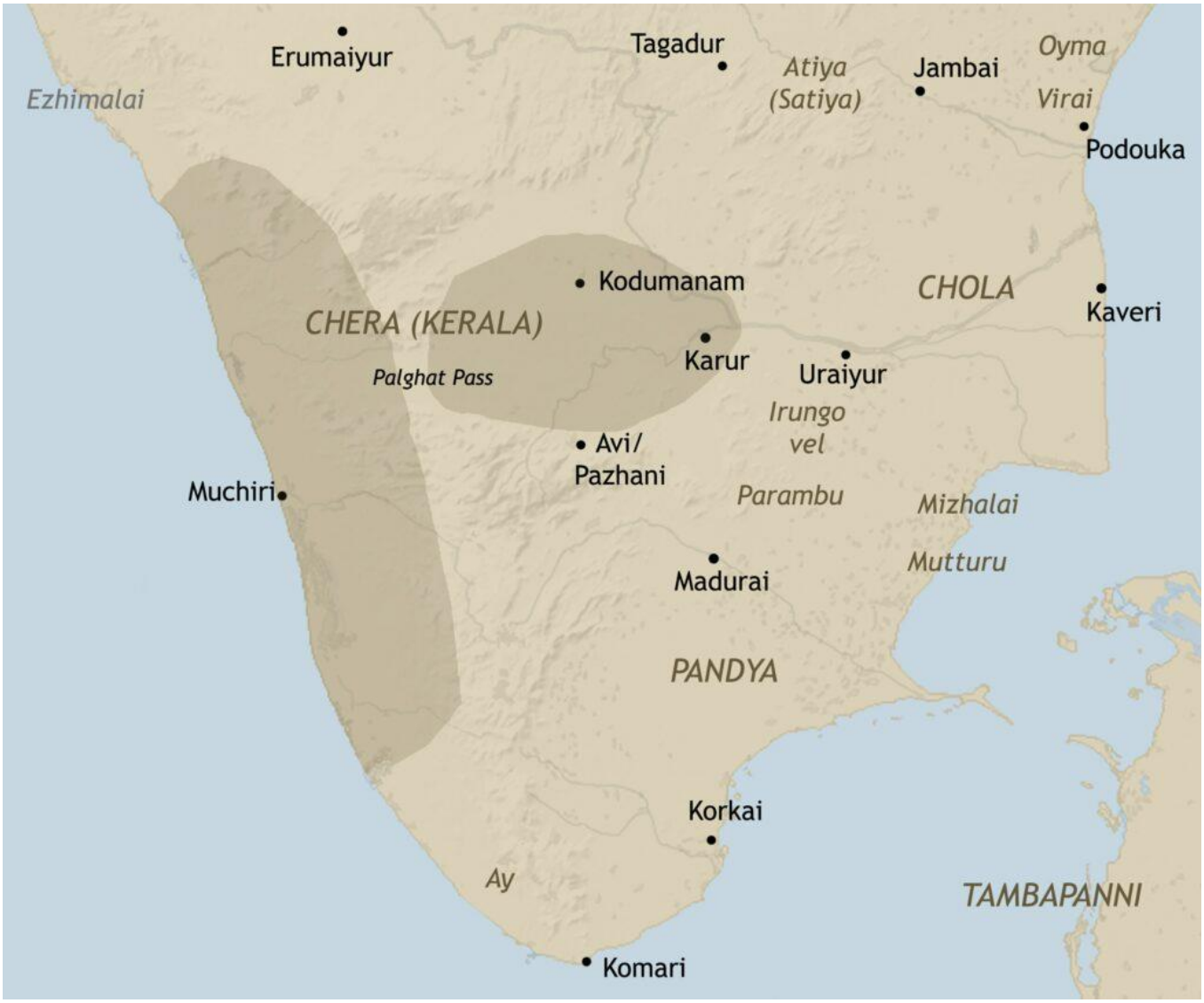

- इसकी बैठकें आमतौर पर गाँव के बुजुर्गों द्वारा बरगद के पेड़ के नीचे आयोजित की जाती थीं और वे स्थानीय विवादों के निपटारे में मदद करते थे। मनराम गाँव के त्योहारों का भी स्थल थे।
- चेरों के साम्राज्य विस्तार के दौरान राजपरिवार के सदस्यों ने राज्य के **कई स्थानों (वांची, करूर और तोंडी) पर निवास स्थापित किए । उन्होंने उत्तराधिकार की संपार्श्विक प्रणाली** का पालन किया जिसके अनुसार **परिवार का सबसे बड़ा सदस्य, चाहे वह कहीं भी रहता हो, सिंहासन पर बैठता था।** कनिष्ठ राजकुमार और उनके उत्तराधिकारी (युवराज) प्रशासन में शासक राजा की सहायता करते थे।

धर्म

- चेर आबादी मूल **द्रविड़ पूजा पद्धति का** पालन करती थी । चेर साम्राज्य में **वृक्ष पूजा और अन्य प्रकार की पूर्वज पूजा के साथ-साथ दिवंगत नायकों की पूजा** भी एक आम प्रथा थी ।
- इस राज्य के लोग **युद्ध देवी कोट्टवई को** जटिल बलिदानों और अनुष्ठानों से प्रसन्न करते थे। चेर लोग संभवतः इसी **मातृदेवी की** पूजा करते थे । कोट्टवई को बाद में देवी के वर्तमान रूप में समाहित कर लिया गया।
- जनसंख्या का एक छोटा प्रतिशत **जैन धर्म, बौद्ध धर्म और ब्राह्मण धर्म का** पालन करता था । ये तीनों दर्शन उत्तर भारत से चेर साम्राज्य में आए थे। चेर प्रदेशों में एक **छोटी यहूदी और ईसाई आबादी भी रहती थी ।**

अर्थव्यवस्था

- चेर साम्राज्य का महत्व **रोमनों के साथ व्यापार के कारण था। भौगोलिक लाभ, जैसे काली मिर्च और अन्य मसालों** की प्रचुरता , ऊँचे पहाड़ों को अरब सागर से जोड़ने वाली **नदियों की नौगम्यता** और अनुकूल व्यापारिक हवाओं की खोज, जो चालीस दिनों से भी कम समय में अरब तट से सीधे चेर साम्राज्य तक नौकायन जहाजों को पहुँचाती थीं, इन सबने मिलकर चेरों के विदेशी व्यापार में एक वास्तविक उछाल पैदा किया।

- **मुजिरिस, दो रोमन रेजिमेंटों वाला प्रसिद्ध समुद्री बंदरगाह** , चेर साम्राज्य में था और चेरों के शासनकाल के दौरान, व्यापार उनके राज्य में समृद्धि लाता रहा, **मसाले, हाथी दांत, लकड़ी, मोती और रत्न** मध्य-पूर्व और दक्षिणी यूरोप को निर्यात किए जाते थे।

समाज

- चेर जनसंख्या **जातियों और समुदायों में विभाजित नहीं** थी । वर्ण व्यवस्था ने **स्पष्ट आकार नहीं लिया था** । सामाजिक विशिष्टता और दुर्गमता अज्ञात थी।
- **पना, कुरुवा, पराया और वेता** जैसे समुदायों को शासकों द्वारा बहुत सम्मान दिया जाता था। ये लोग शिक्षित थे और **सामाजिक स्वतंत्रता और समानता का आनंद लेते थे।**
- **चेर साम्राज्य में महिलाओं को उच्च दर्जा प्राप्त था** । शाही रानी का दर्जा बहुत महत्वपूर्ण और विशेषाधिकार प्राप्त था और वह सभी धार्मिक समारोहों में राजा के साथ बैठती थी।

कला और वास्तुकला

- **द्रविड़ वास्तुकला** में चेर शैली अपनी तरह की अनूठी शैली है , और उनके मंदिर अधिकतर अष्टकोणीय या आयताकार होते हैं, जो बलुआ पत्थर या ग्रेनाइट से निर्मित होते हैं। उनके मंदिर चार खंडों में विभाजित हैं: **विमान, मंडप, गोपुरम और गर्भगृह** ।
- गोपुरम , प्रवेश द्वार के ऊपर एक भव्य मीनार, उन गांवों और कस्बों में सबसे ऊंची संरचनाएं थीं जहां उन्हें बनाया गया था ।
- मंदिर सिर्फ़ पूजा स्थल नहीं था। यह **सामाजिक मेलजोल, शिक्षा और उत्सव मनाने** का स्थान था , न सिर्फ़ राजा की युद्ध विजयों का, बल्कि विवाह जैसे स्थानीय समारोहों और समारोहों का भी।
- मंदिर का उपयोग आपातकालीन भंडारण सुविधा के रूप में भी किया जाता था, तथा कई मंदिरों में अस्पताल भी होते थे।
- यह एक ऐसा स्थान था जहां संगीत, नृत्य, नाटक और हस्तशिल्प जैसी कलाओं को प्रोत्साहित किया गया और उनका विकास हुआ।
- थिरुनेल्ली **मंदिर** , **वडक्कुनाथन मंदिर, कोडुंगल्लूर भगवती मंदिर** और **कंदियुर शिव मंदिर** इसके उदाहरण हैं।

Thiruvanchikulam Shiva Temple

- **इसका निर्माण केरल शैली की वास्तुकला** में चेर काल के दौरान किया गया था, जब उमादेवी भगवान शिव की पूजा करती थीं।
- **यह मंदिर भारत के पुरातत्व के अंतर्गत आता है और यह दक्षिण भारत के सबसे पुराने शिव मंदिरों में से एक है, जो कोडुंगल्लूर** के त्रिशूर जिले में बना है ।

भगवती अम्मन मंदिर

- **तमिलनाडु के कन्याकुमारी** में स्थित इस मंदिर को **भद्रकाली अम्मन मंदिर** के नाम से भी जाना जाता है और यह 52 शक्ति पीठ मंदिरों में से एक है।
- किंवदंती के अनुसार, भगवान शिव उससे विवाह करने का अपना वादा निभाने में असफल रहे, और परिणामस्वरूप, वह एक राक्षस में बदल गई।
- नवरात्रि **, कलाभवन और वैशाख** त्योहार सभी यहाँ भव्य रूप से मनाए जाते हैं।

महाविष्णु मंदिर

- यह केरल के कोट्टायम के **श्रीकोडिथानम** में स्थित है और **महाभारत** से जुड़े पांच प्राचीन मंदिरों का प्रतिनिधित्व करता है ।
- तालाब और पूर्वी प्रवेश द्वार के बीच कला का एक विचित्र रूप, **काझिवेट्टी कल्लूर प्रदर्शित किया गया है।**
- इसे इस बात की याद दिलाने के लिए रखा गया है कि राजा ने मंदिर के रखवाले को रिश्वत देकर मंदिर में प्रवेश प्राप्त किया था, जहां वह शीघ्र ही बीमार हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।

चेरों का साहित्य

- संगम **ग्रंथ** तमिल ग्रंथों का एक विशाल संग्रह है जिसमें पांड्य और चोल शासकों के साथ-साथ अनेक चेर शासकों का वर्णन है।
- पथितरूपाथु **, अकनानुरु और पूरनुरु** चेरों के सबसे महत्वपूर्ण साहित्य हैं।
- **सिलापथिकारम की** रचना उनके शासनकाल के दौरान हुई थी, जब तमिल कवि परनार और कोंगर शासन करते थे।
- संगम काल की कुछ अन्य साहित्यिक कृतियाँ जो चेरों, पांड्यों और चोलों के लिए समान हैं, वे हैं **तोलकाप्पियम, एट्टुटोगई, पथिनेंकिलकनक्कु** , तथा दो महाकाव्य **सिलप्पाथिकारम और मणिमेगलाई।**
- **तोलकाप्पियार** द्वारा रचित **तोलकाप्पियम को** प्रथम तमिल साहित्यिक कृति माना जाता है। यद्यपि यह तमिल व्याकरण पर आधारित एक कृति है, फिर भी यह उस समय की राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों की भी जानकारी प्रदान करती है।
- **पथिनेंकिलकनक्कु** नैतिकता और आचार-विचार पर अठारह कृतियों का एक संग्रह है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण कृति **तिरुक्कुरल** है, जो महान तमिल कवि और दार्शनिक **तिरुवल्लुवर** द्वारा रचित है ।

चेरों का पतन

- **राष्ट्रकूटों ने** 805 ई. में चेरों पर विजय प्राप्त की, तथा 855 से 865 ई. के बीच कुछ समय तक उन पर शासन किया।
- **भास्कर रवि वर्मन प्रथम** के शासनकाल के दौरान , चोल चेर युद्ध ("सौ साल का युद्ध") शुरू हुआ।
- **राजा राज चोल के शासनकाल** के अंत तक , चोलों ने **कुझिथारा** के दक्षिण में स्थित सम्पूर्ण दक्षिणी त्रावणकोर को चेरों से छीन लिया था।
- इन लम्बे युद्धों ने चेर शक्ति को काफी कमजोर कर दिया था और इस अराजक अवसर का लाभ उठाकर चेरों के कई सरदारों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया।
- बाद में, चोलों ने चेर साम्राज्य के एक विशाल क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- नव-राजा **राम वर्मा कुलशेखर को एक अभूतपूर्व और अराजक संकट का सामना करना पड़ा।**
- उन्होंने अपनी सेना के एक बड़े हिस्से को **आत्मघाती दस्तों (जिन्हें "चैवर्स" कहा जाता था)** में बदल दिया और वीरतापूर्वक युद्ध किया।
- महोदयपुरम में केंद्रीय शक्ति की अनुपस्थिति में, परवर्ती चेर साम्राज्य के विभाग शीघ्र ही अलग-अलग सरदारों के नेतृत्व वाली रियासतों के रूप में उभरे।
- चेर-उत्तर काल में नम्बूदिरी ब्राह्मणों का क्रमिक पतन और नायरों का उत्थान देखा गया।

पांड्य राजवंश (पांड्य)

पांड्य राजवंश

- पांड्यों **ने दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया, जो अब तमिलनाडु राज्य में आता है।** यह प्राचीन तमिलनाडु के तीन प्रमुख राज्यों में से एक था, अन्य दो चोल और चेर के साथ । पांड्य **उन मुवेन्दरों में से एक** थे जिन्होंने पूर्व-आधुनिक काल तक, यद्यपि रुक-रुक कर, भारत के दक्षिणी भाग पर शासन किया।
- **मुवेन्दर** शब्द एक तमिल शब्द है जिसका अर्थ है **तीन प्रमुख , जिसका प्रयोग तीन शासक परिवारों, चोल, चेर और पांड्य** के प्रमुखों के लिए किया जाता था ।
- प्रारंभिक पाण्ड्यों के बारे में अधिकांश जानकारी उपलब्ध **साहित्यिक स्रोतों** से प्राप्त होती है ।
- **प्रारंभिक पांड्य साम्राज्य की राजधानी कोरकाई थी** , जो भारतीय प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिणी छोर पर स्थित एक बंदरगाह था, लेकिन बाद में राजधानी को कुडाल (अब मदुरै) में स्थानांतरित कर दिया गया।
- **मध्ययुगीन पांड्य साम्राज्य के शासन के साक्ष्य पुरातात्विक साक्ष्यों** से भरपूर हैं ।

बाद के पांड्यों

- **कालभ्रों से पराजय के बाद प्रारंभिक पांड्यों का महत्व समाप्त हो गया** और वे **छठी शताब्दी ईस्वी में पुनः सत्ता में आ गए। नौवीं शताब्दी ईस्वी में चोलों ने** उन्हें फिर से परास्त कर दिया, लेकिन **पांड्यों ने संघर्ष जारी रखा और बारहवीं शताब्दी में पुनः शासन करने लगे।**
- पांड्यों के **रोमन साम्राज्य, यूनानियों, चीनियों और मिस्रियों के साथ राजनयिक संबंध थे। मार्को पोलो ने पांड्य साम्राज्य का उल्लेख** अपने अब तक देखे गए सबसे समृद्ध साम्राज्यों में से एक के रूप में किया है, **जैसा कि मेगस्थनीज ने अपनी रचना इंडिका में** और **चीनी यात्री यू ह्आन ने** भी किया है ।
- चौदहवीं शताब्दी में, **इस्लामी दिल्ली सल्तनत** के आक्रमण के बाद पांड्य साम्राज्य का अंत हो गया । इस आक्रमण ने पांड्य साम्राज्य को इतना तहस-नहस कर दिया कि उसका पुनरुत्थान संभव नहीं था। बाद में पांड्य **विजयनगर साम्राज्य का हिस्सा बन गए ।**
- पांड्य शब्द तमिल शब्द **'पंडी' से लिया गया है जिसका अर्थ 'बैल' होता है, और प्रारंभिक तमिलों द्वारा इसे पुरुषत्व, शक्ति और वीरता का प्रतीक** माना जाता था । ऐसा कहा जाता है कि प्रारंभिक पांड्यों ने **कुरुक्षेत्र युद्ध** में भी भाग लिया था , जिसमें वे विजयी पांडवों के पक्ष में थे।

राजनीतिक इतिहास

- प्राचीन काल में पांड्य शासन का इतिहास स्पष्ट रूप से नहीं लिखा गया है। संगम काल की समाप्ति के बाद, **छठी शताब्दी ईस्वी में कडुंगों ने कालभ्रों को** हराकर प्रथम पांड्य साम्राज्य की स्थापना की । कालभ्रों को हराने के बाद धीरे-धीरे पांड्य साम्राज्य का कद बढ़ता गया।
- हालाँकि, कडुंगों के उत्तराधिकारी पड़ोसी चोल और चेर राजाओं के विरुद्ध लगातार युद्धरत रहे। **चोलों द्वारा पांड्य वंश के मुत्तरयार को हराकर तंजावुर पर विजय प्राप्त करने के बाद, पांड्य अज्ञातवास में चले गए।** चोल राजा परंतक प्रथम ने पांड्य क्षेत्रों को नष्ट कर दिया और राजसिंह तृतीय को पराजित किया।
- हालाँकि, पांड्यों ने हार नहीं मानी और चोल प्रभुत्व से खुद को मुक्त करने के प्रयास में चेरों और श्रीलंका के राजाओं के साथ विभिन्न गठबंधन बनाकर अपना संघर्ष जारी रखा।
- **परातंक चोल द्वितीय के पुत्र आदित्य करिकाल** के नेतृत्व में , **चोलों ने वीर पांड्य को युद्ध में पराजित किया** । महिंदा चतुर्थ की सिंहली सेना द्वारा सहायता प्राप्त होने के बावजूद, पांड्यों को क्षेत्र से बाहर कर दिया गया और पांड्यों को

सीलोन (श्रीलंका) द्वीप पर **शरण लेनी पड़ी। इसे पांड्यों के लिए लंबे समय तक गुमनामी की शुरुआत माना जाता है, जिनके स्थान पर कई चोल वायसराय आए जिन्होंने 1020 ईस्वी से 'चोल पांड्य' की** उपाधि से मदुरै पर शासन किया। ' **चोल शासन'** तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत तक जारी रहा।

- **तेरहवीं शताब्दी में पांड्य शासन सबसे मज़बूत था।** तेरहवीं शताब्दी के आरंभ में **मारवर्मन सुंदर पांड्य** ने एक महान शासन की नींव रखी । इस काल में सात प्रमुख पांड्य सम्राटों के अधीन पांड्य साम्राज्य का विस्तार हुआ, जिन्होंने **'एल्लारक्कु नयनार',** जिसका अर्थ है **'सबका स्वामी', की** उपाधि धारण की।
- **जटावरमन सुन्दर पांड्या के** शासनकाल में यह शक्ति अपने चरम पर पहुंच गई , जब पांड्य साम्राज्य गोदावरी नदी के तट पर स्थित तेलुगू क्षेत्रों से लेकर सीलोन (श्रीलंका) के उत्तरी भाग तक फैल गया।
- **जटावर्मन वीर पांडियन के वंश को बाद में कोंगु पांडिया** कहा गया और वे पहले कोंगु पांड्य राजा थे। **पांड्य वंश की मजबूत वापसी चोल साम्राज्य के कमजोर होने का परिणाम थी । कुलोथुंगा चोल द्वितीय** के उत्तराधिकारी या तो कमजोर थे या अयोग्य।
- हालांकि, 1311 ई. में, परिदृश्य बदल गया जब अलाउद्दीन खिलजी ने **वारंगल पर कब्जा करने और होयसला साम्राज्य को हराने** के बाद **मलिक काफूर** को सैन्य सहायता भेजी । परिणामस्वरूप, **मदुरै अपनी समृद्धि के लिए मलिक काफूर के हमले की जद में आ गया** । मदुरै को लूटने के बाद, मलिक काफूर ने **रामेश्वरम तक मार्च किया** जहां उसने एक मस्जिद बनवाई। इस हमले के बाद खिलजी सल्तनत ने गवर्नर जनरल **खुसरो खान और उलुग खान के नेतृत्व में क्रमशः 1314 ई. और 1323 ई. में** दो और अभियान किए। इन आक्रमणों ने पांड्य साम्राज्य को पुनर्जीवित करने से परे नष्ट कर दिया। जबकि पिछले आक्रमण लूटपाट तक ही सीमित थे, **उलुग खान ने पूर्व पांड्य प्रभुत्व को** मालाबार प्रांत के रूप में दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

राजनीति

- पांड्यों के अभिलेखों में मंत्रिपरिषद या दरबार का उल्लेख नहीं है, लेकिन उनमें **मंत्रि और उत्तरमंत्रि का उल्लेख है।** उत्तरमंत्रि **संधिविग्रह का कार्य** करते थे और **मंदिर-ओलै-नयगम कार्यालय के प्रभारी** होते थे जो अनुदानों से संबंधित लिखित आदेशों का सत्यापन करता था।
- तेन्नवन **-अपट्टुदविगल राजा के सरदार होते थे** जिनका राज्य में बहुत प्रभाव होता था। वे राजा के अंगरक्षक या सम्माननीय साथी होते थे। सेना में एक सेनापति के अधीन सैनिक होते थे। हालाँकि, **सेना का सर्वोच्च सेनापति होने के नाते** , राजा कई अवसरों पर सैनिकों की टुकड़ियों का सीधा नेतृत्व करता था। **मतंगजाध्यक्ष** एक महत्वपूर्ण अधिकारी था जो **हाथियों की देखरेख करता था।**

प्रशासन

- **पांड्यों के क्षेत्र को** पांड्यमंडलम **, तेनमंडलम या पांड्यनाडु** कहा जाता है , जो वैगई और तमिरापर्णी नदियों द्वारा पोषित क्षेत्रों को छोड़कर चट्टानी, पहाड़ी क्षेत्रों और पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित है।
- पाण्ड्य राजाओं ने **मदुरै को** अपनी राजधानी के रूप में पसंद किया।
- साम्राज्य को **तीन प्रशासनिक प्रभागों** में वर्गीकृत किया गया था ; **नाडु, कुर्रम और** ग्रामम् जबकि नाडु स्थानीय प्रशासन की बड़ी इकाई थी, **स्थानीय प्रशासन की मूल इकाई ग्रामम् थी** ।
- **मंदिरों और ब्राह्मणों को भूमि अनुदान दिया जाता था** । इन अनुदानों में खेती और प्रशासनिक अधिकारों सहित विभिन्न अधिकार शामिल थे। शिलालेखों से हमें ग्राम सभाओं और उनके कामकाज के तरीकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- शिलालेखों के अनुसार, **पांड्यों के प्रशासनिक कर्मचारियों** में **एवी मुदल** (मूल आदेशों के रक्षक) **, वैक्केट्री पंतरप्पोट्टकम** (शाही रजिस्टर और अधिकारी के रक्षक) शामिल थे।
- ऐसा प्रतीत होता है कि भूमि अनुदान और अन्य आदेशों की स्वीकृति से संबंधित अभिलेख राजधानी में रखे जाते थे और स्थानीय अधिकारियों को **राजा के आदेश को लागू करने का निर्देश दिया जाता था।**

राजनीतिक पहलू

- **पांड्य शासनकाल के दौरान शाही महलों को तिरुमालिगई और मनपरन तिरुमालिगई** कहा जाता था और उनमें प्रयुक्त शाही सोफे का नाम **स्थानीय प्रमुखों** के नाम पर रखा गया था , जो राजाओं के प्रभुत्व की वैधता को प्रमाणित करता था।
- भूमि का राजनीतिक विभाजन इस प्रकार था:
- **ब्राह्मणों को सौंपी गई** भूमि **सलाबोगम** थी
- **लोहारों को** सौंपी गई भूमि को **तत्तारकणी** कहा जाता था
- **बढ़ईयों को** सौंपी गई भूमि को **तक्कु-मनियाम** के नाम से जाना जाता था
- **शिक्षा प्रदान करने के लिए ब्राह्मण समूह** को दान की गई भूमि को **भट्टवृति** कहा जाता था

धर्म

- पांड्य **वैदिक यज्ञ धर्म का पालन करते थे और ब्राह्मण पुजारियों को संरक्षण देते थे** । प्रारंभ में, पांड्य **शैव धर्म के कट्टर अनुयायी** थे । हालाँकि, **कालभ्रों के आक्रमण के बाद, जैन धर्म ने लोकप्रियता हासिल करना शुरू कर दिया।**
- बाद में, **भक्ति आंदोलन के दौरान, शैव और वैष्णव धर्म फिर से उभरे** । पांड्यों ने खुद को **भगवान शिव और देवी पार्वती का वंशज बताया।** कुछ पांड्य शासकों ने अपनी राजनीतिक सत्ता को वैध बनाने के लिए **हिरण्यगर्भ, तुलाभर और गोसहस्र नामक अनुष्ठान भी किए।**

अर्थव्यवस्था

- **तटीय क्षेत्र** में स्थित होने के कारण , पांड्यों का **मत्स्य पालन और उससे संबंधित व्यापारिक गतिविधियों पर नियंत्रण** था । इसके अलावा, पांड्य साम्राज्य के मोतियों की उत्तर भारत के राज्यों में बहुत माँग थी।
- परिणामस्वरूप, पांड्यों को **मोती के व्यापार से अपार धन** प्राप्त हुआ । मोती का व्यापार **पांड्य बंदरगाह शहर कोरकाई में केंद्रित था।**
- यहाँ तक कि शाही रथ और उन्हें खींचने वाले घोड़े भी मोतियों से सजे होते थे। **वासाफ़** नामक एक विद्वान का दावा है कि इस काल में घोड़ों का व्यापार बहुत आम था।
- पांड्यों के अधीन **सबसे व्यस्त बंदरगाह शहर कयालपट्टिनम** (अब थूथुकुडी जिले में) था।
- साम्राज्य को **करों से भारी राजस्व प्राप्त होता था। खेती की ज़मीनों** के अलावा , **मंदिरों पर भी कर लगाया जाता था** । करघे और दुकानदार भी साम्राज्य को कर देते थे।
- कई बार, कर अधिकारी ग्रामीणों को परेशान करते थे और उनसे भारी कर वसूलते थे। भारी कर के कारण, कुछ किसान गाँव छोड़कर भाग गए।
- पांड्यों के ताम्रपत्र अभिलेखों में तमिल और संस्कृत में शिलालेख हैं। हालाँकि, पांड्यों के तमिल शिलालेखों में व्यापक वंशावली है जो बताती है कि पांड्यों के **स्थानीय निवास** थे ।
- मनकुडी मरुथनार की संगम कविता **मदुरैकांसी में नेदुंज चेलियान III के शासन** के तहत मदुरै और पांड्य साम्राज्य का वर्णन किया गया है । नक्कीरार ने अपनी कृति ' **नेदुनलवदाई'** में राजा के महल का वर्णन किया है। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के **पुराणनुरू और अगनानुरु संग्रह की कविताओं में** विभिन्न **पांडियन सम्राटों की प्रशंसा की गई है।**

टंकण

- प्रारंभिक तमिलकम सिक्कों पर तीन मुकुटधारी राजा, एक बाघ, एक मछली और एक धनुष अंकित थे, जो **चोल, पांड्य और चेर का प्रतिनिधित्व करते थे।**
- **पाण्ड्य** सिक्कों पर विभिन्न समय के विभिन्न **पाण्ड्य शासकों** की गाथा अंकित है ।
- प्रारंभिक काल में, **पांड्यों ने** चाँदी के अंकित और ताँबे के सिक्के जारी किए। इस काल के **पांड्य शासकों को** कुछ स्वर्ण सिक्के भी दिए गए। इन सिक्कों पर उनके प्रतीक चिन्ह के रूप में एक **मछली** की छवि , अकेले या जोड़े में, अंकित होती थी।
- कुछ सिक्कों पर सुन्दर, **सुन्दर पाण्ड्य** या केवल **'सु' अक्षर अंकित थे।** कुछ सिक्कों पर सूअर और **'वीर-पाण्ड्य' अंकित थे।**

- पांड्य सिक्के मूलतः **वर्गाकार** होते थे । सिक्कों के एक ओर **हाथी** का चित्र बना होता था, जबकि दूसरी ओर **खाली छोड़ दिया जाता था।**
- पांड्यों के समय चांदी और सोने के सिक्कों पर **तमिल-ब्राह्मी भाषा में अभिलेख अंकित थे,** जबकि तांबे के सिक्कों पर तमिल किंवदंतियां अंकित थीं।
- मछली के प्रतीक वाले पांड्य सिक्कों को **'कोडंडारमन** ' और 'कांची' वलंगम पेरुमल' के नाम से जाना जाता था।
- **इनके अलावा, सिक्कों पर ' एलम थलाईयांगम'** शब्द देखा गया, जिसके एक ओर खड़े राजा और दूसरी ओर एक मछली को दर्शाया गया था।
- **'समराकोलाहलम्'** और ' **भुवनेकविरम** ' शब्द **गरुड़ को** दर्शाने वाले सिक्कों पर , ' **कोनेरिरायण** ' शब्द बैल को दर्शाने वाले सिक्कों पर , तथा ' **कलियुगरमण ' शब्द पैरों के जोड़े को** दर्शाने वाले सिक्कों पर पाए गए ।

कला और वास्तुकला

- पांड्य वास्तुकला में **चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों के साथ-साथ संरचनात्मक मंदिर भी शामिल थे। इन मंदिरों की विशेषता विमान, मंडप और शिखर** की उपस्थिति थी । **शिव मंदिरों में महामंडप के सामने एक नंदी होता है।**
- मंदिरों के आयताकार प्रवेश द्वार और द्वार, **गोपुरम , विमानों** पर बनाए गए थे । धीरे-धीरे, गोपुरम को **शिखरों** से ज़्यादा महत्व दिया जाने लगा । **मदुरै स्थित मीनाक्षी मंदिर और तिरुनेलवेली स्थित नेल्लईअप्पार मंदिर, पांड्यों के शासनकाल के दौरान बनाए गए थे।**
- **तिरुमलाईपुरम गुफाओं और सित्तनवासल** की जैन गुफाओं में **भित्ति चित्रों** की कुछ खंडित परतें देखी जा सकती हैं । ये चित्र मंदिरों की छतों, बरामदों और कोष्ठकों पर दिखाई देते हैं।

राजवंश का महत्व

- दक्षिण भारत के सबसे प्राचीन राजवंशों में से एक, **पांड्यों ने दक्षिण भारत में सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** । उन्होंने **ब्राह्मणवादी परंपराओं को** बढ़ावा दिया , लेकिन अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु बने रहे।
- इसके अलावा, पांड्यों ने **तमिल साहित्य में, विशेष रूप से तमिल और संस्कृत भाषाओं में** , महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्राचीन काल की कुछ महान कविताएँ पांड्य शासनकाल में रची गईं।

चालुक्य राजवंश

चालुक्य राजवंश

- **चालुक्य वंश ने छठी से बारहवीं शताब्दी** के बीच **दक्षिणी और मध्य भारत** के बड़े हिस्से पर शासन किया।
- इस अवधि के दौरान, उन्होंने **तीन संबंधित लेकिन अलग-अलग राजवंशों के** रूप में शासन किया ।
- **बादामी के चालुक्य** : यह **सबसे प्रारंभिक राजवंश** था , जिसने **6वीं शताब्दी के मध्य से वातापी** (आधुनिक बादामी) से शासन किया।
  - बादामी के चालुक्यों ने बनवासी के कदंब साम्राज्य के पतन के समय अपनी स्वतंत्रता का दावा करना शुरू कर दिया और पुलकेशिन द्वितीय के शासनकाल के दौरान तेजी से प्रमुखता हासिल की।
  - इस राजवंश ने लगभग दो सौ वर्षों तक (6वीं से 8वीं शताब्दी के बीच) शासन किया।
  - आठवीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों के उदय ने बादामी के चालुक्यों को पीछे छोड़ दिया।
- **वेंगी के चालुक्य (जिन्हें पूर्वी चालुक्य** भी कहा जाता है):
  - वेंगी के चालुक्य **, बादामी के चालुक्यों से अलग हुए थे।** बादामी के शासक पुलकेशिन द्वितीय (608-644 ई.) ने विष्णुकुंडिन वंश के अवशेषों को पराजित करके पूर्वी दक्कन के वेंगी क्षेत्र पर विजय प्राप्त की। उन्होंने 624 ई. में अपने भाई कुब्ज विष्णुवर्धन को इस नव-अधिग्रहित क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया।
  - **पुलकेशिन द्वितीय की मृत्यु के बाद, विष्णुवर्धन का उप-राज्य पूर्वी दक्कन में एक स्वतंत्र राज्य बन गया** । इस प्रकार, पूर्वी चालुक्य साम्राज्य का गठन हुआ।
  - उन्होंने वर्तमान **आंध्र प्रदेश** के वेंगी क्षेत्र पर लगभग 1130 ई. तक शासन किया। वे 1189 ई. तक **चोलों के सामंतों के रूप में इस क्षेत्र पर शासन करते रहे।**
- **कल्याणी के चालुक्य (जिन्हें पश्चिमी चालुक्य** भी कहा जाता है):
  - **आठवीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों ने बादामी के चालुक्यों को पीछे छोड़ दिया** । मान्यखेत के राष्ट्रकूट साम्राज्य ने दो शताब्दियों से भी अधिक समय तक दक्कन और मध्य भारत के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखा।
  - 10वीं शताब्दी के अंत में, राष्ट्रकूट साम्राज्य में भ्रम की स्थिति को देखते हुए, बादामी के चालुक्यों के वंशज तेजी से सत्ता में आये और **सोमेश्वर प्रथम के** अधीन एक साम्राज्य का निर्माण किया , जिसने अपनी राजधानी कल्याणी में स्थानांतरित कर दी।
  - इन पश्चिमी चालुक्यों ने **कल्याणी** (आधुनिक **बसवकल्याण**) से 12वीं शताब्दी के अंत तक शासन किया। इस राजवंश को पश्चिमी चालुक्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह समकालीन वेंगी के पूर्वी चालुक्यों से अलग था।

चालुक्य वंश का महत्व

- चालुक्यों का उदय दक्षिण भारत के इतिहास में एक **महत्वपूर्ण मील का पत्थर** और कर्नाटक के इतिहास में एक **स्वर्ण युग का प्रतीक है।**
- बादामी चालुक्यों के उदय के साथ दक्षिण भारत में राजनीतिक माहौल छोटे राज्यों से बड़े **साम्राज्यों की ओर** स्थानांतरित हो गया।
- **इतिहास में पहली बार** , एक **दक्षिण भारतीय राज्य ने** कावेरी और नर्मदा नदियों के बीच **के पूरे क्षेत्र पर नियंत्रण कर उसे अपने नियंत्रण में** ले लिया।
- उस साम्राज्य के उदय के साथ ही **कुशल प्रशासन का जन्म हुआ** , **विदेशी व्यापार** और **वाणिज्य में वृद्धि हुई तथा वेसर** नामक **वास्तुकला की नई शैली का** विकास हुआ ।
- नौवीं शताब्दी के आसपास, जैन पुराणों, वीरशैव वचनों और ब्राह्मण परंपराओं में **कन्नड़ भाषा का साहित्य की भाषा के रूप में विकास हुआ।**
- **इसके अलावा, ग्यारहवीं शताब्दी में पूर्वी चालुक्यों के** संरक्षण में **तेलुगु साहित्य** का जन्म हुआ ।

चालुक्य इतिहास के स्रोत

- बादामी चालुक्य इतिहास के बारे में जानकारी का मुख्य स्रोत **शिलालेख हैं। इनमें से प्रमुख हैं:**
  - मंगलेसा के बादामी **गुफा शिलालेख** (578)
  - **कप्पे अरबाभट्टा** का 700 का रिकॉर्ड
  - पुलकेशी द्वितीय का **पेद्दावडुगुरु शिलालेख**
  - कांची **कैलासनाथ** शिलालेख और
  - विक्रमादित्य द्वितीय के **पट्टदकल विरुपाक्ष मंदिर के शिलालेख**
- चीनी यात्री **ह्वेन-त्सियांग ने पुलकेशी द्वितीय के दरबार का दौरा किया था**
  - **जैसा कि ऐहोल अभिलेख** में उल्लेख है, उस यात्रा के समय पुलकेशी द्वितीय ने अपने साम्राज्य को तीन **महाराष्ट्रों** या बड़े प्रांतों में विभाजित कर दिया था, जिनमें से प्रत्येक में 99,000 गांव थे।
  - वह साम्राज्य संभवतः वर्तमान कर्नाटक, महाराष्ट्र और तटीय कोंकण को कवर करता था
- **कल्याण के पश्चिमी चालुक्य वंश के विक्रमादित्य VI** के दरबार के प्रसिद्ध कवि **विद्यापति बिल्हण ने** अपनी कृति विक्रमांकदेव चरित में एक किंवदंती का उल्लेख किया है, जिसका उपयोग इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए भी किया गया है।

चालुक्यों का इतिहास

बादामी के चालुक्य

- **पुलकेशिन प्रथम (533-66)** के साथ चालुक्य एक संप्रभु शक्ति बन गए ।
  - उन्होंने 543-44 ई. में कर्नाटक के बीजापुर जिले में बादामी के निकट पहाड़ी को एक मजबूत किला बनाकर अपने राज्य की नींव रखी और एक अश्वमेध यज्ञ किया।
  - उन्होंने अपनी राजधानी **वातापी (बादामी) के पहाड़ी किले** में स्थापित की । राजधानी का चुनाव रणनीतिक कारणों से किया गया था क्योंकि यह स्थान पहाड़ियों और नदियों से घिरा हुआ था।
- He adopted the title **Vallabheshvara** and performed the **ashvamedha**.
- उनके बाद **कीर्तिवर्मन प्रथम** (566-597) ने उत्तर-कोंकणा के **मौर्यों** , नलवाडी (बेल्लारी) के **नलों** और बनवासी के **कदंबों को हराकर राज्य का और विस्तार किया। कीर्तिवर्मन प्रथम के बाद उनके भाई मंगलेसा** ने शासन किया , जिन्होंने एक संरक्षक के रूप में शासन करना शुरू किया, क्योंकि कीर्तिवर्मन प्रथम का पुत्र पुलकेशिन द्वितीय नाबालिग था।
  - मंगलेश ने दोनों समुद्रों के बीच के सम्पूर्ण क्षेत्र पर चालुक्यों की सत्ता स्थापित की तथा चेदि के कलचुरियों को पराजित किया।
- **पुलकेशिन द्वितीय** (609-642 ई.) को अपने चाचा मंगलेश के विरुद्ध गृहयुद्ध छेड़ना पड़ा, क्योंकि मंगलेश ने सत्ता सौंपने से इनकार कर दिया था। उसने सत्याश्रय की उपाधि धारण की।
  - **पुलकेशिन द्वितीय के अभियानों** के साथ चालुक्य दक्कन में सर्वोच्च शक्ति बन गए।
    - उसने दक्षिण में **पश्चिमी गंगों** और **अलूपों को पराजित किया तथा उत्तर में लाटों** , **मालवों** और **गुर्जरों को** अपनी अधीनता में ले लिया।
    - पुलकेशिन द्वितीय की सेना ने नर्मदा के तट पर **हर्षवर्धन की सेनाओं को रोका।**
    - पुलकेशिन द्वितीय ने आंध्र डेल्टा के **विष्णुकुंडिनों को** भी पराजित किया । उसने कृष्णा और गोदावरी नदियों के मुहाने के बीच स्थित वेंगी पर कब्ज़ा कर लिया। उसने 621 ई. में अपने छोटे भाई विष्णुवर्धन को विजय अभियान को सुदृढ़ करने और उस क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए भेजा। 631 ई. में विष्णुवर्धन को अपने राज्य से बाहर जाने की अनुमति दे दी गई।
- इस प्रकार, वेंगी के चालुक्यों या पूर्वी चालुक्यों की वंशावली शुरू हुई, जो पांच सौ से अधिक वर्षों तक इस क्षेत्र पर नियंत्रण में रहे।
    - **पल्लव** साम्राज्य के विरुद्ध उनका पहला अभियान , जिस पर उस समय महेंद्रवर्मन प्रथम का शासन था, पूर्णतः सफल रहा और उन्होंने पल्लव साम्राज्य के उत्तरी भाग पर कब्जा कर लिया।

- हालाँकि, पुलकेशिन का पल्लव क्षेत्र पर दूसरा आक्रमण असफल रहा। महेंद्रवर्मन के उत्तराधिकारी नरसिंहवर्मन प्रथम ने उसे कई युद्धों में बुरी तरह पराजित किया। इसके बाद नरसिंहवर्मन ने चालुक्यों पर आक्रमण किया, बादामी पर कब्ज़ा किया और संभवतः पुलकेशिन द्वितीय की हत्या कर दी।
- **अजंता के** एक चित्र में पुलकेशिन द्वितीय को ईरान से आए राजदूत का स्वागत करते हुए दिखाया गया है। पुलकेशिन द्वितीय की बढ़ती शक्ति और भारत के साथ व्यापारिक संबंधों को देखते हुए, ईरानी राजा खुसरो द्वितीय ने 625 ई. में पुलकेशिन द्वारा ईरान भेजे गए राजदूत के बदले में बादामी में अपना राजदूत भेजा।
- **चीनी तीर्थयात्री ह्वेन त्सांग ने** लगभग 641 ई. में पुलकेशिन राज्य का दौरा किया था।
- पुलकेशिन द्वितीय ने कला और स्थापत्य कला को प्रोत्साहित किया, धर्म और शिक्षा को बढ़ावा दिया। उनके दरबारी कवि **रवि कीर्ति ने ऐहोल शिलालेख** में उनकी स्तुति लिखी है ।
- **पुलकेशिन द्वितीय के पुत्र विक्रमादित्य प्रथम** (644-681 ई.) ने एकता की भावना स्थापित करने में सफलता प्राप्त की और पल्लवों से खोए हुए क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने के साथ ही चालुक्यों की शक्ति धीरे-धीरे पुनः स्थापित हुई। उन्होंने पल्लवों को खदेड़ दिया, पांड्यों के साथ गठबंधन किया और पल्लव क्षेत्र पर बार-बार आक्रमण किए।
- उसने पल्लवों की राजधानी कांची को लूटा और इस प्रकार पल्लवों के हाथों अपने पिता की पराजय और मृत्यु का बदला लिया।
- **विनयादित्य** (681-693 ई.) का शासनकाल सामान्यतः शांतिपूर्ण और समृद्ध था।
- **अगले शासक विजयादित्य** (693-733 ई.) का शासनकाल सबसे लंबा, सबसे समृद्ध और शांतिपूर्ण रहा। इस दौरान मंदिर निर्माण में भारी वृद्धि हुई।
- कहा जाता है कि चालुक्य राजा **विक्रमादित्य द्वितीय (733-745 ई.) ने कांची पर तीन बार विजय प्राप्त** की थी । 740 ई. में उन्होंने पल्लवों को पूरी तरह से परास्त कर दिया और उनकी विजय ने सुदूर दक्षिण में पल्लवों के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया। उनका शासनकाल दक्षिण गुजरात पर अरब आक्रमण को विफल करने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

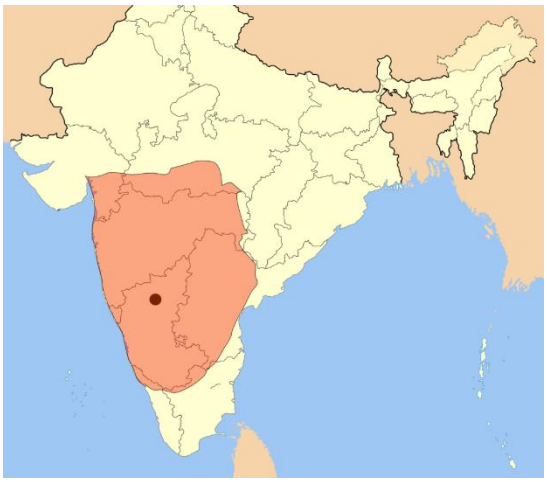

- अंतिम चालुक्य शासक **कीर्तिवर्मन द्वितीय** (744-745 ई.) को उनके एक सामंत, राष्ट्रकूट वंश के संस्थापक दंतिदुर्ग ने पराजित किया और इस प्रकार बादामी के चालुक्य वंश का अंत हो गया।

बादामी चालुक्य

बादामी के चालुक्यों का योगदान:

- चालुक्यों ने दक्कन में एक **विशाल साम्राज्य** स्थापित किया । उन्होंने पहले बादामी के चालुक्यों के अधीन लगभग दो सौ वर्षों तक और फिर लगभग उतने ही समय तक कल्याण के चालुक्यों के अधीन अपने वंश को गौरव प्रदान किया। इस प्रकार, इस राजवंश ने दक्षिण भारत के एक विशाल क्षेत्र पर काफी लंबे समय तक शासन किया।
- इसने सैन्य कमांडरों और कुशल प्रशासकों, दोनों के रूप में **कई योग्य शासकों को** जन्म दिया । इस राजवंश के कई शासकों ने दक्षिण और उत्तर भारत के शक्तिशाली शासकों के विरुद्ध युद्ध किया और कई बार सफल हुए। उन्होंने परमेश्वर, परमभट्टारक आदि जैसी उच्च उपाधियाँ धारण कीं और अपने साम्राज्य का कुशल संचालन किया। इस प्रकार, इस राजवंश ने दक्षिण भारत की राजनीति में काफी लंबे समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- चालुक्यों ने **दक्षिण भारतीय संस्कृति के विकास** में भी योगदान दिया । चालुक्यों का राज्य आर्थिक रूप से समृद्ध था और इसमें कई **बड़े शहर और बंदरगाह** थे जो भारत के बाहर के देशों के साथ भी आंतरिक और बाह्य व्यापार के केंद्र थे। चालुक्यों ने इस समृद्धि का उपयोग वास्तुकला, साहित्य और ललित कलाओं के विकास के लिए किया।
- चालुक्य युग को **उत्तरी और दक्षिणी भारत की संस्कृतियों के सम्मिश्रण की शुरुआत** के रूप में देखा जा सकता है , जिसने दोनों क्षेत्रों के बीच विचारों के प्रसारण का मार्ग प्रशस्त किया।

- **वास्तुकला** के क्षेत्र में यह स्पष्ट रूप से देखा जाता है। चालुक्यों ने **वेसर वास्तुकला शैली को** जन्म दिया जिसमें उत्तरी नागर और दक्षिणी द्रविड़ शैलियों के तत्व शामिल हैं।
- इस अवधि के दौरान, विस्तारित **संस्कृत संस्कृति** स्थानीय द्रविड़ भाषाओं के साथ घुलमिल गई, जो पहले से ही लोकप्रिय थीं।
- **वर्तमान समय में, चालुक्य उत्सव** नामक उत्सव, संगीत और नृत्य का तीन दिवसीय उत्सव, कर्नाटक सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है, जो हर साल **पट्टाडकल, बादामी और ऐहोल** में आयोजित किया जाता है ।
  - यह आयोजन कला, शिल्प, संगीत और नृत्य के क्षेत्र में चालुक्यों की उपलब्धियों का उत्सव है। यह कार्यक्रम पट्टाडकल से शुरू होकर ऐहोल में समाप्त होता है।

धर्म में योगदान:

- चालुक्य **ब्राह्मण धर्म** के अनुयायी थे ।
- **उन्होंने वैदिक रीति** से अनेक यज्ञ किए और उनके शासनकाल में **अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे और संकलित किए गए। बलिदानों को बहुत महत्व दिया जाता था**। राजा स्वयं अश्वमेध और वाजपेय सहित अनेक यज्ञ करते थे।
- हिंदू धर्म के रूढ़िवादी स्वरूप पर इस ज़ोर के बावजूद, पौराणिक संस्करण लोकप्रिय होता गया। इसी लोकप्रियता ने विष्णु, शिव और अन्य देवताओं के सम्मान में मंदिरों के निर्माण को गति दी।
- ब्रह्मा, विष्णु और शिव के सम्मान में **वातापी और पट्टदकल** में शानदार संरचनाएं स्थापित की गईं ।
- **चालुक्यों ने धार्मिक सहिष्णुता** की नीति अपनाई।
- उनके शासनकाल में दक्कन में **जैन धर्म का** खूब विकास हुआ। प्रसिद्ध जैन विद्वान **रविकीर्ति को पुलकेशिन द्वितीय** के दरबार में यह सम्मान दिया गया ।
- विजयादित्य और विक्रमादित्य ने भी जैन विद्वानों को कई गाँव दान में दिये।
- बौद्ध धर्म निश्चित रूप से पतन की ओर अग्रसर था, लेकिन चालुक्यों ने उसके साथ सहिष्णुता का व्यवहार किया। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने चालुक्य साम्राज्य की अपनी यात्रा के दौरान कई सुस्थापित विहार और मठ देखे।
- यहां तक कि **पारसियों को** भी बम्बई के थाना जिले में अन्य लोगों के हस्तक्षेप के बिना बसने और अपने धर्म का पालन करने की अनुमति दी गई।

वास्तुकला में योगदान:

- चालुक्य कला और वास्तुकला के महान संरक्षक थे।
- उन्होंने संरचनात्मक मंदिरों के निर्माण में **वेसर शैली का** विकास किया । हालाँकि, वेसर शैली राष्ट्रकूटों और होयसल के शासनकाल में ही अपनी चरम अवस्था तक पहुँच पाई।
- प्रारंभिक मध्ययुगीन चट्टान-काट मंदिरों और संरचनात्मक मंदिरों के उदाहरण पाए जाते हैं।
- चालुक्यों के संरचनात्मक मंदिर ऐहोल, बादामी और पट्टाडकल में मौजूद **हैं ।**
- चालुक्यों के शासनकाल में **गुफा मंदिर वास्तुकला भी प्रसिद्ध थी। उनके गुफा मंदिर ऐहोल, बादामी, अजंता, एलोरा और नासिक में पाए जाते हैं।**

गुफा वास्तुकला:

- **आम तौर पर ब्राह्मणवादी/हिंदू मंदिरों का** प्रतिनिधित्व करता है ।
- इसमें अलग-अलग पैटर्न और डिजाइन हैं, यानी एकरूपता का कोई तत्व नहीं है।
- कुछ गुफा मंदिरों में **गर्भगृह और मंडप होते हैं।** गुफा मंदिरों की विशेषता उनके आधार और शीर्ष स्तंभ होते हैं जो सामान्यतः वर्गाकार होते हैं।
- सामान्यतः गुफाओं में उत्कीर्णन होते हैं, जिनमें से कुछ सुन्दर आकृति को दर्शाते हैं, जैसे **"नटराज"।**
- **ऐहोल गुफाएँ:**
- ऐहोल में दो उल्लेखनीय गुफा मंदिर हैं, एक शैव और दूसरा जैन, दोनों के आंतरिक भाग अत्यधिक अलंकृत हैं।
- **Ravanaphadi cave:**
  - यह एक शैव गुफा है।

- इसमें एक केंद्रीय हॉल, दो पार्श्व मंदिर खंड और पीछे की ओर एक लिंग के साथ एक गर्भगृह है।
- दीवारों और छत के एक हिस्से पर भी मूर्तियाँ हैं। इनमें नटराज के रूप में शिव और सप्त मातृकाओं की आकृतियाँ शामिल हैं।
- एलोरा और बादामी की मूर्तियों की तुलना में ये मूर्तियाँ अधिक पतली हैं और इनके मुकुट ऊँचे हैं।
- गुफा के प्रवेश द्वार के बाहर, सिथियन प्रकार की पोशाक पहने हुए बौनों और द्वारपालों की नक्काशी है।

- **बादामी गुफाएँ:**

- ये गुफाएं लाल बलुआ पत्थर की पहाड़ी पर बनी हैं।
- तीन प्रमुख गुफाओं में से सबसे बड़ी गुफा वैष्णव है, जबकि अन्य शैव और जैन सम्बंधी हैं।
- गुफाओं की योजना सरल है, जिसमें एक बरामदा और एक स्तंभयुक्त हॉल है जो पीछे की दीवार में एक छोटे वर्गाकार गर्भगृह की ओर जाता है।
- दीवारें और छतें नक्काशी से सजी हुई हैं।
- गुफा संख्या 3 प्रारंभिक चालुक्य गुफाओं में सबसे बड़ी, सबसे अलंकृत और सबसे प्रभावशाली है।

- इसमें वराह (सूअर), नरसिंह (सिंह) और वामन (बौना) सहित विभिन्न विष्णु अवतारों की प्रभावशाली उभरी हुई मूर्तियाँ हैं। सूअर पश्चिमी चालुक्यों का प्रतीक भी था।
- इसमें मिथुन आकृतियाँ (प्रेमपूर्ण जोड़े) भी हैं जो अपनी विविधता और उत्कृष्टता में असाधारण हैं।

मंदिर वास्तुकला:

- इस काल के संरचनात्मक मंदिर अधिकांशतः **गारे के प्रयोग के बिना, पत्थर के बड़े-बड़े खंडों से निर्मित थे।**
- भीतरी दीवारों और छतों पर **मूर्तिकला का अलंकरण** है । ऐहोल, पट्टाडकल और बादामी के मंदिरों पर वास्तुकारों और मूर्तिकारों के संघों और इन स्थलों पर काम करने वाले व्यक्तिगत शिल्पकारों के नाम अंकित हैं।
- चालुक्य मंदिरों को **दो चरणों** में विभाजित किया जा सकता है ।

- पहला चरण प्रारंभिक स्थापत्य कला का चरण था (**6वीं से 8वीं शताब्दी के प्रारंभ तक) और इसका प्रतिनिधित्व ऐहोल** और **बादामी के** मंदिरों द्वारा किया जाता है ।
- दूसरा चरण **पट्टकल में स्थित 8वीं शताब्दी के बाद के और भव्य** मंदिरों का प्रतिनिधित्व करता है ।

- मंदिर निर्माण गतिविधियों की विशिष्टता यह है कि एक ही स्थल पर उत्तरी और दक्षिणी दोनों शैलियों का पालन किया गया है, लेकिन मंदिर अलग-अलग हैं।
- **उन्होंने संरचनात्मक मंदिरों के निर्माण में वेसर शैली** के रूप में जानी जाने वाली वास्तुकला की एक नई शैली की नींव रखी, जो उत्तरी और दक्षिणी विशेषताओं का मिश्रण दिखाती है, लेकिन इन शताब्दियों के दौरान अपनी एक विशिष्ट पहचान हासिल की।

- हालाँकि, वेसर शैली केवल राष्ट्रकूट और होयसल के शासनकाल में ही अपनी चरम अवस्था तक पहूँची।

- **ऐहोल में मंदिर:**

- अकेले ऐहोल में ही हमें 70 मंदिर देखने को मिलते हैं। इसे **"मंदिरों का शहर"** और " **भारतीय मंदिर वास्तुकला का उद्गम स्थल" कहा जाता है।**
- ऐहोल के अधिकांश मंदिर **हिंदू तीर्थस्थल** हैं और उनकी योजना में काफी भिन्नता है।
- ऐहोल में पाए गए सत्तर मंदिरों में से **चार महत्वपूर्ण हैं** ।

- **लाध खान मंदिर** एक नीची, सपाट छत वाली संरचना है जिसमें एक स्तंभयुक्त हॉल है। यह न तो उत्तरी शैली में है और न ही दक्षिणी शैली में, बल्कि यह एक ग्राम सभा संरचना जैसा दिखता है। इसमें एक स्तंभयुक्त बरामदा, एक बड़ा वर्गाकार हॉल है जिसके स्तंभ दो संकेंद्रित वर्गों में व्यवस्थित हैं, जिसके अंत में एक छोटा सा मंदिर क्षेत्र है।
- **दुर्गा मंदिर** एक बुद्ध चैत्य जैसा दिखता है। यह उत्तरी शैली का है, जिसकी विशेषता गर्भगृह और मंडप है।
- **हुचिमल्लीगुडी** मंदिर.
- **मेगुती** स्थित जैन मंदिर। यह दक्षिणी शैली का है। इसमें पुलकेशिन द्वितीय का प्रसिद्ध ऐहोल शिलालेख है।

- **बादामी में मंदिर:**

- यहां **मुक्तेश्वर मंदिर** और **मेलागुट्टी शिवालय** अपनी स्थापत्य कला के लिए उल्लेखनीय हैं।
- **मेलागुट्टी शिवालय**
- **पट्टाडकल में मंदिर** :
- यहां दस मंदिर हैं, **जिनमें से चार उत्तरी शैली में** और शेष **छह द्रविड़ शैली में हैं** ।
- संगमेश्वर मंदिर और **विरुपाक्ष मंदिर अपनी द्रविड़ शैली** के लिए प्रसिद्ध हैं **।**
- **Sangamesvara** temple
- विरुपाक्ष मंदिर सबसे महत्वपूर्ण है **।**
  - इसका निर्माण कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर के मॉडल पर किया गया है।
  - इसका निर्माण विक्रमादित्य द्वितीय की एक रानी ने करवाया था। इसके निर्माण में कांची से लाए गए मूर्तिकारों को लगाया गया था।
  - पट्टाडकल में सबसे बड़ा और सर्वाधिक मूर्तिकला वाला मंदिर।
  - यह **शिव** को समर्पित था और चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय की मुख्य रानी **लोकमहादेवी** के कहने पर इसका निर्माण किया गया था ।
  - यह प्रारंभिक चालुक्य मंदिर वास्तुकला के चरमोत्कर्ष का प्रतिनिधित्व करता है। यह उस समय का एकमात्र मंदिर है जिसमें दक्कन में पहली बार **गोपुरम है।**
  - द्रविड़ शैली में बने मंदिरों के समान, इसमें आयताकार दीवार वाले घेरे के भीतर मंदिरों का एक परिसर है, जिसमें नंदी मंदिर भी शामिल है।
  - मुख्य मंदिर में एक स्तंभयुक्त हॉल है। गर्भगृह में परिक्रमा के लिए एक बंद मार्ग है (इसे **संधार** शैली कहते हैं)।
  - शिखर द्रविड़ शैली में है। बाहरी दीवारों के आलों में बारीक और गहरी नक्काशी है, जिनमें से ज़्यादातर शिव की हैं।
  - मंदिर का आंतरिक भाग भी मूर्तियों से अलंकृत है।
  - एक आले मंदिर में दुर्गा की अद्भुत नक्काशी मिली है। गर्भगृह में जाने वाले द्वार पर, जहाँ एक लिंग स्थापित है, **द्वारपालों** और अन्य आकृतियों की विस्तृत नक्काशी की गई है।
- पट्टाडकल स्थित पापनाथ **मंदिर** उत्तरी शैली में स्थित है।
- **महाकूट में मंदिर:**
- बादामी के निकट महाकूट में प्रारंभिक पश्चिमी चालुक्य काल से संबंधित लगभग 20 मंदिर हैं।
- उनमें से लगभग सभी में **उत्तरी शैली के** वक्ररेखीय शिखर हैं।
- आलमपुर स्थित स्वर्ग **ब्रह्मा मंदिर** अलंकरण की दृष्टि से बहुत समृद्ध है।

चित्रकारी:

- ललित कलाओं में मुख्य रूप से **चित्रकला** ही थी जो चालुक्यों के संरक्षण में फली-फूली।
- **अजंता के** कुछ भित्तिचित्र चालुक्यों के शासनकाल के दौरान बनाए गए थे।
- एक चित्र में पुलकेशिन द्वितीय के दरबार में **फारस के राजदूत के स्वागत** का दृश्य प्रदर्शित किया गया है ।

साहित्य

- पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख उनके दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा संस्कृत भाषा और कन्नड़ लिपि में लिखी गई प्रशस्ति या स्तुति थी, जिसे काव्य **की एक शास्त्रीय** कृति **माना** जाता है।
- **विजयानक नामक एक कवि,** जो स्वयं को **" काली सरस्वती "** कहता है , के कुछ पद्य संरक्षित हैं। यह संभव है कि वह राजकुमार चंद्रादित्य (पुलकेशिन द्वितीय के पुत्र) की रानी रही हों।
- पश्चिमी चालुक्य काल के संस्कृत के प्रसिद्ध लेखक **विज्ञानेश्वर थे, जिन्होंने हिंदू कानून पर एक पुस्तक मिताक्षरा** लिखकर प्रसिद्धि प्राप्त की , और राजा सोमेश्वर तृतीय, एक प्रसिद्ध विद्वान थे, जिन्होंने मानसोल्लास नामक सभी कलाओं और विज्ञानों का एक विश्वकोश संकलित किया।
- बादामी चालुक्य काल से कन्नड़ साहित्य के अस्तित्व का उल्लेख मिलता है, हालाँकि बहुत कुछ अब तक नहीं बचा है। हालाँकि, शिलालेखों में कन्नड़ को "प्राकृतिक भाषा" कहा गया है।

- **कर्णतेश्वर कथा** , जिसे बाद में **जयकीर्ति ने उद्धृत किया था,** पुलकेशिन द्वितीय की स्तुति मानी जाती है और इसी काल से संबंधित है।
- चालुक्यों के शासनकाल में संस्कृत के साथ-साथ कन्नड़ भी शिलालेखों की प्रमुख भाषा के रूप में उभरी। बादामी चालुक्यों के कई **सिक्के कन्नड़ कथाओं के साथ मिले हैं। ये सभी संकेत देते हैं कि इस काल में कन्नड़ भाषा का विकास हुआ।**

सरकार

- **सेना**
  - सेना में पैदल सेना, घुड़सवार सेना, हाथी सेना और एक शक्तिशाली नौसेना शामिल थी।
  - राष्ट्रकूट शिलालेखों में उनकी शक्तिशाली सेनाओं के लिए **'कर्नाटबल'** शब्द का प्रयोग किया गया है ।
  - सरकार ने **हेरजुन्का, किरुकुला, बिलकोडे और पन्नया नामक कर लगाए।**
- **भूमि प्रशासन**
  - साम्राज्य महाराष्ट्रकों (प्रांतों) में विभाजित था, फिर छोटे राष्ट्रकों (मंडला), विषय (जिला), भोग (दस गांवों का समूह) में विभाजित था।
  - बाद में, अलूपा, गंग, बाना और सेंद्रक जैसे सामंतों द्वारा शासित कई **स्वायत्त क्षेत्र अस्तित्व में आए। स्थानीय सभाएँ स्थानीय मुद्दों की देखभाल करती थीं।**
  - **महाजनों** (विद्वान ब्राह्मणों) के समूह , **बादामी** (2000 महाजन) और **ऐहोल** (500 महाजन) जैसे **अग्रहारों** (घटिका या उच्च शिक्षा के स्थान) की देखभाल करते थे ।
- **टंकण**
  - बादामी चालुक्यों ने उत्तरी राज्यों की तुलना में भिन्न मानक के सिक्के ढाले।
  - सिक्कों पर **नागरी और कन्नड़ भाषा लिखी थी।**
  - उन्होंने मंदिरों, दाहिनी ओर मुख किए हुए सिंह या सूअर, और कमल के प्रतीक चिन्हों वाले सिक्के ढाले। इन सिक्कों का वजन **चार ग्राम** होता था , जिसे प्राचीन कन्नड़ में **होन्नू कहा जाता था और इनके अंश फना** और **चौथाई फना** जैसे होते थे , जिनका आधुनिक समकक्ष **हाना** (शाब्दिक अर्थ, धन) है।
- **धर्म**
  - बादामी चालुक्य का शासन **धार्मिक सद्भाव का काल साबित हुआ।**
  - उन्होंने शुरू में **वैदिक हिंदू धर्म का पालन किया, जैसा कि ऐहोल** सहित कई लोकप्रिय हिंदू देवताओं को समर्पित विभिन्न मंदिरों में देखा जा सकता है
  - **बाद में, विक्रमादित्य प्रथम** के समय से लोगों का झुकाव **शैव धर्म** की ओर हुआ और पाशुपत, कापालिक और कालमुख जैसे संप्रदाय अस्तित्व में आये।
    - उन्होंने **जैन धर्म को** सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया , जिसका प्रमाण **बादामी गुफा** मंदिर और ऐहोल परिसर में स्थित अन्य जैन मंदिरों से मिलता है।
- **समाज**
  - हिन्दू जाति व्यवस्था प्रकट हुई।
  - **सती प्रथा का अस्तित्व शायद नहीं रहा होगा,** क्योंकि अभिलेखों में विनयवती और विजयंका जैसी विधवाओं का उल्लेख मिलता है।
  - देवदासियाँ मंदिरों में दिखाई देती थीं।
  - दक्षिण भारत के नृत्य भरतनाट्यम का पूर्ववर्ती ऋषि भरत का नाट्यशास्त्र बहुत लोकप्रिय था, जैसा कि अनेक मूर्तियों में देखा जा सकता है और शिलालेखों में भी इसका उल्लेख मिलता है।
  - महिलाओं को **प्रशासन** में **राजनीतिक शक्ति** प्राप्त थी ।

वेंगी के चालुक्य

- **पूर्वी चालुक्य, जिन्हें वेंगी के चालुक्य के रूप में भी जाना जाता है**, एक राजवंश था जिसने **7वीं और 12वीं शताब्दी** के बीच दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों पर शासन किया था ।
- वेंगी के चालुक्य, **बादामी चालुक्यों से अलग हो गए** ।
- उन्होंने दक्कन क्षेत्र में **बादामी के चालुक्यों के गवर्नर** के रूप में शुरुआत की ।
- इसके बाद, वे एक संप्रभु शक्ति बन गए और लगभग 1001 ई. तक वर्तमान **आंध्र प्रदेश के वेंगी क्षेत्र पर शासन करते रहे। वे 1189 ई. तक मध्यकालीन चोलों के सामंतों के रूप में इस क्षेत्र पर शासन करते रहे।**
- विष्णुकुंडिना राजवंश के अवशेषों को नष्ट करने के बाद, बादामी शासक **पुलकेशिन द्वितीय** (609-642 ईस्वी) ने पूर्वी दक्कन में वेंगी क्षेत्र को नियंत्रित किया।
- 624 ई. में उन्होंने अपने भाई **कुब्ज विष्णुवर्धन को** नये प्राप्त क्षेत्र का राज्यपाल नियुक्त किया।
- **वातापी के युद्ध** में पल्लवों के विरुद्ध लड़ते हुए पुलकेशिन की मृत्यु के बाद उसके भाई कुब्ज विष्णुवर्धन ने एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया।
- तो, पूर्वी चालुक्य साम्राज्य के संस्थापक **कुब्ज विष्णुवर्धन थे।**
- **642 ई. से 705 ई. तक जयसिंह प्रथम को छोड़कर कुछ राजाओं ने बहुत कम समय तक शासन किया। इसके बाद, पारिवारिक झगड़ों** और कमज़ोर सरकारों के कारण अशांति का दौर चला ।
- इस बीच, राष्ट्रकूटों ने बादामी पश्चिमी चालुक्यों को पराजित कर दिया। राष्ट्रकूटों ने वेंगी के राज्य पर बार-बार कब्ज़ा किया और वेंगी के कमज़ोर शासकों की कड़ी परीक्षा ली।
- **848 ई. में गुणगा विजयादित्य तृतीय के** सत्ता में आने तक , कोई भी पूर्वी चालुक्य सम्राट उन्हें नियंत्रित नहीं कर सका। उस समय के राष्ट्रकूट सम्राट **अमोघवर्ष** ने उन्हें अपना सहयोगी माना, और अमोघवर्ष की मृत्यु के बाद विजयादित्य ने फिर से स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- अंततः, वेंगी साम्राज्य **चोल साम्राज्य** के अधीन हो गया और उसका अंत हो गया। 11वीं शताब्दी में इस राजवंश ने पौराणिक **चंद्र वंश की** जड़ें जमाना शुरू कर दिया। परंपरा के अनुसार, यह राजवंश बुध, पुरुरवा, पांडवों और उदयन के माध्यम से चंद्र वंश से आगे बढ़ा।

पूर्वी चालुक्यों के महत्वपूर्ण शासक

कुब्जा विष्णुवर्धन

- उन्होंने 624-641 ईस्वी तक शासन किया और **पुलकेशिन द्वितीय के भाई** थे ।
- 615 ई. से, **विष्णुवर्धन ने** पुलकेशिन द्वितीय के अधीन वायसराय के रूप में पूर्वी आंध्र प्रदेश में वेंगी भूमि को नियंत्रित किया।
- विष्णुवर्धन ने अंततः **स्वतंत्रता की** घोषणा की और **पूर्वी चालुक्य राजवंश की स्थापना की (624 ई.)।**
- वह नेल्लोर से विशाखापत्तनम तक फैले राज्य के सम्राट थे।
- **उन्हें विषमसिद्धि (कठिनाइयों पर विजय पाने वाला)** नाम दिया गया ।
- उन्होंने 641 में अपने भाई पुलकेशिन द्वितीय और पल्लव नरसिंहवर्मा प्रथम के बीच हुए युद्ध में भाग लिया था, और संभवतः युद्ध में ही उनकी मृत्यु हो गई थी।
- उनके बाद उनके पुत्र जयसिंह प्रथम ने गद्दी संभाली।
- उसके बाद कई कमजोर शासक गद्दी पर बैठे।

मंगी युवराज (682 - 706 ई.)

- **मंगी युवराज** का राज्याभिषेक कमजोर या अप्रभावी शासकों की एक श्रृंखला के अंत की शुरुआत का संकेत है, क्योंकि राज्य को अब राष्ट्रकूटों के बढ़ते आक्रमण का सामना करना पड़ रहा है।
- राष्ट्रकूटों ने न केवल मुख्य चालुक्य साम्राज्य को खतरे में डाला, बल्कि वेंगी साम्राज्य पर भी कई बार आक्रमण किया और उन्हें पीछे हटना पड़ा।

राजा नरेंद्र (1019 - 1061 ई.)

- वह वेंगी राज्य का राजा बन गया।

- उन्होंने राजमहेंद्रवरम (राजमुंदरी) शहर की स्थापना की।
- उनका समय वेंगी साम्राज्य की समृद्ध सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता था।
- राजमुंदरी को पश्चिमी चालुक्यों ने लूट लिया था और इस क्षेत्र में पश्चिमी चालुक्य और अन्य पड़ोसी राजवंशों के बीच युद्ध हुए थे, जिन्हें चोल वंश का राजनीतिक समर्थन प्राप्त था।
- **विमलादित्य चालुक्य** के पुत्र राजराज नरेंद्र ने राजेंद्र चोल प्रथम की बेटी अमंगई देवी से विवाह किया।
- **अरिंजय चोल** से लेकर आगे तक, शक्तिशाली चोलों और चालुक्यों के बीच सामंती गठबंधन था जो तीन शताब्दियों तक चला।
- जब राजनीतिक शून्य उत्पन्न हुआ, तो राजराजा नरेन्द्र के पुत्र गंगईकोण्डचोलपुरम में चोल साम्राज्य के शासक बने, तथा चोल और चालुक्य साम्राज्यों का विलय हो गया।

पूर्वी चालुक्यों का प्रशासन

- पूर्वी चालुक्य दरबार अपने प्रारंभिक वर्षों में काफी हद तक **बादामी गणराज्य** था , लेकिन जैसे-जैसे दशक बीतते गए, स्थानीय तत्वों को प्रमुखता मिली और वेंगी साम्राज्य ने अपनी विशेषताएं विकसित कीं।
- बाहरी प्रभाव बने रहे, क्योंकि पूर्वी चालुक्यों के पल्लवों, राष्ट्रकूटों, चोलों और कल्याणी के चालुक्यों के साथ लंबे समय से घनिष्ठ संबंध थे, जो या तो मैत्रीपूर्ण थे या शत्रुतापूर्ण।
- पूर्वी चालुक्यों का प्रशासन **हिंदू दर्शन पर आधारित था।**
- शिलालेखों में राज्य के पारंपरिक **सात घटकों (सप्तांग) के साथ-साथ अठारह तीर्थों (कार्यालयों) का भी उल्लेख है।**
- इसमें मंत्री (मंत्री), पुरोहित (पादरी), सेनापति (कमांडर), युवराज (उत्तराधिकारी), दौवरिका (द्वारपाल), प्रधान (प्रमुख), अध्यक्ष (विभाग प्रमुख), और कई अन्य शामिल हैं।
- सूत्रों के अनुसार, प्रशासनिक उपविभाग विषया और कोट्टम अस्तित्व में थे।
- शाही आदेश (भूमि या गांव के दान का विवरण) सभी नैयोगी कवल्लभों के साथ-साथ ग्राम्यकों, अर्थात् दान किए गए गांव के निवासियों को संबोधित होते हैं।
- समय-समय पर शिलालेखों में मन्नेयों का भी उल्लेख मिलता है। उनके पास विभिन्न गाँवों में भूमि या राजस्व का अधिकार था।

पूर्वी चालुक्यों का धर्म

- **हिंदू धर्म** प्रमुख धर्म था, जबकि पूर्वी चालुक्य साम्राज्य में **शैव धर्म वैष्णव धर्म से अधिक लोकप्रिय था।**
- **कुछ शासकों ने स्वयं को परम महेश्वर (सम्राट)** घोषित कर दिया ।
- विजयादित्य द्वितीय, युद्धमल्ल प्रथम, विजयादित्य तृतीय और भीम प्रथम सभी पूर्वी चालुक्य साम्राज्य में मंदिरों के निर्माण में शामिल थे।
- **महासेना मंदिर** की वार्षिक जात्रा में देवता की मूर्ति की शोभायात्रा निकाली जाती थी।
- बौद्ध धर्म पतन की ओर था जबकि **जैन धर्म को** पर्याप्त जन समर्थन प्राप्त था।
- इसका प्रमाण आंध्र प्रदेश के क्षतिग्रस्त गांवों में जैन धर्म के अनेक चित्र देखने को मिलते हैं।
- शिलालेखों में जैन मंदिरों के निर्माण और राजाओं तथा लोगों के सहयोग के बदले में भूमि अनुदान का भी विवरण मिलता है।
- विमलादित्य ने तो स्वयं को महावीर के सिद्धांत का अनुयायी भी घोषित कर दिया।

पूर्वी चालुक्यों की वास्तुकला

- पूर्वी चालुक्य शासकों ने पूरे राज्य में व्यापक शिव भक्ति पंथ के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में मंदिरों का निर्माण कराया।
- 108 मंदिरों के निर्माण का श्रेय **विजयादित्य द्वितीय को दिया जाता है।**
- **युद्धमल्ला प्रथम ने** विजयवाड़ा में कार्तिकेय मंदिर बनवाया।
- भव्य द्रक्षाराम और चालुक्य भीमावरम (सामलकोट) मंदिरों का निर्माण **भीम प्रथम द्वारा किया गया था।**

- पल्लव और चालुक्य परंपराओं का अनुसरण करते हुए, पूर्वी चालुक्यों ने अपनी विशिष्ट स्थापत्य शैली बनाई, जिसे पंचराम मंदिरों (विशेष रूप से द्राक्षरामा मंदिर) और बिक्कावोलु मंदिरों में देखा जा सकता है।
- बिक्कावोलू स्थित गोलिंगेश्वर मंदिर में शिव, विष्णु, अग्नि और सूर्य जैसे देवताओं की समृद्ध मूर्तियां हैं।
- इसके अलावा, उस समय के प्रसिद्ध जैन केंद्र विजयवाड़ा, जेनुपाडु, पेनुगोंडा (पश्चिम गोदावरी) और मुनुगोडु थे।

कल्याणी के चालुक्य

- **आठवीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों ने बादामी के चालुक्यों को पीछे छोड़ दिया।** मान्यखेत के राष्ट्रकूट साम्राज्य ने दो शताब्दियों से भी अधिक समय तक दक्कन और मध्य भारत के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखा।
- 10वीं शताब्दी के अंत में, राष्ट्रकूट साम्राज्य में भ्रम की स्थिति को देखते हुए, **बादामी के चालुक्यों के वंशज तेजी से सत्ता में आये और सोमेश्वर प्रथम के अधीन एक साम्राज्य का निर्माण किया, जिसने अपनी राजधानी कल्याणी में स्थानांतरित कर दी।**
- इन पश्चिमी चालुक्यों ने **कल्याणी** (आधुनिक **बसवकल्याण**) से 12वीं शताब्दी के अंत तक शासन किया। इस **राजवंश को पश्चिमी चालुक्य** इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह समकालीन वेंगी के पूर्वी चालुक्यों से अलग था।
- इस राजवंश ने 973 से 1200 ई. तक दो शताब्दियों तक दक्कन और दक्षिण भारत की राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई।
- एक शताब्दी से भी अधिक समय तक, दक्षिण भारत के दो साम्राज्यों, **पश्चिमी चालुक्य** और तंजौर के चोल राजवंश के बीच वेंगी के उपजाऊ क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए **कई भयंकर युद्ध हुए ।**
- इन संघर्षों के दौरान, वेंगी के पूर्वी चालुक्य, जो पश्चिमी चालुक्यों के दूर के चचेरे भाई थे, लेकिन चोलों से विवाह के संबंध में थे, ने चोलों का पक्ष लिया, जिससे स्थिति और जटिल हो गई।
- एमकेएलएन शास्त्री कहते हैं कि कल्याणी के चालुक्यों ने **वातापी चालुक्यों और मान्यखेत के** राष्ट्रकूटों की शाही परंपराओं का पालन किया और दो सौ से अधिक वर्षों का उनका काल कर्नाटक के सांस्कृतिक उत्कर्ष का काल था।
- असंख्य लिथिक अभिलेख और कुछ ताम्रपत्र और साहित्यिक ग्रंथ जैसे **विक्रमांकदेवचरित, भूलोकमल्ला सोमेवारा के मानसोलतास और विक्रमांकभ्युदक्ट्य, विज्ञानेश्वर के मिताक्षरा, मेरुतुंगा के प्रबंधचिंतामणि और रन्ना के गदायुद्ध और अजीतपुराण,** कल्याणी चालुक्यों के समय के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक भवन के पुनर्निर्माण में इतिहास के एक छात्र के लिए बहुत सहायक हैं।

कल्याणी के चालुक्यों का संक्षिप्त इतिहास:

- तैल के बाद उसका पुत्र **सत्याश्रय** शासक बना , जिसका दावा है कि उसने एक चोल आक्रमणकारी पर विजय प्राप्त की थी। सत्याश्रय के बाद **विक्रमादित्य पंचम** , **जयसिंह प्रथम** और **जगदेकमल्ल** शासक हुए ।
- जगदेकमल्ला का दावा है कि उन्होंने मालवा के शासक परमार भोज और चेदि के शासक तथा चोल वंश के राजेंद्र को हराया था।
- जगदेकमल्ल के बाद **सोमेश्वर प्रथम** ने 1042 से 1068 ई. तक अहवमल्ल और त्रैलोक्यमल्ल की उपाधियों के साथ शासन किया।
- बिल्हण ने अपने विक्रमांकदेवचरित में लिखा है कि सोमेश्वर प्रथम ने कल्याण नगर का निर्माण किया और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- सोमेश्वर प्रथम के बाद उसका पुत्र **सोमेश्वर द्वितीय** भुवनैकमल्ल की उपाधि के साथ शासक बना और 1076 ई. तक शासन किया।
- बिल्हण से हमें पता चलता है कि सोमेश्वर प्रथम अपने दूसरे पुत्र विक्रमादित्य को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था और विक्रमादित्य द्वारा प्रस्ताव अस्वीकार करने के बाद सोमेश्वर द्वितीय को शासक बनाया गया।
- ऐसा प्रतीत होता है कि सोमेश्वर द्वितीय के दुष्ट मार्ग अपनाने के कारण दोनों भाइयों के बीच संबंध तनावपूर्ण हो गए। गृहयुद्ध छिड़ गया और अंततः विक्रमादित्य विजयी हुआ और शासक बना।
- **विक्रमादित्य VI ने** सम्राट बनने से पहले ही **त्रिभुवनमल्ल** की उपाधि धारण कर रखी थी ।
- विक्रमादित्य ने 1071 ई. से त्रिभुवनमल्ल की उपाधि धारण की तथा 1076 ई. से 1126 ई. तक शासन किया।

- विक्रमादित्य ने चालुक्य विक्रम संवत का एक नया युग शुरू किया और चोलों के विरुद्ध युद्ध जारी रखा।
- विक्रमादित्य VI के शासनकाल के दौरान, पश्चिमी चालुक्यों ने चोलों के साथ दृढ़तापूर्वक संघर्ष किया और उत्तर में नर्मदा नदी और दक्षिण में कावेरी नदी के बीच, दक्कन के अधिकांश भाग में फैले क्षेत्रों पर शासन करते हुए **शिखर पर पहुंच गए ।**
- उनके कारनामे केवल दक्षिण तक ही सीमित नहीं थे, बल्कि सोमेश्वर प्रथम के शासनकाल में एक राजकुमार के रूप में भी उन्होंने आधुनिक बिहार और बंगाल तक सफल सैन्य अभियानों का नेतृत्व किया था।
- विक्रमादित्य VI के बाद उनके पुत्र **सोमेश्वर III** ने 1126 से 1135 ईस्वी तक शासन किया।
- **उन्होंने भूलोकमल्ल और सर्वज्ञ चक्रवर्ती** की उपाधियाँ धारण कीं। उन्होंने भूलोकमल्ल युग नाम से एक नये युग की भी शुरुआत की।
- वह एक **शांतिप्रिय शासक** प्रतीत होता है। वह कन्नड़ में **मानसोल्लास** और **विक्रमांकभ्युदय** का लेखक था ।
- उनके बाद **जगदेकमल्ल द्वितीय** ने शासन किया, जिन्होंने 1135 से 1151 ई. तक शासन किया। जगदेकमल्ल द्वितीय के बाद उनके पुत्र **तैलप तृतीय** ने शासन किया, जिन्होंने 1151 से 1163 ई. तक शासन किया।
- चूंकि तैलप तृतीय एक बहुत ही कमजोर और अयोग्य शासक था, कलचुरी सरदार बिज्जल ने धीरे-धीरे 1157 ई. तक सत्ता हथिया ली और काकतीय लोगों के साथ युद्ध करते हुए तैलप तृतीय की मृत्यु हो गई।
- **तलिपा तृतीय के पुत्र सोमेश्वर चतुर्थ ने** चालुक्य सिंहासन पर आरूढ़ हुए, लेकिन वे चालुक्य शक्ति को सुरक्षित रखने में असफल रहे और **1190 ई. में होयसल बलाला द्वितीय से पराजित हुए** और इस प्रकार **कल्याणी की पश्चिमी चालुक्य शक्ति समाप्त हो गई** ।
- विक्रमादित्य षष्ठम की मृत्यु के साथ ही चालुक्य शक्ति का पतन शुरू हो गया। उनके अधीनस्थों **, वारंगल के काकतीय, देवगिरि के यादव, द्वारसमुद्र के होयसल और कलचुरियों ने** शासकों की कमज़ोरी का फ़ायदा उठाकर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करने की तैयारी शुरू कर दी।
- सोमेश्वर चतुर्थ के शासनकाल के दौरान 1190 ई. तक कल्याणी के चालुक्य राजनीतिक सत्ता के क्षेत्र से गायब हो गए।

राजनीति:

- कल्याणी के चालुक्यों ने भी **वंशानुगत राजतंत्रीय** शासन प्रणाली का पालन किया, जिसमें राजा राज्य का प्रमुख होता था और उसके पास प्रभावी शक्तियां होती थीं।
- **वे समस्तभुवनश्रय और विजयादित्य** की उपाधियाँ धारण करते थे । उनका प्रतीक चिन्ह एक **वराह था जो भगवान विष्णु के वराहावतार** का प्रतीक था जो पृथ्वी की रक्षा करता था।
- दिलचस्प बात यह है कि चालुक्य रानियों और परिवार के अन्य सदस्यों ने प्रशासनिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लिया।
- विक्रमादित्य VI की पत्नी रानी **लक्ष्मीदेवी ने एक शिलालेख में दावा किया है कि वे कल्याण से शासन कर रही थीं।**
- हमारे पास सोमेश्वर प्रथम की पत्नी **लच्छला महादेवी और सोमेश्वर प्रथम की एक अन्य रानी केतलादेवी** के प्रशासन में भाग लेने के कुछ और प्रमाण हैं ।
- **मानसोल्लासा ने** मंत्रियों के गुणों का वर्णन किया है और अधिकांशतः मंत्रियों के पद वंशानुगत थे। मानसोल्लासा ने मंत्रियों की संख्या 7 या 8 रखने का सुझाव दिया है।
- एक दृष्टिकोण यह है कि पश्चिमी चालुक्य राजनीति में **सामंतवाद के तत्व** मौजूद थे , क्योंकि इसमें सामंत, महासामंत, महासामंतधिपति और महामंडलेश्वर जैसे श्रेणीबद्ध शक्तिशाली राजनीतिक मध्यस्थों के साथ-साथ सैन्य सेवा के सेनापति, दंडनायक, महादंडनायक और मेघप्रचंडदंडनायक भी मौजूद थे।
- प्रशासनिक सुविधा के लिए **क्षेत्र को राष्ट्र, विषय, नाडु, कम्पाना और थाना के रूप में विभाजित किया गया था** ।
- राष्ट्र और विषय तथा नाडु के बीच कोई स्पष्ट सीमांकन नहीं है, सिवाय इसके कि विषय और नाडु को राष्ट्र से छोटी इकाई माना जाता है।
- All the copper plate charters reconciling important transactions are addressed to all Rastrapatis, Vishayapatis, Gramakutakas, Ayuktakas, Niyuktakas, Adhikarikas, Mohattaras and others.
- उपरोक्त विवरण से यह संकेत मिलता है कि शासक और शासित के बीच संचार के माध्यम सामूहिक हैं।

सामाजिक जीवन:

- ऐसा माना जाता है कि कल्याणी के चालुक्यों के शासन के दौरान, सामाजिक जीवन पारंपरिक **वर्णाश्रम मॉडल** पर आधारित था ।
- यद्यपि जाति सार्वभौमिक और वंशानुगत थी, फिर भी जाति और व्यवसाय के बीच संबंध कठोर नहीं था।
- समाज के उच्च वर्ग की महिलाओं **ने** सामाजिक और प्रशासनिक मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- समकालीन अभिलेखों से पता चलता है कि कुछ शाही महिलाएं प्रशासनिक और सैन्य मामलों में शामिल थीं, जैसे कि राजकुमारी **अक्कादेवी** (राजा जयसिंह द्वितीय की बहन), जिन्होंने विद्रोही सामंतों से लड़ाई की और उन्हें हराया।
- वीरशैव धर्म का उदय **क्रांतिकारी था** और इसने प्रचलित हिंदू जाति व्यवस्था को चुनौती दी, जिसे शाही समर्थन प्राप्त था।
- अभिलेखों में ललित कलाओं में महिलाओं की भागीदारी का वर्णन मिलता है, जैसे **चालुक्य रानी चंदला देवी और कल्याणी की कलचुरी रानी सोवाला देवी का** नृत्य और संगीत में कौशल।
- तीस वचना महिला कवियों की रचनाओं में 12वीं शताब्दी की वीरशैव रहस्यवादी अक्का महादेवी की रचना भी शामिल है, जिनकी भक्ति आंदोलन के प्रति निष्ठा सर्वविदित है।
- शिलालेखों में **विधवापन की सार्वजनिक स्वीकृति** पर जोर दिया गया है , जिससे यह संकेत मिलता है कि यद्यपि **सती** प्रथा स्वैच्छिक आधार पर थी।
- खान-पान की आदतों के संबंध में, **ब्राह्मण, जैन, बौद्ध और शैव पूरी तरह से शाकाहारी थे,** जबकि अन्य समुदायों में विभिन्न प्रकार के मांस का सेवन लोकप्रिय था।
- लोग कुश्ती (कुश्ती) में भाग लेकर, मुर्गों और मेढ़ों की लड़ाई जैसे जानवरों की लड़ाई देखकर या जुआ खेलकर घर के अंदर मनोरंजन करते थे। घुड़दौड़ एक लोकप्रिय बाहरी मनोरंजन था।
- इन मनोरंजक गतिविधियों के अतिरिक्त, त्यौहार और मेले अक्सर आयोजित होते थे और कलाबाजों, नर्तकों, नाटककारों और संगीतकारों की भ्रमणशील मंडलियों द्वारा अक्सर मनोरंजन की व्यवस्था की जाती थी।
- अभिलेखों में स्कूलों और अस्पतालों का उल्लेख मिलता है और ये मंदिरों के आसपास बनाए गए थे। हिंदू मठों, जैन पल्ली और बौद्ध विहारों जैसे मठों से जुड़े स्कूलों में युवाओं को गायन मंडली में गायन का प्रशिक्षण दिया जाता था।
- शिक्षा स्थानीय भाषा और **संस्कृत में दी जाती थी।** उच्च शिक्षा के विद्यालयों को ब्रह्मपुरी (या घटिका या अग्रहार) कहा जाता था। संस्कृत शिक्षण पर लगभग ब्राह्मणों का एकाधिकार था, जिन्हें इसके लिए राजकीय अनुदान प्राप्त होता था।
- अभिलेखों में दर्ज है कि पढ़ाए जाने वाले विषयों की संख्या चार से अठारह तक होती थी। शाही छात्रों के बीच चार सबसे लोकप्रिय विषय थे अर्थशास्त्र (वर्त), राजनीति विज्ञान (दंडनीति), वेद (त्रयी) और दर्शनशास्त्र (अन्वीक्षिकी) आदि।

अर्थव्यवस्था:

- व्यापार, वाणिज्य और कृषि चालुक्य राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे।
- **कृषि:**
- अधिकांश लोग कृषि व्यवसाय में लगे हुए थे। शासकों ने तालाबों की खुदाई और नहरों के निर्माण जैसी सिंचाई सुविधाएँ प्रदान करके कृषि कार्यों को प्रोत्साहित किया जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ी।
  - अनेक अभिलेख उपर्युक्त गतिविधियों की गवाही देते हैं।
- अभिलेखों में कृषि योग्य भूमि को गीली भूमि, शुष्क भूमि और उद्यान भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया है, तथा कृषकों से वसूला जाने वाला कर एक समान नहीं था तथा यह क्षेत्र दर क्षेत्र भिन्न होता था।
  - **कोल्हीपाइक्कई के** एक शिलालेख में दर्ज है कि भूमि को **उत्तमा, मध्यमा और अधमा** के रूप में वर्गीकृत किया गया था और यहां तक कि गांवों को भी उर्वरता और उपज के आधार पर उपरोक्त श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था।
- **गाँवों में संयुक्त स्वामित्व के** साथ-साथ **भूमि पर निजी स्वामित्व** भी मौजूद था। इस काल के अभिलेखों से यह सिद्ध होता है कि जनसंख्या के विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
- भूमि पर खेती करने वाले मजदूरों की जीवन-स्थितियां अवश्य ही सहनीय रही होंगी, क्योंकि भूमिहीनों द्वारा धनी जमींदारों के विरुद्ध विद्रोह का कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है।

- यदि किसान असंतुष्ट होते थे तो आम प्रथा यह थी कि वे बड़ी संख्या में उस शासक के अधिकार क्षेत्र से बाहर चले जाते थे जो उनके साथ दुर्व्यवहार कर रहा था, जिससे वह उनके श्रम से प्राप्त राजस्व से वंचित हो जाता था।
- **व्यापार:**
- व्यापारियों को अनेक **स्वायत्त संघों** में संगठित किया गया था , जिनकी अपनी परंपराएं, प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति थी।
  - ऐसे व्यापारी संघों में सबसे प्रसिद्ध **अय्यावोलेपुरा के 500 स्वामी थे; जो वीर बनंजधर्म** , अर्थात् कुलीन व्यापारियों के कानून के रक्षक होने का दावा करते थे ।
  - जी.एस. दीक्षित का मानना है कि कल्याण के चालुक्यों का काल उनके शत्रु चोलों के शासनकाल की तरह **संघों का उत्कर्ष काल था।**
- **अय्यावोला** , **ऐनुर्वर** , **वीरबलंजा** या वलंजियार या **नानादेसी** का सबसे महत्वपूर्ण संघ बीजापुर जिले के ऐहोल में उत्पन्न हुआ था।
  - यह संघ तमिलनाडु, तटीय आंध्र, रायलसीमा, तेलंगाना और केरल के क्षेत्रों में बहुत सक्रिय था; इसकी गतिविधियाँ बर्मा, मलाया और सुमात्रा जैसे विदेशों में भी थीं।
  - व्यापार और वाणिज्य के विकास के कारण उपर्युक्त सभी क्षेत्रों में बाजार कस्बों का विकास हुआ।

धर्म:

- इस अवधि के दौरान धार्मिक क्षेत्र में हम आध्यात्मिक मेल-मिलाप का एक सामान्य वातावरण देखते हैं, जिसमें कई पंथ परस्पर सहिष्णुता के आधार पर एक साथ रहते थे।
- 10वीं शताब्दी में पश्चिमी चालुक्यों के हाथों राष्ट्रकूट साम्राज्य का पतन, तथा साथ ही गंगावाड़ी में चोलों द्वारा पश्चिमी गंग राजवंश की पराजय, **जैन धर्म के लिए एक झटका था।**
- होयसल क्षेत्र में जैन पूजा के दो स्थानों, श्रवणबेलगोला और कंबदहल्ली को संरक्षण प्राप्त रहा।
- **चालुक्य क्षेत्र में वीरशैव धर्म** और **होयसल क्षेत्र में वैष्णव हिंदू धर्म** के विकास के साथ ही जैन धर्म में रुचि में सामान्य कमी आई, हालांकि उत्तरवर्ती राज्य धार्मिक रूप से सहिष्णु बने रहे।
- **यद्यपि वीरशैव** धर्म की उत्पत्ति पर बहस होती रही है, लेकिन यह आंदोलन 12वीं शताब्दी में **बसवन्ना** के साथ जुड़कर विकसित हुआ ।
- बसवन्ना और अन्य वीरशैव संतों ने जाति-व्यवस्था से मुक्त धर्म का प्रचार किया। अपने वचनों (काव्य का एक रूप) में, बसवन्ना ने सरल कन्नड़ में जनसाधारण को संबोधित किया और लिखा, "कर्म ही पूजा है" (कायाकावे कैलासा)।
- **लिंगायत** (शिव के सार्वभौमिक प्रतीक लिंग के उपासक) के रूप में भी जाने जाने वाले इन वीरशैवों ने समाज के कई स्थापित मानदंडों जैसे अनुष्ठानों और पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास पर सवाल उठाया और विधवाओं के पुनर्विवाह और अविवाहित वृद्ध महिलाओं के विवाह का समर्थन किया।
- इससे महिलाओं को अधिक सामाजिक स्वतंत्रता मिली, लेकिन उन्हें पुरोहिती में शामिल नहीं किया गया।
- होयसल दरबार के प्रतिष्ठित विद्वान हरिहर और राघवंका वीरशैव थे।
- **शैव** और **वैष्णव धर्म** वर्तमान हिंदू धर्म के पौराणिक धर्म की प्रमुख शाखाएँ थीं। **शक्ति को** कोल्लपुरा महालक्ष्मी के रूप में भी पूजा जाता था और कार्तिकेय की भी पूजा की जाती थी और कार्तिकेय पूजा का मुख्य केंद्र बेल्लारी जिले में कुडितनी था।
- **श्रीरंगम में वैष्णव मठ के प्रमुख रामानुजाचार्य ने** होयसल क्षेत्र की यात्रा की और भक्ति मार्ग का प्रचार किया।
- बाद में उन्होंने श्रीभाष्य लिखा, जो बादरायण ब्रह्मसूत्र पर एक टिप्पणी थी, जो आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन पर एक आलोचना थी।
- मेलकोट में रामानुजाचार्य के प्रवास के परिणामस्वरूप होयसल राजा विष्णुवर्धन ने वैष्णव धर्म अपना लिया, जिसका अनुसरण उनके उत्तराधिकारियों ने भी किया।
- दक्षिण भारत की संस्कृति, साहित्य और वास्तुकला पर इन धार्मिक विकासों का गहरा प्रभाव पड़ा।
- इन दार्शनिकों की शिक्षाओं पर आधारित तत्वमीमांसा और काव्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ अगली शताब्दियों में लिखी गईं।

- अक्का महादेवी, अल्लामा प्रभु और चेन्ना बसव, प्रभुदेवा, सिद्धराम और कोंडागुली केसिराजा सहित बसवन्ना के कई अनुयायियों ने भगवान शिव की स्तुति में वचन नामक सैकड़ों कविताएँ लिखीं।
- दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म का पतन **8वीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के प्रसार के साथ शुरू हो गया था**।
- हालाँकि, बेलगावे और डम्बल में बौद्ध धर्म फला-फूला।
- उस समय के लेखों और शिलालेखों में धार्मिक संघर्ष का कोई उल्लेख नहीं है, जिससे पता चलता है कि धार्मिक परिवर्तन सुचारू था।

साहित्य:

- पश्चिमी चालुक्य युग **मूल कन्नड़ और संस्कृत में पर्याप्त साहित्यिक गतिविधियों वाला युग था।**
- **कन्नड़ साहित्य के स्वर्ण युग** में , जैन विद्वानों ने तीर्थंकरों के जीवन के बारे में लिखा और वीरशैव कवियों ने वचन नामक सारगर्भित कविताओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति अपनी निकटता व्यक्त की। लगभग तीन सौ समकालीन वचनकारों (वचन कवियों) का उल्लेख किया गया है, जिनमें तीस महिला कवि भी शामिल हैं।
- ब्राह्मण लेखकों की प्रारंभिक रचनाएँ महाकाव्यों, **रामायण, महाभारत, भागवत, पुराणों और वेदों** पर थीं । धर्मनिरपेक्ष साहित्य के क्षेत्र में, रोमांस, कामशास्त्र, चिकित्सा, शब्दकोश, गणित, ज्योतिष, विश्वकोश आदि विषयों पर पहली बार लिखा गया।
- कन्नड़ विद्वानों में सबसे उल्लेखनीय थे **रन्ना** , वैयाकरण **नागवर्मा द्वितीय,** मंत्री **दुर्गासिम्हा** और वीरशैव संत और समाज सुधारक **बासवन्ना** ।
- **रन्न** , जिन्हें राजा तैलप द्वितीय और सत्याश्रय का संरक्षण प्राप्त था, कन्नड़ साहित्य के तीन रत्नों में से एक हैं।
- **उन्हें राजा तैलप द्वितीय द्वारा " कवियों के बीच सम्राट** " (कवि चक्रवती) की उपाधि दी गई थी और उनके नाम पांच प्रमुख रचनाएं हैं।
- इनमें से, **चंपू शैली** में 982 का **सहसभीम विजयम** (या गदा युद्ध) उनके संरक्षक राजा सत्याश्रय की प्रशंसा है, जिनकी तुलना उन्होंने वीरता और उपलब्धियों में भीम से की है और महाभारत युद्ध के अठारहवें दिन भीम और दुर्योधन के बीच गदा से हुए द्वंद्व का वर्णन किया है।
- He wrote **Ajitha purana** in 993 describing the life of the second Tirthankara, Ajitanatha.
- **राजा जगधेकमल्ला द्वितीय के कवि पुरस्कार विजेता (कटकाचार्य) नागवर्मा द्वितीय** ने विभिन्न विषयों में कन्नड़ साहित्य में योगदान दिया।
- कविता, छंद, व्याकरण और शब्दावली में उनकी रचनाएँ मानक प्रमाण हैं और कन्नड़ भाषा के अध्ययन में उनका महत्व सर्वविदित है।
- **काव्यशास्त्र में काव्यवलोकन** , व्याकरण पर **कर्नाटक-भाषाभूषण** और एक शब्दकोश वास्तुकोश (संस्कृत शब्दों के लिए कन्नड़ समकक्षों के साथ) उनके कुछ व्यापक योगदान हैं।
- इस काल में चिकित्सा पर कई कृतियाँ रची गईं। इनमें जगद्दला सोमनाथ की **कर्नाटक कल्याण कारक उल्लेखनीय है।**
- इस समय कन्नड़ में **वचन** नामक काव्य साहित्य का एक अनूठा और देशी रूप विकसित हुआ।
- ये रहस्यवादियों द्वारा रचित थे, जिन्होंने ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति को सरल कविताओं में व्यक्त किया जो जनसाधारण को आकर्षित कर सकें। बसवन्ना, अक्का महादेवी, अल्लामा प्रभु, चन्नबसवन्ना और सिद्धराम इनमें सबसे प्रसिद्ध हैं।
- संस्कृत में, कश्मीरी कवि **बिल्हण द्वारा रचित विक्रमांकदेव चरित** नामक 18 सर्गों वाला एक प्रसिद्ध काव्य (महाकाव्य) महाकाव्य शैली में **अपने संरक्षक राजा विक्रमादित्य VI के** जीवन और उपलब्धियों का वर्णन करता है ।
- यह कृति विक्रमादित्य VI द्वारा अपने बड़े भाई सोमेश्वर II को अपदस्थ करने के बाद चालुक्य सिंहासन पर आसीन होने की घटना का वर्णन करती है।
- राजा **सोमेश्वर तृतीय (1129) द्वारा मनसोल्लस** या **अभिलाषितार्थ चिंतामणि** एक संस्कृत कार्य था जो समाज के सभी वर्गों के लिए था।

- यह संस्कृत में एक प्रारंभिक विश्वकोश का उदाहरण है जिसमें चिकित्सा, जादू, पशु चिकित्सा विज्ञान, कीमती पत्थरों और मोतियों का मूल्यांकन, किलेबंदी, चित्रकला, संगीत, खेल, मनोरंजन आदि सहित कई विषयों को शामिल किया गया है।
- यह संस्कृत में एक प्रारंभिक विश्वकोश का उदाहरण है जिसमें चिकित्सा, जादू, पशु चिकित्सा विज्ञान, कीमती पत्थरों और मोतियों का मूल्यांकन, किलेबंदी, चित्रकला, संगीत, खेल, मनोरंजन आदि सहित कई विषयों को शामिल किया गया है।
- सोमेश्वर तृतीय ने अपने प्रसिद्ध पिता विक्रमादित्य VI की जीवनी भी लिखी, जिसका नाम **विक्रमण-कभ्युदय** था ।
- यह पाठ एक ऐतिहासिक गद्य कथा है जिसमें कर्नाटक के भूगोल और लोगों का सचित्र वर्णन भी शामिल है।
- विक्रमादित्य VI के दरबार में संस्कृत विद्वान **विज्ञानेश्वर अपनी मिताक्षरा** के लिए कानूनी साहित्य के क्षेत्र में प्रसिद्ध हुए।
- संभवतः इस क्षेत्र में सर्वाधिक स्वीकार्य कृति, मिताक्षरा, विधि पर एक ग्रंथ (**याज्ञवल्क्य पर भाष्य**) है, जो पूर्ववर्ती लेखों पर आधारित है तथा आधुनिक भारत के अधिकांश भागों में इसे स्वीकृति मिली है।
- Some important literary works of the time related to music and musical instruments were **Sangita Chudamani**, **Sangita Samayasara** and **Sangita Ratnakara**.

कला:

- कल्याणी के चालुक्यों ने **ललित कलाओं को संरक्षण दिया।**
- 1045 ई. के एक अभिलेख में जैन मंदिर के परिसर में **नाटकशाला या रंगमंच के निर्माण का उल्लेख है।**
- हमारे पास शिलालेखों में बांसुरी वादक, गायक, फूलवाले, ढोलवादक और नर्तकों को उनके भरण-पोषण के लिए अनुदान दिए जाने का उल्लेख है।
- मंदिरों द्वारा वास्तुकला, पत्थर और धातु की मूर्तिकला और चित्रकला को बढ़ावा दिया गया।
- नागाई से प्राप्त 1085 ई. के एक शिलालेख में एक **महान मूर्तिकार नागोजा** का उल्लेख है , जिन्हें **कंदाराना विद्याधिराजम** कहा जाता है , जो उत्कीर्णन कला के उस्ताद थे और हमें अन्य मूर्तियों और उत्कीर्णन के संदर्भ भी मिलते हैं।

वास्तुकला:

- **मंदिर:**
- पश्चिमी चालुक्य वंश का शासनकाल दक्कन वास्तुकला के विकास में एक महत्वपूर्ण काल था। पश्चिमी चालुक्यों ने एक ऐसी स्थापत्य शैली विकसित की जिसे आज **संक्रमणकालीन शैली** के रूप में जाना जाता है , जो प्रारंभिक चालुक्य वंश और परवर्ती होयसल साम्राज्य की शैली के बीच एक स्थापत्य संबंध है। इस शैली को कभी-कभी **कर्नाटक द्रविड़** भी कहा जाता है। वर्तमान कर्नाटक के गडग जिले के तुंगभद्रा नदी-कृष्णा नदी दोआब क्षेत्र में उनके द्वारा निर्मित अनेक अलंकृत मंदिरों के कारण इसे कभी-कभी " **गडग शैली " भी कहा जाता है।**
- राजवंश की मंदिर निर्माण गतिविधि 12वीं शताब्दी में अपनी परिपक्वता और पराकाष्ठा पर पहुंच गई, जब दक्कन में सौ से अधिक मंदिर बनाए गए, जिनमें से आधे से अधिक वर्तमान मध्य कर्नाटक में हैं।
  - सुप्रसिद्ध उदाहरण लक्कुंडी में **काशीविश्वेश्वर मंदिर** , कुरुवत्ती में **मल्लिकार्जुन मंदिर , बगली में कल्लेश्वर मंदिर** , इटागी में **महादेव मंदिर** और बल्लीगावी में **केदारेश्वर मंदिर हैं।**
- अपनी उत्कृष्ट कलाकृतियों के साथ , बारहवीं शताब्दी का **महादेव मंदिर,** अलंकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। दीवारों, स्तंभों और मीनारों पर की गई जटिल और बारीक नक्काशी चालुक्य संस्कृति और स्वाद की झलक देती है।
  - मंदिर के बाहर एक शिलालेख में इसे "मंदिरों का सम्राट" (देवालय चक्रवर्ती) कहा गया है और बताया गया है कि इसका निर्माण राजा विक्रमादित्य VI की सेना के एक सेनापति महादेव ने कराया था।
- बल्लीगावी स्थित केदारेश्वर **मंदिर** संक्रमणकालीन चालुक्य-होयसल स्थापत्य शैली का एक उदाहरण है।
- **उनके मंदिरों का विमान** (मंदिर के ऊपर स्थित) प्रारंभिक चालुक्यों की सादे चरणबद्ध शैली और होयसल की सजावटी शैली के बीच एक समझौता है।

- पश्चिमी चालुक्य वास्तुकारों को खराद से बने स्तंभों के विकास और बुनियादी भवन और मूर्तिकला सामग्री के रूप में सोपस्टोन (क्लोराइट शिस्ट) के उपयोग का श्रेय दिया जाता है, जो बाद के होयसल मंदिरों में बहुत लोकप्रिय मुहावरा था।
- **उन्होंने अपनी मूर्तियों में सजावटी कीर्तिमुख** (राक्षस मुख) के प्रयोग को लोकप्रिय बनाया। होयसल साम्राज्य के प्रसिद्ध वास्तुकारों में चालुक्य वास्तुकार भी शामिल थे जो बल्लिगावी जैसे स्थानों के मूल निवासी थे।
- कलात्मक दीवार सजावट और सामान्य मूर्तिकला मुहावरा द्रविड़ वास्तुकला थी।
- **मंदिरों के अलावा, राजवंश की वास्तुकला अलंकृत सीढ़ीनुमा कुओं** (पुष्करणी) के लिए प्रसिद्ध है, जो अनुष्ठानिक स्नान स्थलों के रूप में काम करते थे, जिनमें से कुछ लक्कुंडी में अच्छी तरह से संरक्षित हैं।
- इन सीढ़ीनुमा कुओं के डिजाइनों को बाद में आने वाली शताब्दियों में होयसल और विजयनगर साम्राज्य द्वारा शामिल किया गया।

भाषा :

- पश्चिमी (कल्याणी) चालुक्य शिलालेखों और पुरालेखों में स्थानीय भाषा कन्नड़ का अधिकतर प्रयोग किया गया था।
- कुछ इतिहासकारों का दावा है कि उनके 90 प्रतिशत शिलालेख कन्नड़ भाषा में हैं जबकि शेष संस्कृत भाषा में हैं।
- **कन्नड़ में विक्रमादित्य VI के नाम से सबसे ज़्यादा शिलालेख मिलते हैं,** जो 12वीं शताब्दी से पहले किसी भी अन्य राजा से ज़्यादा थे। ये शिलालेख आमतौर पर या तो पत्थर (शिलाशासन) पर या तांबे की प्लेटों (ताम्रशासन) पर होते थे।
- इस काल में कन्नड़ का साहित्य और काव्य की भाषा के रूप में विकास हुआ, जिसे वीरशैवों (जिसे लिंगायतवाद कहा जाता है) के भक्ति आंदोलन से प्रोत्साहन मिला, जिन्होंने अपने देवता के प्रति अपनी निकटता को वचन नामक सरल गीतों के रूप में व्यक्त किया।
- प्रशासनिक स्तर पर, भूमि अनुदान से संबंधित स्थानों और अधिकारों को दर्ज करने के लिए क्षेत्रीय भाषा का उपयोग किया जाता था। जब द्विभाषी अभिलेख लिखे जाते थे, तो राजा की उपाधि, वंशावली, उत्पत्ति की कथाएँ और आशीर्वाद संबंधी भाग आमतौर पर संस्कृत में लिखे जाते थे।
- अनुदान की शर्तों को बताने के लिए कन्नड़ भाषा का प्रयोग किया गया, जिसमें भूमि, उसकी सीमाओं, स्थानीय प्राधिकारियों की भागीदारी, अनुदान प्राप्तकर्ता के अधिकार और दायित्व, कर और बकाया राशि, तथा गवाहों के बारे में जानकारी शामिल थी।
- इससे यह सुनिश्चित हुआ कि स्थानीय लोगों को विषय-वस्तु बिना किसी अस्पष्टता के स्पष्ट रूप से समझ में आ जाए।
- शिलालेखों के अतिरिक्त, राजवंशों का ऐतिहासिक विवरण प्रदान करने के लिए **वंशावलियाँ** नामक इतिहास-वृत्तांत भी लिखे गए।
- **संस्कृत** में काव्य, व्याकरण, शब्दकोश, नियमावली, अलंकार, प्राचीन कृतियों पर टिप्पणियाँ, गद्य कथाएँ और नाटक आदि रचनाएँ प्रचलित थीं। कन्नड़ में धर्मनिरपेक्ष विषयों पर लेखन लोकप्रिय हुआ।
- कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ हैं **चंदोम्बुधि**, एक छंदशास्त्र, और **कर्नाटक कादंबरी,** एक रोमांस, दोनों **नागवर्मा प्रथम द्वारा लिखे गए, रन्ना द्वारा रणकंडा** नामक एक शब्दकोष , **जगद्दला सोमनाथ द्वारा कर्नाटक-कल्याणकारक** नामक चिकित्सा पर एक पुस्तक, ज्योतिष पर सबसे पहला लेखन **श्रीधराचार्य द्वारा जातकतिलका कहा जाता है, चंद्रराज द्वारा मदनकातिलका** नामक कामुकता पर एक लेखन , और **लोकपाकर** नामक एक विश्वकोश। **चावुंदराय द्वितीय.**

होयसला राजवंश (होयसला साम्राज्य)

होयसल राजवंश

- होयसला साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीप से उत्पन्न एक **कन्नड़ शक्ति थी जिसने 10वीं और 14वीं शताब्दी** के बीच वर्तमान **कर्नाटक के** अधिकांश भाग पर शासन किया था ।
- होयसल की राजधानी शुरू में **बेलूर में स्थित थी,** लेकिन बाद में इसे **हलेबिदु में स्थानांतरित कर दिया गया।**
- होयसल शासक मूल रूप से पश्चिमी घाट के एक ऊँचे क्षेत्र **, मालेनाडु के निवासी** थे । 12वीं शताब्दी में, **पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य** और **कल्याणी के कलचुरियों** के बीच चल रहे आंतरिक युद्ध का लाभ उठाकर , **होयसलों ने वर्तमान कर्नाटक के क्षेत्रों और वर्तमान** तमिलनाडु में कावेरी डेल्टा के उत्तर के उपजाऊ क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया।
- 13वीं शताब्दी तक, उन्होंने कर्नाटक के अधिकांश भाग, उत्तर-पश्चिमी तमिलनाडु और दक्कन पठार में पश्चिमी आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों पर शासन किया।
- **होयसल वंश के लोग खुद को यादव वंश** का बताते थे और उनकी उत्पत्ति की एक पौराणिक कथा है। उनके शिलालेखों के अनुसार, उनके पौराणिक **संस्थापक, शाल** (जिन्हें **पोयसल** भी कहा जाता है) ने एक बाघ को मारकर एक अद्भुत वीरतापूर्ण कार्य किया था, इसलिए उन्हें "होयसल" नाम मिला, जिसका अर्थ है **"जो प्रहार करता है।"**
- यह किंवदंती ऐतिहासिक से अधिक प्रतीकात्मक है, लेकिन यह होयसला पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई।
- होयसलों का प्रारंभिक इतिहास अच्छी तरह से प्रलेखित नहीं है। फिर भी, उन्होंने चालुक्य और चोल सहित विभिन्न बड़े दक्षिण भारतीय साम्राज्यों के **अधीन** रहकर धीरे-धीरे इस क्षेत्र में प्रमुखता प्राप्त की ।
- समय के साथ होयसलों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा किया और अपना राज्य स्थापित करना शुरू कर दिया।
- होयसल शासन का सबसे महत्वपूर्ण काल 12वीं और 13वीं शताब्दी के दौरान **विष्णुवर्धन, बल्लाल द्वितीय और वीर बल्लाल तृतीय जैसे उल्लेखनीय शासकों के अधीन रहा।**
  - इस दौरान उन्होंने कला और संस्कृति के प्रति अपने संरक्षण को प्रदर्शित करते हुए कई प्रभावशाली मंदिरों का निर्माण कराया।
  - होयसला स्थापत्य शैली, जो अपनी जटिल मूर्तियों और बारीक नक्काशी के लिए जानी जाती है, इस अवधि के दौरान अपने चरम पर पहुंच गई।

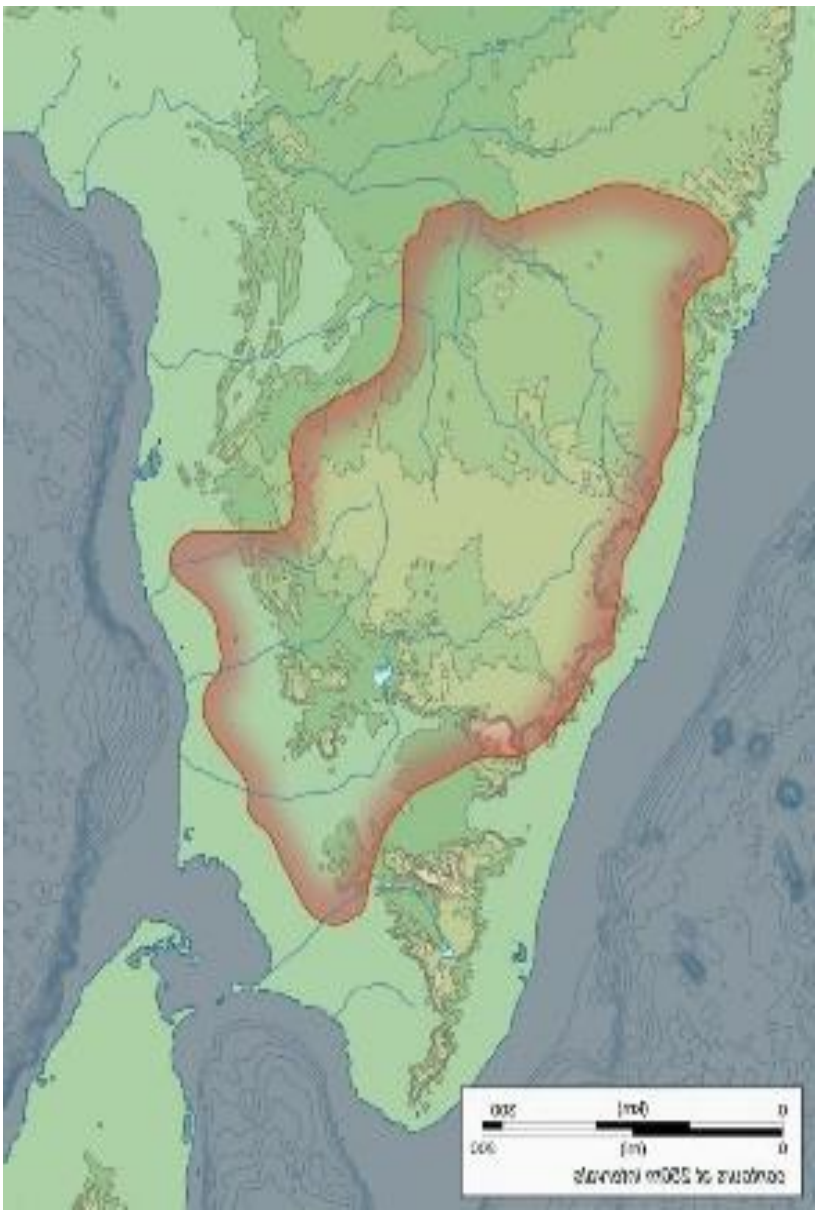

होयसल वंश के प्रमुख शासक

- **नृप काम द्वितीय (963-966 ई.):** नृप काम द्वितीय को होयसल वंश के प्रारंभिक शासकों में से एक माना जाता है। उनके शासनकाल ने इस क्षेत्र में होयसल शासन की शुरुआत को चिह्नित किया।
- **विनयादित्य (968-1008 ई.):** विनयादित्य ने होयसल साम्राज्य का विस्तार किया और उसकी शक्ति को सुदृढ़ किया। उन्होंने राजवंश के प्रारंभिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **एरेयांग (1008-1048 ई.):** एरेयांग, जिन्हें मारसिंह प्रथम के नाम से भी जाना जाता है, ने होयसल साम्राज्य का विस्तार जारी रखा। वह राजवंश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण शासक थे।
- **वीर बल्लाल प्रथम (1048-1098 ई.):** वीर बल्लाल प्रथम सबसे प्रसिद्ध होयसल राजाओं में से एक थे। उनके शासनकाल में बेलूर स्थित चेन्नाकेशव मंदिर सहित कई प्रसिद्ध होयसल मंदिरों का निर्माण हुआ।
- **विष्णुवर्धन (1111-1152 ई.):** विष्णुवर्धन सबसे उल्लेखनीय होयसल राजाओं में से एक हैं। उन्होंने राज्य का विस्तार किया और उन्हें बेलूर स्थित चेन्नाकेशव मंदिर और हालेबिदु स्थित होयसलेश्वर मंदिर सहित कई होयसल मंदिरों के निर्माण में संरक्षण का श्रेय दिया जाता है।
- **नरसिंह प्रथम (1152-1173 ई.):** नरसिंह प्रथम ने कला और स्थापत्य कला के लिए राजवंश के संरक्षण को जारी रखा। उन्हें सोमनाथपुर में केशव मंदिर के निर्माण के लिए जाना जाता है।
- **बल्लाल द्वितीय (1173-1220 ई.):** बल्लाल द्वितीय होयसल वंश का एक और महत्वपूर्ण शासक था जिसने कला और स्थापत्य कला को संरक्षण देना जारी रखा। उसे काकतीय वंश और देवगिरि के यादवों के साथ संघर्ष का सामना करना पड़ा।
- **वीर नरसिंह द्वितीय (1220-1235 ई.):** वीर नरसिंह द्वितीय, जिन्हें नरसिंह तृतीय के नाम से भी जाना जाता है, बल्लाल द्वितीय के उत्तराधिकारी बने। उनके शासनकाल में चोल वंश और अन्य पड़ोसी शक्तियों के साथ संघर्ष हुए।
- **वीर सोमेश्वर (1235-1263 ई.):** वीर सोमेश्वर को अपने शासनकाल में बाहरी आक्रमणों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनके नेतृत्व में राजवंश का पतन शुरू हो गया।
- **नरसिंह तृतीय (1263-1292 ई.):** नरसिंह तृतीय होयसल राजवंश के अंतिम महत्वपूर्ण शासकों में से एक थे। उनके शासनकाल में राजवंश का पतन हुआ और राजवंश धीरे-धीरे अपनी शक्ति खोता गया।

प्रशासन

- राज्य **को प्रांतों या क्षेत्रों में विभाजित किया गया था** , जिनमें से प्रत्येक का प्रशासन स्थानीय गवर्नरों या प्रमुखों द्वारा किया जाता था जिन्हें राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था।
- राज्य को **नाडु, विषय, कम्पाना और देश** नामक प्रांतों में विभाजित किया गया था , जिन्हें भौगोलिक आकार के अवरोही क्रम में सूचीबद्ध किया गया था।
- प्रांतीय स्तर से नीचे, राजस्व संग्रह, कानून प्रवर्तन और प्रशासन के लिए जिम्मेदार **स्थानीय अधिकारी थे।**
- **राजस्व अधिकारी, जिन्हें गवुंदा के नाम से जाना जाता था** , कृषि क्षेत्र से करों का आकलन और संग्रह करने के लिए जिम्मेदार थे।
- **वरिष्ठ मंत्री, जिन्हें पंच प्रधान कहा जाता था** , विदेशी मामलों के लिए जिम्मेदार मंत्री, जिन्हें **संधिविग्रही कहा जाता था,** और मुख्य कोषाध्यक्ष, **महाभंडारी या हिरण्यभंडारी** शीर्ष-स्तरीय सरकारी मामलों का संचालन करते थे।
- **दंडनायकों ने सेनाओं का नेतृत्व किया** जबकि धर्माधिकारी ने होयसला अदालत के **मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य किया** ।
- स्थानीय अधिकारी, जिन्हें **न्यायमूर्ति या न्यायाधिश के नाम से जाना जाता था, स्थानीय अदालतों** की अध्यक्षता करते थे और न्याय प्रशासन में मदद करते थे।
- कानूनी मामलों में राजा **को अंतिम अधिकार प्राप्त था** और वह अक्सर न्याय प्रदान करने में भूमिका निभाता था।

धर्म

- ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में चोलों द्वारा जैन पश्चिमी गंगा राजवंश की पराजय और बारहवीं शताब्दी में **वैष्णव हिंदू धर्म और वीरशैववाद के अनुयायियों की बढ़ती संख्या ने जैन धर्म में घटती रुचि को** दर्शाया । होयसल क्षेत्र में **श्रवणबेलगोला** और **कंबदहल्ली जैन पूजा के दो उल्लेखनीय स्थान हैं।**
- **दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म का पतन** आठवीं शताब्दी में **आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के** प्रसार के साथ शुरू हुआ । होयसल काल में **दम्बल** और **बल्लीगावी ही बौद्ध पूजा के एकमात्र स्थल थे।**
- **विष्णुवर्धन की रानी शांतला देवी जैन धर्म को मानती थीं, फिर भी उन्होंने बेलूर में** हिंदू कप्पे चेन्निगरया मंदिर का निर्माण करवाया , जो इस बात का प्रमाण है कि **शाही परिवार सभी धर्मों को सहन करता था** ।
- होयसल शासन के दौरान, वर्तमान कर्नाटक में **तीन दार्शनिकों, बसवन्ना, माधवाचार्य और रामानुजाचार्य से प्रेरित होकर तीन महत्वपूर्ण धार्मिक विकास हुए।**
- **हालांकि विद्वान वीरशैव धर्म** की उत्पत्ति पर बहस करते हैं , लेकिन वे इस बात पर सहमत हैं कि यह आंदोलन बारहवीं शताब्दी में **बसवन्ना** के साथ जुड़ाव के कारण विकसित हुआ । कुछ विद्वानों का तर्क है कि **पाँच पूर्ववर्ती संतों रेणुका, दारुका, एकोरमा, पंडिताराध्य और विश्वाराध्य ने वीरशैव धर्म की स्थापना की** , जो **भगवान शिव की भक्ति का उपदेश देने वाला** एक संप्रदाय है ।
- **बसवन्ना और अन्य वीरशैव** संतों ने **जाति-व्यवस्था से मुक्त धर्म का प्रचार किया।** अपने वचनों में उन्होंने सरल कन्नड़ में जनसाधारण से अपील की, **"कर्म ही पूजा है"** (कायाकावे कैलासा)।
- **मध्वाचार्य ने शंकराचार्य की शिक्षाओं की आलोचना करते हुए संसार को माया नहीं, बल्कि सत्य** बताया । मध्वाचार्य ने **भगवान विष्णु** के गुणों का समर्थन किया और **द्वैत दर्शन (द्वैतवाद) का** प्रतिपादन किया, जबकि **शंकराचार्य के "मायावाद" (भ्रम) की निंदा की। उन्होंने परमात्मा** और **जीवन के आश्रित सिद्धांत** के बीच अंतर बनाए रखा ।
- **उनके दर्शन ने इतनी लोकप्रियता हासिल की कि वे उडुपी में आठ मठ** स्थापित करने में सफल रहे । श्रीरंगम में वैष्णव मठ के प्रमुख रामानुजाचार्य ने **भक्ति** मार्ग का प्रचार किया और आदि शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन पर एक समालोचना, **श्रीभाष्य की रचना की।**
- उन धार्मिक विकासों का **दक्षिण भारत की संस्कृति, साहित्य, काव्य और वास्तुकला पर गहरा प्रभाव** पड़ा । आने वाली शताब्दियों में विद्वानों ने उन दार्शनिकों की शिक्षाओं के आधार पर साहित्य और काव्य की महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं।
- विजयनगर साम्राज्य के सलुवा **, तुलुवा और अरविदु** राजवंशों ने **वैष्णव धर्म का पालन किया। विजयनगर के विट्ठलपुरा क्षेत्र में रामानुजाचार्य की प्रतिमा वाला एक वैष्णव मंदिर स्थित है** । बाद के मैसूर साम्राज्य के विद्वानों ने रामानुजाचार्य की शिक्षाओं को आगे बढ़ाते हुए वैष्णव रचनाएँ लिखीं।
- राजा **विष्णुवर्धन ने जैन धर्म से वैष्णव धर्म अपनाने** के बाद कई मंदिरों का निर्माण कराया । माधवाचार्य के बाद के संतों, **जयतीर्थ, व्यासतीर्थ, श्रीपादराय, वादीराजतीर्थ और कर्नाटक क्षेत्र के विजयदास, गोपालदास जैसे भक्तों *(दासों)*** ने उनकी शिक्षाओं का दूर-दूर तक प्रचार किया।
- उनकी शिक्षाओं ने गुजरात में **वल्लभाचार्य** और बंगाल में चैतन्य जैसे बाद के दार्शनिकों को प्रेरित किया । **सत्रहवीं-अठारहवीं शताब्दी में भक्ति की एक और लहर को उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा मिली।**

समाज

- होयसला समाज कई मायनों में उस समय के **उभरते धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास को प्रतिबिंबित करता था।**
- उस काल में समाज **उत्तरोत्तर परिष्कृत होता गया।** स्त्रियों की स्थिति में विविधता थी।
- कुछ **शाही महिलाएं प्रशासनिक मामलों में शामिल हो गईं,** जैसा कि समकालीन अभिलेखों में दर्शाया गया है, जिसमें उत्तरी क्षेत्रों में **वीर बल्लाला द्वितीय के** लंबे सैन्य अभियानों के दौरान उनकी अनुपस्थिति में **रानी उमादेवी द्वारा हलेबिदु के प्रशासन का वर्णन किया गया है।**
- उन्होंने कुछ विरोधी सामंती विद्रोहियों से भी लड़ाई की और उन्हें पराजित किया।
- यह उस समय के साहित्य (जैसे **बिल्हण के विक्रमांकदेव चरित**) के बिल्कुल विपरीत था जिसमें **महिलाओं को एकांतप्रिय** , **अत्यधिक रोमांटिक** और **राज्य के मामलों से बेपरवाह के** रूप में चित्रित किया गया था ।

- **अभिलेखों में ललित कलाओं में महिलाओं** की भागीदारी का वर्णन मिलता है , जैसे कि रानी शांतला देवी का नृत्य और संगीत में कौशल, तथा बारहवीं शताब्दी **की वचन कवि और वीरशैव रहस्यवादी अक्का महादेवी की** भक्ति आंदोलन के प्रति प्रसिद्ध निष्ठा।
- वह महिला मुक्ति के युग में अग्रणी थीं और पारलौकिक विश्व-दृष्टिकोण का उदाहरण थीं।
- **मंदिर नर्तकियाँ (देवदासी**), जो सुशिक्षित और कलाओं में निपुण होती थीं, आमतौर पर मंदिरों में नृत्य करती थीं। इन योग्यताओं के कारण उन्हें अन्य शहरी और ग्रामीण महिलाओं की तुलना में अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी, जो केवल दैनिक कार्यों तक ही सीमित थीं। भारत के अधिकांश हिस्सों की तरह, **होयसल समाज में भी भारतीय जाति व्यवस्था प्रचलित थी।**
- **पश्चिमी तट पर व्यापार के कारण अरब, यहूदी, फ़ारसी, चीनी और मलय प्रायद्वीप के लोग** सहित कई विदेशी भारत आए । साम्राज्य के विस्तार के परिणामस्वरूप **दक्षिण भारत में लोगों के प्रवास ने नई संस्कृतियों और कौशलों का प्रवाह उत्पन्न किया। शिक्षा, कला, वास्तुकला, धर्म को शाही संरक्षण और नए किलों और सैन्य चौकियों की स्थापना के** कारण **बड़े पैमाने पर लोगों का स्थानांतरण** हुआ ।
- दक्षिण भारत में, **पट्टनम या पट्टनम नामक कस्बे** और **नगर या नगरम नामक** बाज़ार, **शहर के केंद्र के रूप में कार्य करते थे । श्रवणबेलगोला** जैसे कुछ कस्बे सातवीं शताब्दी में एक धार्मिक बस्ती से विकसित होकर बारहवीं शताब्दी तक धनी व्यापारियों के आगमन के साथ एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र बन गए, जबकि **बेलूर जैसे कस्बों ने** राजा **विष्णुवर्धन** द्वारा यहाँ **चेन्नाकेशव मंदिर** बनवाने पर **एक शाही शहर का वातावरण** प्राप्त कर लिया । **शाही संरक्षण द्वारा समर्थित बड़े मंदिर धार्मिक, सामाजिक और न्यायिक उद्देश्यों की पूर्ति करते थे , जिससे राजा को "धरती पर भगवान"** का दर्जा प्राप्त था ।
- **मंदिर निर्माण** एक **वाणिज्यिक** और **धार्मिक कार्य** था , जो सभी हिंदू संप्रदायों के लिए खुला था।
- **हलेबिदु के शैव व्यापारियों ने बेलूर में बने चेन्नकेशवा मंदिर** के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए **होयसलेश्वर मंदिर** के निर्माण को वित्तपोषित किया , जिससे हलेबिदु भी एक महत्वपूर्ण शहर बन गया।
- **होयसला मंदिर, हालांकि धर्मनिरपेक्ष थे, सभी हिंदू संप्रदायों के तीर्थयात्रियों को** प्रोत्साहित करते थे , सोमनाथपुरा का केशव मंदिर इसका अपवाद था, जिसमें विशुद्ध रूप से वैष्णव मूर्तिकला चित्रण था।
- ग्रामीण क्षेत्रों में धनी ज़मींदारों द्वारा निर्मित मंदिर कृषि समुदायों की **वित्तीय, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। संरक्षण की परवाह किए बिना** , बड़े मंदिर ऐसे प्रतिष्ठानों के रूप में कार्य करते थे जो विभिन्न संघों और **व्यवसायों के सैकड़ों लोगों को रोजगार प्रदान करते थे और स्थानीय समुदायों को सहारा देते थे, क्योंकि हिंदू मंदिर धनी बौद्ध मठों का रूप** लेने लगे थे ।

साहित्य

- यद्यपि होयसल शासन के दौरान **संस्कृत साहित्य लोकप्रिय रहा, फिर भी स्थानीय कन्नड़ विद्वानों को राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ। बारहवीं शताब्दी में, कुछ विद्वानों ने चंपू** मिश्रित गद्य-पद्य शैली में रचनाएँ लिखीं, लेकिन विशिष्ट कन्नड़ छंदों को अधिक व्यापक रूप से स्वीकार किया जाने लगा। रचनाओं में प्रयुक्त **संगत्य छंद, शतपदी, छंदों** में **त्रिपदी छंद (सात और तीन पंक्तियों वाले)** और **रागले (गीतात्मक कविताएँ)** प्रचलन में आ गए। जैन रचनाओं में **तीर्थंकरों (जैन तपस्वियों) के गुणों का बखान जारी रहा।**
- होयसल **दरबार ने जन्न, रुद्रभट्ट, हरिहर और उनके भतीजे राघवंका** जैसे विद्वानों को समर्थन दिया, जिनकी रचनाएँ कन्नड़ में उत्कृष्ट कृतियों के रूप में आज भी विद्यमान हैं। 1209 में, **जैन** विद्वान **जन्न ने** "यशोधराचरित" की रचना की , जो एक ऐसे राजा की कहानी है जो स्थानीय देवी **मरियम्मा को दो छोटे बालकों की बलि चढ़ाने का इरादा रखता है। बालकों पर दया करके, राजा उन्हें छोड़ देता है और मानव बलि** प्रथा का परित्याग कर देता है । उस रचना के सम्मान में, जन्न को राजा **वीर बल्लाल द्वितीय** से **"कवि सम्राट" (कविचक्रवर्ती) की** उपाधि मिली ।
- **रुद्रभट्ट,** एक **स्मार्त ब्राह्मण (अद्वैत दर्शन में विश्वास रखने वाले)** , सबसे पहले प्रसिद्ध ब्राह्मणवादी लेखकों में से एक हैं। राजा **वीर बल्लाल द्वितीय** के मंत्री **चंद्रमौलि** उनके संरक्षक बने। विष्णु पुराण के पूर्ववर्ती ग्रंथ पर आधारित,

उन्होंने **चंपू** शैली में **जगन्नाथ विजय की रचना की, जिसमें भगवान कृष्ण** के जीवन से लेकर राक्षस **बाणासुर से उनके युद्ध तक का वर्णन है।**

- **हरिहर, (जिन्हें हरिश्वर भी कहा जाता है)** एक **वीरशैव लेखक और राजा नरसिंह प्रथम** के संरक्षक थे , जिन्होंने भगवान **शिव** और **पार्वती के विवाह का दस खंडों** में वर्णन करते हुए प्राचीन जैन चंपू शैली में **गिरिजाकल्याण की** रचना की । वे **वचना** साहित्यिक परंपरा से स्वतंत्र आरंभिक **वीरशैव लेखकों में से एक थे। वे हलेबिदु के एक लेखाकार (करणिक)** परिवार से थे और उन्होंने **हम्पी** में कई वर्ष बिताकर **भगवान विरुपाक्ष (भगवान शिव का एक रूप)** की स्तुति में सौ से अधिक रागले (रिक्त छंद में कविताएँ) लिखीं । **राघवंका ने** सबसे पहले अपने **हरिश्चंद्र काव्य में शतपदी** छन्द को कन्नड़ साहित्य में शामिल किया था। इस काव्य को एक उत्कृष्ट कृति माना जाता है, हालांकि यह कभी-कभी कन्नड़ व्याकरण के कठोर नियमों का उल्लंघन भी करता है।
- संस्कृत में, दार्शनिक **माधवाचार्य ने ब्रह्मसूत्रों (हिंदू धर्मग्रंथों, वेदों की तार्किक व्याख्या)** पर **ऋग्भाष्य** लिखा , साथ ही **वेदों के अन्य संप्रदायों के सिद्धांतों का खंडन करते हुए कई विवादास्पद रचनाएँ भी कीं। उन्होंने अपने दर्शन के तार्किक प्रमाण के लिए वेदों की तुलना में पौराणिक साहित्य** पर अधिक भरोसा किया । विद्यातीर्थ का **रुद्रप्रश्नभाष्य** एक अन्य प्रसिद्ध रचना है।

वास्तुकला

- होयसल ने **वेसर और द्रविड़ शैली को मिलाकर** नई **होयसल शैली** विकसित की ।
- मंदिरों की विशेषता उनके **तारा-आकार या ताराकार (तारे जैसी) डिजाइन** और **अत्यधिक विस्तृत मूर्तियां हैं, जिनमें विभिन्न देवताओं, पौराणिक दृश्यों और जटिल पुष्प आकृतियां दर्शाई गई हैं।**
- होयसल राजवंश ने अपनी प्राथमिक निर्माण सामग्री के रूप में मुख्यतः **सोपस्टोन (क्लोराइटिक शिस्ट) का** उपयोग किया । इस मुलायम पत्थर से जटिल नक्काशी और बारीकियाँ बनाई जा सकीं।
- इस शैली की महत्वपूर्ण **विशेषताएं हैं**
- **तीर्थस्थान:**
  - होयसल मंदिरों में आमतौर पर **एक या एक से अधिक मंदिर होते हैं।** मंदिरों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:
- **एककुटा** (एक मंदिर),
- **द्विकूट** (दो मंदिर),
- **त्रिकुटा** (3 गर्भगृह) आदि।
  - होयसला मंदिरों के मंदिर सामान्यतः ताराकार आकार के होते हैं, हालांकि **कभी -** कभी चौकोर योजना भी दिखाई देती है।
- **Garbha griha:**
  - एक घनाकार कक्ष, **गर्भगृह** (गर्भगृह) में एक पीठ (कुर्सी) पर केन्द्र में स्थापित मूर्ति (प्रतिष्ठित प्रतीक) होती है।
- **Shikhara:**
  - शिखर (अधिरचना), **गर्भगृह के ऊपर** स्थित है और गर्भगृह के साथ मिलकर वे मंदिर का विमान (या मूलप्रसाद) बनाते हैं।
  - वे बहुत ऊंचे नहीं हैं.
  - कुछ **नागर और द्रविड़ शैली के मिश्रण का** प्रतिनिधित्व करते हैं और कुछ **पिरामिडनुमा हैं।**
- **गुस्सा:**
  - शिखर के ऊपर एक धारीदार पत्थर, **आमलक** , रखा जाता है, जिसके अंतिम सिरे पर एक ***कलश रखा जाता है।***
- **Antarala:**
  - एक मध्यवर्ती **अंतराल** (बरोठा) गर्भगृह को सामने स्थित एक विशाल स्तंभयुक्त मंडप (बरामदे) से जोड़ता है, जो मुख्यतः पूर्व (या उत्तर) की ओर मुख किए हुए है।
- **समाप्ति:**
  - **होयसल मंदिरों में खुले** (बाहरी मंडप) और **बंद** मंडप (आंतरिक मंडप) दोनों की विशेषताएं हैं ।
  - मंडप की छतें अत्यधिक अलंकृत हैं जिन पर पौराणिक आकृतियाँ और पुष्प डिज़ाइन अंकित हैं

- **स्तंभ:**
  - होयसल मंदिरों के मंडपों में गोलाकार स्तंभ होते हैं। प्रत्येक स्तंभ के शीर्ष पर चार कोष्ठक होते हैं जिन पर नक्काशीदार आकृतियाँ अंकित होती हैं।
- **गोपुरम:**
  - मंदिर में प्रत्येक द्वार पर विशाल **गोपुरम (अलंकृत प्रवेश द्वार) के माध्यम से प्रवेश किया जा सकता है।**
- **छोटे मंदिर:**
  - **प्राकारम** (मंदिर प्रांगण) में प्रायः **अनेक छोटे मंदिर और बाहरी इमारतें होती हैं।**
- **विमान:**
  - विमान या तो **ताराकार, अर्ध-ताराकार या लम्बकोणीय योजना में** होते हैं ।
  - होयसला मंदिरों में विमान **अंदर से सादे** होते हैं जबकि **बाहर से बहुत विस्तृत होते हैं।**
- इसकी अनूठी विशेषता **क्षैतिजता** है जो रेखाओं, ढलाई आदि में दिखाई देती है।
- **दीवारों और स्तंभों में बड़े पैमाने पर मोल्डिंग का उपयोग** एक अनूठी विशेषता है जो दिखाई देती है।
  - स्तंभों का आधार और स्तंभों का शीर्ष दोनों ही सुंदर ढलाई द्वारा चिह्नित हैं।
- उनके अधिकांश मंदिर **भूमिजा शैली** में हैं ।
  - इस शैली में मंदिर की बाहरी दीवार पर लघु शिखर उकेरे गए हैं।
- जटिल **नक्काशीदार पट्टियां**, जो होयसला मंदिरों की एक विशिष्ट विशेषता है, क्षैतिज पथों की एक श्रृंखला से बनी हैं जो आयताकार पट्टियों के रूप में हैं तथा उनके बीच संकीर्ण खांचे हैं।
- मंदिर कभी-कभी एक **ऊंचे मंच या जगती** (जिसका उपयोग प्रदक्षिणापथ (परिक्रमा) के लिए किया जाता है) पर बनाए जाते हैं, जिससे मंदिर के चारों ओर एक चौड़ी सपाट सतह बन जाती है।
- ये **दीवारें** और **छत** पर **चिकनी क्लोराइट शिस्ट** पर की गई **अत्यंत सूक्ष्म, नाजुक और विस्तृत नक्काशी** के लिए प्रसिद्ध हैं ।
- लगभग सभी होयसल मंदिरों में **आकृति मूर्तिकला की प्रचुरता है** ।
- होयसला मंदिरों के **उदाहरण हैं।**
- **बेलुरु में चन्नकेशव मंदिर**
- **हलेबिडु में होयसलेश्वर मंदिर**
- Keshava temple Somnathpura
- उन्होंने **जैन बसादियों का** भी निर्माण कराया।
- जैसे. श्रवणबेलगोला में सावती गंधवर्ण बसदी।

मूर्ति

- होयसल कलाकारों ने अपनी मूर्तिकला के विस्तार के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की है, चाहे वह **हिंदू महाकाव्यों, यलि (पौराणिक प्राणी), देवताओं, कीर्तिमुख (गार्गॉयल), कामुकता या दैनिक जीवन के पहलुओं का चित्रण हो।**
- उनके माध्यम, **मुलायम सोपस्टोन**, ने एक उत्कृष्ट नक्काशी शैली को सक्षम किया।
- **उनकी कारीगरी में बारीक़ी** पर ध्यान दिया गया है। नाखून से लेकर पैर के नाखून तक, हर पहलू को बखूबी बनाया गया है।
- कुछ मंदिरों में विमानों की मीनारों पर **कीर्तिमुख (राक्षस चेहरे) बने होते हैं।**
- कभी-कभी कलाकार अपनी बनाई मूर्ति पर अपने **हस्ताक्षर छोड़ जाते थे।**
- स्तंभ **भट्टालिक** स्तंभ प्रतिमाओं को संदर्भित करते हैं, जिनमें चालुक्य कला की झलक मिलती है।
- होयसल के लिए काम करने वाले कुछ कलाकार संभवतः चोल देश से थे, जो दक्षिणी भारत के तमिल भाषी क्षेत्रों में साम्राज्य के विस्तार का परिणाम था।
- चेन्नकेशव मंदिर के मंडप (बंद हॉल) के एक स्तंभ पर मोहिनी की छवि चोल कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

- **दीवार के पैनल सामान्य जीवन विषयों को** प्रस्तुत करते हैं जैसे घोड़ों को नियंत्रित करने की क्रिया, प्रयुक्त रकाब का प्रकार, नर्तकों, संगीतकारों, वादकों का चित्रण, शेरों और हाथियों जैसे जानवरों की पंक्तियां।
- **हालेबिदु स्थित होयसलेश्वर मंदिर , मंदिर कला में महाकाव्य रामायण और महाभारत का** संभवतः सर्वोत्तम चित्रण प्रस्तुत करता है ।
- होयसला कलाकार ने **कामुकता को** विवेक के साथ संभाला।
- वे प्रदर्शनवाद से बचते थे, कामुक विषयों को रिक्त स्थानों और आलों में उकेरते थे, जो आमतौर पर लघु रूप में होते थे, जिससे वे अदृश्य हो जाते थे।
- वे कामुक चित्रण **शाक्त अभ्यास से जुड़े हैं।**
- मंदिर के द्वार पर भारी मात्रा में उत्कीर्ण अलंकरण प्रदर्शित है जिसे **मकरटोराना** (मकर या काल्पनिक पशु) कहा जाता है तथा द्वार के प्रत्येक ओर **सलबांजिका** (युवतियों) की मूर्तियां प्रदर्शित हैं।
- इन मूर्तियों के अलावा, हिंदू महाकाव्यों (आमतौर पर रामायण और महाभारत) के संपूर्ण अनुक्रमों को मुख्य प्रवेश द्वार से शुरू करते हुए **दक्षिणावर्त दिशा में उकेरा गया है।**
- पौराणिक कथाओं में आमतौर पर इस प्रकार के **चित्रण दिखाई देते हैं**
- महाकाव्य नायक **अर्जुन मछली मारते हुए,**
- हाथी के सिर वाले भगवान गणेश,
- सूर्य देव सूर्य,
- मौसम और युद्ध के देवता इंद्र, और
- ब्रह्मा सरस्वती के साथ।
- इसके अलावा **दुर्गा** भी अक्सर मंदिरों में दिखाई देती हैं, कई भुजाओं में हथियार लिए हुए, एक भैंस (भैंस के रूप में एक राक्षस) को मारते हुए और हरिहर (शिव और विष्णु का मिश्रण) एक शंख, चक्र और त्रिशूल पकड़े हुए।

होयसल राजवंश का पतन

- 13वीं शताब्दी के अंत में होयसला राजवंश को **दिल्ली सल्तनत से बाहरी खतरों** और कुलीन वर्ग के बीच आंतरिक कलह का सामना करना पड़ा।
- 14वीं शताब्दी के प्रारंभ तक होयसला साम्राज्य कमजोर हो गया था और अंततः 14वीं शताब्दी के प्रारंभ में इसे **विजयनगर साम्राज्य ने अपने में समाहित कर लिया ।**
- होयसल राजवंश की स्थापत्य कला और कलात्मक विरासत कर्नाटक और उसके बाहर भी आज भी प्रशंसित है। उनके मंदिर लोकप्रिय पर्यटक आकर्षण हैं और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं ।
- दक्षिण भारतीय संस्कृति और मंदिर वास्तुकला में राजवंश के योगदान को कला और इतिहास के क्षेत्र में अत्यधिक महत्व दिया जाता है।
- होयसल राजवंश ने दक्षिण भारत की सांस्कृतिक और स्थापत्य विरासत पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। उनके मंदिर, अपनी उत्कृष्ट शिल्पकला के लिए जाने जाते हैं और आज भी कला पारखी और क्षेत्र के पर्यटकों द्वारा सराहे जाते हैं।

यादव राजवंश (पुराना राजवंश)

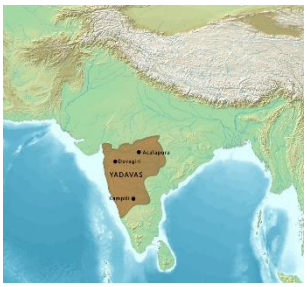

- यादव **वंश** या सेउना वंश (12वीं और 13वीं शताब्दी) ने अपनी **राजधानी देवगिरी (वर्तमान दौलताबाद) से तुंगभद्रा से नर्मदा नदियों तक फैले राज्य पर शासन किया,** जिसमें वर्तमान महाराष्ट्र, उत्तरी कर्नाटक और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे।
- सेउना/यादव राजवंश के प्रारंभिक ऐतिहासिक शासक का पता **9वीं शताब्दी के मध्य** में लगाया जा सकता है , लेकिन उनके प्रारंभिक इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी है, उनके 12वीं शताब्दी के दरबारी कवि **हेमाद्रि ने** परिवार के प्रारंभिक शासकों के नाम दर्ज किए हैं।
- इस दौरान, राजवंश के शिलालेखों में **मराठी भाषा** प्रमुख भाषा के रूप में उभरी। इससे पहले, उनके शिलालेखों की प्राथमिक भाषाएँ कन्नड़ और संस्कृत थीं।
- हेमाद्रि की यादवों की पारंपरिक वंशावली के अनुसार उनका वंश सृष्टिकर्ता **विष्णु** से जुड़ा है और यदु उनके परवर्ती वंशज थे।
- इस राजवंश का पहला ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित शासक **दृढप्रहार (860-880 ई.) है, जिसे चंद्रादित्यपुर** (आधुनिक चंदोर) शहर की स्थापना का श्रेय दिया जाता है । वह चालुक्यों का एक सामंत था।
- यादवों ने शुरू में **पश्चिमी चालुक्यों के सामंतों के रूप में शासन किया। 12वीं** शताब्दी के मध्य में , जब चालुक्यों की शक्ति क्षीण हो गई, तो यादव राजा **भीलमा पंचम ने** स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- भिल्लम ने 1187 के आसपास **बल्लाल को** पीछे हटने पर मजबूर कर दिया, पूर्व चालुक्य राजधानी कल्याणी पर विजय प्राप्त की, और स्वयं को एक संप्रभु शासक घोषित कर दिया।
- **इसके बाद उन्होंने देवगिरी** शहर की स्थापना की , जो यादवों की नई राजधानी बन गयी।
- यादव साम्राज्य **सिंहना द्वितीय के अधीन अपने चरम पर पहुंच गया ,** और 14वीं शताब्दी के आरंभ तक फलता-फूलता रहा, जब 1308 ई. में इसे दिल्ली सल्तनत के खिलजी वंश ने अपने अधीन कर लिया।

यादव वंश के शासक

भीलमा (1173 – 1191 ई.)

- भीलमा (1175-1191 ई.) दक्कन क्षेत्र में भारत के यादव (सेउना) राजवंश का पहला संप्रभु शासक था।
- भीलमा के पिता **कर्ण** और दादा यादव शासक **मल्लुगी** थे ।
- लगभग 1175 ई. में, उसने अपने चाचा के वंशजों और एक हड़पने वाले को अपदस्थ करके यादव सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया।
- उन्होंने अगले दशक तक **कल्याणी के चालुक्यों** के नाममात्र के जागीरदार के रूप में शासन किया तथा गुजरात के चालुक्य और परमार क्षेत्रों पर आक्रमण किया।
- चालुक्य शक्ति के पतन के बाद, उन्होंने 1187 ई. के आसपास संप्रभुता की घोषणा की और वर्तमान कर्नाटक में पूर्व चालुक्य क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए **होयसल राजा बल्लाल द्वितीय के साथ युद्ध किया।**
- उन्होंने 1189 ई. के आसपास **सोरातुर में हुए युद्ध** में बल्लाला को पराजित किया , लेकिन दो वर्ष बाद बल्लाला ने उन्हें हरा दिया।
- 1190 में उन्होंने चालुक्यों की राजधानी कल्याणी पर अधिकार कर लिया और **देवगिरि** (अब दौलताबाद) को यादव वंश की राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- 1189-90 सीई (1111 शक) के मुतुगी शिलालेख में भिलमा को "**चक्रवर्ती यादव**" कहा गया था ।
- उन्होंने विद्वान **भास्कर को** संरक्षण दिया , जो नागार्जुन के गुरु थे।

सिंघाना द्वितीय (1200-1246 ई.)

- **सिंघाना द्वितीय** (1200-1246 ई.) यादवों का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- सिंघाना द्वितीय का जन्म 1186 में सिन्नर में हुआ था। उनकी माता **भागीरथीबाई** और पिता **जैतुगीदेव** थे ।

- 1200 में उन्हें अपने पिता के उत्तराधिकारी के रूप में ताज पहनाया गया था, और बाद में होयसला क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में 1210 में उन्हें फिर से ताज पहनाया गया।
- उनके शासनकाल में यादव साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया। न तो होयसल, न काकतीय, न ही परमार और चालुक्य, उनके दक्कन प्रभुत्व को चुनौती देने का साहस कर पाए।
- सिंघाना ने इन सभी शक्तियों पर आक्रमण किया और उन्हें पराजित किया।
- **Sarangadeva**, the author of Sangita Ratnakar, worked as an accountant in Singhana II's court.
- संगीत रत्नाकर को हिंदुस्तानी और शास्त्रीय संगीत पर सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में से एक माना जाता है।
- दो प्रसिद्ध ज्योतिषी, **चंगदेव** (जिन्होंने एक ज्योतिष महाविद्यालय की स्थापना की) और **अनंतदेव** (जिन्होंने ब्रह्मगुप्त के ब्रह्मस्फुटसिद्धांत और वराहमिहिर के बृहज्जातक पर भाष्य लिखे), सिंहना के दरबार में फले-फूले।
- सिंघाना द्वितीय के बाद उसका पोता कृष्ण राजा बना।

राजा रामचंद्रबली (1291-1309 ई.)

- **Ramachandra** was the Yadava ruler Krishna's son.
- 1260 ई. में कृष्ण की मृत्यु के समय रामचंद्र संभवतः काफी युवा थे, इसलिए उनके चाचा (कृष्ण के भाई) **महादेव** सिंहासन पर बैठे।
- राजधानी देवगिरी में तख्तापलट करने के बाद, उन्होंने अपनी चचेरी बहन अम्माना से सिंहासन छीन लिया और लगभग 1270 ई. में अगले सम्राट बने।
- **ऐसा प्रतीत होता है कि रामचंद्र ने परमारों के** विरुद्ध उत्तरी युद्ध के दौरान अपने उत्तर-पश्चिमी पड़ोसियों, **गुर्जर के वाघेलों** के साथ युद्ध किया था ।
- उन्होंने परमारों, होयसलों, वाघेलों और काकतीय लोगों से युद्ध करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया, जो सभी हिंदू थे।
- **उन्होंने 1296 ई. में दिल्ली सल्तनत से मुस्लिम आक्रमण का सामना किया, और अलाउद्दीन खिलजी** को वार्षिक कर देने का वादा करके शांति स्थापित की ।
- **1308 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति मलिक काफूर** के नेतृत्व में रामचंद्र पर आक्रमण किया। काफूर की सेना ने रामचंद्र की सेना को परास्त कर दिया और उसे दिल्ली में कैद कर लिया।
- रामचंद्र एक प्रसिद्ध शिव (महा-महेश्वर) भक्त थे, जिन्होंने **आठ शिव प्रतिमाओं का** "अपनी महिमा के दूध से अभिषेक" किया था।

प्रशासन

- यादव राजवंश का प्रशासन अन्य दक्कन राज्यों के समान था।
- शासन का स्वरूप **वंशानुगत राजतंत्र था।**
- यादवों के पास प्रशासन को सहायता देने के लिए एक **मजबूत नौकरशाही थी।**
- राजा कोई भी भूमि अधिकार पत्र जारी करने से पहले **अपने मंत्रियों से परामर्श करता था।**
- यद्यपि राजा राजनीतिक निकाय का सबसे महत्वपूर्ण सदस्य होता है, प्राचीन राजनीतिक विचारक **मंत्रालय या सलाहकार परिषद को** राज्य के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में देखते थे।
- ऐसा प्रतीत होता है कि यादवों का मंत्रिमंडल छोटा है, जिसमें कभी-कभी 5 या 7 सदस्य होते हैं।
- मंत्रालय में, **महाप्रधान** एक शक्तिशाली मंत्री होता था जो आमतौर पर एक प्रांत या यहां तक कि एक जिले का प्रभारी होता था।
- **राजगुरु** संभवतः शाही गुरु थे, जो धार्मिक मामलों पर राजा को परामर्श देते थे।
- **लक्ष्मीपति** राजकोष के प्रभारी मंत्री थे।
- **मुद्राप्रभु**, मुहरों के प्रभारी अधिकारी, कुसुमारचनाध्यक्ष, पुष्प व्यवस्था के अधीक्षक, पहाड़ी किलों के कमांडर और शाही शिकारी, दरबार के अन्य शाही अधिकारियों में से हैं।
- यादव वंश के अंतर्गत, **प्रभावी सैन्य कमांडरों, जिन्हें नायक के रूप में जाना जाता था** , को प्रांतों का नेतृत्व करने के लिए चुना जाता था।

- **सामंतशाही** भी इसमें एक अत्यंत सामान्य जोड़ थी।
- सबसे निचली प्रशासनिक इकाई गांव थी, जिसका संचालन स्थानीय पंचायत द्वारा मुखिया के अधीन किया जाता था।
- ब्रह्मदेय **प्रणाली** अभी भी अस्तित्व में थी, और मंदिरों का राजनीति और अर्थव्यवस्था पर कुछ प्रभाव था।

समाज

- यादव **साम्राज्य की प्रजा** अपने सम्राट या राजा को सर्वोच्च अधिकारी के रूप में देखती थी, जिनसे अपेक्षा की जाती थी कि वे उनकी देखभाल करेंगे तथा वर्तमान सामाजिक न्याय, व्यवस्था और शांति को बनाए रखेंगे।
- **हालांकि, दिन-प्रतिदिन के मामलों** के लिए , **संघ या सहकारी समितियां** होती थीं जो किसी भी विवाद को प्रथा के अनुसार सुलझाती थीं, और यदि मामला हल नहीं हो पाता था, तो इसे उच्च प्राधिकारी के ध्यान में लाया जाता था।
- संघ आमतौर पर किसी विशिष्ट समूह या जाति के प्रचलित नियमों और विनियमों का पालन करते थे, केवल असाधारण परिस्थितियों में ही उनसे विचलित होते थे ।
- पेशे के आधार पर समाज **विभिन्न जातियों** में विभाजित था । प्रमुख जातियों के अपने नियम, कानून और रीति-रिवाज थे जिनका वे कड़ाई से पालन करते थे।
- यादव शासक सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु थे और समाज आमतौर पर विभिन्न धर्मों के लोगों को स्वीकार करता था।
- चारों वर्णों में ब्राह्मण सबसे शक्तिशाली थे। व्यवहार में, क्षत्रियों के विशेषाधिकार ब्राह्मणों के समान थे। वैश्यों की स्थिति काफ़ी ख़राब हो गई थी ।
- इस समयावधि में शूद्रों की स्थिति में नाटकीय सुधार हुआ ।
- नयन और आलवारों के नेतृत्व में भक्ति **आंदोलनों ने** , जो मनुष्य के साथ मनुष्य की समानता का उपदेश देते थे, उच्च और निम्न जातियों के बीच की खाई को पाटने में मदद की।
- अछूतों को मुख्यधारा के समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था।
- संयुक्त **परिवार** प्रथा प्रचलित थी। विधवाओं और पुत्रियों को संपत्ति का उत्तराधिकारी माना जाता था। इसलिए, यादवों के काल में सामाजिक संरचना अक्षुण्ण थी।

अर्थव्यवस्था

- आर्थिक क्षेत्र में राजा का ध्यान पहले की तरह **कृषि पर बना रहा।**
- यादव शासकों ने खेती के लिए अतिरिक्त **भूमि उपलब्ध कराने के लिए काम किया।**
- सिंचाई के लिए बांध और टैंक बनाए गए।
- **भू-राजस्व** की मांग का आकार निश्चित रूप से निर्धारित नहीं किया गया था।
- वन, खदानें और अन्य भूमि पर भी राज्य का दावा था और उन पर कर लगाया जाता था।
- **सरकारी राजस्व** के अन्य स्रोतों में सीमा शुल्क और व्यापारिक कर शामिल थे।
- **यादवों के** शासनकाल में घोड़ों, बंधियों (घोड़ागाड़ी) और बनियों (दासों) जैसी विशिष्ट वस्तुओं के स्वामित्व पर कर लगाया जाता था ।
- अर्थव्यवस्था **अच्छी तरह से विविधतापूर्ण थी,** जहाँ कई तरह की फ़सलें उगाई जाती थीं। कपास, चाय (लाल रंग), गन्ना और तिलहन पर भू-राजस्व की दर ज़्यादा होती थी और यह नकद में चुकाना पड़ता था, इसलिए इन्हें **नकदी फ़सलें या श्रेष्ठ फ़सलें कहा जाता था।**
- **व्यापार और उद्योगों को संगठित करने के लिए गिल्डों का गठन किया गया था। ये गिल्ड व्यापार और उद्योग को विनियमित करने के साथ-साथ बैंकिंग लेनदेन का संचालन भी करते थे।**
- इसके अलावा सेवाकर्मी भी थे, जैसे **लोहार, बढ़ई, रस्सी बनाने वाला, कुम्हार, चमड़े का काम करने वाला, नाई, धोबी, गांव का चौकीदार** , इत्यादि।

धर्म

- बौद्ध धर्म के पतन के बावजूद **जैन धर्म को राजकीय समर्थन मिलता रहा। वीरशैव संप्रदाय के विकास से जैन धर्म की प्रतिष्ठा पर कुछ हद तक असर पड़ा।**
- हिंदू भगवान कृष्ण के भक्त महानुभाव , सेउना राष्ट्र में उभरने वाले नए धार्मिक संप्रदाय थे ।

- भगवान दत्तात्रेय को आमतौर पर इस धर्म की स्थापना का श्रेय दिया जाता है; हालांकि, 1273 में, चक्रधर ने आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने के बाद महानुभाव संप्रदाय की स्थापना की।
- पंढरपुर में श्री विट्ठल या पांडुरंग से जुड़ा भक्ति आंदोलन 13वीं शताब्दी के अंत तक दक्कन में अधिक प्रसिद्ध हो गया।

साहित्य

- भारत में यादव वंश ने **संस्कृत साहित्य के विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया।** प्रख्यात गणितज्ञ और खगोलशास्त्री **भास्कराचार्य का** परिवार इसी काल का है।
- भास्कराचार्य के पिता **महेश्वर (जिन्हें कभी-कभी कविश्वर भी कहा जाता है) ने ज्योतिष पर दो पुस्तकें शेखर और लघुतिका लिखीं।**
- भास्कराचार्य की अनेक रचनाओं में से **सिद्धांत शिरोमणि** (1150 में लिखी गई) और **करणकुतुहल** सबसे प्रसिद्ध हैं।
- **सिंहना के महल में रहने वाले सारंगदेव**, सुप्रसिद्ध संगीत रचना **संगीतरत्नाकर के रचयिता थे।**
- **हेमाद्रि** यादव वंश के सबसे प्रसिद्ध लेखक थे। उनके अनेक लेखों में से, धर्मशास्त्र पर लिखे गए लेखों को हाल के समय में विश्वसनीय माना गया है।
- उनकी पुस्तक **"चतुर्वर्ग चिंतामणि"** अनुष्ठानों और धार्मिक रीति-रिवाजों का संग्रह है। उस समय के एक विपुल लेखक होने के अलावा, हेमाद्रि हमें राजवंश के अतीत के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देते हैं।
- **मराठी साहित्य** के विकास में एक महत्वपूर्ण युग सेउणा काल है।
- इस भाषा में पहली विद्यमान पुस्तक का नाम **विवेकसिंधु है, जिसे मुकुंदराज** ने लिखा था और जो अद्वैत विचारधारा की व्याख्या करती है।
- संत-कवि **ज्ञानेश्वर ने** भगवद गीता पर मराठी भाषा में टिप्पणी **ज्ञानेश्वरी** लिखी ।
- **नामदेव, मुक्ताबाई** और अन्य संत कवियों द्वारा लिखे गए अभ्यंग या भक्ति गीतों ने मराठी साहित्य को महत्वपूर्ण रूप से समृद्ध किया।
- भानुभट्ट का शिशुपालवध **, नरेन्द्रपंडित का रुक्मिणीस्वयंवर, नृसिंहकेसरी का नलोपाख्यान और महेन्द्र का लीलाचरित** उन साहित्यिक कृतियों में से हैं (मुख्यतः धार्मिक विषयों पर) जिन पर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

वास्तुकला

- गोंडेश्वर **मंदिर** भारत के महाराष्ट्र के सिन्नर में स्थित एक हिंदू मंदिर है, जिसका निर्माण 11वीं से 12वीं शताब्दी के बीच हुआ था।
- मुख्य मंदिर शिव को समर्पित है तथा चार सहायक मंदिर सूर्य, विष्णु, पार्वती और गणेश को समर्पित हैं, तथा इसकी योजना पंचायतन है।
- गोंडेश्वर मंदिर का निर्माण यादव वंश के शासनकाल के दौरान हुआ था, हालांकि इसकी कोई सटीक तारीख नहीं मिली है, और माना जाता है कि यह 11वीं या 12वीं शताब्दी का है।
- **देवगिरी किला** यादवों के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। इसे भारत के सबसे मज़बूत किलों में से एक माना जाता है।

यादवों का पतन

- अंतिम प्रमुख शासक **रामचंद्र थे।**
- **अलाउद्दीन खिलजी के हमलों** के बाद रामचंद्र कमजोर हो गया और अंततः 1308 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति **मलिक काफूर** के नेतृत्व में रामचंद्र पर आक्रमण कर दिया ।
- मलिक काफूर की सेना ने यादव राजकुमार की सेना को हराया और रामचंद्र को दिल्ली ले गई।
- अलाउद्दीन ने दिल्ली में रामचंद्र को सम्मान की दृष्टि से देखा और उन्हें देवगिरी में एक जागीरदार के रूप में पुनः स्थापित किया गया।
- **सिंहना तृतीय** (शंकरदेव) उनके पुत्र थे, जो अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध असफल विद्रोह के बाद पराजित होकर मारे गये। इस प्रकार यादव वंश का अंत हो गया।

काकतीय राजवंश

- काकतीय राजवंश एक दक्षिण भारतीय तेलुगु राजवंश था जिसने **12वीं और 14वीं** शताब्दी के बीच वर्तमान भारत के **पूर्वी दक्कन क्षेत्र के अधिकांश भाग पर शासन किया था।**
- उनके क्षेत्र में वर्तमान तेलंगाना और आंध्र प्रदेश का अधिकांश भाग **, तथा पूर्वी कर्नाटक, उत्तरी तमिलनाडु और दक्षिणी ओडिशा के कुछ हिस्से** शामिल थे ।
- उनकी राजधानी **ओरुगल्लू थी, जिसे** अब **वारंगल के नाम से जाना जाता है।**
- प्रारंभिक काकतीय शासकों ने दो शताब्दियों से अधिक समय तक **राष्ट्रकूटों और पश्चिमी चालुक्यों के सामंत के रूप में कार्य किया।**
- **उन्होंने 1163 ई. में** तेलंगाना क्षेत्र में अन्य चालुक्य अधीनस्थों का दमन करके प्रतापरुद्र प्रथम के अधीन संप्रभुता हासिल की ।
- **गणपति देव** (शासनकाल 1199-1262) ने 1230 के दशक के दौरान काकतीय भूमि का महत्वपूर्ण विस्तार किया और गोदावरी और कृष्णा नदियों के आसपास के तेलुगु भाषी निचले डेल्टा क्षेत्रों को काकतीय नियंत्रण में लाया।
- गणपति देव के बाद **रुद्रमा देवी** (शासनकाल 1262-1289) ने शासन किया, जो भारतीय इतिहास की कुछ रानियों में से एक हैं।
- **मार्को पोलो** , जो लगभग 1289-1293 के बीच भारत आए थे, ने रुद्रमा देवी के शासन और स्वभाव की प्रशंसा की थी। उन्होंने देवगिरि के यादवों (स्यूना) के काकतीय क्षेत्र में आक्रमणों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया था।
- **अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में काकतीय साम्राज्य पर आक्रमण किया।** इससे काकतीय लोगों के लिए कठिन समय आ गया।
- अंततः **1323 में राजकुमार जौनखान (मुहम्मद बिन तुगलक) ने प्रतापरुद्र देव को पराजित किया** और उनके राज्य पर कब्जा कर लिया।
- प्रिंस जौना ने काकतीय की राजधानी ओरगल्लू का नाम बदलकर सुल्तानपुर कर दिया।
- प्रतापरुद्र देव ने राजकुमार जौना के बंदी के रूप में दिल्ली आते समय नर्मदा नदी के पास आत्महत्या कर ली।

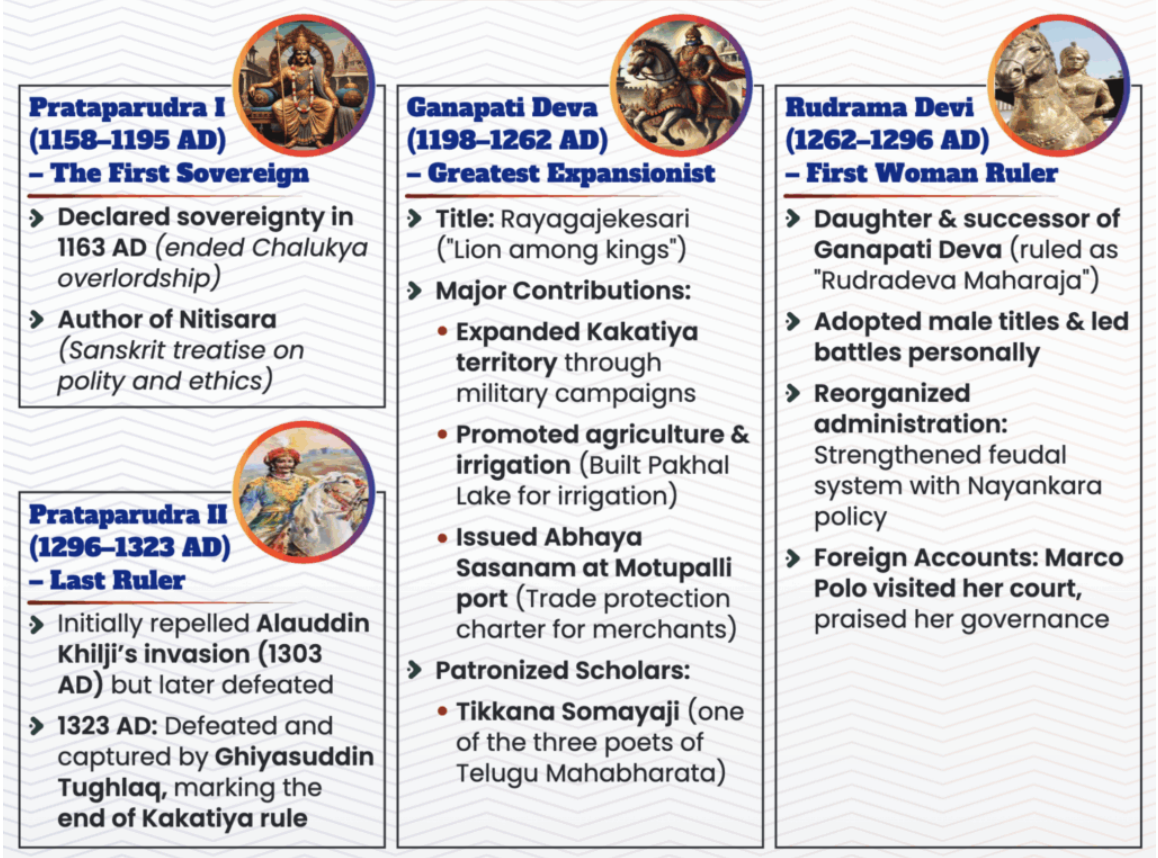

राजनीति और प्रशासन

- काकतीय राजव्यवस्था **राजतंत्रीय व्यवस्था** पर आधारित थी । काकतीय शासक संपूर्ण प्रशासनिक ढाँचे की धुरी थे, फिर भी वे पूर्णतः निरंकुश नहीं थे।
- सामान्यतः उत्तराधिकार की प्रक्रिया में **वे ज्येष्ठाधिकार के नियम का पालन करते थे** और जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, सिंहासन पर महिला का आना एक उल्लेखनीय अपवाद था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि सत्ता शासक और उसके अधीनस्थों के बीच **विकेन्द्रित थी , जो शासक के प्रति निष्ठा रखते थे।**
- अधीनस्थों **को सैन्य मामलों को छोड़कर हर तरह से स्वतंत्रता दी गई थी** । राजा की एकमात्र चिंता उनकी शक्ति में अत्यधिक वृद्धि को रोकना था।
- काकतीय राजनीति के कुछ तंतु शासकों को सीधे उनके प्राथमिक अधीनस्थों से जोड़ते थे, जबकि अन्य तंतु इन अधीनस्थों को एक सघन रूप से शाखाओं में बँधे पैटर्न में सहयोगियों के विभिन्न स्तरों तक ले जाते थे।
- संपर्क क्षैतिज रूप से विस्तारित हुए, जिससे विस्तृत क्षेत्र में फैले इलाकों का एकीकरण हुआ, साथ ही ऊर्ध्वाधर रूप से गांवों और कस्बों तक पहुंचा।
- काकतीय शासकों को एक मंत्रिपरिषद और केंद्र के साथ-साथ प्रांतीय और स्थानीय स्तर पर अनेक अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी। वे इस बात का ध्यान रखते थे कि प्रादेशिक क्षेत्रों का उचित विभाजन हो और उन पर वफादार अधिकारियों द्वारा प्रभावी शासन हो। **मंडल, नाडु, स्थल, सीमा और भूमि** प्रादेशिक विभाजनों के नाम थे।
- काकतीय राज्य एक सैन्य-राज्य था जो आंतरिक और बाह्य शत्रुओं के खतरे का सामना करने के लिए तैयार था। काकतीय लोगों का सैन्य संगठन **नायककार प्रणाली** पर आधारित था ।
- इस प्रणाली में शासक नायकों को उनके वेतन के बदले में जागीरें सौंपता था और नायकों को शासक के उपयोग के लिए कुछ सेना रखनी होती थी।
- नायक द्वारा रखे जाने वाले सैनिकों, घोड़ों और हाथियों की संख्या राजा द्वारा नायक की जागीर के अनुसार तय की जाती थी।
- नायकों द्वारा प्रदत्त सेना के अतिरिक्त, काकतीय लोग सेनापतियों के नियंत्रण में एक स्थायी सेना भी रखते थे, जो सीधे शासक के प्रति उत्तरदायी होते थे।
- In the military organization, **forts played crucial role** and the epigraphs refer to **Giridurgas**, like Anumakonda, Raichur, Gandikota and the **Vanadurgas**, like Kandur and Narayanavanam, the **Jaladurgas**, like Divi and Kolanu and the **Sthaladurgas**, like Warangal and Dharanikota.
- प्रतापरुद्र के नीतिसार में उपर्युक्त चार प्रकार की दुर्गाओं का उल्लेख है।
- सैन्य संगठन ने काकतीय लोगों को आक्रामक होने और तेलंगाना के मुख्य क्षेत्र या परमाणु क्षेत्र से तटीय जिलों तक और फिर रायलसीमा या दक्षिण-पश्चिम आंध्र तक आंध्र शक्ति के रूप में तेजी से विस्तार करने और तमिल क्षेत्र में भी प्रवेश करने में सक्षम बनाया।

अर्थव्यवस्था

- सरकारी राजस्व का प्राथमिक स्रोत **कृषि उत्पादों पर कर** था ।
- काकतीय साम्राज्य में कर का भुगतान प्रायः **दो प्रमुख फसल मौसमों कार्तिक और वैशाख के दौरान दो किस्तों में किया जाता था।**
- इस संदर्भ में प्रयुक्त शब्द ' **सुंकामु' या 'सुंका'** का अर्थ था निर्यात और आयात पर शुल्क, उत्पाद शुल्क, तथा बाजार शहरों से लाए गए और ले जाए गए माल पर लगाए गए सीमा शुल्क।
- काकतीय राजवंश के अधीन घोड़ों, बंदियों (गाड़ियों) और बनियों (दासों) जैसी विशिष्ट वस्तुओं के स्वामित्व पर कर लगाया जाता था।
- **मोटुपल्ली काकतीय राजवंश का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था।**
- काकतीय सम्राट विभिन्न **सिंचाई प्रणालियों के** निर्माण में गहरी व्यक्तिगत रुचि दिखाने के लिए प्रसिद्ध थे ।
- सिंचाई के लिए बांध और टैंक (काकतीय साम्राज्य में समुद्रम) बनाए गए थे।

- काकतीय लोगों के आने से पहले तालाब छोटे थे, सिंचाई व्यवस्था निम्न स्तर की थी, तथा कृषि क्षेत्र भूमि का एक छोटा सा हिस्सा ही था।
- काकतीय शासक बीटा द्वितीय, रुद्र, गणपति और प्रतापरुद्र ने अपने राज्य के चारों ओर कई तालाबों का निर्माण करवाया था।
- रामप्पा **और पकाला झीलें** सभी तालाबों में सबसे बड़ी हैं। रामप्पा झील पालमपेट में रामप्पा मंदिर के बगल में स्थित है। 1213 ई. में, काकतीय अधीनस्थ राजा मुम्मदी ने पाकाला झील का निर्माण कराया।
- तालाबों और मंदिरों के निर्माण से नए शहरों के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिससे पहले से बंजर भूमि पर खेती संभव हो सकी।
- ऐसा माना जाता है कि आंध्र क्षेत्र में काकतीय और उनके अधीनस्थ सरदारों ने लगभग 5000 तालाबों का निर्माण कराया था, जिनमें से अधिकांश आज भी उपयोग में हैं।

समाज

- **धर्मशास्त्रीय साहित्य** द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर , पारंपरिक इतिहासकार समाज को **वर्णाश्रमधर्म मॉडल** पर आधारित मानते हैं और इसे **चार वर्णों** में विभाजित मानते हैं ; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
- हम यह भी देखते हैं कि **उप-जातियों का उदय हुआ है और ब्राह्मणों को उप-क्षेत्रों के आधार पर विभाजित किया जा रहा है,** जैसे कि श्रोत्रिय और नियोगी के अलावा वेलानाति, वेगिनति और मूलाकानाति।
- दिलचस्प बात यह है कि ब्राह्मण समुदाय विद्वान और शिक्षक होने के अलावा **दंडनायक या सेनापति और अमात्य या मंत्री के रूप में भी कार्य करता था।**
- **शासन पर केवल क्षत्रियों का एकाधिकार नहीं था** और शासक के रूप में क्षत्रिय समुदाय की प्रमुखता काफी हद तक कम हो गई थी।
- कोई भी शासक बन सकता था, बशर्ते उसमें आवश्यक गुण और योग्यताएँ हों। मध्यकालीन आंध्र की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि **शूद्रों का नए राजनीतिक अभिजात वर्ग के रूप में उदय हुआ और अन्य सामाजिक समूहों ने शासकों के रूप में शूद्रों की श्रेष्ठता को स्वीकार किया।** इसके अलावा, ऐसा माना जाता है कि राजाओं ने ब्राह्मण धर्म को बनाए रखना अपना कर्तव्य बना लिया और यह सुनिश्चित करने के लिए उपाय किए कि प्रत्येक जाति अपने निर्धारित कर्तव्यों का पालन करे।
- यह दृढ़ विश्वास है कि मध्ययुगीन आंध्र में ब्राह्मण सामाजिक व्यवस्था में उच्च स्थान रखते थे और सामाजिक व्यवस्था स्वयं उनके आदेशों पर निर्भर थी।
- सभी गैर-ब्राह्मणों के बीच पर्याप्त **सामाजिक परिवर्तनशीलता** और व्यापारियों जैसे व्यावसायिक समूहों का अस्तित्व, काकतीय आंध्र समाज के लिए किसी भी मानक मॉडल को लागू करने के लिए स्थिति को बहुत जटिल बना देता है।
- मंदिर के अभिलेखों से पता चलता है कि शाही परिवार की महिलाओं और मंदिर से जुड़ी महिलाओं के साथ **सानी भी जोड़ी जाती थी। महिलाएं खुद को किसी की पत्नी या बेटी बताकर दान देती थीं। महिलाओं को स्त्रीधन और अन्य प्रकार की संपत्ति का अधिकार था, यह इस बात से स्पष्ट है कि कुल व्यक्तिगत दानदाताओं में महिलाओं की संख्या 11 प्रतिशत है।**
- अभिलेखों में पशुधन, मंदिर भवनों और अनुष्ठानिक पूजा में प्रयुक्त धातु की वस्तुओं के साथ-साथ सिंचाई सुविधाओं और नकदी के दान का भी उल्लेख मिलता है।
- दिलचस्प बात यह है कि मंदिर की अधिकांश **महिलाएं या गुडिसानी** नायक और सेट्टी जैसे सम्मानित पुरुषों की बेटियां थीं और मंदिर की महिलाओं को विवाह से प्रतिबंधित नहीं किया गया था।
- सामाजिक संबंधों में **गतिशीलता और तरलता के कारण सामाजिक कठोरता कम दिखाई दी।**
- उदाहरण के लिए, साहित्यिक परीक्षण **'पालनतिविरुलाकथा' में** युद्ध और बालचंद्र के मित्रों का उल्लेख है, जो विभिन्न पृष्ठभूमियों से हैं: एक ब्राह्मण, एक लोहार, एक सुनार, एक धोबी, एक कुम्हार और एक नाई और वे सभी अपने आप को 'भाई' कहते हैं और युद्ध में जाने से पहले एक साथ भोजन करते हैं।

- काकतीय अभिलेखों से ज्ञात सामूहिक दानदाताओं की सबसे बड़ी श्रेणी व्यापारियों और कारीगरों के संघों की प्रतीत होती है। सामाजिक संबंध वर्ण और जाति के बजाय समान हितों और व्यवसायों पर आधारित प्रतीत होते हैं क्योंकि सामाजिक पहचान वर्ण या जाति के संदर्भ में व्यक्त नहीं की जाती थी।

धर्म

- काकतीय राजवंश का प्रमुख धर्म **हिंदू धर्म था। काकतीय समाज मुख्यतः हिंदू रीति-रिवाजों और मान्यताओं** पर आधारित था ।
- शासक और समाज हिंदू परंपराओं और संस्कृति में गहराई से निहित थे। उन्होंने अनेक हिंदू मंदिरों और धार्मिक संस्थानों के निर्माण को संरक्षण दिया।
- काकतीय राजवंश अपनी **धार्मिक सहिष्णुता** के लिए जाना जाता था ।
- उनके कुछ शासकों ने तो जैन और बौद्ध धर्म को भी संरक्षण दिया।
- हालाँकि, राजवंश के पूरे शासनकाल में हिंदू धर्म प्रमुख धर्म बना रहा।

कला और वास्तुकला

- काकतीय राजवंश कला और स्थापत्य कला के संरक्षण के लिए जाना जाता था। इस राजवंश के शासकों ने कई मंदिरों और स्मारकों का निर्माण करवाया। ये मंदिर अक्सर जटिल नक्काशी और मूर्तियों से सुसज्जित होते थे।
- काकतीय वास्तुकला का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण **वारंगल किला** है ।
  - इसका निर्माण 13वीं शताब्दी में गणपति देव के शासनकाल के दौरान हुआ था।
  - यह किला वारंगल शहर के मध्य में स्थित है।
  - यह एक विशाल संरचना है जिसका निर्माण ग्रेनाइट ब्लॉकों का उपयोग करके किया गया था।
  - इसमें गणपति देव का सिंहासन, स्वयंभू मंदिर और जटिल नक्काशी से सुसज्जित कई प्रवेश द्वार हैं।
- हजार **स्तंभ मंदिर** काकतीय वास्तुकला का एक और प्रसिद्ध उदाहरण है।
  - इसका निर्माण गणपति देव के शासनकाल के दौरान हुआ था।
  - यह मंदिर हनमकोंडा में स्थित है।
  - यह अपने प्रभावशाली स्तंभों के लिए जाना जाता है, जिन पर जटिल आकृतियां और मूर्तियां उकेरी गई हैं।
- **प्रसिद्ध काकतीय थोरनम** का निर्माण गणपति देव के शासनकाल के दौरान किया गया था।
  - यह जटिल मेहराब साँची स्तूप के प्रवेशद्वारों से मिलता जुलता है।
  - इसे तेलंगाना के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- ऐसा माना जाता है कि काकतीय राजाओं ने 13वीं शताब्दी के दौरान **गोलकुंडा किले का निर्माण कराया था।**
  - बाद में काकतीय वंश के बाद आने वाले विभिन्न शासकों द्वारा इस किले का विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया गया।
  - इसमें बहमनी सल्तनत, कुतुब शाही राजवंश और मुगल शामिल थे।
- **रेचारला रुद्र** , जो गणपति देव के सेनापति थे, ने **रुद्रेश्वर मंदिर का** निर्माण कराया था ।
- काकतीय वास्तुकला के अन्य उल्लेखनीय उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हैं:
  - **रामप्पा मंदिर,**
    - काकतीय लोगों द्वारा निर्मित रामप्पा मंदिर को जुलाई 2021 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
    - यह भारत के तेलंगाना के पालमपेट गांव में स्थित 13वीं शताब्दी का मंदिर है।
    - 6 फीट ऊंचे मंच पर निर्मित इस मंदिर का लेआउट क्रूसीफॉर्म है।
    - इसे पूरा होने में लगभग 40 वर्ष लगे।
    - मंदिर का आंतरिक कक्ष एक "शिखर" से सुसज्जित है और एक "प्रदक्षिणापथ" से घिरा हुआ है।
    - यह अपनी जटिल नक्काशी और अनूठी वास्तुकला के लिए जाना जाता है।
  - **the Bhadrakali Temple**, and
  - **कोट ऑफ आर्म्स** मंदिर
- इन सभी मंदिरों में विस्तृत नक्काशी और मूर्तियां हैं।

साहित्य

- इस राजवंश के शासक कवियों और संगीतकारों के महान संरक्षक के रूप में जाने जाते थे।
- काकतीय काल को **तेलुगु साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है।**
- **Jayapa senani** has composed Geeta Ratnavali, Nritya Ratnavali and Vadya Ratnavali.
- आंध्र नाट्यम और पेरिनिसिवतांडवम इस काल के शास्त्रीय नृत्य रूप थे।

लेखक	साहित्यक रचना	विवरण
Vidyanatha	Prataparudriya	प्रतापरुद्र के शासनकाल का जश्न मनाने वाला एक महाकाव्य।
अल्लासानी पेद्दन्ना	मनुचरित	14वीं शताब्दी के राजा मनुमा की जीवनी।
Srinatha	Harikathaasaaramu	कहानियों और नैतिक शिक्षाओं का संग्रह।
नंदी थिम्मना	Parijatapaharanam	पारिजात वृक्ष के अपहरण के बारे में एक महाकाव्य।
Raghunatha Nayaka	Prabhavati Pradyumnamu	राजकुमारी प्रभावती और राजकुमार प्रद्युम्न की प्रेम कहानी पर आधारित नाटक।
Palkuriki Somanatha	Basava Purana	12वीं सदी के लिंगायत संत बसवन्ना की जीवनी।
गोना बुद्धा रेड्डी	रंगनाथ रामायणम	रामायण का एक तेलुगु पुनर्कथन।

काकतीय राजवंश का पतन

- काकतीय राजवंश का पतन **14वीं शताब्दी के आरंभ** में शुरू हुआ । इसका श्रेय **अलाउद्दीन खिलजी के अधीन दिल्ली सल्तनत द्वारा दक्षिण की ओर अपने क्षेत्र का विस्तार करने को दिया जाता है।**
- काकतीय साम्राज्य पहले से ही आंतरिक संघर्षों और उत्तराधिकार विवाद के कारण कमजोर हो चुका था।
  - इस राजवंश में उत्तराधिकार की एक जटिल प्रणाली थी।
  - सिंहासन प्रायः पैतृक वंश के बजाय मातृ वंश के माध्यम से हस्तांतरित होता था।
  - उत्तराधिकार की इस प्रणाली के कारण शाही परिवार के बीच अक्सर सत्ता संघर्ष होता था।
- परिणामस्वरूप, वह दिल्ली सल्तनत की सैन्य शक्ति का विरोध करने में असमर्थ था।
- **1303 में,** दिल्ली सल्तनत ने काकतीय साम्राज्य के विरुद्ध एक सैन्य अभियान चलाया। इसके परिणामस्वरूप, कौल के रणनीतिक किले पर कब्ज़ा कर लिया गया।
- उस समय के काकतीय राजा, **प्रतापरुद्र को** दिल्ली सल्तनत को कर देने के लिए मजबूर किया गया। इससे उनका अधिकार और कमज़ोर हो गया और राज्य की संप्रभुता कमज़ोर हो गई।
- **1310 में** , दिल्ली सल्तनत ने काकतीय साम्राज्य के विरुद्ध फिर से सैन्य अभियान चलाया। इसके परिणामस्वरूप वारंगल शहर पर कब्ज़ा हो गया।
  - काकतीय शासक दिल्ली सल्तनत के साथ एक संधि के माध्यम से शहर पर पुनः नियंत्रण पाने में सफल रहे। हालाँकि, राज्य की शक्ति गंभीर रूप से कमजोर हो चुकी थी।
- **1323 में, मुहम्मद बिन तुगलक के नेतृत्व में दिल्ली सल्तनत ने राज्य पर बड़े पैमाने पर आक्रमण किया।**
  - प्रतापरुद्र के नेतृत्व वाली काकतीय सेना पराजित हुई। उसे बंदी बना लिया गया और बाद में उसे फाँसी दे दी गई।
- काकतीय वंश के पतन के साथ यह क्षेत्र **दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में आ गया।**

Kadamba Dynasty (345–540 CE)

कदंब राजवंश

- **कदंब राजवंश एक प्राचीन भारतीय राजवंश था जिसने चौथी से छठी** शताब्दी ई. तक दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों, विशेषकर वर्तमान **कर्नाटक क्षेत्र पर शासन किया था।**
- **दक्कन में सातवाहन शक्ति के पतन के** बाद तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान कर्नाटक क्षेत्र में चुतु, आभीर और इक्ष्वाकु जैसे कई छोटे राजवंशों का शासन आया, हालांकि अगली शताब्दी में इस राजनीतिक भ्रम से बाहर निकला, जब बनवासी के कदंब प्रमुखता से उभरे।
- कदंबों (345-540 ई.पू.) **ने** वर्तमान उत्तर कन्नड़ जिले के **वैजयंती** या **बनवासी** से उत्तरी कर्नाटक और कोंकण पर शासन किया ।
- इस राज्य की स्थापना **मयूरशर्मा** ने लगभग 345 ई. में की थी। ऐसा कहा जाता है कि उनके पूर्वज हिमालय की तलहटी से आये थे।
- तालगुंडा **शिलालेख** भी **मयूरशर्मा को** राज्य का संस्थापक बताता है।
- कदंब राजवंश प्रशासनिक स्तर पर कन्नड़ भाषा का प्रयोग करने वाला **पहला स्वदेशी राजवंश था।**
- कदंब पश्चिमी गंगा राजवंश के समकालीन थे और उन्होंने मिलकर स्वायत्तता के साथ भूमि पर शासन करने वाले सबसे प्रारंभिक देशी राज्यों का गठन किया।
- **कदंबों की उत्पत्ति:**
- कदंब वंश की उत्पत्ति के बारे में दो सिद्धांत हैं, एक **कन्नड़ मूल** और दूसरा **उत्तर भारतीय मूल।**
- कदम्बों की उत्तर भारतीय उत्पत्ति का पता उनके वंशज वंश के बाद के अभिलेखों में ही मिलता है और इसे पौराणिक कथा माना जाता है।
- दक्षिण भारत क्षेत्र में इस राजवंश के बारे में आमतौर पर यही जाना जाता है कि इसका परिवार का नाम **कदंब वृक्ष से लिया गया है।**
- इतिहासकारों का दावा है कि यह राज्य तालगुंडा शिलालेख के माध्यम से ब्राह्मण जाति का था या कदंबू नामक आदिवासी मूल का था।
- ऐसा दावा किया जाता है कि कदंबों का परिवार कनारिस वंश का था।
- कदंबों के नागा वंश का उल्लेख राजा कृष्ण वर्मा प्रथम के प्रारंभिक शिलालेखों में किया गया है, जो इस बात की भी पुष्टि करता है कि यह परिवार कर्नाटक से था।
- इनमें साम्राज्यवादी स्वरूप में विकसित होने की क्षमता दिखाई देती थी, जिसका संकेत इसके शासकों द्वारा धारण की गई उपाधियों और उपाधियों तथा उत्तर भारत के **वाकाटक** और **गुप्त** जैसे अन्य राज्यों और साम्राज्यों के साथ उनके **वैवाहिक संबंधों** से मिलता है । ये वैवाहिक संबंध इस साम्राज्य की संप्रभु प्रकृति का संकेत देते हैं।
- **मयूरशर्मा ने** संभवतः कुछ स्थानीय जनजातियों की मदद से कांची के पल्लवों की सेनाओं को पराजित किया और संप्रभुता का दावा किया।
- **Kangavarma:**
- वह मयूरशर्मा का उत्तराधिकारी था जिसे **वाकाटक** पृथ्वीसेन ने पराजित किया था।
- लेकिन वह अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने में कामयाब रहे।
- उनके पुत्र रघु, जो पल्लवों से लड़ते हुए मारे गए, के बाद उनके भाई ककुस्थवर्मा ने शासन संभाला, जो राज्य का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- **ककुस्थवर्मा:**
- **ककुस्थवर्मा** के शासनकाल में कदंब शक्ति अपने चरम पर पहुंच गई ।
- तालगुंडा शिलालेख के अनुसार, उन्होंने उत्तर के शाही गुप्तों के साथ भी वैवाहिक संबंध बनाए रखे।
- उनकी एक पुत्री का विवाह कुमारगुप्त के पुत्र स्कंदगुप्त से हुआ था। उनकी दूसरी पुत्री का विवाह वाकाटक राजा नरेंद्रसेन से हुआ था।

- महाकवि **कालिदास** उनके दरबार में आये थे।
- **Ravivarma:**
- ककुस्थवर्मा के बाद केवल **रविवर्मा** ही राज्य का निर्माण करने में सक्षम हुआ, जो 485 ई. में सिंहासन पर बैठा।
- उनके शासन काल में परिवार के भीतर तथा पल्लवों और गंगों के विरुद्ध कई संघर्ष हुए।
- **उन्हें वाकाटकों के** विरुद्ध विजय का श्रेय भी दिया जाता है , जिसके कारण उनका साम्राज्य उत्तर में नर्मदा नदी तक फैल गया।
- इस राज्य में कर्नाटक, गोवा और वर्तमान महाराष्ट्र के दक्षिणी क्षेत्र शामिल थे।
- उनकी मृत्यु के बाद, पारिवारिक झगड़ों के कारण राज्य का पतन हो गया।
- छठी शताब्दी के मध्य से यह राजवंश बड़े कन्नड़ साम्राज्यों, चालुक्य और राष्ट्रकूट साम्राज्यों के अधीन पांच सौ वर्षों तक शासन करता रहा, जिसके दौरान वे **गोवा के कदंब, हलासी के कदंब,** चंदावर **के कदंब** और हंगल **के कदंब** जैसे छोटे राजवंशों में विभाजित हो गए ।

प्रशासन:

- **धर्म-महाराजा की** उपाधि वाकाटक, पल्लव, कदंब और पश्चिमी गंगा राजाओं द्वारा अपनाई गई थी।
- डॉ. मोरेस ने शिलालेखों से राज्य में विभिन्न कैबिनेट और अन्य पदों की पहचान की है।
- प्रधान मंत्री (प्रधान),
- स्टीवर्ड (मैनेवरगेड),
- परिषद के सचिव (तंत्रपाल या सभाकार्य सचिव),
- विद्वान बुजुर्ग (विद्यावृद्ध),
- physician (Deshamatya),
- private secretary (Rahasyadhikritha),

- मुख्य सचिव (सर्वकार्यकर्ता),
- मुख्य न्यायाधीश (धर्माध्यक्ष) और
- other officials (Bhojaka and Ayukta).

- **सेना:**
- सेना में निम्नलिखित जैसे अधिकारी शामिल थे
  - **Jagadala,**
  - **दंडनायक** और
  - **सेनापति** .
- राज्य को **मंडलों** (प्रांतों) या **देशों** में विभाजित किया गया था ।
- मंडल के अंतर्गत **विषय** (जिले) थे।
  - कुल नौ विषयों की पहचान की गई है।
- एक विषय के अंतर्गत **महाग्राम** (तालुक) और **दशग्राम** (होबली) थे।
  - महाग्राम में दशग्राम की तुलना में अधिक गांव थे।

अर्थव्यवस्था

- अर्थव्यवस्था और उसे आकार देने वाली चीजों के बारे में ज्ञान का प्रमुख स्रोत शिलालेख और साहित्य हैं।
- **मिश्रित खेती,** चराई और कृषि का संयोजन, जिस पर समृद्ध **गावुंडा किसानों** (आज के गौड़ा) का प्रभुत्व था, एक अच्छा तरीका प्रतीत होता था, क्योंकि उत्पादित अनाज की मात्रा और मवेशियों की संख्या दोनों ही समृद्धि को परिभाषित करते थे।
- कई विवरण बताते हैं कि कोलागा या खंडुगा में **चरागाह और कृषि योग्य भूमि, या तो पशु चोरों से लड़ने वाले लोगों को या उनके रिश्तेदारों को दी जाती थी।**
- **नौ विषयों की** खोज की गई है । **एक विषय के अंतर्गत महाग्राम (तालुक)** और दशग्राम (होबली) होते थे ।
- महाग्राम में दशग्राम की तुलना में गांवों की संख्या अधिक थी।
- भूमि उत्पादन के छठे भाग पर कर लगाना आवश्यक था।
- **भार कर,**
- **वड्डारावुला (शाही परिवार सामाजिक सुरक्षा कर)** ,
- **बिलकोडा (बिक्री कर),**
- **किरुकुला (भूमि कर),**
- **पन्नया (पान कर),** और
- व्यापारियों पर लगाए गए करों में अन्य व्यावसायिक शुल्क भी शामिल थे।

सिक्के:

- तलगुंडा, गुंडानूर, चंद्रवल्ली, हलासी और हल्मिडी के संस्कृत और कन्नड़ शिलालेख कुछ महत्वपूर्ण शिलालेख हैं जो कदंब वंश पर प्रकाश डालते हैं।
- **उन्होंने नागरी, कन्नड़ और ग्रन्थ कथाओं** वाले बड़ी संख्या में सिक्के ढाले ।
- इनमें से अधिकांश **सिक्के सोने के और कुछ तांबे के हैं।**
- ज़्यादातर सिक्के **छिद्रण विधि से बनाए जाते थे।** मुख्य डिज़ाइन सिक्के के बीच में छिद्रित किया जाता है। अक्सर, यह छिद्र इतनी गहराई से किया जाता है कि सिक्का एक अवतल तश्तरी या प्याले का आकार ले लेता है।
- कदंब सिक्कों को आमतौर पर **पद्मातक** (**कमल के सिक्के**) कहा जाता है क्योंकि इनमें से ज़्यादातर के अग्रभाग पर केंद्रीय प्रतीक कमल होता है। कुछ कदंब सिक्कों के अग्रभाग पर कमल की जगह सिंह अंकित होता है।

भाषा और शिलालेख:

- **प्रारंभिक कदंब शासकों के अधीन प्राकृत को** राजभाषा का दर्जा प्राप्त था। लेकिन ककुस्थवर्मा के समय तक **संस्कृत को भी** अधिकाधिक अपनाया जाने लगा। हल्मीदी शिलालेख से पता चलता है कि पाँचवीं शताब्दी ईस्वी तक **कन्नड़ भाषा का भी महत्व बढ़ गया था।**

- **तलगुंडा शिलालेख:**
- इसमें विस्तार से वर्णन किया गया है कि किस प्रकार मयूरशर्मा अपने गुरु वीरशर्मा के साथ वैदिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए कांची गए, लेकिन पल्लवों ने उन्हें वहां से बेदर्दी से बाहर निकाल दिया।
- इस अपमान से व्यथित होकर, कदंब प्रमुख ने एक जंगल में अपना शिविर स्थापित किया और संभवतः वनवासी जनजातियों की मदद से पल्लवों को पराजित किया। अंततः, पल्लवों ने हार का बदला लिया, लेकिन मयूरशर्मन को औपचारिक रूप से राजचिह्न प्रदान करके कदंब के प्रभुत्व को मान्यता दी।
- इसमें यह भी कहा गया है कि मयूरशर्मा तालगुंडा (वर्तमान शिमोगा जिले में) के मूल निवासी थे और उनके परिवार का नाम उनके घर के पास उगने वाले कदंब वृक्ष के नाम पर पड़ा।
- **450 ई. का हल्मिडी शिलालेख** इस बात का प्रमाण है कि कदंब पहले शासक थे जिन्होंने कन्नड़ को अतिरिक्त आधिकारिक प्रशासनिक भाषा के रूप में प्रयोग किया।
- बनवासी से उनके प्रारंभिक शासन के तीन कन्नड़ शिलालेख खोजे गए हैं, साथ ही कई प्रारंभिक कदंब राजवंश के सिक्के भी मिले हैं जिन पर कन्नड़ शिलालेख वीर और स्कंध अंकित हैं।
- राजा भगीरथ (390-415 ई.) का एक स्वर्ण सिक्का मौजूद है जिस पर पुरानी कन्नड़ किंवदंती श्री और भागी अंकित है।
- हाल ही में बनवासी में 5वीं शताब्दी के कदंब तांबे के सिक्के की खोज हुई है, जिस पर कन्नड़ लिपि में श्रीमनारागी लिखा हुआ है, जो प्रशासनिक स्तर पर कन्नड़ के प्रयोग को और अधिक प्रमाणित करता है।
- हाल ही में खोजे गए **गुडनापुर शिलालेख में** कहा गया है कि मौर्यशर्मा के दादा और गुरु वीरशर्मा थे।

धर्म और समाज:

- कदंब वंश **वैदिक हिंदू धर्म** का अनुयायी था ।
- कदंब साम्राज्य के संस्थापक मयूरशर्मा जन्म से **ब्राह्मण** थे, लेकिन बाद में उनके उत्तराधिकारियों ने अपनी क्षत्रिय स्थिति को दर्शाने के लिए अपना उपनाम बदलकर **वर्मा रख लिया।**
- कहा जाता है कि मयूरशर्मन ने अठारह **अश्वमेध** किए और ब्राह्मणों को अनेक गाँव दान में दिए। कदंब राजा कृष्ण वर्मा ने भी **अश्वमेध** किया था ।
- अश्वमेध यज्ञों ने उनकी स्थिति को वैध बनाया, उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया, तथा पुरोहित वर्ग की आय में भारी वृद्धि की।
- इस प्रकार, ब्राह्मण कृषकों की कीमत पर एक महत्वपूर्ण वर्ग के रूप में उभरे, जिनसे वे सीधे कर वसूलते थे। राजा द्वारा अपनी प्रजा से वसूले गए करों का एक बड़ा हिस्सा उन्हें उपहार के रूप में भी मिलता था।
- गोवा क्षेत्र पर शासन करने वाले कदंबों के छठी शताब्दी के एक शिलालेख में ब्राह्मण दान-प्राप्तकर्ता को वन क्षेत्र के एक टुकड़े को साफ करके उस पर खेती करने के लिए मजदूर लगाने का अधिकार दिया गया था। इसमें तटीय भूमि के एक हिस्से के पुनर्ग्रहण और समुद्री जल को बांधकर उसे चावल के खेतों में बदलने का भी उल्लेख है।
- **दिवाबरसी** नाम की एक कदंब रानी ने अपने नाबालिग बेटे के वयस्क होने तक शासन किया। उसने भी **भूमि दान किया।**
- **तालगुंडा का शिलालेख भगवान शिव** के आह्वान से शुरू होता है , जबकि हल्मिडी और बनवासी शिलालेख **भगवान विष्णु** के आह्वान से शुरू होते हैं ।
- **कदंबों द्वारा निर्मित मधुकेश्वर मंदिर को** उनका पारिवारिक देवता माना जाता है।
- कुडालूर, सिरसी अभिलेख जैसे कई अभिलेखों में विद्वान **ब्राह्मणों** के साथ-साथ **बौद्ध विहारों को दिए गए अनुदानों** का उल्लेख है ।
- कदंबों ने **जैन धर्म को** भी संरक्षण दिया ।
- उनके शिलालेखों में विभिन्न जैन संप्रदायों जैसे निर्ग्रन्थ, श्वेतापत, यापनीय और कूर्चक का उल्लेख है।
- बाद के कई कदंब राजाओं ने जैन धर्म अपना लिया और अनेक जैन बसादियों (मंदिरों) का निर्माण कराया जो बनवासी, बेलगाम, मैंगलोर और गोवा में फैले हुए हैं।

- राजा ककुत्स्थवर्मन का हाल्सी अनुदान जिनेन्द्र (जिनों के स्वामी) के आह्वान से शुरू होता है, और इस स्थान पर एक जैन मंदिर की उपस्थिति का सुझाव देता है।
- राजा मृगेश्वरवर्मन द्वारा जैन प्रतिष्ठानों के पक्ष में कई अनुदान भी दिए गए थे।
  - उसी राजा के बनवासी शिलालेख में एक जैन तीर्थस्थल के पक्ष में भूमि अनुदान का उल्लेख है, जिसका उपयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया गया था - मंदिर की सफाई, प्रतिमा पर घी का अभिषेक, पूजा और मरम्मत, तथा प्रतिमा को फूलों से सजाने के लिए।
  - इस राजा के एक अन्य बनवासी अनुदान में तीन लाभार्थियों के पक्ष में **अनुदान दर्ज है -**
- a temple of Jinendra at Paramapushkala,
- the sangha of the Shvetapata-mahashramanas and
- the Nirgrantha-mahashramanas.
  - **ऐसा प्रतीत होता है कि जिनेन्द्र मंदिर दिगम्बर** और **श्वेताम्बर** की संयुक्त संपत्ति थी ।
- रविवर्मन के शासनकाल के एक शिलालेख में उल्लेख है कि अनुदान का एक हिस्सा पलाशिका में भगवान जिन के आठ दिवसीय उत्सव के खर्चों को पूरा करने के लिए था, जिसमें राजा भी भाग लेते थे।
- **कदंबों ने जैनों को** भी अनुदान दिया , यद्यपि वे ब्राह्मणों को अधिक महत्व देते थे।
- कदंब राजाओं और रानियों ने साहित्य, कला और मंदिरों व शैक्षणिक संस्थानों को उदार अनुदान दिया। **आदिकवि पंपा ने** अपने लेखों में इस राज्य की बहुत प्रशंसा की है।
- कदंब वंश के राजा भी **कार्तिकेय के भक्त थे।**

वास्तुकला:

- कदंब **शैली की पहचान की जा सकती है, लेकिन इसमें चालुक्य और पल्लव शैलियों** तथा सातवाहनों की कुछ स्थापत्य परंपरा के साथ कुछ समानताएं हैं ।
- उनकी वास्तुकला की सबसे प्रमुख विशेषता उनका **शिकारा है जिसे कदंब शिकारा** कहा जाता है ।
- यह शिकारा **पिरामिड के आकार का है और शीर्ष पर** एक स्तूपिका या कलश के साथ बिना किसी सजावट के सीढ़ियों के रूप में ऊपर की ओर उठता है ।
- शिकारा की वास्तुकला का उपयोग कई सदियों बाद **डोड्डागड्डावल्ली होयसला मंदिर और हम्पी के महाकूट मंदिरों में किया गया है।**
- मंदिरों में **छिद्रित स्क्रीन खिड़कियों का** उपयोग किया जाता है , जो वास्तुकला और मूर्तिकला में दिखाई देता है, तथा कदम्बों ने बाद की चालुक्य-होयसल शैली की नींव रखने में योगदान दिया।
- बनवासी में मधुकेश्वर **मंदिर (शिव मंदिर) का** निर्माण कदंबों ने 10वीं शताब्दी में करवाया था। पत्थर की चारपाई पर अद्भुत नक्काशी है।
- **डोड्डागड्डावल्ली होयसला मंदिर, हम्पी में महाकूट मंदिर, बनवासी में मधुकेश्वर (भगवान शिव) मंदिर** उल्लेखनीय हैं।

कदंब वंश का पतन

- सांगोली शिलालेख के अनुसार , **519 में रविवर्मा** की मृत्यु के बाद उनके शांतिपूर्ण पुत्र **हरिवर्मा** ने उनका स्थान लिया ।
- बन्नाहल्ली प्लेटों के अनुसार , हरिवर्मा की हत्या लगभग 530 में हुई थी, जब त्रिपर्वत शाखा के पुनर्जीवित **कृष्णवर्मा द्वितीय** (सिंहवर्मा के पुत्र) ने बनवासी पर आक्रमण किया, जिससे राज्य की दो शाखाओं का एकीकरण हो गया।
- चालुक्य , जो कदंबों के सामंत थे और बादामी से शासन करते थे, ने 540 में पूरे राज्य पर कब्जा कर लिया ।
- इसके बाद, कदंब लोग बादामी चालुक्यों के जागीरदार बन गए ।
- बाद में, राजवंश विभिन्न सहायक शाखाओं में विभाजित हो गया, और गोवा, हलासी, हंगल, वैनाड, बेलूर, बांकापुरा, बंदलाइक, चंदावर और जयंतीपुरा पर शासन किया।

भारत पर अरब और तुर्की आक्रमण

- **712 ई. में सिंध में अरब शासन स्थापित हो गया** । इसके परिणामस्वरूप 1100-1300 ई. के दौरान उत्तर भारत में कई परिवर्तन हुए।
- इन परिवर्तनों का कारण मुख्यतः उत्तर भारत में बढ़ते तुर्की हमलों को माना जा सकता है।
- उमय्यदों **ने 661-750 ईस्वी के काल में अरब भूमि पर शासन किया** । उनके शासन के **बाद 750 ईस्वी में अब्बासियों ने शासन किया, जिन्होंने अरब प्रशासन में सैन्य प्रभुत्व को बदल दिया। इस अंतिम महान खलीफा हारुन अल रशीद** के उत्तराधिकार के लिए हुए गृहयुद्धों ने अब्बासिद साम्राज्य की नींव हिला दी।
- अब्बासिद साम्राज्य के इस क्रमिक पतन ने 10वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान कई छोटे स्वतंत्र राज्यों, **ज़ाहिरीद, सफ़वीद, बुवैहिद, क़ारा-ख़ानिद और समानिद के** उदय का मार्ग प्रशस्त किया। ख़लीफ़ा अल-मुतासिम (833-842 ईस्वी) के संरक्षण के कारण तुर्की **दास प्रशासन और सेना में प्रमुखता से उभरे ।**

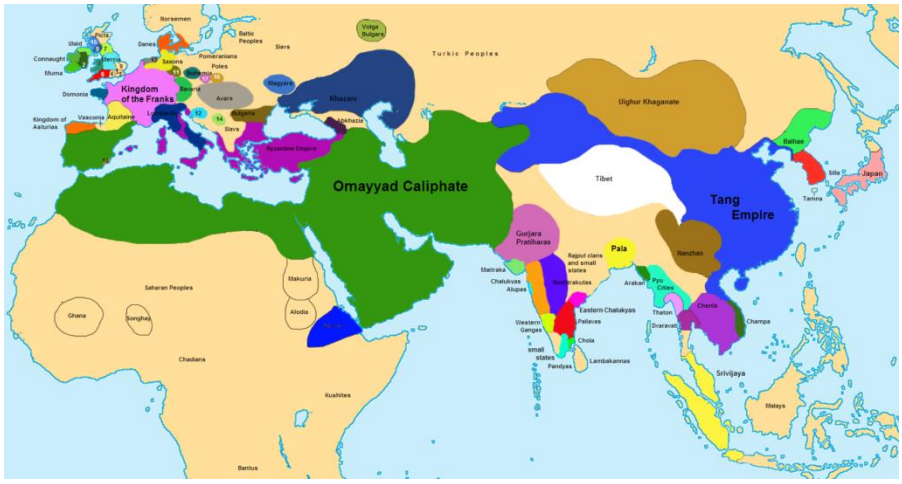

- ये तुर्क अपने साथ लूट का माल लेकर आते थे। उनके युद्ध का मुख्य तरीका **तेज़ गति से आगे बढ़ना और पीछे हटना था, साथ ही बिजली की गति से हमले भी** । यह तरीका काफी हद तक सफल रहा क्योंकि वे घोड़ों का इस्तेमाल करते थे।
- भारत में, उत्तरी सीमाओं पर तुर्कों के आगमन को नजरअंदाज कर दिया गया क्योंकि गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के विघटन के कारण उत्तर भारत में शक्ति संघर्ष बढ़ रहा था।

ग़ज़नवी

- **यह राज्य तुर्की आदिवासियों के** स्थायी समाजों की संस्थाओं में सांस्कृतिक अनुकूलन का परिणाम था । **मंगोलों** के संपर्क में आने के बाद तुर्की संगठन और दिशा में उल्लेखनीय परिवर्तन देखे गए ।
- 10वीं शताब्दी में, ये ग़ज़नवी मध्य एशिया में एक प्रमुख शक्ति बन गए और मध्य एशियाई जनजातियों से इस्लाम के रक्षक बन गए।
- इस दौरान सैनिकों का एक नया वर्ग उभरा जिसे **गाज़ी** के नाम से जाना जाता था । **गाज़ी एक मिशनरी होने के साथ-साथ एक योद्धा भी थे क्योंकि उनकी लड़ाई तुर्कों के खिलाफ थी** , जिनमें से ज़्यादातर प्रकृति की शक्तियों के उपासक थे और मुसलमानों की नज़र में विधर्मी थे। गाज़ी एक सहायक इकाई के रूप में काम करते थे और छापों के दौरान लूटपाट करके अपनी तनख्वाह की भरपाई करते थे।
- **अलप्तगीन** , समानी गवर्नर और तुर्की मूल का गुलाम, **ने गजनी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।**
- **अबू मंसूर सबुक्तगीन (942-997 ई.) अलप्तगीन का गुलाम था और उसने उसकी बेटी से शादी की थी** । बाद में उसने पतनशील अब्बासिद खिलाफत के खंडहरों पर **ग़ज़नवी राजवंश की स्थापना की ।**
- गजनवी वंश महमूद गजनवी (998-1030 ई.) **के शासनकाल में प्रमुखता से उभरा।**

महमूद ग़ज़नी

- मध्यकालीन इतिहासकारों द्वारा महमूद गजनवी को एक महान इस्लामी नायक माना जाता है, क्योंकि उन्होंने इस क्षेत्र पर आक्रमण करने वाले **मध्य एशियाई जनजातियों के लगातार हमलों से इस्लाम की रक्षा और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।**

- **वह ग़ज़नवी वंश के संस्थापक सबुक्तगीन का पुत्र था**। ग़ज़नी के युद्ध में इस्माइल को हराने के बाद महमूद ग़ज़नी ने अपने पिता का शासन संभाला। महमूद ग़ज़नी ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया।
- **उसने स्वयं को समानी वंश के संरक्षण से मुक्त घोषित कर दिया।** महमूद गजनवी के शासनकाल में गाजी भावना का कई गुना उत्थान हुआ। वह **ईरानी भावना के पुनर्जागरण** के लिए उत्तरदायी था । **महमूद गजनवी को भारत में दिल्ली सल्तनत का पूर्ववर्ती माना जाता है** ।

ईरानी पुनर्जागरण

- स्वाभिमानी **ईरानियों ने अरबी भाषा और संस्कृति को कभी स्वीकार नहीं किया था** । **समानी राज्य ने भी फ़ारसी भाषा और साहित्य को प्रोत्साहित किया था।**
- **फ़िरदौसी के शाहनामा** के साथ ईरानी पुनर्जागरण का उच्चतम स्तर पहुँच गया । ईरानी देशभक्ति का पुनरुत्थान हुआ और फ़ारसी भाषा और संस्कृति अब ग़ज़नवी साम्राज्य की भाषा और संस्कृति बन गई।
- **इस अवधि के दौरान, तुर्क न केवल इस्लामीकृत हो गये बल्कि फारसीकृत भी हो गये।**

भारतीय आक्रमण

- महमूद ग़ज़नी ने **भारतीय राज्यों पर बार-बार आक्रमण किया और भारतीय शहरों और मंदिरों को लूटा** । वह **भारत से भारी मात्रा में धन-संपत्ति लूटकर ले गया और हज़ारों की संख्या में उसके लोगों को मार डाला।**
- उसने शाही राज्य को नष्ट कर दिया, जो विदेशी आक्रमणकारियों से उत्तरी सीमाओं की रक्षा कर रहा था। महमूद ने पंजाब और अफ़ग़ानिस्तान को भी ग़ज़नी साम्राज्य का हिस्सा बना लिया। लेकिन उसने भारत में इस्लामी शासन स्थापित नहीं किया।

गजनी के युद्ध

- महमूद गजनवी के आक्रमणों और युद्धों ने भारत में दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- **पेशावर का युद्ध** 27 नवंबर 1001 को महमूद गजनवी के नेतृत्व वाली गजनवी सेना **और जयपाल की हिंदू शाही सेना** के बीच पेशावर के पास लड़ा गया था। यह महमूद गजनवी के आक्रमणों की श्रृंखला का एक हिस्सा था जो उसकी वार्षिक विशेषता बन गई थी। जयपाल को महमूद गजनवी ने पराजित कर बंदी बना लिया।
- 1015 में महमूद ने कश्मीर पर असफल आक्रमण किया।
- 1018 में उसने **मथुरा पर आक्रमण किया** और वहां के शासकों के गठबंधन को पराजित किया तथा चंद्रपाल नामक शासक की हत्या कर दी।
- 1021 में महमूद ने **चंदेल राजा गौड़ के विरुद्ध कन्नौज के राजा का समर्थन किया** , जो पराजित हुआ। उसी वर्ष शाही त्रिलोचन पाल राहिब में मारा गया और उसका पुत्र भीम पाल उसका उत्तराधिकारी बना। लाहौर (आधुनिक पाकिस्तान) पर महमूद ने कब्ज़ा कर लिया।
- **महमूद ने ग्वालियर पर घेरा डाला** जहां उसे 1023 में कर दिया गया।
- **महमूद ने 1025 में सोमनाथ पर आक्रमण किया** और उसका शासक भीमदेव प्रथम भाग गया। अगले वर्ष, उसने सोमनाथ पर कब्ज़ा कर लिया और भीमदेव के विरुद्ध कच्छ की ओर कूच कर दिया।
- महमूद ने 1025 में जूद के **जाट लोगों पर हमला किया ।**

सोमनाथ मंदिर पर छापे

- भारत एक ऐसा समृद्ध देश था जो मध्य एशिया की बंजर भूमि से हमेशा समृद्ध और आकर्षक प्रतीत होता था। अपनी **निरंतर लूटपाट जारी रखने के लिए,** महमूद गजनवी ने बार-बार भारत को अपने खाली खजाने को भरने के लिए एक जगह के रूप में देखा। हिंदू मंदिरों पर इन छापों ने न केवल उसे भारी मात्रा में धन-संपत्ति प्रदान की, बल्कि एक कट्टर इस्लाम-अनुयायी और मूर्तिभंजक के रूप में उसकी स्थिति को भी मजबूत किया।
- सोमनाथ मंदिर की धन-संपदा और प्रतिष्ठा जगजाहिर थी। **वेरावल बंदरगाह पर व्यापार की मुख्य वस्तु घोड़े थे,** जिन्होंने संभवतः महमूद गजनवी के लिए सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण करने का एक अतिरिक्त कारण बनाया होगा।

- 1026 में, महमूद गजनवी ने सामंथा मंदिर पर हमला किया, मंदिर को अपवित्र किया और सोमनाथ मंदिर में स्थापित **शिवलिंग की मूर्ति को तोड़ दिया । महमूद गजनवी सोमनाथ मंदिर पर हमले से प्राप्त 20 लाख दीनार की लूट अपने साथ ले गया।**
- महमूद के भारत पर बाद के आक्रमणों का उद्देश्य उत्तर भारत के समृद्ध मंदिरों और नगरों को लूटना था ताकि मध्य एशिया में अपने शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा जा सके। भारत में लूटपाट के लिए गाज़ी उसके काम आए। **महमूद ने इस्लाम की महिमा के लिए एक महान शिकन या 'मूर्तियों को नष्ट करने वाला' होने का भी ढोंग रचा।**
- पंजाब और मुल्तान पर गजनवी विजय ने उत्तर भारत की राजनीतिक स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया, क्योंकि तुर्क भारत के उत्तर-पश्चिम की रक्षा करते हुए पर्वत श्रृंखलाओं को पार कर चुके थे।
- **मुहम्मद की मृत्यु के बाद सेल्जुक साम्राज्य का उदय हुआ । सेल्जुक साम्राज्य ने ग़ज़नवी साम्राज्य का विस्तार ग़ज़नी और पंजाब तक सीमित कर दिया ।** हालाँकि आक्रमण अधिक हुए, लेकिन उनमें से कोई भी पहले वाले आक्रमणों जितना ख़तरनाक और शक्तिशाली नहीं था। इस बीच, कई छोटे राज्यों के उदय के साथ उत्तर भारत की स्थिति भी बदल गई।

मुहम्मद गजनी के आक्रमण का महत्व

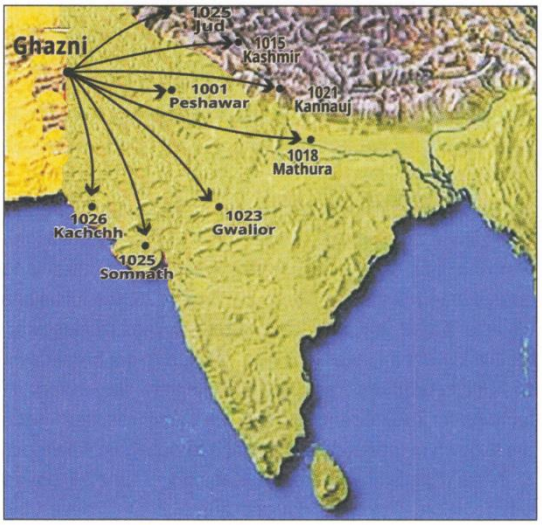

- **भारत की सैन्य कमजोरी का प्रदर्शन।**
- **भारत की राजनीतिक एकता का प्रदर्शन।**
- भारत की आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई क्योंकि महमूद देश से भारी धन-संपत्ति बाहर ले गया।
- मूर्तियों और मंदिरों के विनाश के कारण भारतीय कला और मूर्तिकला को भारी क्षति पहुंची।
- भारत को विदेशी आक्रमणों के लिए खोलना।
- इस्लाम के लिए भारत में पैर जमाने का अवसर
- हिंदुओं में मुसलमानों के प्रति घृणा और भय की भावना का बढ़ना।
- सूफी कहलाने वाले मुस्लिम संतों के आगमन से हिंदू-मुस्लिम संपर्क को बढ़ावा मिला।

अल बिरुम

- अल-बिरूनी एक ईरानी विद्वान थे , जिन्होंने भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का अध्ययन करने के लिए **लगभग 1017 ई. में भारत का दौरा किया था ।**
- वह कुलीन वर्ग से बहुत अच्छे से जुड़े हुए थे और कुलीन वर्ग और शासकों द्वारा की गई कुछ खोजों को उजागर करने के लिए अनुसंधान और अध्ययन करने के लिए उनसे संपर्क किया जाता था।
- अल-बिरूनी को मध्यकालीन इस्लामी युग के महानतम विद्वानों में से एक माना जाता है और वे भौतिकी, गणित, खगोल विज्ञान और प्राकृतिक विज्ञानों में पारंगत थे, तथा उन्होंने एक इतिहासकार, कालक्रम विज्ञानी और भाषाविद् के रूप में भी अपनी अलग पहचान बनाई।
- **अल-बिरूनी की पुस्तक 'तहकीक-ए-हिंद'** समकालीन भारत की आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिस्थितियों की जानकारी का एक अत्यंत मूल्यवान स्रोत है। उन्होंने हिंदुओं के धार्मिक ग्रंथों, दार्शनिक और धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करने के लिए भारत में संस्कृत का अध्ययन किया।

अल बिरूनी का भारत पर विवरण

- **धार्मिक परिस्थितियाँ:** धार्मिक ग्रंथों को पढ़ने और उनकी व्याख्या करने का एकमात्र अधिकार ब्राह्मणों के पास था। भारत में मूर्ति पूजा प्रचलित थी।
- **राजनीतिक परिस्थितियाँ:** अल-बरूनी के अनुसार, भारत एक खंडित राज्य था। यह राजवंशों के बीच एक-दूसरे से ईर्ष्या और आपसी कलह के कारण विभाजित था। एक और महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह था कि भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना का अभाव था।

- **कानूनी व्यवस्था:** आपराधिक व्यवस्था सुधारात्मक थी और ब्राह्मणों जैसे समाज के कुछ वर्गों को मृत्युदंड से छूट दी गई थी।
- **आर्थिक स्थितियाँ:** भारत में जीवन स्तर ईरान जैसे अन्य स्थानों की तुलना में कहीं बेहतर था। राजा या शासक सभी भूमि का स्वामी नहीं था। हालाँकि वह कर वसूलता था और अपनी प्रजा की आवश्यकताओं के अनुसार उसका विनियोजन करता था।
- **दार्शनिक परिस्थितियाँ:** अल बिरूनी भारतीय दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे। भगवद गीता, उपनिषद जैसे धार्मिक ग्रंथ उन पर मोहित थे।
- **लिखित इतिहास:** जैसा कि अल बिरूनी ने स्पष्ट किया है, भारतीयों का लिखित इतिहास बहुत कम था।
- **सामाजिक परिस्थितियाँ:** अल-बरूनी के अनुसार, भारतीय समाज एक जाति-आधारित समाज था। सामाजिक रूप से यह समाज अत्यंत जीवंत था और भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव प्रमुख थे। उस समय भारत में बाल विवाह, विधवा विवाह पर प्रतिबंध, सती प्रथा और जौहर प्रथाएँ प्रचलित थीं।
- **भारत का विज्ञान:** अलबरूनी भारत और हिंदू वैज्ञानिक साहित्य का अध्ययन करने वाले पहले विद्वानों में से एक थे। अलबरूनी खगोल विज्ञान, मौसम विज्ञान, अंकगणित और भूगोल के अधिकांश भारतीय ज्ञान से प्रभावित थे, जिसका उल्लेख उन्होंने किताब-अल-हिंद में किया है। उन्होंने भारतीय खगोल विज्ञान के सभी पाँच सिद्धांतों पर चर्चा की।

स्वर्ग

- **फ़िरदौसी (940-1020 ई.) फ़ारसी कवि थे जिन्होंने शाहनामा** लिखा था। शाहनामा 977 और 1010 ई. के बीच लिखा गया एक लंबा महाकाव्य है और ईरान का राष्ट्रीय महाकाव्य है। शाहनामा में लगभग 50,000 दोहे हैं और इसे किसी एक कवि द्वारा लिखा गया अब तक का सबसे बड़ा महाकाव्य माना जाता है।
- शाहनामा **ईरान के प्रागितिहास और इतिहास का कालानुक्रमिक विवरण देता है**, जो विश्व के निर्माण और सभ्यता के आगमन से शुरू होकर फारस पर इस्लामी विजय के साथ समाप्त होता है।

महमूद गजनवी का मूल्यांकन

- महमूद ग़ज़नी वह व्यक्ति था जो राजनीतिक और सैन्य दृष्टि से **दिल्ली सल्तनत का अग्रदूत था। वह मुल्तान पर आक्रमण करने वाला पहला तुर्क था और भारत में घुसपैठ की**। बाद में उसने **गंगा-यमुना दोआब में भी घुसपैठ** की।
- वह पहला तुर्क था जिसने मंदिरों के महत्व और उनमें संचित अपार धन-संपत्ति को समझा। वह पहला व्यक्ति था जिसने मंदिरों की संपत्ति का इस्तेमाल अपने साम्राज्य को जीतने और मजबूत करने के लिए किया।
- **1010 से 1026 तक; उसके आक्रमण थानेश्वर, मथुरा, कन्नौज और सोमनाथ जैसे मंदिर-नगरों की ओर निर्देशित थे।** इससे भारतीय राज्यों का पतन हुआ क्योंकि वे अपनी अर्थव्यवस्था के लिए मंदिरों पर काफी हद तक निर्भर थे।
- अंततः इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय प्रतिरोध टूट गया और तुर्कों के सामने उसकी कमज़ोरी उजागर हो गई। महमूद ग़ज़नी के इन आक्रमणों ने तुर्की विजय के लिए और मार्ग प्रशस्त किया और अंततः दिल्ली सल्तनत की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

12वीं शताब्दी में परिवर्तन

- 12वीं शताब्दी के मध्य में, तुर्की आदिवासियों के एक अन्य समूह ने, जो आंशिक रूप से बौद्ध और आंशिक रूप से मूर्तिपूजक थे, **सेल्जुक तुर्कों की शक्ति को चकनाचूर कर दिया। ईरान स्थित ख्वारिज्मी साम्राज्य और उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान में घूर पर आधारित घुरिद साम्राज्य,** एक-दूसरे के विरुद्ध संघर्ष करते हुए सत्ता में आए।
- पूर्व के शक्तिशाली होने के कारण घुरिड्स के पास भारत की ओर विस्तार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा।

Muhammad Ghori

- **1173 ई. में शहाबुद्दीन मुहम्मद उर्फ़ मुहम्मद गोरी ग़ज़नी की गद्दी पर बैठा**। कुछ ही समय में मुहम्मद गोरी को यह एहसास हो गया कि मध्य एशिया की तुलना में भारत पर आक्रमण करके उसे कहीं अधिक लाभ हो सकता है। इसलिए उसने अपनी विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं को भारत की ओर मोड़ दिया।
- मुहम्मद गोरी की उपाधियों में **बुर्शिकन (मूर्ति तोड़ने वाला) और जहान-ए-सोज़ (दुनिया में आग लगाने वाला) शामिल थे।** उसका मुख्य उद्देश्य **भारत में इस्लाम का प्रचार करना था।**

- **भारत में एक साम्राज्य स्थापित करने के** उद्देश्य से उनके अभियान सुनियोजित थे। उन्होंने भारत में विजित क्षेत्रों पर शासन करने के लिए सेनापति छोड़े। **उनके आक्रमणों के परिणामस्वरूप दिल्ली सल्तनत की स्थायी स्थापना हुई।**

पंजाब और सिंध विजय

- **मुहम्मद गोरी ने भारत में** अपना पहला सफल अभियान 1175 ई. में मुल्तान के विरुद्ध चलाया। इसी अभियान में उसने **भट्टी** राजपूतों **से उच्छ पर कब्ज़ा कर लिया ।**
- मुहम्मद गोरी ने पंजाब में ग़ज़नवी साम्राज्य के विरुद्ध अभियान चलाया और क्रमशः 1179-80 ई. और 1186 ई. में पेशावर और लाहौर पर विजय प्राप्त की। **1190 ई. तक मुल्तान, सिंध और पंजाब मुहम्मद गोरी के नियंत्रण में थे।**
- जब गौरी मुल्तान पर विजय प्राप्त कर रहा था, **पृथ्वीराज** अजमेर का राजा बना। इस युवा शासक ने विजय अभियान की शुरुआत की। उसने बुंदेलखंड क्षेत्र पर आक्रमण किया और महोबा के निकट एक युद्ध में चंदेल शासकों को पराजित किया। इसके बाद उसने गुजरात पर आक्रमण किया, लेकिन गुजरात के शासक भीम द्वितीय, जिसने पहले मुइज़ुद्दीन मुहम्मद को पराजित किया था, ने पृथ्वीराज को भी पराजित कर दिया। इससे पृथ्वीराज को अपना ध्यान पंजाब और गंगा घाटी की ओर मोड़ना पड़ा।

तराइन का प्रथम युद्ध

- **तराइन का पहला युद्ध 1191 ई. में मुहम्मद गौरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच लड़ा गया था।** इस युद्ध का कारण मुहम्मद गौरी द्वारा भटिंडा किले पर कब्ज़ा था।
- पृथ्वीराज चौहान ने भटिंडा की ओर कूच किया और बीच में तराइन के पास मुहम्मद गौरी की सेना से भिड़ गए। तराइन के युद्ध में भीषण युद्ध हुआ और **पृथ्वीराज चौहान विजयी हुए ।**
- पृथ्वीराज चौहान तराइन के प्रथम युद्ध में गौरी को हिंदुस्तान की ओर बढ़ने से रोकने में सफल रहे।

तराइन का दूसरा युद्ध

- **तराइन के प्रथम युद्ध में मुहम्मद गौरी की अपमानजनक हार के बाद उसने पृथ्वीराज चौहान से बदला लेने की योजना बनानी शुरू कर दी।** लाहौर पहुँचकर मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान के पास एक दूत भेजकर उसकी अधीनता माँगी।
- पृथ्वीराज चौहान ने सभी राजपूत शासकों से मुहम्मद गौरी के विरुद्ध सहायता करने की अपील की, लेकिन **सभी ने इनकार कर दिया।**
- तराइन में भीषण युद्ध हुआ। मुहम्मद गोरी अपनी पिछली गलतियों से बहुत कुछ सीख चुका था और अब राजपूतों की अनुशासित सेना का मुकाबला करने में सक्षम था। उसने अपनी सेना को पाँच टुकड़ियों में बाँट दिया और राजपूतों को धोखे से पीछे और बगल से घेर लिया। इससे अनुशासित राजपूत सेना में भगदड़ मच गई और वे पीछे हट गए।
- बड़ी संख्या में भारतीय सैनिक मारे गए। **पृथ्वीराज बच निकले लेकिन सरस्वती के पास उन्हें पकड़ लिया गया।** तुर्की सेना ने अजमेर पर हमला कर दिया और उस पर कब्ज़ा कर लिया। **पृथ्वीराज को कुछ समय के लिए अजमेर पर शासन करने की अनुमति दी गई** । इसके तुरंत बाद, पृथ्वीराज को **षड्यंत्र के आरोप में फाँसी दे दी गई और उनके पुत्र को गद्दी पर बैठाया गया।**
- विद्रोह के बाद, गौरी की सेना ने अजमेर पर पुनः कब्ज़ा कर लिया और एक तुर्की सेनापति को नियुक्त किया। **पृथ्वीराज का पुत्र रणथंभौर चला गया और एक नए शक्तिशाली चौहान साम्राज्य की स्थापना की।**
- तराइन के दूसरे युद्ध में विजय से मुहम्मद गौरी का मनोबल बढ़ा और उसने इस विजय के बाद चंदावर के युद्ध में जयचंद्र को हराया।

मुहम्मद गौरी का मूल्यांकन

- मुहम्मद गौरी के भारत में प्रवेश का उद्देश्य विजय के लिए धन अर्जित करना और अपने साम्राज्य को मजबूत करना था।
- मुहम्मद गौरी के आक्रमणों का प्रारंभिक चरण भारत के प्रवेशद्वार पंजाब और सिंध पर नियंत्रण पाने के सैन्य उद्देश्य से था।

- रणनीति बनाने में उनकी बुद्धिमत्ता को इस बात से समझा जा सकता है कि उन्होंने सिंधु के मैदानों में प्रवेश करने के लिए **गोमेल दर्रे** से जाने का फैसला किया , न कि उत्तर में स्थित अधिक प्रचलित खैबर दर्रे से। यह एक बहुत आसान रास्ता था जिसे उनके अधिकांश पूर्ववर्तियों ने नज़रअंदाज़ कर दिया था। **1182 ई. तक पेशावर, उच्छ, मुल्तान और लाहौर उनके साम्राज्य का हिस्सा बन गए।**
- उसके विजय अभियान की अगली कड़ी राजपूत राज्य थे, जिन पर उसने बड़े पैमाने पर सैन्य अभियानों के ज़रिए थोड़े ही समय में कब्ज़ा कर लिया। इस कदम के साथ ही मुहम्मद गोरी का अब गंगा के मैदानी इलाकों के कुछ हिस्सों पर भी नियंत्रण हो गया।
- चौहान राजपूतों को मुहम्मद गोरी के हाथों भारी क्षति उठानी पड़ी क्योंकि वे अजमेर से लेकर दिल्ली तक के क्षेत्र पर शासन करते थे, जो कि अगली प्राकृतिक सीमा थी। 1191 ई. में मुहम्मद गोरी ने भटिंडा की घेराबंदी कर ली जिससे गोरी सेना का मनोबल बढ़ा और उन्होंने चौहानों की टुकड़ियों पर आक्रमण कर दिया, लेकिन तराइन के प्रथम युद्ध में उन्हें हार का सामना करना पड़ा।
- अगले वर्ष 1192 ई. में, मुहम्मद गोरी अपनी पिछली हार का बदला लेने के लिए एक बड़ी सेना के साथ वापस लौटा। तराइन में पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी की सेनाओं के बीच भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी की जीत हुई और उसने पृथ्वीराज चौहान को अपमानजनक पराजय दी।
- भारत में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र पर कब्ज़ा करने के बाद, मुहम्मद गोरी मध्य एशिया में अपनी कमज़ोर होती स्थिति से निपटने के लिए मध्य एशिया में अपनी परियोजनाओं पर लौट आया। उसने कुतुबुद्दीन ऐबक के अधीन एक बड़ी सेना लेकर इंद्रप्रस्थ (अब दिल्ली) छोड़ दिया। यहीं से भारत में दिल्ली सल्तनत के शासन की शुरुआत हुई।

ग़ज़नवी राजवंश: दिल्ली सल्तनत के गठन में भूमिका

- **भारत पर तुर्की विजय ने भारत के लोगों की राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में आमूल-चूल परिवर्तन ला** दिया।
- सबसे महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष राजनीतिक परिवर्तन **भारत में सामंती, बहु-केंद्रित शासन-व्यवस्था के स्थान पर एक केंद्रीकृत राज्य की स्थापना थी।** इस नई व्यवस्था में **राजा को व्यावहारिक रूप से असीमित शक्तियाँ प्राप्त थीं**। दिल्ली सल्तनत की व्यवस्था पहली ऐसी व्यवस्था थी जिसने तुर्की केंद्रीकृत शासन-व्यवस्था को अभिव्यक्त किया।
- तुर्कों द्वारा लाया गया सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक परिवर्तन **इक्ता प्रणाली की शुरूआत थी।**
- सल्तनत काल में राजस्व संग्रह का मुख्य आधार **इक्ता** था । इक्ता, हस्तांतरणीय राजस्व व्यवस्था, सबसे पहले अब्बासिद शासित क्षेत्रों में प्रचलन में देखी गई और सेल्जुक शासकों द्वारा लोकप्रिय बनाई गई, जिन्होंने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इन्हें अद्यतन किया।
- **इक्ता प्रणाली के अंतर्गत राजा के अधिकारियों को राजस्व प्राप्त करने और अपनी सेना के रखरखाव के लिए क्षेत्र सौंपे जाते थे।**
- **मुक्ति ऐसी उपाधि थी जो ऐसे अधिकारों के धारकों को दी जाती थी**। पिछली व्यवस्था के विपरीत, जिसमें भूमि अनुदान प्राप्तकर्ताओं को स्वामित्व के अधिकार प्राप्त होते थे, तुर्की इक्ता धारकों को नियमित रूप से स्थानांतरित किया जाता था और उनका कार्यकाल सामान्यतः 3 से 4 वर्ष का होता था।
- तुर्कों ने **केंद्रीकरण और इक्ता प्रणाली के प्रयोग द्वारा भारतीय प्रशासन के एकीकरण** का मार्ग प्रशस्त किया । इक्ता प्रणाली ने समनुदेशिती को केंद्रीय सत्ता पर पहले की भारतीय राजनीति की तुलना में कहीं अधिक हद तक निर्भर बना दिया।
- इससे तुर्कों को प्रमुख नगरों और बड़े मार्गों को दिल्ली सरकार के नियंत्रण में लाकर अखिल भारतीय प्रशासन स्थापित करने में मदद मिली। इक्ता व्यवस्था ने एक निरंकुश राज्य के लिए आधार प्रदान किया और कृषि अधिशेष को निकालने के साधन के रूप में कार्य किया।
- तुर्क अपने साथ **शहरों में रहने की परंपरा लेकर आए थे और ग्रामीण इलाकों की बड़ी मात्रा में अतिरिक्त उपज राज्य करों के रूप में शहरों में पहुँचती थी जिससे शहरी आर्थिक विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।** तुर्क अपने साथ फ़ारसी पहिया भी लाए जिससे कृषि उत्पादन बढ़ाने में काफ़ी मदद मिली।

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु

- **उत्बी** महमूद गजनवी का दरबारी इतिहासकार था।
- **अल-बिरूनी** पहला मुसलमान था जिसने पुराणों का अध्ययन किया।
- महमूद गजनवी द्वारा भारत में ढाले गए सिक्कों के आगे और पीछे क्रमशः अरबी और संस्कृत में अंकन किया गया था।
- **गोरी द्वारा जारी किये गये सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की छवि अंकित थी, जबकि सिक्के के विपरीत तरफ अरबी भाषा में कलमा अंकित था।**

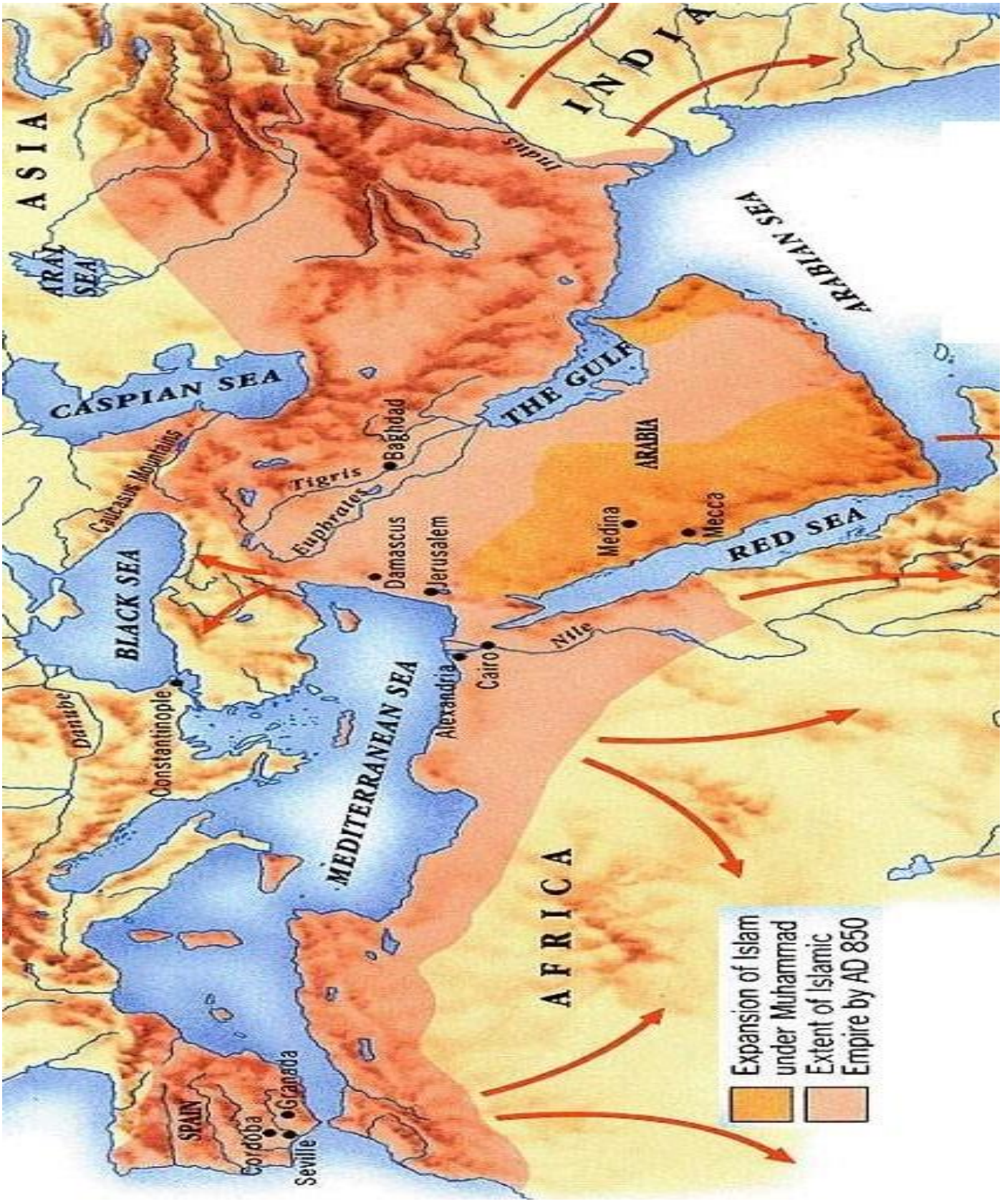

8वीं से 15वीं शताब्दी के दौरान प्रमुख विकास

- 8वीं से 12वीं शताब्दी ईसवी तक का काल भारतीय इतिहास के प्राचीन और मध्यकालीन चरण के बीच का **अंतराल था।**
- इस अवधि में **व्यापार और वाणिज्य में गिरावट, राजनीति में परिवर्तन, धर्म-केंद्रित बस्तियां और बड़े शहरी केंद्रों का पतन हुआ।**
- व्यापार और वाणिज्य में गिरावट का कारण **स्थलीय व्यापार मार्गों में व्यवधान** और **भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार, रोमन साम्राज्य का पतन** माना जा सकता है। मध्य एशिया के स्थलीय मार्ग भाड़े के सैनिकों से त्रस्त थे, जो इन क्षेत्रों से गुजरने वाले परिवहन कारवां को लूटते और लूटते थे। मध्य एशिया में कोई केंद्रीकृत सत्ता न होने के कारण, इस क्षेत्र में सुरक्षित मार्ग प्रदान करना कठिन हो गया। इसके परिणामस्वरूप स्थलीय मार्गों के माध्यम से बड़े पैमाने पर व्यापार बाधित हुआ।
- **पहले केंद्रीकृत राजनीति अब स्थानीय समाज में बदल गई** । व्यापार में कमी के कारण गाँवों पर केंद्रीय नियंत्रण समाप्त हो गया और **बड़ी संख्या में स्वायत्त गाँवों और कस्बों का उदय हुआ।** शासक वर्गों ने ब्राह्मणों को उनके नेतृत्व को वैध बनाने के लिए बड़े-बड़े भू-भाग दिए। इसके परिणामस्वरूप ब्राह्मणों को **सामंती** **प्रभु का दर्जा** प्राप्त हो गया और उन्हें दिए गए क्षेत्रों में अपने कानून बनाने का अधिकार मिल गया। जैसे-जैसे केंद्रीय नेतृत्व कमज़ोर होता गया, ये ब्राह्मणवादी भूमि अनुदान **स्वायत्त रियासतों** के रूप में उभरे ।

धर्म

- आठवीं से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक का काल **हिंदू धर्म के पुनरुत्थान का** प्रतीक है । हिंदू धर्म के पुनरुत्थान का श्रेय **ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता के उन्मूलन और हिंदू पुरोहितों द्वारा वैश्यों और शूद्रों के प्रति दिखाई गई उदारता** को दिया जा सकता है । इसके अलावा, बुद्ध और महावीर जैसे सभी महत्वपूर्ण धार्मिक व्यक्तित्वों को ब्राह्मण **भगवान विष्णु का अवतार मानते थे । भक्ति आंदोलन, सूफी आंदोलन** जैसे कई धार्मिक आंदोलन अस्तित्व में आए जिन्होंने ब्राह्मणवादी कर्मकांडों को समाप्त करने में मदद की।
- इस युग में **बौद्ध और जैन धर्म का पतन हुआ।** उनकी विचारधाराओं को चुनौती दी गई, **मंदिरों पर कब्ज़ा किया गया और उनके भिक्षुओं को सताया गया क्योंकि वे धन के विशाल भंडार थे।** ये धर्म, प्राप्त शाही संरक्षण के आधार पर, छोटे-छोटे क्षेत्रों तक सीमित हो गए, जैसे **बौद्ध धर्म पाल शासकों के संरक्षण के कारण पूर्वी भारत तक सीमित हो गया** । जैसे-जैसे संरक्षण में गिरावट आई, वैसे-वैसे इन क्षेत्रों में धर्म का भी पतन हुआ।

बौद्ध धर्म का पतन

- मध्यकाल में, **बौद्ध धर्म पूर्वी भारत तक ही सीमित था क्योंकि पाल शासकों ने इसे संरक्षण दिया था** । पाल शक्ति का पतन बौद्ध धर्म के लिए एक आघात था।
- **बौद्ध धर्म के आंतरिक विकास ने पहली शताब्दी ईस्वी में महायान बौद्ध धर्म** को जन्म दिया, जहाँ बुद्ध को ईश्वर के रूप में पूजा जाने लगा। यह और भी विस्तृत होता गया और यह विश्वास बढ़ता गया कि उपासक जादुई शब्दों का उच्चारण करके अपनी मनोकामनाएँ पूरी कर सकता है। उनका मानना था कि कठोर जीवन और गुप्त अनुष्ठान उन्हें अलौकिक शक्तियाँ प्रदान कर सकते हैं। यह **बौद्ध धर्म के पतन** का स्पष्ट संकेत था।
- शंकराचार्य और रामानुज जैसे दार्शनिकों ने **अपने दर्शन से बौद्ध और जैन धर्म को बौद्धिक स्तर पर चुनौती दी।**

मंदिरों का महत्व

- मध्यकालीन भारत की कृषि अर्थव्यवस्था में मंदिरों का महत्वपूर्ण स्थान था। प्रारंभिक मध्यकाल में मंदिरों का महत्व और भी स्पष्ट था, क्योंकि **इस काल में भूमि अनुदान अधिक प्रचुर मात्रा में दिए जाते थे** । मंदिर शासक राज्य की शक्ति के प्रतीक बन गए। **शाही मंदिर की भव्यता जितनी अधिक होती थी, शासक वंश की राजसी गरिमा उतनी ही अधिक झलकती थी।**
- मंदिरों को करों के रूप में कृषि उपज में हिस्सा मिलता था। मंदिर सत्ता की स्वायत्त इकाइयों के रूप में कार्य करते थे और इस प्रकार समाज पर उनका नियंत्रण था।

- **मंदिर शासकों, व्यापारियों और शिल्प संघों द्वारा दिए गए अनुदानों पर फले-फूले**। मंदिर सबसे बड़े नियोक्ता, साहूकार और उपभोक्ता बन गए। मंदिरों में **संस्कृत और तमिल साहित्य के विद्वान, शिक्षक, संगीतकार और कवि कार्यरत थे ।**
- मंदिर को धन प्रदान करने में पवित्र भोजन का आर्थिक मूल्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।
- **मंदिर साहूकारों और जमाकर्ताओं के कार्य करते थे**। शासकों, व्यापारियों और संघों द्वारा नकद और वस्तुओं के रूप में दिए गए अनुदानों से मंदिरों को उत्पादक कार्यों में पुनर्निवेश के लिए पूँजी प्राप्त होती थी। वे कृषकों, व्यापारियों और कारीगरों को ब्याज पर दी जाने वाली विभिन्न वस्तुओं के बदले ऋण देते थे। सामाजिक स्तर पर मंदिर **सभाओं और विद्यालयों जैसी गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते थे।**

धार्मिक आंदोलन

- आठवीं से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक का काल **भारत में हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और इस्लामी आंदोलनों की शुरुआत के लिए** जाना जाता है । **भक्ति आंदोलन, तंत्रवाद और सूफीवाद आंदोलन** भारत में इस युग के प्रमुख आंदोलन थे। **हिंदू धर्म के पुनरुत्थान का श्रेय भक्ति आंदोलन को दिया जा सकता है। इसका नेतृत्व शंकराचार्य** जैसे संतों ने किया, जिन्होंने हिंदू धर्म को जन-जन के लिए सुलभ बनाया और इसे पुनर्जीवित किया।
- ये आंदोलन उत्तर और दक्षिण भारत में फैले हुए थे। इन आंदोलनों ने पुराने रीति-रिवाजों पर नए सिरे से ज़ोर दिया और साथ ही एक शक्तिशाली साहित्यिक और बौद्धिक आंदोलन भी चलाया। **ये आंदोलन ज़्यादा समावेशी प्रकृति के थे और इन्होंने ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता को कम करने का प्रयास किया, जिसके कारण जैन और बौद्ध धर्म का उदय हुआ।**

उत्तर भारत में तंत्रवाद

- ईसा युग की प्रारंभिक शताब्दियों में **बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय के विकास** के साथ , **भगवान के रूप में बुद्ध की विस्तृत पूजा** पूरे प्रचलन में थी, साथ ही यह विश्वास भी था कि जादुई शब्दों के उच्चारण से इच्छाएं पूरी होती हैं और मनुष्य को अलौकिक शक्तियां प्राप्त होती हैं।
- **कई हिंदू योगियों ने भी इन प्रथाओं को अपनाया**। इनमें सबसे प्रसिद्ध **गोरखनाथ थे। उनके अनुयायी नाथ-पंथी** कहलाते थे और पूरे उत्तर भारत में लोकप्रिय थे।
- योगी **मुख्यतः निम्न वर्ग से थे, जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों द्वारा प्राप्त विशेषाधिकारों का खंडन करते थे।** वे जिस मार्ग का प्रचार करते थे उसे **तंत्र** कहा जाता था जो जातिगत भेदभाव से परे सभी के लिए खुला था।

Bhakti Movement

- भक्ति आंदोलन ने 8वीं से 12वीं ईस्वी के दौरान **हिंदू धर्म के पुनरुत्थान और विस्तार का आधार बनाया । इस युग में, शिव और विष्णु प्रमुख देवता बन गए,** जबकि बड़ी संख्या में आदिवासी देवी-देवता उनके अधीन थे।
- भक्ति **आंदोलन दक्षिण भारत में शुरू हुआ और शंकराचार्य, रामानुज और माधवाचार्य जैसे कई संतों द्वारा लोकप्रिय हुआ** । इन संतों ने ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता और कर्मकांडों का खंडन किया। उन्होंने ईश्वर और मनुष्य के बीच संबंध स्थापित किया।
- भक्ति **आंदोलन में उन निचली जातियों का भी समावेश था** जिन्हें ब्राह्मणवादी समाज ने अलग-थलग कर दिया था। भक्ति आंदोलन के कई संत निचली जातियों से थे और उन्होंने ब्राह्मणों के वैदिक एकाधिकार को तोड़ा। **भक्ति आंदोलन ने आदिवासी क्षेत्रों में हिंदू धर्म के विस्तार को बढ़ावा दिया और भारत में बौद्ध और जैन धर्म की लोकप्रियता को कम करने में मदद की** ।

दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन

- दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का नेतृत्व **नयनार और अलवार नामक संतों ने किया।** ये संत धर्म को **ईश्वर और उपासक के बीच प्रेम** के रूप में देखते थे और **तपस्या को अस्वीकार करते थे** ।

भक्ति संतों की विशेषताएँ

- वे शिव और विष्णु की पूजा करते थे
- वे तेलुगु और तमिल जैसी स्थानीय भाषाओं में लिखते और बोलते थे
- वे खानाबदोश थे और प्रेम और भक्ति का संदेश लेकर चलते थे
- वे निम्न वर्ग से थे और कुछ

- ब्राह्मण और कुछ महिलाएं भी थीं
- वे समाज में व्याप्त असमानताओं की उपेक्षा करते थे तथा सभी के लिए खुले थे।

Vir Shaiva Movement

- वीर **शैव आंदोलन 12वीं शताब्दी के लोकप्रिय आंदोलनों में से एक था, जिसकी स्थापना बसवण और उनके भतीजे चन्नबसव** ने की थी। वे कर्नाटक के **कलचुरी राजाओं** के दरबार में रहते थे ।
- लिंगायत **शिव की पूजा करते थे।** उन्होंने **जाति व्यवस्था का विरोध किया** , व्रत-उपवास और बलि प्रथा को अस्वीकार किया; बाल-विवाह का विरोध किया और विधवाओं के पुनर्विवाह की अनुमति दी।

अद्वैत दर्शन

- बौद्ध धर्म और जैन धर्म को जिन अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा, उनमें से **शंकराचार्य द्वारा हिंदू दर्शन में किया गया सुधार** सबसे गंभीर था।
- शंकराचार्य द्वारा स्थापित और **अद्वैतवाद या अद्वैतवाद के सिद्धांत के अनुसार,** ईश्वर **और सृष्टि एक ही है।** दोनों के बीच का भेद **अज्ञान** के कारण उत्पन्न हुआ । मोक्ष प्राप्ति का मार्ग **ईश्वर की भक्ति** है , **जो इस ज्ञान से बलवती होती है** कि ईश्वर और सृष्टि एक ही हैं। इस दर्शन को **वेदांत** कहा जाता है ।
- शंकराचार्य ने **वेदों को सच्चे ज्ञान का स्रोत** बताया ।

विशिष्टाद्वैत दर्शन

- **विशिष्टाद्वैत दर्शन की स्थापना रामानुज ने की थी** ।
- दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए **ईश्वर की कृपा, उसके ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है।**
- इसमें कहा गया कि **भक्ति का मार्ग सभी के लिए खुला है।**

सूफीवाद का विकास

- सूफीवाद **इस्लाम में रहस्यवादी आंदोलनों** को दिया गया संयुक्त नाम था । इनका उद्देश्य **मनुष्य और ईश्वर के बीच सीधा संवाद स्थापित करना था** । इस संवाद की विधियाँ साधकों द्वारा व्याख्या के लिए खुली थीं, लेकिन इस्लाम के दायरे में। सूफी संप्रदायों को भारत और भारत के बाहर **सिलसिला के नाम से भी जाना जाता है । सूफीवाद सूफी और ईश्वर के बीच संवाद स्थापित करने के तरीके के महत्व पर बल देता था** । ईश्वर से संवाद की विधि की देखरेख के लिए एक **आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता होती थी । ईश्वर की स्तुति में संगीतमय काव्यों का पाठ करके** इस मार्ग को प्राप्त किया जा सकता था ।
- हालाँकि आठवीं से दसवीं शताब्दी के आरंभ में भारत में कोई सूफी सिलसिला सक्रिय नहीं था, फिर भी भारत में सूफी संस्कृति का कुछ प्रभाव देखा जा सकता है। एक प्रमुख प्रारंभिक सूफी कवि/शिक्षक, **मंसूर अल-हल्लाज ने "मैं ईश्वर हूँ"** का रहस्यवादी सूत्र दिया, जिसने ईरान और फिर भारत में सूफी विचारों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **ग़ज़नवी शासकों के अधीन तुर्की शासन की स्थापना के साथ सूफ़ीवाद एक संगठित आंदोलन बन गया** । 10वीं और 11वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह मध्य एशिया, भारत और ईरान के विभिन्न भागों में **सेल्जूक़ वंश के अधीन फला-फूला** । 8वीं से 12वीं शताब्दी के दौरान मध्य एशिया और ईरान में सूफ़ी आंदोलन को काफ़ी प्रसिद्धि मिली, लेकिन 13वीं शताब्दी के बाद **मुईनुद्दीन चिश्ती जैसे महान सूफ़ियों के आगमन के साथ ही भारत में इसका प्रसार हुआ।**

अर्थव्यवस्था

- आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक की अवधि में भारतीय अर्थव्यवस्था में **व्यापक परिवर्तन** हुए। अस्थिर व्यापारिक मार्गों और रोमन साम्राज्य के पतन के कारण व्यापार और वाणिज्य में गिरावट आई। इससे उस **समय** मौजूद कई राज्यों की **केंद्रीकृत राजनीति कमज़ोर हो गई ।**
- **भारत केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था से ग्राम-केंद्रित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने लगा** । यह परिवर्तन धन की कमी के कारण केंद्रीय नियंत्रण के कमज़ोर होने के कारण हुआ।
- ऐसे स्थानीय गाँवों के उद्भव का एक अन्य कारक **ब्राह्मणों को दिए गए विशाल भूमि अनुदान और उनके प्रबंधन में उन्हें प्राप्त स्वतंत्रता थी** । इन भूमि अनुदानों की स्वायत्तता ने ब्राह्मणों को **इन भूमियों का स्वामी** बनने में सक्षम बनाया ।

- ये स्वायत्त भूमि अनुदान राज्य के सबसे बड़े आर्थिक केंद्र बन गए। इन भूमियों पर ब्राह्मणों को नकद और बहुमूल्य धातुओं जैसी वस्तुओं के रूप में बड़ी मात्रा में अनुदान और दान प्राप्त हुए। इससे ये स्थान भूमि के सबसे बड़े नियोक्ता बन गए। इस युग में अर्थव्यवस्था इन मंदिरों पर केंद्रित हो गई।
- ब्राह्मणों के साथ-साथ **सरकारी अधिकारी भी बढ़े, जिन्हें सामंत, राणक, रौत्ता आदि** जैसे राजस्व देने वाले गाँव देकर वेतन दिया जाता था। ये सभी पद वंशानुगत हो गए और ये लोग एक-दूसरे के विरुद्ध संघर्ष करते रहे तथा अपने अधिकार और विशेषाधिकारों का दायरा बढ़ाने का प्रयास करते रहे।
- वंशानुगत प्रमुखों ने धीरे-धीरे सरकार के कई कार्यों को अपने हाथ में लेना शुरू कर दिया तथा उन्हें दंड देने और जुर्माना वसूलने जैसे अधिक प्रशासनिक अधिकार भी मिलने लगे।
- उपरोक्त सभी मानदंडों ने **भारतीय समाज में सामंतवाद** को जन्म दिया। इसने शासक की स्थिति को कमज़ोर कर दिया और उसे सामंती सरदारों पर और अधिक निर्भर बना दिया। इन छोटे-छोटे क्षेत्रों ने व्यापार और वाणिज्य को हतोत्साहित किया और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर किया।

व्यापार और वाणिज्य

- 7वीं से 10वीं शताब्दी के दौरान **भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदार रोमन साम्राज्य के पतन के कारण भारत से व्यापार और वाणिज्य में गिरावट आई थी**।
- व्यापार में गिरावट **कस्बों के पतन और सोने-चाँदी के सिक्कों के अभाव** में देखी जा सकती है, जो कभी प्रचुर मात्रा में थे। मध्य एशिया में भूमि मार्गों पर लगातार चल रही अंदरूनी लड़ाइयों के कारण उत्तर भारत **में व्यापार में** उल्लेखनीय गिरावट देखी गई।
- रोमन साम्राज्य के अवशेषों पर बीजान्टिन और सासानी साम्राज्य जैसे नए शक्तिशाली साम्राज्यों का उदय हुआ। इस काल में **नौवहन तकनीक का** अभूतपूर्व विकास हुआ। मध्य एशिया के स्थलीय मार्ग युद्धग्रस्त थे, इसलिए **समुद्री मार्ग माल परिवहन का पसंदीदा साधन बन गए**। दक्षिण भारत, बंगाल और गुजरात राज्यों को व्यापार के मामले में सबसे अधिक लाभ हुआ क्योंकि उनके तट लंबे थे। जावा, सुमात्रा आदि के लिए नौकायन के लिए सबसे प्रसिद्ध बंदरगाह **बंगाल में ताम्रलिप्ति था।**
- व्यापार में गिरावट उस काल की रूढ़िवादिता के कारण भी थी। कुछ धर्मशास्त्रों में लोगों को उस सीमा से आगे यात्रा या व्यापार करने की अनुमति नहीं थी जहाँ मुंजा घास नहीं उगती या काली हिरन नहीं घूमती। खारे समुद्र को पार करना अपवित्र माना जाता था। लेकिन यह भी ज्ञात है कि व्यापार और बसने के लिए दूसरे देशों की यात्रा करने वाले व्यापारियों और पुजारियों द्वारा इसका उल्लंघन किया जाता था।
- लेकिन पश्चिम एशिया में **अरब साम्राज्य के उदय के साथ स्थिति धीरे-धीरे बदल गई** और इस दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन के बीच व्यापार भी बढ़ा। धनी अरब शासकों द्वारा भारतीय कपड़ों, धूप और मसालों की माँग के कारण भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ व्यापार में वृद्धि हुई, जिन्हें **मसाला द्वीप** कहा जाता था। इस काल में चीन में विदेशी व्यापार के लिए मुख्य बंदरगाह **कैंटन या कानफू** था। बौद्ध विद्वान इसी समुद्री मार्ग से भारत से चीन जाते थे।
- जापानी **अभिलेखों में उनके देश में कपास और चावल लाने का श्रेय भारतीयों को दिया गया है**। भारतीय शासकों, विशेषकर **बंगाल के पाल और सेन तथा दक्षिण के पल्लव और चोल ने** इस व्यापार को प्रोत्साहित किया।
- **इस क्षेत्र में भारत के विदेशी व्यापार का विकास मज़बूत नौसैनिक परंपरा** पर आधारित था, जिसमें जहाज निर्माण और एक मज़बूत नौसेना, तथा उसके व्यापारियों का कौशल और उद्यम शामिल था। भारतीय जहाज़ों ने धीरे-धीरे अरबों और चीनियों को रास्ता दे दिया, जिनके जहाज़ बड़े और तेज़ थे। लेकिन बाद में जब भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी विकास रुक गया, तो चीनियों ने **मेरिनर के कंपास** जैसे आविष्कारों के साथ विकास का अनुभव किया।

समाज

- 8वीं से 12वीं शताब्दी के बीच की अवधि में भारतीय समाज का काफी विकास हुआ, राजवंशों की **केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने के कारण स्थानीय सरदारों को काफी शक्ति प्राप्त हुई**।
- **सामंत, राणा और राजपूत जैसे नए वर्ग उभरे।** इनमें से ज़्यादातर स्थानीय नेता या तो **सरकारी अधिकारी थे या ब्राह्मण** जिन्हें ज़मीन का अनुदान मिला था, या फिर स्थानीय कबीलाई सरदार थे जो शासक राजवंशों के कमज़ोर होने

के कारण अपना क्षेत्र बनाने में कामयाब हो गए थे। स्थानीय रियासतों की इतनी बड़ी संख्या के कारण उनके बीच तनाव व्याप्त था और हर कोई ज़्यादा से ज़्यादा क्षेत्र हासिल करने की फिराक में था।

- भारतीय स्थानीय सरदारों के बीच इस अंतर्कलह ने तुर्कों को भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने का अवसर प्रदान किया और इस प्रकार **दिल्ली सल्तनत की** स्थापना हुई। समाज अधिक समावेशी और आत्मसात् हुआ। **ब्राह्मणवादी रूढ़िवादिता और कर्मकांडों पर एकाधिकार को निम्न जातियों ने सफलतापूर्वक चुनौती दी।** इस काल में दक्षिण भारत में निम्न जातियों से संबंधित कई संत हुए। यह सब जैन और बौद्ध धर्म जैसे धर्मों से उत्पन्न खतरे का मुकाबला करने के लिए किया गया था।

सामाजिक विभाजन

- **व्यापार में आई गिरावट के कारण जीवन स्तर में गिरावट के कोई स्पष्ट संकेत नहीं थे**। शासक और कुलीन वर्ग पहले की तरह ही वैभवपूर्ण जीवन जीते थे। वे अपने पूर्ववर्तियों की तरह ही **वैभव और विलासिता** में लिप्त थे । वे घरेलू नौकरों की एक फौज रखते थे और जहाँ भी जाते थे, वहाँ नौकर-चाकर रखते थे।
- इस समय तक व्यापारिक बंदरगाहों के व्यापारियों ने विदेशी व्यापार के ज़रिए अपार धन-संपत्ति अर्जित कर ली थी। ये धनी व्यापारी कुलीन वर्ग के रहन-सहन और उनकी शान-शौकत की नकल करने की कोशिश करते थे। ये धनी व्यापारी आम उपभोग की वस्तुएँ, हस्तशिल्प और विलासिता की अन्य वस्तुएँ खरीदते थे।
- अरब विवरणों के अनुसार **भारत की मिट्टी की उर्वरता उच्च थी और किसानों का जीवन स्तर अच्छा था।**
- स्थानीय छोटी रियासतों या स्वायत्त इकाइयों की बढ़ती संख्या के साथ, पश्चिम की सामंती संरचना जैसी एक संरचना उभरी। भूमि अनुदान प्राप्त करने वाले लोग स्वामी के रूप में कार्य करते थे और उनके अपने जागीरदार होते थे जो उनके लिए विभिन्न कार्य करते थे।
- **मंदिर सबसे बड़े नियोक्ता बन गए और मंदिरों से जुड़े विद्वानों, कवियों, रसोइयों और नाइयों जैसे व्यवसायों की संख्या में वृद्धि** देखी गई।
- **समृद्धि तो थी, लेकिन धन का वितरण भी असमान था** । राजतरंगिणी के लेखक ने विभिन्न वर्गों के लोगों द्वारा खाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के भोजन के बारे में लिखा है। **किसानों के जीवन में सुधार नहीं हुआ, लेकिन उनके करों में सुधार हुआ** । किसानों को भू-राजस्व के अलावा अतिरिक्त कर भी देना पड़ता था और उन्हें बेगार (विस्ती) भी करनी पड़ती थी। **सामंती समाज के विकास ने आम आदमी पर बोझ डाला।**

जाति प्रथा

- **स्मृति लेखकों ने ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों और शूद्रों की अक्षमताओं का बखान किया । लोग शूद्रों के साथ किसी भी तरह का संपर्क अपवित्र मानने लगे । विभिन्न जातियों के बीच विवाह की अनुमति नहीं थी ।**
- कुम्हार, बुनकर और सुनार जैसी बड़ी संख्या में जातियाँ उभरीं, जो कभी श्रमिकों का एक संघ हुआ करती थीं। **हस्तशिल्प को एक निम्न व्यवसाय माना जाता था और अंततः उन्हें अछूत माना जाने लगा** । इस काल में **एक नई जाति का उदय हुआ** , अर्थात् राजपूत। ऐसा माना जाता था कि वे क्षत्रियों के सौर और चंद्र वंश के वंशज थे और इससे जुड़े कई और सिद्धांत भी थे।
- व्यक्ति और समूह वर्ण व्यवस्था से ऊपर उठ सकते थे और नीचे भी गिर सकते थे। इस काल में हिंदू धर्म का विस्तार हो रहा था और उसने जैन और बौद्ध धर्म सहित कई अन्य जातियों और उपजातियों को अपने में समाहित कर लिया।

महिलाओं की स्थिति

- महिलाओं की स्थिति पिछले युगों जैसी ही बनी रही। **महिलाओं को अब भी अधीन रखा जाता रहा** और मत्स्य पुराण जैसे साहित्यिक ग्रंथों में **पति को अपनी अपराधी पत्नी को पीटने की अनुमति दी गई है।**
- महिलाओं को **उच्च शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं** थी और उन्हें **गृहिणी बनने का प्रशिक्षण दिया जाता** था । **विवाह योग्य आयु कम थी** । स्मृति लेखकों के अनुसार **बाल विवाह प्रचलित था** । पुनर्विवाह की अनुमति थी, लेकिन केवल तभी जब पति ने त्याग दिया हो, मर गया हो, संसार त्याग दिया हो, नपुंसक हो गया हो या उसे जाति से बहिष्कृत घोषित कर दिया गया हो।

- **सती प्रथा समाज में केवल धार्मिक कारणों से प्रचलित थी** । महिलाओं **को अपने पति की विरासत में हिस्सा** और पति द्वारा उन्हें छोड़ देने पर भरण-पोषण का अधिकार दिया जाता था। यहाँ तक कि उन्हें **संपत्ति का अधिकार** भी प्राप्त था , एक ऐसी अवधारणा जिसने भारत में सामंतवाद के विकास के साथ बल प्राप्त किया।

शिक्षा की स्थिति

- शिक्षा प्रणाली पिछले युगों से चली आ रही थी। **शिक्षा सामूहिक शिक्षा की बजाय व्यक्ति-केंद्रित थी** । **मंदिर शिक्षा के केंद्र थे** और छात्रों के निवास स्थान के रूप में कार्य करते थे। शिक्षा पूरी होने के बाद छात्र शिक्षक को उपहार देते थे, लेकिन **शुल्क की कोई व्यवस्था नहीं थी।**
- शिक्षा उस समय के **धार्मिक ग्रंथों पर आधारित थी । व्याकरण, वेद, तर्क, दर्शन और विज्ञान जैसे** विषय पढ़ाए जाते थे । हालाँकि, **व्यावसायिक शिक्षा संघों द्वारा ही दी जाती थी** । व्यावसायिक और व्यावसायिक शिक्षा संघों या परिवारों द्वारा दी जानी थी। शिक्षा **औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा का मिश्रण** थी ।
- धर्मनिरपेक्ष शिक्षा कुछ बौद्ध विहारों द्वारा दी जाती थी, जिनमें **बिहार में नालंदा, विक्रमशिला और ओदंतपुरी** सबसे प्रसिद्ध थे। **कश्मीर शिक्षा का एक और महत्वपूर्ण केंद्र था** । यहाँ शैव संप्रदाय और शिक्षा केंद्र फले-फूले। **दक्षिण भारत में मदुरै और श्रृंगेरी में महत्वपूर्ण मठ स्थापित किए गए।**
- **धर्म और दर्शन** मुख्य विषय रहे होंगे। धार्मिक और जातिगत कारणों से विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास धीमा पड़ गया। शल्य चिकित्सा में अनुसंधान अवरुद्ध हो गया क्योंकि शवों को काटना और उनसे निपटना निम्न जातियों का काम माना जाता था। ज्योतिष ने खगोल विज्ञान को पृष्ठभूमि में धकेल दिया।
- गणित के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई। भास्कर द्वितीय की लीलावती इसी काल में लिखी गई। खनिज, विशेषकर पारे के उपयोग से चिकित्सा के क्षेत्र में भी प्रगति हुई। पादप विज्ञान और पशु चिकित्सा पर अनेक पुस्तकें लिखी गईं।

विज्ञान में गिरावट के कारण

- विज्ञान का विकास समग्र समाज से जुड़ा था जो उत्तरोत्तर कठोर, संकीर्ण और जटिल होता गया।
- धार्मिक रूढ़िवादिता के बढ़ने के कारण शहरी जीवन में बाधाएँ आईं।
- भारतीयों की भारत के बाहर वैज्ञानिक विचारधारा की मुख्य धाराओं से स्वयं को अलग करने की प्रवृत्ति।
- वे ज्ञान साझा नहीं करते थे तथा गोपनीयता बनाए रखने तथा उसे अपने तक ही सीमित रखने में विश्वास रखते थे।

भक्ति काल 12 वीं शताब्दी के बाद

गुरु नानक

- गुरु नानक की शिक्षाएँ और दर्शन भारतीय दार्शनिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं। उनके दर्शन में **तीन मूल तत्व** शामिल हैं : एक अग्रणी करिश्माई व्यक्तित्व (**गुरु**), विचारधारा (**शब्द**) और संगठन (**संगत**)।
- नानक ने प्रचलित धार्मिक मान्यताओं का मूल्यांकन और आलोचना की और एक सच्चे धर्म की स्थापना का प्रयास किया, जो मोक्ष की ओर ले जा सके। उन्होंने **मूर्ति पूजा का खंडन किया , तीर्थयात्रा का समर्थन नहीं किया और न ही अवतारवाद के सिद्धांत को स्वीकार किया।**
- उन्होंने **औपचारिकता और कर्मकांड की निंदा की** । उन्होंने **आत्मज्ञान के लिए एक सच्चे गुरु की आवश्यकता पर बल** दिया । उन्होंने लोगों को **आचरण और उपासना के सिद्धांतों का** पालन करने की सलाह दी : सच (सत्य), हलाल (वैध कमाई), खैर (दूसरों की भलाई की कामना), नियत (सही इरादा) और प्रभु की सेवा। उन्होंने **जाति व्यवस्था** और उसके कारण होने वाली असमानता की निंदा की।
- उनका तर्क था कि जाति और सम्मान का मूल्यांकन व्यक्ति के कर्मों से होना चाहिए। उन्होंने न्याय, धर्म और स्वतंत्रता की अवधारणाओं पर ज़ोर दिया। उनके पदों में मुख्यतः दो मूल अवधारणाएँ हैं, **सच और नाम** । उनके लिए ईश्वरीय अभिव्यक्ति का आधार सबद (शब्द), गुरु (ईश्वरीय उपदेश) और हुक्म (ईश्वरीय आदेश) थे।
- **उन्होंने लंगर (सामुदायिक रसोई)** की अवधारणा प्रस्तुत की । गुरु नानक स्वयं को जनता या शासितों से जोड़ते हैं। गुरु नानक ने अपने अंतिम दिनों में एक उत्तराधिकारी नामित किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की, जिससे यह विचार उत्पन्न हुआ कि **गुरु और सिख एक ही हैं** । इससे संगत (जो सिखों का एक सामूहिक निकाय था) नामक संस्था के लिए समस्या उत्पन्न हुई, जिसमें ईश्वर की उपस्थिति मानी जाती थी।

अद्वैतवाद

- **कबीर** उत्तर भारत के सबसे प्रारंभिक और सबसे प्रभावशाली भक्ति संत थे। वे एक बुनकर थे और उन्होंने अपना अधिकांश जीवन बनारस में बिताया। **उनकी कविताएँ सिख धर्मग्रंथ, आदि ग्रंथ में शामिल हैं।**
- कबीर से प्रभावित लोगों में **रैदास** (जो बनारस के चर्मकार थे), **गुरु नानक** (जो पंजाब के खत्री थे) और **धन्ना** (जो राजस्थान के जाट किसान थे) शामिल थे।
- उत्तर भारत के विभिन्न एकेश्वरवादी भक्ति संतों की शिक्षाओं में समानताएँ हैं। **अधिकांश एकेश्वरवादी निम्न जातियों से संबंधित थे और जानते थे कि उनके विचारों में एकता है** । वे एक-दूसरे की शिक्षाओं और प्रभावों से भी परिचित थे और अपने पदों में वे एक-दूसरे और अपने पूर्ववर्तियों का इस प्रकार उल्लेख करते हैं जिससे उनके बीच वैचारिक समानता का आभास होता है।
- ये सभी **भक्ति की अवधारणा, नाथपंथी आंदोलन और सूफीवाद से प्रभावित थे।** उनके विचार इन तीनों परंपराओं का **संश्लेषण** प्रतीत होते हैं । ईश्वर के साथ भक्ति संत के व्यक्तिगत अनुभव को दिया जाने वाला महत्व एकेश्वरवादी भक्ति संतों की एक और सामान्य विशेषता थी।
- **वे सगुण भक्ति में नहीं, बल्कि निर्गुण भक्ति में विश्वास करते थे** । उन्होंने भक्ति की अवधारणा वैष्णव धर्म से ली थी, लेकिन उसे निर्गुण रूप दिया।
- हालाँकि वे ईश्वर को विभिन्न नामों और उपाधियों से पुकारते थे, उनका ईश्वर **अवतरण रहित, निराकार, शाश्वत और अनिर्वचनीय** था । भक्ति संतों ने उस समय के संगठित प्रमुख धर्मों (हिंदू धर्म और इस्लाम) के साथ किसी भी औपचारिक संबंध से इनकार कर दिया और इन धर्मों के नकारात्मक पहलुओं की आलोचना की। उन्होंने **ब्राह्मणों के अधिकार को अस्वीकार किया और जाति व्यवस्था और मूर्तिपूजा की प्रथा पर प्रहार किया** । उन्होंने उत्तर भारत में बोली जाने वाली लोकप्रिय भाषाओं और बोलियों में अपनी कविताएँ रचीं, जिससे वे अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचा सके। इससे उनके विचारों को विभिन्न निम्न वर्गों में भी तेज़ी से फैलने में मदद मिली।

वैष्णव

- 14वीं और 15वीं शताब्दी के आरंभ में **रामानंद उत्तर भारत में एक लोकप्रिय वैष्णव भक्ति संत के रूप में उभरे** । हालाँकि वे दक्षिण से थे, फिर भी वे बनारस में रहते थे क्योंकि वे इसे दक्षिण भारतीय भक्ति और उत्तर भारतीय वैष्णव भक्ति परंपराओं के बीच की कड़ी मानते थे। वे भक्ति के पात्र के रूप में विष्णु को नहीं, बल्कि **राम को मानते थे ।**
- उन्होंने **राम और सीता की पूजा की और उत्तर भारत में राम पंथ** के संस्थापक के रूप में जाने गए । एकेश्वरवादी भक्ति संतों की तरह, उन्होंने भी जातिगत पदानुक्रम को अस्वीकार किया और पंथ को लोकप्रिय बनाने के प्रयास में स्थानीय भाषाओं में उपदेश दिए। उनके अनुयायियों को **रामानंदी** कहा जाता है।
- **तुलसीदास ने** भक्ति के भी पक्षधर थे। तुलसीदास राम के उपासक थे और उन्होंने रामायण के हिंदी संस्करण **, प्रसिद्ध रामचरितमानस की रचना की।**
- 16वीं शताब्दी के आरंभ में , एक लोकप्रिय भक्ति संत **, वल्लभाचार्य ने कृष्णभक्ति को** लोकप्रिय बनाया । वल्लभाचार्य के पदचिन्हों पर चलने वालों में **सूरदास और मीराबाई भी शामिल थे।** सूरदास ने उत्तर भारत में कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया।
- **मीराबाई** शायद भक्ति परंपरा की सबसे प्रसिद्ध महिला कवियित्री हैं। उनकी जीवनियाँ मुख्यतः उनके भजनों के आधार पर रची गई हैं, जो सदियों से मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे हैं। इनके अनुसार, वह मारवाड़ के मेड़ता की एक राजपूत राजकुमारी थीं, जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध राजस्थान के मेवाड़ के सिसोदिया वंश के एक राजकुमार से हुआ था। उन्होंने अपने पति की अवज्ञा की और पत्नी और माँ की पारंपरिक भूमिका को नहीं निभाया, बल्कि विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना प्रेमी माना। उनके ससुराल वालों ने उन्हें ज़हर देने की कोशिश की, लेकिन वह महल से भागकर एक घुमक्कड़ गायिका के रूप में जीवन जीने लगीं और ऐसे गीत रचने लगीं जिनमें भावनाओं की तीव्र अभिव्यक्ति होती है।

Bengal

- बंगाल में वैष्णव भक्ति आंदोलन उत्तर भारत और दक्षिण के अपने समकक्षों से बहुत अलग था और यह भागवतपुराण की वैष्णव भक्ति परंपरा **और सहजिया बौद्ध और नाथपंथी परंपराओं से प्रभावित था।**
- ये परंपराएँ **भक्ति के गूढ़ और भावनात्मक पहलुओं पर केंद्रित थीं।** 12वीं शताब्दी ईस्वी में, **जयदेव** इस परंपरा के एक महत्वपूर्ण भक्ति संत थे। **उन्होंने कृष्ण और राधा के संदर्भ में प्रेम के रहस्यमय आयाम पर प्रकाश डाला।**
- **चैतन्य इस क्षेत्र के एक लोकप्रिय भक्ति संत थे;** उन्हें कृष्ण का अवतार माना जाता था। हालाँकि, उन्होंने ब्राह्मणों और शास्त्रों की प्रामाणिकता पर सवाल नहीं उठाया। उन्होंने **संकीर्तन** (उत्साहपूर्ण नृत्य के साथ सामूहिक भक्ति गीत) को भी लोकप्रिय बनाया।
- उनके साथ ही बंगाल में भक्ति आंदोलन एक सुधार आंदोलन के रूप में विकसित होने लगा, जिसमें जातिगत विभाजन की धारणा पर सवाल उठाए जाने लगे।

असम

- पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **शंकरदेव** असम में वैष्णववाद के अग्रणी समर्थकों में से एक के रूप में उभरे।
- उनकी शिक्षाएँ, जिन्हें अक्सर **भगवती धर्म के** नाम से जाना जाता है क्योंकि वे भगवद् गीता और भागवत पुराण पर आधारित थीं, सर्वोच्च देवता, इस मामले में **विष्णु**, के प्रति पूर्ण समर्पण पर केंद्रित थीं। उन्होंने नाम कीर्तन, यानी सत्संग या धर्मपरायण भक्तों की सभाओं में भगवान के नामों के उच्चारण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार के लिए सत्रों या मठों और नामघरों **की स्थापना को भी प्रोत्साहित किया।**
- इनमें से कई संस्थाएँ और प्रथाएँ इस क्षेत्र में फल-फूल रही हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं में **कीर्तनघोष** शामिल है ।

Bhakti Movement in Maharashtra

- महाराष्ट्र के संत कवियों द्वारा प्रचारित उदार धर्म **महाराष्ट्र धर्म के** नाम से प्रसिद्ध है , जो मध्ययुगीन भक्ति आंदोलन की एक धारा थी, लेकिन सामाजिक रूप से यह अधिक गहन, एकात्मक और सामाजिक सुधारों के क्षेत्र में कहीं अधिक उदार थी।
- महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन ने **भागवतपुराण और शिवनाथपंथियों** से प्रेरणा ली ।
- **ज्ञानेश्वर महाराष्ट्र के एक अग्रणी भक्ति संत थे** । भगवद्गीता पर उनकी भाष्य "ज्ञानेश्वरी" ने महाराष्ट्र में भक्ति विचारधारा की नींव रखी। **जाति-भेद के विरुद्ध तर्क देते हुए,** उनका मानना था कि **ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग भक्ति है।**
- **विठोबा इस संप्रदाय के देवता थे** और इसके अनुयायी वर्ष में दो बार मंदिर की तीर्थयात्रा करते थे। पंढरपुर के विठोबा महाराष्ट्र में इस आंदोलन के मुख्य आधार बन गए।
- **नामदेव (1270-1350)** महाराष्ट्र के एक अन्य महत्वपूर्ण भक्ति संत थे। उत्तर भारतीय एकेश्वरवादी परंपरा में उन्हें निर्गुण संत के रूप में याद किया जाता है, वहीं महाराष्ट्र में उन्हें वरकारी परंपरा (वैष्णव भक्ति परंपरा) का हिस्सा माना जाता है।
- महाराष्ट्र के कुछ अन्य महत्वपूर्ण भक्ति संत **चोका, सोनारा, तुकाराम और एकनाथ थे।**
- **तुकाराम की शिक्षाएं अवंगों (दोहों) के रूप में हैं** , जो गाथा का निर्माण करती हैं, जबकि **एकनाथ की शिक्षाएं मराठी में थीं, जिन्होंने** मराठी साहित्य का जोर आध्यात्मिक से कथात्मक रचनाओं की ओर स्थानांतरित करने का प्रयास किया।

Bhakti Movement
8th-16th Century
Jammu & Kashmir
Himachal Pradesh
Punjab
Haryana
Rajasthan
Uttar Pradesh
Sikkim
Arunachal Pradesh
Nagaland
Assam
Meghalaya
Manipur
Mizoram
Bihar
West Bengal
Orissa
Gujarat
Madhya Pradesh
Maharashtra
DU (D&D)
Andhra Pradesh
Karnataka
GOA
Tamil Nadu
Kerala
Guru Nanak 15th-16th C
Dadu 16th-17th C
Surdas 16th C
Shankardeva 15th-16th C
Ramananda 16th C.
Kabir 15th-16th C.
Raidas 15thC.
Vallabhacharya 15th-16th C.
Tulsidas 16th-17th C.
Chaitanyadeva 15th-16th C.
Mirabai 16th C.
Narsi Mehta 15th C.
Eknath 16th C.
Janeshwar13th C.
Tukaram 16th C.
Namdev 13th-14th C.
Basavanna 12th C.
Ramdas 17th C.
Purandaradasa 15th-16th C
Manikkavasagar 9th C.
Ramanuja 11th-12th C.
Nammalvar 9th C.
BAY OF BENGAL
ARABIAN SEA
OCEAN

दिल्ली सल्तनत

दिल्ली सल्तनत

- दिल्ली सल्तनत **दिल्ली में स्थित एक इस्लामी साम्राज्य था जो 320 वर्षों (1206-1526)** तक भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से पर फैला हुआ था।
- दिल्ली सल्तनत पर क्रमशः **पाँच राजवंशों ने शासन किया:**
  - मामलुक **राजवंश** (1206-1290),
  - खिलजी **वंश** (1290-1320),
  - तुगलक **वंश** (1320-1414),
  - सैय्यद **राजवंश** (1414-1451), और
  - लोदी **वंश** (1451-1526)।
- इसमें आधुनिक **भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश के साथ-साथ दक्षिणी नेपाल के कुछ हिस्सों का बड़ा भूभाग शामिल था।**

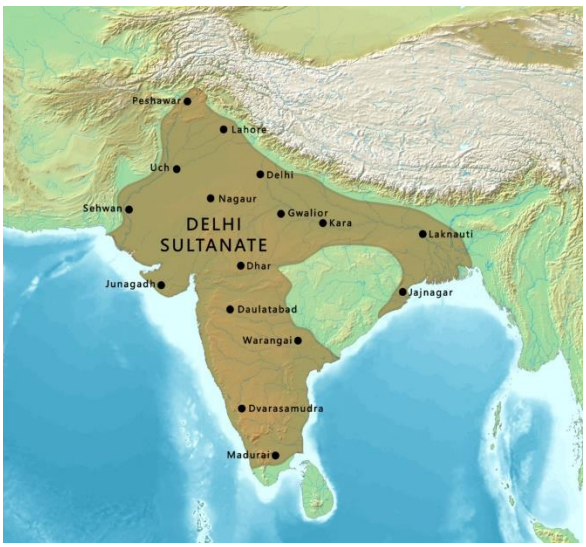

अरब आक्रमण

- उपमहाद्वीप में मुस्लिम शासन **8वीं शताब्दी ईस्वी में शुरू हुआ** जब अरब जनरल **मुहम्मद बिन कासिम ने दक्षिण पंजाब** (अब पाकिस्तान में) में सिंध और मुल्तान पर विजय प्राप्त की।
- अरबों का मुख्य लक्ष्य **भारत में अपनी विजय नीति का विस्तार करके इस्लाम का प्रसार करना और एक इस्लामी साम्राज्य स्थापित करना था। इसके अलावा, अरब भारत की समृद्धि** से भी आकर्षित थे।
- फारसी ग्रंथ **चचनामा** से उत्तर-पश्चिम भारत पर अरब आक्रमण के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है ।
- भारत में स्थायी साम्राज्य स्थापित करने में अरबों की **विफलता के कारण :**
  - नये खलीफा द्वारा मुहम्मद बिन कासिम को कारावास।
  - नये खलीफा का रेगिस्तानी सिंध प्रांत के प्रति उदासीन रवैया।
  - खिलाफत या खलीफा पर लड़ाई के कारण अरबों का ध्यान भटकना।
  - भारतीय शासकों की बहादुरी और वीरता।
  - बगदाद और सिंध के बीच लंबी दूरी।
- **सिंध में अरब शासन का प्रभाव**
  - सिंध की आबादी का इस्लाम में धर्मांतरण, यद्यपि बहुत सीमित और अस्थायी पैमाने पर।
  - भारत में इस्लाम की नींव रखना ।
  - भारत में औपचारिक **दास प्रथा** का प्रारम्भ ।
  - **अरब व्यापार** को बढ़ावा .
  - समुद्र तट पर नई अरब बस्तियाँ।

मामलुक सुल्तान (1206-90 ई.)

- **मामलुक** एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है **"स्वामित्व वाला" । इसका इस्तेमाल सैन्य सेवा** के लिए आयातित तुर्की दासों को घरेलू श्रम या कारीगर के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले निम्न श्रेणी के दासों से अलग करने के लिए किया जाता था।
- दिल्ली सल्तनत के सबसे **शुरुआती शासक मामलूक थे । उन्हें गुलाम राजा** भी कहा जाता था क्योंकि उनमें से कई या तो गुलाम थे या गुलामों के बेटे थे जो सुल्तान बने।

- 1206 ई. में गौरी की मृत्यु के बाद उसका वंश कई भागों में विभाजित हो गया और **कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का सुल्तान बना और गुलाम वंश की स्थापना की।**
- मुस्लिम मामलुक शासकों ने **1206 ई. से 1290 ई. तक भारत पर शासन किया।**

Qutb-ud-din Aibak (1206-10 AD)

- ऐबक **सबसे कुशल योद्धाओं में से एक था, जिसने 1206 ई. में** मुहम्मद गौरी की मृत्यु के बाद राजवंश की सेवा की। उसने भारत में अपने साम्राज्य को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, विशेष रूप से **तराइन के दूसरे युद्ध के बाद।**
- **उन्हें दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक** माना जाता है और वे **उत्तरी भारत के पहले स्वतंत्र मुस्लिम नेता थे।**
- उनकी उदारता के कारण उन्हें **लाखा बख्श सुल्तान या लाखों का दाता** कहा जाता था ।
- Qutb-ud-din Aibak was brave and faithful.
- 1210 में **चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरने से लगी चोटों के कारण ऐबक की मृत्यु हो गई** ।
- ऐबक शिक्षा का महान संरक्षक था और उसने **हसन-उन-निज़ामी और फखरुद्दीन जैसे लेखकों को संरक्षण दिया।**
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने **कुतुब मीनार (प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के सम्मान में)** का निर्माण शुरू कराया , जिसे उनकी मृत्यु के बाद **उनके उत्तराधिकारी इल्तुतमिश ने पूरा किया ।**
- He also constructed **Quwwat-ul-Islam mosque in Delhi** and **Adhai Din Ka Jhonpra in Ajmer.**

आराम शाह (1210-1211 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद लाहौर के अमीर और मलिक ने आराम शाह को गद्दी पर बिठाया।
- उन्होंने बहुत **कम समय तक शासन किया और उन्हें एक कमजोर और बेकार शासक** माना गया ।
- बदायूं के गवर्नर **इल्तुतमिश ने आराम शाह को हराकर सिंहासन हासिल कर लिया** ।

Shams-ud-din Iltutmish (1211-36 AD)

- इल्तुतमिश **मामलुक वंश का दूसरा सबसे प्रमुख शासक** था । **बगदाद के खलीफा ने उसे "सुल्तान" की उपाधि दी थी** ।
- अपने कार्यकाल के दौरान, उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई महत्वपूर्ण सेनापतियों अली मर्दन खिलजी, नासिरुद्दीन कबाचा और ताजुद्दीन यिल्डिज़ ने स्वतंत्र क्षेत्रों के लिए संघर्ष किया। चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों की बढ़ती शक्ति सल्तनत की **उत्तर-पश्चिमी सीमा के लिए एक बड़ा खतरा थी ।**
- इतने बड़े ख़तरे के बावजूद, उन्होंने कई उपलब्धियों के साथ उस पर सफलतापूर्वक विजय प्राप्त की। उन्होंने **चालीस (40) वफ़ादार गुलाम अमीरों का एक दल बनाया, जिसे तुर्कान-ए-चिहालगानी के नाम से जाना जाता था, जिसे** चालीसा भी कहा जाता था **।**
- **प्रशासन के क्षेत्र में इल्तुतमिश ने ' मुद्रा प्रणाली', 'सेना' और 'इक्ता'** जैसे महत्वपूर्ण योगदान दिए ।
- उन्होंने **'इक्ता-दार प्रणाली** ' शुरू की जिसमें **वेतन के बदले रईसों और उनके अधिकारियों को भूमि दी जाती थी** ।
- इल्तुतमिश ने **कुतुब मीनार का निर्माण** पूरा किया और एक मस्जिद भी बनवाई।
- इल्तुतमिश ने सुल्तान की सैन्य शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से एक केन्द्रीय भर्ती वाली सेना स्थापित करने का प्रयास किया।
- **उन्होंने चांदी का टंका और बिलियन जीतल नामक** दो सिक्के प्रचलन में लाकर योगदान दिया , जो उस समय प्रचलन में थे।
- इल्तुतमिश के **छब्बीस वर्ष** के कार्यकाल को तीन व्यापक चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:
- **प्रथम चरण (1210-20 ई.):** जब वह अपने अधिकार के प्रतिद्वन्द्वी प्रतिद्वंद्वियों को समाप्त करने में व्यस्त था।
- **दूसरा चरण (1221-27 ई.):** इस अवधि के दौरान, उन्होंने मंगोल खतरे से निपटा।
- **तृतीय चरण (1228-36 ई.):** यह एक महत्वपूर्ण अवधि थी जिसके दौरान उन्होंने अपने राजवंश को मजबूत करने में स्वयं को समर्पित कर दिया।
- उन्होंने लाहौर के स्थान पर **दिल्ली को राजधानी बनाया।**
- उन्होंने तबकात-ए-नासिरी के लेखक **मिन्हाज-उस-सिराज को संरक्षण दिया ।**
- इल्तुतमिश दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने **नियमित सिक्के** चलाये और दिल्ली को अपने साम्राज्य की राजधानी घोषित किया।

- **इल्तुतमिश को 'गुलाम का गुलाम'** भी कहा जाता है ।
- मंगोल आक्रमणकारी **चंगेज खान** इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान भारत के उत्तर-पश्चिमी मोर्चे से आया था।
- चंगेज (चंगेज) खान का मूल नाम तेमुचिन (तेमुजिन) था।
- इल्तुतमिश ने हिसामुद्दीन आवाज़ को पराजित किया। आवाज़ ने इल्तुतमिश की अधीनता स्वीकार कर ली थी। इल्तुतमिश ने मलिक-जानी को बिहार का नया सूबेदार नियुक्त किया था।
- **रुकनुद्दीन फिरोज:** वह **इल्तुतमिश का पुत्र** था और इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद उसकी माँ शाह तुर्कान ने उसे राज्याभिषेक कराया था। उसे इल्तुतमिश की पुत्री **रजिया ने** तब पदच्युत कर दिया था जब वह अवध में उसके विरुद्ध विद्रोह को दबाने के लिए राजधानी से बाहर था।

रजिया सुल्तान (1236-40 ई.)

- रजिया सुल्तान **सल्तनत और मुगल काल के दौरान एकमात्र महिला शासक** थीं । इल्तुतमिश ने अपने सभी बेटों को सिंहासन के लिए अप्रभावी माना और अपनी बेटी रजिया को अपना उत्तराधिकारी सौंपा।
- वह एक **महान प्रशासक** थीं क्योंकि उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान पूर्ण कानून-व्यवस्था बनाए रखी। रज़िया ने **मुल्तान, लाहौर और हाँसी के विद्रोहों को सफलतापूर्वक पराजित किया।**
- उसने एबिसिनियन गुलाम, **जमाल-उद-दीन याकूत** को घोड़े का स्वामी (अमीर-ए-आख़ूर) नियुक्त किया।
- तुर्की के कुलीन सरदार और पादरी, जो मुख्यतः तुर्की थे, उसे अपना शासक नहीं मानते थे और उसकी हत्या का षडयंत्र रचते थे। रजिया का शासन 1240 ई. में समाप्त हो गया।
- भटिंडा में भयंकर विद्रोह हुआ। भटिंडा के गवर्नर अल्तुनिया ने रज़िया की अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया। रज़िया ने याकूत के साथ अल्तुनिया के विरुद्ध कूच किया। हालाँकि, अल्तुनिया ने याकूत की हत्या करवा दी और रज़िया को कैद कर लिया। इसके बाद, रज़िया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया और दोनों दिल्ली की ओर कूच कर गए।
- **1240 में रजिया एक षड्यंत्र का शिकार हो गयी और कैथल (हरियाणा) के पास उसकी हत्या कर दी गयी।**

नासिर-उद-दीन महमूद (1246-66 ई.)

- नासिरुद्दीन महमूद **इल्तुतमिश का छोटा पुत्र था जिसे 1246 ई. से 1266 ई.** तक सल्तनत का शासक घोषित किया गया था ।
- **उन्हें एक दयालु और ईश्वर से डरने वाला शासक** माना जाता था । उन्होंने अपना अधिकांश समय कुरान की आयतें लिखने में बिताया।
- अपने कई पूर्ववर्तियों और उत्तराधिकारियों के विपरीत, महमूद ने **एकपत्नी प्रथा का सख्ती से पालन किया** । नासिरुद्दीन महमूद ने **बलबन की बेटी से शादी की** और **सारी शक्ति अपने प्रधानमंत्री बलबन के हाथों में सौंप दी** ।
- इब्न बतूता और इस्लामी के अनुसार, बलबन ने नासिरुद्दीन को जहर दिया और सिंहासन पर बैठा।

ग़ियासुद्दीन बलबन (1266-87 ई.)

- गियासुद्दीन बलबन, एक **तुर्की गुलाम जिसे उलुग खान** के नाम से भी जाना जाता था , ने **नसीरुद्दीन महमूद की मृत्यु** के बाद राजवंश की सत्ता हथिया ली ।
- बलबन के कार्यकाल में **दिल्ली और दोआब क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति बहुत खराब थी।** राजपूत ज़मींदारों ने अवध के पूर्वी क्षेत्र और गंगा-यमुना दोआब में किले स्थापित कर लिए थे। बलबन ने सुल्तान की स्थिति को ऊँचा उठाने और निरंकुश शासन को बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत की।
- **बलबन के शासनकाल को विस्तार के बजाय सुदृढ़ीकरण का काल** माना जाता है । दिल्ली और दोआब के आसपास के इलाकों में कानून-व्यवस्था की स्थिति बिगड़ चुकी थी। सड़कें लुटेरों और डाकुओं से इतनी भरी थीं कि संचार भी मुश्किल हो गया था।
- इन तत्वों से निपटने के लिए, **बलबन ने रक्त और लौह की नीति अपनाई** । मेवात क्षेत्र में, कई लोगों का निर्दयतापूर्वक पीछा किया गया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। बदायूँ के आसपास के क्षेत्रों में, राजपूत गढ़ों को नष्ट कर

दिया गया, जंगलों को काट दिया गया और सड़कों की सुरक्षा के लिए अफ़ग़ान सैनिकों की बस्तियाँ स्थापित की गईं। **इन कठोर तरीकों से, बलबन ने स्थिति को नियंत्रित किया**।

- बलबन के कार्यकाल में कई प्रशासनिक और सैन्य परिवर्तन हुए:
- बलबन ने सुल्तान की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए **सिजदा (प्रणाम) और पैबोस (पैर चूमना) की रस्म शुरू की।**
- बलबन ने **सेना का पुनर्गठन किया और एक कुशल जासूसी प्रणाली बनाए रखी।**
- बलबन ने **चालीसा की शक्ति को तोड़ दिया** और ताज की प्रतिष्ठा का सहारा लिया।
- बलबन के बढ़ते प्रभाव ने कई तुर्की सरदारों को विचलित कर दिया। इसलिए, उन्होंने एक **षड्यंत्र रचा (1253) और बलबन को** उसके पद से हटा दिया। **बलबन की जगह इमादुद्दीन रायहान को नियुक्त किया गया,** जो एक भारतीय मुसलमान था।
- बलबन का उत्तराधिकारी उसका **बड़ा पुत्र राजकुमार मुहम्मद खान** था , लेकिन 1285 में मंगोलों के खिलाफ लड़ाई में उसकी मृत्यु हो गई।
- अपनी शक्ति को मजबूत करने के बाद, बलबन ने **ज़िल-इल-ल्लाही की भव्य उपाधि धारण की।**
- बलबन ने **नियामत-ए-खुदिया (ईश्वर का प्रतिनिधि) का सिद्धांत प्रतिपादित किया।**
- बलबन ने गढ़मुक्तेश्वर की मस्जिद की दीवारों पर अपने शिलालेख में **स्वयं को 'खलीफा का सहायक' बताया था।**
- बलबन ने मंगोल आक्रमण के विरुद्ध **अपने साम्राज्य को सुदृढ़ किया** ।
- बलबन ने **सरदारों को विलासितापूर्ण जीवन जीने से रोकने का आदेश दिया।**
- बलबन ने अपने धन और शक्ति से रईसों और लोगों को प्रभावित करने के लिए **फारसी त्योहार नवरोज़ की शुरुआत की** ।
- बलबन ने कई मुस्लिम विद्वानों को संरक्षण दिया और मध्य एशिया से आये कई शरणार्थियों को शरण दी।
- बलबन ने **सैन्य विभाग (दीवान-ए-अर्ज) का पुनर्गठन किया** और देश के विभिन्न भागों में सेना तैनात की।
- बलबन को मुख्य रूप से सरकार और संस्थाओं के संदर्भ में **दिल्ली सल्तनत का मुख्य वास्तुकार** माना जाता था ।
- **1287 ई. में उनके निधन के बाद, उनके पोते कैकाबाद ने गद्दी संभाली** । इस अवधि के दौरान, सरकारी कामकाज अस्त-व्यस्त हो गया और सत्ता हथियाने के लिए रईसों ने गुट बनाने शुरू कर दिए।
- **अरीज़-ए-ममालिक (युद्ध मंत्री) जलालुद्दीन खिलजी ने सारी शक्ति अपने हाथ में ले ली और कैकाबाद की हत्या कर दी।** इससे **1290 ई. में गुलाम वंश का अंत** हो गया और जलालुद्दीन खिलजी के नेतृत्व में खिलजी वंश का नया राजवंश स्थापित हुआ।

बलबन के राजत्व का सिद्धांत

- बलबन दिल्ली सल्तनत का पहला शासक था जिसने **राजत्व का एक व्यापक सिद्धांत** प्रस्तुत किया । बलबन का राजत्व सिद्धांत **सासानी फारस से काफी प्रभावित था।** उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि **राजा ईश्वर (ज़िल्लाह) की छाया है** । बलबन का मानना था कि वह केवल सर्वशक्तिमान के प्रति जवाबदेह है और उसके कार्य सार्वजनिक जाँच से मुक्त हैं।

सिजादा और पैबोस

- उसने **सिजदा (प्रणाम) और पैबोस (राजा के चरण चूमने**) की प्रथा शुरू की। बलबन **पितृसत्तात्मक निरंकुशता** में विश्वास करता था । उसका मानना था कि केवल एक तानाशाह ही अपनी प्रजा से आज्ञाकारिता प्राप्त कर सकता है और राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है।
- बलबन का सबसे बड़ा योगदान **केंद्र में एक स्थायी सेना को मजबूत करना था और सेना का एक विभाग स्थापित करना था जिसे दीवान-ए-अर्ज़ कहा जाता था** ।
- बलबन का मानना था कि राजत्व का गौरव केवल **फ़ारसी परंपरा का** पालन करके ही संभव है , जिसका उन्होंने अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में बहुत सावधानी से पालन किया। बलबन ने वंशावली पर बहुत ज़ोर दिया और पौराणिक तुर्की नायक अफ़रासियाब से अपनी वंशावली का दावा किया।
- बलबन **के राजत्व सिद्धांत और उसकी रक्त और लौह नीति ने उसे अच्छा लाभ दिया** । उसने दिल्ली सल्तनत की प्रतिष्ठा बढ़ाई।

Sijada

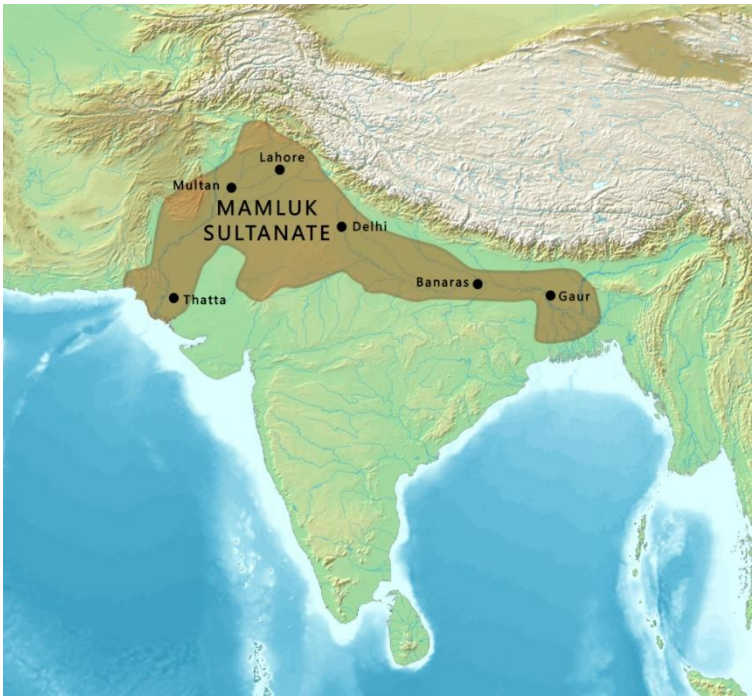

प्रशासन

- **दिल्ली सल्तनत के विस्तार के परिणामस्वरूप एक शक्तिशाली और कुशल प्रशासन व्यवस्था का उदय हुआ** । सुल्तान प्रशासन का मुखिया और एक निश्चित क्षेत्र का स्वतंत्र शासक होता था। शाही परिवार की देखभाल के लिए कई अधिकारी होते थे।
- **दीवान-ए-वजीरत के प्रमुख के रूप में वजीर** , केन्द्रीय प्रशासन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था।
- वजीरत राजस्व संग्रह का आयोजन करता था, व्यय पर नियंत्रण रखता था, लेखा-जोखा रखता था, वेतन वितरित करता था और **सुल्तान के आदेश पर राजस्व आवंटन (इकरा) करता था।**
- दीवान **-ए-अर्ज या सैन्य विभाग का प्रमुख अरिज-ए-मुमालिक होता था** । वह सैन्य मामलों के प्रशासन के लिए ज़िम्मेदार होता था। वह इक्ता-धारकों द्वारा रखे गए सैनिकों का निरीक्षण करता था।

कला और वास्तुकला

- मामलुक वंश ने अपने शासनकाल में कई भव्य स्मारक और इमारतें बनवाईं। मामलुक या गुलाम वंश द्वारा निर्मित कुछ महत्वपूर्ण इमारतों में शामिल हैं:

- कुतुब **परिसर** ,
- **कुतुब मीनार,**
- **इल्तुतमिश का मकबरा,**
- **बलबन का मकबरा,**
- **कुव्वत उल-इस्लाम मस्जिद,**
- **नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा,**
- **Adhai Din ka Jhonpara etc.**

राजवंश का महत्व

- मामलुक वंश के सुल्तानों का **वास्तुकला के क्षेत्र** में सबसे बड़ा योगदान था। भारतीय और इस्लामी परंपराओं के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण से एक **इंडो-इस्लामिक वास्तुकला शैली विकसित हुई।**

- राजनीतिक रूप से, गुलाम राजवंश ने वह नींव रखी जिस पर बाद के खिलजी और तुगलक जैसे राजवंशों ने एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित किया।

खिलजी (1290-1320 ई.)

- गुलाम **सुल्तानों के बाद 1290 ई. में खिलजी नामक राजाओं का एक नया राजवंश स्थापित हुआ।** उनके विद्रोह का कुलीन वर्ग के गैर-तुर्की वर्गों ने स्वागत किया।
- खिलजी वंश का नाम अफ़ग़ानिस्तान के एक गाँव के नाम पर रखा गया था, लेकिन असल में वे **मूल रूप से तुर्की** थे । खिलजी वंश के राजा अपनी बेवफ़ाई और क्रूरता के लिए जाने जाते थे।

Jalal-ud-din Khalji (1290-96 AD)

- **जलालुद्दीन खिलजी, खिलजी वंश का संस्थापक था।** जब वह गद्दी पर बैठा तो उसकी आयु सत्तर वर्ष थी। वह दिल्ली सल्तनत का पहला शासक था जिसका मानना था कि राज्य शासितों के स्वैच्छिक समर्थन पर आधारित होना चाहिए, और चूँकि अधिकांश भारतीय हिंदू थे, इसलिए भारत वास्तव में एक इस्लामी राज्य नहीं हो सकता।
- **जलालुद्दीन ने सहिष्णुता की नीति के द्वारा कुलीन वर्ग की सद्भावना जीतने की कोशिश की** । हालाँकि जलालुद्दीन ने अपने प्रशासन में पहले के कुलीन वर्ग को बरकरार रखा, लेकिन खिलजी के सत्ता में आने से उच्च पदों पर कुलीन वर्ग के दासों का एकाधिकार समाप्त हो गया।
- **जलालुद्दीन एक धर्मनिष्ठ मुसलमान था और स्वयं को मुजाहिद फी सबीलिल्लाह (ईश्वर के मार्ग में योद्धा)** मानना चाहता था ।
- उन्होंने **किलोखरी में अपनी राजधानी बनाई,** जहाँ से उन्होंने लगभग छह वर्षों तक शासन किया। हालाँकि उन्हें **मंगोलों के कई हमलों का** सामना करना पड़ा , लेकिन उनके बहादुरी भरे मोर्चे और चतुराईपूर्ण बातचीत के कारण मंगोलों की हार हुई। उन्होंने अपने विरुद्ध विद्रोह करने वालों को भी कठोर दंड नहीं दिया। उन्होंने न केवल उन्हें क्षमा किया, बल्कि उनका समर्थन पाने के लिए कई बार उन्हें पुरस्कृत भी किया। हालाँकि, लोग उन्हें एक कमज़ोर सुल्तान मानते थे।
- जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना **उसके दामाद अलाउद्दीन खिलजी,** जो उसका भतीजा भी था, द्वारा देवगिरी पर आक्रमण था। **अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी पर सफलतापूर्वक आक्रमण किया और अतिरिक्त धन इकट्ठा किया** । उसने **जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दी और गद्दी पर बैठा।**

Alauddin Khalji (1296-1316 AD)

- अलाउद्दीन खिलजी, **खिलजी वंश का दूसरा और सबसे शक्तिशाली शासक** था । वह दूसरा सिकंदर बनकर दुनिया पर विजय प्राप्त करना चाहता था। जलालुद्दीन के शासनकाल में अलाउद्दीन ने दो विजयी अभियान किए। इन सफल अभियानों ने साबित कर दिया कि अलाउद्दीन एक कुशल सेनापति और कुशल संगठनकर्ता था।
- जुलाई 1296 ई. में **, उसने अपने चाचा और ससुर जलालुद्दीन खिलजी की हत्या कर दी और खुद को सुल्तान घोषित कर दिया** । अलाउद्दीन ने बलबन की निरंकुश शासन नीतियों को पुनर्जीवित करने का निर्णय लिया। अपने शासन के शुरुआती वर्षों में उसे लगातार कुछ विद्रोहों का भी सामना करना पड़ा।
- **तारीख-ए-फिरोज शाही के लेखक बरनी के अनुसार** , अलाउद्दीन ने महसूस किया कि इन विद्रोहों के **चार कारण** थे :
  - जासूसी प्रणाली की अकुशलता,
  - शराब के उपयोग की सामान्य प्रथा,
  - कुलीनों के बीच सामाजिक मेलजोल और उनके बीच अंतर्विवाह
  - कुछ कुलीन लोगों के पास अत्यधिक धन होना।
- वह दिल्ली का पहला तुर्की सुल्तान था जिसने **धर्म को राजनीति से अलग रखा** । उसने **घोषणा की, "राजत्व में रिश्तेदारी का कोई महत्व नहीं होता।"** "जब उसे राजत्व प्राप्त हुआ, तो वह शरीयत के नियमों और आदेशों से पूरी तरह स्वतंत्र हो गया।" बरनी ने यह कथन अलाउद्दीन खिलजी के लिए दिया था।
- **अलाउद्दीन ने हजार स्तंभों वाला महल** भी बनवाया जिसे हजार सुतुन कहा जाता है ।

- **नकद में भू-राजस्व** की वसूली ने अलाउद्दीन को अपने सैनिकों को नकद भुगतान करने में सक्षम बनाया। ऐसा करने वाला वह पहला सुल्तान था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने **सिकंदर-ए-सानी (सिकंदर महान) की उपाधि** धारण की और इसे अपने सिक्कों पर अंकित करवाया। अलाउद्दीन की एक नया धर्म शुरू करने की महत्वाकांक्षा थी, लेकिन अपने वफादार दोस्त अल्ला-उई-मुल्क की सलाह पर उसने यह विचार त्याग दिया।
- **1303 में, अलाउद्दीन ने वारंगल पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन** काकतीय वंश **की सेना ने उसे पराजित कर दिया।** अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय देवगिरि के शासक रामचंद्र देव थे। मलिक काफूर ने देवगिरि (1307) को लूटा और रामचंद्र देव को उनके रिश्तेदारों सहित दिल्ली ले गया। **अलाउद्दीन ने रामचंद्र देव के साथ अच्छा व्यवहार किया और उन्हें 'राय रायन' की उपाधि दी।**
- अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में **खालिसा भूमि का** बड़े पैमाने पर विकास हुआ। अलाउद्दीन खिलजी ने **भू-राजस्व को उपज का आधा निर्धारित किया।** सार्वजनिक **वितरण प्रणाली की** शुरुआत सल्तनत काल में अलाउद्दीन खिलजी ने की थी।
- अलाउद्दीन काल में **सिंधु नदी दिल्ली सुल्तान और मंगोल के बीच की सीमा थी।**

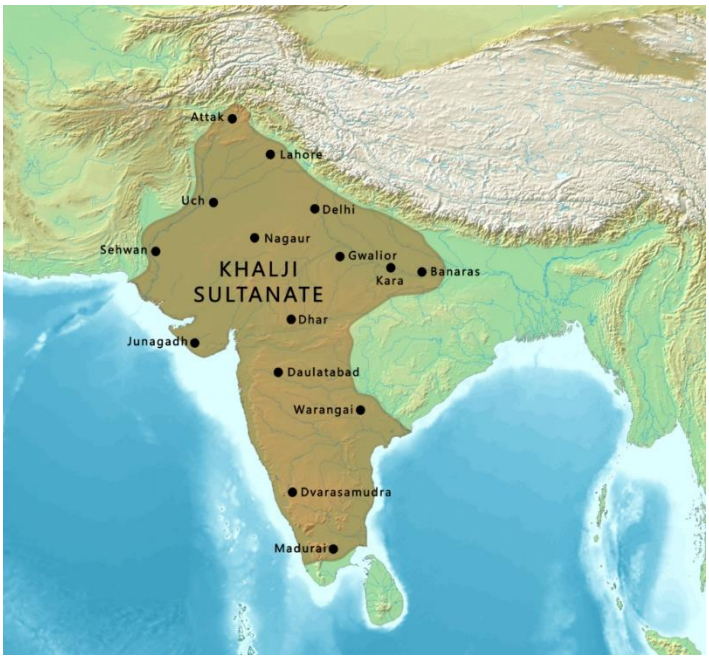

सल्तनत का विस्तार

- **मलिक काफूर** अलाउद्दीन खिलजी की सेना का जनरल बन गया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1302 और 1303 ई. के बीच **दो अभियान चलाये, पहला वारंगल के विरुद्ध और उसके बाद चित्तौड़ के विरुद्ध।**
- अलाउद्दीन खिलजी ने मारवाड़ और जालौर के सबसे महत्वपूर्ण गढ़ सिवाना को भी जीत लिया।
- **अलाउद्दीन खिलजी दक्षिण भारत गया और मदुरै तथा रामेश्वरम की संपत्ति लूट ली।** वह उत्तर भारत का पहला शासक था जिसने नर्मदा नदी के दक्षिण तक अपना राज्य बढ़ाया।

प्रशासनिक प्रणाली

- अलाउद्दीन खिलजी ने **एक कुशल शासन प्रणाली की नींव** रखी । उनका दृढ़ विश्वास था कि **राज्य के मामलों में किसी का भी हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए** । यहाँ तक कि उलेमाओं (मुस्लिम विद्वानों का एक समूह जो इस्लामी पवित्र कानून और धर्मशास्त्र के विशेषज्ञ माने जाते हैं) को भी हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं थी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने साम्राज्य को सुदृढ़ और शक्तिशाली बनाने के लिए कई सुधार लागू किए। उसने **आदेश जारी किए कि सरदार बिना पूर्व अनुमति के सामाजिक समारोह या अंतर्विवाह न करें** ।

खिलजी वंश के बाजार सुधार

- **बाज़ारों पर नियंत्रण के लिए** अलाउद्दीन के उपाय दुनिया के महान आश्चर्यों में से एक थे। **कीमतों का नियंत्रण** , खासकर खाद्यान्नों का, मध्ययुगीन शासकों की निरंतर चिंता का विषय था, क्योंकि शहरों में सस्ते खाद्यान्न की आपूर्ति के बिना, वे नागरिकों और वहाँ तैनात सेना का समर्थन प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकते थे। लेकिन अलाउद्दीन के पास बाज़ार को नियंत्रित करने का एक और कारण था। **मंगोलों से खतरे को रोकने के लिए एक लंबी सेना तैयार करना** आवश्यक था । लेकिन ऐसी सेना जल्द ही उसके खजाने को खाली कर देती, जब तक कि वह कीमतें कम न कर दे और इस प्रकार उनके वेतन कम न कर दे।

- अलाउद्दीन खिलजी ने **राजस्व वसूली के लिए विशेष अधिकारी** नियुक्त किया । राजस्व भूमि की माप के आधार पर वसूला जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने विभिन्न बाजार सुधारों की शुरुआत की और **दिल्ली में विभिन्न बाजार स्थापित किए।** ये बाजार थे अनाज मंडी (मंडी), कपड़ा बाजार (सराय आदिल), चीनी, सूखे मेवे और मक्खन का बाजार, और घोड़ों, दासों और मवेशियों का बाजार।
- प्रत्येक बाजार **शाहना-ए-मंडी नामक अधिकारी** के अधीन होता था , जिसकी सहायता के लिए एक खुफिया अधिकारी होता था।
- **अलाउद्दीन खिलजी को बाजार की दैनिक रिपोर्ट दो स्वतंत्र स्रोतों, मुन्हियानों (गुप्त जासूस) और बरीद (खुफिया अधिकारी)** से प्राप्त होती थी ।
- अलाउद्दीन खिलजी बाजार के नियमों और विनियमों के प्रति बहुत सख्त था और उल्लंघन करने पर कठोर दंड दिया जाता था।

सैन्य सुधार

- अलाउद्दीन खिलजी ने बहुत कुशल **जासूसी प्रणाली** का आयोजन किया ।
- अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का पहला शासक था जिसने मंगोल आक्रमणों से देश की रक्षा के लिए तुर्की मॉडल पर आधारित **स्थायी सेना की नींव रखी।**
- अलाउद्दीन खिलजी ने **घोड़ों पर दाग लगाने की प्रणाली** शुरू की और सैनिकों की सूची भी बनाई।
- अलाउद्दीन खिलजी ने हथियारों और अन्य युद्ध सामग्री के निर्माण के लिए विभिन्न कार्यशालाएँ और कारखाने स्थापित किए। सैनिकों को घोड़ों और हथियारों से सुसज्जित किया गया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-पश्चिमी सीमा पर बलबन द्वारा निर्मित किले की मरम्मत करवाई तथा नए किले भी बनवाए, जिनमें सेना की तैनाती की गई तथा हथियारों, भोजन और चारे की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था की गई।

राजस्व सुधार

- अलाउद्दीन खिलजी ने स्वयं **प्रत्येक वस्तु की कीमत का प्रबंधन किया और यह सुनिश्चित किया कि मांग और आपूर्ति के बीच एक स्थायी संतुलन बना रहे।**
- अलाउद्दीन खिलजी ने सख्त नियम बनाए ताकि किसान अनाज जमा न कर सकें और न ही उसे निजी तौर पर बेच सकें। वस्तुओं की कीमतें नाममात्र की रखी गईं जिन्हें सभी लोग वहन कर सकें।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सम्पूर्ण भूमि की पैमाइश का आदेश दिया और फिर राज्य को हिस्सा तय किया।

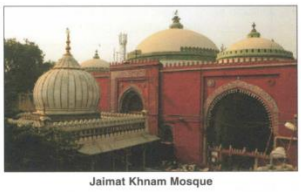
Jaimat Khnam Mosque

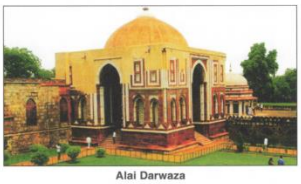
Alai Darwaza

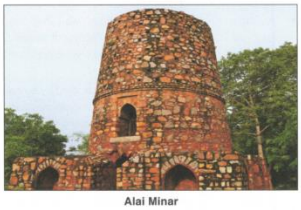
Alai Minar

कला और वास्तुकला

- खिलजी वंश ने मध्यकालीन स्थापत्य कला के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की। खिलजी वंश के अधिकांश स्मारक **अरबी शैली की स्थापत्य कला** पर आधारित थे । अलाउद्दीन ने कुतुब मीनार के पास एक विशाल मीनार का निर्माण करवाया, लेकिन उसकी मृत्यु के कारण यह महत्वाकांक्षा अधूरी रह गई।
- **अलाई-दरवाज़ा** इस्लामी वास्तुकला की एक और उल्लेखनीय इमारत थी। इसका निर्माण **लाल पत्थर से हुआ था और** पूरी सतह पर सफ़ेद रंग की परत थी। अलाई-दरवाज़ा पर **सुलेख और सजावटी डिज़ाइन** भी थे ।
- अलाउद्दीन ने सिरी गाँव के पास प्रसिद्ध **हौज़ खास का** निर्माण करवाया । महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध मस्जिद, **जयमत खाना,** निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह के परिसर में ही बनाई गई थी।

अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो को अमीर खुसरो के नाम से जाना जाता था। उनका जन्म 1253 ई. में एटा जिले के पटियाली में हुआ था। **खुसरो खुद को 'तूती-ए-हिंद'** (भारत का तोता) कहते थे। **खड़ी बोली के विकास में अमीर खुसरो की**

अग्रणी भूमिका रही । अमीर खुसरो को नई फ़ारसी काव्य शैली 'सबक-ए-हिंद' का जनक माना जाता है। संगीत वाद्य **'तबला'** का प्रचलन अमीर खुसरो ने ही किया था।

तुगलक (1320-1412 ई.)

- तुगलक **वंश की स्थापना गाजी मलिक ने की थी, जो 1320 ई. में गयासुद्दीन तुगलक के रूप में सिंहासन पर बैठा और इस वंश ने 1412 ई. तक शासन किया । अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल** में गयासुद्दीन एक महत्वपूर्ण पद पर आसीन हुआ ।
- हालाँकि, एक संक्षिप्त शासन के बाद, **1325 ई. में गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गई** और **उसका पुत्र मुहम्मद तुगलक गद्दी पर बैठा**। तुगलकों के अधीन, दिल्ली सल्तनत को और सुदृढ़ किया गया।

गियास-उद-दीन तुगलक (1320-25 ई.)

- **ग़यासुद्दीन तुगलक या गाज़ी मलिक तुगलक वंश का संस्थापक था**। वह एक कुशल प्रशासक और कुशल शासक था। हालाँकि वह एक कट्टर मुसलमान था, फिर भी उसने हिंदुओं पर कभी अत्याचार नहीं किया।
- ग़यासुद्दीन तुगलक को दिल्ली के प्रसिद्ध **तुगलकाबाद किले** के लिए भी जाना जाता है । उसने अपने शासनकाल में संचार, परिवहन और डाक व्यवस्था में सुधार किया। उसे **वारंगल और बंगाल पर विजय प्राप्त करने के लिए जाना जाता** है ।
- गियासुद्दीन तुगलक की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई जिसके बाद उसका पुत्र **मुहम्मद बिन तुगलक गद्दी पर बैठा।**

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.)

- 1325 ई. में गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मुहम्मद बिन तुगलक या जौना खान सत्ता में आया।
- वह दिल्ली सल्तनत के **सबसे विवादास्पद शासकों में से एक थे। उन्होंने कई महत्वाकांक्षी योजनाएँ और प्रयोग शुरू किए, लेकिन उनमें से अधिकांश असफल साबित हुए** । वह अरबी और फ़ारसी के विद्वान थे और धार्मिक मामलों में सहिष्णुता रखते थे।

सुधार

- **पूंजी का हस्तांतरण:**
  - मुहम्मद बिन तुगलक **ने अपनी राजधानी दिल्ली से दक्कन के देवगीर में स्थानांतरित कर दी और इसका नाम बदलकर दौलताबाद रख दिया**।
  - कई कुलीन, धार्मिक पुरुष और शिल्पकार नई राजधानी में स्थानांतरित हो गए। मुहम्मद बिन तुगलक ने **दिल्ली से देवगीर तक एक सड़क बनवाई** और लोगों के लिए विश्राम गृह भी बनवाए।
  - कठिन यात्रा और गर्मी के कारण कई लोगों की मृत्यु हो गई। इससे लोगों को भारी कठिनाई और भारी आर्थिक नुकसान हुआ। पाँच महीने के भीतर ही पूरी योजना रद्द कर दी गई क्योंकि राजधानी वापस दिल्ली स्थानांतरित कर दी गई।
- **टोकन मुद्रा का परिचय:**
  - मुहम्मद बिन तुगलक ने भारत में **चाँदी की कमी को दूर करने के लिए चाँदी के सिक्कों (टंका) के समान मूल्य के काँसे के सिक्के या जित्तल चलाए**। उसने आदेश दिया कि काँसे के सिक्कों को टंका के बराबर माना जाए।
    - **बरनी** के अनुसार , राजा को सांकेतिक मुद्रा शुरू करने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि सुल्तान की विजय नीति और असीम उदारता के कारण सरकारी खजाना खाली हो गया था।
  - मुहम्मद बिन तुगलक ने राज्य के लिए नए सिक्के जारी करने पर कोई रोक नहीं लगाई और न ही उनका अधिकार सुरक्षित रखा, इसलिए **लोगों ने अपने घरों में ही सांकेतिक मुद्रा ढालनी शुरू कर दी।** बड़े पैमाने पर नकली और जाली सिक्के बाज़ार में प्रचलन में आ गए। परिणामस्वरूप, कांसे के सिक्कों का मूल्य तेज़ी से गिर गया और लोगों ने उन्हें अस्वीकार कर दिया, जिससे व्यापार में और भी हानि हुई। जाली ढलाई से शाही खजाने को भारी नुकसान हुआ। कांसे के सिक्के 1329-1332 ई. तक तीन वर्षों तक प्रचलन में रहे। **अंततः सरकार को कांसे के जित्तल सिक्के वापस लेने और बदले में सोने और चांदी के सिक्के या टंका जारी करने के लिए मजबूर होना पड़ा** ।
- **गंगा यमुना दोआब में करों में वृद्धि:**

- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी सेना के खर्चों को पूरा करने के लिए गंगा और दोआब क्षेत्र में **भूमि कर बढ़ा दिया ।**
- क्षेत्र में अकाल के कारण बढ़े हुए राजस्व का भुगतान न कर पाने के कारण **कई किसानों ने मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह कर दिया । अंततः मुहम्मद बिन तुगलक ने अपने आदेश को रद्द कर दिया।**

- **खुरासान अभियान:**

- खुरासान अभियान मुहम्मद बिन तुगलक की **विवादास्पद परियोजना थी, जिसे उसने 1330-31 ई. में शुरू किया था** । इस अभियान का सटीक भौगोलिक स्थान स्पष्ट नहीं था। हालाँकि, बरनी का मानना था कि यह **इराक** में था । मुहम्मद बिन तुगलक ने खुरासान क्षेत्र में अभियान के लिए विशाल सेना जुटाई थी। ऐसा कहा जाता है कि मुहम्मद बिन तुगलक और तरमाशिरीन के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित होने के कारण खुरासान अभियान रद्द कर दिया गया था।
  - **बरनी** के अनुसार , खुरासान सेना की एक टुकड़ी को कराचिल भेजा गया था। यह परियोजना 1337-39 ई. में शुरू हुई थी। कराचिल क्षेत्र कांगड़ा जिले में हिमालय के मध्य में स्थित है।
  - **इब्न बतूता** के अनुसार , कराचिल का अभियान मुख्यतः राजपूत क्षेत्रों में चीनी अतिक्रमण को रोकने के लिए किया गया था।
- यह अभियान मुहम्मद बिन तुगलक की एक और बड़ी विफलता साबित हुआ, जिससे संसाधनों की भारी हानि हुई और लोगों तथा सल्तनत सेना में असंतोष फैल गया।

- **कृषि सुधार:**

- मुहम्मद बिन तुगलक ने **'दीवान-ए-कोही' नामक एक नया कृषि विभाग स्थापित किया।** उसने कृषि क्षेत्र से संबंधित सभी मुद्दों की देखभाल के लिए **अमीर-ए-कोही नामक कृषि मंत्री की नियुक्ति की।**
- मुहम्मद बिन तुगलक ने किसानों को **कृषि ऋण 'तकवी'** प्रदान करने का आदेश दिया । किसानों को खेती के लिए बीज की व्यवस्था करने में सहायता के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की गई। कृषि विभाग का मुख्य उद्देश्य भूमि की खेती को बढ़ाना और कृषि उपज की उत्पादकता बढ़ाना था।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक दिल्ली सल्तनत के सभी सुल्तानों में **सबसे विद्वान शासक था।**
- मुहम्मद-बिन-तुगलक ने **नए सिक्के** जारी किये , जिन्हें **इब्न बतूता ने दीनार कहा।**
- **डाक प्रणाली** का विस्तृत विवरण इब्न बतूता की यात्रा वृतांत से प्राप्त होता है।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक दिल्ली के सभी सुल्तानों में से पहला था जिसने **हिंदुओं के सार्वजनिक उत्सवों, विशेषकर होली में भाग लिया।**
- मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर **बदायुनी ने लिखा** कि राजा अपनी प्रजा से मुक्त हो गया और प्रजा अपने राजा से।
- फ़िरोज़ के काल में ही जिज़िया एक अलग कर बन गया। पहले यह भू-राजस्व का एक हिस्सा था।

फ़िरोज़ शाह तुगलक (1351-88 ई.)

- **मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के बाद, उसका चचेरा भाई फिरोज शाह तुगलक** तुगलक वंश का अगला सुल्तान बना। फिरोज शाह तुगलक को कुलीनों और धर्मशास्त्रियों का समर्थन प्राप्त था। वह एक **दयालु व्यक्ति** था जो कठोर दंड के पक्ष में नहीं था। उसने अपने पूर्ववर्ती द्वारा दिए गए **किसानों के ऋण माफ कर दिए ।**
- फ़िरोज़ शाह तुगलक ने **दीवान-ए-ख़ैरात (दान विभाग) और दीवान-ए-बंदगान (दासों का विभाग) की स्थापना की** और **इक्तादारी व्यवस्था को वंशानुगत भी बनाया** । उसने **करख़ाना नामक शाही कारखाने** विकसित किए जिनमें हज़ारों दास काम करते थे।
- उनका शासनकाल अनेक **सार्वजनिक कार्यों** के लिए भी जाना जाता है । फ़िरोज़ शाह तुगलक ने **सिंचाई के लिए नहरें बनवाईं** और **चार नए शहर बसाए - जौनपुर, हिसार, फ़तेहाबाद और फिरोज़ाबाद** । उनके शासनकाल में विभिन्न स्थानों पर लगभग तीन सौ नए शहर बसाए गए। उन्होंने अपने शासनकाल में लगभग 845 सार्वजनिक कार्य किए।
- वह **किसानों के प्रति नरम थे।** उन्होंने किसानों को क्लीन चिट देने के लिए किसानों के कर्ज के सभी सार्वजनिक रिकॉर्ड नष्ट कर दिए।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक ने **हिंदुओं के प्रति असहिष्णुता** दिखाई और **ब्राह्मणों पर जजिया कर भी लगाया** । उसके शासनकाल में **कई हिंदू मंदिरों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया।**

- फिरोज शाह तुगलक ने गरीबों के लिए **'दार-उल-शफा' नामक निःशुल्क अस्पताल की स्थापना की।**
- उन्होंने **अशोक के एक स्तम्भ को** उसके मूल स्थान से हटाकर **दिल्ली में स्थापित किया।**
- फ़िरोज़ तुगलक पहला शासक था जिसने **हिंदू धार्मिक ग्रंथों का संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद कराने के लिए कदम उठाए।**
- फ़िरोज़ तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने **हक़-ए-शर्ब या सिंचाई कर लगाया था।**
- फ़िरोज़ तुगलक राज्य के खजाने से **हज यात्रा का आयोजन करने** वाला पहला शासक था ।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक दिल्ली सल्तनत का अंतिम महान शासक था। **हिंदुओं के प्रति उसकी असहिष्णुता** की नीति ने उसे हिंदू समुदाय के बीच कम लोकप्रिय और प्रतिकूल बना दिया।

तुगलक प्रशासन

- तुगलक का प्रशासन अधिक टिकाऊ प्रकृति का था। प्रशासन की पद्धति शासक दर शासक भिन्न होती थी।
- **फ़िरोज़ शाह तुगलक** का शासनकाल उल्लेखनीय माना जाता है। उन्होंने प्रशासन के सुचारू संचालन के लिए **उलेमाओं की सलाह का पालन किया । कुलीनों को उनकी संपत्ति का वंशानुगत उत्तराधिकार सुनिश्चित किया गया** । प्रसिद्ध **इक्ता प्रणाली को पुनर्परिभाषित किया गया और उसे वंशानुगत बनाया गया** । अट्ठाईस से अधिक वस्तुओं पर विशेष कर समाप्त कर दिए गए क्योंकि वे इस्लामी कानून का उल्लंघन करते थे।

तुगलक कला और वास्तुकला

- तुगलक वंश ने कला और स्थापत्य कला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह काल **इस्लामी स्थापत्य कला के प्रभुत्व और पुनर्खोज का** काल रहा । विभिन्न विशेषज्ञों और उस्तादों को एक नए साम्राज्य के निर्माण के लिए बुलाया गया जो इंडो-इस्लामिक शैली में रचनात्मकता से परिपूर्ण था।
- इंडो **-इस्लामिक वास्तुकला शैली** इस्लामी और हिंदू वास्तुकला शैलियों का मिश्रण थी। तुगलक वंश की वास्तुकला, वंश के तीनों शासकों के शासनकाल में फली-फूली। प्रत्येक शासक ने अपने शासनकाल में अपनी स्थापत्य रचनात्मकता को इसमें जोड़ा।
- **फ़िरोज़ शाह तुगलक इस्लामी वास्तुकला के महान संरक्षक थे** । उन्होंने प्रसिद्ध **फ़िरोज़ शाह कोटला का निर्माण करवाया, जिसे दिल्ली का पाँचवाँ शहर** भी कहा जाता है ।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक ने **कुतुब मीनार की चौथी और पाँचवीं मंजिल का निर्माण** लाल बलुआ पत्थर और मकराना संगमरमर से करवाया था।
- **गयासुद्दीन तुगलक** के कार्यकाल में रोमन शैली पर आधारित प्रसिद्ध **तुगलकाबाद शहर का निर्माण हुआ। गयासुद्दीन का मकबरा एक** कृत्रिम झील के रूप में बनाया गया था, जिसे एक ऊंचे रास्ते से एक किले से जोड़ा गया था।
- तुगलक वंश का एक अन्य प्रसिद्ध शासक **मुहम्मद बिन तुगलक** था , जिसने पहले और दूसरे शहर को दीवार से जोड़कर **जहा-पाना का निर्माण करके योगदान दिया।**
- सल्तनत स्मारक में पहला सच्चा मेहराब बलबन के मकबरे में देखा जा सकता है।
- **भारत में इंडो-इस्लामिक शैली में निर्मित पहला मकबरा बलबन का मकबरा था।**
- घोड़े **की नाल के आकार का मेहराब सबसे पहले अलाई दरवाजे में बनाया गया था।**

Alai-Darwaza

कुतुब मीनार

राजवंश का महत्व

- तुगलक, दिल्ली सल्तनत के पाँच राजवंशों में से तीसरे थे जिन्होंने भारत पर शासन किया। उन्हें दिल्ली सल्तनत के सबसे शक्तिशाली राजवंशों में से एक माना जाता था। तुगलकों ने लगभग एक शताब्दी तक भारत पर शासन किया। तुगलकों के शासनकाल के दौरान भारत में विकास और समृद्धि का दौर रहा। तुगलकों ने **पूरे राज्य को सुदृढ़ बनाने और किसी भी विदेशी आक्रमण से उसकी रक्षा करने का** बीड़ा उठाया ।

- दूसरी ओर, तुगलकों को सम्राट द्वारा शुरू की गई **नकली मुद्रा के कारण भारी आर्थिक पतन का भी सामना करना पड़ा। तुगलक विचार और संस्कृति के आदान-प्रदान के संदर्भ में उत्तर और दक्षिण के एकीकरण के लिए भी जाने जाते थे**। तुगलक वंश को दिल्ली सल्तनत के अंतिम शक्तिशाली राजवंशों में से एक माना जाता था।
- फिरोज के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में दिल्ली का राजनीतिक नियंत्रण धीरे-धीरे कमज़ोर होता गया। **1398 ई. में तैमूर के आक्रमण ने सल्तनत को उजाड़ दिया**। **तुगलक शासन के अंत (1412 ई.) तक, सल्तनत उत्तर भारत के एक छोटे से क्षेत्र तक सीमित रह गई थी**। इस दौरान कई क्षेत्रों ने स्वतंत्र दर्जा प्राप्त कर लिया।

सैय्यद राजवंश (1414-51 ई.)

- तुगलक वंश के अंत के बाद, **सैय्यद वंश सत्ता में आया जिसके चार शासकों ने 1414 से 1451 तक शासन किया**। **तैमूर ने दिल्ली की सेना को हराने के बाद, खिज्र खाँ को मुल्तान का गवर्नर नियुक्त किया**।
- तारीख-ए-मुबारक शाही के अनुसार, सैय्यद वंश के संस्थापक पैगंबर मोहम्मद के वंशज थे। दिल्ली सल्तनत के सभी राजवंशों में सैय्यद वंश का **कार्यकाल सबसे छोटा था।**

Khizr Khan (1414-21 AD)

- **खिज्र खाँ सैय्यद वंश का संस्थापक था**। उसे तैमूर के बाद सबसे योग्य शासक माना जाता था। **खिज्र खाँ ने सुल्तान दौलत खाँ को हराकर दिल्ली पर कब्ज़ा किया और सैय्यद वंश की स्थापना की**। उसने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की, लेकिन रयात-ए-आला से संतुष्ट था।
- खिज्र खाँ के अधीन सत्ता का विस्तार पंजाब और दोआब से आगे नहीं बढ़ा। **खिज्र खाँ की मृत्यु के बाद मुबारक शाह और मुहम्मद शाह एक के बाद एक गद्दी पर बैठे**। इन सभी शासकों ने कटिहार, बदायूँ, इटावा, पटियाली, ग्वालियर, कम्पिल, नागौर और मेवात जैसे विद्रोही क्षेत्रों पर नियंत्रण करने की कोशिश की, लेकिन सरदारों के षडयंत्र के कारण वे असफल रहे।
- **राजवंश का अंतिम शासक आलम शाह अयोग्य साबित हुआ और उसने अपना सिंहासन बहलुल लोदी को सौंप दिया,** जो उस समय सिंध और लाहौर का गवर्नर था।

लोदी राजवंश (1451-1526 ई.)

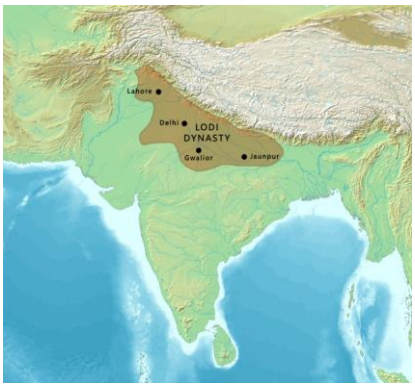

- लोदी **दिल्ली सल्तनत के अंतिम शासक थे** और अफ़गानों के नेतृत्व में शासन करने वाले पहले शासक थे। लोदी साम्राज्य सैयदों के साम्राज्य से बड़ा था। उन्होंने सल्तनत में एक बड़ी सेना का गठन किया। **लोदी पंजाब और ऊपरी गंगा घाटी के क्षेत्र पर प्रभुत्व रखते थे**। लोदी **बेहलुई सिक्कों के लिए जाने जाते** थे जो अकबर के कार्यकाल तक जारी रहे।
- इसके अलावा, **माप का मानक जिसे गज-ए-सिकंदरी के नाम से जाना जाता है,** मुगलों तक लागू रहा।
- लोदी वंश के तीन मुख्य शासक शामिल हैं:
  - बहलुल लोदी
  - Sikandar Lodi
  - इब्राहिम लोदी

बहलुल लोदी (1451-89 ई.)

- बहलुल लोदी **1451 ई. में लोदी वंश का संस्थापक था। उसने 1489 ई. तक** दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। वह एक महान सैनिक और योग्य सेनापति था। उसने कुलीनों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे।
- **बहलुल लोदी के शासनकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि जौनपुर राज्य का** अंततः विलय था। बहलुल लोदी ने ग्वालियर, जौनपुर और ऊपरी उत्तर प्रदेश तक अपने क्षेत्र का विस्तार किया। उसने **संपूर्ण शर्की साम्राज्य पर भी कब्ज़ा कर लिया** और **बहलुली सिक्के जारी करने** के लिए जाना जाता है ।

- बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद **सिकंदर लोदी गद्दी पर बैठा।**

Sikandar Lodi (1489-1517 AD)

- बहलोल लोदी की मृत्यु के बाद सिकंदर लोदी गद्दी पर बैठा। वह **लोदी वंश का दूसरा शासक** था और **उसने 1489 ई. से 1517 ई. तक शासन किया**।
- सिकंदर लोदी का असली नाम **निज़ाम शाह था और उसे 'सुल्तान सिकंदर शाह'** भी कहा जाता था । उसे एक **कुशल प्रशासक** माना जाता था जिसने सड़कें बनवाईं और सिंचाई सुविधाओं को बढ़ावा दिया। उसके शासनकाल में वस्तुओं की कीमतें बहुत सस्ती थीं।
- सिकंदर लोदी **सुल्तान की स्थिति को सरदारों से श्रेष्ठ मानता था**। उसने सरदारों और अमीरों को दरबार में और बाहर सुल्तान के प्रति औपचारिक सम्मान दिखाने के लिए बाध्य किया और उनके साथ कठोर व्यवहार किया।
- उसने बिहार, धौलपुर, नरवर और ग्वालियर व नागौर के कुछ हिस्सों को दिल्ली सल्तनत में पुनः मिला लिया। उसने **भूमि की पैमाइश के लिए 'गज-ए-सिकंदरी' प्रथा** भी शुरू की और **अनाज पर चुंगी शुल्क समाप्त कर दिया**।
- सिकंदर लोदी ने गंगा घाटी से लेकर पश्चिमी बंगाल तक नियंत्रण किया और **अपनी राजधानी दिल्ली से नए शहर में स्थानांतरित की, जो बाद में आगरा शहर के रूप में प्रसिद्ध हुआ**।
- **वह मंदिरों के विध्वंस** में लिप्त था। उसने गैर-मुसलमानों के प्रति बहुत कम सहिष्णुता दिखाई **और उन पर जजिया कर पुनः लगा दिया**।
- **सिकंदर लोदी ने गुलरुखी** उपनाम से कविताएँ लिखीं ।
- **1517 ई. में उसका पुत्र इब्राहिम लोदी गद्दी पर बैठा**।

इब्राहिम लोदी (1517-26 ई.)

- इब्राहिम लोदी **लोदी वंश का अंतिम शासक** था , जिसने 1517 ई. में अपने पिता सिकंदर लोदी का स्थान लिया।
- उनके कार्यकाल में **उनके अधिकारियों और सरदारों ने कई विद्रोह किए**। उनके अपने भाई जलाल खान ने उनके खिलाफ विद्रोह कर दिया, जिसके बाद इब्राहिम लोदी ने जलाल खान की हत्या करवा दी। बिहार के गवर्नर ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- **खातोली का युद्ध** 1518 में महाराणा सांगा और इब्राहिम लोदी के बीच लड़ा गया था। इब्राहिम लोदी को महाराणा सांगा ने बुरी तरह हराया था।
- पंजाब के गवर्नर **दौलत खान ने काबुल के शासक बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया**। बाबर ने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और दिल्ली की ओर कूच कर दिया। **1526 में पानीपत के युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया**। उसकी मृत्यु के साथ ही लोदी साम्राज्य का अंत हो गया और **बाबर ने मुगल साम्राज्य के नाम से प्रसिद्ध एक नए राजवंश की स्थापना की**।
- इस प्रकार, **दिल्ली सल्तनत, जिसका उदय 1192 ई. में तराइन के युद्धक्षेत्र में हुआ था, ने 1526 में, कुछ मील दूर पानीपत के युद्धक्षेत्र में अपनी अंतिम सांस ली।**

प्रशासन

- लोदी वंश के प्रशासन का **नेतृत्व वज़ीर करता** था , जिसे मुख्यमंत्री भी कहा जाता था। वज़ीर का पद राजस्व संग्रह, लेखा-जोखा रखने और व्यय के नियमन के लिए ज़िम्मेदार था। **वज़ीर के पद को दीवान-ए-वज़ीरत भी कहा जाता था। वज़ीर की सहायता के लिए मुशरिफ-ए-ममालिक (लेखाकार) होता था,** जो खातों का रिकॉर्ड रखता था और **मुस्तौफ-ए-ममालिक (लेखा परीक्षक) होता था,** जो इस खाते का लेखा-जोखा करता था।
- लोदी वंश के दौरान, प्रांतों को शिकदारों के प्रशासन के अधीन **शिकों में विभाजित किया गया था । प्रांतों को आगे परगना** (सौ गाँवों का समूह) में विभाजित किया गया था, **जिसका प्रमुख चौधरी होता था**। सभी इकाइयों में, गाँव प्रशासन की **सबसे छोटी इकाई थी ।**
- **दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग)** लोदी वंश का एक अन्य महत्वपूर्ण विभाग था जिसका **नेतृत्व अरिज-ए-ममालिक करता** था जो सैनिकों के निरीक्षण, भर्ती और भुगतान के लिए जिम्मेदार था।

- लोदी वंश ने **दीवान-ए-इंशा** के कार्यालय के तहत **दबीर-ए-इंशा की अध्यक्षता में शाही पत्राचार का प्रबंधन किया।**

साहित्य

- लोदी वंश के शासकों ने साहित्य को विशेष महत्व दिया। **साहित्य का सृजन न केवल फ़ारसी और संस्कृत में, बल्कि अन्य धार्मिक भाषाओं में भी हुआ। सल्तनत के शासकों ने विभिन्न विद्वानों को आश्रय दिया जिन्होंने ऐतिहासिक और धार्मिक साहित्य का सृजन किया। ये पुस्तकें गद्य, नाटक और पद्य** के रूप में लिखी गईं ।

कला और वास्तुकला

- **मेहराब और गुंबद का डिज़ाइन** लोदी वंश की विशेष विशेषता थी जो उत्तर भारत में प्रमुख हो गया।
- सजावट **ज्यामितीय और पुष्प डिज़ाइनों और कुरान की आयतों का** उपयोग करके की गई थी । लोदी वंश ने अपने मृत नेताओं को समर्पित कई स्मारक बनवाए। लोदी वंश काल को **तांडव काल के रूप में भी जाना जाता है।**
- राजधानी के चारों ओर बड़ी संख्या में मकबरे और पार्क बनाए गए। **सिकंदर लोदी का मकबरा लोधी उद्यान के भीतर बनाया गया था** ।
- Other famous architecture of Lodi dynasty include **Bade Khan ka Gumbad, Chhote Khan ka Gumbad, Bada Gumbad, the tomb of Shihab-ud-din Taj Khan, poli ka Gumbad.**
- ललितपुर का मकबरा **, जिसे जामा मस्जिद के नाम से जाना जाता है,** लोदी वंश की प्रतिष्ठित इस्लामी वास्तुकला में से एक था।

दिल्ली सल्तनत: चुनौतियाँ

- दिल्ली सल्तनत ने तीन सौ से ज़्यादा वर्षों तक भारत पर राज किया, जिसके बाद मुग़ल साम्राज्य ने भारत पर अपनी मज़बूत पकड़ बनाई। दिल्ली सल्तनत ने कई सफलताएँ और असफलताएँ झेलीं, लेकिन अंततः एक राजनीतिक शक्ति के रूप में बची रही।

कुलीन वर्ग के बीच आंतरिक संघर्ष

- दिल्ली सल्तनत पर पाँच राजवंशों का शासन रहा, जिन्होंने लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया। **सुल्तान और कुलीन वर्ग के बीच निरंतर संघर्ष** राजवंशों के परिवर्तन और शासकों के अपदस्थ होने का मुख्य कारण था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के युद्ध में इल्तुतमिश विजयी हुआ। **इल्तुतमिश ने तुर्कान-ए-चिहालगानी (चालीस) नामक वफादार सरदारों का एक समूह बनाया।**
- **कुतुबुद्दीन ऐबक** की मृत्यु के बाद , **नासिरुद्दीन महमूद** गद्दी पर बैठा । एक अन्य सबसे शक्तिशाली शासक, **बलबन को** वास्तविक सुल्तान माना जाता था। नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद, वह उसका उत्तराधिकारी बना।
- चूंकि शासक के उत्तराधिकार को नियंत्रित करने के लिए कोई निश्चित कानून नहीं था, इसलिए कुलीन लोग या तो स्वयं को ताज पहनाने या अपने पसंदीदा उत्तराधिकारी का समर्थन करने का प्रयास करते थे।
- **अंततः बहलुल लोदी के सत्ता में आने के साथ ही अफगानों ने तुर्कों का स्थान ले लिया।**

मंगोलों और अन्य लोगों द्वारा हमला

- मंगोल आक्रमण से दिल्ली सल्तनत को **गंभीर ख़तरा पैदा हो गया था । 12वीं शताब्दी में चंगेज खान के नेतृत्व में मंगोलों ने एक विशाल खानाबदोश साम्राज्य का** गठन किया ।
- बलबन और अलाउद्दीन खिलजी ने पूरी सैन्य शक्ति के साथ उनका सामना किया। खिलजी शासन के दौरान, कुल्तलुग ख्वाजा के नेतृत्व में मंगोलों ने दिल्ली पर घेरा भी डाला जिससे भारी क्षति हुई।
- दिल्ली सल्तनत की नींव हिला देने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण आक्रमण 1398 ई . **में तैमूर द्वारा किया गया था।**
- तैमूर तुर्कों की चगताई शाखा का सरदार का पुत्र था। **तैमूर ने व्यापक नरसंहार का आदेश दिया और बड़ी संख्या में हिंदुओं और मुसलमानों, जिनमें बच्चे और महिलाएं भी शामिल थीं, की** हत्या कर दी गई।
- दिल्ली सल्तनत का पतन **तैमूर के आक्रमण के बाद शुरू हुआ** ।

भारतीय सरदारों द्वारा प्रतिरोध

- खिलजी और तुगलकों के बाद दिल्ली सल्तनत काफ़ी कमज़ोर हो गई थी। दिल्ली सल्तनत को नियमित अंतराल पर भारतीय सरदारों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। खिलजी और तुगलकों के सत्ता में आने के बाद, दिल्ली सल्तनत काफ़ी कमज़ोर हो गई थी।

- **1526 में बाबर के आक्रमण ने अंततः दिल्ली सल्तनत का अंत कर दिया।**

प्रांतीय राज्यों का उदय

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। हालाँकि फिरोज शाह तुगलक ने स्थिति को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन असफल रहा।
- इस अवधि के दौरान, कुछ प्रांतीय शासकों ने सल्तनत के शासन से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की, जिसका अगले अध्याय में विस्तार से वर्णन किया जाएगा।

गुलाम राजवंश

Qutb-ud-din Aibak	1206-10 ई.
आराम शाह	1211 ई.
शम्सुद्दीन इल्लुतमिश	1211-36 ई.
रुकनुद्दीन फिरोज	1236 ई.
सुल्तान का छापा	1236-40 ई.
मुइज़ुद्दीन बहराम	1242 ई.
अलाउद्दीन मसूद	1246 ई.
नसीरुद्दीन महमूद	1246-66 ई.
Ghiyasuddin Balban	1266-86 ई.
Mauzuddin Kaikubad	1290 ई.
Kaimur	1290 ई.

खिलजी राजवंश

जलालुद्दीन खिलजी	1290-96 ई.
Alauddin Khalji	1296-1316 ई.
शिहाबुद्दीन उमर	1316 ई.
Mubrak Khalji	1316-20 ई.
Khusro Khan	1320 ई.

तुगलक वंश

Ghiyasuddin Tughlaq	1320-24 ई.
मुहम्मद तुगलक	1324-51 ई.
फिरोज शाह तुगलक	1351-88 ई.

Mohammad Khan	1388 ई.
गयासुद्दीन तुगलक शाह द्वितीय	1388 ई.
अबू बक्र	1389-90 ई.
नसीरुद्दीन मुहम्मद	1390-94 ई.
हुमायूं	1394-95 ई.
नसीरुद्दीन महमूद	1395-1412 ई.

सैय्यद राजवंश

Khizr Khan	1414-20 ई.
मुबारक शाह	1421-33 ई.
मुहम्मद शाह	1434-43 ई.
अलाउद्दीन आलम शाह	1443-51 ई.

लोधी राजवंश

बहलुल लोधी	1451-89 ई.
Sikander Lodhi	1489-1517 ई.
Ibrahim Lodhi	1517-1526 ई.

साहित्य

किताब	लेखक
खज़ैन-उल-फ़ुतुह	Amir Khusro
तुगलक नाम	Amir Khusro
तारिक-ए-अलाई	Amir Khusro
तबकात-ए-नैसिरी	Minhaj-us-Siraj
तारीख-ए-फ़िरोज़ शाही	ज़ियाउद्दीन बरनी
गीता गोविंद	जयदेव
दीपिका का साहित्य	Parthasarthi Misra
Mitakshara	Vijnanesvara

किताब	लेखक
Dayabhaga	जिमुता वाहना
Nagachandra	Pampa Ramayan
आल्हाखंडा	Jagnayak
प्लामिर रासो	Sarangdhara
आशिका	Khusro
अंततः	Krishnadeva Raya
फुतुहात-ए-फ़िरोज़शाही	Firoz Shah
Prasana Raghava	जयदेव
Hamir -Mada-Mardana	जय सिंह सूरी
Pradyumnabhyadaya	रवि वर्मन
Parvati Parinay	Varman Bhatta Bana
Ganga Das Pratap	Gangadhara Vilas
ललित माधव	रूपा गोस्वामी
Pratap Rudra Kalyan	Vidya Nath

केंद्रीय प्रशासन

विभाग	उद्देश्य
दीवान-ए-रिसालत	अपील विभाग
दीवान-ए-एरिज़	सैन्य विभाग
दीवान-ए-बंदगान	दास विभाग
दीवान-ए-कज़ा-ए-ममालिक	विभाग का न्याय
दीवान-ए-लस्तियाक	पेंशन विभाग
दीवान-ए-Mustakhraj	बकाया विभाग
दीवान-ए-Khairat	दान विभाग
दीवान-ए-Kohi	कृषि विभाग

विभाग	उद्देश्य
दीवान-ए-लंशा	पत्राचार विभाग

दिल्ली सल्तनत के दौरान मंगोल आक्रमण

सुल्तान	वर्ष	आक्रमणों
इल्तुतमिश	1221 ई.	चंगेज खान सिंधु नदी के तट तक आया।
बहराम	1241 ई.	तैर बहादुर ने लाहौर में लूटपाट और हत्या करते हुए पंजाब में प्रवेश किया।
मसूद	1245 ई.	1245 ई. के अंत में बलबन ने मंगोलों से युद्ध किया और मुल्तान को पुनः प्राप्त कर लिया, जिस पर मंगोलों ने कब्जा कर लिया था।
बाएं	1279 ई.	मुल्तान के राजकुमार मुहम्मद, समाना के बुगरा खान और दिल्ली के मलिक मुबारक ने मिलकर मंगोलों को हराया।
बाएं	1286 ई.	तामार ने भारत पर आक्रमण किया। राजकुमार मुहम्मद युद्ध में मारे गए और उन्हें खान-ए-शाहिद की उपाधि से सम्मानित किया गया।
जलालुद्दीन खिलजी	1292 ई.	अब्दुल्ला भारत के उत्तरी भाग में आए। लगभग 4,000 मंगोलों ने इस्लाम धर्म अपना लिया और प्रसिद्ध 'नए मुसलमान' बन गए।
Alauddin Khalji	1296-99 ई.	ज़फ़र ख़ान ने जालंधर और सलदी में मंगोलों को हराया, उनके नेता को बंदी बना लिया गया। इस युद्ध में ज़फ़र ख़ान मारा गया।
Alauddin Khalji	1304 ई.	अली बेग और ताश हार गये।
मुहम्मद बिन तुगलक	1329 ई.	तरमाशिरिन खान दिल्ली के बाहरी इलाके तक पहुंचने में सफल रहा लेकिन मुहम्मद-बिन-तुगलक से हार गया।

दिल्ली सल्तनत का साहित्य

किताब	लेखक	ऐतिहासिक महत्व
तहक़ज्क-मा-ली-अल-हिंद	अल बिरूनी	अलबरूनी एक अरब विद्वान थे जिन्होंने गुलाम वंश के बारे में लिखा था
Tabaqat-ए-Nasiri	Minhaj-us-Siraj	इल्तुतमिश के शासनकाल का विवरण देता है
Laila-Majnu	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी कवि
खज़ैन-उल-फ़ुतुह	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन खिलजी की विजयों का वर्णन
तुगलक-नाम	अमीर खुसरो	गयासुद्दीन के शासनकाल का विवरण देता है
नूह-सिफिर	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन खिलजी का काव्यात्मक वर्णन

किताब	लेखक	ऐतिहासिक महत्व
फतवा-ए-जहाँदारी	ज़ियाउद्दीन बरनी	अपने शासनकाल का लेखा-जोखा देता है
Tarikha-i-Firoz Shahi	ज़ियाउद्दीन बरनी	फिरोजशाह के शासनकाल का विवरण देता है
Fatwah-i-Firoz Shahi	Firoz Shah	अपने शासनकाल का विवरण देता है
किताब-फ़ि-तहक़ीक़	अल बिरूनी	भारतीय विज्ञान के बारे में
क़ानून अल-मसूदी	अल बिरूनी	खगोल विज्ञान के बारे में; अल-मसूद को समर्पित
जवाहर -फिल-जवाहिर	अल बिरूनी	खनिज विज्ञान, रत्नों के बारे में
नहीं	Firozabadi	अरबी शब्द शब्दकोश
ताज-उल-माथिर	Hasan Nizami	गुलाम राजवंश इल्बारिस का इतिहास
Chach Namah	अबू बक्र	सिंध क्षेत्र का इतिहास
लुबाब-उल-अलबाब	ज़ाहिरिद्दीन नस्र मुहम्मद औफ़ी	फ़ारसी संकलन
खम्सा	अमीर खुसरो	साहित्य और कविताएँ
शाहनामे	स्वर्ग	मोहम्मद गजनी के शासनकाल के बारे में
किताब-उल-रेहला	इब्न बतूता	कहानियों वाला एक यात्रा वृतांत
मुल्ता-उल-फ़ुतुह	अमीर खुसरो	जलालुद्दीन की विजय और जीवन
मुल्ता-उल-अनवर	अमीर खुसरो	साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियाँ
आयना-ए-सिकंदरी	अमीर खुसरो	साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियाँ
फ़्लैश बिहिश्त	अमीर खुसरो	साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियाँ
ख़ुसरो की योजना	अमीर खुसरो	साहित्यिक उत्कृष्ट कृतियाँ
Tarik-i-Firoz Shahi	Shams-i-Shiraj Afif	तुगलकों का इतिहास
फ़ुतुह-उस-सलातिन	इसामी	बहमनी साम्राज्य के बारे में

सल्तनत काल के दौरान और उसके बाद के प्रांतीय राज्य

साम्राज्य	पूंजी	संस्थापक	सबसे महत्वपूर्ण शासक
शाह मीर राजवंश (कश्मीर)	Kashmir	Shah Mirza or Shams-ud-din	ज़ैनुल आबिदीन
सिसोदिया राजवंश (मेवाड़)	चित्तौड़	राणा हमीर	Rana Kumbha
राठौड़ राजवंश (मारवाड़)	जोधपुर	राव चुंडा	राव जोधा और मालदेव
कछवाहा राजवंश (अंबर या आमेर)	अजमेर	दुल्ला राव	Hammir Deva
Muzaffarshahi Dynasty (Gujart)	अन्हिलवाड़ा (बाद में अहमदाबाद)	ज़फ़र ख़ान या मुज़फ़्फ़रशाह	अहमद शाह प्रथम, महमूद
सल्तनत (बंगाल)	आडंबर	इलियास शाह	अलाउद्दीन शाह
Suryavansi or Gajapati dynasty (Orrisa)	Jajnagar	कपिलेंद्र	कपिलेंद्र
खिलजी वंश (मालवा)	मैं भेजता हूँ	Dilawar Khan Ghori	महमूद खिलजी
शर्की राजवंश (जौनपुर)	Jaunpur	Malik Sarwar	इब्राहिम शाह शर्की
अहोम राजवंश (कामरूप और असम)	चरैदो (बाद में चार्क्वा)	Sukapha	बहुत अच्छा
Farukki Dynasty (Khandesh)	Burhanpur	मलिक राजा फ़ारूक़ी	मलिक राजा फ़ारूक़ी

दिल्ली सल्तनत का प्रशासन

- दिल्ली सल्तनत का काल **1206 ई. से 1526 ई. तक लगभग 320 वर्षों तक फैला रहा।** दिल्ली सल्तनत की स्थापना और विस्तार के परिणामस्वरूप एक शक्तिशाली और कुशल प्रशासनिक व्यवस्था का विकास हुआ।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान प्रशासन **शरीयत या इस्लाम के कानूनों पर आधारित** था । राजनीतिक, कानूनी और सैन्य अधिकार **सुल्तान** के पास निहित थे । इस प्रकार, सिंहासन के उत्तराधिकार में सैन्य शक्ति मुख्य कारक थी।
- अपने चरम पर, दिल्ली सल्तनत का नियंत्रण लगभग पूरे देश पर था, यहाँ तक कि दक्षिण में मदुरै तक। अपने विघटन के बाद भी, दिल्ली सल्तनत और उसकी प्रशासनिक व्यवस्था ने भारतीय प्रांतीय राज्यों और बाद में मुगल प्रशासन व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला ।

सुल्तान

- 'सुल्तान' की उपाधि **तुर्की शासकों द्वारा शुरू की गई थी** और **महमूद गजनवी ने सबसे पहले सुल्तान की उपाधि धारण की थी** । दिल्ली सल्तनत एक इस्लामी राज्य था जिसका धर्म इस्लाम था। **सुल्तान स्वयं को खलीफा का प्रतिनिधि मानते थे** । वे **खुतबे या प्रार्थना में खलीफा का नाम शामिल करते थे और उसे अपने सिक्कों पर अंकित करते थे** । यह प्रथा बलबन ने भी जारी रखी, जो स्वयं को ईश्वर की परछाईं कहता था। **इल्तुतमिश, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज तुगलक ने खलीफा से मंसूर (निवेश पत्र) प्राप्त किया** ।
- सुल्तान का पद सल्तनत में सबसे महत्वपूर्ण था और वह **सैन्य, कानूनी और राजनीतिक मामलों का अंतिम अधिकारी** था । **न्याय प्रदान करना** सुल्तान द्वारा किया जाने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य था और वह अपील न्यायालय के रूप में कार्य करता था।
  - उदाहरण के लिए, बलबन ने अत्यंत निष्पक्षता से न्याय किया, यहाँ तक कि राज्य के उच्च अधिकारियों को भी नहीं बख्शा। मुहम्मद बिन तुगलक ने तो उलेमाओं को भी कठोर दंड दिए, जिन्हें पहले छूट दी गई थी।
- **इस काल में उत्तराधिकार का कोई स्पष्ट नियम नहीं था । सभी पुत्रों का राजगद्दी पर समान अधिकार था।** दिलचस्प बात यह है कि ज्येष्ठाधिकार का विचार न तो मुसलमानों को और न ही हिंदुओं को पूरी तरह स्वीकार्य था। **इल्तुतमिश ने तो अपने पुत्रों की अपेक्षा अपनी पुत्री को भी सिंहासन पर बिठाया था** ।
  - **लेकिन ऐसे नामांकन या उत्तराधिकार अधिकतर कुलीनों** द्वारा ही स्वीकार किए जाते थे । कभी-कभी, अनुकूल जनमत प्राप्त करने में **उलेमा भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। हालाँकि, उत्तराधिकार के मामलों में सैन्य श्रेष्ठता ही मुख्य कारक बनी रही।**

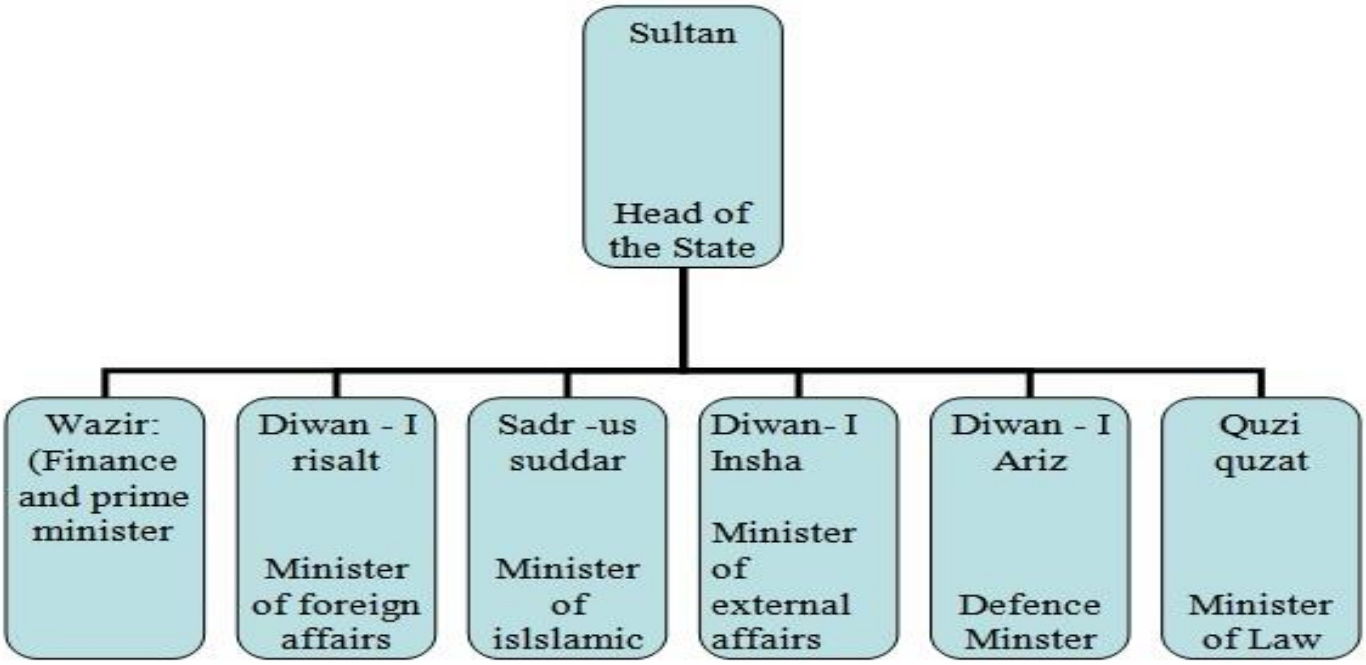

केंद्रीय प्रशासन

- सुल्तान **की सहायता के लिए कई मंत्री होते थे** जो विभिन्न विभागों के प्रमुख होते थे और प्रशासन में सहायता करते थे। इन मंत्रियों को सुल्तान द्वारा चुना जाता था और वे उसकी इच्छानुसार पद पर बने रहते थे। **नायब का पद सबसे शक्तिशाली होता था**। नायब को व्यावहारिक रूप से सुल्तान की सभी शक्तियाँ प्राप्त होती थीं और वह सभी विभागों पर सामान्य नियंत्रण रखता था।
- उसके बाद **वज़ीर होता था,** जो **दीवान-ए-विज़ारत नामक वित्त विभाग का प्रमुख होता था। व्यय की जाँच के लिए एक अलग महालेखा परीक्षक और आय के निरीक्षण के लिए एक महालेखाकार वज़ीर के अधीन कार्य करता था। फ़िरोज़ तुगलक खान-ए-जहाँ** के वज़ीरत्व काल को आमतौर पर वज़ीर के प्रभाव का चरम काल माना जाता है।
- सैन्य **विभाग को दीवान-ए-अर्ज़ कहा जाता था**। इसका **प्रमुख आरिज-ए-मुमालिक** होता था , जो सैनिकों की भर्ती और सैन्य विभाग के प्रशासन के लिए ज़िम्मेदार होता था। यह ध्यान देने योग्य है कि आरिज सेना का प्रधान सेनापति नहीं होता था, क्योंकि **सुल्तान स्वयं सशस्त्र बलों का प्रधान सेनापति होता था**। **सैन्य विभाग की स्थापना सबसे पहले बलबन ने की थी और अलाउद्दीन खिलजी ने इसे और बेहतर बनाया,** जिन्होंने सशस्त्र बलों की नियमित उपस्थिति पर ज़ोर दिया।
- **अलाउद्दीन ने चेहरा और दाग प्रणाली की शुरुआत की**, ताकि प्रत्येक सैनिक की वर्णनात्मक सूची के साथ-साथ घोड़ों को दागने की एक प्रणाली भी लागू हो, जिससे केवल अच्छी गुणवत्ता वाले घोड़ों को ही मस्टर्ड में शामिल किया जा सके। **वह अपने सैनिकों को नकद वेतन देने वाला पहला सुल्तान भी था**। उसके पास लगभग तीन लाख की सबसे बड़ी स्थायी और कुशल सेना भी थी, जो निश्चित रूप से उसके दक्कन विस्तार के साथ मंगोल आक्रमणों को रोकने में एक मुख्य कारक थी। तुर्कों ने युद्ध के उद्देश्यों के लिए बड़ी संख्या में हाथियों को भी प्रशिक्षित किया था। हालाँकि, **घुड़सवार सेना का प्रभुत्व था** जिसे अधिक प्रतिष्ठित माना जाता था। गजनवी के समय, हिंदुओं को पैदल सेना और घुड़सवार सेना दोनों में नियुक्त किया गया था, लेकिन सल्तनत काल के दौरान वे बड़े पैमाने पर पैदल सेना में कार्यरत थे।
- **दीवान-ए-रसालत धार्मिक मामलों का विभाग था,** जो धार्मिक संस्थाओं से संबंधित था और योग्य विद्वानों एवं धर्मपरायण व्यक्तियों को वजीफा देता था। इस विभाग द्वारा मस्जिदों, मकबरों और मदरसों के निर्माण और रखरखाव के लिए भी अनुदान दिया जाता था। इसका **प्रमुख मुख्य सद्र होता था, जो न्यायिक विभाग के प्रमुख के रूप में** मुख्य काजी के रूप में भी कार्य करता था । सल्तनत के विभिन्न भागों में अन्य न्यायाधीश या काजी नियुक्त किए जाते थे। दीवानी मामलों में मुस्लिम पर्सनल लॉ या शरिया का पालन किया जाता था। हिंदू अपने निजी कानून के अनुसार शासित होते थे और उनके मामलों का निपटारा ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाता था। आपराधिक कानून सुल्तानों द्वारा बनाए गए नियमों और विनियमों पर आधारित था।
- **पत्राचार विभाग को दीवान-ए-इंशा कहा जाता था**। शासक और अन्य राज्यों के शासकों तथा उसके अधीनस्थ अधिकारियों के बीच होने वाले सभी पत्राचार का प्रबंधन इसी विभाग द्वारा किया जाता था।

प्रांतीय सरकार

- **दिल्ली सल्तनत के अधीन प्रांतों को इक्ता कहा जाता था**। शुरुआत में ये अमीरों के नियंत्रण में थे। लेकिन **प्रांतों के गवर्नरों को मुक्ति या वली कहा जाता था**। इनका काम कानून-व्यवस्था बनाए रखना और भू-राजस्व वसूलना था।
- प्रांतों **को आगे शिक में विभाजित किया गया था , जो शिकदार** के नियंत्रण में था , और अगला विभाजन **परगना** था , **जिसमें कई गांव शामिल थे और जिसका नेतृत्व आमिल करता था।**
- गाँवों **को** 100 या 84 की इकाइयों (जिन्हें पारंपरिक रूप से चौरासी कहा जाता था) में बाँटा गया था। गाँव प्रशासन की मूल इकाई बना रहा। गाँव के मुखिया को **मुकद्दम या चौधरी कहा जाता था।** गाँव के लेखाकार को **पटवारी कहा जाता था।**

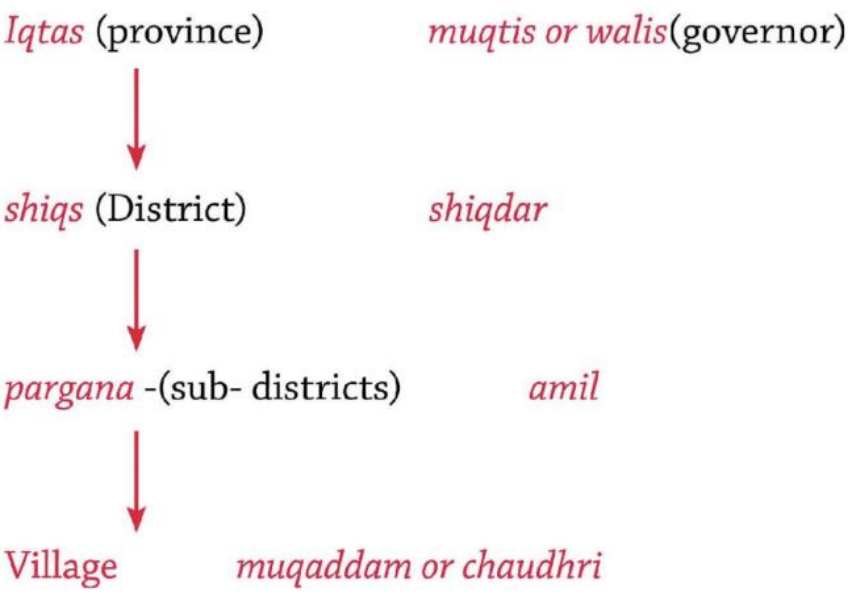

छठी प्रणाली

- इक्तादारी **भूमि वितरण और प्रशासनिक व्यवस्था का एक अनोखा प्रकार था जो इल्तुतमिश** सल्तनत के दौरान विकसित हुआ। इस व्यवस्था के तहत, **पूरा साम्राज्य बहुत समान रूप से कई बड़े और छोटे भू-भागों में विभाजित था, जिन्हें इक्ता कहा जाता था।**
- इन भूमि भूखंडों को आसान और दोषरहित प्रशासन तथा राजस्व संग्रह के उद्देश्य से विभिन्न सामंतों, अधिकारियों और सैनिकों को सौंपा गया था।
- इक्ताएँ **स्थानांतरणीय थीं**, अर्थात् इक्ता धारकों - इक्तादारों - को हर तीन-चार साल में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित किया जाता था। छोटे इक्ता धारक व्यक्तिगत सैनिक होते थे। उन पर कोई प्रशासनिक ज़िम्मेदारियाँ नहीं थीं।
- 1206 ई. में गौर के योग्य राजा मुहम्मद ने भारत में इक्ता प्रणाली की शुरुआत की, लेकिन **इल्तुतमिश ने इसे एक संस्थागत रूप दिया**। सल्तनत काल के दौरान इक्तादारी प्रणाली में कई बदलाव हुए।
- प्रारंभ में, **इक्ता राजस्व देने वाली भूमि का एक टुकड़ा था जो वेतन के बदले में दिया जाता था**। हालाँकि, **फ़िरोज़ शाह तुगलक के शासनकाल में, 1351 ई. में, यह वंशानुगत हो गया।**

अर्थव्यवस्था

- भारत में अपनी स्थिति मज़बूत करने के बाद, दिल्ली के सुल्तानों ने भू-राजस्व प्रशासन में सुधार किए। भूमि को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था:
- **इक्ता भूमि - अधिकारियों को** उनकी सेवाओं के भुगतान के बदले इक्ता के रूप में सौंपी गई भूमि।
- **खलीसा भूमि - सुल्तान के प्रत्यक्ष नियंत्रण** में भूमि और एकत्रित राजस्व शाही दरबार और शाही घराने के रखरखाव के लिए खर्च किया जाता था।
- **इनाम भूमि - धार्मिक नेताओं या धार्मिक संस्थाओं को** सौंपी गई या दी गई भूमि ।
- **खुतों (छोटे ज़मींदारों)** और **हिंदू रईसों (स्वायत्त राजाओं)** का एक वर्ग उभरा, जो न केवल उच्च जीवन स्तर का आनंद लेते थे, बल्कि कभी-कभी अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके गरीब किसानों का शोषण भी करते थे। **अलाउद्दीन खिलजी** ने उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की ।
- हालाँकि, आम किसान **अपनी उपज का एक-तिहाई**, और कभी-कभी **तो आधी भी,** भू-राजस्व के रूप में देते थे । वे अन्य कर भी देते थे और हमेशा गुज़ारा करते थे। बार-बार पड़ने वाले अकालों ने उनके जीवन को और भी दयनीय बना दिया था।
- हालाँकि, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज तुगलक जैसे सुल्तानों ने सिंचाई सुविधाएँ प्रदान करके और तक्कवी ऋण प्रदान करके **कृषि उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए । उन्होंने किसानों को जौ के बजाय गेहूँ जैसी उन्नत फसल उगाने के**

लिए भी प्रोत्साहित किया। फिरोज ने बागवानी के विकास को प्रोत्साहित किया। मुहम्मद बिन तुगलक ने एक अलग **कृषि विभाग, दीवान-ए-कोही, की स्थापना की।**

- सुल्तान और उसके सरदारों ने भारत में फलों, विशेषकर खरबूजे और अंगूर की गुणवत्ता सुधारने में गहरी रुचि ली।
- इब्न बतूता ने अपने ग्रंथों में लिखा है कि मिट्टी इतनी उपजाऊ थी कि इसमें प्रति वर्ष दो फसलें पैदा होती थीं, तथा चावल वर्ष में तीन बार बोया जाता था।

- सल्तनत काल में **शहरीकरण की प्रक्रिया ने गति पकड़ी**। इस काल में कई शहर और कस्बे विकसित हुए। **लाहौर और मुल्तान (उत्तर पश्चिम में), भड़ौच, खंभात और अन्हिलवाड़ा (पश्चिम में), पूर्व में कड़ा और लखनौती, दौलताबाद, दिल्ली और जौनपुर** इनमें प्रमुख थे। **दिल्ली पूर्व का सबसे बड़ा शहर बना रहा**।
- व्यापार और वाणिज्य के विकास का वर्णन समकालीन लेखकों ने किया है। **भारत ने फारस की खाड़ी और पश्चिम एशिया के देशों के साथ-साथ दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों को भी बड़ी मात्रा में वस्तुओं का निर्यात किया**।

- बंगाल (खासकर मलमल, यानी बढ़िया सूती कपड़े के लिए सोनारगाँव) और गुजरात के कस्बे बेहतरीन कपड़ों के लिए प्रसिद्ध थे। गुजरात का कैम्बे कपड़ों और सोने-चाँदी के काम के लिए प्रसिद्ध था।
- भारत पश्चिम एशिया से उच्च श्रेणी के वस्त्र (साटन, आदि), कांच के बर्तन और घोड़े आयात करता था। चीन से वह कच्चा रेशम और चीनी मिट्टी का आयात करता था।
- विदेशी व्यापार मुल्तानियों (अधिकांशतः हिंदू) और खुरासानियों (अफ़ग़ान मुसलमान) के नियंत्रण में था। अंतर्देशीय व्यापार पर गुजराती, मारवाड़ी और मुस्लिम बोहरा व्यापारियों का प्रभुत्व था।
- व्यापारी अत्यंत धनी थे और विलासितापूर्ण जीवन जीते थे। गुजराती और मारवाड़ी व्यापारी अधिकतर जैन थे और वे मंदिरों के निर्माण पर बड़ी रकम खर्च करते थे।

- **सड़कों के निर्माण और उनके रखरखाव** ने सुगम परिवहन और संचार को सुगम बनाया। विशेषकर, **शाही सड़कों को अच्छी स्थिति में रखा गया**। पेशावर से सोनारगाँव तक की शाही सड़क के अलावा, मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद तक सड़क का निर्माण कराया। यात्रियों की सुविधा के लिए **राजमार्गों पर सरायों या विश्रामगृहों का रखरखाव किया गया। हर कुछ किलोमीटर पर घोड़ों और धावकों की कतारों की मदद से डाक को** देश के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक तेज़ी से पहुँचाने की भी व्यवस्था थी।

- इस काल में **सूती वस्त्र और रेशम उद्योग का विकास हुआ । रेशम उत्पादन** बड़े पैमाने पर शुरू हुआ, जिससे भारत कच्चे रेशम के आयात के लिए अन्य देशों पर कम निर्भर हो गया। **कागज़ उद्योग का** विकास हुआ और 14वीं और 15वीं शताब्दी से कागज़ का व्यापक उपयोग होने लगा। बढ़ती माँग के कारण चमड़ा निर्माण, धातु शिल्प और कालीन बुनाई जैसे अन्य शिल्प भी फले-फूले। **शाही कारखाने** सुल्तान और उसके परिवार को आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करते थे। वे सोने, चाँदी और सोने के बर्तनों से बनी महँगी वस्तुएँ बनाते थे। कुलीन वर्ग भी सुल्तानों की जीवनशैली की नकल करता था और विलासितापूर्ण जीवन जीता था। उन्हें अच्छा वेतन मिलता था और उन्होंने अपार धन-संपत्ति अर्जित की थी।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान **सिक्का प्रणाली का भी विकास हुआ था**। इल्तुतमिश ने कई प्रकार के चाँदी के टँके जारी किए। खिलजी शासन के दौरान एक **चाँदी का टँका** 48 जीतलों में और तुगलक शासन के दौरान 50 जीतलों में विभाजित होता था। दक्षिण भारतीय विजयों के बाद अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल में **सोने के सिक्के या दीनार लोकप्रिय हुए। ताँबे के सिक्के कम संख्या में और बिना तारीख के थे**। मुहम्मद बिन तुगलक ने न केवल सांकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया, बल्कि कई प्रकार के सोने और चाँदी के सिक्के भी जारी किए। इन्हें आठ अलग-अलग स्थानों पर ढाला गया था। उसने कम से कम पच्चीस प्रकार के सोने के सिक्के जारी किए।
- **तुर्कों ने कई शिल्प और तकनीकों को लोकप्रिय बनाया जैसे:**
- लोहे के रकाब का उपयोग
- घोड़े और सवार दोनों के लिए कवच का उपयोग।
- रहट (फारसी पहिया जिसके माध्यम से सिंचाई के लिए गहरे स्तर से पानी उठाया जा सकता था) का सुधार
- कागज निर्माण, कांच निर्माण, चरखा और बुनाई के लिए उन्नत करघा।
- बेहतर गारे के प्रयोग से तुर्कों को मेहराब और गुंबद पर आधारित शानदार इमारतें खड़ी करने में मदद मिली।

सामाजिक व्यवस्था

- दिल्ली सल्तनत के दौरान **हिंदू समाज की संरचना में लगभग कोई बदलाव नहीं** आया । **ब्राह्मणों को सामाजिक स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त था** । चांडालों और अन्य बहिष्कृत लोगों के साथ मेलजोल पर सबसे कड़े प्रतिबंध लगाए गए थे।
- इस काल में, **उच्च वर्ग के हिंदुओं** (विशेषकर उत्तर भारत में) में **महिलाओं को एकांत में रखने और बाहरी लोगों की उपस्थिति में उन्हें अपना चेहरा ढकने के लिए कहने की प्रथा (पर्दा प्रथा)** प्रचलित हो गई । अरब और तुर्क भारत में पर्दा प्रथा लेकर आए और यह समाज में उच्च वर्गों का प्रतीक बन गई। **सती प्रथा** देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। **इब्न बतूता ने उल्लेख किया है कि सती होने के लिए सुल्तान की अनुमति लेनी पड़ती थी।**
- सल्तनत काल के दौरान, **मुस्लिम समाज जातीय और नस्लीय समूहों में बँटा रहा** । **अफ़गान, ईरानी, तुर्क और भारतीय मुसलमान अलग-अलग समूहों के रूप में विकसित हुए और शायद ही कभी आपस में विवाह करते थे** । हिंदुओं के निचले तबके से धर्मांतरित लोगों के साथ भी भेदभाव किया जाता था।
- सिंध पर अरबों के आक्रमण के समय से ही हिंदू **प्रजा को ज़िम्मी या संरक्षित लोगों का दर्जा** दिया गया था , अर्थात वे लोग जो मुस्लिम शासन को स्वीकार करते थे और **जजिया** नामक कर देने के लिए सहमत होते थे ।
- पहले जजिया कर भू-राजस्व के साथ वसूला जाता था। बाद में **फिरोज तुगलक ने जजिया को एक अलग कर बना दिया और इसे ब्राह्मणों पर भी लगाना शुरू कर दिया** , जिन्हें पहले जजिया कर से छूट प्राप्त थी।
- **भारत में दास प्रथा लंबे समय से चली आ रही थी, हालाँकि, इस काल में यह खूब फली-फूली** । पुरुषों और महिलाओं के लिए दास बाज़ार मौजूद थे। दासों को आमतौर पर घरेलू काम, कंपनी या उनके विशेष कौशल के लिए खरीदा जाता था। फिरोज शाह तुगलक के पास लगभग 1,80,000 दास थे।

मध्यकालीन भारत के क्षेत्रीय साम्राज्य

- दिल्ली **सल्तनत अपने कमज़ोर उत्तराधिकारियों के कारण पतन की ओर अग्रसर थी और** 1398 में तैमूर का दिल्ली पर आक्रमण उसके लिए एक बड़ा झटका साबित हुआ। **दिल्ली के सुल्तान, नासिरुद्दीन महमूद शाह तुगलक को पहले गुजरात और फिर मालवा में शरण लेनी पड़ी।**
- प्रांतीय शासकों ने इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाया और अपने लिए स्वायत्त रियासतें स्थापित कीं। **दक्कन, बंगाल, सिंध और मुल्तान के राज्य सबसे पहले दिल्ली सल्तनत से अलग हुए । इसके तुरंत बाद गुजरात, मालवा और जौनपुर भी अलग हुए** । अजमेर के मुस्लिम शासक के निष्कासन के बाद, विभिन्न राजपूत राज्यों ने भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- समय के साथ **इन साम्राज्यों ने रियासतें बना लीं,** जिससे क्षेत्र में शक्ति संतुलन स्थापित हो गया।
- **बंगाल, उड़ीसा और जौनपुर** के पूर्वी राज्यों ने एक-दूसरे की शक्तियों पर अंकुश लगाया।
- पश्चिम में **गुजरात, मालवा और मेवाड़** एक दूसरे को संतुलित करते थे।
- लोदी **पूर्व में जौनपुर के साथ भी संघर्ष में लगे हुए थे** और उसे अपने अधीन करने में सफल रहे। उन्होंने **मालवा के क्षेत्र के लिए गुजरात और मेवाड़ के साथ भी युद्ध किया** । इसी प्रतिद्वंद्विता के कारण मेवाड़ के राणा सांगा ने लोदियों की शक्ति को नष्ट करने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।

Kashmir

- **14वीं शताब्दी के आरंभ में कश्मीर शैव धर्म का केंद्र था** । हालाँकि, **मंगोल नेता दलूचा ने 1320 ई. में कश्मीर पर आक्रमण किया** और पुरुषों और महिलाओं के सामूहिक नरसंहार का आदेश दिया, और इस आक्रमण के बाद राज्य की राजनीति और समाज में व्यापक परिवर्तन आया। बारामूला मार्ग से मध्य एशिया से मुस्लिम शरणार्थियों का लगातार आक्रमण होता रहा।
- इसके बाद **सूफी संतों का उदय हुआ, जिन्हें ऋषि कहा जाता था, जिन्होंने हिंदू और इस्लाम धर्म की विशेषताओं का मिश्रण किया** । राज्य की जनता, विशेषकर **निम्न वर्ग, इस्लाम के विचार से मोहित हो गया और उनमें से कई ने धर्म परिवर्तन कर लिया । सिकंदर शाह (1389-1413) के शासनकाल में** स्वैच्छिक धर्म परिवर्तन के अलावा, लोगों पर इस्लाम धर्म अपनाने का भी दबाव डाला गया । सुल्तान ने हिंदुओं को दो विकल्प दिए: या तो इस्लाम स्वीकार कर लें या घाटी छोड़ दें। कई **मंदिरों को नष्ट कर दिया गया और सोने-चाँदी से बनी मूर्तियों को पिघलाकर मुद्रा बनाई गई** । यह एक ऐसा शासनकाल था जिसमें ब्राह्मणों पर घोर अत्याचार हुए।
- **ज़ैनुल आबिदीन (1420-70) के सिंहासनारूढ़ होने के बाद स्थिति में सुधार हुआ,** जिन्हें कश्मीर के सबसे महान मुस्लिम सम्राटों में से एक माना जाता है। आबिदीन ने पहले के कठोर आदेशों को रद्द कर दिया, **उत्पीड़न के डर से कश्मीर छोड़कर भागे सभी हिंदुओं को वापस लाया और उन्हें वापस लाया** । उन्होंने हिंदुओं को मंदिर बनाने के लिए अनुदान भी दिया और नष्ट किए गए मंदिरों का जीर्णोद्धार भी किया। उन्होंने **जजिया कर समाप्त किया,** गोहत्या पर प्रतिबंध लगाया और हिंदू कुलीनों को भी उच्च पद दिए।
- ज़ैनुल आबिदीन एक विद्वान और कुशल कवि थे। वे फ़ारसी, कश्मीरी, संस्कृत और तिब्बती भाषाओं के अच्छे ज्ञाता थे। **उनके शासनकाल में महाभारत और राजतरंगिणी (कश्मीर का इतिहास) जैसी संस्कृत कृतियों का फ़ारसी में अनुवाद किया गया।** उनके शासनकाल में संगीतकारों को भी संरक्षण प्राप्त था।
- आबिदीन के शासनकाल में अर्थव्यवस्था भी अच्छी चल रही थी। उन्होंने कश्मीर में कागज़ बनाने, किताबों की जिल्दसाज़ी, शॉल बनाने, सोना तराशने, बंदूक बनाने और आतिशबाजी बनाने जैसे कई शिल्पों को बढ़ावा दिया। बाँध, नहरें और पुल बनाकर कृषि को बढ़ावा दिया। उनके नाम इंजीनियरिंग की भी अनोखी उपलब्धियाँ दर्ज हैं, क्योंकि उन्होंने **वुलर झील में एक कृत्रिम द्वीप, ज़ैना लंका, का निर्माण** करवाया था , जिस पर उन्होंने अपना महल बनवाया था।
- **ज़ैन-उल-आबिदीन को 'कश्मीर का अकबर' भी कहा जाता था। 'जैन-प्रकाश' और 'जैन-विलास' नामक** धर्मग्रंथों का संकलन उनके शासनकाल में हुआ था।

- उनकी सैन्य उपलब्धियाँ भी कम नहीं थीं। **उन्होंने लद्दाख पर मंगोल आक्रमण को विफल किया, बाल्टिस्तान पर विजय प्राप्त की और** जम्मू, राजौरी आदि क्षेत्रों पर नियंत्रण बढ़ाकर कश्मीरी साम्राज्य का एकीकरण किया। इन सभी उपलब्धियों के कारण, उन्हें **बादशाह (महान सुल्तान) के नाम से जाना जाता है।**

Jaunpur

- **पूर्वी उत्तर प्रदेश का** वह क्षेत्र जिसमें उपजाऊ गंगा घाटी शामिल थी, जौनपुर का क्षेत्र था। एक प्रमुख सरदार **, मलिक सरवर** , को 1394 ई. में फिरोजशाह तुगलक के अधीन मलिकुस-शर्क (पूर्व का स्वामी) नियुक्त किया गया था।
- सुल्तान की कमज़ोरी का आकलन करते हुए, उसने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की और **तैमूर के आक्रमण के बाद जौनपुर राज्य की स्थापना की** । **मलिक सरवर के उत्तराधिकारियों को शर्की कहा जाने लगा** ।
- मलिक **के बाद उनके बेटे मुबारक शाह ने 1399 ई. में गद्दी संभाली** । उन्होंने अपने नाम के सिक्के चलवाए और उनके नाम पर खुतबा भी पढ़ा गया। हालाँकि, वह ज़्यादा समय तक शासन नहीं कर पाए और **1402 में उनकी मृत्यु हो गई , और उनके छोटे भाई इब्राहिम शाह (1402-1440)** ने गद्दी संभाली ।
- जौनपुर **सल्तनत ने इब्राहिम शाह के शासनकाल में अपनी ऊँचाई हासिल की** । यह राज्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ से लेकर उत्तरी बिहार के दरभंगा तक, उत्तर में नेपाल की सीमा से लेकर दक्षिण में बुंदेलखंड तक फैला हुआ था। उसने दिल्ली और बंगाल के साथ युद्ध किए, लेकिन असफल रहा और उसके शासनकाल में **कन्नौज दिल्ली के सुल्तान के हाथों हार गया।**
- **महमूद शाह 1440 ई** . में इब्राहिम शाह के बाद शासक बना। उसने एक सफल अभियान चलाया और चुनार पर कब्ज़ा कर लिया। उसने बंगाल और उड़ीसा के शासकों के विरुद्ध भी युद्ध किया। 1452 ई. में उसने दिल्ली पर आक्रमण किया, लेकिन बहलोल लोदी से हार गया। 1457 ई. में उसका पुत्र **मुहम्मद शाह** उसके बाद शासक बना, लेकिन वह ज़्यादा समय तक शासन नहीं कर सका और 1458 ई. में **उसके भाई हुसैन शाह ने उसे परास्त कर दिया ।**
- **हुसैन शाह (1458-1486 ई.) जौनपुर राज्य के अंतिम शासक थे।** उन्होंने कई बार दिल्ली पर आक्रमण करने का प्रयास किया, लेकिन असफल रहे। बहलुल लोदी के हाथों लगातार पराजय के बाद, उन्हें बंगाल के सुल्तान अलाउद्दीन हुसैन शाह के अधीन शरण लेनी पड़ी, जहाँ बाद में उनकी मृत्यु हो गई।
- **बहलोल लोदी ने 1486 ई. में जौनपुर का प्रभार अपने सबसे बड़े जीवित पुत्र बारबक शाह लोदी को सौंप दिया** ।
- शर्की वंश के कई शासक संस्कृति के महान संरक्षक थे। साहित्यकार, कवि, विद्वान और संत जौनपुर में एकत्रित होते थे। **अंतिम शासक हुसैन शाह ने गंधर्व की उपाधि धारण की और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक विधा, ख़याल, के विकास** में महत्वपूर्ण योगदान दिया । उन्होंने कई नए रागों की भी रचना की।
- **Malik Muhammad Jayasi,** the author of the well-known Hindi work 'Padmavat' lived at Jaunpur.
- जौनपुर को शानदार इमारतों से सुशोभित किया गया था जिनमें कई मस्जिदें और मकबरे शामिल थे।
- अटाला **मस्जिद, लाई दरवाजा मस्जिद और जामा मस्जिद** शर्की वास्तुकला की सबसे स्थायी उपलब्धियां हैं।

Bengal

- बंगाल पर विजय प्राप्त करने वाला पहला मुस्लिम आक्रमणकारी **इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार था, जो** मुहम्मद गोरी का एक सैन्य कमांडर था। 1204 में, उसने **बंगाल के लक्ष्मण सेना** की राजधानियों में से एक, नादिया पर विजय प्राप्त की । मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान, साम्राज्य के कई हिस्सों में विद्रोह हुए और इसका फायदा उठाकर, **1338 ई. में बंगाल दिल्ली से अलग हो गया।**
- 1342 ई. में **, इलियास खान, एक कुलीन ने लखनौती और सोनारगाँव पर कब्जा कर लिया और सुल्तान शम्सुद्दीन इलियास खान की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठा** । उसने कई क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और उसका साम्राज्य पश्चिम में बनारस तक पहुँच गया। इससे उसका सीधा संघर्ष फिरोज तुगलक से हुआ, जिसने इलियास खान को हरा दिया और उसकी राजधानी पांडुआ पर कब्जा कर लिया। इलियास को एकदला के किले में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ से उसने एक शांति संधि स्वीकार कर ली जिसके तहत कोसी नदी को दोनों राज्यों के बीच सीमा के रूप में तय किया गया। दिल्ली के साथ शांति संधि ने इलियास शाह को पूर्वी क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाया और उसने कामरूप (असम) राज्य के एक हिस्से पर अपना नियंत्रण बढ़ाया। इलियास ने जाजनगर (उड़ीसा) पर भी हमला किया और भारी लूट के साथ लौटा।

- **इलियास के बाद उसका पुत्र सिकंदर गद्दी पर बैठा** । उसके शासनकाल में फिरोज तुगलक ने एक बार फिर बंगाल पर आक्रमण करने का प्रयास किया, लेकिन सिकंदर ने अपने पिता की रणनीति अपनाई और एकदला की ओर पीछे हट गया, जिससे फिरोज को व्यर्थ ही वापस लौटना पड़ा। इस प्रयास के बाद, बंगाल अगले 200 वर्षों तक अछूता रहा। **1538 ई. में ही शेरशाह ने बंगाल पर आक्रमण किया और उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया।**
- **बंगाल साम्राज्य का सबसे प्रसिद्ध सुल्तान गयासुद्दीन आज़म शाह (1389-1409 ई.) था।** वह विद्या का संरक्षक भी था और **शिराज के प्रसिद्ध फ़ारसी कवि हाफ़िज़** के साथ उसके घनिष्ठ संबंध थे । उसके चीनियों के साथ भी मैत्रीपूर्ण संबंध थे जिससे बंगाल के विदेशी व्यापार में वृद्धि हुई। **चटगाँव बंदरगाह** विदेशी व्यापार का एक समृद्ध केंद्र था।
- बंगाल के सुल्तान कला और स्थापत्य कला के महान संरक्षक थे। दिल्ली से अलग शैली में कई भव्य इमारतों का निर्माण हुआ। बंगाली भाषा को भी संरक्षण मिला। **श्री कृष्ण विजय के संकलनकर्ता, प्रसिद्ध कवि मालाधर बसु को गुणराज खाँ की उपाधि दी गई और उनके पुत्र को सत्यराज खाँ की उपाधि से सम्मानित किया गया** ।
- अपनी उदार धार्मिक नीतियों के लिए प्रसिद्ध सुल्तान अलाउद्दीन हुसैन (1493-1519 ई.) ने बंगाली साहित्य को भी बढ़ावा दिया। उनके दरबार में प्रसिद्ध वैष्णव बंधुओं, **रूपा और सनातन को** उच्च पद दिए गए थे। वैष्णव संत **चैतन्य प्रभु का** भी सुल्तान द्वारा बहुत सम्मान किया जाता था।
- अलाउद्दीन हुसैन ने **कामरूप साम्राज्य** के विरुद्ध भी एक सफल विजय अभियान चलाया और उसे बंगाल राज्य में मिला लिया। हालाँकि, उड़ीसा राज्य के विरुद्ध उनके अभियान सफल नहीं रहे क्योंकि सरस्वती नदी बंगाल और उड़ीसा के बीच वास्तविक सीमा बनी रही।
- बाद में, **अलाउद्दीन के बेटे नुसरत शाह ने असम तक अपने क्षेत्र का विस्तार करना चाहा, लेकिन सुहंगमुंग** (जिसे स्वर्ग नारायण भी कहा जाता है) के नेतृत्व में अहोमों ने उसे खदेड़ दिया, जिन्हें सबसे महान अहोम शासक माना जाता है। वैष्णव सुधारक **शंकरदेव** इसी काल के थे और इस क्षेत्र में वैष्णव धर्म के प्रसार में उनका महत्वपूर्ण योगदान था।

असम

- अहोम साम्राज्य की स्थापना **13 वीं शताब्दी** में मोंग माओ (वर्तमान युन्नान प्रांत, चीन) के एक ताई राजकुमार **सुकफा ने की थी** । सदियों बाद, इस **राज्य ने हिंदू धर्म अपना लिया और यह एक बहु-जातीय संस्कृति बन गया।**
- उन्होंने **लगभग 600 वर्षों तक शासन किया** और **इस अवधि के दौरान उन पर कोई भी आक्रमण सफल नहीं हुआ** , इसलिए वे काफी हद तक स्वतंत्र रहे।
- अहोमों ने 16 वीं **शताब्दी में सुहुनमुंग** (1497-1539) के अधीन अपने क्षेत्र का विस्तार किया।
- अहोमों के हिन्दूकरण की शुरुआत सुहंगमुंग द्वारा अपना नाम बदलकर **स्वर्ग नारायण** रखने से हुई ।
- **बंगाल के सुल्तान नुसरत शाह ने अहोमों पर आक्रमण किया लेकिन पराजित हो गये।**
- **वैष्णव सुधारक शंकरदेव** (जन्म नागांव, असम में) इसी काल (1449-1568) में हुए। उन्होंने **असम में वैष्णव धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।** उन्होंने और उनके अनुयायियों ने सत्र (मठ) स्थापित किए, जहाँ सत्रिया नृत्य शैली की शुरुआत हुई।

ओडिशा

- मध्यकालीन समय के दौरान, **हिंदू गजपति शासकों (1435 - 1541 ई.) ने कलिंग (ओडिशा),** आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल के बड़े हिस्से, तथा मध्य प्रदेश और झारखंड के पूर्वी और मध्य भागों पर शासन किया।
- पूर्वी गंग वंश के पतन के बाद **कपिलेन्द्र देव ने 1453 ई. में गजपति वंश की स्थापना की ।**
- उन्होंने दक्षिण में कर्नाटक पर अपना नियंत्रण फैला लिया, जिससे उनका विजयनगर, रेड्डी और बहमनी सुल्तानों के साथ टकराव हो गया।
- हालाँकि, 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक, विजयनगर और गोलकुंडा ने दक्षिणी साम्राज्य के बड़े क्षेत्रों पर नियंत्रण प्राप्त कर लिया था, और गजपति राजवंश की जगह भोई राजवंश ने ले ली थी।

मालवा

- मालवा राज्य की रणनीतिक स्थिति बहुत अच्छी थी। **गुजरात और उत्तरी भारत, तथा उत्तरी और दक्षिणी भारत के बीच व्यापार मार्ग इसी से होकर गुजरते थे।** मालवा का पठार भौगोलिक दृष्टि से इसे जीतना कठिन बनाता था, जबकि नर्मदा

और तापी नदियाँ परिवहन का एक सस्ता साधन थीं। इस कारण मालवा का क्षेत्र एक अमूल्य रत्न बन गया था और पड़ोसी गुजरात, मेवाड़ और यहाँ तक कि दिल्ली सल्तनत भी इस पर अपना नियंत्रण बढ़ाना चाहते थे।

- **मालवा पर 1305 ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने कब्ज़ा कर लिया** और **1401 ई. तक सल्तनत के अधीन रहा** । हालाँकि, **तैमूर के आक्रमण के बाद, मालवा के गवर्नर दिलावर खान गोरी ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और धार को अपनी राजधानी बनाकर गौरी राजवंश की स्थापना की** ।
- **उनके पुत्र और उत्तराधिकारी होशंग शाह** के शासनकाल में राजधानी धार से **मांडू** स्थानांतरित कर दी गई । होशंग शाह ने **धार्मिक सहिष्णुता की नीति** अपनाई और कई राजपूतों को मालवा में बसने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने जैनियों को भी अपना संरक्षण प्रदान किया, जो उस क्षेत्र के प्रमुख व्यापारिक व्यापारी और बैंकर थे।
- ग़ौरी **वंश का स्थान महमूद शाह प्रथम ने लिया, जिसने 1436 में स्वयं को राजा घोषित कर दिया।** उसने **खिलजी वंश की** स्थापना की जिसने **1531 तक मालवा पर शासन किया** । वह एक महत्वाकांक्षी सम्राट था और अपने सभी पड़ोसियों - गुजरात, मेवाड़, गोंडवाना, उड़ीसा और यहाँ तक कि दिल्ली सल्तनत - के विरुद्ध युद्ध में लगा हुआ था। वह अन्य धर्मों के प्रति असहिष्णु था और **उसके शासन में कई हिंदू मंदिरों को नष्ट कर दिया गया** ।
- महमूद खिलजी प्रथम **के बाद उसका सबसे बड़ा पुत्र गयासुद्दीन गद्दी पर बैठा** । गयासुद्दीन के अंतिम दिन उसके दो पुत्रों के बीच गद्दी के लिए संघर्ष के कारण कटुतापूर्ण रहे, जिसमें **नासिरुद्दीन अलाउद्दीन पर विजयी हुआ** और 1500 में गद्दी पर बैठा।
- अंतिम शासक महमूद शाह द्वितीय ने 1531 में मांडू का किला बहादुर शाह के हाथों में जाने के बाद **गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।**
- मांडू में वास्तुकला की एक विशिष्ट शैली विकसित हुई। इसकी विशेषता रंगीन और चमकदार टाइलों का बड़े पैमाने पर उपयोग थी। इमारतों में ऊँचे चबूतरे बनाकर वास्तुकला को विशाल रूप दिया गया था। **जामा मस्जिद, जहाज महल और हिंडोला महल** इस काल के महत्वपूर्ण स्मारक हैं।

मेवाड़

- **अलाउद्दीन खिलजी द्वारा रणथम्भौर पर विजय के बाद** चौहानों की शक्ति क्षीण हो गई तथा शून्य शक्ति के इस काल में **अनेक नये राज्यों का उदय हुआ ।**
- **मारवाड़** राज्य की स्थापना 1465 ई. में हुई, जिसकी राजधानी जोधपुर थी।
- Muslim principality of **Nagaur**
- **अजमेर**
- **मेवाड़,** जो राणा कुंभा (1433-1468 ई.) के अधीन एक प्रमुख शक्ति केंद्र के रूप में उभरा।
- **राणा कुंभा एक योग्य सैन्य जनरल थे जिन्होंने बूंदी, कोटा, डूंगरपुर आदि** कई क्षेत्रों के खिलाफ सफल अभियान चलाया और उन्हें अपने राज्य में मिला लिया। चूँकि कोटा पहले मालवा को और डूंगरपुर गुजरात को कर देता था, इसलिए इन विजयों ने राणा कुंभा को गुजरात और मालवा के शासकों के साथ सीधे संघर्ष में ला खड़ा किया। राणा अपने शासनकाल के अधिकांश समय तक इन संघर्षों में उलझे रहे, हालाँकि वे अपने क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखने में सफल रहे।
- राणा को **मारवाड़ के राठौड़ों का** भी सामना करना पड़ा। मारवाड़ मेवाड़ के अधीन था, लेकिन **राव जोधा** के नेतृत्व में उसने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी।
- राणा कला और संस्कृति के संरक्षक भी थे। उन्होंने स्वयं कई पुस्तकों की रचना की। उन्होंने मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में **चित्तौड़ में विजय स्तंभ (कीर्ति स्तंभ) की स्थापना** भी की । उन्होंने सिंचाई के लिए कई झीलें और जलाशय भी बनवाए।
- राणा को उसके पुत्र उदयसिंह (उदयसिंह प्रथम) ने गद्दी के लिए **मारा , लेकिन वह अधिक समय तक शासन नहीं कर सका। कुंभा के पोते राणा सांगा 1508 ई. में गद्दी पर बैठे।**
- इस समय, मालवा के शासक महमूद द्वितीय का पूर्वी मालवा पर शासन करने वाले एक शक्तिशाली सरदार मेदिनी राय से मतभेद था। महमूद द्वितीय ने गुजरात के शासक से मदद माँगी, जबकि मेदिनी राय राणा साँगा के साथ मिल गया। **1517 ई. में राणा साँगा ने महमूद द्वितीय को पराजित किया और पूर्वी मालवा मेवाड़ के अधीन आ गया।**

- मालवा के सामरिक महत्व को देखते हुए, **दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, लेकिन राणा सांगा ने खातोली में उसे खदेड़ दिया।** इसी प्रतिद्वंद्विता के प्रभाव में, राणा सांगा ने लोदियों को हराने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।

Gujarat

- गुजरात, अपने समृद्ध **हस्तशिल्प उद्योग** और प्राकृतिक समुद्री बंदरगाहों के माध्यम से होने वाले बाहरी व्यापार के कारण **दिल्ली सल्तनत के सबसे समृद्ध प्रांतों में से एक था।**
- **तुगलकों के अधीन, इसका प्रशासन** दिल्ली सुल्तान द्वारा नियुक्त एक गवर्नर द्वारा किया जाता था। हालाँकि, **तैमूर के आक्रमण के बाद** जब दिल्ली सल्तनत में अव्यवस्था फैल गई , तो गुजरात के तत्कालीन गवर्नर **ज़फ़र ख़ान ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और 1407 ई. में मुज़फ़्फ़र शाह की उपाधि से गुजरात राज्य की गद्दी पर बैठे।**
- हालाँकि, अहमद शाह प्रथम (1411-43 ई.) को गुजरात राज्य का **वास्तविक संस्थापक माना जाता है । वह मुज़फ़्फ़र शाह का पोता था** और उसके शासनकाल में ही साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण शुरू हुआ। उसने **अपनी राजधानी पाटन से नवनिर्मित अहमदाबाद शहर में स्थानांतरित कर दी।**
- बाज़ारों, मस्जिदों और मदरसों सहित कई भव्य महलों का भी निर्माण किया गया। वास्तुकला की शैली दिल्ली में प्रचलित वास्तुकला से भिन्न थी। इस काल की वास्तुकला के कुछ बेहतरीन उदाहरण **अहमदाबाद की जामा मस्जिद और तीन दरवाज़ा हैं।** अहमद शाह एक महान सैन्य नेता भी थे। उन्होंने **सौराष्ट्र के गिरनार किले पर कब्ज़ा कर लिया और झालावाड़, बूंदी और डूंगरपुर के राजपूत राज्यों को अपने नियंत्रण में ले लिया।**
- हालाँकि, उसकी विजयों ने उसकी कट्टरता को दर्शाया क्योंकि उसने **हिंदू तीर्थस्थल सिद्धपुर पर हमला किया और कई सुंदर मंदिरों को नष्ट कर दिया** । उसने पहली बार गुजरात के हिंदुओं पर **जजिया कर लगाया और मध्ययुगीन इतिहासकारों ने उसे काफिरों का दुश्मन बताया।**
- गुजरात और मालवा के राज्य एक-दूसरे के कट्टर प्रतिद्वंदी थे। **मुज़फ़्फ़र शाह ने मालवा के शासक होशंग शाह को हराया,** लेकिन मालवा पर नियंत्रण करना मुश्किल होने के कारण उसे होशंग शाह को फिर से अपने अधीन करना पड़ा।
- इससे प्रतिद्वंद्विता और अधिक तीव्र हो गई तथा दोनों शक्तियां एक-दूसरे को कमजोर करने के अवसर की तलाश में लगातार लगी रहीं, चाहे इसके लिए उन्हें दलबदलू सदस्यों या साझा प्रतिद्वंद्वियों को सहायता देनी पड़े।
- इस प्रतिद्वंद्विता ने दोनों साम्राज्यों के संसाधनों को खत्म कर दिया और इसलिए वे लंबे समय तक खुद को एक स्थिर साम्राज्य के रूप में स्थापित नहीं कर सके।
- गुजरात का एक अन्य प्रसिद्ध सुल्तान **महमूद बेगड़ा** था जिसने 50 वर्षों से अधिक (1459-1511 ई.) तक शासन किया।
- **उन्होंने गिरनार (जूनागढ़ किला) और चंपानेर** के दो महत्वपूर्ण किलों पर विजय प्राप्त की और पूरे सौराष्ट्र क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- **उसने गिरनार में मुस्तफाबाद शहर की नींव** रखी जो साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनी। चंपानेर में उसने **मुहम्मदाबाद शहर की स्थापना की** ।
- बेगढा ने द्वारका पर भी **आक्रमण किया और कई मंदिरों को नष्ट कर दिया** ।
- उनके शासनकाल की वास्तुकला विशिष्ट शैली की थी और उसमें अनेक जैन सिद्धांतों का प्रयोग किया गया था। **चंपानेर की जामा मस्जिद** ऐसी ही वास्तुकला का एक उदाहरण है।
- बेगड़ा ने **मिस्र के शासक के साथ मिलकर पुर्तगालियों पर हमला किया,** जो पश्चिम के साथ गुजरात के व्यापार में परेशानी पैदा कर रहे थे, लेकिन वह उन्हें हराने में सफल नहीं हो सका।
- कुल मिलाकर, उनका लंबा कार्यकाल शांतिपूर्ण रहा और व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा मिला। उन्होंने यात्रा करने वाले व्यापारियों के लिए विभिन्न सराय और सरायों का निर्माण कराया और सड़कों को सुरक्षित बनाया।
- उन्होंने विद्वानों को भी संरक्षण प्रदान किया। संस्कृत में रचना करने वाले **कवि उदयराज उनके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।**
- महमूद बेगड़ा के नेतृत्व में गुजरात एक मजबूत राज्य के रूप में उभरा और इसकी शक्ति का एहसास तब हुआ जब बाद में इसने मुगल सम्राट हुमायूं के लिए खतरा पैदा कर दिया।

Vijayanagar Empire

- चौदहवीं शताब्दी के मध्य में, जब उत्तर भारत में विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय थीं, दक्षिण में **दो राज्यों ने लंबे समय तक स्थिर शासन प्रदान किया। ये थे विजयनगर** और **बहमनी साम्राज्य** ।
- इन राज्यों का उदय **मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान शुरू हुआ,** जब सल्तनत के कई हिस्सों में विद्रोह हो रहे थे। **कमज़ोर केंद्रीय प्रशासन** का लाभ उठाकर , इन दोनों साम्राज्यों ने दिल्ली सल्तनत से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- हालाँकि **ये राज्य आपस में लगातार लड़ते रहे, फिर भी उन्होंने अपने क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था बनाए रखी और कुल मिलाकर स्थिर सरकारें प्रदान कीं जिससे व्यापार और वाणिज्य का विकास संभव हुआ** । कई शासकों ने कृषि के विकास के लिए खुद को समर्पित कर दिया और शानदार इमारतों वाले शहर और राजधानियाँ बनवाईं। उनमें से कई कला और संस्कृति के संरक्षक भी थे।
- इस प्रकार, उत्तर भारत के विपरीत, दक्षिण भारत में **14वीं शताब्दी के मध्य से दो बड़े प्रादेशिक राज्य उभरे और कार्यरत रहे। 15वीं शताब्दी के अंत में बहमनी साम्राज्य के विघटन और बाद में 1565 में तालीकोटा के युद्ध** में विजयनगर साम्राज्य की हार के बाद उसके विघटन के साथ एक नई स्थिति उत्पन्न हुई।
- यह वह समय था जब एक यूरोपीय शक्ति, पुर्तगाली, ने एशियाई परिदृश्य में प्रवेश किया, और अपनी नौसैनिक शक्ति के आधार पर समुद्र और उसके सीमावर्ती क्षेत्रों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने और विदेशी व्यापार पर कब्जा करने का प्रयास किया।

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना

- एक परंपरा के अनुसार, **विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक हरिहर और बुक्का पाँच भाइयों के परिवार से थे, जो वारंगल के काकतीय** सामंत थे । बाद में, वे कर्नाटक के कम्पिली राज्य में मंत्री बने।
- एक किंवदंती के अनुसार, जब **मोहम्मद बिन तुगलक ने** कम्पिली पर विजय प्राप्त की, तो दोनों भाइयों को भी पकड़ लिया गया, उन्हें दिल्ली ले जाया गया और जबरन इस्लाम धर्म कबूल करवा दिया गया।
- हालाँकि, मोहम्मद बिन तुगलक के अत्याचारों के कारण **कम्पिली** की जनता ने विद्रोह कर दिया। ऐसे में विद्रोह से निपटने के लिए हरिहर और बुक्का को नियुक्त किया गया, लेकिन अपनी प्रजा की दुर्दशा देखकर, दोनों भाइयों के मन में अपनी मातृभूमि को तुर्कों की दासता से मुक्त कराने की इच्छा जागृत हुई।
- अपने गुरु विद्यारण्य के कहने पर उन्होंने पुनः हिंदू धर्म अपना लिया और **1336 ई. में विजयनगर नामक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की** ।
- दोनों भाइयों ने चेर प्रदेशों सहित दक्षिण में रामेश्वरम तक अपना साम्राज्य फैलाया। **संगम, सलुव, तुलुव और अरविदु नामक चार राजवंशों के सोलह शासकों ने 1336 से 1646 ईस्वी तक विजयनगर पर शासन किया।**
- संगमा राजवंश (1336-1485)
- सलुवा राजवंश (1485-1505)
- तुलुवा राजवंश (1505-1570)
- अरविदु राजवंश (1570-1650)

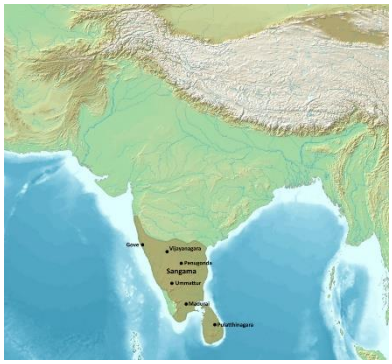

संगमा राजवंश

- **संगमा विजयनगर के प्रथम राजवंश** का नाम है । यह विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला पहला राजवंश था।
- यह राजवंश साम्राज्य के संस्थापकों, **हरिहर प्रथम और बुक्का का** घर था । इसने **1336 से 1485 ईस्वी तक शासन किया।**
- हरिहर और बुक्का प्रथम के शासनकाल के दौरान, विजयनगर साम्राज्य ने कई रियासतों और प्रभागों को अपने में समाहित कर लिया, जिनमें होयसल क्षेत्र का अधिकांश भाग भी शामिल था।

- **नुनिज़ का इतिहास** इस बात का विस्तृत विवरण देता है कि विजयनगर के शासकों ने कैसे अपनी शक्ति अर्जित करना शुरू किया, जो बाद में इतनी व्यापक हो गई। यह विवरण हर विवरण में सटीक हो भी सकता है और नहीं भी, लेकिन यह उस समय के पुरालेखों और अन्य अभिलेखों से काफी मेल खाता है।
- अभिलेखों के अनुसार, गुजरात पर विजय प्राप्त करने के बाद, दिल्ली के मुहम्मद तग़लक़ ने दख़ान बालाघाट, या पश्चिमी घाट के ऊपर की ऊँची भूमि से होते हुए दक्षिण की ओर कूच किया, और वर्ष 1336 के आसपास अनेगुंदी शहर और किले पर कब्ज़ा कर लिया।
- इसके नेता की, उनके पूरे परिवार सहित, हत्या कर दी गई। एक प्रतिनिधि के माध्यम से इस क्षेत्र पर शासन करने के असफल प्रयास के बाद, मुहम्मद ने इसके दिवंगत मंत्री को राज्याध्यक्ष के पद पर पदोन्नत किया, जिसे नुनिज़ "देव राय" या हरिहर देव प्रथम के लिए "देवराव" कहते हैं।
- नये सरदार ने महान धार्मिक गुरु माधव की सहायता से अनेगुंदी के सामने नदी के दक्षिणी तट पर विजयनगर शहर की स्थापना की और वहीं अपना निवास बनाया। उनका मानना था कि नदी को अपने और सदैव लूटने वाले मुसलमानों के बीच रखने से उन्हें और उनके लोगों को पहले से अधिक सुरक्षा मिलेगी।
- उनके बाद बुक्का नामक राजा ने शासन किया, जिसने सैंतीस वर्षों तक शासन किया, और अगला राजा बुक्का का पुत्र, पुरेयोरे देव (हरिहर देव द्वितीय) था।
- पहले दो राजा, हरिहर प्रथम और बुक्का, भाई थे, और तीसरे राजा, हरिहर द्वितीय, निस्संदेह बुक्का के पुत्र थे।
- इस प्रकार लगभग 1335 में स्थापित विजयनगर शहर का महत्व तेजी से बढ़ा और यह हिंदू बहिष्कृतों, शरणार्थियों और लड़ाकू लोगों के लिए शरणस्थली बन गया, जिन्हें आगे बढ़ते मुसलमानों ने उनके पुराने गढ़ों से पराजित कर बाहर निकाल दिया था।
- हालाँकि, विजयनगर के प्रथम शासकों ने स्वयं को राजा कहलाने का साहस नहीं किया, और न ही उन ब्राह्मणों ने, जिन्होंने उनके प्रारंभिक शिलालेखों की रचना की थी।

हरिहर और बुक्का (1336 - 1377 ई.)

- **Harihara**
- हरिहर प्रथम ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की और उसे 'हक्का' या 'वीरा हरिहर' के नाम से भी जाना जाता था। वह भावना संगमा के सबसे बड़े पुत्र और कुरुबा वंश के वंशज थे।
- वह संगम राजवंश के संस्थापक भी थे। सत्ता में आने के बाद, उन्होंने वर्तमान कर्नाटक के पश्चिमी तट पर बरकुरु में एक किला बनवाया।
- होयसल वीर बल्लाला तृतीय की मृत्यु के बाद 1343 में राज्य का नियंत्रण संभालने से पहले उन्होंने होयसल साम्राज्य के उत्तरी भागों पर शासन किया।
- हरिहर प्रथम को **'कर्नाटक विद्या विलास', 'अरिरयाविभद', अर्थात 'शत्रु राजाओं को अग्नि', तथा 'भाषेगेतप्पुवरयारागंद',** अर्थात उन सामंतों को दंड देने वाला के रूप में जाना जाता था, जो अपने समय के शिलालेखों के अनुसार अपने वादे पूरे करने में असफल रहे थे।
- **झोपड़ी**
- बुक्का राय प्रथम संगम राजवंश का शासक था जिसने विजयनगर साम्राज्य पर शासन किया था। इस प्राचीन शासक ने तेलुगु कवि नचना सोमा का समर्थन किया था।
- बुक्का और राया के प्रारंभिक जीवन के वृत्तांत रहस्य में डूबे हुए हैं, और उनके बारे में कई किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। हरिहर प्रथम को हक्का के नाम से भी जाना जाता था।
- लोकप्रिय मान्यता के अनुसार, हक्का और बुक्का कुरुबा वंश में पैदा हुए थे और वारंगल के राजा की शाही सेना में सेनापति के रूप में कार्य करते थे।
- मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा वारंगल के शासक को पराजित करने के बाद, हक्का और बुक्का को पकड़ लिया गया, कैद कर लिया गया और दिल्ली स्थानांतरित कर दिया गया। उन्हें इस्लाम धर्म अपनाने के लिए मजबूर किया गया।

हरिहर द्वितीय (1377 – 1406 ई.)

- हरिहर द्वितीय, संगम राजवंश के दौरान विजयनगर साम्राज्य के शासक थे। वे 1377 से 1404 ई. तक सत्ता में रहे।
- **इस शासक ने प्रसिद्ध कन्नड़ कवि मधुर का समर्थन किया। 'वेदमार्ग प्रवर्तक' और 'वैदिकमार्ग स्थापनाचार्य' की** उपाधियों से विभूषित इस सम्राट के शासनकाल में वेदों पर महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुआ।
- हरिहर द्वितीय ने मुख्यतः विजयनगर क्षेत्र पर शासन किया, जिसे हम्पी के नाम से जाना जाता है। हरिहर द्वितीय के महल के खंडहर हम्पी के खंडहरों के बीच पाए जा सकते हैं।

देव राय प्रथम (1406 - 1422 ई.)

- देव राय प्रथम (शासनकाल 1406-1422) विजयनगर साम्राज्य (संगम राजवंश का) का राजा था।
- हरिहर द्वितीय की मृत्यु के बाद, उनके पुत्रों में सिंहासन के लिए संघर्ष हुआ, जिसमें अंततः देव राय प्रथम विजयी हुआ।
- वह एक योग्य शासक थे जो अपनी सैन्य शक्ति और अपने राज्य में सिंचाई परियोजनाओं के समर्थन के लिए जाने जाते थे।
- दूसरी ओर, देव राय प्रथम ने 1406 में स्वयं के लिए सिंहासन सुरक्षित कर लिया। बहमनी सुल्तान के साथ युद्ध में उसे कुछ असफलताएं झेलनी पड़ीं और 1422 में उसकी मृत्यु हो गई।
- देव राय प्रथम के बाद उनके पुत्र वीर-विजय ने शासन संभाला, जिन्हें नूनिज़ ने "विसाया" कहा है, और नूनिज़ के अनुसार, जिन्होंने छह वर्षों तक शासन किया।

देव राय द्वितीय (1425–1446 ई.)

- देव राय द्वितीय ने 1422 से 1446 ई. तक विजयनगर साम्राज्य पर शासन किया। वह **संगम वंश का सबसे शक्तिशाली शासक** था और एक कुशल प्रशासक, योद्धा और विद्वान था।
- वह देव राय प्रथम का पोता था। **बहमनी के अहमद शाह प्रथम ने** विजयनगर पर आक्रमण किया और युद्ध क्षतिपूर्ति वसूल की।
- उन्होंने सुप्रसिद्ध **कन्नड़ कृतियाँ (सोबागिना सोन और अमरुका) के** साथ-साथ **संस्कृत कृतियाँ (महानटक सुधानिधि) भी लिखीं।**
- इस तथ्य के बावजूद कि देव राय द्वितीय के बहमनियों के साथ युद्ध हार और क्षति में समाप्त हुए, उनके शासनकाल में प्रशासनिक पुनर्गठन की विशेषता थी। बहमनियों से मुकाबला करने के लिए उन्होंने **मुसलमानों को सेना में भर्ती किया ।**
- व्यापार को नियंत्रित और विनियमित करने के लिए, उन्होंने अपने दाहिने हाथ, लक्कन्ना या लक्ष्मण को दक्षिणी समुद्र के आधिपत्य में नियुक्त किया, जो विदेशी वाणिज्य का प्रभारी था।
- **निकोलो कोंटी और** फारस के दूत अब्दुर रज्जाक ने क्रमशः 1420 और 1443 में विजयनगर का दौरा किया और शहर तथा विजयनगर साम्राज्य का शानदार वर्णन किया।
- उन्हें **प्रौदा देव राय कहा जाता था।**
- उनके शिलालेखों में उन्हें **गजबेटेकर (हाथी शिकारी) की उपाधि** दी गई है ।
- श्रीलंका ने उन्हें नियमित रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की।
- उनका झुकाव **वीरशैव धर्म** की ओर था , फिर भी वे अन्य धर्मों का सम्मान करते थे।
- **डिंडिमा दरबारी कवि थे** , जबकि श्रीनाथ को 'कविसर्वभौम' की उपाधि दी गई थी।
- फारस के शाहरूख के दूत **अब्दुर रज्जाक ने उनके शासनकाल के दौरान विजयनगर का दौरा किया था।**

संगम राजवंश का अंत

- देव राय द्वितीय की मृत्यु 1446 में हुई और उनके सबसे बड़े जीवित पुत्र मलिकार्जुन ने उनका स्थान लिया, जिन्होंने बहमनी सुल्तान और उड़ीसा के हिंदू साम्राज्य के राजा द्वारा अपनी राजधानी पर किए गए संयुक्त हमले को विफल कर दिया और अपने शासनकाल के दौरान अपने राज्य को अक्षुण्ण बनाए रखने में कामयाब रहे।
- **विरुपाक्ष राय द्वितीय** विजयनगर साम्राज्य के राजा थे। 1465 में विरुपाक्ष राय द्वितीय अपने चाचा मल्लिकार्जुन राय के उत्तराधिकारी बने, जो एक भ्रष्ट और कमजोर शासक थे और लगातार साम्राज्य के दुश्मनों से हारते थे।

- **उनके शासनकाल के दौरान, चंद्रगिरि के** सलुवा प्रमुख नरसिंह , जिनके पूर्वजों ने विजयनगर साम्राज्य के सामंतों के रूप में ईमानदारी से सेवा की थी, प्रमुखता से उभरे और बहमनी साम्राज्य और उड़ीसा के राजा का विरोध किया।
- Raja Purusottama Gajapati of Orissa advanced as far south as Tiruvannamalai, while the Bahmani advanced into the Doab between Krishna and the Tungabhadra.
- इन खतरों से राज्य की रक्षा के लिए नरसिंह सालुवा ने अपने निकम्मे स्वामी को पदच्युत कर दिया और 1480 के आसपास स्वयं सिंहासन पर कब्जा कर लिया।
- इस प्रकार, संगम राजवंश को पदच्युत कर दिया गया जिसे "प्रथम अतिक्रमण" के रूप में जाना जाता है, और विजयनार **सलुवा राजवंश** का हिस्सा बन गया ।

सलुवा राजवंश

- सलुवा राजवंश **विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला दूसरा राजवंश** था और इसका निर्माण सलुवाओं द्वारा किया गया था, जो ऐतिहासिक परंपरा के अनुसार आधुनिक भारत में उत्तरी कर्नाटक के कल्याणी क्षेत्र के मूल निवासी थे।
- गोरंटला **शिलालेख के** अनुसार, इस क्षेत्र की उत्पत्ति पश्चिमी चालुक्यों और कर्नाटक के कलचुरियों के समय से हुई है।
- विजयनगर युग में शिलालेखीय साक्ष्य से सबसे पहले ज्ञात सालुवा **मंगलदेव** थे , जो **सालुवा नरसिम्हा देव राय के परदादा थे** ।
  - मंगलदेव ने मदुरै के तुर्क-फारसी सल्तनत के खिलाफ सम्राट बुक्का राय प्रथम की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - **उनके वंशजों ने सलुवा राजवंश की स्थापना की** और विजयनगर साम्राज्य के शासक वंशों में से एक बन गये।
  - **1485 से 1505 तक तीन सम्राटों ने शासन किया** जिसके बाद तुलुवा राजवंश ने सिंहासन जीता।
- **सालुव नरसिम्हा देव राय (1485-1491 ई.)**
- सलुवा गुंडा के पुत्र सलुवा नरसिम्हा देव राय, जो चंद्रगिरि के राज्यपाल थे, 1486-1491 ई. तक शासन करने वाले **राजवंश के विजयनगर के पहले सम्राट थे।**
- उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार करने का प्रयास किया लेकिन विद्रोही सरदारों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा।
- He conquered the western ports of Kannada country of Mangalore, Honnavar, Bakanur and Bhatkal but lost Udayagiri to Gajapati Kapilendra in 1491. He died in 1491.
- **थिम्मा भूपाल (1491 ई.)**
- वह **अपने पिता नरसिंह देव राय के उत्तराधिकारी बने,** लेकिन उनके सेनापति ने राजनीतिक अशांति का फायदा उठाकर उनकी हत्या कर दी।
- उनके **बाद उनके छोटे भाई नरसिंह राय द्वितीय ने गद्दी संभाली।**
- **Narasimha Raya II (1491-1505 AD)**
- राजा बनने के बावजूद, वह 1505 में अपनी मृत्यु तक **अपने सेनापति तुलुव नरसा नायक के हाथों की कठपुतली बने रहे। नरसा नायक के पुत्र, वीरनरसिंह राय ने उनकी हत्या कर दी,** जिसने स्वयं को नया राजा घोषित कर दिया। नरसा नायक की मृत्यु के बाद, वीरनरसिंह राय साम्राज्य के शासक के रूप में कार्य कर रहे थे।
- इस प्रकार सालुव वंश का अंत हो गया।

तुलुवा राजवंश

- **तुलुव राजवंश विजयनगर साम्राज्य** पर शासन करने वाला तीसरा राजवंश था । वे तटीय कर्नाटक के प्रमुख थे। तुलुव राजवंश दक्षिण भारत के विजयनगर साम्राज्य के निर्णायक वंशों में से एक था।
- इस राजवंश की पितृवंशीय वंशावली पश्चिमी तुलु भाषी क्षेत्र के एक शक्तिशाली सरदार, **तुलुव नरसिंह नायक से जुड़ी है। उनके पुत्र नरसिंह नायक ने** कमज़ोर **नरसिंह राय द्वितीय** की हत्या की योजना बनाई और सलुव राजवंश का शासन समाप्त कर दिया।
- **नरसिंह नायक ने बाद में वीरनरसिंह राय** के रूप में विजयनगर सिंहासन संभाला और तुलुव राजवंश को प्रमुखता दिलाई।
- इस दौरान, **विजयनगर साम्राज्य अपने वैभव के शिखर पर पहुँच गया , कृष्णदेव राय इसके सबसे प्रसिद्ध राजा थे। उन्होंने विजयनगर को अपनी राजधानी** बनाकर दक्षिण भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया ।

Vira Narasimha Raya (1505 – 1509 CE)

- सलुव वंश भी अल्पकालिक रहा और **वीर नरसिंह ने एक नए राजवंश की स्थापना की जिसे तुलव वंश के नाम से जाना गया** । उन्होंने 1505 से 1509 तक शासन किया। वे एक धार्मिक राजा थे और पवित्र स्थलों पर दान देते थे।
- किंवदंती है कि 1509 में मरते समय, वीर नरसिंह राय ने अपने मंत्री सलुवा थिम्मा (थिम्मारासा) से अपने छोटे भाई कृष्णदेव राय को अंधा करने के लिए कहा ताकि उनका अपना आठ वर्षीय पुत्र विजयनगर का राजा बन सके।
- दूसरी ओर, थिम्मारासा ने राजा के लिए बकरी की एक जोड़ी आंखें लायीं और उन्हें बताया कि उसने कृष्णदेव राय की हत्या कर दी है।
- हालाँकि, दोनों सौतेले भाइयों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध और कृष्णदेव राय के सुचारू राज्याभिषेक के अलावा किसी अन्य बात का समर्थन करने वाला कोई सबूत नहीं है।

Krishna Deva Raya (1509 – 1529 CE)

- कृष्णदेवराय (1509-1529 ई.) **विजयनगर साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली सम्राट** थे ।
- साम्राज्य के शिखर पर रहते हुए, उन्होंने इसकी अध्यक्षता की। दक्षिण भारत में कन्नड़ और तेलुगु मूल के लोग उन्हें **एक नायक मानते हैं और उन्हें भारत के सबसे प्रतापी राजाओं में से एक माना जाता है।**
- **सम्राट कृष्णदेवराय को आंध्रभोज और कन्नड़ राज्य रामरमण की** उपाधियाँ भी दी गईं । प्रशासन में उन्हें योग्य प्रधानमंत्री **तिम्मारुसु** का सहयोग प्राप्त था ।
- कृष्णदेवराय के राज्याभिषेक के लिए तिम्मारुसु ही ज़िम्मेदार थे। कृष्णदेवराय तिम्मारुसु को पितातुल्य मानते थे।
- वह नागला देवी और तुलुवा नरसा नायक के पुत्र थे, जो सलुवा नरसिंह देव राय के अधीन सेनापति थे, जिन्होंने साम्राज्य को विघटित होने से बचाने के लिए शीघ्र ही इसकी संप्रभुता अपने हाथ में ले ली थी।
- कृष्णदेव राय ने पुर्तगाली गवर्नर **अल्बुकर्क के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे, जिनके राजदूत फ्रायर लुइस विजयनगर में रहते थे। उन्होंने विजयनगर के लिए ओन्सा (गजपति राज्य) जीता और उनके शासनकाल में विजयनगर सबसे शक्तिशाली राज्य बनकर उभरा।**
- उन्होंने **विजय महल (विजय भवन), हज़ारा राम मंदिर और विट्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण कराया। उन्होंने यवनराज स्थापनाचार्य** (यवन साम्राज्य अर्थात बीदर राज्य का पुनर्स्थापक) और अभिनर भोज की उपाधियाँ धारण कीं ।
- वह तेलुगु और संस्कृत दोनों भाषाओं के प्रतिभाशाली विद्वान थे, जिनमें से केवल दो ही रचनाएं उपलब्ध हैं: **राजनीति पर तेलुगु कृति 'अमुक्तमाल्यद'** और **संस्कृत नाटक 'जाम्बवती कात्यानम'।**
- उनका दरबार **'अष्टदिग्गजों'** (तेलुगु के आठ प्रसिद्ध कवियों) से सुशोभित था:

1. पेद्दना ('मनुचरितम्')
2. Timmaya (Parijata Apaharana1)
3. भट्टूमूर्ति
4. Dhurjati
5. मल्लाना
6. राजू रामचंद्र
7. सुराणा
8. Tenali Ramkrisha ('Panduranga Mahatya').

Achyuta Deva Raya (1529 – 1542 CE)

- **अच्युत देव राय दक्षिण भारत के विजयनगर साम्राज्य** के शासक थे । वे **कृष्ण देव राय के छोटे भाई** थे , जिनके उत्तराधिकारी वे 1529 में बने।
- **फर्नाओ नुनिज़** एक **पुर्तगाली यात्री** , इतिहासकार और घोड़ा व्यापारी थे, जिन्होंने अच्युताराय के शासनकाल के दौरान विजयनगर में तीन वर्ष बिताए थे।
- अच्युत देव राय एक कठिन दौर में राजा बने। कृष्णदेव राय के शासनकाल में शांति और समृद्धि के दिन अब समाप्त होने वाले थे।

- सामंत और शत्रु साम्राज्य को गिराने के मौके की तलाश में थे। इसके अलावा, अच्युत देव राय को शक्तिशाली आलिया राम राय के साथ सिंहासन के लिए प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी।
- जबकि नुनिज़ की कृतियाँ अच्युत देव राय को एक ऐसे राजा के रूप में चित्रित करती हैं जो दुर्गुणों और क्रूरता में लिप्त था, यह दिखाने के लिए पर्याप्त साक्ष्य हैं कि राजा अपने आप में उल्लेखनीय था और उसने राज्य की समृद्धि को जीवित रखने के लिए कड़ा संघर्ष किया।
- कृष्णदेव राय ने व्यक्तिगत रूप से उन्हें अपना उत्तराधिकारी चुना था।

सदा शिव राय (1542 - 1570 ई.)

- **सदाशिव राय (1542-1570) ने 16वीं शताब्दी में भारत में विजयनगर साम्राज्य** पर शासन किया , जो दक्कन क्षेत्र में स्थित एक शक्तिशाली दक्षिणी भारतीय साम्राज्य था।
- **1543 में अपने चाचा अच्युत देव राय की मृत्यु के बाद** वे सत्ता में आये । कृष्णदेव राय के दामाद आलिया राम राय ने उनके राज्याभिषेक को संभव बनाने में मदद की।
- **सदाशिव महत्वाकांक्षी रीजेंट सालकम तिम्मू राजू** के चंगुल से बच निकले और बाद में **मंत्री राम राय** ने उन्हें सिंहासन पर बैठाया , जिन्होंने शुरू में रीजेंट के रूप में काम किया लेकिन धीरे-धीरे राज्य के वास्तविक शासक बन गए।
- **वेनिस के एक यात्री सीज़र फ्रेडरिक ने** सदाशिव राय के शासनकाल के दौरान 1567-68 में विजयनगर का दौरा किया था।

अरविदु राजवंश

- यह **चौथा और अंतिम हिंदू राजवंश था जिसने विजयनगर साम्राज्य पर शासन किया** ।
- इसकी **स्थापना तिरुमाला ने की** थी । उनके भाई **राम राय** तुलुव वंश के अंतिम राजा के संरक्षक थे। 1565 ई. में **तालिकोटा के युद्ध में उनकी मृत्यु हो गई थी।**
- **तिरुमाला देव राय**
  - तिरुमाला देव राय **, कृष्ण देव राय के दामाद** भी थे । उन्होंने आंध्र प्रदेश के पेनुकोंडा में विजयनगर साम्राज्य की पुनर्स्थापना की। तालिकोंडा के युद्ध के बाद मुस्लिम शासकों ने इस राज्य को नष्ट कर दिया था।
  - अपने शासनकाल के दौरान, तिरुमाला देव राय को मदुरै और गिन्जी के दक्षिणी नायकों से विद्रोह का सामना करना पड़ा। 1572 ई. में उन्होंने धार्मिक जीवन अपना लिया।
- **श्रीरंगा देव राय (श्रीरंगा प्रथम)**
  - उन्होंने 1572 ई. से 1586 ई. तक विजयनगर साम्राज्य पर शासन किया।
  - उन्हें दक्कन के मुस्लिम शासकों के बार-बार हमलों का सामना करना पड़ा। फिर भी, उन्होंने राज्य के क्षेत्रों की रक्षा के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया और 1586 में बिना किसी उत्तराधिकारी के उनकी मृत्यु हो गई।
- **Venkata II (1586-1614 AD)**
  - वह **1586 में अपने बड़े भाई श्रीरंग प्रथम के बाद** विजयनगर साम्राज्य के नए राजा बने।
  - उन्होंने बीजापुर और गोलकुंडा के सुल्तानों से सफलतापूर्वक निपटकर राज्य की ताकत को पुनर्जीवित किया।
  - उन्होंने तमिलनाडु के विद्रोही नायकों का दमन किया।
- **श्रीरंग द्वितीय (1614 ई.)**
  - उन्होंने कुछ समय तक शासन किया। उनके कार्यकाल में प्रतिद्वंद्वी गुटों के बीच आंतरिक कलह शुरू हो गई।
- **Ramadeva (1617-1632 AD)**
  - उन्होंने 1617 ई. से 1632 ई. तक शासन किया।
- **वेंकट तृतीय**
  - वह 1632 ई. में विजयनगर के राजा बने और 1642 ई. तक शासन किया।
- **श्रीरंगा तृतीय**
  - **वह विजयनगर साम्राज्य के अंतिम शासक** थे । उन्होंने 1642 से 1646 ई. तक शासन किया।
  - 1647 में वंदावसी के युद्ध में गोलकुंडा के मीर जुमला ने श्री रंगा को पराजित किया।
  - इसके साथ ही विजयनगर साम्राज्य का अंत हो गया।

राजनीति और प्रशासन

- विजयनगर की राजनीति इस बात पर आधारित थी कि राजा ही शक्ति का केंद्र होता था और उसे सलाह देने के लिए **मंत्रिपरिषद होती थी ।**
- राज्य **को राज्यों या मंडलम (प्रांतों) में विभाजित किया गया था** , जिन्हें आगे **नाडु (ज़िला), स्थल (उप-ज़िला) और ग्राम (गाँव) में विभाजित किया गया था।** गाँव का प्रबंधन ग्राम प्रधान द्वारा किया जाता था, जो पंचायत का प्रमुख होता था।
- प्रान्तों के राज्यपाल **राजपुत्र या उच्च पदस्थ कुलीन होते थे** । उन्हें उच्च प्रांतीय स्वायत्तता प्राप्त थी, वे अपने दरबार चलाते थे, अपने अधिकारी नियुक्त करते थे, यहाँ तक कि अपनी सेनाएँ भी रखते थे। वे नए कर लगा सकते थे और केंद्र सरकार को एक निश्चित अंशदान देते थे। इस प्रकार, विजयनगर एक केंद्रीकृत साम्राज्य से ज़्यादा एक **संघ था।**
- राजा ने **सैन्य प्रमुखों को एक निश्चित राजस्व के साथ अमरम या क्षेत्र** भी प्रदान किया । इन प्रमुखों, जिन्हें **पलैयागर या नायक** कहा जाता था , को एक निश्चित संख्या में सैनिक रखने और केंद्र सरकार को एक निश्चित राजस्व देने होते थे।
- प्रत्येक नायक को प्रशासन के लिए एक क्षेत्र दिया जाता था। नायक अपने क्षेत्र में कृषि गतिविधियों के विस्तार के लिए ज़िम्मेदार होता था।
- **वह अपने क्षेत्र में कर एकत्र करता था** और इस आय से अपनी सेना, घोड़ों, हाथियों और युद्ध के हथियारों का रखरखाव करता था, जिन्हें उसे राया या विजयनगर शासक को आपूर्ति करना होता था।
- अमर **-नायक** प्रतिवर्ष राजा को कर भेजते थे और अपनी वफादारी व्यक्त करने के लिए उपहारों के साथ शाही दरबार में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होते थे।
- **भू-राजस्व** राज्य की आय का प्रमुख स्रोत था। किसान भूमि की गुणवत्ता का आकलन करने के बाद **उपज का एक-तिहाई से छठा भाग कर के रूप में देते थे। राजस्व के अन्य स्रोत सीमा शुल्क, चराई कर, आयात और निर्यात शुल्क** थे ।
- अधिकांश धन **कल्याणकारी योजनाओं** और पैदल सेना, घुड़सवार सेना और हाथियों से बनी **एक विशाल सेना के रखरखाव पर खर्च किया जाता था। अच्छी गुणवत्ता वाले घोड़े अरब से आयात किए जाते थे** ।

आर्थिक

- विजयनगर शासकों के संरक्षण में **कपड़ा, खनन और धातुकर्म** जैसे उद्योग फले-फूले।
- **फारस, अरब और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों** जैसे बर्मा, चीन और श्रीलंका के साथ व्यापार तेज़ था और बाहरी व्यापार तेज़ था । जहाज़ इन देशों में चावल, लोहा, चंदन, चीनी और मसाले ले जाते थे।
- **निर्यात** की मुख्य वस्तुएँ कपास, रेशम, मसाले, चावल, शोरा और चीनी थीं।
- आयात **में** हाथी दांत, घोड़े, रेशम, मोती, तांबा, मूंगा आदि शामिल थे।
- **जहाज निर्माण** की कला विकसित हो चुकी थी।
- इस काल के अनेक **सोने और चांदी के सिक्के** मिले हैं जो उस काल की जीवंत अर्थव्यवस्था को दर्शाते हैं।
- मुख्य स्वर्ण मुद्रा **वराह** या **पैगोडा** थी । पर्ता वराह का आधा होता था। **फ़नम** एक पर्था का दसवाँ भाग होता था।
- **तार** चाँदी का सिक्का था। **जित्तल** ताँबे का सिक्का था।

समाज

- मध्यकालीन काल के अन्य सभी समाजों की तरह, विजयनगर समाज भी **तीन मुख्य वर्गों में विभाजित था - कुलीन, मध्यम वर्ग और आम लोग** ।
- कुलीन **वर्ग बड़े आराम और विलासिता से जीवन व्यतीत करता था,** जबकि **मध्यम वर्ग मुख्यतः व्यापारी थे और शहरों में रहते थे । आम लोग साधारण जीवन जीते थे और उन पर भारी कर लगाया जाता था** ।
- महिलाओं का सम्मान किया जाता था और कुछ महिलाएँ राजनीतिक और साहित्यिक गतिविधियों में भी भाग लेती थीं। **उच्च वर्गों में बहुविवाह प्रथा आम थी । बाल विवाह और सती प्रथा** जैसी कुप्रथाएँ प्रचलित थीं । वेश्यावृत्ति को संस्थागत रूप दिया गया। **देवदासी या मंदिर नर्तकी** प्रथा अधिक लोकप्रिय हो गई।

- धार्मिक अनुष्ठान संपन्न कराने के कारण ब्राह्मणों को उच्च दर्जा दिया जाता था। **विजयनगर के शासक हिंदू थे** , लेकिन अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु थे।

धर्म

- संगम **शासक अधिकतर शैव धर्म के अनुयायी थे और विरुपाक्ष** उनके पारिवारिक देवता थे।
- **बाद के राजवंशों पर वैष्णववाद** का प्रभाव पड़ा , लेकिन शिववाद का प्रचलन जारी रहा। **रामानुज** के श्रीवैष्णववाद को अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त हुई।
- हालाँकि, सभी राजा अन्य धर्मों और उनकी प्रथाओं के प्रति सहिष्णु थे।
- दरअसल, कई मुसलमान विजयनगर प्रशासन का हिस्सा थे। उन्हें मस्जिदें बनाने और इबादत करने की भी इजाज़त थी।
- इस काल में बड़ी **संख्या में मंदिर बनाए गए** और अनेक उत्सव मनाए गए। महाकाव्य और पुराण आम जनता, विशेषकर महिलाओं के बीच बहुत लोकप्रिय थे क्योंकि ये उनकी शिक्षा का साधन थे।

कला और वास्तुकला

- विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने **अनेक मंदिर और महल बनवाए थे। ये मंदिर सुंदर मूर्तियों से सुसज्जित थे।**
- **पुर्तगाली यात्री डोमिंगो पेस** के अनुसार , विजयनगर शहर सात दीवारों से घिरा हुआ था, जो लगभग 96 किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ था। शहर के अंदर भव्य महल और मंदिर थे।
- मंदिर के प्रांगण अधिक विशाल हो गए। **मंदिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत के दृश्य अंकित थे । विजयनगर वास्तुकला की प्रमुख विशेषताएँ थीं , ऊँचे राय गोपुरम या प्रवेशद्वारों** का निर्माण , मंदिर परिसर में नक्काशीदार स्तंभों वाला कल्याण **मंडप** , गर्भगृह और अम्मन मंदिर।
- अम्मन **मंदिर एक सहायक मंदिर है** जिसमें गर्भगृह के मुख्य देवता की पत्नी की स्थापना की गई है।
- विजयनगर शैली के सबसे महत्वपूर्ण मंदिर **हम्पी के खंडहरों में पाए गए। कृष्णदेव राय द्वारा निर्मित विट्ठलस्वामी और हजारा रामास्वामी मंदिर** उनकी स्थापत्य शैली के कुछ सर्वोत्तम उदाहरण हैं। विजयनगर शासन के दौरान निर्मित **कांचीपुरम के वरदराज और एकम्परनाथ मंदिर** अपनी भव्य मंदिर वास्तुकला के लिए जाने जाते हैं।
- तिरुवन्नामलाई और चिदम्बरम के राया **गोपुरम** विजयनगर के गौरवशाली युग के बारे में बताते हैं।
- विजयनगर के शासकों द्वारा संगीत और नृत्य को भी संरक्षण दिया गया।
- **स्तंभों पर** विशिष्ट विशेषताओं वाली मूर्तियाँ उकेरी गई थीं। इन स्तंभों पर पाया जाने वाला सबसे आम जानवर **घोड़ा था। सैकड़ों स्तंभों वाले मंडपों का** उपयोग त्योहारों के अवसरों पर देवताओं को बैठाने के लिए किया जाता था। इसके अलावा, इस काल में पहले से मौजूद मंदिरों में कई **अम्मान मंदिर भी जोड़े गए।**

साहित्य

- विजयनगर के शासकों ने **संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़ और तमिल साहित्य को संरक्षण दिया। कृष्णदेव राय के शासनकाल में** साम्राज्य अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के चरम पर था ।
- **'आंध्र भोज'** के नाम से प्रसिद्ध कृष्णदेव राय ने तेलुगु में राजनीति पर एक पुस्तक ' **अमुक्तमाल्यद' लिखी, जिसमें बताया गया है कि एक राजा को किस प्रकार शासन करना चाहिए। उन्होंने एक संस्कृत नाटक 'जम्बवती कल्याणम्** ' भी लिखा।
- उनके दरबार में आठ प्रसिद्ध कवि थे, जिन्हें ' **अष्टदिग्गज** ' कहा जाता था, जिनमें पेद्दन और माधव सदस्य थे।
- **अच्युता राय ने राजानाथ** और **कवयित्री तिरुमलाम्बादेवी को संरक्षण दिया, जिन्होंने वर्दम्बिका परिणयम लिखा था** ।
- **नरहरि (कुमारवाल्मीकि) ने रामायण का एक लोकप्रिय संस्करण रचा, जिसे** कन्नड़ भाषा में तोरवे रामायण कहा जाता है।
- विजयनगर के शासकों ने **नामदेव और ज्ञानदेव जैसे संतों को भी संरक्षण दिया।**
- कुछ **संस्कृत** कृतियाँ हैं।
- Gangadevi wrote- Madhuravijayam
- कृष्णदेवराय ने लिखा - उषा परिणयन, जाम्बवंती कल्याणम, मदालसा चरित।
- गुरु विद्यारण्य ने लिखा-राजा कलानिर्णय
- **कन्नड़ में** साहित्यिक कृतियाँ .

- चामरसा ने लिखा- प्रभुलिंगलीले
- कनकदास ने लिखा- रामधनचरिते, नल चरिते, मोहनतरंगिणी
- Kumaravyasa wrote – Karnataka katha manjari
- Purandardas — keertanas
- **तेलुगु** में साहित्यिक कृतियाँ
- Krishnadevaraya wrote – **Amuktamalyada**
- अल्लासानि पेडन्ना ने लिखा-मनुचरित्र
- नंदी तिमन्ना ने लिखा- पारिजाथापरहण आदि।

गिरावट के कारण

- विजयनगर साम्राज्य के पतन के कुछ कारण निम्नलिखित थे:
- साम्राज्य **बहमनी शासकों, मदुरै, वारंगल आदि जैसे प्रतिद्वंद्वियों के साथ निरंतर युद्धों** में लगा हुआ था । इन युद्धों ने साम्राज्य के संसाधनों को खत्म कर दिया और अर्थव्यवस्था को ख़राब कर दिया।
- साम्राज्य **प्रांतीय स्वायत्तता** पर आधारित था । इससे **गवर्नरों के हाथों में अत्यधिक शक्ति** आ गई , जिससे वे आपसी झगड़ों में उलझे रहे और जैसे ही केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई, उन्होंने अपनी स्वतंत्रता का दावा कर दिया।
- ज्येष्ठाधिकार का कोई दृढ़ नियम नहीं था, इसलिए शासक की मृत्यु के बाद राजकुमारों और कुलीनों के बीच सिंहासन के लिए लड़ाई होती थी।
- कृष्णदेव राय के बाद **कमजोर उत्तराधिकारी इतने बड़े साम्राज्य को संभाल नहीं सके।**
- **तालीकोटा के युद्ध को** आमतौर पर विजयनगर साम्राज्य के अंत का प्रतीक माना जाता है।
- हालाँकि यह राज्य तिरुमाला राय द्वारा स्थापित अरविदु राजवंश के अधीन लगभग सौ वर्षों तक चला, जिसकी राजधानी पेनुकोंडा थी। 1646 में इसका अंत हो गया।

निष्कर्ष

- जब उत्तर भारत के साम्राज्य बिखर रहे थे, तब विजयनगर साम्राज्य ने दक्षिण में विकास और स्थिरता का एक युग प्रदान किया। इसने अपनी अनूठी स्थापत्य शैली - **विजयनगर शैली - के रूप में एक समृद्ध विरासत** छोड़ी , जिसमें मध्य और दक्षिण भारत दोनों के तत्व मौजूद थे।
- इस संश्लेषण ने हिंदू मंदिर निर्माण में **स्थापत्य नवाचार को** प्रेरित किया । कुशल प्रशासन और जोरदार **विदेशी व्यापार** ने सिंचाई के लिए जल प्रबंधन प्रणालियों जैसी नई तकनीकों को जन्म दिया।
- साम्राज्य के संरक्षण ने कन्नड़, तेलुगु, तमिल और संस्कृत में ललित कलाओं और साहित्य को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जबकि कर्नाटक संगीत अपने वर्तमान स्वरूप में विकसित हुआ। **विजयनगर साम्राज्य ने दक्षिण भारतीय इतिहास में एक ऐसे युग का निर्माण किया जो क्षेत्रवाद से परे था।**

विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों की सूची

यात्रियों का नाम	वे जिस स्थान से आए थे	Vijayanagar Ruler
अबू अब्दुल्ला/एलबीएन बतूता (पुस्तक: रिहला)	मोरक्को	हरिहर प्रथम
निकोलस डी कोंटी	इटली	देवराय-द्वितीय
अब्दुर रज्जाक	फारस	देवराय-द्वितीय
Athanasius Nikitin	रूस	विरुपाक्ष राय द्वितीय
वोर्थेमा के लुई	इटली	Krishna Deva Raya
डुआर्टे बारबोसा	पुर्तगाल	Krishna Deva Raya

यात्रियों का नाम	वे जिस स्थान से आए थे	Vijayanagar Ruler
डोमिनिगो पेस	पुर्तगाल	Krishna Deva Raya
फर्नाओ नुनिज़	पुर्तगाल	अच्युत देव राय
मार्को पोलो	वेनिस	—

Foreign Travelers and Their Observations on Vijayanagara Empire

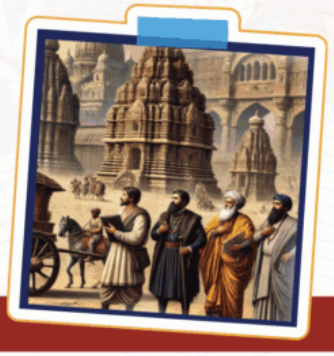

Traveler	Country	Reigning Ruler	Observations
Ibn Battuta	Morocco	**Harihara I (1340s)**	Described the **capital as a well-fortified and wealthy city**. Noted the presence of powerful rulers and detailed trade activities.
Niccolò de Conti	Italy	**Deva Raya I (1420s)**	Described **Vijayanagara's wealth,** extensive trade, and grand architecture.
Abdul Razzaq	Persia	**Deva Raya II (1440s)**	Noted the **city's prosperity, strong fortifications,** and thriving markets. Also observed Hindu-Muslim harmony, with Muslims in administration.
Duarte Barbosa	Portugal	**Krishna Deva Raya (1510s)**	Detailed efficient administration, trade policies, and naval strength..
Domingo Paes	Portugal	**Krishna Deva Raya (1510s)**	Admired military strength, economic prosperity, courtly culture, and described the grand **Mahanavami Festival (Navaratri)** with military parades and performances. Also noted advanced irrigation and thriving trade.
Fernao Nuniz	Portugal	**Achyuta Deva Raya (1530s)**	Wrote about the empire's decline, taxation, and women's status-mentioning their engagement in trade, wrestling, and astrology, but also social restrictions. **Described Sati (widow immolation),** where noble widows voluntarily performed the act as an honorable tradition.

बहमनी साम्राज्य (1347-1527 ई.)

- बहमनी साम्राज्य की **स्थापना 1347 ई. में** एक अफ़ग़ान साहसी अलाउद्दीन बहमन शाह ने की थी। एक किंवदंती के अनुसार, वह **गंगू** नामक एक ब्राह्मण की सेवा में कार्यरत थे , इसलिए उन्हें **हसन गंगू के नाम से जाना जाता** था और अपने ब्राह्मण संरक्षक के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में, उनके द्वारा स्थापित राजवंश बहमनी राजवंश के रूप में जाना जाने लगा।
- **मूल रूप से दिल्ली सल्तनत में** एक सेवक के रूप में , उन्होंने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक से स्वतंत्रता की घोषणा की ।
- इसने **गुलबर्गा** (वर्तमान कालाबुरागी, कर्नाटक) को राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- हसन गंगू **के बाद उसका पुत्र मुहम्मद शाह प्रथम शासक बना,** जिसने विजयनगर **और वारंगल की हिन्दू रियासतों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा** और उन्हें युद्धों में पराजित किया।
- हालाँकि, बहमनी साम्राज्य का सबसे उल्लेखनीय शासक **फ़िरोज़ शाह बहमनी (1397-1422) था।** वह कला और विज्ञान, विशेषकर धार्मिक और प्राकृतिक विज्ञानों का संरक्षक था। वह फ़ारसी, अरबी, तुर्की, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी भाषाओं का अच्छा जानकार था। उसने **खगोल विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित किया और दौलताबाद के पास एक वेधशाला का निर्माण कराया।**
- उन्होंने बड़े पैमाने पर हिंदुओं को प्रशासन में शामिल किया। फिरोज बहमन ने **खेरला के गोंड राजा नरसिंह राय को हराकर बरार पर कब्ज़ा करके साम्राज्य का विस्तार किया । उन्होंने विजयनगर साम्राज्य के विरुद्ध लगातार दो युद्ध जीते, लेकिन 1420 ई. में हुए तीसरे युद्ध में हार गए, जिसके बाद उनकी शक्ति क्षीण हो गई और उन्हें अपने भाई अहमद शाह प्रथम** के पक्ष में गद्दी छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- **अहमद शाह प्रसिद्ध सूफी गेसू दराज़ से जुड़े होने के कारण वली (संत) के नाम से जाने जाते थे** । वारंगल के शासक फ़िरोज़ बहमन द्वारा विजयनगर का पक्ष लेने के कारण हुए युद्ध में हार का बदला लेने के लिए, उसने **वारंगल पर आक्रमण किया, शासक को पराजित किया और मार डाला तथा उसके अधिकांश क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया** । नए अधिग्रहीत क्षेत्रों पर अपने शासन को मजबूत करने के लिए, उसने अपनी राजधानी गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दी।

बहमनी साम्राज्य के शासक

- **मुहम्मद शाह-प्रथम (1358-1375ई.)**
  - वह बहमनी साम्राज्य का अगला शासक था।
  - वह एक योग्य जनरल और प्रशासक थे।
  - उन्होंने **वारंगल के कपाया नायकों और विजयनगर शासक बुक्का-I को हराया।**
- **मुहम्मद शाह द्वितीय (1378-1397ई.)**
  - 1378 ई. में **मुहम्मद शाह द्वितीय** गद्दी पर बैठा।
  - वह शांतिप्रिय थे और उन्होंने अपने पड़ोसियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित किये।
  - उन्होंने **कई मस्जिदें, मदरसे (शिक्षा का स्थान) और अस्पताल बनवाए।**
- **फ़िरोज़ शाह बहमनी (1397-1422 ई.)**
  - वह एक महान जनरल थे.
  - **कला और विज्ञान** , विशेष रूप से धार्मिक और प्राकृतिक विज्ञान का संरक्षक ।
  - फ़ारसी, अरबी, तुर्की, तेलुगु, कन्नड़ और मराठी में धाराप्रवाह।
  - खगोल विज्ञान के अध्ययन को प्रोत्साहित किया **और दौलताबाद के निकट एक वेधशाला का निर्माण कराया।**
  - बड़े पैमाने पर हिंदुओं को प्रशासन में एकीकृत किया गया।
  - **खेरला के गोंड राजा नरसिंह राय को हराने के बाद बरार पर कब्जा करके** साम्राज्य का विस्तार किया ।

- उन्होंने **विजयनगर के शासक देव राय प्रथम को पराजित किया।**
  - विजयनगर के विरुद्ध दो लड़ाइयां जीतीं लेकिन 1420 ई. में हार गईं, जिससे उनका पतन हो गया।
- **अहमद शाह (1422-1436 ई.)**
- अहमद शाह फ़िरोज़ शाह बहमनी के उत्तराधिकारी बने।
- **सूफी संत गेसू दराज़ से संबंध होने के कारण उन्हें वली (संत)** के नाम से जाना जाता है ।
- **वारंगल पर आक्रमण करके तथा** उसके अधिकांश क्षेत्रों पर कब्ज़ा करके फिरोजशाह की हार का बदला लिया ।
- वह एक **निर्दयी और हृदयहीन शासक था।**
  - हिंदुओं के प्रति कठोर व्यवहार के लिए जाने जाते हैं।
- उन्होंने **अपनी राजधानी गुलबर्गा से बदलकर बीदर कर ली।**
- उनकी मृत्यु 1436 ई. में हुई।
- **मुहम्मद शाह-III (1463-1482 ई.)**
- 1463 ई. में **मुहम्मद शाह तृतीय नौ वर्ष की आयु** में सुल्तान बने।
- **मुहम्मद गवन शिशु शासक** का संरक्षक बन गया ।
- **मुहम्मद गवन के** कुशल नेतृत्व में बहमनी साम्राज्य बहुत शक्तिशाली हो गया।
- मुहम्मद गवन ने कोंकण, उड़ीसा, संगमेश्वर और विजयनगर के शासकों को हराया।

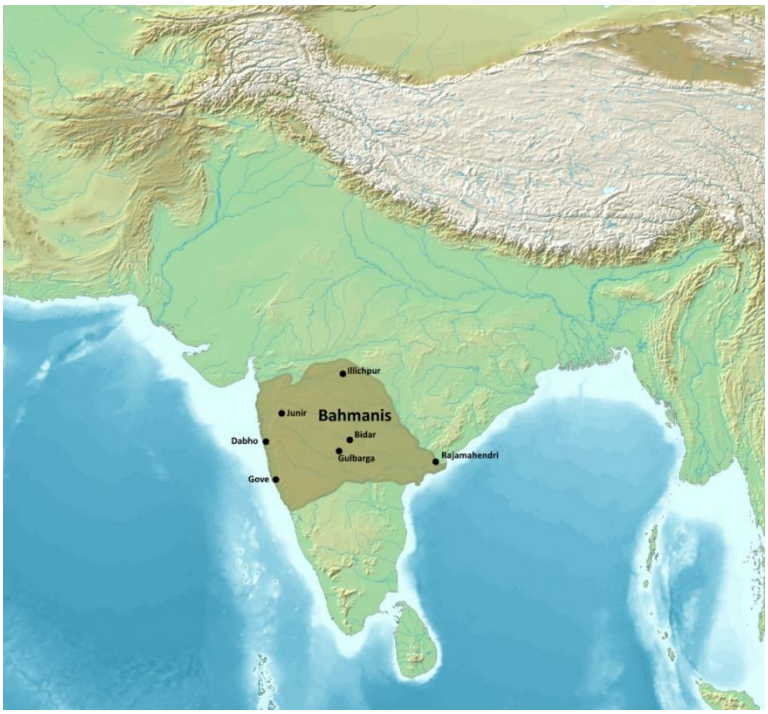

महमूद गवान (1463-1482)

- **महमूद गवान, मुहम्मद शाह तृतीय का प्रधानमंत्री था, जिसे 9 वर्ष की आयु में सुल्तान बनाया गया था** । अतः प्रशासन का पूरा भार उसके प्रधानमंत्री पर आ गया।
- **गवान एक ईरानी व्यापारी था** जो बहमनी सुल्तान की सेवा में आया और उसे **मलिक-उल-तुज्जर की उपाधि दी गई।**
- उन्होंने लगभग 20 वर्षों तक बहमनी साम्राज्य पर **अपना प्रभुत्व बनाए रखा** । उन्होंने उड़ीसा के शासक को हराकर पूर्व में कई क्षेत्रों पर कब्ज़ा करके बहमनी साम्राज्य का विस्तार किया। उन्होंने **विजयनगर के** कांची तक के क्षेत्रों पर भी आक्रमण किया और दाभोल तथा गोवा के क्षेत्रों पर भी कब्ज़ा कर लिया।
- **गोवा और दाभोल** पर नियंत्रण ने ईरान और इराक के साथ विदेशी व्यापार के और विस्तार में मदद की। बहमनी साम्राज्य की उत्तरी सीमा पर कब्ज़ा करने के प्रयास में, महमूद गवान ने **बरार पर मालवा के महमूद खिलजी के विरुद्ध कई युद्ध लड़े।** गुजरात राज्य की सक्रिय सहायता के कारण गवान उस पर विजय प्राप्त करने में सफल रहा।
- वह एक कुशल प्रशासक थे जिन्होंने कई राजस्व सुधार लागू किए। उन्होंने **बीदर में इस्लामी शिक्षा के लिए कई मदरसे भी खोले** ।
- हालाँकि, बहमनी दरबार में बड़ी संख्या में ऐसे रईस थे जो गवान से ईर्ष्या करते थे। उन्होंने उसके विरुद्ध षडयंत्र रचा और सुल्तान को **गवान की बेवफ़ाई का यकीन दिलाने में कामयाब हो गए। 1482 ई. में** उसे फाँसी दे दी गई और उसकी मृत्यु के साथ ही बहमनी साम्राज्य की शक्ति क्षीण हो गई।
- **मुहम्मद शाह के बाद कमज़ोर सुल्तानों ने गद्दी संभाली** । इस दौरान प्रांतीय गवर्नरों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।
- **वर्ष 1526 तक बहमनी साम्राज्य पाँच स्वतंत्र सल्तनतों में विभक्त हो गया था।** ये सल्तनतें थीं: **अहमदनगर, बीजापुर, बरार, गोलकुंडा और बीदर , जिन्हें दक्कन सल्तनत के** नाम से जाना जाता था ।
- **Bijapur:**
  - बीजापुर राज्य की **स्थापना यूसुफ आदिल शाह ने 1489 ई. में** की थी । इब्राहीम (1534-58) पहला बीजापुरी शासक था जिसने फ़ारसी के स्थान पर **हिंदवी** (दखिनी उर्दू) को आधिकारिक भाषा बनाया।

- इब्राहिम द्वितीय (1580-1627) को उनकी प्रजा प्यार से **जगद्गुरु कहती थी। 1686 में औरंगज़ेब ने बीजापुर पर कब्ज़ा कर लिया।**

- **अहमदनगर:**
- **निज़ाम शाही वंश के संस्थापक अहमद बहरी थे जिन्होंने 1490 में शासन किया** था।
- इसे शाहजहाँ ने 1636 ई. में जीत लिया था।
- **गोलकुंडा:**
- कुतुब **शाही वंश की स्थापना अली कुतुब शाह ने 1518 में की थी।**
- मुहम्मद कुली हैदराबाद शहर के संस्थापक थे।
- 1687 में औरंगजेब ने गोलकुंडा पर कब्ज़ा कर लिया।
- **बरार:**
- **बरार में इमाद शाही राजवंश की स्थापना फतुल्लाह इमाद-उल-मुल्क ने 1490 ई. में की** थी।
- इस राज्य का जीवनकाल सबसे छोटा था क्योंकि इसे 1572 ई. **में निजामशाहियों ने अपने अधीन कर लिया था।**
- **बीदर:**
- बरीद **शाही राजवंश की स्थापना अली बरीद ने 1518 में की थी।**
- बाद में बीदर को **बीजापुर के आदिल शाहियों ने अपने अधीन कर लिया।**
- बीदर किला 1657 में औरंगजेब द्वारा लिया गया।

- ये छोटे-छोटे राज्य आपस में युद्ध करते रहे और **इन्हीं अंतर्कलहों ने मुगलों को उन्हें मुगल साम्राज्य में शामिल करने में सक्षम बनाया । हालाँकि, गोलकुंडा, बीजापुर और अहमदनगर** के राज्य दक्कन क्षेत्र की राजनीति में तब तक प्रमुख भूमिका निभाते रहे जब तक कि सत्रहवीं शताब्दी में वे मुगल साम्राज्य में शामिल नहीं हो गए।

Sultanate	Dynasty	Founder & Year	Key Rulers	Notable Achievements	End of Rule
Bijapur Sultanate (1489-1686 AD)	**Adil Shahi Dynasty**	**Yusuf Adil Shah (1489 AD)**	**Ibrahim Adil Shah I (1534-1558 AD):** Replaced Persian with **Hindvi (Dakhini Urdu)** as the official language. **Ibrahim Adil Shah II (1580-1627 AD):** Known **as Jagadguru** for his **religious tolerance** and devotion to the arts; wrote **"Kitab-e-Navras"**, blending **Persian, Hindavi, and Sanskrit** musical influences.	One of the **most powerful Deccan Sultanates.** - **"Kitab-e-Navras"** dedicated to **Goddess Saraswati,** promoting Hindu-Muslim unity. Flourished culturally and politically.	**Annexed by Aurangzeb in 1686 AD.**
Ahmednagar Sultanate (1490-1636 AD)	**Nizam Shahi Dynasty**	**Ahmad Nizam Shah I (1490 AD)**	**Chand Bibi (1550-1599 AD):** Defended Ahmednagar against Akbar's Mughal forces. **Murtaza Nizam Shah I (1565-1588 AD):** Annexed **Berar in 1572 AD.**	**Founded Ahmednagar** as the capital. **Major rival of the Mughals,** also fought Bijapur and Golconda.	**Conquered by Shah Jahan in 1636 AD.**
Golconda Sultanate (1518-1687 AD)	**Qutb Shahi Dynasty**	**Sultan Quli Qutb-ul-Mulk (1518 AD)**	**Muhammad Quli Qutb Shah (1580-1612 AD):** Founded **Hyderabad in 1591 AD.** **Madanna and Akkanna** (Hindu Prime Ministers): Influential administrators.	**Major diamond trade hub** (Golconda mines produced **Koh-i-Noor, Hope Diamond, and Regent Diamond).** Flourished under **Hindu Prime Minister Madanna.**	**Annexed by Aurangzeb in 1687 AD.**
Berar Sultanate (1490-1572 AD)	**Imad Shahi Dynasty**	**Fathullah Imad-ul-Mulk (1490 AD)**	**Tughlaq Shah (Last ruler).** **Annexed by Ahmednagar in 1572 AD.**	**Shortest-lived Deccan Sultanate.**	**Merged with Ahmednagar in 1572 AD.**
Bidar Sultanate (1492-1657 AD)	**Barid Shahi Dynasty**	**Qasim Barid I (1492 AD)**	**Ali Barid Shah (1518) AD): Officially established the Barid Shahi dynasty.**	**Smallest and least powerful** of the Deccan Sultanates.	**Annexed by Bijapur, later taken by Aurangzeb in 1657 AD.**

राजनीति और प्रशासन

- बहमनी राज्य **आठ प्रांतों या तरफ़ों में विभाजित था, प्रत्येक पर एक तरफ़दार** का शासन था।
- ये प्रांत थे - **दौलताबाद, बीदर, बरार और गुलबर्गा**।
- **रईसों के वेतन निश्चित थे** और उन्हें नकद या **जागीर** देकर भुगतान किया जाता था। साम्राज्य के रईस दक्कनी (पुराने) और अफ़ाक़ी (नए) में विभाजित थे। इसके परिणामस्वरूप कुलीनों में कलह पैदा हो गई।
- प्रत्येक प्रांत में **सुल्तान के खर्च के लिए भूमि का एक टुकड़ा (खालिसा)** अलग रखा गया था।

सैन्य

- बहमनी शासक सैन्य सहायता के लिए अपने **अमीरों** पर निर्भर था।
- अमीरों के दो समूह थे:
- एक थे **दक्कनी**, जो अप्रवासी मुसलमान थे और लंबे समय से दक्कन क्षेत्र में रह रहे थे।
- दूसरा समूह **अफाकी या परदेसी** था जो हाल ही में मध्य एशिया, ईरान और इराक से आये थे।
- बहामनी लोग युद्ध में **बारूद** के प्रयोग से परिचित थे।

कला और वास्तुकला

- बहमनी शासक कला और स्थापत्य कला, भाषा, साहित्य और संगीत के संरक्षक थे। उनके संरक्षण में उर्दू भाषा को प्रोत्साहन मिला। बहमनी सुल्तानों के दरबार में अनेक विद्वान थे।
- आदिल शाही वंश के महानतम शासक **इब्राहिम आदिल शाह ने** दरबारी भाषा के रूप में फ़ारसी के स्थान पर **दखिनी को प्रचलित किया।**
- यह वास्तुकला **फ़ारसी वास्तुकला से अत्यधिक प्रभावित** थी। इस शैली की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं:
- ऊंची मीनारें
- मजबूत मेहराब
- विशाल गुंबद
- विशाल हज़ारा
- इमारत के शीर्ष पर अर्धचंद्र
- **उदाहरण**
- Monuments at Gulbarga: **Shah bazaar mosque, Hafta Gumbaz**, **Jama maszid** etc
- बीदर में: **मोहम्मद गवान का मदरसा**, सोलह खंबा मस्जिद, रंगीन महल, जनता महल आदि।

- At Bijapur: **Gol gumbaz** (built by Mohammad Adil shah in 1656AD), Ibrahim roza, Bara Kaman, Anand mahal, Chand Bawdi etc.
- वास्तुकला के क्षेत्र में, **बीजापुर स्थित गोल गुम्बज** प्रसिद्ध है। **गोल गुम्बज का गुंबद 53.4 मीटर ऊँचा है जो एशिया में सबसे बड़ा है** । यह बीजापुर के आदिल शाही वंश (1489-1686) के सातवें सुल्तान **मुहम्मद आदिल शाह का मकबरा** है। गोलकुंडा शासकों ने हैदराबाद में **चारमीनार का** निर्माण करवाया था ।
- **महमूद गवन द्वारा बीदर में** बनवाया गया मदरसा तीन मंजिला था और इसमें एक हज़ार छात्र रह सकते थे। ईरान और इराक के भी कई छात्र वहाँ पढ़ते थे।
- अन्य प्रसिद्ध स्मारकों में **गुलबर्गा स्थित जामा मस्जिद, गोलकुंडा का किला** और बीदर **स्थित अहमद शाह का मकबरा** शामिल हैं ।
- **कुली कुतुब शाह ने** प्रसिद्ध **गोलकुंडा किला** बनवाया था । मुहम्मद कुली कुतुब शाह कुतुब शाही वंश के सबसे महान शासक थे और उन्होंने ही **हैदराबाद शहर की स्थापना की थी, जिसे** मूल रूप से सुल्तान की प्रिय रानी भाग्यमती के नाम पर **भाग्यनगर** के नाम से जाना जाता था। उन्होंने प्रसिद्ध चारमीनार का भी निर्माण करवाया था।

Monument	Country	Observations
Gol Gumbaz	Bijapur	Mausoleum of **Muhammad Adil Shah (1656 AD)** with **Asia's largest dome** (53.4m high) and **whispering gallery.**
Charminar	Hyderabad	Built by **Muhammad Quli Qutb Shah;** a landmark of Deccan architecture.
Golconda Fort	Hyderabad	Built by **Qutb Shahis,** known for **advanced acoustic engineering.**
Jama Masjid	Gulbarga	A grand mosque with **unique domes and minarets.**
Madarsa of Mahmud Gawan	Bidar	**A three-storeyed institution,** accommodating **1,000 students, attracting scholars from Iran and Iraq.**
Ibrahim Roza	Bijapur	A tomb with intricate **Persian-style architecture,** said to inspire the **Taj Mahal.**
Sola Khamba Mosque	Bidar	A 16-column **mosque showcasing Persian architectural influence.**

साहित्य

- इस काल में **फ़ारसी, अरबी और उर्दू साहित्य का विकास हुआ।**
- **फुतुह-उस-सलातीन (मध्यकालीन भारत का शाहनामा)** - इसामी द्वारा भारत पर मुस्लिम विजय का 14वीं शताब्दी का फ़ारसी काव्यात्मक इतिहास **, जिसे अला-उद-दीन बहमन शाह द्वारा संरक्षण दिया गया था।**
- **मोहम्मद गवान ने** फ़ारसी भाषा में कविताएँ लिखीं। **रियाज़-उल-इंशा, मनाज़िर-उल-इंशा** उनकी रचनाएँ हैं।
- **इस समय के दौरान "दखिनी उर्दू** " नामक एक नई बोली लोकप्रिय हुई।
- गुलबर्गा के प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा बंदे नवाज़ गेसू दराज ने** इसी भाषा में लिखा था।

पेंटिंग्स

- **बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर, हैदराबाद में फला-फूला।**
- मुख्य विशेषताएं: **समृद्ध रंग (स्वर्ण, लाजवर्द), लम्बी आकृतियां, फारसी शैली की पृष्ठभूमि** , इंडो-फारसी और विजयनगर प्रभाव, **स्वप्न जैसी रचनाएं, नाटकीय प्रकाश व्यवस्था, जटिल पुष्प आकृतियां।**
- उल्लेखनीय पेंटिंग्स:
- " **सुल्तान इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय सिंहासनारूढ़** " (बीजापुर, लगभग 1590 के दशक) - दैवीय और संगीतमय प्रतीकवाद।
- " **मैना पक्षी के साथ महिला** " (गोलकुंडा, लगभग 1605-1610) - फारसी प्रभाव, मैना के साथ भव्य वेशभूषा वाली महिला।
- " **रागिनी श्रृंखला"** (अहमदनगर, 16वीं शताब्दी के अंत में) - भावपूर्ण महिला आकृतियों के साथ संगीत विषय।
- " **सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब शाह का चित्र** " (गोलकुंडा, 17वीं शताब्दी) - विस्तृत पृष्ठभूमि वाला शाही चित्र।
- हैदराबाद **दरबार के दृश्य** (कुतुब शाही, 17वीं शताब्दी के अंत में) - फ़ारसी, मुगल और दक्कनी शैलियों का मिश्रण।

निष्कर्ष

- बहमनी साम्राज्य ने दक्षिण में स्थिरता का एक युग प्रदान किया। **बहमन सुल्तानों ने न केवल एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था प्रदान की, बल्कि वे कला और संस्कृति के महान संरक्षक भी थे**। उनके द्वारा निर्मित स्मारक उस काल में विकसित वास्तुकला की भव्यता को दर्शाते हैं।
- हालाँकि, पड़ोसी राज्यों, विशेषकर विजयनगर के साथ लगातार युद्ध, कुलीनों के बीच आपसी कलह और कमजोर उत्तराधिकारियों के कारण बहमनी साम्राज्य का पतन हो गया।

Bahmani Kingdom

Alauddin Hasan Bahman Shah (1347-58)	**उन्हें हसन गंगू के नाम से** भी जाना जाता था। उन्होंने बहमनी साम्राज्य की स्थापना की और इसकी राजधानी गुलबर्गा (पहली राजधानी) थी।
Tajuddin Firoz Shah (1397-1422)	उन सभी में सबसे महान। वह दक्कन को भारत का सांस्कृतिक केंद्र बनाने के लिए दृढ़संकल्पित थे। उन्होंने प्रशासन में बड़े पैमाने पर हिंदुओं को शामिल किया। उन्होंने राज्य के **बंदरगाहों , चौल और दाभोल** पर विशेष ध्यान दिया , जो फारस की खाड़ी और लाल सागर से व्यापारिक जहाजों को आकर्षित करते थे।
अहमद शाह वली (1422-35)	**राजधानी को गुलबर्गा से बीदर स्थानांतरित कर दिया गया**।

बहमनी साम्राज्य का 5 राज्यों में विभाजन

साम्राज्य	संस्थापक	राजवंश
बरार	फ़तहउल्लाह इमाद शाह	Imad Shahi
Bijapur	यूसुफ आदिल शाह	Adil Shahi
अहमदनगर	मलिक अहमद	Nizam Shahi
गोलकुंडा	कुली कुतुब शाह	कुतुब शाही
बीदर	अमीर अली बरीद	शाही शिक्षण

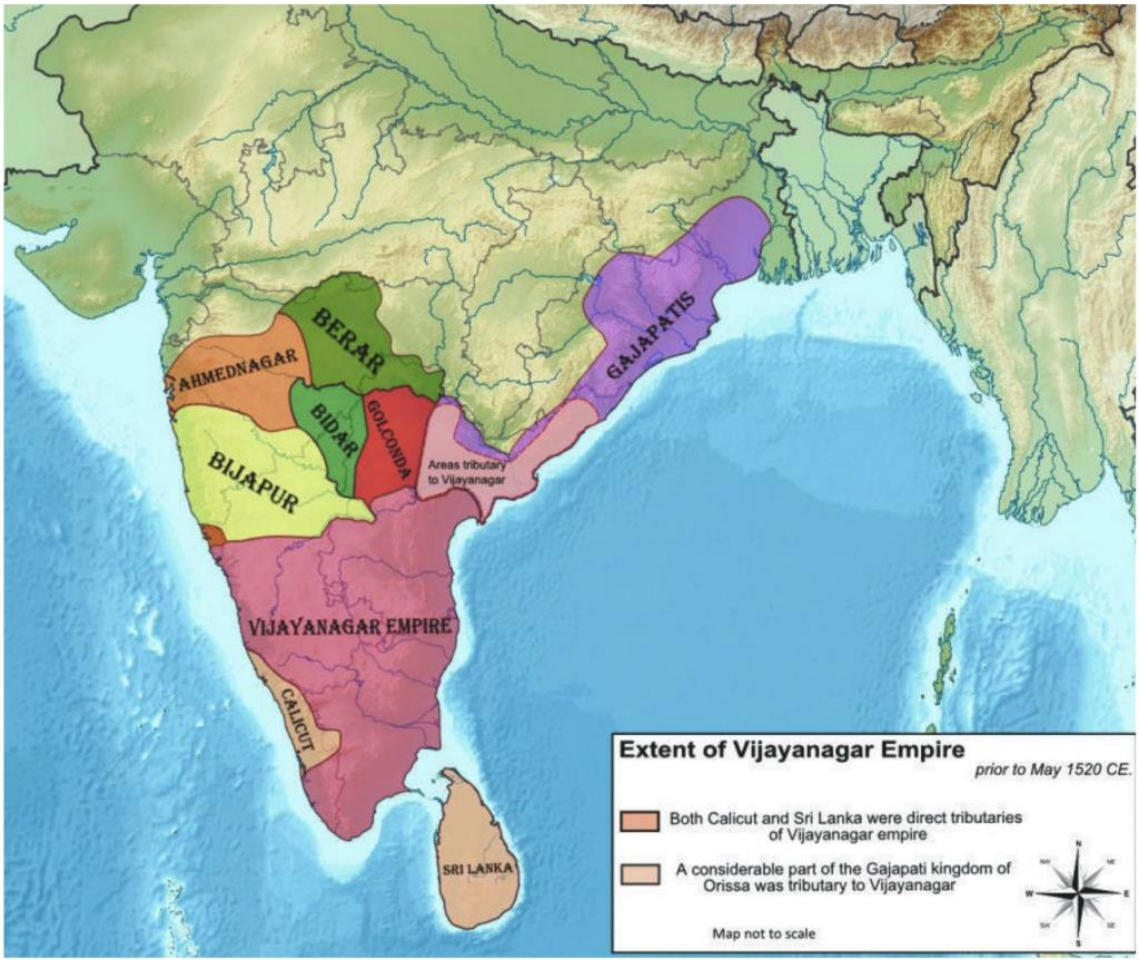
BERAR
AHMEDNAGAR
BIDAR
GOLCONDA
BIJAPUR
Areas tributary to Vijayanagar
GAJAPATIS
VIJAYANAGAR EMPIRE
CALICUT
SRI LANKA
Extent of Vijayanagar Empire
prior to May 1520 CE.
Both Calicut and Sri Lanka were direct tributaries of Vijayanagar empire
A considerable part of the Gajapati kingdom of Orissa was tributary to Vijayanagar
Map not to scale

The Era of Mughals

मुगल साम्राज्य: बाबर

मुगलों

- पंद्रहवीं **शताब्दी मध्य और पश्चिम एशिया में परिवर्तन और साम्राज्य निर्माण का युग था**। मंगोल और तैमूर साम्राज्यों के खंडहरों से तीन महान साम्राज्य फिर से उभर रहे थे।
- ट्रांस-ऑक्सियाना (वर्तमान उज्बेकिस्तान) के उत्तर में **उज्बेक थे** ,
- पश्चिम में **यह ईरान में सफ़वी राजवंश था** और
- **वर्तमान तुर्की में ओटोमन तुर्क** .
- उल्लेखनीय रूप से, बाबर ने भारतीय उपमहाद्वीप में **मुग़ल साम्राज्य की नींव रखी । बाबर** मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक था, जिसकी स्थापना **1526 में पानीपत के प्रथम युद्ध** में **इब्राहिम लोदी को हराने** के बाद हुई थी।
- **इस प्रकार भारत में एक नये युग और एक नये साम्राज्य का आरम्भ हुआ, जो 1526 से 1857 तक** लगभग तीन शताब्दियों तक चला ।
- इस वंश के छह प्रमुख शासकों, बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब, जिन्हें **"महान मुगल** " के रूप में जाना जाता है, ने भारतीय इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी।
- **1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद साम्राज्य का पतन हो गया** ।

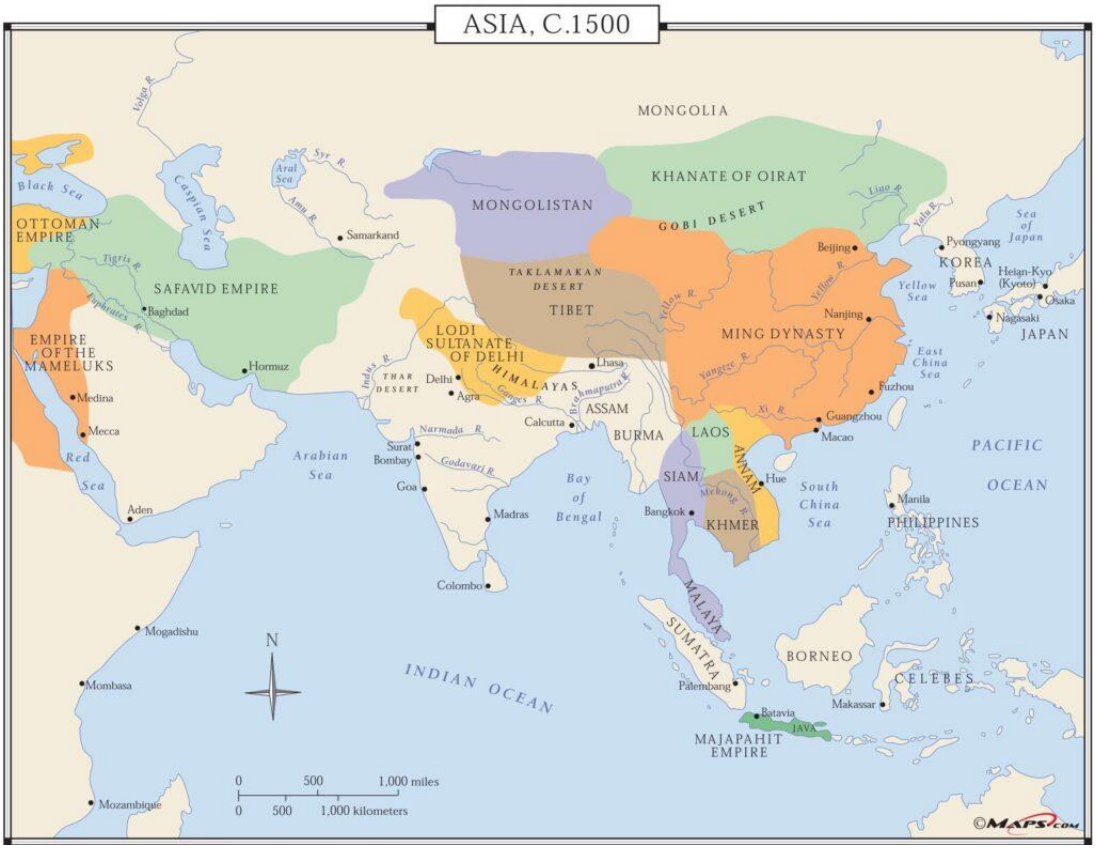

बाबर

- बाबर **मंगोल सम्राट चंगेज खान और तैमूर का वंशज** था , इस प्रकार वह एक **तैमूर राजकुमार था**। ज़हीर-उद-दीन मुहम्मद, जिन्हें "बाबर" या "शेर" के नाम से जाना जाता है, का जन्म 14 फ़रवरी, 1483 को अंदिजान (**अब उज़्बेकिस्तान) में तैमूर शाही राजवंश में हुआ था।**
- बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा फरगना के अमीर थे और उनकी मां कुतलाक निगार खानम मुगल राजा यूनुस खान की बेटी थीं।

- अंतिम मंगोल पूर्वजों ने तुर्क और फ़ारसी लोगों के साथ विवाह किए और बाबर के जन्म तक स्थानीय संस्कृति में घुल-मिल गए। फ़ारस से अत्यधिक प्रभावित होकर उन्होंने इस्लाम धर्म अपना लिया था। बहुसंख्यक सुन्नी इस्लाम की रहस्यवादी सूफ़ी-प्रधान शैली के पक्षधर थे।
- 1494 में **, फरगाना के अमीर की अप्रत्याशित रूप से मृत्यु हो गई, और 11 वर्षीय बाबर** ट्रांस-ऑक्सियाना के एक छोटे से राज्य फरगाना के सिंहासन पर बैठा।
- **अपने राज्य का विस्तार करने के लिए उसने अपने चाचा से समरकंद को** हासिल करने के कई प्रयास किये , जिसकी पूरे इस्लामी जगत में बड़ी प्रतिष्ठा थी।
- हालाँकि, तैमूरी राजकुमारों के बीच इस आपसी कलह के कारण अंततः उज़्बेक सरदार **शैबानी खान ने उनके राज्यों पर कब्ज़ा कर लिया।** इससे **बाबर को काबुल की ओर बढ़ना पड़ा,** जिसे उसने 1504 में जीत लिया।
- जब हेरात प्रांत पर भी शैबानी खान ने कब्ज़ा कर लिया, तो इससे **उज्बेकों और सफाविद** के बीच सीधा संघर्ष शुरू हो गया , क्योंकि दोनों ही खुरासान क्षेत्र (हेरात और आसपास के क्षेत्र) पर कब्ज़ा करना चाहते थे।
- 1510 में एक प्रसिद्ध **युद्ध में, ईरान के शाह शाह इस्माइल ने शैबानी खान को हराकर उसकी हत्या कर दी।** इससे बाबर ईरानी मदद से समरकंद का **शासक बन गया ।**
- हालाँकि, जल्द ही उज्बेक अपनी हार से उबर गए और समरकंद पर पुनः कब्जा कर लिया, जिससे बाबर को काबुल लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- अंततः, 1514 में शाह इस्माइल स्वयं ओटोमन सुल्तान से हार गए, और इस प्रकार उज़बेक ट्रांस-ऑक्सियाना के स्वामी बन गए। **इन घटनाओं ने बाबर को भारत की ओर रुख करने के लिए मजबूर किया।**

भारत पर विजय

- बाबर की भारत विजय **निम्नलिखित कारकों से प्रभावित थी:**
- **भारत के धन और संसाधनों का आकर्षण:**
  - मध्य एशिया के अनगिनत अन्य आक्रमणकारियों की तरह, बाबर भी अपार धन और संसाधनों के लालच में भारत की ओर आकर्षित हुआ।
- बचपन से ही बाबर ने 1398 में नासिरुद्दीन महमूद शाह तुगलक के शासनकाल के दौरान अपने पूर्वज **तैमूर** द्वारा दिल्ली में की गई लूटपाट की कहानियां सुनी थीं।
- दिल्ली नरसंहार के बाद, तैमूर अपने साथ एक विशाल खजाना और कई कुशल कारीगर ले गया था, जिन्होंने उसके एशियाई साम्राज्य को मजबूत करने और उसकी राजधानी को सुंदर बनाने में उसकी मदद की।
  - उसने पंजाब के कुछ इलाकों पर भी कब्ज़ा कर लिया। जब बाबर ने अफ़ग़ानिस्तान पर विजय प्राप्त की, तो उसे लगा कि पंजाब के इन समृद्ध इलाकों पर उसका वैध अधिकार है।
- **काबुल के अल्प संसाधन और सदैव विद्यमान उज़्बेक ख़तरा:**

- काबुल की आय बहुत कम थी क्योंकि वह पंजाब की तरह संसाधन संपन्न नहीं था। अपने शासन वाले क्षेत्रों (बदख्शां, कंधार और काबुल) में इन अल्प संसाधनों के साथ, बाबर अपने बाशिंदों (कुलीनों) और रिश्तेदारों का भरण-पोषण ठीक से नहीं कर पा रहा था। इसके अलावा, काबुल पर उज़्बेक ख़तरा हमेशा बना रहता था।
- इसलिए बाबर ने भारत को अपार धन-संपत्ति के साथ एक अच्छी शरणस्थली माना और इस प्रकार, उज्बेकों के विरुद्ध अभियान के लिए एक उपयुक्त आधार माना।

- **उत्तर भारत में अराजक राजनीतिक स्थिति:**

- उत्तर-पश्चिम भारत की राजनीतिक स्थिति बाबर के भारत में प्रवेश के लिए उपयुक्त थी क्योंकि यह अराजक थी।
- सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों का संघ था, जो किसी भी शक्तिशाली एवं दृढ़ आक्रमणकारी का आसानी से शिकार बन सकता था।
- 1517 में सिकंदर लोदी की मृत्यु के बाद, **इब्राहिम लोदी** उसका उत्तराधिकारी बना। एक मज़बूत, केंद्रीकृत साम्राज्य बनाने की इब्राहिम लोदी की योजना ने **अफ़ग़ान सरदारों और राजपूतों को चिंतित कर दिया** था । इनमें प्रमुख थे पंजाब के गवर्नर दौलत ख़ान लोदी और राजपूत संघ के प्रमुख राणा सांगा।

- विभिन्न समयों पर उन्होंने बाबर को भारत आमंत्रित करने के लिए उसके पास दूतावास भेजे और सुझाव दिया कि उसे इब्राहिम लोदी को हटा देना चाहिए क्योंकि वह एक अत्याचारी था।
- **अंततः, 1525 में, कई प्रयासों के बाद, बाबर पंजाब का स्वामी बन गया।**

लड़ाई

- **1526 में पानीपत की लड़ाई** से शुरू होकर , बाबर ने कुछ लड़ाइयाँ लड़ीं, जिसने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

पानीपत का पहला युद्ध (1526)

- दिल्ली के पास पानीपत में **, बाबर और दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी के बीच** युद्ध हुआ । बाबर एक कुशल रणनीतिकार और युद्ध-प्रशिक्षु था। उसने **तोपखाने में बारूद का** भरपूर इस्तेमाल किया। उसने अपनी सेना की एक शाखा को पानीपत शहर के प्राचीरों में तैनात करके और दूसरी शाखा को पेड़ों की शाखाओं से भरी एक खाई और एक रक्षात्मक दीवार के ज़रिए सुरक्षित करके अपनी स्थिति मज़बूत की।
- उसने एक ऐसी व्यवस्था बनाई जिसे **उस्मानी (रूमी) व्यवस्था** कहा जाता है , जो रक्षा और आक्रमण की स्थितियों का एक संयोजन थी। इसके अलावा, बाबर के पास तोपखाने के हमलों को संचालित करने के लिए दो उस्मानी मास्टर-तोपची, उस्ताद अली और मुस्तफा, भी थे।
- वहीं, **इब्राहिम लोदी बाबर की युद्ध रणनीति और उसकी मजबूत स्थिति से अनभिज्ञ था।**
- एक हफ़्ते के युद्ध के बाद, बाबर की सेना के दोनों छोरों ने इब्राहिम की सेना पर बगल और पीछे से हमला किया। बाबर के तोपचियों ने आगे से अपनी तोपों का अच्छा इस्तेमाल किया। लोदी बीच में फँस गया और बाबर ने उस पर चारों तरफ से हमला कर दिया। बाबर इस जीत का बहुत बड़ा श्रेय अपने धनुर्धारियों को देता है।
- पानीपत की लड़ाई को भारतीय इतिहास के **निर्णायक युद्धों में से एक माना जाता है** । इसका वास्तविक महत्व इस तथ्य में निहित है कि इसने **उत्तर भारत पर प्रभुत्व के संघर्ष में एक नए दौर की शुरुआत की** ।
- इसने लोदी शक्ति की कमर तोड़ दी और **दिल्ली और आगरा तक के पूरे क्षेत्र को बाबर के नियंत्रण में ला दिया** । आगरा में इब्राहिम लोदी द्वारा संग्रहीत खजाने ने बाबर को उसकी वित्तीय कठिनाइयों से मुक्ति दिलाई।

खानवा का युद्ध (1527)

- यह एक ऐसा युद्ध था जिसमें मुगल **सम्राट बाबर ने राजपूतों और अफगानों के एक संघ को हराया था** जिसका नेतृत्व **मेवाड़ के राणा सांगा** कर रहे थे ।
- बाबर के भारत में रहने के फैसले ने राणा सांगा को नाराज़ कर दिया, जिन्होंने बाबर से मुक़ाबले की तैयारी शुरू कर दी। **राणा सांगा का पूर्वी राजस्थान और मालवा पर आधिपत्य था** । इस प्रकार **बाबर द्वारा सिंधु-गंगा घाटी में एक साम्राज्य की स्थापना राणा सांगा के लिए एक ख़तरा थी** । साथ ही, बाबर ने उन पर समझौता तोड़ने का आरोप लगाया।

उनका कहना है कि सांगा ने उन्हें भारत आमंत्रित किया था और इब्राहिम लोदी के ख़िलाफ़ उनके साथ आने का वादा किया था, लेकिन उन्होंने ऐसा कोई क़दम नहीं उठाया।

- यह ज्ञात नहीं है कि राणा सांगा ने क्या वादे किए थे। हालाँकि, **बाबर के भारत में रहने के फैसले ने स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया।**
- **राणा सांगा को व्यापक समर्थन** प्राप्त हुआ । लगभग सभी राजपूत शासकों ने उनके अधीन सेवा करने के लिए अपनी-अपनी सेनाएँ भेजीं। इब्राहिम लोदी के छोटे भाई महमूद लोदी, मेवात के शासक हसन खान मेवाती आदि सहित कई अफ़गान उनके साथ हो लिए। राणा सांगा की प्रतिष्ठा और बयाना जैसी कुछ दूरस्थ मुग़ल चौकियों पर उनकी शुरुआती सफलता ने बाबर के युद्ध-थके हुए सैनिकों का मनोबल और भी गिरा दिया।
- उन्हें प्रेरित करने और एकजुट करने के लिए, **बाबर ने सांगा के विरुद्ध युद्ध को जिहाद घोषित कर दिया**। युद्ध की पूर्व संध्या पर, उसने **सभी मदिरा के बर्तन खाली कर दिए और कुप्पियाँ तोड़ दीं** ताकि यह प्रदर्शित हो सके कि वह कितना कट्टर मुसलमान है। उसने **शराब के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया और मुसलमानों पर सीमा शुल्क हटा दिया**।
- खानवा का युद्ध एक ज़बरदस्त युद्ध था और यह एक **चतुर सैन्य रणनीति** का उदाहरण था । बाबर ने सावधानीपूर्वक एक जगह चुनी और आगरा के पास खानवा में अपनी डेरा जमा लिया। **पानीपत के युद्ध की तरह, बाबर ने रक्षा और आक्रमण के संयोजन से अपनी स्थिति को काफ़ी मज़बूत कर लिया**। उसने बाहरी गढ़ के रूप में कई गाड़ियों को एक साथ बाँध दिया और दोहरी सुरक्षा के लिए आगे एक खाई खोद दी। उसके बंदूकधारियों के लिए पहिएदार तिपाइयों के पीछे से गोली चलाने और आगे बढ़ने के लिए सुरक्षा में जगह छोड़ी गई थी**। बाबर द्वारा घुड़सवार सेना, तोपखाने और पार्श्व हमलों के कुशल उपयोग ने राणा सांगा की सेनाओं को घेर लिया और एक बड़े नरसंहार के बाद वे हार गए**।
- राणा सांगा भाग निकले और बाबर के साथ फिर से युद्ध शुरू करना चाहते थे, लेकिन उनके ही सरदारों ने उन्हें ज़हर दे दिया। इस प्रकार, राजस्थान के सबसे वीर योद्धा मारे गए। उनकी मृत्यु के साथ, आगरा तक एकीकृत राजस्थान के सपने को भी गहरा धक्का लगा।
- यह **प्रथम मुग़ल सम्राट बाबर की निर्णायक विजय थी और इसने भारत में मुग़ल शक्ति को सुदृढ़ किया।** इसने **बाबर की श्रेष्ठ सेनापतित्व और संगठन कौशल की पुष्टि की और भारत की पुरानी युद्ध रणनीति और तकनीक को उजागर किया**। बाबर की तोपों और बारूद से लैस तोपों ने उसकी विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **इस विजय से दिल्ली-आगरा क्षेत्र** में बाबर की स्थिति सुरक्षित हो गई और **उत्तर पूर्व तथा मध्य भारत** में मुग़ल साम्राज्य का विस्तार हुआ ।

चंदेरी का युद्ध (1528)

- खानवा के युद्ध के बाद, राजपूतों की शक्ति केवल क्षीण हुई, कुचली नहीं। अपनी विजय को और सुदृढ़ करने तथा अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए, **बाबर ने आगरा के पूर्व में ग्वालियर और धौलपुर के किलों की एक श्रृंखला पर विजय प्राप्त की । उसने हसन खान मेवाती से अलवर का एक बड़ा भाग** भी छीन लिया।
- यह समाचार पाकर कि राणा सांगा ने उसके साथ संघर्ष को फिर से शुरू करने के लिए युद्ध की तैयारी फिर से शुरू कर दी है, बाबर ने मालवा में **चंदेरी के मेदिनी राय, जो** राणा के सबसे कट्टर सहयोगियों में से एक था, को सैन्य पराजय देकर राणा को अलग-थलग करने का निर्णय लिया।
- चंदेरी राजपूतों का गढ़ था। राजपूतों ने अंत तक लड़ने का फैसला किया और इस पर तब कब्ज़ा किया गया जब राजपूत रक्षकों ने आखिरी आदमी तक लड़ते हुए अपनी जान दे दी और उनकी महिलाओं ने जौहर करके खुद को जला लिया।
- **चंदेरी के युद्ध के बाद, राजपूतों द्वारा बाबर के अधिकार को चुनौती नहीं दी गई।**

Battle of Ghaghra (1529)

- यह **युद्ध बाबर की सेनाओं और सुल्तान महमूद लोदी के अधीन पूर्वी अफगान संघियों और सुल्तान नुसरत शाह के अधीन बंगाल सल्तनत के बीच लड़ा गया** था । हालाँकि अफगान हार गए थे, फिर भी वे मुग़ल शासन से, विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश में, समझौता नहीं कर पाए थे। उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश में मुग़ल अधिकारियों को खदेड़ दिया था और कन्नौज तक पहुँच गए थे। अफगान सरदारों को बंगाल के शासक नुसरत शाह का समर्थन प्राप्त था, जिन्होंने इब्राहिम लोदी की बेटी से विवाह किया था। हालाँकि, उनके पास एक लोकप्रिय नेता का अभाव था। कुछ समय बाद, इब्राहिम

लोदी का भाई महमूद लोदी, जिसने खानवा में बाबर के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, बिहार पहुँचा। अफगानों ने उसे अपना नेता माना और उसके नेतृत्व में मजबूत समर्थन जुटाया।

- **यह एक ऐसा खतरा था जिसे बाबर नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था**। बनारस के पास गंगा पार करने के बाद, घाघरा नदी के पार उसे अफ़गानों और बंगाल के नुसरत शाह की संयुक्त सेना का सामना करना पड़ा। **हालाँकि बाबर ने नदी पार की और बंगाल और अफ़गान सेनाओं की संयुक्त सेनाओं को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया, लेकिन वह निर्णायक जीत हासिल नहीं कर सका**। मध्य एशिया की स्थिति से परेशान और चिंतित होने के कारण, **बाबर ने अफ़गान सरदारों के साथ एक समझौता करने का फैसला किया**। उसने **बंगाल के नुसरत शाह के साथ भी एक संधि की**। घाघरा का युद्ध इस मायने में महत्वपूर्ण था कि इसने अंतिम लोदियों की चुनौती को समाप्त कर दिया।

भारत में बाबर के सामने चुनौतियाँ

- उसके कई **सरदार (सामंत) भारत में लंबे अभियान के लिए तैयार नहीं थे**। वे इस अजनबी और शत्रुतापूर्ण भूमि पर अपने **रिश्तेदारों और मध्य एशिया की ठंडी जलवायु के लिए तरस रहे थे। गर्मी के मौसम की शुरुआत** के साथ, उनकी आशंकाएँ और बढ़ गईं। हालाँकि, बाबर जानता था कि भारत के संसाधन ही उसे एक मज़बूत साम्राज्य बनाने और अपनी रियासतों को संतुष्ट करने में सक्षम बना सकते हैं।
- इस प्रकार, उन्होंने भारत में ही रहने की अपनी मंशा जाहिर की और काबुल लौटने की इच्छा रखने वाले कई भिखारियों को अनुमति दे दी।
- **उन्हें आम जनता से** भी भारी विरोध का सामना करना पड़ा, जिन्हें तैमूर के नरसंहार की कड़वी यादें थीं। इसके अलावा, उन्हें अपने नवजात साम्राज्य की नींव रखने के लिए लगातार युद्ध लड़ने पड़े।

बाबर के आगमन का महत्व

- **राजनीतिक पुनर्गठन:**
- उनके अभियान से एक अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना हुई। **उत्तर भारत में, बाबर ने लोदी और राणा सांगा के नेतृत्व वाले राजपूत संघ की शक्ति को ध्वस्त कर दिया,** जिससे शक्ति संतुलन नष्ट हो गया। यह एक अखिल भारतीय साम्राज्य की स्थापना की दिशा में एक कदम था।
- **उत्तर पश्चिम से बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा:**
- बाबर और उसके उत्तराधिकारी **लगभग 200 वर्षों तक भारत को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा** प्रदान करने में सक्षम रहे। कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद यह पहली बार था कि काबुल और कंधार उत्तर भारत में फैले एक साम्राज्य के अभिन्न अंग बन गए, जिससे उत्तर-पश्चिम से होने वाले आक्रमणों को रोका जा सका।
- **व्यापार और वाणिज्य:**
- **भारत महान ट्रांस-एशियाई व्यापार** में बड़ी हिस्सेदारी ले सकता था। **काबुल और कंधार पर नियंत्रण ने भारत के विदेशी व्यापार को मज़बूत किया** क्योंकि ये दोनों शहर पूर्व में चीन और पश्चिम में भूमध्यसागरीय बंदरगाहों के लिए कारवां के शुरुआती बिंदु थे।
- **सैन्य रणनीति और आधुनिक युद्ध प्रौद्योगिकी:**
- बाबर ने भारतीय सरदारों और सैनिकों को युद्ध की एक नई पद्धति दिखाई। अपनी **'तुलुग्मा'** रणनीति के माध्यम से, बाबर ने युद्धभूमि में सेना को खंडों में विभाजित करने और कुछ सेना को आरक्षित रखने की प्रणाली शुरू की। धीरे-धीरे, **युद्धभूमि में हाथियों का स्थान घोड़ों ने ले लिया**।
- बाबर के आगमन से पहले, भारत में युद्धों में बारूद का व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता था। हालाँकि, पानीपत के प्रथम युद्ध के बाद, भारत में मशीनगन और बारूद का **व्यापक रूप से उपयोग** होने लगा। उसने युद्ध की एक नई विधा की शुरुआत की और दिखाया कि तोपखाने और घुड़सवार सेना का कुशल संयोजन क्या हासिल कर सकता है। उसकी विजयों के कारण भारत में महंगी तोपों और तोपों का तेजी से प्रचलन हुआ। चूँकि तोपें और बारूद महंगे थे, इसलिए ये बड़े संसाधनों वाले शासकों के लिए फायदेमंद थे, और इस प्रकार बड़े राज्यों का युग शुरू हुआ।
- **मध्यकालीन भारत में धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव:**

- बाबर भारत का पहला मुस्लिम शासक था जिसने इस्लामी जगत के प्रमुख, **खलीफा के प्रति निष्ठा रखने की प्रथा को समाप्त कर दिया । इससे ताज की प्रतिष्ठा बढ़ी। बाबर ने ही स्वयं को ' पादशाह' घोषित किया।** इस प्रकार उसने खलीफा से अपने सभी संबंध तोड़ लिए और सिद्धांत और व्यवहार दोनों में स्वयं को सभी धार्मिक प्रभावों से स्वतंत्र कर लिया।
- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि बाबर पहला मुस्लिम शासक था जिसने मध्यकालीन भारत में एक धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव रखने के बारे में सोचा। उसने अपने व्यक्तिगत गुणों से भी अपनी सेना और भिखारियों का प्रिय बना लिया था। बाबर न तो कट्टर था और न ही धार्मिक गुरुओं के अधीन था। उसने राणा साँगा के विरुद्ध युद्ध को धार्मिक आधार पर नहीं, बल्कि राजनीतिक कारणों से जिहाद घोषित किया था।

- **संस्कृति:**

- वे **फ़ारसी और अरबी के गहन विद्वान** थे और उन्हें तुर्की भाषा के दो सबसे प्रसिद्ध लेखकों में से एक माना जाता है। उनकी आत्मकथा, **तुज़ुकी-बाबुरी,** विश्व साहित्य की उत्कृष्ट कृतियों में से एक मानी जाती है।
- वे अपने समय के प्रसिद्ध कवियों और कलाकारों के संपर्क में थे और एक **प्रकृतिवादी भी थे।** उन्होंने बहते पानी वाले कई बगीचे बनवाए और इस तरह एक नया चलन शुरू किया।
- वह **फ़ारसी संस्कृति से गहराई से प्रेरित था। इस प्रकार, बाबर ने राज्य की** एक नई अवधारणा प्रस्तुत की जो **ताज की शक्ति और प्रतिष्ठा, धार्मिक और सांप्रदायिक कट्टरता के अभाव और संस्कृति एवं ललित कलाओं के सावधानीपूर्वक पोषण** पर आधारित थी । इस प्रकार, उसने अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक मिसाल और दिशा प्रदान की।

बाबर का उत्तराधिकार और जीवन का अंत

- **1530 की शरद ऋतु में** बाबर का मुग़ल साम्राज्य कमज़ोर पड़ गया । उसके बहनोई ने बाबर की मृत्यु के बाद, बाबर के सबसे बड़े बेटे और उत्तराधिकारी हुमायूँ को दरकिनार करके, कुछ मुग़ल दरबारी कुलीनों के साथ मिलकर गद्दी हथियाने की योजना बनाई।
- हुमायूँ गद्दी पर अपना दावा पेश करने के लिए आगरा पहुँचा, लेकिन जल्द ही वह गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। पौराणिक कथाओं के अनुसार, बाबर ने ईश्वर से अपनी जान के बदले हुमायूँ की जान बख्शने की भीख माँगी थी।
- **26 दिसम्बर 1530 को 47 वर्ष की आयु में बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ को एक अस्थिर साम्राज्य विरासत में मिला, जो** आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से घिरा हुआ था।
- **हुमायूँ, अपने पिता की तरह, सत्ता से गिरकर निर्वासित हो गया, और वापस लौटकर भारत पर अपना दावा पेश किया।** अपने जीवन के अंत तक, उसने **साम्राज्य की स्थापना और विस्तार कर लिया** था , जो उसके पुत्र अकबर के शासनकाल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

निष्कर्ष

- यद्यपि बाबर के मुगल साम्राज्य ने भारत पर **मुश्किल से चार वर्षों** तक शासन किया , **लेकिन प्रकृति के प्रति उसके प्रेम** ने उसे अत्यंत सुन्दर उद्यानों का डिजाइन तैयार करने के लिए प्रेरित किया, जो आने वाले दशकों में प्रत्येक मुगल किले, महल और शाही संरचना का अभिन्न अंग बने रहे।
- 1529 ई. में घाघरा के युद्ध में, **बाबर ने बंगाल, बिहार, असम, उड़ीसा और अन्य राज्यों के अफ़गानों को पराजित किया** , जिन्होंने महमूद लोदी के साथ एक मज़बूत गठबंधन स्थापित कर लिया था। इसने बाबर-विरोधी उपायों को अस्थायी रूप से कमज़ोर कर दिया, जिससे युवा मुग़ल वंश को जीवित रहने का मौका मिला।
- बाबर की विजयों के कारण मुगल साम्राज्य पश्चिम में काबुल से लेकर पूर्व में घाघरा तक, उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में ग्वालियर तक फैला हुआ था।

मुगल साम्राज्य: हुमायूँ

- बाबर **की अचानक मृत्यु** के बाद, **उसके सबसे बड़े बेटे हुमायूँ ने गद्दी संभाली।** हुमायूँ संभवतः भारतीय इतिहास का एकमात्र ऐसा राजा है जिसके शासनकाल में **दो अवधियाँ रहीं, एक 1530-1540 तक और दूसरी 1555 से 1556 तक,** उसके भारत से पंद्रह वर्षों के निर्वासन के बाद।
- हुमायूँ का शाब्दिक अर्थ है **'भाग्यशाली',** लेकिन अपने जीवन के अधिकांश समय में वह **'दुर्भाग्यशाली' ही रहा।** उसे कठिनाइयों से भरी **एक समृद्ध विरासत** विरासत में मिली थी , लेकिन उसने अपनी गलतियों से इसे और भी समृद्ध बना दिया। एक शासक के रूप में, उसमें **दूरदर्शिता का अभाव था और वह राजनीतिक और सैन्य समस्याओं का दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने में असमर्थ था** । मुग़ल साम्राज्य को मज़बूती से स्थापित करने में उसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- बाबर की असामयिक मृत्यु के कारण प्रशासन अभी तक सुदृढ़ नहीं हो पाया था। बाबर ने अपना अधिकांश समय युद्धों में बिताया और अपने द्वारा जीते गए क्षेत्रों के प्रशासन को व्यवस्थित करने के लिए उपयुक्त कदम नहीं उठा सका।
- मुग़ल **सेना कई जातियों - चग़ताई, उज़बेक, मुग़ल, फ़ारसी, अफ़ग़ान और हिंदुस्तानी आदि - का एक विषम समूह थी।** ऐसी सेना को बाबर जैसे योग्य, तेजस्वी और प्रेरक सेनापति के नेतृत्व में ही नियंत्रित और अनुशासित रखा जा सकता था। हुमायूँ इस उद्देश्य के लिए बहुत कमज़ोर था।
- वित्तीय **स्थिति अनिश्चित थी** । दिल्ली और अजमेर के शाही खज़ानों से अपार धन प्राप्त करने के बाद, बाबर ने उसे अपने सैनिकों और सरदारों में इतनी उदारता से बाँट दिया कि **हुमायूँ के पास अपने प्रशासन के कामकाज के लिए बहुत कम धन बचा** । समय के साथ, ये सरदार बहुत शक्तिशाली हो गए और मुग़ल साम्राज्य की स्थिरता के लिए **एक बड़ा खतरा बन गए ।**
- **बाबर ने हुमायूँ से साम्राज्य को सभी भाइयों में बाँटने की तैमूरी परंपरा का पालन करने का आग्रह नहीं किया** क्योंकि साम्राज्य स्वयं अपनी प्रारंभिक अवस्था में था। हालाँकि, अपनी मृत्युशय्या पर, उसने हुमायूँ को **अपने तीनों भाइयों के प्रति दयालु और क्षमाशील रहने की** सलाह दी थी । हुमायूँ ने कामरान को काबुल और कंधार का शासक, अस्करी को रोहिलखंड का शासक और हिंदाल को मेवात (जिसमें अलवर, मथुरा और गुड़गांव के आधुनिक क्षेत्र शामिल थे) का शासक नियुक्त किया।
- इस प्रकार, **उसका प्रभाव और शक्ति का क्षेत्र कम हो गया** । इसके अलावा, हुमायूँ के भाइयों में कृतघ्नता और अयोग्यता भी थी।

अफ़गानों का पीछे हटना और उत्थान

- **घाघरा के युद्ध के बाद** भी अफ़गानों **का दमन नहीं हुआ था और वे मुगलों को खदेड़ने की उम्मीद पाले हुए थे** । कुछ साल पहले दिल्ली पर राज कर रहे अफ़गानों की फिर से सत्ता हथियाने की महत्वाकांक्षा अभी भी बनी हुई थी।
- **गुजरात का शासक बहादुर शाह भी एक अफ़गान था** । वह भी दिल्ली की गद्दी का महत्वाकांक्षी था। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली अफ़गान, जिसने बाद में हुमायूँ को खदेड़ दिया, वह **पूर्व में** शेरशाह था । इसलिए **पश्चिम में बहादुर शाह और पूर्व में शेरशाह ने हुमायूँ को घेर लिया और उसने** उनके साथ कई युद्ध लड़े।
- हुमायूँ शेरशाह सूरी की बढ़ती ताकत का अंदाज़ा लगाने में नाकाम रहा। जब हुमायूँ ने चुनार किले पर घेरा डाला था, तो उसे शेरशाह की आधी-अधूरी अधीनता स्वीकार नहीं करनी चाहिए थी। बल्कि उसे तो उसे शुरू में ही कुचल देना चाहिए था।
- लेकिन **हुमायूँ में दृढ़ संकल्प, सतत ऊर्जा, दूरदर्शिता और स्थिति को तुरंत समझने की क्षमता का अभाव था** । कन्नौज के युद्ध में, उसने पड़ाव डालने के लिए निचली भूमि चुनने और दो महीने तक दुश्मन के सामने निष्क्रिय रहने में बड़ी भूल की।
- इस प्रकार, हुमायूँ की कई मुसीबतें उसकी अपनी ही बनाई हुई थीं। वह अफ़गान शक्ति की प्रकृति को नहीं समझता था। उत्तर भारत में बड़ी संख्या में अफ़गान कबीलों के फैले होने के कारण, अफ़गान हमेशा एक योग्य नेता के नेतृत्व

में एकजुट होकर चुनौती पेश कर सकते थे। स्थानीय शासकों और ज़मींदारों को अपने पक्ष में किए बिना, मुग़ल संख्याबल में कमतर ही बने रहते।

- शेरखान युद्ध की तैयारी और योजना बनाने तथा शत्रुओं से लड़ने में हुमायूँ से श्रेष्ठ था। **शेरशाह के पास अधिक अनुभव, रणनीतियों का अधिक ज्ञान और अधिक संगठन क्षमता थी**। वह कभी कोई अवसर नहीं चूकता था और शत्रुओं पर विजय पाने के लिए चतुराईपूर्ण चालों और धूर्त तरीकों का प्रयोग कर सकता था।
- बहादुर शाह के मामले में भी, हुमायूँ में सैन्य रणनीति और त्वरित निर्णय लेने की क्षमता का अभाव था, इसलिए वह लगातार मौके गँवाता रहा। राजपूतों ने उससे सहायता की गुहार लगाई और चित्तौड़ में बहादुर शाह पर आक्रमण करने का आग्रह किया। हालाँकि, हुमायूँ ने समय बर्बाद किया, जिससे उसके विरोधियों को पर्याप्त तैयारी करने और अपनी स्थिति मजबूत करने का मौका मिल गया।
- लेकिन, फिर भी गुजरात अभियान पूरी तरह विफल नहीं हुआ। हालाँकि इससे मुगलों के क्षेत्र में कोई वृद्धि नहीं हुई, लेकिन इसने बहादुर शाह द्वारा मुगलों के लिए उत्पन्न खतरे को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। इसके तुरंत बाद, बहादुर शाह पुर्तगालियों के साथ उनके एक जहाज़ पर हुई झड़प में डूब गए।
- हुमायूँ के मालवा अभियान के दौरान, शेरशाह ने अपनी स्थिति और मज़बूत कर ली थी और अफ़गानों के व्यापक समर्थन से बिहार का निर्विवाद स्वामी बन बैठा था। इसके तुरंत बाद, उसने बंगाल पर भी कब्ज़ा कर लिया। लेकिन हुमायूँ बंगाल को शेरखान के हवाले करने को तैयार नहीं था क्योंकि यह सोने की ज़मीन, कारखानों से समृद्ध और विदेशी व्यापार का केंद्र था। **हुमायूँ का बंगाल की ओर कूच, उस आपदा की प्रस्तावना थी जो लगभग एक साल बाद चौसा में उसकी सेना पर टूट पड़ी**। उसके भाई **हिंदाल ने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया और हुमायूँ सभी समाचारों, रसद और सैन्य सहायता से कट गया।**
- **फिर हुमायूँ ने कर्मनाशा नदी** पार करके और शेरखान के आक्रमण के सामने बेहद कमज़ोर स्थिति में रहकर अपनी कमज़ोर सेनानीगीरी और राजनीतिक सूझबूझ का परिचय दिया। **हुमायूँ एक जलवाहक की मदद से नदी तैरकर युद्धभूमि से बमुश्किल अपनी जान बचाकर भागे।** चौसा के युद्ध में इस हार ने उनकी स्थिति को और कमज़ोर कर दिया। इसके अलावा, **कन्नौज के युद्ध में भी हुमायूँ की हार हुई।** इस युद्ध ने शेरशाह और मुगलों के बीच के विवाद का फैसला कर दिया। **शेरशाह उत्तर भारत का नया शासक बना और उसने हुमायूँ को भारत छोड़ने का आदेश दिया**।

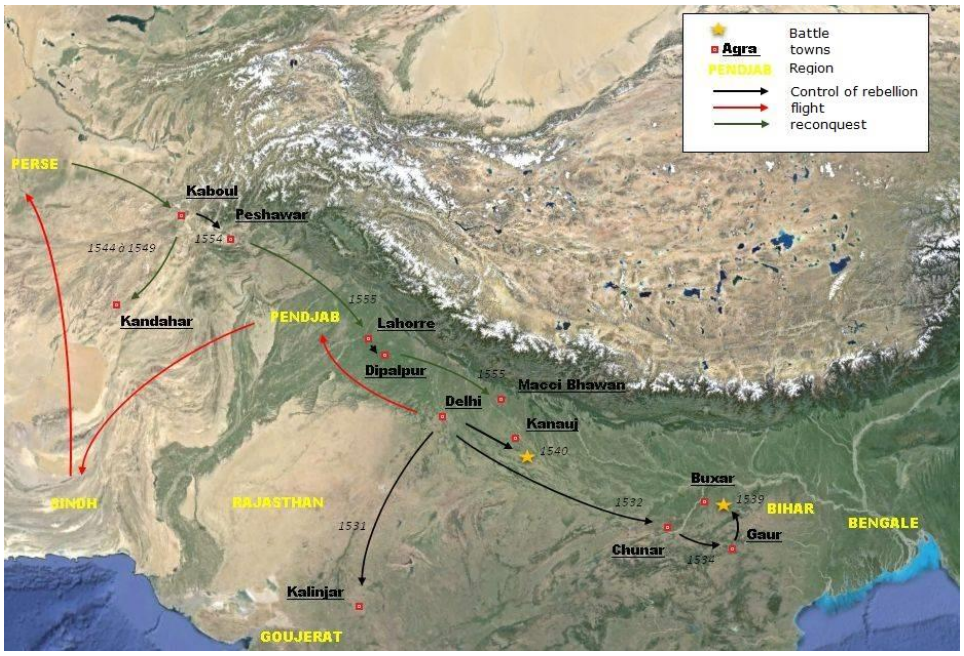

हुमायूँ का बाद का जीवन

- दस साल शासन करने के बाद, **हुमायूँ को 15 साल भारत से बाहर बिताने पड़े**। हुमायूँ एक **राज्यविहीन राजकुमार** बन गया। अगले ढाई साल तक वह **सिंध और उसके आस-पास के इलाकों में भटकता रहा** और अपना राज्य वापस पाने के लिए तरह-तरह की योजनाएँ बनाता रहा। लेकिन न तो सिंध या मारवाड़ के शासक

और न ही उसके भाई उसकी मदद करने को तैयार थे। इससे भी बुरी बात यह थी कि उसके अपने ही भाई उसके खिलाफ हो गए और उसे जान से मारने या कैद करने की कोशिश की। अंततः, **हुमायूँ ने सफ़वी वंश के ईरानी राजा के दरबार में शरण ली** और उसकी मदद से 1545 में कामरान से कंधार और काबुल वापस ले लिया।

- हालाँकि हुमायूँ बाबर जितना शक्तिशाली नहीं था, फिर भी उसने अपने अविवेकी बंगाल अभियान तक खुद को एक कुशल सेनापति और राजनीतिज्ञ साबित किया। **1555 में, सूर साम्राज्य के विघटन के बाद, वह दिल्ली पर पुनः कब्ज़ा करने में सफल रहा।**
- हुमायूँ का जीवन रोमांटिक था। **वह अमीरी से गरीबी में, और फिर गरीबी से अमीरी में पहुँचा**। हुमायूँ को असफल कहना न्याय नहीं होगा।
- यह सच है कि वह शेरशाह के खिलाफ असफल रहे, लेकिन **शेरशाह की मृत्यु के बाद, उन्होंने सत्ता में आने के हर अवसर का लाभ उठाया**। लेकिन उनका मनोबल कम नहीं हुआ। 15 साल के निर्वासन के बाद भी, वह दिल्ली की अपनी गद्दी पर फिर से कब्ज़ा कर सके और मुगलों की शक्ति और प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित कर सके। हालाँकि, वह जीत का आनंद लेने के लिए ज़्यादा समय तक जीवित नहीं रहे और सत्ता में आने के छह महीने के भीतर ही **दिल्ली स्थित अपने किले में स्थित पुस्तकालय भवन की पहली मंजिल से गिरकर उनकी मृत्यु हो गई।**

सूर वंश (शेरशाह सूरी)

- शेरशाह ने **अफगान साम्राज्य को पुनः स्थापित किया, जिस पर बाबर ने कब्ज़ा कर लिया था । शेरशाह सूरी, जिसे शेर खान के नाम से भी जाना जाता है, 1540 से 1545 तक** भारत का सम्राट था ।
- उन्होंने मुगल सम्राट **हुमायूँ को गद्दी से उतारकर सूर वंश की स्थापना की** । सूर साम्राज्य को कई मायनों में दिल्ली सल्तनत की निरंतरता और परिणति माना जा सकता है।

Sher Shah Suri

- **शेरशाह सूरी,** जिसका मूल नाम **फ़रीद** था , सूरी वंश का संस्थापक था।
- वह अपने पिता की जागीर का प्रशासक बन गया, जो उसके प्रयासों से समृद्ध हुई। उसे व्यापक प्रशासनिक अनुभव था और वह एक प्रखर योद्धा था।
- शेर खान की उपाधि **उन्हें उनके संरक्षक द्वारा बाघ** (शेर) को मारने या प्रदान की गई सेवाओं के लिए दी गई थी।
- मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा न होने के बावजूद, **वह एक सच्चे सैनिक थे और हिंदुस्तान के शासक के पद तक पहुंचे।**

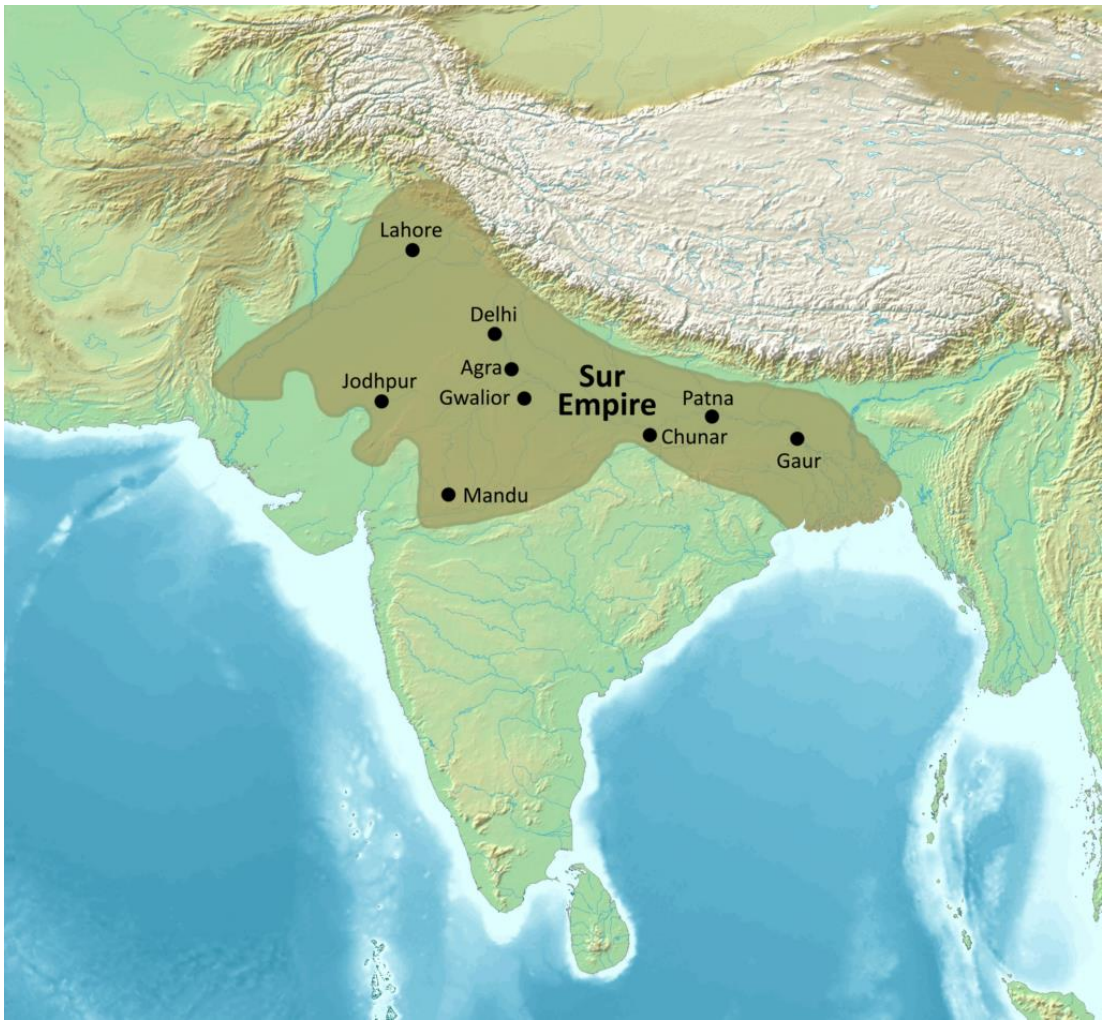

राजनीति

- शेरशाह ने **बिहार के लोहानी सरदारों और बंगाल के मोहम्मद शाह की संयुक्त सेना को सूरजगढ़ में पराजित किया** । इस विजय के साथ ही **पूरा बिहार शेरशाह के अधीन आ गया** ।
- उन्होंने बंगाल को भी कई बार लूटा और बंगाल की राजधानी गौड़ पर कब्जा करके मोहम्मद शाह को हुमायूं के पास शरण लेने के लिए मजबूर कर दिया।

मुठभेड़ें: हुमायूँ और शेरशाह

- **हुमायूँ और शेरशाह के बीच तीन प्रमुख मुठभेड़ें हुईं:**

- **1538 में चुनार के किले** पर मुठभेड़ और शेरशाह का कूटनीतिक आत्मसमर्पण।
- **1539 में हुमायूँ के साथ चौसा का युद्ध** और शेरशाह की विजय।
- **1540 में कन्नौज का युद्ध** और शेरशाह की हुमायूँ पर निर्णायक विजय।
- **कन्नौज की विजय के साथ ही शेरशाह दिल्ली का शासक बन गया। आगरा, संभल और ग्वालियर आदि भी उसके अधीन आ गए। इस विजय ने मुगल वंश के 15 वर्षों के** शासन का अंत कर दिया ।
- पश्चिम में, उसने मालवा और लगभग पूरे राजस्थान पर विजय प्राप्त की। शेरशाह भारत के एक बड़े हिस्से को अपने नियंत्रण में लेने में सफल रहा। उसके साम्राज्य की सीमाएँ एक ओर पंजाब से मालवा तक और दूसरी ओर बंगाल से सिंध तक फैली हुई थीं।
- अपने नियंत्रण में बड़े क्षेत्रों के साथ, वह भारत की प्रशासनिक प्रणाली को एक प्रकार की एकरूपता प्रदान करने में सक्षम थे।

प्रशासन

- शेरशाह सूरी ने एक **सुदृढ़ और मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था** स्थापित की । उनका शासनकाल केवल पाँच वर्षों तक चला, लेकिन इस संक्षिप्त अवधि में भी, उन्होंने एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था विकसित की जो भारत में अंग्रेजों के आगमन तक लगभग अपरिवर्तित रही।
- शेरशाह सूरी को **निम्नलिखित महत्वपूर्ण मंत्रियों द्वारा सहायता प्रदान की गई थी:**
  - **दीवान-ए-विजारत, जिसे वजीर** भी कहा जाता है - राजस्व और वित्त का प्रभारी।
  - **दीवान-ए-आरिज़** - सेना का प्रभारी।
  - **दीवान-ए-रसालत** - विदेश मंत्री।
  - **दीवान-ए-इंशा** - संचार मंत्री।
- **अकबर की शासन प्रणाली मूलतः शेरशाह की शासन प्रणाली पर आधारित थी।**
- **शेरशाह का** साम्राज्य **सैंतालीस सरकारों में विभाजित** था । **प्रत्येक सरकार कई परगनाओं में विभाजित थी।** कई **सरकारों को प्रांतों** में मिला दिया गया था ।
- **प्रत्येक सरकार** में प्रशासन के प्रभारी दो अधिकारी मुख्य शिकदार (कानून और व्यवस्था) और मुख्य मुंसिफ (न्यायाधीश) थे।
- **शिकदार** (सैन्य अधिकारी), अमीन (भू-राजस्व **), फोतेदार** (कोषाध्यक्ष) **कारकुन (लेखाकार) प्रत्येक परगना** के प्रशासन के प्रभारी थे **/**
- परगना **शिकदार के अधीन था,** जो कानून-व्यवस्था और सामान्य प्रशासन बनाए रखता था।
- मुंसिफ **या आमिल भू-राजस्व संग्रह का कार्य देखता था** । परगना के ऊपर **शिक या सरकार होती थी, जिसका प्रभार सिकदार-ए-शिकदारन और मुंसिफ-ए-मुंसिफन के पास होता था** ।
- उन्होंने अपने राज्य के राजस्व प्रशासन को व्यवस्थित करने का विशेष ध्यान रखा। **भूमि का सर्वेक्षण एक समान प्रणाली पर किया जाता था और प्रत्येक जोत की अलग-अलग माप की जाती थी** । भूमि को अच्छी, खराब और मध्यम श्रेणी में विभाजित किया गया था। कर निर्धारण उदार था, लेकिन वसूली सख्त थी, क्योंकि **भूमि की कुल उपज का एक-तिहाई राजस्व के रूप में लिया जाता था** । लोग कर का भुगतान सीधे **, वस्तु या नकद रूप में** कर सकते थे ।
- उन्होंने किसानों के हितों की रक्षा का विशेष ध्यान रखा। किसानों के अधिकारों को विधिवत मान्यता दी गई और प्रत्येक के दायित्वों को **काबुलियत (समझौते का दस्तावेज़)** में स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया , जो राज्य उनसे लेता था, और **पट्टा (स्वामित्व-पत्र)** , जो बदले में उन्हें देता था। इससे भ्रम और उत्पीड़न की गुंजाइश कम हो गई।
- सैन्य प्रशासन को भी कुशलतापूर्वक पुनर्गठित किया गया और **शेरशाह ने अलाउद्दीन खिलजी से घोड़ों पर शाही चिन्हों से दाग़ (दाग़) लगाने जैसे कई विचार उधार लिए।** प्रत्येक सैनिक का अपना वर्णनात्मक रोल (चेहरा) दर्ज होता था।
- **Malik Muhammad Jayasi** wrote the famous Hindi work **Padmavat** during his reign.

धर्म

- शेरशाह **मुस्लिम शासकों में पहला शासक था जिसने इस तथ्य को पहचाना कि भारत हिंदुओं और मुसलमानों दोनों की भूमि है और उसने यथासंभव दोनों तत्वों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया** ।
- उन्होंने अपनी प्रजा के सभी वर्गों के साथ समान व्यवहार किया, चाहे वे किसी भी धर्म को मानते हों।
- कुछ सबसे ज़िम्मेदार अधिकारी, नागरिक और सैन्य, हिंदुओं में से ही भर्ती किए गए थे। उन्होंने पूरी निष्पक्षता से न्याय किया और न्यायिक अधिकारियों के आचरण पर प्रभावी निगरानी रखी।
- हालाँकि, शेरशाह ने कोई नई उदार नीतियाँ शुरू नहीं कीं। **हिंदुओं से जजिया वसूला जाता रहा** , जबकि उसके कुलीन वर्ग में अफ़गानों का हिस्सा लगभग पूरी तरह से शामिल था।

अर्थव्यवस्था

- उन्होंने **मुद्रा की एक सुधारित प्रणाली** शुरू की और मिश्रित धातुओं के घटिया सिक्कों के स्थान पर **एक समान मानक के सोने, चांदी और तांबे के उत्तम सिक्के चलाए । उनके चांदी के सिक्के को रुपिया** और **तांबे के सिक्के को दाम कहा जाता था।**
- उनका चाँदी का रुपया सदियों बाद भी एक मानक सिक्का बना रहा। उन्हें **सीमा शुल्क लागू करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने संचार के साधनों में** भी काफ़ी सुधार किया ।
- उन्होंने बंगाल से पंजाब तक जाने वाली **प्रसिद्ध ग्रांड ट्रंक रोड का जीर्णोद्धार किया** , तथा सैनिकों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने और व्यापार एवं वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए सड़कों के किनारे **पेड़ लगाए और विश्राम स्थल (सराय) स्थापित किए।**
- उन्होंने **ग्रांड ट्रंक रोड का** विस्तार पूर्वोत्तर भारत में बंगाल प्रांत की सीमा पर स्थित चटगांव से लेकर देश के सुदूर उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान के काबुल तक किया।
- **शेरशाह ने चार महत्वपूर्ण राजमार्ग** बिछाकर संचार में भी सुधार किया था। वे थे:

1. सोनारगांव से सिंध
2. Agra to Burhampur
3. जोधपुर से चित्तौड़ और
4. लाहौर से मुल्तान तक।

- उन्होंने **चित्तौड़ जैसे स्थानों को गुजरात के बंदरगाहों से भी जोड़ा** ।
- इसके अलावा, उन्होंने व्यापारियों को नुकसान पहुंचाने के लिए बहुत कठोर दंड के साथ कानून और व्यवस्था सुनिश्चित की और अपने राज्यपालों को व्यापारियों और यात्रियों के साथ हर तरह से अच्छा व्यवहार करने का निर्देश दिया।
- इसके अलावा, शेरशाह ने **घोड़ों द्वारा ढोई जाने वाली डाक सेवा की व्यवस्था** शुरू की और वह किसानों के कल्याण के लिए बहुत चिंतित था।

कला और वास्तुकला

- उन्होंने **कई सरायों और मस्जिदों का निर्माण कराया और सड़कों का जाल बिछाया,** जिनमें सबसे प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड थी। उन्होंने **दिल्ली के पास यमुना के किनारे एक पूरा शहर भी बसाया** ।
- वास्तुकला में भी उनकी गहरी रुचि थी। यह उनके द्वारा निर्मित **रोहतास किले से स्पष्ट होता है। पटना में शेरशाह सूरी मस्जिद और दिल्ली के पुराना किला में किला-ए-कुहना मस्जिद** उनके अन्य महान योगदान थे।
- उनका मकबरा इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का एक उत्कृष्ट नमूना माना जाता है और **बिहार के सासाराम में स्थित शेरशाह सूरी मकबरे** के रूप में प्रसिद्ध है ।

राजवंश का महत्व

- शेरशाह ने केवल पाँच वर्षों तक शासन किया और इस संक्षिप्त अवधि में भी उसने अपनी प्रशासनिक प्रतिभा की छाप स्थायी रूप से छोड़ दी। **यदि वह अधिक समय तक जीवित रहता, तो वह एक स्थिर अफ़गान साम्राज्य की स्थापना कर सकता था और भारत में मुगल साम्राज्य शायद अस्तित्व में ही न आता** । मध्यकालीन भारत के सभी शासकों में, वह निस्संदेह सबसे महान था।

- वह एक योग्य सेनापति, कुशल सैनिक और दृढ़निश्चयी शासक थे। उनके सुधार जनता के हितों की रक्षा के लिए सुनियोजित थे। उनका व्यक्तित्व इतना महान था कि उनके सबसे बड़े शत्रु हुमायूँ ने उनकी मृत्यु पर उन्हें **'उस्ताद-ए-बादशाहन', यानी राजाओं का गुरु कहा था।**
- अकबर और उसके उत्तराधिकारियों ने उनके द्वारा किए गए परिवर्तनों को अपनी शासन व्यवस्था के आधार के रूप में **अपनाया**। मुगलों के पतन के बाद, अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने भी कमोबेश उसी प्रशासनिक व्यवस्था को बरकरार रखा।
- यह स्पष्ट है कि शेरशाह की प्रतिभा सदियों तक भारत के भाग्य को प्रभावित करती रही।

गिरावट के कारण

- शेरशाह सूरी का अंतिम **अभियान कालिंजर के विरुद्ध था, जहां एक आकस्मिक बारूद विस्फोट के दौरान वह घायल हो गया और उसकी मृत्यु हो गई।**
- शेरशाह की राज्य व्यवस्था उसके व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द घूमती थी, और वह अत्यंत ऊपरी तौर पर भारी थी। **प्रशासन का संस्थागत स्तर बहुत निम्न था**। परिणामस्वरूप, शेरशाह की मृत्यु के 10 वर्षों के भीतर ही सूर साम्राज्य का पतन हो गया। उसके **बाद उसका दूसरा पुत्र इस्लाम शाह गद्दी पर बैठा, जिसने 1553 तक शासन किया।**
- इस्लाम शाह एक योग्य शासक और सेनापति थे, लेकिन उनकी अधिकांश ऊर्जा अपने भाइयों द्वारा किए गए विद्रोहों और अफ़गानों के बीच कबीलाई झगड़ों में लगी रही। कम उम्र में उनकी मृत्यु के कारण उनके उत्तराधिकारियों के बीच गृहयुद्ध छिड़ गया।
- शेरशाह के उत्तराधिकारी उसके पुनर्निर्माण कार्य को आगे बढ़ाने के लिए पूरी तरह से अयोग्य और अयोग्य थे। समाज के सभी वर्गों का समर्थन हासिल करने की कोशिश करने के बजाय, उन्होंने मतभेद और समूह-प्रतिद्वंद्विताएँ पैदा कीं। **अफ़गानों में कोई राष्ट्रीय एकता नहीं** थी । प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या ने अफ़गानों को बर्बाद कर दिया।
- **शेरशाह के उत्तराधिकारियों ने किसानों की दुर्दशा की उपेक्षा की। राजस्व की उचित वसूली नहीं** की गई । शेरशाह के उदाहरणों को भुला दिया गया। साथ ही, उन्होंने लोगों को न्याय दिलाने की भी ज़हमत नहीं उठाई।
- **इससे हुमायूँ को भारत में अपना साम्राज्य पुनः प्राप्त करने का वह अवसर मिल गया जिसकी उसे तलाश थी** । 1555 में दो भीषण लड़ाइयों में, उसने अफ़गानों को हराकर दिल्ली और आगरा पर पुनः कब्ज़ा कर लिया।

मुगल साम्राज्य: अकबर

- पानीपत के प्रथम युद्ध (20 अप्रैल, 1526) में इब्राहिम लोदी को हराने के बाद बाबर द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना का सपना अभी भी दूर था, क्योंकि उसके उत्तराधिकारी और पुत्र हुमायूं, चौसा के युद्ध (1539) और कन्नौज के युद्ध (1540) में शेरशाह सूरी से पराजित होने के बाद बेघर भटकने वाले की स्थिति में आ गए थे।
- फारस के सफ़वी शासक शाह तहमास्प ने उन्हें शरण दी और सैन्य सहायता दी, जिसके द्वारा हुमायूँ ने सरहिंद के युद्ध (जुलाई, 1555) **में सिकंदर सूरी से दिल्ली और आगरा को पुनः प्राप्त किया।**
- हालाँकि, मुगल साम्राज्य की समस्याएं यहीं समाप्त नहीं हुईं क्योंकि हुमायूँ अपने साम्राज्य को मजबूत कर पाता, इससे पहले ही वह अपने पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर घातक रूप से घायल हो गया।
- नवजात साम्राज्य को बाहरी शत्रुओं के साथ-साथ झगड़ालू कुलीन वर्ग से भी टकराव का सामना करना पड़ रहा था और ऐसी अनिश्चित परिस्थितियों में **युवा अकबर**, जिसका नाम ही महान है, **सभी चुनौतियों का सामना करते हुए** इस देश के सबसे महान सम्राटों में से एक के रूप में उभरा।

अकबर

- जब हुमायूं सिंध में भ्रमण कर रहा था, तब उसकी मुलाकात **हमीदा बानो बेगम से** हुई और 1541 में उसने विवाह कर लिया। एक वर्ष बाद हमीदा ने एक बालक अकबर को जन्म दिया, जो महानतम भारतीय सम्राटों में से एक बना।
- हालाँकि, जब हुमायूँ मदद के लिए फ़ारस भाग गया, तो अकबर को उसके चाचा कामरान ने बंदी बना लिया, हालाँकि उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया। अपने पिता से उसका पुनर्मिलन तभी संभव हुआ जब हुमायूँ ने कामरान से कंधार पर कब्ज़ा कर लिया।
- **हुमायूं की मृत्यु के बाद, 13 वर्षीय अकबर को** 1556 में हुमायूं के सैन्य जनरल और अकबर के संरक्षक बैरम खान ने कलानौर में सिंहासन पर बैठाया।
- जब अकबर गद्दी पर बैठा, तो उसके साम्राज्य में पंजाब और दिल्ली के कुछ ही क्षेत्र शामिल थे। यह स्थिति भी लगातार खतरे में थी क्योंकि

1. **आदिल शाह सूरी (शेरशाह सूरी के भतीजे) के सेनापति हेमू ने** मुगल सेना को हराकर आगरा और दिल्ली पर विजय प्राप्त की थी। ऐसा कहा जाता है कि उस समय तक उन्होंने बाईस लड़ाइयों में से एक भी नहीं हारी थी और आदिल शाह ने उन्हें विक्रमाजीत या विक्रमादित्य की प्राचीन उपाधि प्रदान की थी और उन्हें वज़ीर भी बनाया था।
2. **काबुल पर बदख्शां शासकों** ने हमला कर दिया था और उसे घेर लिया था ।
3. **हुमायूं से पराजित सिकंदर शाह सूरी** अपने साम्राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए अवसर की तलाश में था और लगातार खतरा बना हुआ था।

- इस मोड़ पर, **बैरम खान ने अपनी उत्कृष्ट सैन्य कुशलता का परिचय दिया**। इससे पहले कि हेमू दिल्ली पर कब्ज़ा करके अपनी बढ़त को और मज़बूत कर पाते, बैरम खान ने उनकी सेना पर भीषण हमला बोल दिया।
- यह दुर्भाग्यपूर्ण मुठभेड़ पानीपत के दूसरे युद्ध (5 नवंबर, 1556) में घटी, जहाँ **हेमू की सेना, लाभप्रद स्थिति में होने के बावजूद, पराजित हुई** जब एक तीर हेमू की आँख में लगा और वह बेहोश हो गया। इस विजय ने दिल्ली के सिंहासन पर **मुगलों का प्रभुत्व पुनः स्थापित कर दिया ।**

प्रतियोगिता

- पानीपत का दूसरा युद्ध मुगलों के एक गौरवशाली युग की शुरुआत थी। दिल्ली में एक महीने के प्रवास के बाद, अकबर ने दिल्ली की गद्दी के सभी दावेदारों को परास्त करने की कोशिश की।
- इस खोज में, **उन्होंने बैरम खान के साथ मिलकर सिकंदर शाह सूरी के विरुद्ध सैन्य अभियान पूरा करने के लिए सरहिंद की ओर कूच किया** और अंततः 1557 में कश्मीर के मनकोट किले में सिकंदर शाह सूरी को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर कर दिया। सिकंदर शाह सूरी को बिहार खदेड़ दिया गया जहाँ दो साल बाद उनकी मृत्यु हो गई। **आदिल शाह सूरी 1557 में बंगाल साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध में मारे गए थे**, और दिल्ली की गद्दी के अन्य दावेदार पीछे हट

गए थे। इस प्रकार, अकबर अपनी संप्रभुता के विरुद्ध प्रतिद्वंद्वी दावों से अप्रभावित होकर, अपने साम्राज्य को सुदृढ़ करने के लिए स्वतंत्र हो गया।

- बैरम खान के शासनकाल में, आगे की विजयों के कारण मुगल साम्राज्य का विस्तार काबुल से पूर्व में जौनपुर और पश्चिम में अजमेर तक हो गया। पंजाब के महत्वपूर्ण केंद्र लाहौर और मुल्तान पर भी कब्ज़ा कर लिया गया।
- **ग्वालियर को सूर शासकों से छीन लिया गया** और मालवा और रणथंभौर पर विजय पाने के लिए सेनाएँ भेजी गईं। इस दौरान, बैरम खान राज्य की बागडोर संभाल रहा था और कुलीन वर्ग पर उसका पूरा नियंत्रण था।
- हालाँकि, इन उपलब्धियों ने बैरम खान को अहंकारी बना दिया और वह यह समझने में नाकाम रहा कि अकबर अब परिपक्व हो रहा है और राज्य के मामलों को अपने हाथ में लेना चाहता है। दोनों के बीच यह मनमुटाव दरबारी षडयंत्रों से और बढ़ गया, जहाँ बैरम खान से द्वेष रखने वाले रईसों ने उसके **शिया सरदारों** के पक्ष में पक्षपात करने की शिकायत की ।
- **इन सबके चलते अकबर ने एक फ़रमान जारी किया जिसके ज़रिए बैरम ख़ाँ को उसके पद से हटा दिया गया** । हालाँकि बैरम आत्मसमर्पण के लिए तैयार था, लेकिन षड्यंत्रकारी सरदारों ने उसे इस हद तक अपमानित किया कि उसने ताज के खिलाफ विद्रोह की घोषणा कर दी। विद्रोह को दबाने में छह महीने लग गए, और **अंततः बैरम को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा** । अकबर ने उसके साथ कोई द्वेष नहीं रखा और उसे ताज की सेवा करने या मक्का जाकर रहने का विकल्प दिया। बैरम ने दूसरा विकल्प चुना। हालाँकि, जनवरी 1561 में मक्का जाते समय, एक अफ़गान ने उसकी हत्या कर दी, जो उससे व्यक्तिगत दुश्मनी रखता था।
- **1561-67 तक** अकबर को विद्रोह की अन्य ताकतों का भी सामना करना पड़ा, जिनमें प्रमुख थे:
  - **माहम अंगा और अधम खान:** माहम अंगा अकबर की धाय माँ थीं, जिन्होंने बैरम खान को पदच्युत करने में भूमिका निभाई थी। उनके बेटे अधम अंगा ने मालवा पर अभियान के दौरान संप्रभुता का दावा किया था। जब उसे कमान से हटा दिया गया, तो उसने खुद के लिए वज़ीर का पद ले लिया और कार्यवाहक वज़ीर की उसके कार्यालय में ही हत्या कर दी। इससे अकबर क्रोधित हो गया और 1561 में उसने उसे किले की प्राचीर से नीचे फिंकवा दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई।
  - **उज़बेक:** पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और मालवा के क्षेत्र में उज़बेक कुलीन वर्ग का बहुत प्रभाव था। उन्होंने इन क्षेत्रों में अफ़गान सेनाओं को दबाने में सम्राट की मदद की थी, लेकिन वे अहंकारी हो गए और अकबर के विरुद्ध विद्रोह करके उसकी सत्ता को चुनौती देने लगे। अकबर ने 1561 के बाद कई बार इन विद्रोहों को दबाया और 1565 में, उसने जौनपुर को अपनी राजधानी बनाने की कसम खाई, जब तक कि वह उन सभी को परास्त नहीं कर देता। उसने 1567 में उज़बेक नेता को हराकर मार डाला, इस प्रकार उनके विद्रोह का अंत कर दिया।
  - **मिर्जा:** मिर्जा, जो तैमूरी थे और अकबर से विवाह के रिश्ते से जुड़े थे, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र पर शासन करते थे, जहाँ से उन्होंने सम्राट के विरुद्ध विद्रोह किया। अकबर ने उन्हें पराजित कर मालवा और फिर गुजरात भागने पर मजबूर कर दिया।
  - **मिर्ज़ा हाकिम:** वह अकबर का सौतेला भाई था जिसने काबुल और लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया था और उज़बेकों ने उसे अपना शासक घोषित कर दिया था। अकबर ने 1581 में लाहौर पर चढ़ाई की और उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया।
- इन सभी विद्रोहों ने साम्राज्य का समय और संसाधन तो बर्बाद कर दिए, लेकिन अकबर को एक अनुभवी सेनापति और कूटनीतिज्ञ बना दिया, और यही गुण उसने अपने बाद के प्रयासों में खूब इस्तेमाल किए। इसके अलावा, ज़्यादातर विद्रोही सरदार, जो अपने लिए एक स्वतंत्र राज्य का सपना देखते थे, दब गए।

साम्राज्य विस्तार (1560-76 ई.)

मालवा

- मालवा राज्य पर **बाज बहादुर** (1555-62) का शासन था **और मांडू उसकी राजधानी थी** । बाज बहादुर कला के संरक्षक थे और उनके काल में मांडू संगीत का एक प्रसिद्ध केंद्र बन गया था। यह काल **बाज बहादुर और रानी रूपमती के प्रेम प्रसंग** से जुड़ा है , जो अपनी सुंदरता, संगीत और कविता के लिए प्रसिद्ध थीं।

- हालाँकि, राज्य की सुरक्षा की उपेक्षा की गई, जिसका फायदा उठाकर **अधम खान ने** मालवा के खिलाफ एक अभियान चलाया और मालवा से भागे बाज बहादुर को हराया (1561)। हालाँकि, **अधम खान ने रूपमती का अपहरण करने की कोशिश करके एक गलती की,** क्योंकि उसने उसके हरम का हिस्सा बनने के बजाय मौत को गले लगाना पसंद किया। **अधम खान की क्रूरता के कारण मुगलों के खिलाफ प्रतिक्रिया हुई** और बाज बहादुर को मालवा वापस पाने में मदद मिली।
- **अकबर ने 1562 में अब्दुल्ला खान के नेतृत्व में मालवा पर एक और अभियान भेजा, जिसने बाज बहादुर को खदेड़कर मालवा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया**। कई वर्षों तक निर्वासन में रहने के बाद, **बाज बहादुर ने 1570 में अकबर के अधीन होकर मनसबदार के रूप में स्वीकार कर लिया**। इस प्रकार मालवा का विस्तृत क्षेत्र मुगल शासन के अधीन आ गया।

Garh-Katanga

- गढ़-कटंगा साम्राज्य **में नर्मदा घाटी और वर्तमान मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग शामिल थे** , जिसकी राजधानी जबलपुर के पास **चौरागढ़** थी। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में **अमनदास ने इसे सुदृढ़ किया।**
- उन्होंने **गुजरात के बहादुर शाह को रायसेन विजय में सहायता की थी और उन्हें संग्राम शाह** की उपाधि दी गई थी। उनके पुत्र का विवाह चंदेल राजकुमारी **दुर्गावती** से हुआ था। जब इलाहाबाद के मुगल शासक **आसफ खान ने** गढ़-कटंगा पर आक्रमण किया, तब वह रानी रीजेंट के रूप में शासन कर रही थीं।
- अपने सहयोगियों द्वारा विश्वासघात के बावजूद, **रानी ने बहादुरी से लड़ाई लड़ी, लेकिन घायल हो गईं और आसन्न हार के डर से, उन्होंने पकड़े जाने से बचने के लिए खुद को चाकू मारकर आत्महत्या कर ली** । हालाँकि, मुगल गवर्नर ने लूट का केवल एक छोटा सा हिस्सा शाही दरबार में भेजा, और बाकी अपने लिए रख लिया।
- जब अकबर को इस बारे में पता चला, तो उसने न केवल आसफ खान को उसके अवैध लाभ से अलग होने के लिए मजबूर किया, बल्कि संग्राम शाह के छोटे बेटे **चंद्र शाह को गढ़-कटंगा का राज्य भी वापस कर दिया।**

राजपूताना

- **उत्तरी और मध्य भारत पर अपना प्रभुत्व मज़बूत करने के बाद, अकबर ने अपना ध्यान राजपूताना की ओर लगाया,** जो उसके प्रभुत्व के लिए एक बड़ा ख़तरा बन गया था। उसने अजमेर और नागौर पर अपना शासन पहले ही स्थापित कर लिया था। **1561 में, अकबर ने राजपूताना पर विजय पाने के लिए अपनी यात्रा शुरू की** । उसने राजपूत शासकों को अपने अधीन करने के लिए बल के साथ-साथ कूटनीतिक रणनीति का भी इस्तेमाल किया। हालाँकि कई राजपूत राज्यों ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी, लेकिन **मेवाड़ के उदय सिंह और मारवाड़ के चंद्रसेन राठौर ने झुकने से इनकार कर दिया।**
- राणा उदय सिंह, राणा सांगा के वंशज थे, जो 1527 में खानवा के युद्ध में बाबर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। सिसोदिया वंश के मुखिया होने के नाते, उन्हें भारत के सभी राजपूत राजाओं और सरदारों में सर्वोच्च धार्मिक दर्जा प्राप्त था। इसलिए, अकबर के लिए मेवाड़ को हराना अत्यंत महत्वपूर्ण था।
- **1567 में, अकबर ने मेवाड़ के चित्तौड़गढ़ किले पर आक्रमण किया,** जो राजपूताना में शासन स्थापित करने के लिए एक महत्वपूर्ण सामरिक महत्व का था। उदय सिंह के सरदारों जयमल और पत्ता ने 1568 में चार महीने तक मुग़ल सेना को रोके रखा। किले में लड़ते हुए कई किसान भी मारे गए। **उदय सिंह को मेवाड़ की पहाड़ियों में निर्वासित कर दिया गया।** उनके बाद, उनके पुत्र राणा प्रताप ने मुग़ल सेना का **डटकर मुकाबला किया ।**
- हल्दीघाटी के प्रसिद्ध **युद्ध (जून, 1576) में, अम्बर के मान सिंह की कमान में मुगल सेना ने राणा प्रताप की सेना को भारी नुकसान पहुंचाया, लेकिन उन्हें पकड़ने में असफल रही** ।
- चित्तौड़ के पतन के बाद, रणथंभौर किले पर भी कब्ज़ा कर लिया गया। जोधपुर पर पहले ही कब्ज़ा हो चुका था और इन विजयों ने बीकानेर और जैसलमेर जैसे अन्य राजपूत शासकों को अकबर के अधीन कर दिया था। **मेवाड़ एकमात्र ऐसा राज्य था जिसने मुगल सेना का प्रतिरोध जारी रखा।**

Gujarat

- गुजरात राज्य अपनी उपजाऊ भूमि और समृद्ध विदेशी व्यापार के कारण धन-धान्य से परिपूर्ण था। अकबर इसे अपने अधीन करना चाहता था क्योंकि **मिर्जाओं ने वहाँ शरण ले रखी थी** और वे उसके साम्राज्य के लिए एक बड़ा खतरा बन

सकते थे। **अकबर नहीं चाहता था कि इतना समृद्ध प्रांत किसी प्रतिद्वंद्वी शक्ति केंद्र में बदल जाए।** इन्हीं कारणों से, उसने 1572 में अजमेर होते हुए अहमदाबाद की ओर कूच किया और अहमदाबाद के शासक को बिना किसी युद्ध के आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद, अकबर ने भड़ौच, बड़ौदा और सूरत पर शासन कर रहे **मिर्जाओं को पराजित किया ।**

- **यहीं कैम्बे में अकबर ने पहली बार समुद्र देखा था और पुर्तगालियों से भी मुलाकात की थी** जो भारत में अपना साम्राज्य स्थापित करने के इच्छुक थे, लेकिन अकबर द्वारा गुजरात पर विजय प्राप्त करने के बाद उनके इरादे विफल हो गए थे।
- हालाँकि, जैसे ही अकबर आगरा वापस गया, पूरे गुजरात में विद्रोह भड़क उठे। **अकबर ने एक बार फिर अहमदाबाद की ओर कूच किया और 1573 में दुश्मन सेना को हरा दिया।**

Bengal

- बंगाल और बिहार के क्षेत्र **पर अफ़ग़ान नेता दाऊद ख़ान का शासन था** । उसके पास 40,000 घुड़सवारों और 1,50,000 पैदल सैनिकों की एक शक्तिशाली सेना थी।
- **अकबर ने तेज़ी से आगे बढ़ते हुए पटना पर कब्ज़ा कर लिया और** इस तरह बिहार में मुग़ल संचार व्यवस्था को सुरक्षित कर लिया। इसके बाद, अकबर आगरा लौट आया और अभियान का भार **मुनीम ख़ाँ** को सौंप दिया , जिसने बंगाल पर आक्रमण कर दिया। दाउद ख़ाँ को शांति की अपील करनी पड़ी, लेकिन जल्द ही उसने विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया।
- मुग़ल सेना ने एक बार फिर उसे पराजित किया और **1576 में दाऊद खान को मार दिया गया, इस प्रकार उत्तरी भारत में अंतिम अफगान साम्राज्य का अंत हो गया।**
- बंगाल अभियान **ने अकबर के साम्राज्य विस्तार के पहले चरण का अंत कर दिया** । इससे अकबर को अपने साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने का समय भी मिला।

प्रशासन

भूमि राजस्व नीति

- शुरुआत में, अकबर ने **शेरशाह सूरी की राजस्व प्रणाली अपनाई,** जिसके तहत खेती के क्षेत्रफल को मापा जाता था और भूमि की उत्पादकता के आधार पर फसल के दाम तय किए जाते थे। हालाँकि, इस प्रणाली में दो बड़ी समस्याएँ थीं।
- (क) **कीमतें तय करने में अक्सर देरी होती थी जिससे किसानों को कठिनाई होती थी** , और
- (ख) चूँकि कीमतें राजधानी के आसपास की ज़मीन को ध्यान में रखकर तय की जाती थीं, इसलिए **ये आम तौर पर ग्रामीण इलाकों में प्रचलित कीमतों से ज़्यादा होती थीं** । इस प्रकार, किसानों को अपनी उपज का ज़्यादा हिस्सा कर के रूप में देना पड़ता था।
- इसके कारण अकबर को **वार्षिक मूल्यांकन की प्रणाली को पुनः अपनाना पड़ा** । **क़ानूनगो** स्थानीय अधिकारी थे जो वास्तविक उपज, स्थानीय कीमतों और अन्य विवरणों की रिपोर्ट देते थे। हालाँकि, कई क्षेत्रों में बेईमान क़ानूनगो वास्तविक उपज की जानकारी छिपाते थे और इससे साम्राज्य के राजस्व वित्त को नुकसान होता था। इस भ्रष्ट प्रथा पर 1573 में

रोक लगी जब अकबर ने **करोड़ी** नामक अधिकारियों को नियुक्त किया जो क़ानूनगो द्वारा बताई गई कीमतों पर नज़र रखते थे और एक करोड़ रुपये (2,50,000 रुपये) वसूलने के लिए ज़िम्मेदार थे।

- अकबर द्वारा शुरू की गई **प्रमुख राजस्व मूल्यांकन प्रणालियाँ** निम्नलिखित थीं :
- **Zabti:**
  - **यह भूमि की माप की** एक प्रणाली थी और **राजस्व का आकलन भूमि की उत्पादकता और स्थानीय कीमतों पर आधारित था**। यह किसानों के लिए एक राहत थी क्योंकि सूखे, बाढ़ या किसी भी आपदा के कारण उत्पादकता कम होने पर उन्हें कर में छूट मिल जाती थी। इस प्रणाली का संबंध आमतौर पर **राजा टोडरमल** से है , जो अकबर के शासनकाल से पहले शेरशाह के राजस्व मंत्री थे।
- **अपराध:**
  - **यह ज़ब्ती प्रणाली का** एक उन्नत संशोधन था। इसमें राजस्व का निर्धारण विभिन्न फसलों की औसत उपज और **पिछले दस वर्षों के** औसत मूल्यों के आधार पर किया जाता था । **औसत उपज का एक-तिहाई हिस्सा राज्य का हिस्सा होता था**।
- **Batai or Ghalia Bakshi:**
  - इस व्यवस्था के तहत, **उपज राज्य और किसानों के बीच एक निश्चित अनुपात में बाँटी जाती थी**। किसानों को नकद या वस्तु के रूप में भुगतान करने का विकल्प दिया जाता था, हालाँकि नकद भुगतान को प्राथमिकता दी जाती थी। हालाँकि यह व्यवस्था निष्पक्ष थी, लेकिन इसे लागू करने के लिए ईमानदार अधिकारियों की आवश्यकता थी।
- **नासिका:**
  - **इसे कंकुट या अनुमान के** नाम से भी जाना जाता था। इसके तहत, **किसान द्वारा भुगतान किए जाने वाले राजस्व का एक मोटा अनुमान** उसके पिछले भुगतानों के आधार पर लगाया जाता था।
- राजस्व के आकलन के लिए **भूमि को खेती की निरंतरता के आधार पर वर्गीकृत किया गया था।**
- **पोलाज:** वह भूमि जो **लगभग हर वर्ष** खेती के अधीन रहती है ।
- **परती: परती भूमि** , परती भूमि जिस पर खेती करते समय पूरी दर (पोलाज) चुकाई जाती है।
- **चचार: वह भूमि जो 2-3 वर्षों** से बंजर पड़ी हो ।
- **बंजर: वह भूमि जो तीन वर्ष से अधिक समय** से बंजर पड़ी हो ।
- इन पर रियायती दरों पर कर लगाया जाता था और पूरी तरह से कर तभी लगाया जाता था जब वे पोलाज भूमि बन जाती थीं। ऐसा बंजर भूमि को कृषि योग्य भूमि में बदलने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया गया था। **अकबर ने आमिलों को निर्देश दिया था कि वे ज़रूरत पड़ने पर किसानों को ऋण (तकवी) दें और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले बीज बोने के लिए प्रोत्साहित करें।**

सदस्यता प्रणाली

- एक संगठित कुलीन वर्ग और एक मजबूत सैन्य इकाई के बिना साम्राज्य का इतने बड़े पैमाने पर एकीकरण संभव नहीं था। अकबर ने ये दोनों उद्देश्य मनसबदारी व्यवस्था के माध्यम से प्राप्त किए। यह **मुगल प्रशासन की एक अनूठी व्यवस्था** थी ।
- इसके अंतर्गत, **प्रत्येक अधिकारी को एक पद (मनसब) दिया जाता था, सबसे कम 10 और सबसे अधिक 5000 रईसों के लिए होता था**। रक्त के राजकुमारों को उच्च मनसब प्राप्त होते थे।
- उल्लेखनीय बात यह है कि अकबर के शासन के अंत **में एक कुलीन को मिलने वाला सर्वोच्च पद 5000 से बढ़ाकर 7000 कर दिया गया था ।**
- अकबर शासन के दो वरिष्ठ सरदारों, **मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका और राजा मान सिंह को** 7000-7000 का पद दिया गया था। मनसब दो श्रेणियों में विभाजित थे:
- **जाट:** यह व्यक्तिगत पद था और अधिकारी का दर्जा और वेतन इसके अनुसार तय होता था।
- **सवार:** यह एक मनसबदार को रखने के लिए आवश्यक घुड़सवारों (सवारों) की संख्या को दर्शाता था।
- मनसब के अंतर्गत **तीन श्रेणियां** थीं :
- वह अधिकारी जो **अपनी जात रैंक के बराबर सवार रखता था।**

- वह अधिकारी जो **अपने जाट पद से आधे या अधिक सवार रखता था।**
- वह अधिकारी जो **अपने जाट पद से आधे सवार से भी कम वेतन रखता था।**
- **प्रत्येक मनसबदार को नियमित रूप से अपनी टुकड़ी को निरीक्षण के लिए लाना पड़ता था । प्रत्येक सवार की पहचान उसके वर्णनात्मक रोल (चेहरा)** के आधार पर की जाती थी, जबकि **प्रत्येक घोड़े पर शाही निशान (दाग़ व्यवस्था) लगाया जाता था।** प्रत्येक दस सवार के लिए **, मनसबदारों को बीस घोड़े रखने होते थे** । इसे **10-20 नियम** कहा जाता था ।
- मनसबदारों को वेतन **जागीरें** देकर दिया जाता था , जिससे किसी क्षेत्र का भू-राजस्व मनसबदार को प्राप्त होता था। यह **कोई वंशानुगत व्यवस्था नहीं** थी , बल्कि केवल भुगतान का एक तरीका था। **इसी वेतन से मनसबदार को सैनिकों को वेतन देना होता था और एक निश्चित संख्या में घोड़ों और हाथियों का भरण-पोषण भी करना होता था** । सेना में केवल सर्वोत्तम गुणवत्ता वाले घोड़े ही रखे जाते थे।
- **यह व्यवस्था योग्यता** पर आधारित थी और एक अधिकारी, जिसे आमतौर पर निचले मनसब पर नियुक्त किया जाता था, अपने **प्रदर्शन** के आधार पर पदानुक्रम में ऊपर उठ सकता था। इसी प्रकार, किसी अधिकारी को दंड के रूप में पदावनत भी किया जा सकता था।
- इसके अलावा, अकबर ने मुगल, पठान हिंदुस्तानी और राजपूत **सभी सरदारों की मिश्रित टुकड़ियों को** प्रोत्साहित किया । इससे संकीर्णता और कबीलाई ताकतों को हतोत्साहित किया गया। घुड़सवारों के अलावा, धनुर्धारियों, बन्दूकधारियों (बंदूकची), नाविकों और खनिकों को भी टुकड़ियों में भर्ती किया गया था।

राजनीतिक प्रशासन

- **केंद्रीय: अकबर ने शक्ति पृथक्करण और नियंत्रण एवं संतुलन के सिद्धांतों** के आधार पर केंद्रीय प्रशासन का गठन किया। इसके कुछ महत्वपूर्ण पदाधिकारी थे:
- **वज़ीर:** वह **राजस्व विभाग का प्रमुख** होता था और साम्राज्य की सभी आय-व्यय के लिए ज़िम्मेदार होता था। वह शासक और प्रशासन के बीच मुख्य कड़ी होता था। अब वह सम्राट का प्रमुख सलाहकार नहीं रह गया था और कई अमीरों के मनसब उससे ऊँचे थे।
- **मीर बख्शी:** वह **सैन्य विभाग का प्रमुख** था और कुलीन वर्ग का भी मुखिया माना जाता था। वह विभिन्न मनसबों के लिए अधिकारियों की सिफ़ारिश करता था, लेकिन वज़ीर मनसबदार को जागीर सौंपने के लिए ज़िम्मेदार था, इस प्रकार नियंत्रण और संतुलन बनाए रखता था। मीर बख्शी साम्राज्य की **ख़ुफ़िया और सूचना एजेंसियों का भी प्रभारी था। देश भर में तैनात कई ख़ुफ़िया अधिकारी (बरीद)** और **समाचार संवाददाता (वाक़िया-नवीस)** उसे रिपोर्ट करते थे।
- **मीर समन:** वह **शाही घराने का प्रभारी** होता था और इस प्रकार हरम या महिला कक्षों में रहने वालों के लिए आवश्यक विभिन्न वस्तुओं की व्यवस्था सुनिश्चित करता था। इनमें से कई वस्तुएँ शाही कार्यशालाओं या कारखानों में बनाई जाती थीं।
- **मुख्य काजी:** वह **न्यायिक विभाग का प्रमुख था**
- **मुख्य सदर: वह धर्मार्थ और धार्मिक निधियों की** देखभाल करता था ।
- इन मंत्रियों के अलावा, अकबर स्वयं भी आम लोगों के लिए काफ़ी सुलभ थे। उन्होंने **दीवान-ए-आम की स्थापना की जहाँ वे लोगों की शिकायतें सुनते थे। मंत्रियों के साथ निजी परामर्श एक कक्ष में होता था जिसे गुस्लख़ाना** के नाम से जाना जाता था।
- **प्रांतीय:**
- 1580 में साम्राज्य को **12 प्रांतों में विभाजित किया गया था और प्रत्येक प्रांत का प्रमुख एक गवर्नर (सूबेदार) होता** था । अन्य अधिकारियों में एक **दीवान, एक बख्शी, एक सदर, एक काजी और एक वाकिया नवीस** शामिल थे । प्रांतीय प्रशासन में भी नियंत्रण और संतुलन के सिद्धांत को बनाए रखा गया था।
- **स्थानीय:**
- **सूबों को सरकारों (जिले के समकक्ष) में विभाजित किया गया था,** जिन्हें **आगे परगना (तहसील के समकक्ष) में विभाजित किया गया** था । सरकार के मुख्य अधिकारी थे
  - **फौजदार:** वह **कानून और व्यवस्था** बनाए रखने के लिए जिम्मेदार था ।

- **अमलगुजार: वह भू-राजस्व के आकलन और संग्रहण** के लिए जिम्मेदार था। उसे भू-राजस्व के एकसमान आकलन और संग्रहण के लिए सभी भूमि जोतों पर सामान्य पर्यवेक्षण करना आवश्यक था।

- राजस्व वितरण के लिए साम्राज्य के क्षेत्रों को **तीन भागों में विभाजित किया गया था:**
- **जागीर:** राजस्व **कुलीनों और शाही परिवार के सदस्यों को आवंटित किया जाता था**
- **खलीसा:** राजस्व सीधे **शाही खजाने में भेजा जाता था**
- **इनाम: धार्मिक व्यक्तियों को उनकी आस्था की परवाह किए बिना** राजस्व आवंटित किया जाता था। इस भूमि का आधा हिस्सा कृषि योग्य बंजर भूमि थी ताकि इनाम धारकों को कृषि के विस्तार को प्रोत्साहित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

जागीरदारी व्यवस्था

- जागीरदारी व्यवस्था में **राज्य के प्रति अपनी सेवाओं के बदले रईसों को एक विशेष क्षेत्र का राजस्व आवंटित किया जाता** था । यह **दिल्ली सल्तनत की इक्ता का एक संशोधित संस्करण** था और **मनसबदारी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग** था ।
- केंद्रीय दीवान का कार्यालय उन परगनों की पहचान करता था जिनकी जमा राशि मनसबदार के वेतन दावे के बराबर होती थी। यदि दर्ज जमा राशि वेतन दावे से अधिक होती थी, तो मनसबदार को अतिरिक्त राशि केंद्रीय खजाने में जमा करने के लिए कहा जाता था। हालाँकि, यदि जमा राशि वेतन दावे से कम होती थी, तो शेष राशि राजकोष से चुकाई जाती थी।
- **जागीरों का वर्गीकरण:**
- **तन्खा जागीरें** - वेतन के बदले में दी जाती थीं और हस्तांतरणीय होती थीं।
- **वतन जागीरें** - वंशानुगत और अहस्तांतरणीय होती थीं। ये जागीरें स्थानीय ज़मींदारों या राजाओं को उनके स्थानीय राज्य में दी जाती थीं। जब किसी ज़मींदार को मनसबदार नियुक्त किया जाता था, तो उसे वतन जागीर के अतिरिक्त तनखा जागीर भी दी जाती थी, यदि उसके पद का वेतन वतन जागीर से होने वाली आय से अधिक होता था।
- **मशरुत जागीरें** - कुछ शर्तों पर सौंपी गई जागीरें।
- **अल्तमघा जागीरें** - मुस्लिम सरदारों को उनके पारिवारिक नगरों या जन्म स्थान पर सौंपी जाती हैं।
- **ज़मींदारों को ज़मीन की उपज पर वंशानुगत अधिकार प्राप्त थे और किसानों की उपज में उनका 10-25% का सीधा हिस्सा होता था**। वे राजस्व वसूली में राज्य की सहायता करते थे और ज़रूरत पड़ने पर राज्य को सैन्य सेवाएँ भी प्रदान करते थे। ज़मींदार अपनी ज़मींदारी की सभी ज़मीनों का मालिक नहीं होता था। जो किसान वास्तव में ज़मीन पर खेती करते थे, उन्हें तब तक बेदखल नहीं किया जा सकता था जब तक वे भू-राजस्व का भुगतान करते रहते थे। ज़मींदारों और किसानों, दोनों के ज़मीन पर अपने-अपने वंशानुगत अधिकार होते थे।

राजपूतों के साथ संबंध

- उस समय जब मुग़ल साम्राज्य अफ़गानों, आंतरिक विद्रोह और विदेशी शक्तियों के रूप में चुनौतियों का सामना कर रहा था, अकबर को अधिक सहयोगियों और कम शत्रुओं की सख़्त ज़रूरत थी। उसने महसूस किया कि राजपूत, जिनके पास विशाल भूभाग था, जो कुशल योद्धा थे और अपनी वीरता और वचन के प्रति निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे, पर भरोसा किया जा सकता है और इस प्रकार उसने **उन्हें अपना मित्र बना लिया**।
- इसलिए, मुगल सम्राट अकबर ने मुगल साम्राज्य के विस्तार के लिए राजपूतों का सहयोग लेने का निश्चय किया। इस नीति के तहत, **उसने न केवल अपनी संप्रभुता स्वीकार करने वाले राजपूत शासकों को उच्च पद प्रदान किए, बल्कि उनके साथ विवाह संबंध भी स्थापित किए।**
- **इस उदार नीति के कारण, अकबर को आमेर के राजा भारमल के रूप** में एक सबसे विश्वसनीय सहयोगी मिला। उन्हें उच्च कुलीन बनाया गया और अकबर ने उनकी पुत्री, **हरखा बाई से** विवाह किया । हालाँकि मुस्लिम सम्राटों और हिंदू शासकों के बीच विवाह असामान्य नहीं थे, अकबर ने अपनी हिंदू पत्नियों को पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता देकर इस संबंध को एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया। भारमल के पुत्र, भगवंत दास को 5000 का मनसब दिया गया, जबकि उनके पोते, मान सिंह, 7000 के पद तक पहुँचे, जो केवल एक अन्य कुलीन, अज़ीज़ खान कूका के पास था।

- अकबर ने हिंदू प्रजा के प्रति अपनी समानता की भावना प्रदर्शित करने के लिए **1562 में हिंदुओं पर तीर्थयात्रा कर और 1564 में जजिया कर समाप्त कर दिया। राजपूत शासकों को दी गई स्वायत्तता ने** उन्हें यह एहसास दिलाया कि मुगल सम्राट की अधीनता स्वीकार करने से उनके हितों को कोई नुकसान नहीं होगा।
- हालांकि, ऐसे मैत्रीपूर्ण संबंधों के अपवाद भी थे। **चित्तौड़ की घेराबंदी के बाद भी, राणा उदय सिंह ने अपना प्रतिरोध जारी रखा**। 1572 में **, राणा प्रताप मेवाड़ की गद्दी पर बैठे**। अकबर ने मान सिंह, भगवंत दास और राजा टोडर माई के नेतृत्व में लगातार तीन दूतावास भेजे। लेकिन अभिमानी राणा अकबर को व्यक्तिगत श्रद्धांजलि देने के लिए सहमत नहीं हुए। **1576 में, अकबर अजमेर चले गए और मान सिंह को राणा प्रताप के खिलाफ अभियान का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया**। परिणामी **हल्दीघाटी के युद्ध** में , **राणा हार गए लेकिन वे बच निकले** और गुरिल्ला युद्ध छेड़कर अपना प्रतिरोध जारी रखा। 1579 में बंगाल और बिहार में एक बड़ा विद्रोह हुआ और मुगलों ने अपने संसाधनों को दूसरी जगह लगा दिया जिससे राणा को अपना साम्राज्य **वापस पाने का अवसर मिला।**
- अकबर को मारवाड़ से भी प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जहाँ मालदेव की मृत्यु (1562) के बाद, उनके छोटे पुत्र **चंद्रसेन ने** गद्दी संभाली। लेकिन मुगलों के दबाव के कारण उन्हें अपने बड़े भाई **उदय सिंह** को कुछ क्षेत्र सौंपने पड़े । चंद्रसेन ने इस हस्तक्षेप के विरुद्ध विद्रोह किया, लेकिन पराजित होकर मेवाड़ में शरण लेने को विवश हुए।
- **अकबर की राजपूत नीति को जहाँगीर और शाहजहाँ ने जारी रखा**। जहाँगीर के शासनकाल में ही मेवाड़ के साथ विवाद का निपटारा हुआ जब राणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने मुगलों के साथ समझौता कर लिया और उनके पुत्र, राजकुमार कर्ण सिंह को जहाँगीर के दरबार में 5000 का पद दिया गया।
- अकबर की ऐसी उदार नीति का ही परिणाम था कि राजपूत, जो न केवल दिल्ली के सुल्तानों के विरोधी थे, बल्कि 350 वर्षों से भी अधिक समय तक लगातार उनके विरुद्ध लड़ते रहे, **मुगल राजगद्दी के प्रबल सहयोगी** बन गए । राजपूतों ने अकबर के शासनकाल की सैन्य, राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और कलात्मक उपलब्धियों में मुक्त और समृद्ध योगदान दिया। उनके **सहयोग ने न केवल मुगल शासन को सुरक्षा और स्थायित्व प्रदान किया, बल्कि देश में अभूतपूर्व आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक पुनर्जागरण भी लाया** , और हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों का एक ऐसा समन्वय स्थापित किया जो मुगल शासन की एक अमूल्य विरासत है।

धर्म

- अकबर का जन्म उस समय हुआ जब **भक्ति और सूफी आंदोलन** अपने चरम पर थे और हिंदू और मुसलमानों की अनिवार्य एकता पर ज़ोर देने वाली विचारधारा प्रचलित थी। ऐसी उदारवादी भावनाओं का युवा अकबर पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने **जजिया , तीर्थयात्रा कर और युद्धबंदियों को जबरन इस्लाम में धर्मांतरित करने की प्रथा को** समाप्त कर दिया ।
- उन्होंने **सुलह-ए-कुल की नीति का पालन किया,** जिसके तहत **शासक अपनी प्रजा के प्रति बिना किसी संप्रदाय या पंथ के भेदभाव के पितृतुल्य प्रेम से प्रतिष्ठित होता था** और सांप्रदायिक कलह को बढ़ने से रोकना उसका कर्तव्य था। उनका एकमात्र उद्देश्य **" सत्य की खोज करना, वास्तविक धर्म के सिद्धांतों का पता लगाना और उन्हें प्रकट करना" था।**
- 1575 में **, अकबर ने अपनी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना या प्रार्थना कक्ष का निर्माण कराया,** जहाँ उसने धर्मशास्त्रियों, मनीषियों और विद्वान कुलीनों को धार्मिक मामलों पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया। शुरुआत में यह चर्चा केवल मुसलमानों तक ही सीमित थी, लेकिन बाद में सभी धर्मों के लोगों, यहाँ तक कि नास्तिकों के लिए भी, के लिए खोल दी गई। उसने हिंदू धर्म के सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए पुरुषोत्तम और देवी को, पारसी धर्म के सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए महाराजी राणा को, ईसाई धर्म के लिए पुर्तगाली अक्फ्क्वाविवा और मोनसेरेट को, और जैन धर्म के लिए हीरा विजय सूरी को आमंत्रित किया। **हालाँकि, यह रूढ़िवादी मुल्लाओं को पसंद नहीं आया और अफवाहें फैल गईं कि अकबर इस्लाम त्यागना चाहता है** । बढ़ते कलह ने अकबर को 1582 में इबादतखाना में चर्चा बंद करने के लिए मजबूर कर दिया।
- लेकिन उन्होंने सच्चे धर्म की खोज नहीं छोड़ी। विभिन्न धर्मों के नेताओं के साथ उनके संपर्क ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि विभिन्न धर्मों में मतभेद तो हैं, लेकिन उन सभी में कुछ अच्छी बातें भी हैं जिन पर ज़ोर देना ज़रूरी है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए, **उन्होंने तौहीद-ए-इलाही (ईश्वरीय एकेश्वरवाद) या दीन-ए-इलाही नामक अपना एक धर्म स्थापित किया**, जिसका उद्देश्य समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त धार्मिक कटुता और संघर्ष को समाप्त करना था।

- **तौहीद-ए-इलाही सूफीवादी प्रकार का एक संप्रदाय था, और इसकी सदस्यता स्वैच्छिक थी**। इसमें कोई पवित्र ग्रंथ, कोई पुरोहित वर्ग या अनुष्ठान नहीं थे, सिवाय दीक्षा समारोह के, जिसमें सम्राट **शास्ता** नामक एक सूत्र देते थे , जिसे दीक्षा लेने वाले व्यक्ति को दोहराना होता था। इसमें **अकबर का प्रिय आदर्श वाक्य था - 'अल्लाह-ओ-अकबर' या 'ईश्वर महान है'।** हालाँकि, **तौहीद-ए-इलाही ने बहुत अधिक अनुयायियों को आकर्षित नहीं किया और अकबर के साथ ही इसका अंत हो गया**।
- अकबर ने अनेक सामाजिक-धार्मिक सुधार भी लागू किए, जैसे **विधवा की इच्छा के बिना सती प्रथा को रोकना, विधवा पुनर्विवाह की अनुमति देना, ज्यामिति, खगोल विज्ञान, कृषि जैसे विषयों के साथ धर्मनिरपेक्ष शिक्षा को प्रोत्साहित करना**।

Ibadat khana

कला और वास्तुकला

- अकबर के शासनकाल में, कई देशी कला शैलियों को प्रोत्साहन मिला, जिसके परिणामस्वरूप **बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग हुआ**। अकबर ने कई किले बनवाए, जिनमें सबसे प्रसिद्ध **आगरा का किला (लाल बलुआ पत्थर से बना) है। उसके अन्य किले लाहौर और इलाहाबाद** में भी हैं।
- अकबर ने **आगरा के पास फतेहपुर सीकरी (विजय नगरी) का** निर्माण कराया था । इस परिसर में गुजराती और बंगाली शैली की कई इमारतें देखने को मिलती हैं। इसमें सबसे भव्य इमारत **जामा मस्जिद है और इसका प्रवेश द्वार बुलंद दरवाज़ा** (176 फीट ऊँचा) कहलाता है, जिसका निर्माण लगभग 1572 ई. में अकबर की गुजरात विजय की स्मृति में किया गया था। फतेहपुर सीकरी की अन्य महत्वपूर्ण इमारतों में **जोधाबाई का महल और** पाँच मंजिला पंच महल शामिल हैं।
- **उन्होंने सिकंदरा (आगरा के पास) में अपना मकबरा बनवाया जिसे जहाँगीर ने पूरा करवाया**।
- अकबर ने **वृंदावन में गोविंददेव का मंदिर बनवाया**।
- उन्होंने आगरा किले में **जहांगीर महल का भी निर्माण करवाया।**
- अकबर ने कई साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथों के चित्रण का काम सौंपा। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में चित्रकारों को अपने दरबार में आमंत्रित किया। इस कार्य में हिंदू और मुसलमान दोनों शामिल हुए। **बसवान, मिस्कीना और दसवंत ने** अकबर के दरबारी कलाकारों के रूप में उच्च पद प्राप्त किए।
- **महाभारत और रामायण के फ़ारसी संस्करणों के चित्र लघु रूप में तैयार किये गए**।
- अकबर द्वारा स्थापित कला स्टूडियो में कई अन्य भारतीय दंतकथाओं को लघु चित्रों में बदल दिया गया।
- **अकबरनामा** जैसी ऐतिहासिक कृतियाँ भी मुगल चित्रकला का मुख्य विषय रहीं।
- **हमज़ानामा को सबसे महत्वपूर्ण कृति माना जाता है जिसमें 1200 चित्र शामिल थे। इसमें मोर नीला, भारतीय लाल** जैसे भारतीय रंगों का प्रयोग शुरू हुआ।
- अकबर ने **ग्वालियर के तानसेन को संरक्षण दिया था,** जिन्होंने कई रागों की रचना की थी। ऐसा माना जाता है कि वह क्रमशः मेघ मल्हार और दीपक राग गाकर वर्षा और अग्नि ला सकते थे।
- अकबर के शासनकाल तक फ़ारसी भाषा मुग़ल साम्राज्य में व्यापक हो गई थी। अबुल **फ़ज़ल अपने काल का एक महान विद्वान और इतिहासकार था**। उसने गद्य लेखन की एक शैली निर्धारित की जिसका अनुसरण कई पीढ़ियों तक किया गया। इस काल में कई ऐतिहासिक रचनाएँ लिखी गईं। इनमें **अबुल फ़ज़ल द्वारा रचित आइन-ए-अकबरी और अकबरनामा शामिल हैं।** महाभारत का फ़ारसी भाषा में अनुवाद अबुल फ़ैज़ी (अबुल फ़ज़ल के भाई) **की देखरेख में किया गया था । उत्बी और नज़ीरी** अन्य दो प्रमुख फ़ारसी कवि थे। अकबर के समय से ही हिंदी कवि मुग़ल दरबार से जुड़े रहे। सबसे प्रसिद्ध हिंदी कवि **तुलसीदास** थे , जिन्होंने रामायण का हिंदी संस्करण - रामचरितमानस - लिखा था।

मूल्यांकन

- अकबर ने मुग़ल साम्राज्य के साथ-साथ भारतीय उपमहाद्वीप के लिए भी एक समृद्ध विरासत छोड़ी। अपने पिता के शासनकाल में अफ़गानों द्वारा ख़तरे में पड़ने के बाद, उन्होंने भारत और उसके बाहर **मुग़ल साम्राज्य की सत्ता को**

मज़बूती से स्थापित किया और उसकी सैन्य और कूटनीतिक श्रेष्ठता स्थापित की। उनकी कूटनीतिक नीतियाँ **पारस्परिक सह-अस्तित्व और मैत्री** पर आधारित थीं , जिसने हिंदू शासकों को भी उनका सहयोगी बना दिया।

- राजनीतिक और सैन्य प्रशासन में उनके चतुराईपूर्ण सुधारों ने साम्राज्य को लंबे समय से अपेक्षित **स्थिरता** प्रदान की । उनके शासनकाल में, **राज्य का स्वरूप धर्मनिरपेक्ष और उदारवादी हो गया, जिसमें सांस्कृतिक एकीकरण पर ज़ोर दिया गया।** वे एक दूरदर्शी व्यक्ति थे, और उनके धार्मिक सिद्धांत, **दीन-ए-इलाही** , अपनी धर्मनिरपेक्ष प्रवृत्ति और तर्क में विश्वास के साथ, एक आधुनिक भारत का वादा करता था। यह भी कहा जा सकता है कि अकबर का जन्म शासन करने के लिए हुआ था, और इतिहास के ज्ञात सबसे महान सम्राटों में से एक होने का उनका दावा जायज़ था।

अकबर की विजयें

प्रांत	शासक
मालवा	Baz Bahadur
Chunar	अफ़ग़ान
के बराबर	Jaimal
Gondwana (Garh Katanga)	Rani Durgawati (regent of Bir Narayan)
चित्तौड़	Rana Uday Singh
रणथंभौर	सुरजन हाड़ा
Kalinjar	राम चंद्र
मारवाड़	Chandrasena, Kalyanmal, Raj Singh, Rawal Harirai
Gujarat	Bahadur Shah
Bengal-Bihar	द मैन खान किरानी
Haldighati	Rana Pratap
स्वीकार	मिर्ज़ा हकीम
Kashmir	यूसुफ खान और याकूब खान
अलविदा	जानी बेग मिर्ज़ा
उड़ीसा	Kutul Khan and Nisar Khan
Khandesh	अली खान
बलूचिस्तान	यूसुफजई जनजातियाँ
Kandhar	मुज़फ़्फ़र हुसैन मिर्ज़ा
अहमदनगर	चाँद बीबी (बहादुर शाह की रीजेंट)
असीरगढ़	Miran Bahadur Khan

अकबर के नवरत्नों

- **नौ दरबारियों को** अकबर के नवरत्न (**नौ रत्न**) के रूप में जाना जाता था।

1. **अबुल फ़ज़ल**
   - उन्होंने **अकबरनामा** और आइन-ए-अकबरी की रचना की।
   - उन्होंने दक्कन में युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व किया।
   - राजकुमार सलीम के आदेश पर, बीर सिंह बुंदेला ने उनकी हत्या कर दी।
2. **दिलचस्पी**
   - वह एक महान फ़ारसी कवि थे।
   - **अबुल फ़ज़ल का भाई.**
   - उनकी देखरेख में महाभारत का फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया गया।
   - उन्होंने लीलावती (गणित पर एक कृति) का फ़ारसी में अनुवाद भी किया।
3. **तानसेन**

- **उन्होंने राजा रामचंद्र** के दरबार में एक महान संगीतकार के रूप में कार्य किया, जिन्होंने उन्हें **"तानसेन" की** उपाधि दी । उनका जन्म तन्ना मिश्रा के रूप में हुआ था।
- **अकबर ने उन्हें "मियां"** की उपाधि दी ।
- ऐसा माना जाता है कि वह क्रमशः दीपक और मेघ मल्हार राग गाकर अग्नि और वर्षा ला सकते थे।

4. **राजा बीरबल**

- उनका मूल नाम महेश दास था।
- **अकबर ने उन्हें "राजा" और "बीरबल"** की उपाधि दी ।
- वह उत्तर-पश्चिमी सीमा पर यूसुफ शाहियों से लड़ते हुए मारे गये।

5. **राजा टोडर मॉल**

- वह राजस्व प्रणाली के प्रमुख थे। उन्होंने मानक बाट और माप की शुरुआत की।
- उन्होंने पहले शेरशाह सूरी के अधीन काम किया था।
- **अकबर ने उन्हें "दीवान-ए-अशरफ"** की उपाधि से सम्मानित किया ।

6. **राजा मान सिंह**

- अकबर के विश्वसनीय सेनापतियों में से एक।

7. **बेचारा अज़ियाओ दीन**

- वह अकबर के प्रमुख सलाहकारों में से एक थे।
- वह एक सूफी रहस्यवादी थे।

8. **Abdul Rahim Khan-i-Khanan**

- Son of Bairam Khan.
- वह एक महान कवि थे। उन्होंने बाबरनामा का फ़ारसी में अनुवाद किया।

9. **मिर्ज़ा अज़ीज़ कोका**

- इसे खान-ए-आज़म या कोटलताश के नाम से भी जाना जाता है।
- अकबर का पालक भाई।
- उन्हें गुजरात का सूबेदार भी नियुक्त किया गया।

मुगल साम्राज्य: जहाँगीर (1605-1627)

- **जहाँगीर का जन्म नूरुद्दीन मोहम्मद सलीम के रूप में 31 अगस्त, 1569 को फतेहपुर सीकरी में** मुगल सम्राट अकबर और **उनकी राजपूत पत्नी मरियम-उज़-ज़मानी बेगम के** घर हुआ था ।
- मुगल सम्राट अकबर के सबसे बड़े जीवित पुत्र होने के नाते , उन्हें बचपन से ही उत्तराधिकार के लिए प्रशिक्षित किया गया था। उन्हें उनके पिता द्वारा उपलब्ध कराए गए सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित किया गया और उन्हें नागरिक और सैन्य प्रशासन में विशेषज्ञतापूर्ण प्रशिक्षण दिया गया। हालाँकि, **वे सत्ता के लिए अधीर हो गए और 1599 में जब अकबर दक्कन में व्यस्त थे** , विद्रोह कर दिया, लेकिन **बाद में उनके बीच सुलह हो गई और 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद, जहाँगीर गद्दी पर बैठा** ।
- अपनी सौतेली माताओं के सहयोग से, वह अकबर की मृत्यु के बाद सत्ता में आया। उसका **शासन 3 नवंबर 1605 को शुरू हुआ और 28 अक्टूबर 1627 को उसकी मृत्यु तक जारी रहा।**
- उनके सिंहासनारोहण को **उनके सबसे बड़े पुत्र राजकुमार खुसरो ने चुनौती दी** और सिख गुरु अर्जुन देव के आशीर्वाद से विद्रोह कर दिया। राजकुमार खुसरो पराजित हुए, बंदी बनाए गए और अंधे कर दिए गए, जबकि गुरु अर्जुन देव को फाँसी दे दी गई।
- उसे **अपने दूसरे बेटे खुर्रम के विद्रोह का भी सामना** करना पड़ा । लेकिन इसे भी सुलझा लिया गया। बाद में जहाँगीर की मृत्यु के बाद राजकुमार खुर्रम बादशाह बना और शाहजहाँ के नाम से जाना गया।
- **दो-अस्पा और सिह-अस्पा प्रणाली** जहाँगीर द्वारा शुरू की गई थी।
- **दो-अस्पा** : इस प्रणाली में मनसबदारों को अपने 'सवार' पद की तुलना में दोगुने घोड़े रखने पड़ते थे।
- **सिह-अस्पा** : इस प्रणाली में मनसबदारों को अपने 'सवार' पद की तुलना में घोड़ों की संख्या तीन गुनी रखनी पड़ती थी।
- **जहाँगीर विलियम हॉकिन्स** से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे अंग्रेज खान की उपाधि दे दी।
- चित्रकार **अबुल हसन को** जहाँगीर ने 'नादिर-उल-ज़माँ' की उपाधि दी थी।
- **उस्ताद मंसूर** जहाँगीर शासनकाल का एक और उत्कृष्ट चित्रकार था।
- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा **तुजुक-ए-जहाँगीरी** फ़ारसी भाषा में लिखी।
- अबुल फज़ल के हत्यारे राजा वीर सिंह बुंदेला को जहाँगीर ने पुरस्कृत किया था।
- **फ्रांसिस्को पेल्सेरी** वह विदेशी यात्री था जो जहांगीर के शासनकाल के दौरान भारत आया था और उसने अपने ग्रंथ '**द रेमोन्स्ट्रेंटी**' में मुगल साम्राज्य का अनूठा विवरण छोड़ा था।
- **एत्मादुल-दौला का मकबरा नूरजहाँ द्वारा बनवाया गया था** । यह स्मारक अमूल्य है क्योंकि यह भारत का पहला ऐसा मकबरा है जो पूरी तरह से संगमरमर से बना है।
- वर्ष 1594 में, जब वह अभी भी राजकुमार था, जहाँगीर ने एक सेना का नेतृत्व किया जिसने **बुंदेला के वीर सिंह देव को हराया और ओरछा शहर पर कब्ज़ा कर लिया** । उसने कूच बिहार, मेवाड़ और कश्मीर के किश्तवाड़ पर भी आधिपत्य प्राप्त कर लिया।

Shah Jahangir

प्रारंभिक चुनौतियाँ

- जहाँगीर के सिंहासनारूढ़ होने के पाँच महीने के भीतर ही उसके **पुत्र खुसरो ने मान सिंह के साथ मिलकर विद्रोह कर दिया।** राजकुमार **को पराजित कर कैद कर लिया गया और** उसके कई अनुयायियों को मौत के घाट उतार दिया गया।
- राजकुमार के विद्रोह का समर्थन करने वाले पाँचवें **सिख गुरु, अर्जुन देव पर** भारी जुर्माना लगाया गया। जब उन्होंने जुर्माना देने से इनकार कर दिया, तो उन्हें **गिरफ्तार कर लिया गया और बाद में यातनाएँ देकर मार डाला गया।**

विजय और अभियान

- जहाँगीर ने **अपने पिता की कई नीतियों को जारी रखा** । अकबर की तरह, **उसने भी मुग़ल शासन के अधीन क्षेत्रों का विस्तार करने के उद्देश्य से कई सैन्य अभियान चलाए** । उसने अपने पिता द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य को बड़ी कुशलता से संभाला।

- पूर्व में, **अफ़ग़ान सरदारों ने, उस क्षेत्र के हिंदू राजाओं के समर्थन से, उस्मान ख़ान के नेतृत्व में मुग़ल बादशाह के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।** 1608 में, जहाँगीर ने शेख सलीम चिश्ती के पोते **इस्लाम ख़ान को** अफ़ग़ानों के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व करने के लिए भेजा। इस्लाम ख़ान ने ढाका में अपना मुख्यालय स्थापित किया और सोनारगाँव पर कब्ज़ा करने की कोशिश की, जो मूसा ख़ान और उसके साथियों, जिन्हें बारह भुइयाँ कहा जाता था, के नियंत्रण में था। **तीन साल के कड़े संघर्ष के बाद, सोनारगाँव पर विजय प्राप्त कर ली गई। जल्द ही, उस्मान ख़ान भी पराजित हो गया, और अफ़ग़ान प्रतिरोध समाप्त हो गया।**
- **इसके बाद जहांगीर ने अपना ध्यान दक्कन की ओर** लगाया जहां **मलिक अंबर ने खुद को अहमदनगर का शासक घोषित कर दिया था और मुगलों के अधिकार को चुनौती देना शुरू कर दिया था**। अंबर एक एबिसिनियन सैन्य कमांडर था, जो अहमदनगर के मुर्तजा निजाम शाह द्वितीय के अधीन पेशवा के रूप में कार्यरत था और गुरिल्ला युद्ध में निपुण था जिसमें उसने स्थानीय मराठा योद्धाओं को भी अपने लाभ के लिए इस्तेमाल किया था। **जहांगीर ने 1616 में अब्दुर रहीम, खान-ए-खाना के नेतृत्व में एक अभियान भेजा,** जिसने अंबर को करारी हार दी। इसके अलावा, जहांगीर ने **राजकुमार खुर्रम** (बाद में शाहजहाँ) के नेतृत्व में एक बड़ी सेना भेजी, जिसने अंबर को मुगल सम्राट के अधीन होने के लिए मजबूर किया। लेकिन, यह शांति अल्पकालिक थी क्योंकि अंबर ने मुगलों के खिलाफ अपना प्रतिरोध फिर से शुरू कर दिया और उन्हें बीजापुर जैसे अन्य दक्कन राज्यों से मदद मिली। इस प्रकार, **1626 ई. में अम्बर की मृत्यु के बाद भी दक्कन मुगलों के लिए एक संकटग्रस्त स्थान बना रहा।**
- जहाँगीर की प्रमुख उपलब्धियों में से एक **मेवाड़ के साथ लंबे समय से चले आ रहे विवाद का निपटारा था।** 1597 ई. में राणा प्रताप के बाद उनके पुत्र अमर सिंह ने गद्दी संभाली, जो मुगलों का विरोध करने में अपने पिता के समान ही दृढ़ थे। अपने राज्याभिषेक के बाद, जहाँगीर ने राणा के विरुद्ध कई अभियान चलाए, लेकिन व्यर्थ। 1613 ई. में, वह स्वयं अभियान का निर्देशन करने अजमेर पहुँचा और राणा को संधि के लिए बाध्य करने में सफल रहा। अमर सिंह के पुत्र, राजकुमार कर्ण सिंह का जहाँगीर ने शालीनतापूर्वक स्वागत किया और उन्हें 5000 का मनसब प्रदान किया।
- जहाँगीर के सामने दूसरी **बड़ी चुनौती फारसियों से थी**। अकबर ने 1595 ई. में कंधार पर विजय प्राप्त की थी, लेकिन 1620 में फारस के सफ़वी शासक शाह अब्बास ने उस पर कब्ज़ा करने की कोशिश की। जहाँगीर ने कंधार किले की रक्षा के लिए राजकुमार खुर्रम को भेजने का फैसला किया, लेकिन उसने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया और विद्रोह का झंडा बुलंद कर दिया। खुर्रम को शक था कि यह नूरजहाँ की एक चाल थी कि वह उसे उत्तराधिकार की दौड़ से बाहर रखे और अपने दामाद शहरयार, जो जहाँगीर का छोटा बेटा भी था, के पक्ष में हो।
- **इस विवाद ने फारसियों को कंधार पर विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया, जो मुगल साम्राज्य के लिए एक गंभीर आघात था**, क्योंकि भारत और मध्य एशिया के बीच अधिकांश व्यापार इसी क्षेत्र से होकर गुजरता था। इसके अलावा, कंधार क्षेत्र से मध्य एशिया और पश्चिम एशिया के हमलों से साम्राज्य की रक्षा करना आसान था।

Nur Jahan

- मेहरुन्निसा या नूरजहाँ, अकबर के दरबार के एक कुलीन, **मिर्ज़ा ग़ियास बेग**, जिन्हें एत्मादुद्दौला के नाम से भी जाना जाता है, की पुत्री थीं। उनका **विवाह 1611 में जहाँगीर से हुआ** था और तब से ही, राजकीय मामलों और प्रशासन पर उनका गहरा प्रभाव रहा। **उनके भाई को खान-ए-सामान नियुक्त किया गया था,** जो उन कुलीनों के लिए आरक्षित पद था जिन पर सम्राट को पूरा भरोसा था।
- अपने पिता, भाई और शहजादे खुर्रम के साथ मिलकर, उसने एक **बंद समूह या जुंटा** बनाया जो प्रशासनिक मामलों में जहाँगीर के फैसलों में हेरफेर करता था। वह राजनीतिक रूप से भी महत्वाकांक्षी थी और इसी वजह से **शाहजहाँ ने अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर दिया**। 1627 में जहाँगीर की मृत्यु के बाद, उसने दरबारी जीवन से संन्यास ले लिया और 1645 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

धर्म

- जहाँगीर के शासनकाल के आरंभ में, रूढ़िवादी हलकों में यह अपेक्षा थी कि अकबर की सुलह-कुल और धार्मिक उदारता की नीति त्याग दी जाएगी और शरिया की सर्वोच्चता पुनः स्थापित हो जाएगी। हालाँकि, **जहाँगीर ने अकबर द्वारा स्थापित राज्य के उदार चरित्र को बनाए रखा।** उसने जजिया या तीर्थयात्रा कर को पुनर्जीवित करने का प्रयास नहीं किया

और हिंदू अभी भी उच्च पदों पर आसीन थे और उन्हें नए मंदिर बनाने की स्वतंत्रता प्राप्त थी। परिणामस्वरूप, उसके शासनकाल में मथुरा, गोकुल और वृंदावन में कई नए मंदिर बनाए गए। ईसाइयों को भी अपने लिए पूजा स्थल बनाने और बनाए रखने की अनुमति दी गई।

- **जहाँगीर ने अपने दरबार में दिवाली, होली, दशहरा, राखी, शिवरात्रि आदि जैसे विभिन्न हिंदू त्योहार मनाना जारी रखा।** जहाँगीर स्वयं भी इनमें भाग लेता था, और कई रईस भी।
- हालाँकि, एक कुख्यात अपवाद **सिख गुरु अर्जुन देव पर जहाँगीर द्वारा राजकुमार खुसरो के विद्रोह का समर्थन करने के आरोप में किया गया अत्याचार** था। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने नियमित रूप से अन्य धार्मिक समूहों पर अत्याचार किए। उनके कार्यों का प्रभाव केवल एक व्यक्ति या एक विशेष क्षेत्र पर पड़ा और कथित धार्मिक उत्पीड़न के प्रत्येक मामले के पीछे कोई न कोई गैर-धार्मिक उद्देश्य था। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि उन्होंने धार्मिक असहिष्णुता या उत्पीड़न की नीति अपनाई थी।

यूरोपीय लोगों के साथ संबंध

- जब जहाँगीर गद्दी पर बैठा, तब तक पुर्तगाली, डच और अंग्रेज व्यापारी भारत आ चुके थे। **शुरुआत में जहाँगीर पुर्तगाली व्यापारियों के प्रति उदार था और उन्हें व्यापारिक रियायतें देता था**। लेकिन जल्द ही जब उन्होंने समुद्री डकैती शुरू कर दी और मुगल जहाजों पर हमला करना शुरू कर दिया, तो वे उसके क्रोध का शिकार हो गए। जहाँगीर ने पुर्तगालियों को मुगलों के साथ किसी भी तरह का व्यापारिक संबंध रखने की अनुमति तब तक देने से इनकार कर दिया जब तक कि पुर्तगालियों ने संशोधन नहीं कर दिया।
- 1613 में सूरत के तट पर जब पुर्तगालियों ने एक मुगल जहाज़ को ज़ब्त कर लिया, तो उनके साथ उनकी झड़पें हुईं। **उन्होंने दमन पर कब्ज़ा करके और उनके चर्चों को ज़ब्त करके जवाबी कार्रवाई की** । पुर्तगालियों के ख़िलाफ़ फ़ायदा और समर्थन पाने के लिए उन्होंने अंग्रेज़ों को काफ़ी रियायतें दीं।
- जहाँगीर के शासनकाल के दौरान ही **दो अंग्रेज़, सर जॉन हॉकिन्स और थॉमस रो, इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम के राजदूत के रूप में भारत आए।** ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन 1600 ई. में ही हो चुका था। जॉन हॉकिन्स तीन साल (1608-1611) तक भारत में रहे, जबकि थॉमस रो 1615 ई. में भारत आए और ब्रिटिश व्यापारियों के लिए **व्यापारिक रियायतें** प्राप्त करने में सफल रहे । दोनों राजदूतों ने मुगल प्रशासन का विस्तृत विवरण छोड़ा है।

जहाँगीर के शासनकाल का मूल्यांकन

- जहाँगीर एक काफी सफल शासक और प्रशासक थे। **उन्होंने अकबर द्वारा स्थापित प्रशासनिक ढाँचे को सफलतापूर्वक बनाए रखा**। जहाँगीर परिस्थितियों को अच्छी तरह समझते थे। उनका **बाईस वर्षों** का शासनकाल अधिकांशतः सफल रहा। जहाँगीर अपनी प्रजा का कल्याण चाहते थे और इसके लिए प्रयासरत थे। उनके शासनकाल में किसानों की स्थिति अच्छी थी।
- जहाँगीर का एक सबसे बड़ा गुण **न्याय के प्रति उसका प्रेम था। वह आगरा के किले के बाहर** स्वर्णिम "न्याय की जंजीर" लगवाने के लिए सबसे प्रसिद्ध है । यह जंजीर कुछ घंटियों से जुड़ी हुई थी, जिसे खींचने पर घंटियाँ बजती थीं और सम्राट को बुलाया जाता था। यह नागरिकों और सम्राट के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करती थी, और यह घोषणा की जाती थी कि जो भी पीड़ित व्यक्ति घंटियाँ बजाएगा, उसे सम्राट से व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर दिया जाएगा।जहांगीर के शासन में कला, साहित्य और वास्तुकला का विकास हुआ और श्रीनगर में मुगल उद्यान उनकी कलात्मक रुचि का स्थायी प्रमाण बने हुए हैं।**कुछ यूरोपीय इतिहासकारों ने उसे एक कमज़ोर शासक बताया है।** लेकिन ऐसा सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि उसे महान मुग़ल सम्राट अकबर और उसके बेटे शाहजहाँ के वैभव के बीच रखा गया है।
- कहा जाता है कि वह शराब और अफीम का आदी था। उसने कई शादियाँ कीं और उसकी पसंदीदा पत्नियों में से एक नूरजहाँ थी, जिसके बारे में कहा जाता है कि उसने उसे राजनीति में प्रभावित किया था।उनका **निधन कश्मीर में हुआ** , जहां वे अपने स्वास्थ्य का उपचार कराने गए थे। उनकी आयु 58 वर्ष थी।उनके **बाद उनकी राजपूत पत्नी जगत गोसांई से उत्पन्न पुत्र खुर्रम ने गद्दी संभाली।**

Mughal Empire: Shah Jahan (1628-1658)

- जहाँगीर **की मृत्यु** के **बाद उत्तराधिकार के लिए एक संक्षिप्त संघर्ष हुआ** । 1628 में **, खुर्रम अपने सभी प्रतिद्वंद्वियों को हटाकर शाहजहाँ के रूप में सिंहासन पर बैठा** ।
- वह एक **योग्य सैन्य कमांडर साबित हुए,** हालांकि उन्हें उनकी स्थापत्य कला की उपलब्धियों के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है और उनके शासनकाल के दौरान मुगल वास्तुकला अपने चरम पर पहुंच गई थी।
- शाहजहाँ ने **कंधार** और अन्य पैतृक भूमि को पुनः प्राप्त करने के लिए उत्तर-पश्चिमी सीमांत क्षेत्र में एक लंबा अभियान चलाया। लेकिन कंधार पर नियंत्रण पाने में असफल रहा। शाहजहाँ के बल्ख अभियान का उद्देश्य **काबुल की सीमा से लगे बल्ख और बदख्शां में एक मित्रवत शासक स्थापित करना था।**
- उनकी **दक्कन नीति ज़्यादा सफल रही** । उन्होंने अहमदनगर की सेनाओं को हराकर उसे अपने अधीन कर लिया। बीजापुर और गोलकुंडा दोनों ने बादशाह के साथ संधि कर ली। शाहजहाँ ने शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले को हराया।
- 1631 में शाहजहाँ की पत्नी मुमताज महल का बुरहानपुर में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल (एक प्रकार का मस्जिद) का निर्माण शुरू करवाया।
- वह फ्रांस के **लुई XIV के समकालीन थे।**
- उनके शासनकाल में राजा के लिए प्रसिद्ध **मयूर सिंहासन बनाया गया था।**
- **बर्नियर** (फ्रांसीसी चिकित्सक और यात्री), **टैवर्नियर** (फ्रांसीसी रत्न व्यापारी और यात्री), **मण्डेलस्लो** (जर्मन साहसी और यात्री), **पीटर मुंडी** (अंग्रेजी व्यापारी) और **मनुक्कि** (इतालवी लेखक और यात्री) जैसे यूरोपीय लोगों ने **शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया** और भारत के विस्तृत विवरण छोड़ गए।
- आसफ खान की बेटी अर्जुमंद बानो बेगम का विवाह राजकुमार खुर्रम से हुआ था और बाद में उन्हें मुमताज महल के नाम से जाना गया।
- शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में निर्मित इमारतों की एक विशाल विरासत छोड़ी। शाहजहाँ द्वारा निर्मित इमारतों में **दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, शीश महल, मोती मस्जिद, खास महल, मुसम्मन बुर्ज, नगीना मस्जिद, जामा मस्जिद, ताजमहल और लाल किला शामिल हैं।**
- उपनिषदों का फारसी भाषा में अनुवाद शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान उसके पुत्र **दारा शिकोह द्वारा सिर्र-ए-अकबर के रूप में किया गया था** ।
- **Majma-ul-Bahrain** is original creation of Dara Shikoh. Shah Jahan gave him the title of '**Shah Buland Iqbal'.**
- **शाहजहाँ ने 1648 में राजधानी आगरा से दिल्ली स्थानांतरित कर दी।**
- शाहजहाँ ने बलबन द्वारा शुरू की गई **फारसी दरबारी प्रथा सिजदा को समाप्त कर दिया ।**
- शाहजहाँ के काल में कुँधर का नुकसान सामरिक दृष्टि से मुगल साम्राज्य के लिए एक बड़ा झटका था।
- **कलीम शाहजहाँ के शासनकाल का 'कवि' था।**

Shah Jahan

विजय

- **शाहजहाँ एक महान सेनापति थे,** और जहाँगीर ने स्वयं विद्रोहों को नियंत्रित करने के लिए उन पर भरोसा किया था। 1628 ई. में, बुंदेलखंड के एक बुंदेला सरदार **जुझार सिंह ने** विद्रोह का झंडा बुलंद किया, लेकिन पराजित होकर बाद में मारे गए। अगला विद्रोही दक्कन का सूबेदार **खान-ए-जहाँ लोदी था,** जिसने अहमदनगर के शासक के साथ मिलकर विद्रोह किया था। वह भी पराजित होकर मारा गया।
- तीन **दक्कन राज्य - अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा** - मुगल साम्राज्य के लिए लगातार मुश्किलें खड़ी कर रहे थे। शाहजहाँ को पूरा यकीन था कि जब तक अहमदनगर एक स्वतंत्र राज्य बना रहेगा, दक्कन में मुगलों के लिए शांति संभव नहीं है। **1629 ई. में, उसने अहमदनगर के विरुद्ध एक विशाल सेना तैनात की और स्वयं सेनाओं का समन्वय करने के लिए दक्कन की ओर कूच किया।** बीजापुर के शासक आदिल शाह और शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले को इस अभियान में शाहजहाँ का साथ देने के लिए कहा गया। अहमदनगर का एक बड़ा हिस्सा मुगलों ने अपने अधीन कर लिया और विजय के बाद, एक कठपुतली शासक को अहमदनगर की गद्दी सौंप दी गई।
- युद्ध के बाद, महाबत खान को दक्कन का वायसराय बनाया गया। 1633 में, आदिल शाह ने दौलताबाद किले पर कब्ज़ा करने के लिए एक विशाल सेना भेजी। महाबत खान को बीजापुर और अहमदनगर की संयुक्त सेनाओं का सामना करना

पड़ा, जिसमें शाहजी भी शामिल थे, जो बीजापुर भाग गए थे। हालाँकि, **मुग़ल सेना एक बार फिर प्रबल साबित हुई और निज़ाम शाह को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ा** । उन्हें ग्वालियर किले में भेज दिया गया, इस प्रकार **निज़ाम शाही वंश का अंत हो गया** ।

- इसके बाद भी, शाहजी और आदिल शाह ने मुगलों के विरुद्ध अपने अभियान जारी रखे। शाहजहाँ को एहसास हुआ कि मुख्य समस्या बीजापुर का रवैया था। **उसने बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए एक विशाल सेना भेजी और आदिल शाह को एक संधि करने के लिए मजबूर किया** जिसके अनुसार बीजापुर ने मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया और बीस लाख रुपये का हर्जाना दिया।
- **शाहजहाँ ने गोलकुंडा पर एक संधि भी थोपी** जिसके अनुसार कुतुब शाही शासक ने मुगल सम्राट के प्रति अपनी वफ़ादारी की शपथ ली और खुतबे में शाहजहाँ का नाम शामिल करने पर सहमति जताई। 1636 में हस्ताक्षरित ये संधियाँ वास्तव में एक राजनेता जैसी थीं और इसके बाद, मुगल आधिपत्य पूरे देश में मान्यता प्राप्त हो गया।

धार्मिक नीति

- शाहजहाँ स्वयं एक **कट्टर सुन्नी मुसलमान** था , जो नियमित रूप से नमाज़ पढ़ता था और रमज़ान के रोज़े रखता था। अपने शासनकाल के शुरुआती वर्षों में, उसने रूढ़िवादिता का भी प्रदर्शन किया।
- **उन्होंने हिंदुओं द्वारा मुस्लिम गुलाम रखने की प्रथा को बंद कर दिया, हिंदुओं पर तीर्थयात्रा कर लगाया, हालांकि उन्होंने इसे शीघ्र ही हटा दिया, और दरबार में हिंदू त्योहारों के उत्सव को बंद कर दिया** ।
- 1633 ई. में, उसने आदेश दिया कि जहाँगीर के समय में जिस मंदिर की नींव रखी गई थी, लेकिन वह पूरा नहीं हुआ था, उसे पूरा नहीं होने दिया जाएगा। तदनुसार, **बनारस में शुरू किए गए 76 मंदिरों को नष्ट कर दिया गया** । **युद्धों के दौरान मंदिरों और गिरजाघरों को भी नष्ट कर दिया गया** । शाहजहाँ ने **अपने पूरे शासनकाल में इस्लाम धर्म अपनाने को प्रोत्साहित किया** । उसके शासनकाल में युद्धबंदियों **को इस्लाम धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया गया** , और इस्लाम स्वीकार करने वाले अपराधियों को स्वतंत्र छोड़ दिया गया। **हिंदुओं को मुसलमानों से विवाह करने से पहले** इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाता था और जो लोग पवित्र कुरान या पैगंबर मुहम्मद का अपमान करते थे, उन्हें मौत की सजा दी जाती थी।
- हालाँकि, शाहजहाँ का इस्लाम के प्रति उत्साह धीरे-धीरे कम होता गया और उसके शासनकाल के अंतिम काल में उसके नियमों का पालन नहीं किया गया। ऐसा संभवतः उसके प्रिय पुत्र **दारा शिकोह और उसकी पुत्री जहाँआरा** के उदार विचारों के प्रभाव के कारण हुआ था । हिंदू सरदारों की वफ़ादारी प्राप्त करने की आवश्यकता भी एक अन्य कारण रही होगी।
- अपने शासनकाल के अंतिम काल में, शाहजहाँ ने झरोखा-दर्शन जैसी हिंदू प्रथाओं को जारी रखा और अन्य धर्मों के लोगों पर अतिरिक्त करों का बोझ नहीं डाला। इस दौरान हिंदू मंदिरों के विध्वंस पर भी रोक लगा दी गई। शाहजहाँ ने हिंदू विद्वानों के प्रति भी आदर प्रदर्शित किया। कविंद्र सरस्वती, सुंदर दास और चिंतामणि को उसके दरबार में संरक्षण प्राप्त था। राजकुमार दारा शिकोह के संरक्षण में कुछ संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी में अनुवाद किया गया। हिंदुओं को योग्यता के आधार पर राजकीय सेवाएँ प्रदान की गईं। राजा जसवंत सिंह और राय सिंह को उसने अच्छे पुरस्कार दिए। सभी धर्मों के संगीतकारों, नर्तकों और चित्रकारों को उसके दरबार में संरक्षण प्राप्त था।
- **इस प्रकार, अपने शासनकाल के अंतिम काल में, शाहजहाँ ने अन्य धर्मों के लोगों पर अत्याचार नहीं किया** और अपने शासनकाल के प्रारंभिक काल में जो भी कट्टरता प्रदर्शित की थी, उसे बाद के काल में त्याग दिया। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, उसके शासनकाल को धार्मिक असहिष्णुता का काल नहीं माना जा सकता, हालाँकि यह स्पष्ट है कि उसकी नीतियाँ उसके पिता और दादा की नीति की तुलना में कुछ हद तक पूर्वाग्रही थीं।

यूरोपीय व्यापारियों के साथ संबंध

- **अकबर के शासनकाल में पुर्तगालियों को बंगाल के हुगली में एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति दी गई थी।** शाही आदेशों की अवहेलना करते हुए, **पुर्तगालियों ने 1641 ई. में इस क्षेत्र की किलेबंदी शुरू कर दी।** उन्होंने न केवल भारतीय व्यापारियों से भारी कर वसूला, बल्कि दास व्यापार की क्रूर प्रथा भी शुरू कर दी। **भारतीयों के ईसाई धर्म में धर्मांतरण ने इस आक्रोश को और बढ़ा दिया।**

- **इन सबके चलते शाहजहाँ ने पुर्तगालियों पर हमला कर दिया और हुगली उनसे छीन लिया गया**। 1602 में स्थापित डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूरत, अहमदाबाद, कोचीन, पटना और आगरा में अपने व्यापारिक केंद्र खोले थे। अंग्रेजों ने भी फोर्ट सेंट जॉर्ज में अपना व्यापारिक केंद्र बनाया था और शाहजहाँ के शासनकाल में उन्हें हुगली में व्यापार करने की अनुमति भी दी गई थी।

उत्तराधिकार का युद्ध

- **शाहजहाँ के चार बेटे थे- दारा, शुजा, औरंगज़ेब और मुराद**। वह अपनी मृत्यु के बाद अपने सबसे बड़े बेटे दारा को सम्राट बनाना **चाहता था ।**
- 1657 ई. में जब शाहजहाँ बीमार पड़े, तो उनके पुत्रों में गद्दी के लिए भीषण संघर्ष छिड़ गया। **शुजा, जो बंगाल में था**, ने स्वयं को राजा घोषित किया और आगरा की ओर कूच कर दिया। हालाँकि, **दारा के पुत्र सुलेमान ने राजा जयसिंह के साथ मिलकर** फरवरी 1658 में बनारस के पास शुजा को पराजित कर दिया।
- **औरंगज़ेब न केवल एक कुशल सेनापति था, बल्कि एक चतुर कूटनीतिज्ञ भी था**। उसने महसूस किया कि दारा को हराना आसान नहीं होगा। इसलिए **उसने गुजरात में मौजूद मुराद को अपने साथ मिला लिया और उसे साम्राज्य में हिस्सा देने का वादा किया**। संयुक्त सेना ने आगरा की ओर कूच किया और धर्मत के युद्ध (अप्रैल, 1658) **में मारवाड़ के राजा जसवंत सिंह की विशाल सेना को पराजित किया।**
- **सामूगढ़ के निर्णायक युद्ध (मई, 1658) में, औरंगज़ेब एक श्रेष्ठ सेनापति सिद्ध हुआ**। दारा की सेनाएँ पराजित हुईं और औरंगज़ेब ने शाहजहाँ को लगभग बंदी बना लिया। **औरंगज़ेब ने विश्वासघात करके मुराद को बंदी बनाकर ग्वालियर की जेल में भेज दिया**। शाहजहाँ आठ साल और अपने किले में कैद रहा। दारा और मुराद को फाँसी दे दी गई, जबकि शुजा की कुछ साल बाद हत्या कर दी गई।

शाहजहाँ के शासनकाल का मूल्यांकन

- इस काल में मुग़ल **साम्राज्य अपने वैभव के चरम पर था । इसे अक्सर स्वर्ण युग या वैभव का युग** कहा जाता है। पूरे साम्राज्य में शांति और समृद्धि थी। शासकों ने **कला और स्थापत्य कला के प्रचार-प्रसार** में अपना सर्वस्व लगा दिया और दरबार की भव्यता ने यूरोपीय लोगों को चकित कर दिया। विदेशी व्यापार में वृद्धि के परिणामस्वरूप राज्य की आय में वृद्धि हुई।
- हालाँकि, दरबार की चमक-दमक और स्पष्ट शांति के पीछे, **साम्राज्य के दिवालियापन और कमज़ोरी के संकेत थे**। ऐसा इसलिए था क्योंकि उत्तर-पश्चिम और दक्कन में मकबरों, महलों, मस्जिदों के निर्माण और असफल सैन्य अभियानों पर भारी धनराशि खर्च की गई थी।

ताजमहल

मुगल साम्राज्य: औरंगजेब (1658-1707)

- औरंगजेब **1658 ई. में सिंहासन पर बैठा** और उसने **आलमगीर की उपाधि धारण की, जिसका अर्थ है "विश्व विजेता"**।
- **उसने 50 वर्षों की** उल्लेखनीय लंबी अवधि तक शासन किया। 1658 ई. से 1681 ई. तक, वह उत्तर में रहा, लेकिन इसके बाद राजनीतिक परिदृश्य उत्तर से दक्कन की ओर स्थानांतरित हो गया। वह एक महान सेनापति था और **बीजापुर और गोलकुंडा के राज्यों को कुचलने में सक्षम था, लेकिन मराठों के साथ उसका संघर्ष अनिर्णायक रहा।** अपने शासनकाल के अंतिम पच्चीस वर्ष, जो औरंगज़ेब ने दक्कन में बिताए, साम्राज्य के लिए विनाशकारी थे क्योंकि दिवालियापन और कुप्रशासन ने इसे टूटने के कगार पर ला दिया था।
- विद्रोही पुत्र **मुहम्मद अकबर ने 1681 में अपने पिता औरंगजेब के खिलाफ विद्रोह कर दिया, जिससे राजपूतों के खिलाफ औरंगजेब की स्थिति कमजोर हो गई।**
- औरंगजेब की मुगल सेना में सबसे अधिक संख्या में हिंदू सेनापति थे।
- **औरंगज़ेब ने 'बीबी का मकबरा'** बनवाया , जो जटिल डिज़ाइन, नक्काशीदार आकृतियाँ, भव्य संरचनाओं और सुंदर मुगल शैली के बगीचे वाला एक अद्भुत वास्तुशिल्प है। इसे **रबिया-उद-दुरानी या दूसरा ताजमहल भी कहा जाता है।**
- दिल्ली के लाल किले के अंदर **मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।**
- मनसबदारी प्रणाली मुख्य रूप से स्वच्छ प्रशासन के लिए शुरू की गई थी।
- 1605 में पुर्तगालियों ने भारत में तंबाकू का प्रवेश कराया। मुगल बादशाह जहांगीर ने तंबाकू के हानिकारक प्रभावों को देखते हुए **1617 ई. में इस पर प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया।**

उत्तरी चरण (1658-81 ई.)

- औरंगज़ेब के शासनकाल में मुग़ल साम्राज्य का विस्तार जारी रहा। उसके शासनकाल में ही पूर्वी भारत पर ज़ोरदार विजय प्राप्त की गई।
- **बंगाल के गवर्नर मीर जुमला ने उत्तर पूर्व के अहोमों के आक्रमण को रोकने के लिए एक विशाल सेना के साथ प्रस्थान किया**। उसने **कूचबिहार और असम पर कब्ज़ा कर लिया, लेकिन इलाक़ा इतना कठिन था कि उस पर कब्ज़ा करना मुश्किल था और जल्द ही मुग़लों का कब्ज़ा खत्म हो गया** ।
- इसके बाद, औरंगज़ेब ने **शाइस्ता ख़ाँ को आक्रमण का नेतृत्व करने के लिए गवर्नर** नियुक्त किया । उसने चटगाँव पर कब्ज़ा कर लिया और अराकानी नौसेना को भी पराजित किया।

लोकप्रिय विद्रोह

- पहले चरण में **औरंगज़ेब को स्थानीय स्वतंत्रता के लिए विद्रोहों का सामना करना पड़ा।** इनमें **जाटों, सतनामियों, सिखों और बुंदेलों के विद्रोह** प्रमुख थे ।

जाटों

- दिल्ली और मथुरा के जाटों **ने सबसे पहले विद्रोह किया।** जाट विद्रोहियों की पृष्ठभूमि किसान-कृषि प्रधान थी और उन्होंने इस क्षेत्र के दुर्गम भूभाग का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल किया।
- **1669 ई. में, उन्होंने स्थानीय ज़मींदार गोकुला के नेतृत्व** में विद्रोह का झंडा बुलंद किया। हालाँकि, **औरंगज़ेब द्वारा स्वयं उन पर चढ़ाई करने के कारण वे** पराजित हो गए। लेकिन जाटों ने अपना प्रतिरोध जारी रखा और 1685 में राजाराम के नेतृत्व में दूसरा विद्रोह हुआ। इस बार जाट ज़्यादा संगठित थे और उन्होंने विद्रोह को कुचलने के लिए औरंगज़ेब द्वारा नियुक्त **कछवाह शासक राजा बिशन सिंह** को कड़ी टक्कर दी ।
- हालाँकि, विद्रोह 1691 में समाप्त हो गया और राजाराम और उनके उत्तराधिकारी चारुमान को आत्मसमर्पण करना पड़ा। बाद में, **अठारहवीं शताब्दी में, मुगलों की कमज़ोर होती सत्ता का फ़ायदा उठाते हुए, चारुमान के नेतृत्व में जाटों ने** अपनी एक स्वतंत्र रियासत स्थापित कर ली।

Satnamis

- सतनामी **एक शांतिप्रिय धार्मिक संप्रदाय था** , जिसमें ज़्यादातर किसान, कारीगर और निम्न जाति के लोग शामिल थे। वे हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जाति और पद का भेद नहीं मानते थे।
- यह **विद्रोह 1672 ई. में एक स्थानीय अधिकारी के साथ उनके संघर्ष के कारण शुरू हुआ और जल्द ही व्यापक हो गया** । हालाँकि, सतनामियों की हार हुई क्योंकि औरंगज़ेब ने विद्रोह को कुचलने के लिए मथुरा के पास नारनौल तक स्वयं मार्च किया।

बंडल एक्सल

- बुंदेलखंड के **एक राजपूत वंश बुंदेलों ने** औरंगजेब **की धार्मिक नीतियों के खिलाफ विद्रोह** कर दिया , जिसे हिंदू प्रजा के प्रति भेदभावपूर्ण माना जाता था।
- हालाँकि, मुगल सेना ने विद्रोह को सफलतापूर्वक दबा दिया।

सिखों

- गुरु नानक द्वारा नए धार्मिक पंथ की स्थापना के समय सिख समुदाय अस्तित्व में आया। **इससे पहले, सिखों और मुगलों के बीच संबंध सौहार्दपूर्ण थे** क्योंकि चौथे गुरु, रामदास, अकबर द्वारा पूज्य थे और उन्हें अमृतसर में भूमि अनुदान के रूप में प्रदान की गई थी। हालाँकि, जब पाँचवें गुरु, अर्जुन देव को राजकुमार खुसरो के विद्रोह का समर्थन करने के कारण जहाँगीर द्वारा फाँसी दे दी गई , **तो संबंध तनावपूर्ण हो गए।**
- औरंगज़ेब के साथ सिखों का संघर्ष **तब सामने आया जब 1675 में, गुरु तेग बहादुर को पंजाब प्रांत में अशांति फैलाने** और कश्मीर में मुगलों द्वारा धार्मिक उत्पीड़न का विरोध करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया। **गुरु को दिल्ली लाया गया और फाँसी दे दी गई** । उनकी शहादत ने सिखों को उनकी मृत्यु का बदला लेने के लिए उकसाया। सिख आंदोलन धीरे-धीरे एक **सैन्य भाईचारे में बदल गया, जिसमें एक प्रमुख भूमिका दसवें गुरु, गोविंद सिंह** ने निभाई , जिन्होंने **सिखों को खालसा में संगठित किया और पंजाब की तलहटी में आनंदपुर में अपना मुख्यालय स्थापित किया** । इसके बाद हुए संघर्ष में, पहाड़ी राजाओं ने, जो पहले की झड़पों में गुरु से पराजित हुए थे, मुगलों का समर्थन किया।
- हालाँकि वज़ीर ख़ान के नेतृत्व में मुग़ल खालसा सेना पर विजय पाने में सफल रहे और गुरु जी को पीछे हटने पर मजबूर होना पड़ा, लेकिन इस विजय ने सिखों को अपनी सैन्य शक्ति साबित करने का मौका दिया। औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद, उन्होंने पंजाब में अपना एक अलग राज्य स्थापित किया।

औरंगजेब के शासनकाल के दौरान विद्रोह

विद्रोह	नेताओं	कारण
जाट	Gokula, Rajaram, Churamani	कृषि नीति
इसके लिए लड़ो	Champat Rai, Chhatrasal	राजनीतिक और धार्मिक
Satnami	सतनामी संप्रदाय के अनुयायी	धार्मिक दमन

विद्रोह	नेताओं	कारण
सिख	गुरु तेग बहादुर, गुरु गोबिंद सिंह	धार्मिक
राजपूत (मारवाड़)	दुर्गादास (अजीत सिंह के सेनापति)	मारवाड़ के सिंहासन का उत्तराधिकार
Bijapur	सिकंदर आदिल शाह	संधि का उल्लंघन
गोलकुंडा	अबुत हसन कुतुब शाह	मराठाओं के प्रति मददगार रवैया
मराठा	Sambhaji, Rajaram, Tarabai	मराठा राष्ट्रवाद की बढ़ती आकांक्षाएँ

राजपूत नीति

- **औरंगज़ेब राजपूतों के साथ गठबंधन के महत्व को समझने में विफल रहा** , जिसने अकबर के समय से ही मुग़ल साम्राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। **अंबर के राजा जय सिंह और मारवाड़ के राजा जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद, औरंगज़ेब के राजपूतों के साथ संबंध बिगड़ने लगे।**
- जब 1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु हुई, तो उनके उत्तराधिकारी के रूप में उनका कोई जीवित पुत्र नहीं बचा था। हालाँकि, उनकी मृत्यु के बाद, जसवंत सिंह की रानी से अजीत सिंह का जन्म हुआ और राठौड़ सरदारों ने उन्हें गद्दी का असली उत्तराधिकारी माना। ऐसी परिस्थितियों में, औरंगज़ेब ने मारवाड़ की राजधानी जोधपुर की गद्दी जसवंत सिंह के बड़े भाई के पोते इंदर सिंह को देने का फैसला किया। एक समझौते के रूप में, औरंगज़ेब ने अजीत सिंह को मारवाड़ में दो परगने की जागीर दे दी। **राठौड़ सरदारों ने इस समझौते को अस्वीकार कर दिया क्योंकि इससे मारवाड़ का विभाजन हो सकता था।**
- **इससे औरंगज़ेब क्रोधित हो गया** और उसने शिशु राजकुमार अजीत सिंह को बंदी बनाने का आदेश दिया। दुर्गादास के नेतृत्व में राठौड़ सरदारों ने अजीत सिंह को छुड़ाया और उन्हें अपना शासक घोषित किया। अजीत सिंह के दावे का मेवाड़ के राणा राज सिंह ने भी समर्थन किया। इस प्रकार, **औरंगज़ेब ने मेवाड़ पर आक्रमण कर दिया और राणा को पहाड़ियों की ओर भागने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ से उन्होंने मुगलों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध जारी रखा** । यह संघर्ष लंबा चला और मुगल साम्राज्य के संसाधन क्षीण हो गए।
- राज सिंह के उत्तराधिकारी राणा जगत सिंह के साथ समझौता हुआ, लेकिन उन्हें अपने कुछ परगने छोड़ने पड़े। इसी प्रकार, अजीत सिंह को मारवाड़ का शासक मान लिया गया, लेकिन मुगलों ने जोधपुर पर अपनी पकड़ ढीली करने से इनकार कर दिया। इस प्रकार, 1707 में औरंगज़ेब की मृत्यु तक दोनों पक्षों के बीच शत्रुता बनी रही।

दक्कन चरण (1681- 1707 ई.)

- **विंध्य के पार विजय प्राप्त करने वाले मुगल सम्राटों में अकबर पहला था** । उसने खानदेश और बरार पर विजय प्राप्त की और अहमदनगर को पराजित किया। उसके बाद, **जहाँगीर ने भी अहमदनगर के मलिक अंबर के विरुद्ध युद्ध किया और उसे 1616 ई** . में आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया। हालाँकि, वह इन अभियानों से अधिक राजनीतिक या क्षेत्रीय लाभ हासिल नहीं कर सका क्योंकि अंबर ने अपना प्रतिरोध जारी रखा। **शाहजहाँ के अधीन, अहमदनगर के निज़ाम शाह को दक्कन के मुगल वायसराय, महाबत खान ने पराजित किया** और 1633 में ग्वालियर जेल भेज दिया गया। **शाहजहाँ ने 1636 में बीजापुर और गोलकुंडा को मुगल आधिपत्य स्वीकार करते हुए एक संधि करने के लिए भी मजबूर किया।** औरंगजेब से पहले के तीनों मुगल सम्राटों में से कोई भी **दक्कन के क्षेत्रों को हड़पना** नहीं चाहता था , क्योंकि उन्हें लगता था कि उन पर प्रशासन करना व्यवहार्य नहीं होगा। 1658 में औरंगजेब के गद्दी संभालने के साथ ही यह धारणा बदल गई।
- शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान औरंगज़ेब पहले से ही दक्कन का वायसराय था। **वह एक आक्रामक दक्कन नीति का पालन करना चाहता था, लेकिन अपने शासनकाल के पहले भाग में ऐसा नहीं कर सका क्योंकि वह उत्तर में विद्रोहों और राजपूतों के साथ समस्याओं से व्यस्त था।** इसलिए, शुरू में दक्कन के मामलों की देखभाल की ज़िम्मेदारी राजा जय

सिंह को सौंपी गई, जिन्होंने 1665 ई. में बीजापुर पर आक्रमण किया, लेकिन आदिल शाह द्वितीय की अधीनता प्राप्त करने में असफल रहे। हालाँकि, **आदिल शाह द्वितीय की मृत्यु के तुरंत बाद,** बीजापुर राज्य राजनीतिक उथल-पुथल में चला गया क्योंकि कुलीनों के बीच आपसी कलह थी। इसका फायदा उठाकर, **मुगल सेनापति दिलेर खान ने 1679 ई. में बीजापुर पर आक्रमण किया, लेकिन फिर भी व्यर्थ।**

- **मुगलों की असफलता का मुख्य कारण शिवाजी के अधीन बीजापुर, गोलकुंडा और मराठों का त्रिपक्षीय गठबंधन था।** तीनों सेनाएँ मुगल आक्रमण के विरुद्ध एकजुट रहीं, हालाँकि उनके भीतर संघर्ष थे। इस प्रकार, **मुगलों को तब तक कोई सफलता नहीं मिली जब तक कि 1681 ई. में औरंगजेब स्वयं दक्कन नहीं पहुँच गया।** मराठों के विस्तार को रोकने के लिए, औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया, जिसमें गोलकुंडा और मराठों ने मदद की।
- हालाँकि, दक्कन राज्यों की संयुक्त सेना भी स्वयं सम्राट की कमान वाली मुग़ल सेना की पूरी ताकत का सामना नहीं कर सकी। **1686 ई. में बीजापुर के पतन में अठारह महीने लग गए** । सिकंदर आदिल शाह को पेंशन दी गई और **बीजापुर को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया गया** ।
- बीजापुर के पतन के बाद, **गोलकुंडा के विरुद्ध अभियान अपरिहार्य हो गया था** । उस समय गोलकुंडा पर अबुल हसन कुतुब शाह का शासन था। **औरंगज़ेब ने 1687 ई. में गोलकुंडा किले की घेराबंदी करके उस पर कब्ज़ा कर लिया।** सुल्तान अबुल हसन को दौलताबाद किले में कैद कर दिया गया और उसे आजीवन पेंशन दी गई। इस प्रकार गोलकुंडा मुगल साम्राज्य में शामिल हो गया।
- बीजापुर और गोलकुंडा की विजयों ने औरंगज़ेब की दक्कन विजय को पूरा नहीं किया। **मराठों की नई उभरती शक्ति ने मुग़ल संप्रभुता के लिए एक कठिन चुनौती पेश की** । उत्तर में विद्रोह के साथ औरंगज़ेब की व्यस्तता का लाभ उठाते हुए, **शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया था।**
- औरंगज़ेब शिवाजी के बढ़ते प्रभाव से चिंतित था, इसलिए उसने शाइस्ता ख़ाँ को उसका दमन करने के लिए नियुक्त किया। 1663 ई. में जब शिवाजी ने उस पर अचानक हमला किया, तब शाइस्ता ख़ाँ पूना में डेरा डाले हुए था। वह बाल-बाल बचा, जबकि उसकी सेना पराजित हो गई। औरंगज़ेब ने उसे वापस बुला लिया और मराठों से निपटने के लिए राजा जय सिंह को नियुक्त किया।
- **जयसिंह ने शिवाजी को पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया जिसके तहत उन्होंने अपने तीन-चौथाई क्षेत्र और किले समर्पित कर दिए और सम्राट को व्यक्तिगत श्रद्धांजलि देने का भी वादा किया** । शिवाजी 1666 ई. में आगरा आए जहाँ उन्हें लगभग कैद कर लिया गया था। हालाँकि, वे **आगरा से भागने में** सफल रहे और मुगलों के खिलाफ अपनी लड़ाई फिर से शुरू कर दी। 1674 ई. में, उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। शिवाजी की मृत्यु 1680 में हुई, लेकिन अपनी मृत्यु से पहले, वे दक्षिण में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल रहे थे। उनके बाद उनके पुत्र **संभाजी ने गद्दी संभाली।**
- **संभाजी ने विद्रोही राजकुमार अकबर को शरण देकर औरंगज़ेब को चुनौती दी थी** । हालाँकि, मुगलों के विरुद्ध अपने प्रयासों को केंद्रित करने के बजाय, **संभाजी ने अपने संसाधनों को तटवर्ती सिदियों और पुर्तगालियों के साथ निरर्थक युद्धों में बर्बाद कर दिया** । उन्होंने औरंगज़ेब के विरुद्ध अभियान में राजकुमार अकबर की सक्रिय सहायता भी नहीं की। इस निष्क्रिय रवैये के कारण **मुगलों ने मराठों पर आक्रमण किया जिसमें संभाजी को पकड़कर मार डाला गया** । इस विजय के साथ, संपूर्ण महाराष्ट्र मुगल साम्राज्य के अधीन आ गया।
- इस प्रकार, 1689 तक, ऐसा लग रहा था कि औरंगज़ेब का मुग़ल साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया है, लेकिन वास्तव में, यह मुग़ल साम्राज्य के पतन की शुरुआत थी। मराठों को शिवाजी के छोटे पुत्र राजाराम के रूप में एक नया नेता मिला और उन्होंने मुगलों द्वारा अपना अधिकार बढ़ाने के सभी प्रयासों को विफल कर दिया। राजाराम की मृत्यु के बाद, उनकी वीर रानी ताराबाई ने असाधारण वीरता के साथ मुग़लों के साथ युद्ध जारी रखा और औरंगज़ेब को अहमदनगर भागने पर मजबूर कर दिया, जहाँ 1707 ई. में उन्होंने अंतिम सांस ली।
- **औरंगज़ेब की दक्कन नीति एक बुरी तरह विफल रही** । वास्तव में, **दक्कन राज्यों का विनाश औरंगज़ेब की एक राजनीतिक भूल थी।** मुगलों और मराठों के बीच की दीवार हट गई और उसके बाद से उनके बीच सीधा टकराव शुरू हो

गया। इसके अलावा, उसके दक्कन अभियानों ने मुगल खजाने को खाली कर दिया। अंततः, इसने मुगल साम्राज्य के विघटन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रशासन

- **औरंगज़ेब के अधीन प्रशासन अत्यधिक केंद्रीकृत था**। वह प्रशासन के सूक्ष्मतम विवरणों पर ध्यान देता था। वह अपने पास आने वाली याचिकाओं को पढ़ता था और या तो स्वयं आदेश लिखता था या उन्हें लिखवाता था। **उसके सभी अधिकारी और प्रशासनिक मंत्री उसके कठोर नियंत्रण में रहते थे**। मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब के मंत्री केवल क्लर्क बनकर रह गए थे क्योंकि सभी महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं बादशाह द्वारा लिए जाते थे। इसके परिणामस्वरूप **प्रशासनिक पतन और लाचारी का दौर** आया । इस प्रकार, यद्यपि प्रशासन का ढाँचा उसके पूर्ववर्तियों के अधीन जैसा ही रहा, फिर भी कार्यान्वयन के तरीके और भावना में व्यापक परिवर्तन आया।
- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के समय **मुगल साम्राज्य में इक्कीस प्रांत शामिल थे, जिनमें से चौदह उत्तरी भारत में स्थित थे** ; **एक अफगानिस्तान में था** , और **शेष छह दक्कन में थे** ।
- अकबर के समय की तरह, प्रत्येक प्रांत में शासन में सहायता के लिए एक राज्यपाल, एक दीवान और अन्य अधिकारी होते थे। उनके शासनकाल के दौरान, उत्तरी भारत से उनकी पच्चीस वर्षों से अधिक की अनुपस्थिति और **दक्कन में लगातार युद्धों के कारण प्रांतीय प्रशासन में भारी गिरावट आई।**
- **कई प्रांतों में स्थानीय सरदारों और जमींदारों द्वारा कानून और व्यवस्था की उपेक्षा की गई, जो** सम्राट के कभी न समाप्त होने वाले युद्धों के प्रति जुनून और **धार्मिक असहिष्णुता की उसकी अविवेकपूर्ण नीति** के कारण केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने का स्वाभाविक परिणाम था .
- भू-राजस्व के अलावा, सरकारी आय के अन्य महत्वपूर्ण स्रोत **ज़कात (मुसलमानों से प्राप्त), जजिया (हिंदुओं से प्राप्त कर), नमक कर, सीमा शुल्क, टकसाल और युद्ध से प्राप्त लूट** थे । अकबर द्वारा स्थापित राजस्व के आकलन और संग्रह की पद्धति को **राजस्व कृषि प्रणाली** द्वारा प्रतिस्थापित किया गया , जिससे ठेकेदारों को सीधे किसानों से राजस्व प्राप्त करने की अनुमति मिल गई, न कि सरकार की प्रत्यक्ष निगरानी में राज्य के अधिकारियों द्वारा।
- इस परिवर्तन के कारण, **किसानों की स्थिति** अकबर या जहाँगीर के शासनकाल से भी बदतर हो गई। मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में **विदेशी व्यापार का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं था**। भारत नील और सूती वस्तुओं का निर्यात करता था। कृषि के बाद, सूती उद्योग ने सबसे अधिक लोगों को रोजगार प्रदान किया। देश में मुख्य आयात कांच के बर्तन, तांबा, सीसा और ऊनी कपड़े थे। फारस से घोड़े और डच इंडीज से मसाले, यूरोप से कांच के बर्तन, शराब और अनोखी वस्तुएं, अबीसीनिया से दास और अमेरिका से उच्च श्रेणी के तंबाकू भी आयात किए जाते थे। **लेकिन व्यापार का आकार छोटा था और आयात शुल्क से सरकार की आय प्रति वर्ष 30 लाख रुपये से अधिक नहीं थी**।
- औरंगज़ेब के अधीन मुग़ल **सेना काफ़ी बढ़ गई थी**। वह जीवन भर युद्ध में लगा रहा और स्वाभाविक रूप से, उसे अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में कहीं अधिक बड़ी सेना की आवश्यकता थी। **औरंगज़ेब के अधीन सेना पर होने वाला खर्च शाहजहाँ के अधीन होने वाले खर्च से लगभग दोगुना था**। लेकिन बादशाह की सतर्कता और सख्ती तथा एक सेनापति के रूप में उसकी योग्यता के बावजूद, मुगल सेना की प्रशासन व्यवस्था और अनुशासन **अकबर के समय की तुलना में बहुत ही निम्न स्तर का था।**

धार्मिक नीति

- औरंगज़ेब एक **कट्टर सुन्नी मुसलमान** था । उसने **कुरान के नियमों को सख्ती से लागू करने की कोशिश की** । मुहतसिब वे अधिकारी थे जिन्हें सभी प्रांतों में नियुक्त किया जाता था ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लोग शरिया के अनुसार अपना जीवन जी रहे हैं। **उसने झरोखा-दर्शन की प्रथा को बंद कर दिया** , क्योंकि वह इसे इस्लाम के विरुद्ध एक अंधविश्वास मानता था। हालाँकि वह स्वयं एक कुशल वीणा वादक था, फिर भी **उसने दरबार में संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया।** शुरुआत में, उसने पुराने हिंदू मंदिरों को तोड़ने पर रोक लगाई और केवल नए हिंदू मंदिरों के निर्माण पर ही प्रतिबंध लगाया। लेकिन जाटों,

सतनामियों और राजपूतों के विद्रोह के बाद, उसने अपनी नीति बदल दी और **पुराने हिंदू मंदिरों को भी तोड़ने की अनुमति दे दी।**

- **मथुरा और बनारस के प्रसिद्ध मंदिर खंडहर में तब्दील हो गए** । 1679 ई. में, **उन्होंने गैर-मुसलमानों पर जजिया कर फिर से लागू कर दिया** । इससे हिंदू प्रजा में व्यापक आक्रोश फैल गया क्योंकि वे जजिया को अपने विरुद्ध भेदभावपूर्ण मानते थे।
- औरंगज़ेब **अन्य मुस्लिम संप्रदायों के प्रति भी असहिष्णु** था । दक्कन सल्तनतों पर उसके आक्रमण आंशिक रूप से **शिया धर्म** के प्रति उसकी घृणा के कारण थे , क्योंकि दक्कनी शिया थे। **वह सिखों के भी विरुद्ध था और उसने नौवें सिख गुरु तेज बहादुर को मृत्युदंड दिया था** । इसके परिणामस्वरूप सिख एक युद्धरत समुदाय, खालसा, में परिवर्तित हो गए।
- हालाँकि यह कहा जा सकता है कि औरंगज़ेब की धार्मिक नीति के पीछे राजनीतिक उद्देश्य थे, लेकिन कमोबेश उसने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा अपनाई गई धार्मिक सहिष्णुता की नीति को उलट दिया। **औरंगज़ेब द्वारा अपनाई गई धार्मिक रूढ़िवादिता के कारण मराठों, सतनामियों, सिखों और जाटों ने कई विद्रोह किए** । इन विद्रोहों ने साम्राज्य की शांति को नष्ट कर दिया, उसकी अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर दिया और उसकी सैन्य शक्ति को कमज़ोर कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः न केवल औरंगज़ेब की विफलता हुई, बल्कि मुग़ल वंश का भी पतन हुआ।

औरंगजेब की धार्मिक नीति

- सिक्कों पर कलमा अंकित करने, नौरोज त्यौहार मनाने पर रोक लगाई; 1659 में मुहातसिब (नैतिक चरित्र का नियामक) की नियुक्ति की गई
- 1663 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया
- 1668 में हिंदू त्योहारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया
- 1669 में झरोखा दर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया गया और दरबार में संगीत पर रोक लगा दी गई।
- 1670 में तुलादान (सम्राट का वजन) पर प्रतिबंध लगा दिया गया
- 1679 में जजिया कर पुनः लागू किया गया

औरंगजेब के शासनकाल का मूल्यांकन

- **औरंगज़ेब की मृत्यु 1707 ई. में हुई और वह अपने पीछे एक विशाल साम्राज्य छोड़ गया जो दिवालियापन और पतन के कगार पर था** । उसकी कठोर धार्मिक नीतियों ने न केवल हिंदुओं और सिखों को, बल्कि उदारवादी मुसलमानों को भी उससे अलग-थलग कर दिया था और उसने अपनी अधिकांश प्रजा की वफ़ादारी खो दी थी। उसके दक्कन अभियानों ने खजाने को खाली कर दिया था और व्यापार-वाणिज्य को बाधित कर दिया था।
- दक्कन में उनकी व्यस्तता और वहाँ लंबे समय तक रहने के कारण उत्तर में कई विद्रोह हुए, क्योंकि कुलीनों, सिखों और राजपूतों ने अपनी स्वतंत्रता का दावा करने की कोशिश की। इसके अलावा, अपने बेटों पर शक करते हुए, उन्होंने उन्हें जितना हो सके खुद से दूर रखा। नतीजतन, उन्हें उचित प्रशासनिक प्रशिक्षण नहीं मिल पाया और वे भोग-विलास में डूब गए। प्रशासन अति-केंद्रीकृत हो गया था और जब औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद उसका कठोर नियंत्रण समाप्त हो गया, तो अराजकता फैल गई और साम्राज्य शीघ्र ही बिखर गया।

परवर्ती मुगल (1707-1858)

- **लगभग 1707 ई. में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद मुग़ल साम्राज्य का तेज़ी से पतन हुआ**। इस वर्ष को आमतौर पर महान मुग़लों के युग को छोटे मुग़लों, जिन्हें परवर्ती मुग़ल भी कहा जाता है, के युग से अलग करने वाला वर्ष माना जाता है।
- लगभग 1707 ई. से 1761 ई. (औरंगज़ेब की मृत्यु से लेकर पानीपत के तीसरे युद्ध तक, जिसमें अहमद शाह अब्दाली ने मराठा सरदारों को हराया) के बीच की अवधि ने **क्षेत्रीय पहचानों के पुनरुत्थान को देखा और कभी शक्तिशाली रहे मुगलों की दुखद स्थिति को उजागर किया**। मुगल **दरबार कुलीनों के बीच गुटबाजी का केंद्र बन गया।** साम्राज्य की कमज़ोरी तब उजागर हुई जब लगभग 1739 ई. में नादिर शाह ने मुगल सम्राट को कैद कर लिया और दिल्ली को लूट लिया।
- **1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद की अवधि को चिह्नित किया गया** था
  - कमजोर उत्तराधिकारी
  - उत्तराधिकार का युद्ध
  - कुलीनों की शक्ति में वृद्धि हुई, जो या तो 'राजा निर्माता' बन गए या अर्ध-स्वतंत्र/स्वतंत्र राज्यों का निर्माण किया।
  - अदालती साज़िशें
  - धार्मिक सहिष्णुता
  - सम्राट के अधिकार में गिरावट
  - प्रभावी नियंत्रण के क्षेत्र में गिरावट

परवर्ती मुगल और महत्वपूर्ण घटनाएँ

- लगभग 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके तीन पुत्रों - **मुअज्जम** (काबुल का गवर्नर), **मुहम्मद काम बख्श** (दक्कन का गवर्नर) **और मुहम्मद आजम शाह** (गुजरात का गवर्नर) के बीच **उत्तराधिकार का युद्ध** छिड़ गया ।
- **मुअज्जम विजयी हुआ और बहादुर शाह 1 की उपाधि के साथ सिंहासन पर बैठा।**

बहादुर शाह-प्रथम / शाह आलम / मुअज्जम (1707-1712)

- **मुअज्जम 63 वर्ष की आयु में** गद्दी पर बैठा और बहादुर शाह की उपाधि धारण की।
- **उसने अमीरों के प्रति उदार नीति** अपनाई, उन्हें उनकी पसंद के इलाके दिए और उन्हें पदोन्नत किया। इससे राज्य की वित्तीय स्थिति बिगड़ गई। यह भी माना जाता है कि **असली सत्ता वज़ीर जुल्फिकार खान के हाथों में थी।**
- **उन्होंने हिंदुओं के प्रति सहिष्णु रवैया** दिखाया, हालांकि **उन्होंने कभी भी जजिया कर समाप्त नहीं किया**।
- उनके शासनकाल के दौरान, **मारवाड़ और मेवाड़ की स्वतंत्रता को स्वीकार किया गया** । हालाँकि, यह समझौता इन राज्यों को मुगलों के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध योद्धा बनने के लिए बहाल नहीं कर सका।
- मराठों के प्रति उनकी नीति भी **आधी-अधूरी सुलह की** थी । उन्होंने शाहू (जिन्हें उन्होंने रिहा कर दिया था) को सही मराठा राजा नहीं माना। **उन्होंने मराठों को दक्कन का सरदेशमुखी तो दे दिया, लेकिन चौथ नहीं दिया और इस तरह उन्हें पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर सके**। इस प्रकार, मराठे आपस में और मुगलों के खिलाफ भी लड़ते रहे।
- जाट सरदार चारुमान और बुंदेला सरदार छत्रसाल सिखों के विरुद्ध उनके अभियान में उनके साथ शामिल हो गए। दसवें सिख गुरु, गुरु गोबिंद सिंह को उच्च मनसब प्रदान किया गया। **हालाँकि, उन्हें बंदा बहादुर के विद्रोह का सामना करना पड़ा** और बंदा बहादुर के विरुद्ध अपने अभियान के दौरान ही उनकी मृत्यु हो गई (लगभग 1712 ई. में)।
- उन्हें खफी खान जैसे मुगल इतिहासकारों ने **"शाह-ए-बेखबर" की उपाधि** दी थी ।

Jahandar Shah (1712-13)

- बहादुर शाह की मृत्यु के बाद मुगलों के राजनीतिक क्षेत्र में राजनीति का एक नया रूप उभरा जिसमें **कुलीन लोग 'राजा निर्माता' बन गए और राजा उनके हाथों की 'कठपुतलियाँ' मात्र रह गए**।
- जहाँदार शाह मुग़ल भारत का **पहला कठपुतली शासक था । उसे ज़ुल्फ़िकार ख़ान (वज़ीर) का समर्थन प्राप्त** था , जिसके हाथों में कार्यपालिका की बागडोर थी।

- **जुल्फिकार खान ने मराठों, राजपूतों और विभिन्न हिंदू सरदारों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए**। उसने **जजिया कर समाप्त कर दिया और अजीत सिंह (मारवाड़) को "महाराजा" और आमेर के जय सिंह को "मिर्जा राज सवाई" की उपाधि दी । उसने शाहू को दक्कन का चौथ और सरदेशमुखी** भी प्रदान किया। हालाँकि, बंदा बहादुर और सिखों के विरुद्ध दमन की पुरानी नीति जारी रही।
- **जुल्फिकार ने जागीरों और पदों के अंधाधुंध अनुदानों पर रोक लगाकर साम्राज्य की वित्तीय स्थिति सुधारने का** भी प्रयास किया। उसने मनसबदारों को सैनिकों का आधिकारिक कोटा बनाए रखने का भी आदेश दिया।
- हालाँकि, वह इतिहास में **इजारा (राजस्व खेती) की कुप्रथा को शुरू करने** के लिए कुख्यात है । उसने इजारा या राजस्व खेती को बढ़ावा दिया, जिसके परिणामस्वरूप किसानों का उत्पीड़न हुआ।
- जहाँदार शाह की पसंदीदा महिला, लाल कंवर (एक नर्तकी) दरबार पर छाई हुई थी।
- उन्हें सैयद बंधुओं द्वारा समर्थित **फर्रुखसियर ने पराजित किया ।**

फर्रुख सियार (1713-19)

- **Farrukh Siyar defeated his brother Jahandar Shah at Agra in c. 1713 CE.**
- वह सैय्यद बंधुओं (राजा निर्माता) - सैय्यद अब्दुल्ला खान (वज़ीर) और हुसैन अली खान (मीर बख्शी) **के सहयोग से** गद्दी पर बैठा । **सैय्यद बंधुओं ने जुल्फिकार खान की हत्या कर दी** और खुद को प्रमुख पदों पर नियुक्त कर लिया।
- सैयद **बंधुओं ने मराठों, जाटों और राजपूतों के साथ शांति स्थापित करने की कोशिश की और सिख विद्रोह को दबाने में भी सफल रहे**। इसी दौरान **सिख नेता बंदा बहादुर को फांसी दे दी गई।**
- लगभग 1717 ई. में, **फर्रुखसियर ने ईस्ट इंडिया कंपनी को कई व्यापारिक विशेषाधिकार प्रदान किये** तथा बंगाल के माध्यम से व्यापार करने पर सीमा शुल्क में छूट भी दी।
- सैयद **बंधुओं ने जजिया कर को पूरी तरह समाप्त कर दिया** तथा कई स्थानों पर **तीर्थयात्रा कर भी समाप्त कर दिया ।**
- सैय्यद बंधुओं की अत्यधिक शक्तियों के कारण, फ़ारुखसियर और सैय्यद बंधुओं के बीच मतभेद बढ़ गए। बादशाह ने तीन बार उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचा, परन्तु उन्हें पराजित नहीं कर सका।
- लगभग **1719 ई. में, सैय्यद बंधुओं ने बालाजी विश्वनाथ (मराठा शासक) के साथ गठबंधन किया और मराठा सैनिकों की मदद से, सैय्यद बंधुओं ने फर्रुख सियार की हत्या कर दी**।

Saiyad Brothers

- सैयद बंधु अब्दुल्ला खान और हुसैन अली खान, राजाओं को इच्छानुसार गद्दी पर बिठाने और हटाने में अपनी भूमिका के कारण 'राजा निर्माता' के रूप में लोकप्रिय थे।
- प्रशासन में उनका प्रभाव काफ़ी बढ़ गया। उन्होंने साम्राज्य को विद्रोहों और प्रशासनिक विघटन से बचाने की कोशिश की, लेकिन दरबारी षडयंत्रों के कारण असफल रहे।

रफ़ी-उद-दराजत (1719)

- Rafi-Ud-Darajat, the son of Rafiush-Shan, became the Mughal Emperor after Farrukh Siyar.
- रफी-उद-दरजात बहुत बुद्धिमान था लेकिन वह पूरी तरह से सैय्यद बंधुओं के नियंत्रण में था, जो उसके नाम पर प्रशासन चलाते थे।
- **रफ़ी-उद-दराजत का उत्तराधिकारी उसका भाई रफ़ी-उद-दौला था**।
- जून 1719 में उनकी मृत्यु के बाद **रफीउद्दौला को शाहजहाँ द्वितीय के नाम से भी जाना जाता है।**
- औरंगजेब के पोते, निकुसियर ने उसके शासनकाल के दौरान विद्रोह किया और मित्रसेन (एक नागर ब्राह्मण) के समर्थन से आगरा के सिंहासन पर कब्जा कर लिया।

रफ़ी-उस-दौला (1719 ई.)

- **Hussain Ali Khan (the Saiyyad brother) marched upon Agra and imprisoned Nikusiyar.**
- **रफी-उस-दौला को शाहजहाँ (1/3)** की उपाधि दी गई थी। उन्होंने बहुत कम समय तक शासन किया और क्षय रोग से उनकी मृत्यु हो गई।

मुहम्मद शाह (1719-48)

- मुहम्मद शाह रंगीला **1719 में मयूर सिंहासन पर बैठे और 1748 में अपनी मृत्यु तक** इस पद पर रहे। उनका नाम **रोशन अख्तर** था और वे **बहादुर शाह प्रथम के पोते थे।**
- **जहान शाह के भाई** जो नृत्य के शौकीन थे और स्वयं एक कुशल कथक नर्तक थे ।
- लगभग 1720 में, उसने निज़ाम-उल-मुल्क, **चिन क़िलिच ख़ान और अपने पिता के चचेरे भाई मुहम्मद अमीन ख़ान की मदद से सैय्यद बंधुओं को सफलतापूर्वक सत्ता से बेदखल कर दिया।** उसने मुहम्मद अमीर ख़ान को, जिसने हुसैन अली ख़ान की हत्या की थी, एत्मादुद्दौला की उपाधि से वज़ीर नियुक्त किया। हालाँकि, उसके शासनकाल के दौरान स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ, निज़ाम-उल-मुल्क के नेतृत्व में दक्कन, सआदत ख़ान के नेतृत्व में अवध और मुर्शिद कुली ख़ान ने बिहार, बंगाल और उड़ीसा पर शासन किया।
- उन्होंने साम्राज्य के प्रशासन की उपेक्षा की।
- वह स्वयं भी दरबारी षड्यंत्रों में लिप्त था।
- उनके शासनकाल के दौरान साम्राज्य के अंतर्गत प्रभावी नियंत्रण का क्षेत्र कम हो गया।
- **उसके शासनकाल में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया। मुग़ल साम्राज्य की कमज़ोरी तब उजागर हुई जब नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया**, मुग़ल बादशाह को बंदी बनाया और लगभग 1739 ई. में दिल्ली को लूटा।

नादिर शाह का आक्रमण (लगभग 1739 ई.)

- **नादिर शाह ईरान का सम्राट था**। वह वहाँ का राष्ट्रीय नायक था जिसने अफ़गानों को ईरान से खदेड़ दिया था।
- **आक्रमण के कारण:**
  - जब नादिर शाह लगभग 1736 ई. में सत्ता में आया, तो **मुहम्मद शाह रंगीला ने फ़ारसी दरबार से अपने राजदूत को वापस बुला लिया और उस देश के साथ सभी राजनयिक संबंध तोड़ लिए**। नादिर शाह ने मुग़ल दरबार में तीन दूत भेजे और उसके तीसरे दूत को रंगीला ने बंदी बना लिया जिससे वह क्रोधित हो गया।
  - **जब नादिर शाह ने अफगानिस्तान पर आक्रमण किया तो कुछ अफगान सरदारों ने रंगीला के अधीन शरण ली।**
  - इसके अलावा, सआदत खान और निजाम-उल-मुल्क ने नादिर शाह को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया।
- **आक्रमण का क्रम:**
  - उन्होंने जलालाबाद, पेशावर (लगभग 1738 ई.) और फिर लगभग 1739 ई. में लाहौर पर कब्जा कर लिया।
  - **करनाल का युद्ध (लगभग 1739 ई.)**
    - फारसी सेना के आगे बढ़ने की खबर सुनकर मुहम्मद शाह ने आक्रमणकारी सेना का सामना करने और उन्हें अपनी राजधानी में प्रवेश करने से रोकने के लिए अपनी सेना को दिल्ली से बाहर भेज दिया।
    - दोनों सेनाएँ करनाल (दिल्ली से लगभग 120 किलोमीटर उत्तर) में युद्ध के लिए भिड़ गईं। फ़ारसी सैनिकों ने मुग़ल सेना पर कहर बरपा दिया।
    - **मुगल सम्राट मुहम्मद शाह ने आत्मसमर्पण कर दिया और उन्हें नादिर शाह को अपनी राजधानी ले जाना पड़ा।** पूरा **खजाना लूट लिया गया** और सैनिकों ने दिल्ली में महिलाओं और बच्चों सहित आम जनता का भीषण नरसंहार किया।
    - दिल्ली पर कब्ज़ा कई दिनों तक चला, जिसके बाद नादिर शाह ने अपने सैनिकों को रुकने को कहा। मई 1739 ई. में, नादिर शाह और उसकी सेना शहर छोड़कर चले गए।
    - मुहम्मद शाह को मुगल साम्राज्य का सम्राट बनाए रखा गया, लेकिन **उसे सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित साम्राज्य के सभी प्रांत उसे सौंपने के लिए मजबूर किया गया।**
    - **नादिर शाह ने खजाना** लगभग खाली कर दिया तथा प्रसिद्ध कोहिनूर और मयूर सिंहासन भी छीन लिया।
    - नादिर शाह के आक्रमण से प्रतिष्ठा को अपूरणीय क्षति हुई तथा मराठा सरदारों और विदेशी व्यापारिक कंपनियों के समक्ष साम्राज्य की कमजोरियां उजागर हो गईं।

अहमद शाह (1748-54)

- मुहम्मद शाह रंगीला और कुदसिया बेगम (एक नर्तकी) **के पुत्र ।**

- 1748 से 1754 तक भारत के अप्रभावी मुगल सम्राट, जिन्हें अच्छे स्वभाव वाले, लेकिन अयोग्य और व्यक्तित्व, प्रशिक्षण या नेतृत्व के गुणों से रहित बताया गया है।
- उनके शासनकाल के दौरान दो बार अफगान **अहमद शाह अब्दाली ने उत्तर-पश्चिम पंजाब क्षेत्र को लूटा तथा उनसे धन और भूमि छीन ली।**
- मराठों **ने मालवा और बुंदेलखंड छीन लिया।**
- उनके वजीर इमाद-उल-मुल्क ने उन्हें अंधा कर दिया और सलीमगढ़ में कैद कर दिया।

Alamgir II (1754-59)

- वह **जहांदार शाह का दूसरा पुत्र** था और अहमद शाह को पदच्युत करने के बाद इमाद-उल-मुल्क ने उसे गद्दी पर बैठाया था।
- **अहमद शाह अब्दाली के** बार-बार आक्रमणों का सामना करना पड़ा ।
- प्रसिद्ध **प्लासी का युद्ध** (23 जून, लगभग 1757 ई.) उनके कार्यकाल के दौरान लड़ा गया था। प्लासी के युद्ध ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को बंगाल पर नियंत्रण हासिल करने में मदद की।
- उनकी हत्या भी उनके वजीर इमाद-उल-मुल्क ने की थी।

Shah Alam II / Ali Gauhar (1759-1806)

- उनके शासनकाल के दौरान, मुगल शक्ति इतनी कम हो गई थी कि **फारसी में एक कहावत प्रचलित हो गई थी "सल्तनत-ए-शाह आलम, अज़ दिली ता पालम", जिसका अर्थ है "शाह आलम का राज्य दिल्ली से पालम तक है",** पालम दिल्ली का एक उपनगर था।
- **वज़ीर से मतभेद के कारण, वह अवध भाग गया** (लगभग 1761-1764 ई.)। जब मराठों ने अपना दबदबा फिर से स्थापित कर लिया और उसे राजधानी में आमंत्रित किया, तो वह दिल्ली लौट आया।
- शाह आलम ने अपने अंतिम वर्ष मराठा सरदार सिंधिया के संरक्षण में बिताए, तथा द्वितीय मराठा युद्ध (1803-05) के बाद वे अंग्रेजों के संरक्षण में रहे।
- **पानीपत का तीसरा युद्ध** (लगभग 1761 ई.) उनके शासनकाल के दौरान मराठों और अहमद शाह अब्दाली के बीच लड़ा गया था।
- **बक्सर का युद्ध** लगभग 1764 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन हेक्टर मुनरो के नेतृत्व वाली सेनाओं और मीर कासिम (बंगाल के नवाब), शुजा-उद-दौला (अवध के नवाब) और मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेनाओं के बीच लड़ा गया था। यह युद्ध इलाहाबाद की संधि (लगभग 1765 ई.) द्वारा समाप्त हुआ, जिसके तहत बंगाल, बिहार और उड़ीसा के दीवानी अधिकार (भू-राजस्व वसूलने का अधिकार) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान किए गए।
- **वह पहले मुगल शासक थे जो ईस्ट इंडिया कंपनी के पेंशनभोगी बने।**
- अंग्रेजों ने उन्हें 'दिल्ली का राजा' कहा और उनकी मृत्यु के बाद 30 वर्षों तक उनके नाम पर सिक्के जारी किये।

अकबर शाह / अकबर II (1806-1837)

- वह **शाह आलम द्वितीय के दूसरे पुत्र** और **बहादुर शाह द्वितीय के पिता थे।**
- उन्होंने **राम मोहन राय को ब्रिटेन में राजदूत बनाकर भेजा** और **उन्हें राजा की उपाधि दी** ।
- उनके शासनकाल के दौरान, 1835 में, ईस्ट इंडिया कंपनी (ईआईसी) ने **खुद को मुगल सम्राट की अधीनता कहना** और **उनके नाम पर सिक्के जारी करना बंद कर दिया।**
- वह एक **महान कवि थे और उन्हें हिंदू-मुस्लिम एकता उत्सव फूल वालों की सैर की** शुरुआत का श्रेय दिया जाता है ।

Bahadur Shah II / Zafar (1837-1858)

- वह भारत के **अंतिम मुगल सम्राट** थे जिन्होंने **1837-58 तक** शासन किया । वह एक **कुशल कवि थे और उनका उपनाम ज़फ़र (विजय) था।**
- वह एक कवि, संगीतकार और सुलेखक थे, तथा एक राजनीतिक नेता से अधिक एक सौंदर्यवादी थे।
- अपने शासनकाल के अधिकांश समय तक **वह अंग्रेजों के अधीन रहे और उनके पास कोई वास्तविक अधिकार नहीं था।**

- उन्हें **1857 के विद्रोह का नाममात्र नेता चुना गया** था । विद्रोह को अंग्रेजों द्वारा दबा दिए जाने के बाद, उन्हें **अपने परिवार के साथ बर्मा (म्यांमार) निर्वासित कर दिया गया था।**

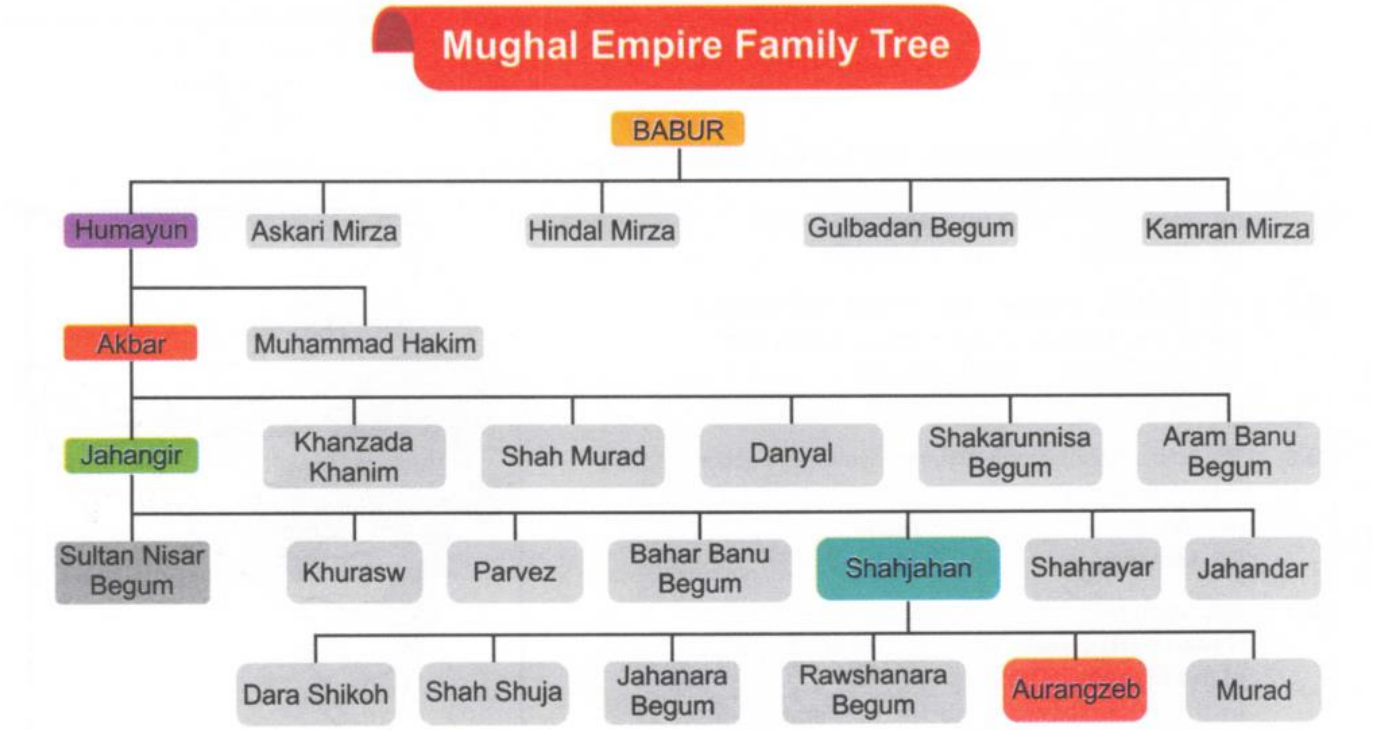

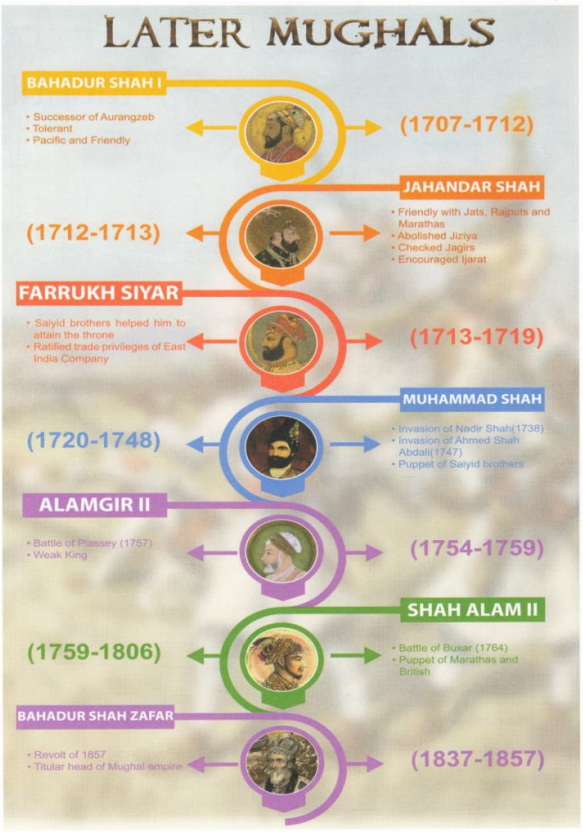

मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

- **औरंगजेब की जिम्मेदारी:**
  - औरंगज़ेब के शासन में, मुग़ल साम्राज्य अपने क्षेत्रीय चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया था। लेकिन, इसका विस्तार केंद्रीय सत्ता के नियंत्रण से बाहर हो गया था। उस समय जब संचार के साधन अविकसित थे, इतने विशाल साम्राज्य को नियंत्रित करना औरंगज़ेब के कमज़ोर उत्तराधिकारियों की क्षमता से परे था।

- इसके अलावा, औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों ने साम्राज्य में असंतोष पैदा किया। इसके कारण सिखों, जाटों, बुंदेलों आदि ने विद्रोह किए। उसकी राजपूत नीति ने राजपूतों को अलग-थलग कर दिया। दक्कनी राज्यों और मराठों के विरुद्ध उसकी आक्रामक साम्राज्यवादी नीति ने साम्राज्य के संसाधनों को नष्ट कर दिया।

- **कमजोर उत्तराधिकारी और कुलीन:**

- मुगलों जैसे केंद्रीकृत शासन को नियंत्रित करने के लिए शक्तिशाली सम्राटों की आवश्यकता थी। लेकिन औरंगज़ेब के कमज़ोर उत्तराधिकारियों ने, जिन्होंने विलासितापूर्ण जीवन को महत्व दिया और प्रशासन की उपेक्षा की, केंद्रीकृत शासन की सीमाओं को उजागर कर दिया। सेना की भी उपेक्षा की गई। इसके परिणामस्वरूप विद्रोह हुए, क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ और मराठों जैसी शक्तियों का सुदृढ़ीकरण हुआ। इसके परिणामस्वरूप विदेशी आक्रमण भी हुए जिन्होंने साम्राज्य के संसाधनों को लूटा।
- कुलीन वर्ग अपने कमज़ोर सम्राटों का अनुसरण करता था। वे या तो विलासितापूर्ण जीवन जीने लगे या अपने लिए स्वतंत्र राज्य बना लिए। उत्तराधिकार के युद्ध में भी उन्होंने विभिन्न गुटों में संगठित होकर 'राजा-निर्माता' की भूमिका निभाई। यह गुटबाजी इतनी प्रबल थी कि विदेशी आक्रमणों के दौरान भी कुलीन वर्ग एकजुट नहीं हो पाया।

- **सैन्य कमज़ोरियाँ:**

- सामंती आधार पर सेना के संगठन की अपनी सीमाएँ थीं। सैनिक सम्राट के बजाय मनसबदार को अपना मुखिया मानते थे। बाद के मुगलों के शासनकाल में यह दोष चिंताजनक रूप ले चुका था।
- इसके अलावा, सेना में अनुशासन, सामंजस्य और आधुनिक उपकरणों का अभाव था। मुगल सेना युद्धों में नियंत्रण करने में असमर्थ थी। सैन्य अधिकारी पक्ष बदलने के लिए कुख्यात थे। वित्तीय संकट के कारण सैनिकों को कई बार वेतन नहीं मिलता था। सामंजस्य और निष्ठा के अभाव में ऐसी सेना से साम्राज्य के लिए लड़ने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।

- **वित्तीय संकट:**

- औरंगज़ेब के दक्कन अभियान ने राजकोष खाली कर दिया और व्यापार-वाणिज्य को तहस-नहस कर दिया। युद्धों ने खड़ी फसलों को नुकसान पहुँचाया और इस प्रकार हतोत्साहित किसानों ने खेती छोड़ दी। इससे भू-राजस्व वसूली पर और भी बुरा असर पड़ा।
- बाद के मुगलों के शासनकाल में स्थिति और भी बिगड़ गई। क्षेत्रीय शक्तियों की स्वतंत्रता ने शाही राजस्व को प्रभावित किया। इसके अलावा, उत्तराधिकार के युद्धों, सम्राटों और कुलीनों के विलासी जीवन-यापन ने राजकोष को खाली कर दिया। जागीरों और विदेशी आक्रमणों के रूप में भुगतान ने भी साम्राज्य के संसाधनों को प्रभावित किया।

- **मराठों का उदय:**

- मराठा मुगल साम्राज्य के पतन का सबसे महत्वपूर्ण बाहरी कारण थे। पेशवाओं द्वारा परिकल्पित हिंदू साम्राज्य की नीति मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही साकार हो सकी।
- मराठों की महत्वाकांक्षाओं को मुग़ल साम्राज्य की प्रकृति ने बल दिया, जो हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने में विफल रहा। कई भारतीय सरदार मुग़ल शासकों को विदेशी और भारत तथा हिंदू धर्म का दुश्मन मानते थे।

- **नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण:**

- नादिर शाह और अब्दाली के आक्रमणों ने मुग़ल साम्राज्य की सैन्य कमज़ोरी को उजागर कर दिया। उन्होंने साम्राज्य के वित्तीय संसाधनों को लूट लिया।

- **यूरोपीय कंपनियाँ:**

- मुगल साम्राज्य के मध्ययुगीन चरित्र को गतिशील और प्रगतिशील पश्चिम ने चुनौती दी। सभ्यताओं की दौड़ में यूरोपीय लोगों ने भारतीयों को पीछे छोड़ दिया।

मुगल शासन का प्रभाव

राजनीतिक

- तुर्कों द्वारा लाया गया देश का राजनीतिक एकीकरण मुगलों द्वारा सुदृढ़ किया गया।

- मुगलों द्वारा स्थापित प्रशासन प्रणाली यद्यपि मुख्यतः उत्तरी भारत तक ही सीमित थी, लेकिन इसने अप्रत्यक्ष रूप से भारत के अन्य भागों को भी प्रभावित किया।
- मुगल शासन व्यवस्था ने **राज्य को संस्थागत रूप** दिया , अर्थात् उनके द्वारा दीवान-ए-आला जैसी अनेक संस्थाएं स्थापित की गईं।
- 200 वर्षों से भी अधिक समय तक, मुग़ल **भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमाओं को विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रखने** में सफल रहे । उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा केवल बाद के मुग़लों के शासनकाल में ही भंग हुई।
- जब तक मुगल साम्राज्य मजबूत था, यूरोपीय व्यापारिक कंपनियां अपनी क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकीं।
- मुगलों की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक विफलता, जिसने देश को प्रभावित किया, वह थी एक मजबूत नौसैनिक शक्ति का निर्माण करने में उनकी विफलता। इससे यूरोपीय कंपनियों को समुद्र पर प्रभुत्व स्थापित करने का मौका मिला, जिसके परिणामस्वरूप आगे चलकर उन्होंने राजनीतिक शक्ति हासिल कर ली।
- औरंगज़ेब के शासनकाल को छोड़कर, मुग़ल शासन व्यवस्था काफ़ी हद तक धर्मनिरपेक्ष थी। इससे देश में सद्भाव और सहिष्णुता का निर्माण हुआ।

सामाजिक

- चूंकि राज्य के मामले काफी हद तक धर्मनिरपेक्ष थे, इसलिए इससे सद्भाव को बढ़ावा मिला।
- भारत में मुगल शासन की स्थापना से महिलाओं की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। बल्कि पर्दा प्रथा व्यापक हो गई।
- कुलीन वर्ग के उदय के साथ, विभिन्न वर्गों के बीच सामाजिक असमानता बढ़ गई।
- **इस्लाम द्वारा उत्पन्न चुनौती के बावजूद, जाति व्यवस्था का प्रभुत्व बना रहा।** लेकिन अकबर जैसे मुगल सम्राटों द्वारा सूफी आंदोलन को प्रोत्साहन देने से आपसी सद्भाव बनाने में मदद मिली।
- अकबर जैसे मुगल सम्राटों ने धर्मनिरपेक्ष रुचि के अधिक वैज्ञानिक विषयों को शामिल करके शिक्षा को आधुनिक बनाने का प्रयास किया। लेकिन रूढ़िवादी तत्वों के दबाव में ये प्रयास असफल रहे। (चूँकि मुगल काल में लिखा गया अधिकांश इतिहास राजाओं, कुलीनों आदि से संबंधित है, इसलिए मुगल शासन का आम जनता पर क्या प्रभाव पड़ा, इसका पता लगाना कठिन है)।

आर्थिक

- मुगलों के शासन में **भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप सामंती बना रहा।** इसके परिणामस्वरूप आर्थिक असमानताएँ पैदा हुईं। किसानों की स्थिति में कोई खास सुधार नहीं हुआ।
- चाँदी पर आधारित सुप्रसिद्ध मुद्रा, सड़कों और सरायों आदि के विकास ने व्यापार और हस्तशिल्प के विकास पर सीधा प्रभाव डाला। लेकिन, नौसैनिक क्षेत्र में कमज़ोरी के कारण भारतीय बढ़ते अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का लाभ नहीं उठा सके।
- मुगल शासन ने साम्राज्य में शांति स्थापित की, जिससे खेती को बढ़ावा मिला। लेकिन किसानों की स्थिति कठिन बनी रही।
- मुगल सम्राटों ने नवाचार के क्षेत्र में रुचि नहीं दिखाई, जिसके कारण अर्थव्यवस्था विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पिछड़ी रही।

सांस्कृतिक

- मुगल साम्राज्य में एक सांस्कृतिक राज्य के तत्व मौजूद थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि मुगल सम्राटों ने कला और वास्तुकला के साथ-साथ विद्वानों को भी संरक्षण दिया था।
- मुगलों ने भव्य किले, महल, द्वार, सार्वजनिक भवन, मस्जिदें, सरायें आदि बनवाए। लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बनी वास्तुकला मुगल काल में उल्लेखनीय थी। **चारबाग शैली,** पिएत्रा ड्यूरा आदि का प्रयोग मुगलों के महत्वपूर्ण योगदान थे।
- मुगलों ने चित्रकला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से जहाँगीर का योगदान उल्लेखनीय है, जिनके शासनकाल में **चित्रांकन** में उल्लेखनीय प्रगति हुई। मुगल चित्रकला ने राजस्थानी शैली, पहाड़ी शैली आदि जैसी क्षेत्रीय शैलियों को भी प्रभावित किया।
- मुगल सम्राटों ने **विद्वानों को** संरक्षण दिया । उदाहरण के लिए, अबुल फजल को अकबर ने संरक्षण दिया था।

- **संगीत के क्षेत्र** में मुगल शासन के दौरान महत्वपूर्ण विकास हुए। उदाहरण के लिए, अकबर ने ग्वालियर के तानसेन को संरक्षण दिया, जिन्होंने विभिन्न रागों की रचना की। हालाँकि औरंगज़ेब ने अपने दरबार में गायन पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन वाद्य यंत्रों पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया था। इसके अलावा, मुहम्मद शाह (1719-48) का शासनकाल संगीत के विकास के लिए जाना जाता है।

क्षेत्रीय शक्तियों और राज्यों का उदय

- मुगल सत्ता के पतन **के साथ कई स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ।** बाद के मुगल शासक साम्राज्य के सभी हिस्सों में सैन्य रूप से अपने नियम लागू करने में सक्षम नहीं थे; परिणामस्वरूप, **कई प्रांतीय शासकों ने अपनी सत्ता का दावा करना शुरू कर दिया।** समय के साथ, उन्हें **स्वतंत्र दर्जा** प्राप्त हुआ । इसी समय, मुगलों के अधीन कई राज्यों ने भी अपनी स्वतंत्रता का दावा किया। कुछ नए क्षेत्रीय समूह भी संगठित हुए और राजनीतिक शक्तियों के रूप में उभरे।
- मुगल साम्राज्य के पतन और उसके बाद की शताब्दी (लगभग 1700-1850 ई. के बीच) के दौरान भारत में जो राज्य उभरे, वे संसाधनों, दीर्घायु और आवश्यक चरित्र की दृष्टि से बहुत भिन्न थे।
- उनमें से कुछ - जैसे **हैदराबाद**, ऐसे क्षेत्र में थे जहां मुगल काल से ठीक पहले प्रांतीय राज्यों की एक पुरानी क्षेत्रीय परंपरा थी, जबकि मुगल काल के बाद के कई अन्य राज्य जातीय या सांप्रदायिक समूहों - मराठा, जाट और सिख - पर आधारित थे।
- इस अवधि के दौरान उभरे क्षेत्रीय राज्यों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है-
- **पूर्व मुगल सरदारों द्वारा निर्मित राज्य** - इन राज्यों के संस्थापक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली उच्च मनसब वाले मुगल सरदार थे। उन्होंने अपनी बढ़ती शक्ति और प्रशासनिक क्षमता के बल पर कुछ दुर्जेय प्रांतीय राज्यों की स्थापना की। हालाँकि उन्होंने मुगल शासन से स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी, फिर भी उन्होंने मुगल राज्य से संबंध कभी नहीं तोड़े। इस श्रेणी के प्रमुख राज्य बंगाल (संस्थापक - मुर्शिद कुली खान), अवध (संस्थापक - सआदत खान) और हैदराबाद (संस्थापक - निज़ाम-उल-मुल्क आसफ जाह) थे। इन राज्यों के संस्थापक या तो इन प्रांतों के पूर्व गवर्नर थे या मुगल कुलीन वर्ग के शक्तिशाली सदस्य।
- **वतन जागीरें** - 18वीं शताब्दी में उभरे क्षेत्रीय राज्यों की दूसरी श्रेणी ने मुगलों के अधीन बहुत अच्छी सेवा की थी और परिणामस्वरूप उन्हें राजपूत राज्यों की तरह अपने वतन जागीरों में काफी स्वायत्तता का आनंद लेने की अनुमति थी।
- **विद्रोही राज्य** - मुगल सत्ता के विरुद्ध विद्रोह के बाद उभरे राज्य इसी श्रेणी में आते थे। सिख, जाट और मराठा इसी समूह में शामिल थे, और इनमें से मराठा समय के साथ एक दुर्जेय शक्ति के रूप में उभरे।

मुगल काल का साहित्य

किताब	लेखक	अंतर्वस्तु
Tuzuk-ए-Baburi	Tuzuk-ए-Baburi	बाबर के शासनकाल के दौरान सैन्य रणनीति और प्रशासन
क़ानून-ए-हुमायूँ	ख़्वांद अमीर	हुमायूँ का प्रशासन, उत्सव और वास्तुकला
हुमायूँ का नाम	गुलबदन बेगम	हुमायूँ की जीवनी
अकबर का नाम	अबुल फ़ज़ल	अकबर के शासनकाल का इतिहास
तोबाक़त-ए-अकबरी	Khwaja Nizamuddin Ahmad Baksh	अकबर के शासनकाल का इतिहास
आइन-ए-अकबरी	अबुल फ़ज़ल	अकबर के शासनकाल का इतिहास
मुंतखब-उल-तवारीख	Badauni	अकबर के शासन का इतिहास

किताब	लेखक	अंतर्वस्तु
क्रॉनिकल्स-ऑफ-अल्फी	मुल्ला दाऊद	अकबर के शासनकाल का इतिहास
Tuzuk-ए-जहांगीरी	Jahangir	अपने शासनकाल के संस्मरण
इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	मुताम्मिद खान	जहाँगीर के शासनकाल का इतिहास
Chahar Chaman	Chandra Bhan Brahman	शाहजहाँ के शासन का इतिहास
Padshah Namah	अब्दुल हमीद लाहौरी	शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास
Padshah Namah	मुहम्मद वारिस	शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास
शाहजहाँ नामा	मुहम्मद सालेह	शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास
शाहजहाँ नामा	Inayat Khan	शाहजहाँ के शासनकाल का इतिहास
फुतुहात-ए-आलमगिरी	ईश्वर दास	औरंगजेब का इतिहास
Alamgir-nama	मुंशी मिर्ज़ा मुहम्मद काज़िम	औरंगज़ेब के शासन के पहले 10 वर्षों का विवरण
मस्सिर-ए-आलमगिरी	Saqi Mustaid Khan	औरंगजेब के शासनकाल का इतिहास उसकी मृत्यु के बाद लिखा गया
Nuskha-i-Dilkusha	भीमसेन सक्सेना	औरंगजेब के शासन और चरित्र का विश्लेषण
खुलासत-उल-तवारीख	Sujan Rai	औरंगजेब के शासन का इतिहास
हमियाई-हैदरी	मुहम्मद रफ़ी खान	औरंगजेब के शासन का इतिहास
Namah-e-Alamgiri	अकील खान ज़फ़र	औरंगजेब के शासन का इतिहास
हैदराबाद	Nimat Khan	औरंगजेब की गोलकुंडा विजय
Raqqat-e-Alamgiri	औरंगजेब	उनके पत्रों का एक संग्रह
सिर्र-ए-अकबर	Dara Shikoh	उपनिषद का उर्दू अनुवाद
सफीनत-उल-औलिया	Dara Shikoh	सूफी संतों की जीवनियाँ

किताब	लेखक	अंतर्वस्तु
मजमा-उल-बहरीन	Dara Shikoh	दार्शनिक विचारों पर चर्चा
हसमत-उल-आरिफिन	Dara Shikoh	धार्मिक विचारों पर चर्चा
नूरिया-ए-सुल्तानिया	अब्दुल हक	मुगल काल के दौरान रिश्तेदारी का सिद्धांत

मुगल प्रशासन

केंद्रीय प्रशासन

- मुगल प्रशासन का विकास मुख्यतः **अकबर की देन** था । जिन विचारों और सिद्धांतों पर यह विकसित हुआ, वे दिल्ली सल्तनत के विचारों और सिद्धांतों से भिन्न थे।
- बाबर के मामले में समय और अवसर की कमी और हुमायूँ के मामले में इच्छाशक्ति और योग्यता की कमी के कारण , नागरिक शासन की एक विस्तृत व्यवस्था एक मिथक बनकर रह गई। **शेरशाह द्वारा एक प्रशासनिक तंत्र की स्थापना** के कारण ही अकबर प्रशासन में **एक व्यवस्थित ढाँचे की नींव रख सका ।**
- मुग़ल **राज्य मूलतः सैन्य प्रकृति का था** जहाँ सम्राट का वचन ही कानून होता था। प्रशासनिक ढाँचा अत्यधिक केंद्रीकृत प्रकृति का था।

सम्राट

- हमारी प्राचीन परंपराओं ने हमेशा एक शक्तिशाली शासक का समर्थन किया है। इसलिए, **राजतंत्र द्वारा दैवीय उत्पत्ति की अवधारणा** भारतीय जनमानस में आसानी से विश्वसनीय हो गई।
- इसी के अनुरूप, **मुगलों ने झरोखा दर्शन का प्रचार किया,** जिसमें **सम्राट एक निश्चित समय पर आम जनता के सामने प्रकट होता था । बड़ी संख्या में लोग प्रतिदिन सम्राट की** एक झलक पाने और उसे अपनी प्रार्थनाएँ प्रस्तुत करने के लिए एकत्रित होते थे, जिनका निपटारा या तो तुरंत किया जाता था या फिर दोपहर तक चलने वाले **खुले दरबार (दीवान-ए-आम) में किया जाता था।**
- **प्रशासनिक तंत्र का मुखिया होने के नाते, सम्राट को** नागरिक , सैन्य और न्यायिक मामलों में अंतिम अधिकार प्राप्त था। मुगलों के अधीन सभी प्रशासनिक अधिकारी अपनी शक्ति और पद सम्राट के अधीन रखते थे।
- यद्यपि **राजा के पास पूर्ण शक्ति थी** , फिर भी उसने विविध मामलों के संचालन के लिए सरकार के विभिन्न विभागों में अनेक अधिकारियों की नियुक्ति की थी।

वज़ीर

- दिल्ली के सुल्तानों और मुगलों, दोनों के शासनकाल में वज़ीर की संस्था **को नागरिक और सैन्य, दोनों तरह की शक्तियाँ प्राप्त थीं** । प्रारंभिक मुगलों के शासनकाल में वज़ीर का पद पुनर्जीवित हुआ।
- **बाबर के वज़ीर निज़ामुद्दीन मुहम्मद खलीफा को** नागरिक और सैन्य, दोनों तरह की शक्तियाँ प्राप्त थीं; **हुमायूँ के वज़ीर हिंदू बेग को** भी लगभग अपार शक्तियाँ प्राप्त थीं। **बैरम ख़ान के शासनकाल में वज़ीर की शक्ति में अभूतपूर्व वृद्धि हुई** ।
- **अकबर ने वज़ील का पद तो बरकरार रखा, लेकिन उसकी सारी शक्तियाँ छीन लीं** , इसलिए यह काफ़ी हद तक सजावटी बन गया। यह पद समय-समय पर महत्वपूर्ण रईसों को दिया जाता था, लेकिन प्रशासन में उनकी भूमिका बहुत कम होती थी।
- राजस्व विभाग का प्रमुख वज़ीर ही बना रहा। वह अब शासक का मुख्य सलाहकार नहीं, बल्कि राजस्व मामलों का विशेषज्ञ था।
- इस बात पर बल देने के लिए अकबर ने अपने आठवें शासनकाल में वकील की वित्तीय शक्तियां छीन लीं और इसे **दीवान-ए-कुल (वित्त मंत्री)** के हाथों में सौंप दिया ।
- हालाँकि, वकील अपनी शक्तियों में कमी के बावजूद मुगल नौकरशाही पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान का आनंद लेता रहा।

दीवान-ए-कुल

- दीवान **वित्त मंत्री था जो राजस्व एकत्र करने और** उसे शाही खजाने में भेजने तथा सभी खातों की जांच करने के लिए जिम्मेदार था ।
- अकबर ने राजस्व संबंधी अधिकार दीवान को सौंपकर **दीवान के पद को और मज़बूत किया । वह सभी आय-व्यय के लिए ज़िम्मेदार था और खलीसा, जागीर और इनाम की ज़मीनों** पर उसका नियंत्रण था ।

- वह सभी विभागों में सभी लेन-देन और भुगतानों का व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण करते थे। राजस्व से जुड़े सभी सरकारी कागज़ात की पुष्टि के लिए उनकी मुहर और हस्ताक्षर ज़रूरी थे।
- साम्राज्य का संपूर्ण राजस्व संग्रह और व्यय तंत्र उसके अधीन था। उसकी मुहर के बिना नियुक्ति या पदोन्नति का कोई भी नया आदेश पारित नहीं किया जा सकता था।

Mir Bakshi

- मीर बख्शी **सेना का वेतन-प्रबंधक और प्रशासक था। मनसबदारों की नियुक्ति और उनके वेतन संबंधी** सभी आदेश उसी के द्वारा अनुमोदित और पारित किए जाते थे।
- वह व्यक्तिगत रूप से **घोड़ों (दघा) के दागने का निरीक्षण करते थे और** सैनिकों की मस्टर-रोल (चेहरा) की जांच करते थे।
- कुलीन वर्ग का मुखिया दीवान नहीं, बल्कि मीर बख्शी माना जाता था। मीर बख्शी साम्राज्य की **खुफिया और सूचना एजेंसियों का भी प्रमुख होता था। साम्राज्य के सभी बंदरगाहों पर खुफिया अधिकारी (बरीद)** और **समाचार संवाददाता (वाकिया-नवीस)** तैनात होते थे।
- मीर बख्शी **सैन्य विभाग से संबंधित सभी मामले सम्राट के समक्ष रखता था**। उसका कर्तव्य यह जाँचना था कि दरबार में मनसबदारों को उनके पद के अनुसार उचित स्थान आवंटित किए गए हैं या नहीं। दरबारी कर्तव्यों ने उसकी प्रतिष्ठा और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि की।

Mir Saman

- मीर सामन **शाही कारखानों का प्रभारी अधिकारी** होता था । वह मुख्य कार्यकारी अधिकारी होता था जो शाही परिवार के लिए सभी प्रकार की वस्तुओं की खरीद और उनके भंडारण के लिए जिम्मेदार होता था।
- एक अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्य **विभिन्न वस्तुओं के निर्माण की निगरानी करना था, चाहे वे युद्ध के हथियार हों या विलासिता की वस्तुएं**।
- वह सीधे सम्राट के अधीन होता था, लेकिन धन की स्वीकृति और खातों की जाँच के लिए उसे दीवान से संपर्क करना पड़ता था। इस पद पर **केवल उन्हीं कुलीनों की नियुक्ति होती थी जिन्हें सम्राट का पूर्ण विश्वास प्राप्त होता था ।**

सद्र-उस सुदुर

- सद्र-उस-सुदुर **धार्मिक विभाग का प्रमुख** था । उसका मुख्य कर्तव्य **शरीयत के कानूनों की रक्षा करना** था ।
- वह दान वितरण से भी जुड़े थे **- नकद और भूमि अनुदान दोनों**। वह यह भी देखते थे कि अनुदान सही लोगों को दिया जा रहा है या नहीं और उसका सही उपयोग हो रहा है या नहीं।

मुख्य काजी

- न्यायिक **विभाग का नेतृत्व मुख्य काजी करता था**।
- इस पद को कभी-कभी **सद्र-उस-सुदुर के पद के साथ जोड़ दिया जाता था।** यह एक ऐसा पद था जिसे **काफ़ी शक्ति और संरक्षण प्राप्त था**।

प्रांतीय प्रशासन

- सुचारू प्रशासन और राजस्व संग्रह के लिए साम्राज्य को **कई प्रांतों में विभाजित किया गया था, जिन्हें सूबा कहा जाता था**। मुगल शासन के दौरान प्रांत का प्रशासनिक ढांचा बिल्कुल केंद्रीय सरकार का एक छोटा रूप था।
- **सूबे का मुखिया सूबेदार होता था,** जिसकी नियुक्ति **सीधे सम्राट द्वारा की जाती** थी । वह **प्रत्येक सूबे के नागरिक और सैन्य प्रशासन का प्रमुख होता था। प्रांत में भी इसी प्रकार के विभाग** होते थे, जो एक गवर्नर के अधीन होते थे, जिसकी नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती थी।
- **प्रत्येक सूबा कई सरकारों में विभाजित था** और इन्हें **आगे परगना और महलों में विभाजित किया गया था।**
- मुगलों ने अपने प्रशासनिक ढाँचे के माध्यम से पूरे साम्राज्य **में शासन में एकरूपता सुनिश्चित की**। साम्राज्य के सभी प्रांतों पर एक ही शासन प्रणाली लागू थी, **एक ही राजभाषा, एक ही मुद्रा आदि का प्रचलन था।**

प्रांतीय गवर्नर

- **सूबेदार (सूबे का शासक)** सम्राट द्वारा सीधे नियुक्त किया जाता था। उसके मुख्य कर्तव्य थे **कानून-व्यवस्था बनाए रखना**, राजस्व का सुचारू और सफल संग्रह सुनिश्चित करना और शाही आदेशों और नियमों का पालन कराना।
- अन्य कर्तव्यों के अलावा, वह **प्रजा और सेना के कल्याण का भी ध्यान रखते थे। उन्होंने प्रांत में कृषि, व्यापार और वाणिज्य को** भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने **सराय, उद्यान, कुएँ, जलाशय आदि के निर्माण** जैसे विभिन्न कल्याणकारी कार्य भी किए।

दीवान

- वह **किसी प्रांत में राजस्व विभाग का प्रमुख होता था**। यह ध्यान देने योग्य बात है कि उसकी **नियुक्ति सूबेदार द्वारा** नहीं, बल्कि सम्राट द्वारा की जाती थी, और इसलिए वह **केंद्र के प्रति जवाबदेह एक स्वतंत्र अधिकारी के रूप में कार्य करता था**।
- वह **सूबे में राजस्व वसूली की निगरानी करता था और** सूबे के अधिकारियों और अधीनस्थों के वेतन के रूप में होने वाले सभी खर्चों का लेखा-जोखा रखता था। उसे खेती का रकबा बढ़ाने और राज्य के खजाने को बढ़ाने के लिए भी कदम उठाने थे।
- मुगलों ने दीवान को सूबेदार से स्वतंत्र बनाकर सूबेदार को स्वतंत्र होने से रोकने में सफलता प्राप्त की।

बख्शी

- बख्शी की **नियुक्ति शाही दरबार द्वारा मीर बख्शी की सिफारिश पर की जाती थी।** प्रांतीय स्तर पर उसके कार्य केंद्रीय स्तर पर मीर बख्शी के समान ही थे।
- **वह सूबे में मनसबदारों द्वारा रखे गए घोड़ों और सैनिकों की जाँच और निरीक्षण** के लिए ज़िम्मेदार था। अपने प्रांत में होने वाली घटनाओं के बारे में केंद्र को सूचित करना उसका कर्तव्य था।

Daroga-i-Dak

- उन्हें **पूरे साम्राज्य में संचार नेटवर्क विकसित करने का** काम सौंपा गया था । डाक प्रणाली ने यह सुनिश्चित किया कि साम्राज्य के दूर-दराज के इलाकों तक संचार पहुँचाया जा सके।
- इस उद्देश्य के लिए, पूरे साम्राज्य में अनेक **डाक चौकियां** स्थापित की गई थीं, जहां धावक तैनात रहते थे, जो डाक को अगली चौकी तक ले जाते थे।
- शीघ्र डिलीवरी में सहायता के लिए **घोड़ों और नावों का भी उपयोग किया गया।**

गुप्त सेवाएँ

- सम्राट को प्रांतीय स्तर पर नियुक्त **वाकिया-नवीस और वाक़ैनीगरों से नियमित रिपोर्ट मिलती थी। उनके अलावा, सम्राट को गोपनीय रिपोर्ट देने के लिए सवानी-निगार भी होते थे।**
- मुगल सम्राटों ने प्रांतों का लगातार दौरा किया, औसतन तीन वर्ष की अवधि के बाद अधिकारियों का स्थानांतरण किया, लेकिन विद्रोह की संभावना हमेशा बनी रहती थी और इसलिए, खुफिया नेटवर्क की एक संगठित प्रणाली के माध्यम से निरंतर निगरानी स्थापित की गई थी।

स्थानीय प्रशासन

Sarkars

- सूबों **को सरकार, परगना और गाँव में विभाजित किया गया था**। **फौजदार और अमलगुजार** सरकार स्तर के दो महत्वपूर्ण पदाधिकारी थे।
- **फौजदार सरकार का कार्यकारी प्रमुख था।** उसका मुख्य कर्तव्य **विद्रोहों और कानून-व्यवस्था की समस्याओं को संभालना** था । उसका प्रभाव क्षेत्र जटिल था और उसका अधिकार क्षेत्र क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार तय किया जाता था।
- उनकी **नियुक्ति न केवल सरकार स्तर पर होती थी, बल्कि कभी-कभी एक सरकार के भीतर कई फौजदार होते थे** , और कभी-कभी उनका अधिकार क्षेत्र दो पूर्ण सरकारों तक फैला होता था।
- अमलगुज़ार **सरकार में राजस्व वसूली के लिए ज़िम्मेदार होता था**। अमलगुज़ार का काम खेती की ज़मीन बढ़ाना और किसानों को बिना किसी दबाव के स्वेच्छा से राजस्व देने के लिए प्रेरित करना था। वह सभी हिसाब-किताब रखता था और प्रांतीय दीवान को नियमित रिपोर्ट भेजता था।

परगना प्रशासन

- परगना **सरकार के नीचे की प्रशासनिक इकाइयाँ थीं**।
- शिक्कदार **परगना का कार्यकारी अधिकारी होता था और राजस्व वसूली में आमिलों की सहायता करता था**। आमिल परगना स्तर पर भी राजस्व वसूली का काम देखता था। उसके कर्तव्य सरकार स्तर पर अमलगुजार के समान थे।
- गांव **सबसे निचली प्रशासनिक इकाई थी जिसका मुखिया मुकद्दम होता था** जबकि **पटवारी गांव के राजस्व रिकॉर्ड का ध्यान रखता था।**

Kotwal

- **शाही दरबार द्वारा नियुक्त कोतवाल को नगरवासियों की जान-माल की सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया था।** उसकी तुलना आधुनिक **पुलिस अधिकारियों** से की जा सकती है और उसे नगर में आने-जाने वाले लोगों का रजिस्टर रखना होता था।
- **बाहरी लोगों को शहर में प्रवेश करने या बाहर जाने से पहले उनसे परमिट लेना पड़ता था** । उन्होंने **निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं को** सुनिश्चित किया , जैसे कि व्यापारियों और दुकानदारों द्वारा मानक तौल का उपयोग किया जाए; **उनके क्षेत्र में कोई अवैध शराब का निर्माण न हो,** आदि।

किलादार

- वह **मुगल साम्राज्य में निर्मित किलों (किला) के प्रभारी अधिकारी** थे ।
- प्रत्येक किलेदार को **एक किले की जिम्मेदारी** सौंपी गई थी ।

सैन्य प्रणाली

- मुगल साम्राज्य एक **जटिल सैन्य प्रणाली** का पालन करता था । सम्राट व्यवस्था बनाए रखने और साम्राज्य की सीमाओं की **रक्षा के लिए एक बड़ी स्थायी सेना के बजाय चार** अलग-अलग वर्गों के सैनिकों पर निर्भर रहता था, अर्थात् **मनसबदार, दाखिली, अहादीस और सरदार।**
- सैनिकों के अलावा, **तोपखाना** शाही सेना का एक महत्वपूर्ण अंग था और इसके महत्व को समझते हुए **अकबर ने** इस पर विशेष ध्यान दिया। बाद में **यूरोपीय तोपची भी बड़ी संख्या में नियुक्त किए गए ।**
- बाद के मुगलों के शासनकाल में तकनीकी सुधार की कमी ने साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। वे नौसैनिक मोर्चे पर भी असफल रहे। उनके पास कोई बड़े लड़ाकू जहाज़ नहीं थे, और जो जहाज़ वे रखते थे, वे मुख्यतः राज्य के वाणिज्यिक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए थे।

सदस्यता प्रणाली

- मनसब शब्द **का अर्थ है एक स्थान, एक पद, एक सम्मान और एक पद** , जो मुगल नौकरशाही का एक अभिन्न अंग था। **अकबर द्वारा शुरू की गई मनसबदारी व्यवस्था** मुगल साम्राज्य की नागरिक और सैन्य प्रशासनिक व्यवस्था की एक अनूठी विशेषता थी।
- इस व्यवस्था के अंतर्गत **प्रत्येक अधिकारी को एक पद (मनसब) दिया जाता था । सबसे निचला पद 10 और सबसे ऊँचा पद 5000 था** ; **उसके शासनकाल के अंत में इसे बढ़ाकर 7000 कर दिया गया** । उच्च मनसब **रक्त के राजकुमारों** को दिए जाते थे ।
- **मनसब , श्रेणीबद्ध आधिकारिक पदानुक्रम** में धारक की स्थिति का निर्धारण करता था , यह धारक या मनसबदार का **वेतन** भी निश्चित करता था और यह **घोड़ों और आवश्यक उपकरणों के साथ एक निर्दिष्ट संख्या में सैन्य टुकड़ी को बनाए रखना भी अनिवार्य बनाता था ।**

दोहरी रैंक: पदार्थ और बाधा

- **मनसबदारी प्रणाली के अंतर्गत रैंक (मनसब) दो भागों में विभाजित थे: ज़ात और** सवार ।
- ज़ात शब्द **का अर्थ है व्यक्तिगत** । यह व्यक्ति की व्यक्तिगत स्थिति और उसे मिलने वाला वेतन भी निर्धारित करता था।
- सवार **पद से यह पता चलता था कि एक व्यक्ति को कितने घुड़सवार सैनिक** रखने की आवश्यकता थी।

मनसबदारों के वर्ग

- प्रत्येक मनसब में **तीन श्रेणियां** थीं :

- **प्रथम श्रेणी:** वह व्यक्ति जिसे **अपनी जात रैंक के अनुसार उतने ही सवार रखने पड़ते थे।**
- **दूसरी श्रेणी:** वह व्यक्ति जो **अपनी जात रैंक के रूप में आधे या उससे अधिक सवार** रखता था ; और
- **तीसरी श्रेणी:** यदि वह **अपनी जात रैंक के रूप में सवारों की संख्या के आधे से कम को बनाए रखता है।**
- राज्य के लिए सवारों का बड़ा कोटा रखने वालों को पुरस्कृत करने के लिए, जाट के वेतन में दो रुपये का अतिरिक्त भत्ता जोड़ा जाता था। **कोई भी व्यक्ति अपने जाट पद से ज़्यादा सवारों का कोटा नहीं रख सकता था** ।

मनसबदारों की नियुक्ति

- सभी मनसबदारों की **नियुक्ति सम्राट द्वारा की जाती** थी , जो सैन्य सेवा में वीरता और योग्यता के आधार पर पदोन्नति भी प्रदान करता था।
- मुगल सत्ता के अधीन होने के बाद **अकबर ने कई राजपूत सरदारों को मनसबदार नियुक्त किया ।**
- **अकबर से लेकर औरंगजेब तक** मनसबदारों की संख्या बढ़ती रही ।

सैनिकों का भुगतान और रखरखाव

- मुग़ल **मनसबदारों को बहुत अच्छा वेतन मिलता था** , वास्तव में उस समय वे दुनिया में सबसे ज़्यादा वेतन पाने वालों में से थे। 100 ज़ात के पद वाले मनसबदार को 500 रुपये और 5000 ज़ात के पद वाले मनसबदार को 30,000 रुपये वेतन मिलता था। **उन्हें अपने वेतन का लगभग आधा हिस्सा जागीरों के प्रशासन और पशुओं के रख-रखाव पर खर्च करना पड़ता था** ।
- यह सुनिश्चित करने के लिए अत्यधिक सावधानी बरती जाती थी कि भर्ती किए गए सवार **अच्छी तरह से अनुभवी** हों । इसके लिए **घोड़ों पर दाग लगाने की एक प्रणाली अपनाई जाती थी, जिसे दाग़ और चेहरा (शाही चिह्नों से दागा हुआ घोड़ा) कहा जाता था।** इस सेवा में केवल **उच्च गुणवत्ता वाले अरबी और इराकी घोड़े ही काम पर रखे जाते थे।**
- सवार प्रणाली की दो विशेषताएं ध्यान देने योग्य हैं।
- **दस आदमियों की प्रत्येक टुकड़ी के लिए, मनसबदार को बीस घोड़े रखने होते थे** । चूँकि घुड़सवार सेना मुख्य सेना थी, इसलिए युद्ध या मार्च के दौरान इनका प्रतिस्थापन आवश्यक माना जाता था। इस व्यवस्था को **10-20 नियम के नाम से जाना जाता था।**
- दूसरे, **मुगलों ने मिश्रित टुकड़ियों को प्राथमिकता दी, जिनमें ईरानी, तुरानी, भारतीय, अफगान और राजपूत आदि से निश्चित अनुपात में लोग शामिल होते थे।** इसका उद्देश्य जनजातीय या जातीय विशिष्टता को तोड़ना था।
- घुड़सवारों के अलावा, **धनुर्धर, बन्दूकची, सैपर और खनिक भी टुकड़ियों में भर्ती किए जाते थे । अकबर ने अपने अंगरक्षकों के रूप में घुड़सवारों का एक बड़ा हिस्सा रखा था। उसके पास घोड़ों का एक बड़ा अस्तबल था। उसके पास सज्जन सैनिकों का** एक दल भी था । वे केवल सम्राट के प्रति जवाबदेह थे और उनका एक अलग मस्टर-मास्टर होता था।

Jagirdari System

- जागीरदारी व्यवस्था एक **प्रशासनिक व्यवस्था थी जिसके तहत वेतन के बदले भू-राजस्व दिया जाता था, जिसे जागीर कहा जाता था** । जागीरदारी व्यवस्था उन बिचौलियों के **वंशानुगत अधिकारों को प्रभावित नहीं करती थी जिन्हें सामूहिक रूप से ज़मींदार** कहा जाता था ।
- ऐसी प्रथा **दिल्ली सल्तनत काल में भी विद्यमान थी** और ऐसे कार्यों को **इक्ता कहा जाता था तथा धारकों को इक्तादार कहा जाता था** ।
- इस संबंध में यह याद रखना चाहिए कि **भूमि नहीं सौंपी गई थी, बल्कि भूमि के टुकड़े से राजस्व या आय एकत्र करने का अधिकार सौंपा गया था।**
- जागीरदारी व्यवस्था **मनसबदारी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग** थी जो अकबर के शासनकाल में विकसित हुई थी और **सभी मुगल मनसबदारों को जागीरें सौंपकर भुगतान किया जाता था।**

जागीरों का संगठन और प्रबंधन

- मुगल **बादशाह मनसबदारों को जागीरें आवंटित करता था** । मनसबदार राजस्व वसूली की अपनी व्यवस्था स्वयं करता था। उच्च मनसबदार अपना स्वयं का स्टाफ रखते थे जिसमें आमिल, लेखक आदि शामिल होते थे। छोटे मनसबदार

अपनी जागीरों का राजस्व बाँटते थे, जिसे **इजारा व्यवस्था** कहते थे । जब कोई जागीर हस्तांतरित होती थी या जब तक वह बिना सौंपी रहती थी, उसे **पैबकी** के रूप में रखा जाता था और केंद्रीय दीवान के अधीन रहता था।

- जागीरों के आवंटन में सटीकता सुनिश्चित करने के लिए, राजस्व से औसत वार्षिक आय का स्थायी अनुमान, जिसे **जमादानी** के रूप में जाना जाता है , गांवों तक प्रत्येक प्रशासनिक प्रभाग के लिए तैयार किया गया था।
- **खलीसा या जागीरों में न दी गई ज़मीन राजा के खजाने की आय का मुख्य स्रोत थी,** और राजा के अधिकारी इसके संग्रह के लिए ज़िम्मेदार थे। **खलीसा का आकार स्थिर नहीं था।**
- उनके द्वारा धारण किए गए पद या मनसब आमतौर पर **उत्तराधिकार में नहीं मिलते** थे । हालाँकि, आमतौर पर ऐसे पद कुलीनों या उच्च मनसब धारकों के पुत्रों और संबंधियों को प्रदान किए जाते थे। इसके अलावा, जागीरों का आवंटन अस्थायी प्रकृति का होता था। समय-समय पर पदोन्नति और पदावनति के लिए मनसब में संशोधन की आवश्यकता होती थी और मनसब में प्रत्येक ऐसे परिवर्तन के लिए मनसबदार की जागीर में परिवर्तन आवश्यक होता था।

जागीरों के प्रकार

- जागीरें **विभिन्न प्रकार** की होती थीं :
- जागीरें, जो वेतन के बदले दी जाती थीं, **तन्खा जागीर** के नाम से जानी जाती थीं ।
- किसी व्यक्ति को कुछ शर्तों पर दी जाने वाली जागीरें **मशरुत जागीरें** कहलाती हैं ।
- जागीरें जिनमें सेवा के दायित्वों की कोई संलिप्तता नहीं थी और जो रैंक से स्वतंत्र थीं, उन्हें **इनाम जागीर** के रूप में जाना जाता था , और
- जागीरें, जो ज़मींदारों को उनकी मूल भूमि पर सौंपी जाती थीं, उन्हें **वतन जागीरें कहा जाता था।**
- इनमें से, **तन्खा जागीरें हर तीन या चार साल में हस्तांतरित की जा सकती थीं। वतन जागीरें वंशानुगत और अहस्तांतरणीय थीं** । फिर भी, इन सभी प्रकार की जागीरों का परिवर्तन किया जा सकता था। इस प्रकार, जागीरदारों को केवल राजा द्वारा निर्धारित राशि ही वसूलने की अनुमति थी।

आर्थिक प्रशासन

- मुगल साम्राज्य **मुख्यतः कृषि प्रधान था और उस पर लगने वाला कर उसकी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था** ।
- प्रशासन ने **खेती के अंतर्गत अधिक क्षेत्र लाने, भूमि की उत्पादकता और उर्वरता बढ़ाने के लिए** कदम उठाए । मुगल किसान तंबाकू, कपास, गन्ना, काली मिर्च, अदरक, नील, अफीम और यहाँ तक कि रेशम जैसी अत्यधिक मूल्यवान कृषि वस्तुओं की बड़ी मात्रा में खेती और निर्यात कर रहे थे।
- **भूमि राजस्व के अलावा, वस्तुओं पर कराधान, व्यापारियों की आय, सीमा शुल्क और पारगमन कर, मुद्रा खनन शुल्क** आदि से भी राज्य के खजाने में वृद्धि हुई।

भू राजस्व

- मुगलों के अधीन कृषि प्रणाली की मुख्य विशेषता यह थी कि **किसानों से उनकी अतिरिक्त उपज, अर्थात् निर्वाह स्तर से अधिक उपज, भू-राजस्व के रूप में छीन ली जाती थी, जो राज्य की आय का मुख्य स्रोत था** ।
- प्रारंभिक ब्रिटिश प्रशासक **भूमि राजस्व को भूमि का लगान** मानते थे , क्योंकि उनका मानना था कि राजा भूमि का मालिक होता है, लेकिन मुगल भारत के अध्ययन से पता चला है कि **यह फसल पर कर था** और इस प्रकार यह **अंग्रेजों द्वारा समझी गई भूमि राजस्व से भिन्न था।**

भूमि राजस्व आकलन के तरीके

- खरीफ और रबी की फसलों के लिए अलग-अलग कर निर्धारण किया जाता था। कर निर्धारण पूरा होने के बाद, **पट्टा नामक एक लिखित दस्तावेज़ जारी किया जाता था जिसमें राजस्व मांग की राशि या दर का उल्लेख होता था। बदले में, करदाता को उस पर लगाए गए दायित्व की कबूलियत (स्वीकृति)** देनी होती थी , जिसमें यह बताना होता था कि वह भुगतान कब और कैसे करेगा।
- **पूरे उत्तर भारत में करोड़ी** नामक अधिकारी नियुक्त किए गए थे। वे करोड़ों रुपये (2,50,000 रुपये) की वसूली के लिए ज़िम्मेदार थे **और तथ्यों और आंकड़ों की जाँच भी करते थे** ।

- निम्नलिखित कुछ सामान्यतः प्रयुक्त विधियाँ हैं:
- **Ghalla-Bakshi (Crop-sharing):**
  - इस पद्धति के तहत, **फसल को किसान और राज्य के बीच विभाजित किया जाता था और दोनों मौसम के जोखिम को समान रूप से साझा करते थे** ।
  - **राज्य के दृष्टिकोण से** यह महंगा था क्योंकि राज्य को बड़ी संख्या में चौकीदारों को नियुक्त करना पड़ता था, अन्यथा फसल कटाई से पहले ही हेराफेरी की संभावना रहती थी।
  - जब औरंगजेब ने इसे दक्कन में लागू किया, तो फसलों पर निगरानी रखने की आवश्यकता के कारण राजस्व संग्रह की लागत दोगुनी हो गई।
- **कंकुट या दंबंडी:**
  - कंकुट शब्द **कन और कट** शब्दों से बना है । **कन का अर्थ अनाज है** जबकि **कट का अर्थ अनुमान या मूल्यांकन है** । इसी प्रकार, **बांध का अर्थ अनाज है** जबकि **बंदी का अर्थ किसी चीज़ को स्थिर करना या निर्धारित करना है** ।
  - यह एक ऐसी प्रणाली थी जिसमें **अनाज की उपज (या उत्पादकता) का अनुमान लगाया जाता था** । कंकुट में, पहले खेत को रस्सी या पैमाइश से नापा जाता था। इसके बाद, **अच्छी, मध्यम और खराब ज़मीनों की प्रति बीघा उत्पादकता का अनुमान लगाया जाता था** और उसके अनुसार राजस्व की माँग तय की जाती थी।
- **Zabti or Dahshala system:**
  - भूमि राजस्व संग्रह की यह प्रणाली **अकबर द्वारा हर साल कीमतें तय करने और पिछले वर्षों के राजस्व के निपटान के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं को कम करने** के लिए शुरू की गई थी ।
  - इस प्रणाली के अंतर्गत **दस वर्षों की औसत उपज निकाली जाती थी।** इस औसत उपज का एक तिहाई हिस्सा रुपये प्रति बीघा में तय किया जाता था और राज्य (माई) का हिस्सा तय किया जाता था, **शेष दो तिहाई हिस्सा किसानों (खराज) के लिए छोड़ दिया जाता था।**
  - इस प्रथा की उत्पत्ति शेरशाह से मानी जाती है और इसे अकबर के योग्य वित्त मंत्री राजा टोडरमल ने मुगल प्रशासन में लाया था। **यह प्रथा लाहौर से इलाहाबाद तक और मालवा और गुजरात प्रांतों में प्रचलित थी।**
- **नासिका:**
  - एक और व्यापक रूप से प्रचलित प्रणाली थी नासक। इसका अर्थ था **किसानों द्वारा पूर्व में दी गई कर राशि के आधार पर उनकी देय राशि का एक मोटा-मोटा हिसाब लगाना** ।
  - इसलिए कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यह केवल किसानों के बकाया की गणना करने की एक प्रणाली थी, न कि मूल्यांकन की एक अलग प्रणाली।

भूमि राजस्व निर्धारण

- वह भूमि जो लगभग **हर वर्ष खेती के अधीन रहती थी, पोलाज** कहलाती थी ।
- **बिना जोती गई भूमि को परती (परती)** कहा जाता था ।
- वह भूमि जो **दो या तीन वर्षों तक परती रहती थी, उसे चचर** कहा जाता था ।
- और यदि **चचर से अधिक लम्बा हो** तो उसे **बंजर** कहा जाता था ।

इन ज़मीनों का मूल्यांकन रियायती दरों पर किया जाता था, **राजस्व की माँग धीरे-धीरे बढ़ती जाती थी और पाँचवें या आठवें वर्ष में पूरी या पोलाज दर का भुगतान कर दिया जाता था** । इस प्रकार राज्य ने कुंवारी और बंजर भूमि को खेती के अधीन लाने में मदद की।

भू-राजस्व संग्रह

- भूमि राजस्व संग्रह की प्रक्रिया के **दो चरण हैं: (ए) मूल्यांकन, और (बी) वास्तविक संग्रह** ।
- **राज्य की मांग तय करने के लिए आकलन किया गया** । इस मांग के आधार पर खरीफ और रबी फसलों के लिए अलग-अलग वास्तविक संग्रह किया गया।
- **गल्ला बख्शी प्रथा** के तहत राज्य **का हिस्सा सीधे खेत से ही जब्त कर लिया जाता था** ।
- अन्य प्रणालियों में, राज्य फसल कटाई के समय अपना हिस्सा वसूल करता था।
- अबू फजल का मानना है कि रबी के लिए होली से और खरीफ के लिए दशहरा से कर संग्रह शुरू होना चाहिए।

- आमतौर पर **राजस्व आमिल या राजस्व संग्रहकर्ता के माध्यम से राजकोष में जमा किया जाता था** , हालांकि अकबर ने किसानों को सीधे राजकोष में भुगतान करने और रसीद प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

भूमि राजस्व प्रशासन

- **उपलब्ध मुगल साहित्य में खालिसा भूमि के** प्रशासन के बारे में पर्याप्त जानकारी मिलती है, लेकिन जागीरों के प्रशासन के बारे में पर्याप्त जानकारी का अभाव है। चूँकि जागीरदारों का हर दो या तीन साल में तबादला होता था, इसलिए उन्हें स्थानीय राजस्व संग्रह के बारे में बहुत कम जानकारी होती थी, इसलिए उन्हें निम्नलिखित प्रकार के अधिकारियों द्वारा सहायता प्रदान की जाती थी:
- **जागीरदारों के अधिकारी और एजेंट;**
- **स्थायी स्थानीय अधिकारी,** जिनमें से कई वंशानुगत थे। जागीरदारों के बार-बार होने वाले तबादलों से आमतौर पर उन पर कोई असर नहीं पड़ता था, और
- जागीरदारों की सहायता और नियंत्रण के लिए **शाही अधिकारी ।**
- **ग्रामीण स्तर पर कई राजस्व अधिकारी होते थे जैसे करोड़ी** (राजस्व के आकलन और संग्रह दोनों के प्रभारी), **अमीन** (राजस्व का आकलन), **कानूनगो** (परगना का स्थानीय राजस्व अधिकारी), **शिकदार** (राजस्व संग्रह के प्रभारी और कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए), **मुकद्दम** (गांव का मुखिया) और **पटवारी** (गांव की भूमि के राज्य और अर्थव्यवस्था के रिकॉर्ड, व्यक्तिगत किसानों की जोत, उगाई जाने वाली फसलों की विविधता और परती भूमि के बारे में विवरण) आदि।

जमींदारों

- उपलब्ध मुगल साहित्य में, ज़मींदार शब्द का प्रयोग बहुत व्यापक अर्थ में किया गया था। इसमें **गाँवों के छोटे-मोटे ज़मींदार** , पुराने शासक परिवारों के वंशज, जो अपनी पैतृक ज़मीन का थोड़ा-बहुत हिस्सा अपने पास रखते थे, और राजपूत व अन्य सरदार शामिल थे, जो अपनी रियासतों में स्वायत्त प्रशासनिक अधिकार का प्रयोग करते थे।
- **उन्हें कई गाँवों से भू-राजस्व वसूलने का वंशानुगत अधिकार प्राप्त था, जिसे ज़मींदारी कहा जाता था।** इस उद्देश्य के लिए उन्हें एकत्रित राजस्व में से एक हिस्सा मिलता था, जो कभी-कभी **एकत्रित राजस्व का 25 प्रतिशत तक हो सकता था। ज़मींदारी के अंतर्गत आने वाली ज़मीनों का स्वामित्व** उनके पास नहीं था, बल्कि उन्हें किसानों से राजस्व वसूलने का अधिकार था , बशर्ते वे समय पर उसका भुगतान करें। एकत्रित राजस्व और राज्य को भेजी जाने वाली राशि के बीच का अंतर उनकी व्यक्तिगत आय होती थी। प्रशासनिक और सामाजिक मामलों में उनका स्थानीय स्तर पर काफी प्रभाव था।
- राजनीतिक रूप से, मुगल सरकार और ज़मींदारों के बीच टकराव था, फिर भी एक वर्ग के रूप में ज़मींदार साम्राज्य के कामकाज का मुख्य आधार बने रहे। **ज़मींदार अक्सर बड़ी सेना और किलों की कमान संभालते थे और परिणामस्वरूप, कभी-कभी राज्य को राजस्व वसूली के लिए विद्रोही ज़मींदारों के खिलाफ सैन्य बल का प्रयोग करना पड़ता था।**

भूमि राजस्व के अलावा अन्य कर

- राजस्व के मुख्य स्रोत **शिल्प उत्पादन पर टोल और शुल्क, बाजार शुल्क, अंतर्देशीय और विदेशी व्यापार पर सीमा शुल्क और सड़क कर, और टकसाल शुल्क** थे ।
- राज्य के खजाने में विभिन्न क्षेत्रों से **युद्ध की लूट, कर और उपहारों** के रूप में भारी योगदान प्राप्त होता था । **बाज़ार में बिकने वाली वस्तुओं पर कर लगाया जाता था** । कलाकारों और व्यापारियों पर भी कर लगाया जाता था।

राहदारी या पारगमन कर

- यह **सड़क कर था जो देश के भीतर और बाहर व्यापार पर लगाया जाता था** । यह कर **नदी मार्गों पर भी वसूला जाता** था ।
- **राहदारी के लिए कोई निश्चित दर नहीं** थी तथा इसे प्रति मन, प्रति भार, प्रति गाड़ी के हिसाब से वसूला जा सकता था, या कभी-कभी एकमुश्त राशि भी ली जाती थी।
- सम्राट कभी-कभी लोगों को सांत्वना देने तथा उनके कष्टों को कम करने के लिए रेहदारी माफ करने का आदेश देते थे।

कटरापार्चा

- यह **व्यापारियों और कारीगरों से उनके उत्पादों पर वसूला जाने वाला कर** था । इसके अंतर्गत सभी प्रकार के सूती, रेशमी और ऊनी कपड़े, नील, शोरा और नमक आदि आते थे।

सीमा शुल्क कर

- यह **कर तब लगाया जाता था जब माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता था** । बंदरगाहों के माध्यम से लाए गए सभी माल पर **सीमा शुल्क** लगाया जाता था ।
- अबू फ़ज़ल अकबर के शासनकाल में प्रचलित दरों के बारे में कुछ जानकारी देते हैं। अकबर के समय में 2.5 प्रतिशत की दर वसूली जाती थी, जो सत्रहवीं शताब्दी में **बढ़कर 4-5 प्रतिशत हो गई ।**

इन करों के संग्रह के तरीके

- राज्य भू-राजस्व और भू-राजस्व के अलावा अन्य करों से होने वाली आय के लिए अलग-अलग खाते रखता था। इस उद्देश्य से, करों को **दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था** :
  - **माल-ओजिहाट (भू-राजस्व से संबंधित)** और
  - **सैर-जिहात (व्यापार और व्यापार से प्राप्त कर)**
    - सुविधाजनक मूल्यांकन और संग्रह के लिए बड़े शहरों और कस्बों में महलात-इसैर या सैरमहल नामक अलग - **अलग राजकोषीय प्रभाग बनाए गए।**
- महल **एक पूर्णतया राजकोषीय प्रभाग था** और परगना से भिन्न था जो राजस्व और प्रादेशिक दोनों प्रभाग था।
- **मुतसद्दी बंदरगाहों पर करों के संग्रह के लिए ज़िम्मेदार मुख्य अधिकारी था** । मुशरिफ, तहवीलदार और दरोगा-ए-खज़ाना मुतसद्दी के अधीन काम करने वाले कुछ अधिकारी थे जो सीमा शुल्क के मूल्यांकन और वसूली तथा लेखा-जोखा रखने में उसकी सहायता करते थे। बाज़ार दर व्यापारियों और सीमा शुल्क घराने द्वारा निर्धारित की जाती थी।

मुद्रा प्रणाली

- **किसी साम्राज्य के सिक्के** उस समय की संस्कृति और आर्थिक स्थिति का प्रतीक होते हैं। मुगलों के पास एक सुव्यवस्थित और परिष्कृत मौद्रिक प्रणाली थी। शाही मुद्रा-ढाल मात्रा और गुणवत्ता, दोनों ही दृष्टि से अभूतपूर्व थी। **सिक्कों का प्रचलन बाबर के शासनकाल में शुरू हुआ और हुमायूँ के शासनकाल तक जारी रहा।** किसी भी प्रकार की भ्रष्टता से मुक्त मुद्रा-ढाल स्थापित करने का श्रेय शेरशाह को जाता है, लेकिन **अकबर के शासनकाल में ही मुद्रा-ढाल पूरी तरह से परिपक्व हुई** ।
- मुगल साम्राज्य में **सोने, चांदी और तांबे से बनी त्रि-धातु मुद्रा** प्रचलित थी, जो उनके विशाल साम्राज्य में उच्च स्तर की शुद्धता और **एकरूपता रखती थी। हालाँकि, चांदी का सिक्का राजकोषीय और मौद्रिक प्रणाली का आधार था।**
- हालाँकि दिल्ली सल्तनत के दौरान चाँदी के सिक्कों का प्रचलन मुगलों से पहले का एक लंबा इतिहास रहा था, **लेकिन शेरशाह ने ही पहली बार चाँदी के सिक्के का मानकीकरण किया।** इसे **रुपिया** कहा जाता था और इसका **वज़न 178 ग्रेन** था । ढलाई के लिए, इसमें एक मिश्र धातु मिलाई जाती थी जिसका वज़न सिक्के के वज़न के 4 प्रतिशत से कम रखा जाता था। **अकबर ने भी लगभग उसी वज़न के साथ रुपिया को मूल मुद्रा के रूप में जारी रखा** । औरंगज़ेब के शासनकाल में रुपिया का वज़न बढ़ाकर 180 ग्रेन कर दिया गया। चाँदी का रुपिया व्यापार और राजस्व लेन-देन के लिए इस्तेमाल होने वाला मुख्य सिक्का था।
- मुगलों **ने मुहर नामक एक सोने का सिक्का जारी किया, जिसका वजन 169 ग्रेन था।** इस सिक्के का **इस्तेमाल आमतौर पर** व्यापारिक लेन-देन में नहीं होता था क्योंकि इसका आंतरिक मूल्य बहुत अधिक होता था और इसे उपहार के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। **छोटे लेन-देन के लिए सबसे आम सिक्का तांबे का दाम था जिसका वजन लगभग 323 ग्रेन था** । औरंगजेब के शासनकाल में तांबे की कमी के कारण तांबे के दाम का वजन एक तिहाई कम कर दिया गया था। मुगल बादशाहों ने छोटे मूल्यवर्ग के सिक्के भी जारी किए, जिनमें **निसार** सबसे आम था। इसके अलावा, तटीय क्षेत्रों में छोटे लेन-देन के लिए **कौरियों का इस्तेमाल किया जाता था।**
- पहले भारी वजन वाले सिक्के आम थे और हल्के वजन वाले सिक्के दुर्लभ थे, लेकिन समय के साथ हल्के वजन वाले सिक्के लोकप्रिय हो गए और भारी वजन वाले सिक्के दुर्लभ हो गए। सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों का विनिमय मूल्य बाजार में इन धातुओं की आपूर्ति के आधार पर उतार-चढ़ाव करता रहता था।

- मुगलों **ने एक स्वतंत्र सिक्का प्रणाली अपनाई, अर्थात कोई भी व्यक्ति अपनी मुद्रा लेकर टकसाल में आकर उसे ढाल सकता था। सिक्के जारी करने का एकमात्र अधिकार राज्य के पास था और कोई अन्य व्यक्ति उन्हें जारी नहीं कर सकता था** । सिक्कों की शुद्धता बनाए रखने के लिए एक बहुत ही सख्त मानकीकरण का पालन किया जाता था। पूरे साम्राज्य में बड़े शहरों में बड़ी संख्या में टकसालें स्थापित की गईं।
- प्रत्येक सिक्के पर जारीकर्ता टकसाल का नाम, ढलाई का वर्ष और शासक का नाम अंकित होता था। **मुद्रा में नए ढाले गए सिक्कों को ताज़ा सिक्का कहा जाता था,** जबकि **पूर्ववर्ती शासनकाल में ढाले गए सिक्कों को खजाना कहा जाता था** । ताज़ा सिक्के को छोड़कर अन्य सभी सिक्कों के मूल्य में कमी की जाती थी।

न्यायतंत्र

- **मुगलों की न्यायिक व्यवस्था सल्तनत काल की न्यायिक व्यवस्था से काफी मिलती-जुलती थी** । विवादों का निपटारा शीघ्रता से, प्रायः समता और प्राकृतिक न्याय के आधार पर होता था, हालाँकि **मुसलमानों के मामले में इस्लामी कानून के आदेश और पूर्वसिद्धांत जहाँ मौजूद थे, लागू होते थे** । न्यायिक व्यवस्था का उद्देश्य मुख्यतः व्यक्तिगत शिकायतों और विवादों का निपटारा करना था, न कि किसी कानूनी संहिता को लागू करना, जैसा कि इस तथ्य से संकेत मिलता है कि **फौजदारी अदालत को सामान्यतः दीवान-ए-मजालिम, यानी** शिकायतों की अदालत, कहा जाता था।
- सभी विदेशी यात्रियों ने मुगल दरबारों के **त्वरित न्याय** और उनके समक्ष अपेक्षाकृत कम मुकदमों के आने पर टिप्पणी की है। यह टिप्पणी आंशिक रूप से मुकदमेबाजी के प्रति सामान्य पूर्वाग्रह के कारण थी, लेकिन इससे भी अधिक इस तथ्य के कारण थी कि बड़ी संख्या में विवाद, विशेष रूप से हिंदुओं से संबंधित विवाद, ग्राम और जाति पंचायतों द्वारा सुलझाए जाते थे, और आधिकारिक अदालतों में नहीं आते थे।
- **न्याय के सभी मामलों में सम्राट सर्वोच्च था** । शाही स्तर पर **सम्राट का दरबार था - अंतिम अपील का न्यायालय । यह दीवानी और फौजदारी, दोनों तरह के मामलों का** निपटारा करता था और इसके पास अपील और पुनरीक्षण संबंधी शक्तियाँ थीं। अकबर दिन के कई घंटे न्यायिक मामलों के निपटारे में बिताते थे, और प्रांतों में राज्यपाल भी यही प्रक्रिया अपनाते थे।
- **सैन्य मामलों के लिए अलग अदालतें** थीं । राजस्व मामलों से निपटने के लिए विशेष रूप से अदालतें थीं। **मुख्य राजस्व अदालत की अध्यक्षता शाही दीवान करता था** । प्रांतीय स्तर पर **दीवान-ए-सूबा होता था जो आमिल के आदेशों के विरुद्ध अपीलों का निपटारा करता था** । राजस्व मामलों में भी उसके पास मूल शक्तियाँ थीं। इसी प्रकार **सरकार और परगना स्तर पर भी अदालतें थीं।** निचली अदालतें दीवानी और फौजदारी मामलों के संबंध में निम्नलिखित पदानुक्रम में कार्य करती थीं:
  - **सूबा:** इस स्तर पर, नाज़िम की अदालत थी जिसके पास मूल, अपीलीय और पुनरीक्षण प्राधिकार था और काजी-ए-सूबा की अदालत थी जो कैनन कानून के मामलों की सुनवाई करती थी।
  - **सरकार:** जिला अदालतों की अध्यक्षता काजी-ए-सरकार द्वारा की जाती थी, जिसके निर्णयों के विरुद्ध अपील काजी-ए-सूबा के पास होती थी, तथा कानून और व्यवस्था के मामलों के लिए फौजदारी अदालत होती थी।
  - **परगना:** अदालत परगना का अध्यक्ष काजी-ए-परगना होता था, जिसके निर्णयों के विरुद्ध अपील काजी-ए-सरकार के पास होती थी।

उत्तराधिकार की नीति

- मुगल **उत्तराधिकार नीति को साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण बताया जाता है । उन्होंने उत्तराधिकार के किसी भी नियम का पालन नहीं किया, जैसे कि ज्येष्ठाधिकार का नियम, जिसमें सबसे बड़ा पुत्र अपने पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी होता है।** इसके बजाय, **उन्होंने सहदायिक उत्तराधिकार, या सभी पुत्रों के बीच उत्तराधिकार के बँटवारे की मुगल और तैमूरी परंपरा का पालन किया।**
  - परिणामस्वरूप, **जब भी कोई शासक मरता था, तो भाइयों के बीच गद्दी के लिए उत्तराधिकार का युद्ध शुरू हो जाता था** । गद्दी हथियाने के लिए बेटों ने पिताओं के खिलाफ विद्रोह किया। भाइयों ने उत्तराधिकार के युद्ध लड़े। जहाँगीर ने राजकुमार सलीम के रूप में अपने पिता अकबर के खिलाफ विद्रोह किया, शाहजहाँ ने जहाँगीर के खिलाफ विद्रोह

किया, और औरंगज़ेब ने शाहजहाँ के खिलाफ विद्रोह किया। भाइयों के बीच भ्रातृघाती युद्ध अधिक गंभीर प्रकृति के थे। शाहजहाँ ने सत्ता के लिए अपने भाई की हत्या की; औरंगज़ेब अपने भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा।

- **उत्तराधिकार की इस कमज़ोर नीति ने मुग़ल साम्राज्य को कमज़ोर कर दिया**, और ख़ासकर औरंगज़ेब के बाद यह बीमारी और भी गंभीर हो गई। एक मुग़ल राजकुमार के लिए केवल दो ही विकल्प थे, या तो सिंहासन या ताबूत।
- **धीरे-धीरे, कुलीन वर्ग किसी एक दावेदार का पक्ष लेकर बहुत शक्तिशाली हो गया।** इससे साम्राज्य आंतरिक रूप से कमज़ोर हो गया और कुलीन वर्ग के निजी स्वार्थों को हवा मिल गई।

प्रशासनिक इकाई	कार्य प्रभारित
सूबा (प्रांत)	**सिपहसालार / सूबेदार / निज़ाम** - मुख्य कार्यकारी, **दीवान** - राजस्व विभाग के प्रभारी
सरकार (जिला)	**फौजदार** - प्रशासनिक प्रमुख, **अमल/ अमलगुजार** - राजस्व संग्रह
परगना (तालुका)	**सिकदार** - प्रशासनिक प्रमुख अमीन, **क़ानूनगो** - राजस्व अधिकारी
ग्राम (गाँव)	**Muqaddam** – Headman, **Patwari** – Accountant

मुगलों के अन्य भारतीय राज्यों के साथ संबंध

- जब बाबर **काबुल पर शासन कर रहा था, तो उसने इब्राहिम लोदी को हटाने के लिए दौलत खान लोदी से एक दूतावास प्राप्त किया,** क्योंकि इब्राहिम लोदी एक अत्याचारी था और उसे अपने सरदारों से कोई समर्थन नहीं मिल रहा था।
- **राणा सांगा ने बाबर को भी भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया**। उन्हें उम्मीद थी कि तैमूर की तरह बाबर भी दिल्ली को लूटने और लोदियों को कमज़ोर करने के बाद वापस लौट जाएगा, लेकिन बाबर के भारत में रुकने के फैसले ने स्थिति को पूरी तरह बदल दिया। राणा मित्र से शत्रु बन गए और सभी उनके पीछे एकजुट हो गए। मुगलों की विस्तारवादी महत्वाकांक्षाओं और दिल्ली पर शासन करने की अन्य इच्छाओं ने उन्हें लगभग सभी पड़ोसी शासकों के साथ संघर्ष में डाल दिया।

राजपूतों

- **बाबर की राजपूतों के प्रति कोई सुनियोजित नीति नहीं थी**। उसे मेवाड़ के राणा सांगा और चंदेरी के मेदिनी राय के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा क्योंकि भारत में उसके साम्राज्य की स्थापना और सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था। उसने **इन दोनों अवसरों पर जिहाद की घोषणा की और स्वयं को एक कट्टर मुसलमान के रूप में प्रस्तुत किया**। इसके बाद उसने **हुमायूँ का विवाह एक राजपूत राजकुमारी से कराया** और राजपूतों को सेना में नियुक्त किया। इस प्रकार, उसने **न तो राजपूतों से मित्रता करने का प्रयास किया और न ही उन्हें अपना स्थायी शत्रु माना**।
- **हुमायूँ ने राजपूतों के प्रति कमोबेश** अपने पिता जैसी ही नीति अपनाई। उसने गुजरात के बहादुर शाह के विरुद्ध मेवाड़ की सहायता करने से परहेज़ किया, तब भी जब मेवाड़ की रानी कर्णवती ने उसकी बहन बनने का प्रस्ताव रखा था। वह शेरशाह के विरुद्ध मारवाड़ के मालदेव का समर्थन पाने में भी असफल रहा।
- **अकबर राजपूतों के प्रति सुनियोजित नीति अपनाने वाला पहला मुग़ल बादशाह था**। उसकी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएँ थीं और वह भारत के अधिक से अधिक भूभाग को अपने शासन में लाने का प्रयास करता था। **अकबर राजपूतों को अपना शत्रु बनाने के बजाय उनसे मित्रता करना पसंद करता था**। वह राजपूतों की वीरता, निष्ठा, युद्ध कौशल आदि से प्रभावित था और उसे विश्वास था कि अपनी शक्ति और वंश को कायम रखने का एकमात्र उपाय राजपूतों का समर्थन प्राप्त करना ही था।
  - उन्होंने उन्हीं लोगों के अनेक विद्रोह देखे जिन पर मुग़ल सत्ता निर्भर थी और इसलिए, वे विदेशियों पर निर्भर रहने के बजाय भारतीय लोगों में से ही विश्वसनीय सहयोगी चाहते थे। इसलिए, राजपूत एक अच्छा विकल्प साबित हुए। **अकबर की उदार धार्मिक नीति ने भी उन्हें राजपूतों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया।**
  - अकबर ने निम्नलिखित कदम उठाए जिससे राजपूत शासकों का प्रभुत्व और भी बढ़ गया। **उसने चित्तौड़, रणथंभौर और कालिंजर जैसे राजपूतों के मज़बूत किलों पर कब्ज़ा कर लिया और इस तरह राजपूतों की प्रतिरोध करने की क्षमता कमज़ोर कर दी। जिन राजपूत शासकों ने या तो उसकी संप्रभुता स्वीकार कर ली या स्वेच्छा से उसके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर लिए, उन्हें अपने राज्यों का स्वामी बना दिया गया।** उन्हें राज्य में उच्च पद दिए गए और उनके प्रशासन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया। **हालाँकि, उन्हें सम्राट को वार्षिक कर देने के लिए कहा गया।**
  - **जो लोग उसका विरोध करते थे, उन पर आक्रमण किए जाते थे** और उन्हें अपनी प्रभुसत्ता स्वीकार करने के लिए बाध्य करने का प्रयास किया जाता था। **मेवाड़** इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।
  - इस नीति के अनुसरण में, अकबर ने अंबर के राजा भारमल की अधीनता स्वीकार कर ली और जनवरी 1562 में उस कछवाहा शासक परिवार के साथ वैवाहिक गठबंधन का स्वागत किया। उसने भगवंत दास और राजा मान सिंह को अपनी सेवा में लिया, और जल्द ही उसे पता चला कि वे बहुत वफ़ादार और सेवाभावी थे। **वास्तव में, कछवाहा की वफ़ादारी और समर्पण का अनुभव करने के बाद ही अकबर** ने देश के अन्य राजपूत सरदारों को उसे अपना अधिपति स्वीकार करने और उसके सर्वोच्च मुस्लिम अधिकारियों और सेनापतियों के साथ समानता के आधार पर उसकी सेवा में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने का निर्णय लिया। इस तरह के व्यवहार के कारण, राजस्थान के लगभग सभी राज्यों ने उसके साथ संधि कर ली और उनके सरदारों को मनसबदार के रूप में नामांकित किया गया।

- लेकिन उपरोक्त परिणाम सैन्य प्रदर्शन और युद्ध के बिना प्राप्त नहीं हुए। मेड़ता 1542 में, रणथंभौर 1568 में और मारवाड़, बीकानेर और जैसलमेर 1570 में बिना किसी प्रतिरोध के हार गए। राजस्थान और मध्य भारत के अन्य राज्यों ने भी ऐसा ही किया। केवल मेवाड़ ने ही इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। लंबी घेराबंदी के बाद, चित्तौड़ भी हार गया।
- अकबर की राजपूत नीति व्यापक धार्मिक सहिष्णुता की नीति से जुड़ी हुई थी। 1564 में उन्होंने जजिया कर समाप्त कर दिया, जिसका इस्तेमाल कभी-कभी उल्मा गैर-मुसलमानों को अपमानित करने के लिए करते थे। इससे पहले उन्होंने तीर्थयात्रा कर और युद्धबंदियों के जबरन धर्म परिवर्तन की प्रथा को भी समाप्त कर दिया था।
- अकबर की राजपूत नीति **मुग़ल राज्य** और राजपूतों दोनों के लिए लाभदायक सिद्ध हुई। इस गठबंधन ने मुग़ल साम्राज्य को भारत के सबसे बहादुर योद्धाओं की सेवाएँ प्रदान कीं।
- राजपूतों की अटूट निष्ठा साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण और विस्तार में एक महत्वपूर्ण कारक बनी। इस गठबंधन ने राजस्थान में शांति सुनिश्चित की और राजपूतों को अपनी मातृभूमि की सुरक्षा की चिंता किए बिना साम्राज्य के दूर-दराज के इलाकों में सेवा करने में सक्षम बनाया।
- **अकबर की राजपूत नीति का उसके पुत्र जहाँगीर ने भी उसी उदारता से पालन किया,** लेकिन साथ ही उसने मेवाड़ को अधीनता में लाने का भी प्रयास किया, जिसने अब तक उसे स्वीकार नहीं किया था। उसने अपने शासनकाल के आरंभ से ही मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए एक के बाद एक कई मुगल सेनाएँ भेजीं। राणा अमर सिंह ने अपने पिता के समान ही उत्साह के साथ मुगलों के विरुद्ध युद्ध लड़ा। शुरुआत में उन्होंने अधीनता स्वीकार करने से इनकार कर दिया, लेकिन अंततः अपने पुत्र राजकुमार कर्ण और अपने कुछ सरदारों की सलाह पर वे शांति के लिए सहमत हो गए और 1615 ई. में मुगलों के साथ संधि पर हस्ताक्षर किए गए।
- संधि के अनुसार, राणा ने मुगल सम्राट जहाँगीर की संप्रभुता स्वीकार कर ली और स्वयं के स्थान पर अपने पुत्र और उत्तराधिकारी, राजकुमार कर्ण को मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए नियुक्त किया। जहाँगीर ने चित्तौड़ के किले सहित मेवाड़ का सारा क्षेत्र राणा को इस शर्त पर लौटा दिया कि उसकी मरम्मत नहीं की जाएगी। इस प्रकार, मेवाड़ और मुगलों के बीच लंबे समय से चल रहा संघर्ष अंततः समाप्त हो गया।
- **शाहजहाँ ने अपने पिता और दादा की नीति जारी रखी, यद्यपि उच्च पदों पर राजपूतों की संख्या कम होती जा रही थी।**
- **औरंगजेब ने उस नीति को उलट दिया** जिसे अकबर ने प्रतिपादित किया था तथा जिसका अनुसरण जहांगीर और शाहजहां ने किया था।
- **हिंदुओं के विरुद्ध उसकी नीति के मार्ग में राजपूत सबसे बड़ी बाधा थे।** इसलिए, औरंगज़ेब ने राजपूतों की शक्ति को नष्ट करने और उनके राज्यों को हड़पने का प्रयास किया।
- उस समय तीन महत्वपूर्ण राजपूत शासक थे, **मारवाड़ के राजा जसवंत सिंह, मेवाड़ के राणा राज सिंह और जयपुर के राजा जय सिंह।** औरंगज़ेब के गद्दी पर बैठने के समय, तीनों मुगलों के साथ शांतिपूर्वक संबंध बनाए हुए थे। लेकिन, औरंगज़ेब ने इन राजपूत शासकों की वफ़ादारी पर कभी भरोसा नहीं किया और इस तरह उसने अपने अनमोल दोस्तों को भी खतरनाक दुश्मनों में बदल दिया।
- राजपूत **, जो अकबर के शासनकाल से ही मुग़ल साम्राज्य के सबसे बड़े समर्थकों में से एक थे, ने औरंगज़ेब के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।** उनकी सेवाओं का उपयोग मुग़ल साम्राज्य को मज़बूत करने में नहीं किया जा सका। इसके विपरीत, इससे साम्राज्य की परेशानियाँ और बढ़ गईं। इससे अन्य विद्रोहों को भी बढ़ावा मिला।
- इस प्रकार, **औरंगजेब की राजपूत नीति विफल हो गई और इसकी विफलता ने औरंगजेब की विफलता में योगदान दिया और परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया।**

दक्कन और दक्षिण भारतीय राज्य

- मुगलों की दक्कन नीति निम्नलिखित कारकों द्वारा निर्देशित थी जैसे **क्षेत्र का सामरिक महत्व, मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक और आर्थिक आवश्यकताएं आदि।**

- **बाबर और हुमायूँ ने एक कमज़ोर दक्कन नीति अपनाई** क्योंकि उनके पास दक्षिण पर ध्यान केंद्रित करने का समय नहीं था। जब बाबर ने भारत पर आक्रमण किया, तब दक्षिण में छह मुस्लिम राज्य थे, **खानदेश, बरार, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा और बीदर, और एक हिंदू राज्य विजयनगर । बाबर के अनुसार, विजयनगर राज्य उनमें सबसे शक्तिशाली था।**
- यह केवल **अकबर ही था जिसने दक्कन के राज्यों पर मुग़ल आधिपत्य बढ़ाने के प्रयास किए** । उसने दक्कन में मुग़ल प्रभाव का विस्तार करने का निश्चय किया ताकि गुजरात के बंदरगाहों तक व्यापार मार्गों की रक्षा की जा सके और पश्चिमी तट पर एक शक्ति के रूप में उभरे पुर्तगालियों पर नियंत्रण रखा जा सके।
- 1591 ई. में, उसने खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा में अपने राजदूत भेजे और उनसे अपनी संप्रभुता स्वीकार करने का अनुरोध किया। कई वर्षों की कड़ी लड़ाई के बाद, मुगलों ने बरार, अहमदनगर और दौलताबाद के क्षेत्रों और किलों पर कब्ज़ा करने में सफलता प्राप्त की। मुगलों ने खानदेश पर आक्रमण किया, बुरहानपुर और असीरगढ़ के किलों पर कब्ज़ा किया और अंततः खानदेश के सभी क्षेत्रों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। **अकबर अपने जीवनकाल में बीजापुर और गोलकुंडा के विरुद्ध कोई कार्रवाई करने में असफल रहा** ।
- इस प्रकार, **अकबर ने खानदेश पर कब्जा कर लिया, अहमदनगर के क्षेत्र के एक हिस्से पर कब्जा कर लिया, दौलताबाद, अहमदनगर, बुरहानपुर, असीरगढ़ आदि जैसे कुछ मजबूत किलों पर कब्जा कर लिया** , और इस प्रकार न केवल दक्कन में मुगलों की शक्ति स्थापित की, बल्कि अपने उत्तराधिकारियों के लिए दक्कन की विजय का मार्ग भी प्रशस्त किया।
- **जहाँगीर ने दक्कन में अकबर की नीति का अनुसरण करने की कोशिश की, लेकिन अपनी अन्य व्यस्तताओं और मुगल सेनापतियों के बीच प्रतिद्वंद्विता और झगड़े के कारण,** जो उसकी योजनाओं को लागू नहीं कर रहे थे, वह ऐसा नहीं कर सका। इसके अलावा, अहमदनगर के वज़ीर मलिक अंबर के रूप में उनका एक दुर्जेय प्रतिद्वंदी भी था।
- मलिक अंबर ने अहमदनगर की अर्थव्यवस्था में सुधार किया, मराठा सैनिकों को गुरिल्ला युद्ध में प्रशिक्षित किया, मुगलों के खिलाफ आक्रामक युद्ध लड़े और जहांगीर के शासनकाल के शुरुआती दौर में मुगलों से अहमदनगर का किला और अहमदनगर राज्य के कुछ अन्य क्षेत्र वापस ले लिए।
- 1617 ई. में **, जहाँगीर ने राजकुमार खुर्रम को दक्कन में नियुक्त किया** और उसे एक संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया, जिसके तहत अहमदनगर का किला और बालाघाट का क्षेत्र मुगलों को सौंप दिया गया। **जहाँगीर ने उसी समय राजकुमार खुर्रम को शाहजहाँ की उपाधि दी।**
- **शाहजहाँ ने दक्कन के राज्यों को या तो अपने अधीन करने का प्रयास किया या उन्हें सम्राट की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर किया।** वह एक योग्य सेनापति था और दक्कन की राजनीति को अच्छी तरह समझता था। मलिक अंबर की मृत्यु ने उसे अहमदनगर पर दबाव बनाने का अच्छा अवसर प्रदान किया और कुछ ही समय बाद अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया गया।
- **औरंगज़ेब की दक्कन नीति का राजनीतिक और धार्मिक दोनों ही उद्देश्य थे** । साम्राज्य का विस्तार भी औरंगज़ेब के उद्देश्यों में से एक था। ऐसा माना जाता है कि दक्कन में मराठों की शक्ति के विनाश के लिए बीजापुर और गोलकुंडा राज्यों का विनाश एक पूर्व आवश्यकता थी। इस राजनीतिक उद्देश्य के अलावा, वह इन राज्यों को अपने अधीन करना चाहता था क्योंकि उनके शासक शिया थे। इसलिए, **औरंगज़ेब केवल उनके द्वारा अपनी अधीनता स्वीकार करने से संतुष्ट नहीं था, बल्कि वह उन्हें मुग़ल साम्राज्य में मिलाना चाहता था।**
- औरंगज़ेब अपने शासन के पहले पच्चीस वर्षों तक उत्तर में ही व्यस्त रहा। 1686 में ही वह स्वयं बीजापुर पहुँचा और उसने मुगल आधिपत्य के आगे आत्मसमर्पण कर दिया।
- **उस समय गोलकुंडा पर कुतुब शाही शासकों का शासन था** । औरंगज़ेब ने राजकुमार शाह आलम को गोलकुंडा पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त किया और 1687 में यह मुगल साम्राज्य के अधीन आ गया। बीजापुर और गोलकुंडा की विजय से औरंगज़ेब की दक्कन विजय पूरी नहीं हुई। शिवाजी के नेतृत्व में मराठों की नई उभरती शक्ति अभी भी उसके लिए एक शक्तिशाली चुनौती थी। शिवाजी ने महाराष्ट्र में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया था।
- **जब औरंगज़ेब बादशाह बना, तो उसने शिवाजी को दबाने के लिए सईस्ता ख़ाँ को नियुक्त किया, लेकिन सईस्ता ख़ाँ असफल रहा।** औरंगज़ेब ने उसे वापस बुला लिया और **राजा जय सिंह को शिवाजी पर आक्रमण करने के लिए नियुक्त**

किया। जय सिंह ने शिवाजी को पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया, जिसके तहत उन्होंने अपने तीन-चौथाई क्षेत्र और किले समर्पित कर दिए। शिवाजी 1666 ई. में आगरा आए, जहाँ उन्हें लगभग बंदी बना लिया गया था। हालाँकि, वे आगरा से भागने में सफल रहे। **उन्होंने मुगलों के खिलाफ लड़ाई शुरू की, लेकिन बाद में 1680 में उनकी मृत्यु हो गई।**

- **औरंगज़ेब 1682 ई. में दक्कन पहुँचा और 1689 ई. में शंभूजी को पकड़ने में सफल रहा**। शंभूजी की हत्या कर दी गई और पूरे महाराष्ट्र पर औरंगज़ेब का कब्ज़ा हो गया। इस तरह औरंगज़ेब की दक्षिण विजय पूरी हो गई।
- मुगलों की दक्कन नीति औरंगजेब के शासनकाल में अपनी चरम सफलता पर पहुँची। लेकिन यह एक **अस्थायी सफलता** थी । औरंगजेब द्वारा दक्षिण की विजय ने मुगल साम्राज्य की सीमा को इतना विस्तृत कर दिया कि **एक स्थान से उसका शासन चलाना असंभव हो गया** । दक्कन में निरंतर युद्धों ने साम्राज्य की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया। **मराठों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और उसकी दक्कन नीति को ध्वस्त कर दिया।** औरंगजेब की दक्कन नीति की विफलता के परिणामस्वरूप मुगल साम्राज्य का विघटन हुआ।

सिखों

- **बाबर सिख गुरु गोबिंद सिंह के आध्यात्मिक आचरण से प्रेरित था**। सिख परंपरा के अनुसार, सम्राट हुमायूँ ने 1540 में ईरान भागते समय, गुरु अंगद से आशीर्वाद लेने के लिए खडूर में उनसे मुलाकात की थी। **अपनी धार्मिक नीति में उदार अकबर ने गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जन देव का बहुत सम्मान किया।**
- उनके पुत्र और उत्तराधिकारी **जहाँगीर उतने उदार हृदय वाले नहीं थे** । **उन्होंने गुरु अर्जन देव को फाँसी लगवा दी और गुरु हरगोबिंद को कुछ समय के लिए कैद कर लिया**, हालाँकि बाद में उन्होंने गुरु हरगोबिंद के प्रति मित्रवत रवैया अपनाया। **गुरु हरगोबिंद ने सिख समुदाय के जीवन को एक सैन्य मोड़ दिया**, और उनके जीवनकाल में शाही सैनिकों के साथ सशस्त्र संघर्ष हुए।
- सिखों **का औरंगज़ेब के साथ सैन्य संघर्ष सबसे अंत में हुआ** ; हालाँकि, संघर्ष के कारण धार्मिक नहीं, बल्कि राजनीतिक और व्यक्तिगत थे। गुरुओं ने सशस्त्र अनुयायियों के साथ शानदार जीवन जीना शुरू कर दिया था और **सच्चपादशाह** (सच्चे शासक) की उपाधि धारण की थी। 1675 तक, जब तक गुरु तेग बहादुर को उनके पाँच अनुयायियों के साथ गिरफ्तार नहीं कर लिया गया, दिल्ली नहीं लाया गया और उन्हें फाँसी नहीं दे दी गई, **तब तक सिख गुरु और औरंगज़ेब के बीच कोई संघर्ष नहीं हुआ।**
- तेग बहादुर की फाँसी का कारण स्पष्ट नहीं था। कुछ फ़ारसी लोगों का मानना था कि तेग बहादुर ने हाफ़िज़ आदम (एक पठान) के साथ मिलकर पंजाब में उपद्रव मचाया था। दूसरी ओर, सिख परंपरा के अनुसार, फाँसी उनके परिवार के कुछ सदस्यों द्वारा गुरु के विरुद्ध रची गई साज़िशों के कारण हुई थी, जिन्होंने उनके उत्तराधिकार को चुनौती दी थी।
- कुछ इतिहासकारों ने लिखा है कि औरंगजेब तेग बहादुर द्वारा कुछ मुसलमानों को सिख बनाने के कदम से नाराज था और उसने स्थानीय गवर्नर द्वारा कश्मीर में धार्मिक उत्पीड़न के खिलाफ विरोध जताया था।
- **कारण चाहे जो भी हो, औरंगजेब की कार्रवाई किसी भी दृष्टिकोण से अनुचित थी और एक संकीर्ण दृष्टिकोण को दर्शाती थी**।
- इसके अलावा, गुरु तेग बहादुर की फाँसी के बाद सिखों को पंजाब के पहाड़ों पर वापस लौटना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप, **गुरु गोबिंद सिंह के नेतृत्व में सिख आंदोलन** धीरे-धीरे एक सैन्य बिरादरी में बदल गया। गुरु गोबिंद सिंह में अद्भुत संगठन क्षमता थी। **अपनी इसी कुशलता का उपयोग करते हुए, उन्होंने 1699 में "खालसा" के नाम से प्रसिद्ध सैन्य बिरादरी की स्थापना की।**
- **गुरु गोबिंद सिंह ने पंजाब की तलहटी में स्थित मखोवाल या आनंदपुर में** अपना मुख्यालय स्थापित किया । समय के साथ, गुरु अत्यधिक शक्तिशाली हो गए। गुरु गोविंद सिंह ने पहाड़ी राजाओं के विरुद्ध कई युद्ध लड़े और विजय प्राप्त की। खालसा संगठन ने इस संघर्ष में गुरु को और मज़बूत किया। 1704 में, गुरु और पहाड़ी राजाओं के बीच मतभेद उत्पन्न हो गए, और कई पहाड़ी राजाओं की संयुक्त सेना ने आनंदपुर में गुरु पर आक्रमण कर दिया। राजाओं को फिर से पीछे हटना पड़ा और उन्होंने मुगल सरकार से गुरु के विरुद्ध हस्तक्षेप करने का आग्रह किया।

- **औरंगज़ेब गुरु की बढ़ती शक्ति से चिंतित था और उसने मुगल फौजदार को गुरु को दंड देने का आदेश दिया था। मुगल सेना ने आनंदपुर पर हमला किया, लेकिन सिखों ने बहादुरी से मुकाबला किया और सभी हमलों को नाकाम कर दिया और उन्हें किले के अंदर शरण लेनी पड़ी।** मुगलों और उनके सहयोगियों ने अब उस किले पर विजय प्राप्त कर ली जिसने सभी प्रकार की आवाजाही को अवरुद्ध कर दिया था।
- परिणामस्वरूप, किले के अंदर भुखमरी शुरू हो गई और गुरु को वज़ीर खान द्वारा सुरक्षित मार्ग का वादा करके, किले का द्वार खोलने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन जब गुरु की सेनाएँ एक उफनती नदी को पार कर रही थीं, तो वज़ीर खान की सेना ने अचानक हमला कर दिया।
- **गुरु के दो पुत्रों को बंदी बना लिया गया और इस्लाम स्वीकार न करने पर उन्हें सरहिंद में फाँसी दे दी गई।** इसके अलावा, एक अन्य युद्ध में गुरु ने अपने दो शेष पुत्रों को भी खो दिया। इसके बाद, गुरु तलवंडी चले गए।

जाटों

- **आगरा-दिल्ली क्षेत्र के जाट, जो यमुना नदी के दोनों किनारों पर रहते थे, मुगल साम्राज्य से सबसे पहले भिड़े।** वे ज़्यादातर **किसान** थे , उनमें से कुछ ही ज़मींदार थे।
- भाईचारे और न्याय की प्रबल भावना के कारण, जाटों का अक्सर मुगलों से टकराव होता था। **जहाँगीर और शाहजहाँ के शासनकाल में भू-राजस्व वसूली के मुद्दे पर जाटों के साथ संघर्ष हुआ था।** दक्कन और पश्चिमी बंदरगाहों की ओर जाने वाली सभी शाही सड़कें जाट क्षेत्र से होकर गुजरती थीं, इसलिए मुगलों को जाट विद्रोहियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी पड़ी।
- 1669 में **, स्थानीय ज़मींदार गोकला के नेतृत्व में, मथुरा के जाटों ने विद्रोह कर दिया** , जो क्षेत्र के किसानों में तेज़ी से फैल गया। इस विद्रोह ने औरंगज़ेब को व्यक्तिगत रूप से गंभीर कार्रवाई करने के लिए मजबूर कर दिया। परिणामस्वरूप, जाटों की हार हुई और गोकला को पकड़कर फाँसी दे दी गई।
- **राजाराम के नेतृत्व में जाटों का दूसरा विद्रोह** हुआ और इस बार वे बेहतर तैयारी के साथ थे। हालाँकि उन्होंने कड़ा प्रतिरोध किया, फिर भी उन्हें हार का सामना करना पड़ा। जाट किसानों में असंतोष लगातार बना रहा और उनकी लूटपाट की गतिविधियों ने दिल्ली-आगरा मार्ग को यात्रियों के लिए असुरक्षित बना दिया।
- अठारहवीं शताब्दी के दौरान मुगल गृहयुद्धों और कमजोर जाट नेता चूड़ामन का लाभ उठाते हुए, क्षेत्र में एक अलग जाट रियासत की स्थापना की।

उत्तर पूर्वी राज्य

- **पूर्वोत्तर भारत के साथ मुस्लिम संपर्क का इतिहास वस्तुतः 13वीं शताब्दी के आरंभ में बंगाल में उनके आधिपत्य की स्थापना के साथ ही शुरू हुआ।** बंगाल में अपने नए कार्यक्षेत्र से, यह स्वाभाविक ही था कि मुस्लिम शासक क्षेत्रीय आक्रमण के लिए पूर्वी सीमा की ओर देखने लगे। **उत्तर-पूर्वी राज्यों के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों** - उपजाऊ भूमि, बहुमूल्य जंगली जानवरों, विशेषकर हाथियों, विभिन्न सुगंधित पौधों और शरबतों से आबाद घने जंगलों, रेशम, कस्तूरी, हाथीदांत, सोना और चाँदी आदि - ने उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को और भी बढ़ा दिया।
- **मुगल-पूर्व काल में बंगाल के मुस्लिम शासकों और कामरूप, सिलहट और त्रिपुरा के राज्यों के बीच संबंधों की प्रकृति शत्रुता और द्वेषपूर्ण थी।** मुगल काल से ही हमने इस नीति में बदलाव देखा, जिसके परिणामस्वरूप सोची-समझी चालों के विभिन्न चरण सामने आए।
- पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक कामता (कामरूप) राज्य **का पतन हो गया और उसकी जगह कुच (कूच बिहार) राज्य ने ले ली , जिसने उत्तरी बंगाल और पश्चिमी असम पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया और अहोमों के साथ संघर्ष की नीति जारी रखी।** 1612 में, मुगलों ने कुच सेनाओं की मदद से पश्चिमी असम घाटी को बार नदी तक पराजित कर उस पर कब्ज़ा कर लिया। कुच शासक मुगलों का जागीरदार बन गया। इसी प्रकार, मुगलों का संपर्क अहोमों से हुआ, जिन्होंने बार नदी के पार पूर्वी असम पर शासन किया।
- **अहोमों के साथ लंबे युद्ध के बाद, जिन्होंने पराजित राजवंश के एक राजकुमार को शरण दी थी, 1638 में उनके साथ एक संधि हुई, जिसके तहत बार नदी को मुगलों और उनके बीच की सीमा निर्धारित कर दिया गया।** इस प्रकार गुवाहाटी (असम) मुगलों के नियंत्रण में आ गया।

- **मीर जुमला, जिसे औरंगज़ेब ने बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया था, ने कूच बिहार के पूरे राज्य को मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया**। इसके बाद जुमला ने अहोम साम्राज्य पर आक्रमण किया और उसकी राजधानी गढ़गाँव पर कब्ज़ा कर लिया।
- **मीर जुमला की मृत्यु के बाद शाइस्ता खान बंगाल का गवर्नर बना।** उसने दक्षिण बंगाल की समस्या पर व्यक्तिगत ध्यान दिया, जहाँ माघ (अराकानी) समुद्री डाकू, पुर्तगाली समुद्री डाकुओं के साथ मिलकर, चटगाँव स्थित अपने मुख्यालय से ढाका (बंगाल की राजधानी) तक के इलाके में आतंक मचा रहे थे। **उसने रणनीतिक रूप से अराकानी समुद्री डाकुओं से निपटने के लिए एक बेड़ा बनाया और चटगाँव के विरुद्ध अभियान के लिए सोनदीप द्वीप पर कब्ज़ा कर लिया।** 1666 में **, उसने चटगाँव पर आक्रमण किया और उस पर कब्ज़ा कर लिया।** अराकानी नौसेना के विनाश ने समुद्र को मुक्त व्यापार और वाणिज्य के लिए खोल दिया।

The Deccan Sultanates (Post-Bahamani Era)

- भारत की एकता **और विविधता ने हमेशा उन शासकों के लिए समस्याएँ खड़ी कीं, जो भारत को भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से एक मानते थे और इसे एक व्यापक राजनीतिक सत्ता के अधीन लाने का प्रयास करते थे** । भारत के विभिन्न भागों में **क्षेत्रीय पहचान की भावना प्रबल** थी। विंध्य पर्वत के दक्षिण में स्थित भारत के मामले में ये अंतर और भी स्पष्ट थे।
- विंध्य **पर्वत दक्षिण और उत्तर के बीच की सीमा निर्धारित करते थे** , लेकिन कोई दुर्गम बाधा नहीं थे। वास्तव में, धार्मिक नेता, साधु, यात्री आदि हमेशा इन दोनों क्षेत्रों के बीच आते-जाते रहते थे। **दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद, कई सूफी संत और रोजगार की तलाश में लोग बहमनी शासकों के दरबार में चले गए थे।** राजनीतिक रूप से भी, उत्तर और दक्षिण अलग-थलग नहीं थे। पश्चिम में मालवा और गुजरात तथा पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण के साथ राजनीतिक रूप से जुड़े हुए थे, और दक्षिण के साथ भी, जैसा कि हम बहमनी और विजयनगर के संदर्भ में देख चुके हैं, और पहले राष्ट्रकूटों के साथ भी ऐसा ही था। इस प्रकार **उत्तर और दक्षिण दोनों सांस्कृतिक रूप से एक थे, हालाँकि उनकी अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं** ।
- उत्तर भारत में विजय प्राप्त करने के बाद, मुगलों का दक्षिण की ओर भी बढ़ना स्वाभाविक था। **जहाँ अकबर ने उत्तर भारत पर मुगल विजय पच्चीस वर्षों की संक्षिप्त अवधि में पूरी कर ली थी, वहीं दक्षिण में मुगल साम्राज्य का विस्तार करने और विशेष रूप से दक्कन पर विजय प्राप्त करने की उसकी इच्छा लगभग सौ वर्षों (1596-1687) तक चली, और अंततः उसे बहुत कम सफलता मिली।** इस लंबी प्रक्रिया का विश्लेषण अलग-अलग शासकों की नीतियों और प्राथमिकताओं, विभिन्न राजनीतिक समूहों और सामाजिक वर्गों के बीच आवश्यक अंतःक्रिया, भौगोलिक कारकों आदि के संदर्भ में किया जाना चाहिए।

1595 तक दक्कन

Disintegration of Vijaynagara

- पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में **शक्तिशाली** बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद , **अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा नामक तीन शक्तिशाली राज्य** अस्तित्व में आए। ये राज्य **विजयनगर के साथ-साथ एक-दूसरे से भी लगातार लड़ते रहे** ।
- हालाँकि, **उन्होंने मिलकर 1565 में तालिकोटा के निकट बन्नीहट्टी के युद्ध में विजयनगर को कुचल दिया।**

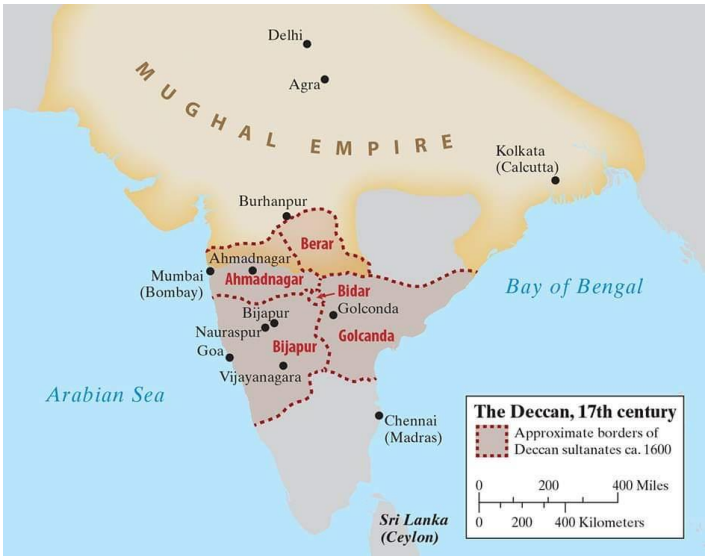

आपसी संघर्ष

- इस विजय के बाद, तीनों राज्यों में आपसी युद्ध पुनः शुरू हो गया। **अहमदनगर और बीजापुर दोनों ने शोलापुर पर अपना दावा किया, जो एक समृद्ध और उपजाऊ क्षेत्र था।**
- 1524 में, अहमदनगर के शासक बुरहान निज़ाम शाह और बीजापुर के शासक इस्माइल आदिल खान एक गठबंधन बनाने पर सहमत हुए, और इसे पक्का करने के लिए, यह तय हुआ कि इस्माइल आदिल शाह की बहन का विवाह बुरहान निज़ाम शाह से होगा और शोलापुर अहमदनगर को दहेज में दिया जाएगा। लेकिन **शादी के बाद, आदिल शाह ने शोलापुर**

का किला और उसकी उपजाऊ सरकारें अहमदनगर को सौंपने से इनकार कर दिया। इससे अहमदनगर और बीजापुर के बीच और भी दुश्मनी और कटुता बढ़ गई, और **शोलापुर की विजय दोनों के लिए सम्मान की बात मानी जाने लगी।**

- **अहमदनगर और बीजापुर की महत्वाकांक्षा** दक्कन के दो अन्य स्वतंत्र लेकिन छोटे राज्यों, बीदर और बरार, पर भी विजय पाने की थी। बीदर पुराने बहमनी साम्राज्य का शेष भाग था। **गुजरात के शासकों ने अहमदनगर के विरुद्ध बरार शासक का सक्रिय समर्थन किया** और बाद में अहमदनगर के विरुद्ध युद्ध में भी शामिल हुए।
- दूसरी ओर, **बीजापुर और गोलकुंडा के बीच नलदुर्ग (महाराष्ट्र में स्थित) पर कब्ज़ा करने को लेकर संघर्ष हुआ** । साथ ही, दोनों ने कर्नाटक में विजयनगर साम्राज्य के बचे हुए हिस्सों की कीमत पर अपनी शक्ति बढ़ाने की कोशिश की।
- इस प्रकार, **सभी प्रमुख दक्कन राज्य विस्तारवादी राज्य थे** । ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये सभी तत्व मुगलों को विदेशी मानते थे। हालाँकि, **उनकी आपसी प्रतिद्वंद्विता के कारण उत्तर से आए आक्रमणकारी, यानी मुगलों के विरुद्ध एक स्थायी संयुक्त मोर्चा बनाना उनके लिए कठिन हो गया।**

जातीय संघर्ष और सांप्रदायिक हिंसा

- इन प्रतिद्वंद्विता के अलावा, **दक्कन राज्य जातीय संघर्ष और सांप्रदायिक हिंसा से भी विचलित थे।**
  - बहमनी सल्तनत की तरह, कुलीन वर्ग **विदेशियों, जिन्हें अफ़ाक़ी या ग़रीब कहा जाता था** , और **दक्कनियों के बीच बँटा हुआ था।** दक्कनियों का विभाजन **अफ़गानों और हब्शियों के बीच था,** जो हब्शी अबीसीनिया और अफ्रीका के इरिट्रिया तट से आए थे।
  - **अफ़ाक़ियों में से कई खुरासान और ईरान से थे** , जहाँ सोलहवीं शताब्दी की शुरुआत में सफ़वियों के सत्ता में आने के साथ ही शिया धर्म राजकीय धर्म बन गया था। इसलिए, कई अफ़ाक़ियों पर शिया धर्म की ओर झुकाव का संदेह था, जिसका दक्कनी दल के सदस्य घोर विरोधी थे।
  - **बीजापुर के शासक यूसुफ आदिल शाह ने 1503-04 में शियावाद को राज्य सिद्धांत बनाया** और साथ ही **दक्कनियों को** सत्ता और प्रभाव के पदों से हटा दिया।
    - **जब दक्कनी पार्टी मजबूत हो गई, तो उसने सुन्नीवाद को बहाल किया और अफाकियों और शियावाद को सताया** ।
  - अहमदनगर में भी जातीय और सांप्रदायिक संघर्ष एक विशेषता थी। गोलकुंडा के शासकों ने 1503 से ही शिया धर्म का समर्थन किया। हालाँकि, **गोलकुंडा भी सांप्रदायिक संघर्ष से पूरी तरह बच नहीं सका** ।

महदाववाद का उदय

- एक अन्य कारक जिसने सांप्रदायिक उत्पीड़न के एक नए दौर को जन्म दिया, वह था **इस अवधि के दौरान महदाववाद का उदय।**
  - **महदवी विचार दक्कन में व्यापक रूप से फैल चुके थे।** दरअसल, **मुसलमानों का एक समूह यह मानता था कि हर युग में पैगंबर के परिवार से एक व्यक्ति प्रकट होगा और धर्म को मजबूत करेगा, और न्याय की जीत सुनिश्चित करेगा** ; मुसलमानों के ऐसे समूह को **'महदी' के नाम से जाना जाता था।**
    - भारत में, **सैयद मुहम्मद** , जिनका जन्म जौनपुर (उत्तर प्रदेश) में पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ था, ने स्वयं को महदी घोषित किया।
    - सैयद मुहम्मद ने पूरे देश के साथ-साथ इस्लामी जगत में भी यात्रा की, जिससे वहाँ काफ़ी उत्साह पैदा हुआ। उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में, दक्कन सहित, अपने **दैरे (मंडल)** स्थापित किए , जहाँ उनके विचारों को उपजाऊ ज़मीन मिली। हालाँकि, रूढ़िवादी तत्व शियावाद की तरह ही महदवावाद के भी कट्टर विरोधी थे।
    - **सैयद मुहम्मद के महदी या युग के उद्धारक होने के दावे को रूढ़िवादी सुन्नी और शिया दोनों धर्मगुरुओं ने खारिज कर दिया** ।
- रूढ़िवादी **तत्व शियावाद की तरह ही महदववाद के भी कट्टर विरोधी थे, हालाँकि दोनों के बीच कोई प्रेम नहीं था** । इसी संदर्भ में अकबर ने **सुलह-ए-कुल** की अवधारणा प्रस्तुत की । उसे डर था कि दक्कन के राज्यों में व्याप्त कटु सांप्रदायिक प्रतिद्वंद्विता मुगल साम्राज्य में भी फैल जाएगी।

मराठों का बढ़ता प्रभाव

- **एक अन्य उल्लेखनीय विशेषता दक्कन के मामलों में मराठों का बढ़ता महत्व था ।**

- बहमनी साम्राज्य में मराठा सैनिकों को **सहायक या बारगीर (जिन्हें आमतौर पर बारगी कहा जाता था) के रूप में नियुक्त किया जाता था। स्थानीय स्तर पर राजस्व संबंधी मामले दक्कनी ब्राह्मणों के हाथों में थे।**
- केवल कुछ मराठा परिवार ही बहमनी शासकों की सेवा में आगे बढ़े और उनसे जागीरें लीं, जैसे कि **मोरे, निंबालकर, घाटगे,** आदि। उनमें से अधिकांश **शक्तिशाली ज़मींदार या देशमुख** थे , जैसा कि उन्हें दक्कन में कहा जाता था। हालाँकि, राजपूतों के विपरीत, वे किसी मान्यता प्राप्त राज्य के स्थापित शासक नहीं थे।
- दूसरे, वे उन कुलों के नेता नहीं थे जिनके समर्थन और सहयोग पर वे निर्भर हो सकते थे। इसलिए, कई मराठा सरदार हवा के रुख के अनुसार अपनी वफ़ादारी बदलने को तैयार रहते थे।
- सोलहवीं शताब्दी के मध्य में **, दक्कन राज्यों के शासकों ने मराठों को अपने पक्ष में करने की एक निश्चित नीति अपनाई।**
- मराठा सरदारों को दक्कन के प्रमुख राज्यों, विशेषकर बीजापुर और अहमदनगर में सेवा और पद प्रदान किया गया।
- **बीजापुर के इब्राहिम आदिल शाह, जो 1555 में गद्दी पर बैठे थे, इस नीति के प्रमुख समर्थक थे** । कहा जाता है कि **उन्होंने अपनी सेना में मराठा सहायकों (बार्गियों) को शामिल किया और राजस्व व्यवस्था में मराठों का भरपूर समर्थन किया** । माना जाता है कि उन्होंने सभी स्तरों पर राजस्व खातों में मराठी को शामिल किया। भोंसले जैसे पुराने परिवारों पर अपने अनुग्रह को बढ़ाने के अलावा, इस नीति के परिणामस्वरूप बीजापुर में डफले (या चव्हाण) आदि जैसे अन्य राजवंश भी प्रमुखता से उभरे।
- कूटनीतिक वार्ताओं के लिए भी महाराष्ट्रीयन ब्राह्मणों का नियमित रूप से उपयोग किया जाता था। इस प्रकार अहमदनगर के शासक ने एक ब्राह्मण, कान्होजी नरसी को पेशवा की उपाधि प्रदान की।
- इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि **स्थानीय भूस्वामियों और सैन्य वर्गों के साथ गठबंधन करने की नीति दक्कनी शासकों द्वारा** अकबर के अधीन मुगलों द्वारा लागू की जाने से भी पहले शुरू की गई थी।

पुर्तगालियों की बढ़ती शक्ति

- **अकबर पुर्तगालियों की बढ़ती शक्ति के कारण आशंकित था, क्योंकि वे मक्का की तीर्थयात्रा में बाधा डाल रहे थे, यहां तक कि शाही महिलाओं को भी नहीं बख्श रहे थे।**
- उनके क्षेत्रों में पुर्तगाली **धर्मांतरण की गतिविधियाँ चला रहे थे,** जो अकबर को नापसंद था।
- वे लगातार मुख्य भूमि पर अपनी स्थिति का विस्तार करने की कोशिश कर रहे थे और यहां तक कि उन्होंने सूरत पर भी अपना कब्ज़ा करने की कोशिश की, जिसे मुगल सेना के समय पर पहुंचने से बचा लिया गया।

दक्कन की ओर मुगलों का आक्रमण

- उत्तर भारत में साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण के बाद मुगलों के दक्कन की ओर बढ़ने की उम्मीद करना तर्कसंगत था । तुगलकों द्वारा दक्कन पर विजय और उत्तर तथा दक्षिण के बीच बेहतर संचार व्यवस्था ने दोनों देशों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंधों को मज़बूत किया था। इसलिए, साठ और सत्तर के दशक में मालवा और गुजरात पर विजय के बाद, मुगल खुद को दक्कन से अलग नहीं रख पाए।

गुजरात विजय

- 1572 में **, मुगल बादशाह अकबर की गुजरात विजय ने** एक नई स्थिति पैदा कर दी। गुजरात विजय, दक्कन पर मुगल विजय की शुरुआत मात्र थी। हालाँकि, उस समय अकबर कहीं और व्यस्त था और दक्कन के मामलों पर ध्यान नहीं दे रहा था।
- **गुजराती साम्राज्य के पतन** के बाद , गुजरात के शासकों द्वारा अहमदनगर को समर्थन देना बंद हो गया । **अहमदनगर और बीजापुर के बीच एक समझौता हुआ जिसके तहत अहमदनगर बरार पर कब्ज़ा करने के लिए स्वतंत्र था,** और **बीजापुर विजयनगर की कीमत पर दक्षिण में विस्तार करने के लिए स्वतंत्र था । गोलकुंडा भी विजयनगर की कीमत पर अपने क्षेत्रों का विस्तार करने में रुचि रखता था** । तदनुसार, अहमदनगर ने बरार (1573) पर विजय प्राप्त कर ली, लेकिन बीजापुर विजयनगर की कीमत पर लाभ नहीं उठा सका और खुद को ठगा हुआ महसूस किया।

- **1576 में, मुगल सेना ने खानदेश पर आक्रमण किया और खानदेश के शासकों को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर दिया**। हालाँकि, तात्कालिक मामलों के कारण अकबर को कहीं और जाना पड़ा। 1586 से 1598 के बीच 12 वर्षों तक, अकबर उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र के मामलों में व्यस्त रहा।
- इस बीच दक्कन में स्थिति बिगड़ गई।

दक्कन के मामलों में अकबर की भागीदारी के कारण

- **वह दक्षिण भारत को भारत का एकीकृत अंग मानते थे और पूरे देश पर संप्रभुता चाहते थे।**
- अकबर दक्कन के राज्यों में आपसी झगड़ों, सांप्रदायिक हिंसा और जातीय संघर्षों से आशंकित था। उसे डर था कि दक्कन की कटु सांप्रदायिक प्रतिद्वंद्विता मुगल साम्राज्य तक फैल जाएगी।
- **बढ़ती पुर्तगाली शक्ति:** अकबर को स्पष्टतः यह महसूस हुआ कि मुगल पर्यवेक्षण के तहत दक्कनी राज्यों के संसाधनों का समन्वय और एकत्रीकरण पुर्तगाली खतरे को समाप्त तो नहीं, लेकिन कम अवश्य कर देगा।

बरार, खानदेश और अहमदनगर के कुछ हिस्सों पर विजय

अकबर के राजनयिक मिशनों की विफलता

- **अकबर पूरे देश पर आधिपत्य का दावा करता था।** इसलिए वह चाहता था कि राजपूतों की तरह दक्कन के राज्य भी उसकी आधिपत्य स्वीकार करें। हालाँकि, उसके द्वारा पहले भेजे गए राजदूतों से कोई सकारात्मक परिणाम नहीं निकला। यह स्पष्ट था कि दक्कन के राज्य तब तक मुगल आधिपत्य स्वीकार नहीं करेंगे जब तक कि मुगल उन पर सैन्य दबाव डालने की स्थिति में न आ जाएँ।
- 1591 में **, अकबर ने सभी दक्कनी राज्यों में अपने दूत भेजे और उन्हें मुग़ल आधिपत्य स्वीकार करने के लिए आमंत्रित किया। खानदेश को छोड़कर किसी भी राज्य ने इसे स्वीकार नहीं किया।** अहमदनगर के शासक बुरहान ने मुग़ल दूत के साथ अभद्र व्यवहार किया और अन्य राज्यों ने केवल मित्रता के वादे किए।

अहमदनगर के शासक की मृत्यु

- 1591 में अकबर के कूटनीतिक आक्रमण की विफलता के बाद दक्कन में अधिक सक्रिय हस्तक्षेप की आवश्यकता महसूस हुई। बुरहान की मृत्यु के बाद निज़ामशाही सरदारों के बीच गुटीय लड़ाई शुरू होने पर उसे यह आवश्यक अवसर मिल गया।
- 1595 में, बुरहान निज़ाम शाह की मृत्यु हो गई और उनके पुत्र इब्राहिम निज़ाम शाह ने उनका उत्तराधिकारी बना लिया। इब्राहिम निज़ाम शाह ने शोलापुर पर कब्ज़ा करने के लिए बीजापुर के साथ फिर से युद्ध किया, लेकिन वह हार गया और युद्ध में अपनी जान गँवा दी। **सिंहासन के लिए कई दावेदार सामने आए:** मियाँ मंजू, जो पेशवा और दक्कनी दल के नेता थे, ने अपना उम्मीदवार खड़ा किया, हालाँकि वह केवल एक दावेदार था और निज़ाम शाही वंश से संबंधित नहीं था।
- **बुरहान निज़ाम शाह की बहन चाँद बीबी,** जिसका विवाह 1564 में आदिल शाही शासक से हुआ था, ने हब्शी दल के समर्थन से दिवंगत राजा इब्राहिम आदिल शाह के शिशु पुत्र बहादुर के दावे का समर्थन किया। 1580 में अपने पति की मृत्यु के बाद कई वर्षों तक और जब इब्राहिम आदिल शाह नाबालिग था, चाँद बीबी ने सक्षम सलाहकारों की मदद से बीजापुर के मामलों की देखभाल की थी। लेकिन बढ़ती गुटबाजी के कारण वह अपने भाई बुरहान निज़ाम शाह के दरबार में शालीनता से सेवानिवृत्त हो गई थी। इस डर से कि असमंजस की स्थिति में चाँद बीबी हब्शियों की मदद से अहमदनगर के मामलों पर शासन करेगी, दक्कनी दल के नेता मियाँ मंजू ने मुगलों से मदद की अपील की। अब जो संघर्ष शुरू हुआ

चाँद बीबी द्वारा प्रतिरोध

- अकबर ने दक्कन पर आक्रमण के लिए पहले ही कमर कस ली थी। **शहजादा मुराद (जहाँगीर) को अभियान की तैयारी के लिए गुजरात का राज्यपाल नियुक्त किया गया था**। इसलिए, मियाँ मंजू का निमंत्रण मिलते ही वह पूरी तरह तैयार हो गया। अभियान का नेतृत्व अब्दुर रहीम खान-ए-खानान ने किया। खानदेश के शासक राजा अली भी इसमें शामिल हुए। **अहमदनगर के सरदारों (निज़ाम शाही सरदारों) के बीच आंतरिक मतभेदों के कारण, मुगलों को राजधानी अहमदनगर पहुँचने तक किसी विरोध का सामना नहीं करना पड़ा।**

- **मियाँ मंजू को मुगलों को आमंत्रित करने पर दुःख हुआ और उन्होंने उनका विरोध करने के लिए चाँद बीबी से हाथ मिलाने का निर्णय लिया**। चाँद बीबी ने बीजापुर और गोलकुंडा से भी मदद की अपील की। सात हज़ार की बीजापुरी सेना के आगमन से चाँद बीबी बहादुरी से बचाव कर सकीं। **चार महीने की कड़ी घेराबंदी के बाद, चाँद बीबी एक समझौते पर विवश हुईं जिसके तहत बरार मुगलों को सौंप दिया गया**। शिशु, बहादुर निज़ाम शाह को उनके शासन में शासक के रूप में स्वीकार किया गया और मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लिया गया। यह 1596 में हुआ। मुगलों ने इस समझौते को आंशिक रूप से सीमा पर एक मजबूत बीजापुर-गोलकुंडा सेना की उपस्थिति के कारण स्वीकार किया।

अहमदनगर की दूसरी घेराबंदी

- इस समझौते से कोई भी पक्ष संतुष्ट नहीं था। **मुग़ल बालाघाट को पाने के लिए उत्सुक थे, जो गुजरात और अहमदनगर के बीच विवाद का विषय बना हुआ था**। निज़ामशाही सरदारों के बीच भी मतभेद जारी रहे: एक गुट बरार को मुगलों को सौंपने का विरोध कर रहा था, जबकि वकील और पेशवा मुहम्मद ख़ान के नेतृत्व में एक दूसरे गुट ने मुग़लों के साथ बातचीत शुरू कर दी।
- चाँद बीबी ने बीजापुर और गोलकुंडा के शासकों को तत्काल संदेश भेजकर अपनी सहायता के लिए अतिरिक्त सेना भेजने को कहा। बीजापुर और गोलकुंडा के शासकों ने इसका जवाब दिया, क्योंकि उन्हें लगा कि बरार मुगलों को दक्कन में एक स्थायी पैर जमाने का मौका देगा, जिस पर वे कभी भी कब्ज़ा कर सकते थे। **इसलिए, बीजापुर, गोलकुंडा और अहमदनगर की एक संयुक्त सेना ने बड़ी संख्या में बरार में प्रवेश किया। 1597 में सोनीपत में हुए एक कठिन युद्ध में, मुगलों ने अपनी संख्या से तीन गुना बड़ी दक्कनी सेना को हरा दिया।**
- बीजापुर **और गोलकुंडा की सेनाएँ अब पीछे हट गईं, और चाँद बीबी को अकेले ही स्थिति का सामना करना पड़ा**। हालाँकि चाँद बीबी 1596 की संधि का पालन करने के पक्ष में थीं, फिर भी वे बरार में मुगलों पर अपने सरदारों के उत्पीड़क हमलों को रोक नहीं पाईं। इसके परिणामस्वरूप अहमदनगर पर मुगलों ने दूसरी बार घेरा डाला।
- किसी भी तरफ से मदद न मिलने पर, **चाँद बीबी ने किला सौंपने का फैसला किया और मुगलों से बातचीत शुरू की।** उन्होंने बहादुर को अहमदनगर में एक मनसब और एक जागीर देने की मांग की, ताकि वह खुद उसकी संरक्षक बनी रहें। हालाँकि, उनके विरोधी गुट ने उन पर विश्वासघात का आरोप लगाया और उनकी हत्या कर दी। इस तरह दक्कनी राजनीति की सबसे रोमांटिक हस्तियों में से एक का जीवन समाप्त हो गया।
- अब मुगलों **ने अहमदनगर पर आक्रमण कर उसे अपने कब्ज़े में ले लिया।** बालक बहादुर को ग्वालियर के किले में भेज दिया गया। अहमदनगर किला और उसके आस-पास के इलाके मुगलों के हवाले कर दिए गए। बालाघाट, जिसमें दौलताबाद भी शामिल था, जिस पर पहले मुगलों का कब्ज़ा था, को भी साम्राज्य में मिला लिया गया और अहमदनगर में एक मुगल सेना तैनात कर दी गई। यह 1600 की बात है।
- अहमदनगर किले के पतन से दक्कन में अकबर की समस्याएँ हल नहीं हुईं। मुग़ल अहमदनगर किले और उसके आसपास के क्षेत्रों से आगे बढ़ने या राज्य के शेष क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने की स्थिति में नहीं थे। **अस्सी वर्ष के वृद्ध शाह अली, जो मुर्तजा निज़ाम शाह के पुत्र थे, अपने पुत्र अली के साथ कुछ समय से बीजापुर के शासक के संरक्षण में बीजापुर में रह रहे थे।** 1595 में, परेंडा में, कई निज़ाम शाही सरदारों ने शाह अली को **मुर्तजा शाह द्वितीय की उपाधि के तहत अहमदनगर की गद्दी पर बिठाया।** बहादुर के हटने के साथ ही, मुर्तजा द्वितीय, जिसे पहले से ही बीजापुर का समर्थन प्राप्त था, के लिए सभी वर्गों द्वारा निज़ाम शाही गद्दी के वैध उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किए जाने का रास्ता साफ हो गया।

Conquest of Khandesh

- **इससे कुछ पहले, 1600 में, अकबर ने स्थिति का जायज़ा लेने के लिए मालवा और फिर खानदेश की ओर कूच किया था।** खानदेश में उसे पता चला कि खानदेश के नए शासक बहादुर ने राजकुमार दानियाल के प्रति उचित सम्मान नहीं दिखाया था, जब वह अहमदनगर जाते समय उस क्षेत्र से गुज़रा था। इससे भी बुरी बात यह थी कि बार-बार बुलाने पर भी वह अकबर के सामने पेश नहीं हुआ। हालाँकि, **बहादुर के विरुद्ध अकबर द्वारा की गई कार्रवाई का मुख्य कारण खानदेश में असीरगढ़ के किले को सुरक्षित करने की उसकी इच्छा थी,** जिसे दक्कन का सबसे मज़बूत किला माना जाता था। **वह खानदेश को अपनी राजधानी बुरहानपुर के साथ, जो दक्कन में प्रवेश का एक बिंदु था, अपने अधीन करना**

चाहता था। कड़ी घेराबंदी के बाद, और जब किले में महामारी फैल गई, तो शासक बाहर आया और आत्मसमर्पण कर दिया (1601)। उसे पेंशन देकर ग्वालियर के किले में भेज दिया गया। खानदेश को मुग़ल साम्राज्य में शामिल कर लिया गया।

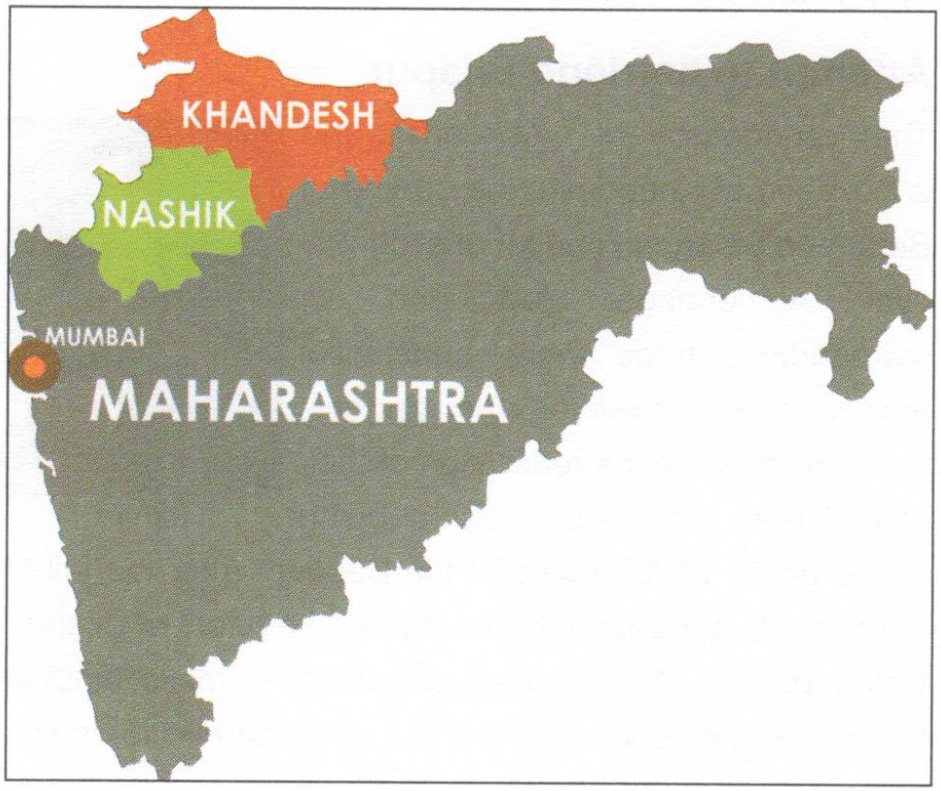

मुर्तजा द्वितीय के साथ समझौता

- उलझन भरी लड़ाई के बीच, दक्कन में मुगल सेनापति **खान-ए-खानान ने मलिक अंबर के सामने समझौते का प्रस्ताव रखा, जो मुर्तजा द्वितीय का प्रमुख व्यक्ति बनकर उभरा था। उसने वफादारी के वादे पर मुर्तजा द्वितीय को औसा, धारवाड़ और बीर के कुछ हिस्सों की सरकारें देने की पेशकश की। खान-ए-खानान के हाथों लगातार दो हार झेलने के बाद, अंबर आखिरकार मान गया** । "कुछ इलाके" उसके लिए छोड़ दिए गए, लेकिन ये निर्दिष्ट नहीं किए गए। दक्कनी इतिहासकार फरिश्ता के अनुसार, दोनों पक्षों ने "अपनी-अपनी भावी सीमाएँ निर्धारित कर लीं।" यह 1601 की बात है।
- **इस प्रकार, यद्यपि राजधानी अहमदनगर और बालाघाट मुगलों के अधीन हो गए, फिर भी निजाम शाही शासक ने राज्य के शेष भागों पर शासन करना जारी रखा और मुगलों द्वारा उसे मान्यता दी गई।**

बीजापुर से मित्रता का प्रयास

- असीरगढ़ की विजय **और खानदेश पर कब्ज़ा, बरार और बालाघाट का हस्तांतरण, और अहमदनगर किले और उसके आसपास के क्षेत्रों पर मुगल नियंत्रण, महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ थीं।** हालाँकि, मुगल अभी भी अपने उद्देश्य की प्राप्ति से बहुत दूर थे कि दक्कन के सभी शासकों द्वारा उनकी सर्वोच्चता स्वीकार की जाए। **असीरगढ़ के पतन के बाद, अकबर ने बीजापुर, गोलकुंडा और बीदर के शासकों को आज्ञाकारिता की बाध्यकारी संधियाँ करने के लिए राजी करने हेतु फिर से दूत भेजे। कोई भी शासक ऐसा करने के लिए सहमत नहीं हुआ।**
- दक्कन के सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली राज्य बीजापुर से दोस्ती करने की अकबर की उम्मीद पूरी नहीं हो सकी। बीजापुर के शासक की बेटी आदिल शाही राजकुमारी का विवाह दानियाल से 1604 में ही हुआ था, और उसके कुछ ही समय बाद अत्यधिक शराब पीने के कारण दानियाल की मृत्यु हो गई।
- **कुछ ही समय बाद अकबर की भी मृत्यु हो गई। इसलिए, दक्कन में स्थिति अस्पष्ट बनी रही और उसके उत्तराधिकारी जहाँगीर को इसे नए सिरे से संभालना पड़ा ।**

मलिक का उदय

- अहमदनगर किले के पतन और मुगलों द्वारा बहादुर निजाम शाह के कब्जे के बाद, **अहमदनगर राज्य विघटित हो गया होता** और इसके विभिन्न हिस्से, संभवतः पड़ोसी राज्यों द्वारा निगल लिए गए होते, लेकिन मलिक अंबर नामक एक उल्लेखनीय व्यक्ति का उदय नहीं हुआ।

मराठों और बीजापुर की सहायता

- **मलिक अंबर एक अबीसीनियाई (इथियोपिया में जन्मे) थे**। जब मुगलों ने अहमदनगर पर आक्रमण किया, तो अंबर पहले बीजापुर में अपनी किस्मत आजमाने गए। लेकिन जल्द ही वे वापस लौट आए और शक्तिशाली हब्शी (अबीसीनियाई) दल में शामिल हो गए, जो चाँद बीबी का विरोधी था।
- **मलिक अम्बर अहमदनगर के मुर्तजा निजाम शाह** के प्रसिद्ध और प्रभावशाली सरदार **चंगेज खान** की सेवा में आगे बढ़े।
- अहमदनगर के पतन के बाद, मलिक अंबर ने बीजापुर के शासक के निहित समर्थन से, उसे मुर्तजा निजाम शाह द्वितीय के रूप में स्थापित किया, और स्वयं को पेशवा बना लिया (यह उपाधि उन दिनों अहमदनगर में आम थी)।
- मलिक अंबर ने अपने चारों ओर मराठा सैनिकों (या बारगी) का एक बड़ा दल इकट्ठा कर लिया। मराठा तेज़ गति से आगे बढ़ने, दुश्मन सैनिकों की रसद लूटने और काटने में माहिर थे। मुग़ल इस छापामार युद्ध के आदी नहीं थे।
- **मराठों की मदद से अंबर ने मुगलों के लिए बरार, अहमदनगर और बालाघाट में अपनी स्थिति मजबूत करना मुश्किल बना दिया।**
- **अब्दुल रहीम खान-ए-खाना** दक्कन में मुगल सेनापति थे; वे एक चतुर और चतुर राजनीतिज्ञ और बुद्धिमान सैनिक थे। **1601 में, उन्होंने (अब्दुल रहीम ने) नंदेर (तेलंगाना) नामक स्थान पर अंबर को करारी शिकस्त दी।** हालाँकि, अब्दुल रहीम और अंबर के बीच एक मैत्री समझौते के साथ युद्ध समाप्त हो गया।

मुगलों द्वारा क्षेत्रों का नुकसान

- **अक्टूबर 1605** में अकबर की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु के बाद दक्कन क्षेत्रों में मुगल सेनापतियों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गए; इस स्थिति ने अंबर को अवसर प्रदान किया और उसने बरार, बालाघाट और अहमदनगर से मुगलों को खदेड़ने के लिए एक आक्रामक अभियान चलाया।
- **अंबर के अभियान को इब्राहीम आदिल शाह (बीजापुर के शासक) का सक्रिय समर्थन प्राप्त था**। आदिल शाह इसे आवश्यक मानते थे क्योंकि उनका मानना था कि निज़ामशाही राज्य बीजापुर और मुगलों के बीच एक बफर के रूप में बना रहना चाहिए।
- आदिल शाह ने अंबर को उसके परिवार के निवास और खजाने, रसद आदि को जमा करने के लिए तेलंगाना में कंधार का शक्तिशाली किला दिया। इसके अलावा, आदिल शाह ने अंबर की सहायता के लिए 10,000 घुड़सवार भी भेजे।
- 1609 में, बीजापुर के एक प्रमुख इथियोपियाई सरदार की पुत्री और मलिक अम्बर के पुत्र के बीच विवाह गठबंधन द्वारा यह संधि पक्की हो गयी।
- **बीजापुर और मराठों के सहयोग से, अंबर ने खान-ए-खानान को बुरहानपुर की ओर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार, 1610 तक, अकबर द्वारा जीते गए अधिकांश क्षेत्र (दक्षिण में) हार गए।**
- हालाँकि जहाँगीर ने राजकुमार परवेज़ को एक बड़ी सेना के साथ दक्कन भेजा, लेकिन वह मलिक अंबर की चुनौती का सामना नहीं कर सका। यहाँ तक कि अहमदनगर भी हार गया, और परवेज़ को अंबर के साथ अपमानजनक संधि करनी पड़ी।
- 1611 में, जहाँगीर ने दो सेनाएँ भेजीं, एक की कमान खान-ए-जहाँ लोदी के हाथों में थी और राजा मान सिंह सहित, और दूसरी अब्दुल्ला खान के हाथों में। इन सेनाओं को दोनों तरफ से हमला करना था और दौलताबाद पर आक्रमण करना था। हालाँकि, आपसी कलह और समन्वय की कमी के कारण वे असफल रहीं।

मुगलों और मराठों का अंबर के विरुद्ध संघर्ष

- **मराठों और अन्य दक्कन शासकों के समर्थन से अंबर के आने तक मुग़ल दक्कन में कुछ भी हासिल नहीं कर सके।** हालाँकि, समय के साथ अंबर अहंकारी हो गया और उसने अपने सहयोगियों को अलग-थलग कर लिया।

- दक्कन के पुनः नियुक्त मुगल वायसराय खान-ए-खाना ने स्थिति का लाभ उठाया और कुछ हब्शियों और मराठों को अपनी ओर मिला लिया। जहाँगीर स्वयं मराठों के महत्व से भली-भाँति परिचित थे। **मराठा सरदारों की मदद से, खान-ए-खाना ने 1616 में अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं को करारी शिकस्त दी।** मुगलों **ने निज़ामशाही की नई राजधानी खिड़की पर कब्ज़ा कर लिया और जाने से पहले उसकी सभी इमारतों को जला दिया** । इस हार ने मुगलों के विरुद्ध दक्कनी गठबंधन को हिलाकर रख दिया।
- **खान-ए-खाना की जीत को पूरा करने के लिए, 1617 में जहाँगीर ने अपने बेटे, राजकुमार खुर्रम (बाद में शाहजहाँ) के नेतृत्व में एक विशाल सेना भेजी और खुद राजकुमार की सहायता के लिए मांडू पहुँच गया। इस खतरे का सामना करते हुए, अंबर के पास आत्मसमर्पण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था** । हाल ही में अंबर द्वारा हथियाए गए बालाघाट के सभी क्षेत्र मुगलों को वापस कर दिए गए। अहमदनगर किले की चाबी भी सौंप दी गई।

जहाँगीर की गैर-विस्तारवादी नीति

- **यह महत्वपूर्ण है कि अंबर के साथ संधि में, जहाँगीर ने दक्कन में अकबर द्वारा की गई विजयों को बढ़ाने का प्रयास नहीं किया** । यह जहाँगीर की किसी सैन्य कमज़ोरी के कारण नहीं था, जैसा कि कभी-कभी कल्पना की जाती है, बल्कि यह एक सोची-समझी नीति के कारण था।
- ज़ाहिर है, जहाँगीर दक्कन में मुग़ल प्रतिबद्धताओं को बढ़ाना नहीं चाहता था, या उसके मामलों में बहुत ज़्यादा उलझना नहीं चाहता था। इसके अलावा, उसे अब भी उम्मीद थी कि उसकी उदारता से दक्कनी राज्य मुगलों के साथ शांति से बस जाएँगे और रह पाएँगे।
- **अपनी नीति के एक भाग के रूप में, जहाँगीर ने बीजापुर को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया और आदिल शाह को एक कृपापूर्ण फ़रमान भेजा, जिसमें उसे 'पुत्र' (फ़रज़ंद) कहा गया।**

मलिक अंबर के सत्ता पर पुनः कब्ज़ा करने के असफल प्रयास

- इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद, **अम्बर ने मुगलों के विरुद्ध दक्कनी प्रतिरोध का नेतृत्व जारी रखा और अहमदनगर और बरार के बड़े हिस्से पर पुनः विजय प्राप्त की** ।
- 1621 में **, शहजादा शाहजहाँ को** मुगल अभियान का नेतृत्व सौंपा गया। **संयुक्त दक्कनी सेना को मुगलों के हाथों एक बार फिर करारी हार का सामना करना पड़ा** । अंबर को सभी मुगल क्षेत्रों और अहमदनगर से सटे कुछ और क्षेत्रों को वापस करना पड़ा। दक्कनी राज्यों को पचास लाख रुपये का हर्जाना देना पड़ा। इन विजयों का श्रेय शहजादे शाहजहाँ को दिया गया ।
- संयुक्त दक्कनी सेनाओं की एक के बाद एक दो पराजयों **ने मुगलों के विरुद्ध दक्कनी शक्तियों के संयुक्त मोर्चे को चकनाचूर कर दिया।** दक्कनी राज्यों के बीच पुरानी प्रतिद्वंद्विता अब सतह पर आ गई। अहमदनगर और बीजापुर के बीच शोलापुर और बीदर को लेकर पुरानी प्रतिद्वंद्विता थी। आदिल शाह ने अंबर की सहायता करते हुए न केवल शोलापुर पर कब्ज़ा कर लिया था, बल्कि कंधार को अंबर को सौंपते हुए शिरवाल परगना पर भी कब्ज़ा कर लिया था। 1619 में, आदिल शाह ने बीदर राज्य पर आक्रमण कर उस पर कब्ज़ा कर लिया था।
- **अम्बर ने शोलापुर को पुनः प्राप्त करने के लिए बीजापुर के विरुद्ध कई अभियान चलाए, जो दो राज्यों के बीच विवाद का विषय था।**

Battle of Bhaturi (1624)

- बीजापुर के इतिहासकारों के अनुसार, **अंबर ने अहंकारी रवैया अपनाया और अपने उपकारक इब्राहिम आदिल शाह द्वारा उसे दिए गए पिछले उपकारों को भूल गया । उसने अपने तानाशाही तरीकों और मुर्तज़ा निज़ाम शाह द्वितीय के साथ अपने कठोर व्यवहार से कई निज़ाम शाही सरदारों को** भी अलग-थलग कर दिया था । इसलिए, **अहमदनगर और बीजापुर के बीच टकराव निश्चित लग रहा था, और दोनों पक्षों ने मुगलों के साथ गठबंधन के लिए प्रयास किए।**
- बहुत सोच-विचार के बाद, **जहाँगीर ने बीजापुर के पक्ष में फैसला सुनाया।** शायद उसे लगा कि अंबर जैसे बेचैन और महत्वाकांक्षी व्यक्ति के साथ गठबंधन करने से मुगलों को दक्कन की आंतरिक राजनीति में अनावश्यक रूप से घसीटना पड़ेगा। साथ ही, दक्कन में मुगलों की स्थिति को स्थिर करने के लिए, मलिक अंबर को अलग-थलग करना ज़रूरी था।

समझौते के अनुसार, आदिल शाह ने अपने एक मंत्री, **मुल्ला मुहम्मद लारी** के नेतृत्व में 5000 सैनिकों की एक सेना बुरहानपुर में मुगल गवर्नर के पास सेवा के लिए भेजी।

- **जब ये घटनाक्रम चल रहा था, अंबर ने गोलकुंडा पर आक्रमण किया और शासक को दो वर्षों का बकाया कर देने के लिए बाध्य किया।** उसने गोलकुंडा के साथ एक रक्षात्मक-आक्रामक संधि भी की। उस दिशा से सुरक्षित रहते हुए, उसने बीदर में बीजापुर की सेना को चौंका दिया और उसे परास्त कर दिया, और फिर बीजापुर तक लूटपाट करता हुआ आगे बढ़ा। आदिल शाह को किले में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, और उसने बुरहानपुर में मुहम्मद लारी को तत्काल सम्मन भेजा। मुगल गवर्नर महाबत खान ने लश्कर खान और एक मजबूत मुगल सेना को मुहम्मद लारी के साथ बीजापुर भेजा। अंबर ने अहमदनगर के पास भटूरी में संयुक्त सेना को चौंका दिया (1624)।
- **भटूरी में आदिलशाही मुगल सेना की संयुक्त सेना पर विजय ने मलिक अंबर की प्रतिष्ठा को चरम पर पहुँचा दिया**। चूँकि मुगल शाहजहाँ के विद्रोह से निपटने में व्यस्त थे, इसलिए मुगलों की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। अपनी जीत के बाद, अंबर ने अहमदनगर की घेराबंदी की, लेकिन उसे बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित पाकर, उसने फिर से बीजापुर की ओर रुख किया और इब्राहिम आदिल शाह द्वारा उसके पड़ोस में बसाए गए नए शहर नौरसपुर को जलाकर लूट लिया।
- उसने शोलापुर पर भी पुनः कब्ज़ा कर लिया। 1622 के बाद, जब जहाँगीर के विरुद्ध राजकुमार खुर्रम के विद्रोह के कारण दक्कन में उथल-पुथल मची हुई थी, मलिक अंबर मुगलों को सौंपे गए कई पुराने क्षेत्रों पर पुनः कब्ज़ा करने में सफल रहा। उसने बालाघाट में मुगल क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया और बुरहानपुर पर घेरा डाल दिया। **इस प्रकार, जहाँगीर का दक्कन में एकीकरण का प्रयास विफल हो गया।**
- जहाँगीर ने अपने सबसे योग्य लेकिन विद्रोही पुत्र शाहजहाँ के साथ समझौता करने का फैसला किया। हालाँकि, लगभग इसी समय मलिक अंबर की मृत्यु (1626) हो गई। लेकिन उसकी विरासत के कड़वे फल उसके उत्तराधिकारियों को भुगतने पड़े।

मलिक अंबर का मूल्यांकन

- समकालीन मुगल इतिहासकार मुहम्मद खान के अनुसार, **"युद्ध, कमान, सही निर्णय" और "प्रशासन में, उनका (अंबर का) कोई प्रतिद्वंद्वी या बराबर नहीं था"।**
- हालाँकि, अंबर की समग्र भूमिका के बारे में मतभेद हो सकते हैं। अधिकांश लेखकों के लिए, वह मुगलों के विरुद्ध दक्कनी स्वतंत्रता के वीर योद्धा थे। मुगलों की दक्कन नीति पर अपने लेख में सतीश चंद्र के अनुसार, दक्कनी स्वतंत्रता के इस वीर योद्धा और निज़ाम शाही वंश के अधिकारों के रक्षक को, समान रूप से, एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है जिसने जटिल राजनीतिक परिस्थितियों का उपयोग खुद को आगे बढ़ाने के लिए किया। सबसे बढ़कर, 1600 के समझौते को स्वीकार करने और उसका सम्मान करने से इनकार करने के कारण लगातार युद्ध हुए, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उस राज्य का विनाश हुआ जिसे वह बचाना चाहते थे।
- संभवतः, अंबर का मुख्य योगदान मराठा सेनाओं को प्रशिक्षण प्रदान करना और उनमें आत्मविश्वास की भावना का संचार करना था ताकि वे मुगल साम्राज्य की शक्ति का भी सफलतापूर्वक सामना कर सकें। मलिक अंबर की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। उन्हें टोडर माई की भू-राजस्व प्रणाली शुरू करने का श्रेय दिया जाता है। मलिक अंबर ने राज्य की भूमि की पैमाइश करवाई और राजस्व भुगतान की दरें, विभिन्न गाँवों की सीमाएँ निर्धारित कीं, और कैवारों और बीघों की माप (निश्चित) की। तब से मलिक अंबर का उस क्षेत्र में बसना जारी है।
- इस प्रकार, **मलिक अंबर ने अनुबंध (इजारा) पर भूमि देने की पूर्व प्रणाली के स्थान पर ज़ब्ती प्रणाली शुरू की।**
- कुछ दस्तावेजों के अनुसार, भूमि को जंजीरों से मापा जाता था, और नई खेती के अंतर्गत लाई गई भूमि पर प्रगतिशील कर लगाया जाता था, जिसकी पूरी दर केवल पांचवें वर्ष में चुकाई जाती थी।
- मलिक अंबर ने स्थानीय देशमुखों और खेती से जुड़े अन्य लोगों की समस्याओं पर व्यक्तिगत रूप से गहन ध्यान दिया। इन तरीकों से उन्होंने स्थानीय कानून-व्यवस्था बनाए रखने और खेती का विस्तार करने का प्रयास किया।

मुगल आधिपत्य

शाहजहाँ का शासनकाल

- शाहजहाँ 1627 में सिंहासन पर बैठा। एक राजकुमार के रूप में दक्कन के दो अभियानों का नेतृत्व करने और अपने पिता के खिलाफ विद्रोह के दौरान दक्कन में काफी समय बिताने के कारण, शाहजहाँ को दक्कन और उसकी राजनीति का बहुत अच्छा अनुभव और व्यक्तिगत ज्ञान था।
- एक शासक के रूप में शाहजहाँ की पहली चिंता दक्कन के उन क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना था, जो निज़ाम शाही शासक से खो गये थे।
- उन्होंने वृद्ध और अनुभवी सरदार खान-ए-जहाँ लोदी को नियुक्त किया। हालाँकि, खान-ए-जहाँ लोदी अपने प्रयास में असफल रहे और उन्हें दरबार में वापस बुला लिया गया।
- इसके कुछ समय बाद ही उसने विद्रोह कर दिया, क्योंकि उसे लगा कि अब उसे जहाँगीर के अधीन मिलने वाली सुविधाएं नहीं मिल रही हैं।
- वह निज़ाम शाह के साथ शामिल हो गए, जिन्होंने उन्हें बरार और बालाघाट के शेष हिस्सों से मुगलों को बाहर निकालने का काम सौंपा।

मुगल नीति में परिवर्तन

- एक प्रमुख मुग़ल सरदार को इस तरह शरण देना एक चुनौती थी जिसे शाहजहाँ नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था। यह स्पष्ट था कि मलिक अंबर की मृत्यु के बाद भी, बरार और बालाघाट में मुग़ल सत्ता को मान्यता न देने की उसकी नीति निज़ामशाही शासक द्वारा जारी रखी जा रही थी।
- इसलिए शाहजहाँ इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जब तक अहमदनगर एक स्वतंत्र राज्य बना रहेगा, तब तक दक्कन में मुगलों के लिए शांति संभव नहीं हो सकती।
- यह अकबर और जहांगीर द्वारा अपनाई गई नीति से एक बड़ा विचलन था।
- हालाँकि, शाहजहाँ दक्कन में मुगल क्षेत्रों का विस्तार करने के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं था, जितना कि आवश्यक था।

अहमदनगर पर कब्जा करने के प्रयास

- शाहजहाँ ने बीजापुर के शासक के साथ संधि करने की कोशिश की और अहमदनगर के विरुद्ध प्रस्तावित अभियान में मुगलों का साथ देने पर अहमदनगर राज्य का लगभग एक-तिहाई हिस्सा उसे सौंपने की पेशकश की। यह शाहजहाँ की एक चतुर चाल थी, जिसका उद्देश्य अहमदनगर को कूटनीतिक और सैन्य रूप से अलग-थलग करना था। उसने विभिन्न मराठा सरदारों को मुगल सेवा में शामिल होने के लिए भी प्रेरित किया।
- आदिल शाह भी नौरसपुर के दहन और मलिक अंबर द्वारा शोलापुर के विलय के अपमान से व्यथित था। इसलिए उसने शाहजहाँ का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और मुगलों के साथ सहयोग के लिए निज़ामशाही सीमा पर एक सेना तैनात कर दी।
- लगभग इसी समय, जाधव राव, एक प्रमुख मराठा सरदार, जो जहाँगीर के शासनकाल में मुगलों के पक्ष में चले गए थे, लेकिन निज़ाम शाह की सेवा में वापस चले गए थे, मुगलों के साथ षड्यंत्र रचने के आरोप में विश्वासघाती रूप से हत्या कर दी गई। परिणामस्वरूप, शाहजी भोंसले, जो उनके दामाद (और शिवाजी के पिता) थे, अपने रिश्तेदारों के साथ मुगल पक्ष में चले गए और उन्हें जागीर दे दी गई।
- इस समय कई अन्य प्रमुख मराठा सरदार भी शाहजहाँ के साथ शामिल हो गये।
- 1629 में शाहजहाँ ने अहमदनगर के विरुद्ध दो सेनाएँ तैनात कीं, एक सेना पश्चिम में बालाघाट क्षेत्र में और दूसरी सेना पूर्व में तेलंगाना क्षेत्र में तैनात की गई।
- सम्राट स्वयं उनकी गतिविधियों का समन्वय करने के लिए बुरहानपुर चले गए। लगातार दबाव के चलते, अहमदनगर राज्य के बड़े हिस्से पर मुगलों का कब्ज़ा हो गया। राज्य की आखिरी चौकियों में से एक, परेंडा पर घेरा डाल दिया गया।

बीजापुर और अहमदनगर के बीच समझौता

- प्रेंडा की घेराबंदी के बाद निजाम शाह ने आदिल शाह को एक दयनीय अपील भेजी, जिसमें कहा गया कि राज्य का अधिकांश भाग मुगल कब्जे में है, और यदि प्रेंडा पर विजय प्राप्त हूई तो इसका अर्थ होगा निजामशाही वंश का अंत, जिसके बाद, उन्होंने चेतावनी दी कि, बीजापुर की बारी आएगी।
- बीजापुर दरबार का एक मज़बूत गुट अहमदनगर में मुग़लों की लगातार बढ़त से बेचैन था। मुग़लों ने समझौते के तहत आदिल शाह को आवंटित क्षेत्र सौंपने से इनकार कर दिया था।
- परिणामस्वरूप, आदिल शाह ने पलटी मारते हूए निज़ाम शाह की मदद करने का फैसला किया, जो शोलापुर उसे सौंपने को तैयार हो गया। राजनीतिक स्थिति में इस बदलाव ने मुगलों को परेंडा की घेराबंदी हटाने और पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया।

शाहजी भोसले द्वारा फतह खां और दलबदल के लिए पुरस्कार

- अब तक अहमदनगर की आंतरिक स्थिति मुगलों के पक्ष में हो गई थी। मलिक अंबर के बेटे फतह खां को हाल ही में निज़ाम शाह ने इस उम्मीद में पेशवा नियुक्त किया था कि वह शाहजहाँ को शांति के लिए राजी कर लेगा। इसके बजाय, फतह खां ने शाहजहाँ के साथ गुप्त वार्ता शुरू कर दी और उसके कहने पर बुरहान निज़ाम शाह की हत्या कर दी और दौलताबाद की गद्दी पर एक कठपुतली को बिठा दिया। उसने मुगल बादशाह के नाम का खुतबा भी पढ़ा और सिक्का भी जारी किया।
- पुरस्कार स्वरूप फतह खां को मुगल सेवा में ले लिया गया तथा पूना के आसपास की जागीर, जो पहले शाहजी भोंसले को आवंटित थी, उसे दे दी गई।
- परिणामस्वरूप, शाहजी मुगल पक्ष से अलग हो गए। ये घटनाएँ 1632 में घटित हूईं।

मुगलों के लिए कठिन समय

- फ़तह ख़ान के आत्मसमर्पण के बाद शाहजहाँ ने महाबत ख़ान को दक्कन का मुग़ल वायसराय नियुक्त किया और स्वयं आगरा लौट आया।
- महाबत खान को बीजापुर और शाहजी सहित स्थानीय निजाम शाही सरदारों के संयुक्त विरोध का सामना करना पड़ा और वह स्वयं को बहूत कठिन स्थिति में पाया।
- परेंदा ने बीजापुर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया, जिसने दौलताबाद के किले पर भी मजबूत दावा किया तथा किले को आत्मसमर्पण करने के लिए फतह खान को बड़ी रकम की पेशकश की।
- इस प्रकार यह देखा जाएगा कि मुगल और बीजापुर वास्तव में अहमदनगर के पराजित भाग को आपस में बांटने की होड़ में लगे हूए थे।
- आदिल शाह ने दौलताबाद के आत्मसमर्पण और उसकी सेना के लिए रसद जुटाने हेतु रंदुला खान और मुरारी पंडित के नेतृत्व में एक बड़ी सेना भेजी।
- शाहजी भोंसले को भी मुगलों को परेशान करने और उनकी आपूर्ति रोकने के लिए बीजापुर की सेवा में भर्ती किया गया था।
- लेकिन बीजापुरी सेना और शाहजी के संयुक्त अभियान से कोई लाभ नहीं हूआ।
- महाबत खान ने दौलताबाद पर कब्ज़ा कर लिया और सेना को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया (1633)।
- निज़ाम शाह को ग्वालियर की जेल में भेज दिया गया। इसके साथ ही निज़ाम शाही वंश का अंत हो गया।
- हालाँकि, इससे भी मुगलों की समस्याएँ हल नहीं हूईं। मलिक अंबर के उदाहरण का अनुसरण करते हूए, शाहजी ने एक निज़ामशाही राजकुमार को ढूँढ़ा और उसे शासक बनाया। आदिल शाह ने शाहजी की सहायता के लिए एक सेना भेजी और निज़ामशाही के कई सरदारों को अपने किले शाहजी को सौंपने के लिए प्रेरित किया। कई विघटित निज़ामशाही सैनिक शाहजी के साथ मिल गए। इनके साथ उन्होंने मुगलों को परेशान किया और अहमदनगर राज्य के बड़े हिस्से पर कब्ज़ा कर लिया।

शाहजहाँ द्वारा बीजापुर पर आक्रमण

- शाहजहाँ ने अब दक्कन की समस्याओं पर व्यक्तिगत ध्यान देने का निर्णय लिया।

- उन्होंने महसूस किया कि स्थिति की जड़ बीजापुर का रवैया था। इसलिए, उन्होंने बीजापुर पर आक्रमण करने के लिए एक बड़ी सेना भेजी और आदिल शाह को भी संदेश भेजा कि वे अहमदनगर के क्षेत्र को बीजापुर और मुगलों के बीच विभाजित करने के पहले के समझौते को पुनर्जीवित करें।
- लाठी और गाजर की नीति और शाहजहाँ के दक्कन की ओर बढ़ने से बीजापुर की राजनीति में एक और परिवर्तन आया।
- मुरारी पंडित सहित मुगल विरोधी समूह के नेताओं को विस्थापित कर दिया गया और मार डाला गया, तथा शाहजहाँ के साथ अहदनामा की एक नई संधि की गई।

अहदानामा की संधि

- इस संधि के अनुसार, आदिल शाह ने मुगल आधिपत्य को स्वीकार करने, बीस लाख रुपये का हर्जाना देने और मुगल संरक्षण में लाए गए गोलकुंडा के मामलों में हस्तक्षेप न करने पर सहमति व्यक्त की।
- भविष्य में बीजापुर और गोलकुंडा के बीच किसी भी झगड़े को मध्यस्थता के लिए मुगल सम्राट के पास भेजा जाएगा।
- आदिल शाह ने शाहजी को अधीन करने में मुगलों के साथ सहयोग करने पर सहमति व्यक्त की, और यदि वह बीजापुर सेवा में शामिल होने के लिए सहमत हो गए, तो उन्हें मुगल सीमा से दूर दक्षिण में तैनात किया जाएगा।

गोलकुंडा के साथ संधि

- शाहजहाँ ने गोलकुंडा के साथ संधि करके दक्कन का समझौता भी पूरा कर लिया।
- शासक ने खुतबे में शाहजहाँ का नाम शामिल करने तथा ईरानी सम्राट का नाम उसमें से निकालने पर सहमति व्यक्त की।
- कुतुब शाह को सम्राट के प्रति वफादार रहना था।
- गोलकुंडा द्वारा बीजापुर को पहले दी जाने वाली चार लाख हूण की वार्षिक कर-राशि माफ कर दी गई। इसके बदले में, उसे मुगल सम्राट को उसकी सुरक्षा के बदले में दो लाख हूण प्रतिवर्ष देने पड़े।

इन संधियों का प्रभाव

- बीजापुर और गोलकुंडा के साथ 1636 की संधियाँ एक कूटनीतिक पहल थीं। वास्तव में, इन संधियों ने शाहजहाँ को अकबर के अंतिम उद्देश्यों को साकार करने में सक्षम बनाया।
- मुगल सम्राट की प्रभुता अब पूरे देश पर स्वीकार कर ली गई थी।
- इन संधियों से दक्कन में स्थिति स्थिर करने में मदद मिली तथा मुगलों के साथ स्थिर शांति की आशा बनी तथा दक्कन में मुगलों के आगे बढ़ने पर रोक लगी।
- मुगलों के साथ शांति से दक्कन राज्यों को दक्षिण की ओर अपने क्षेत्रों का विस्तार करने में मदद मिली।

शाहजहाँ और दक्कन (1636-57 ई.)

- 1636 की संधियों के बाद के दशक में, उत्तर से मुगल हमलों से सुरक्षित, बीजापुर और गोलकुंडा ने कृष्णा नदी से तंजौर और उससे आगे तक समृद्ध और उपजाऊ कर्नाटक क्षेत्र पर कब्जा कर लिया।
- यह क्षेत्र अनेक छोटी-छोटी रियासतों में विभाजित था।
- बीजापुर और गोलकुंडा द्वारा इन राज्यों के विरुद्ध कई अभियान चलाए गए।
- उदार तटस्थता बनाए रखने के अलावा, मुगलों ने कूटनीतिक तरीकों से दोनों दक्कन राज्यों के बीच मतभेदों और प्रतिद्वंद्विता को सुलझाने में मदद की, जब भी उनके नियंत्रण से बाहर होने का खतरा हुआ।
- उस समय के राजनयिक पत्राचार से पता चलता है कि मुगल सम्राट ने 1646 में बीजापुर और गोलकुंडा के बीच हुए समझौते में एक निश्चित भूमिका निभाई थी, जिसके तहत दक्षिण में उनकी सेनाओं द्वारा जीते गए प्रदेशों और लूट को बीजापुर को दो हिस्सों और गोलकुंडा को एक हिस्से के अनुपात में विभाजित किया जाना था।
- जिंजी और कर्नाटक पर नियंत्रण के लिए बीजापुर और गोलकुंडा के बीच संघर्ष के कारण कुतुब शाह को पुनः मुगल हस्तक्षेप की मांग करनी पड़ी।
- झगड़ों के बावजूद विजय का कार्य आगे बढ़ा और थोड़े ही समय में इन दोनों राज्यों का क्षेत्रफल दोगुने से भी अधिक हो गया तथा वे अपनी शक्ति और समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर पहुंच गये।

- दुर्भाग्यवश, तीव्र विस्तार ने इन राज्यों में जो भी आंतरिक एकजुटता थी उसे कमजोर कर दिया।
- बीजापुर के शाहजी और गोलकुंडा के मीर जुमला जैसे महत्वाकांक्षी सरदारों ने अपने लिए प्रभाव क्षेत्र बनाना शुरू कर दिया।
- मुगलों ने भी पाया कि दक्कन में शक्ति संतुलन बिगड़ गया है और उन्होंने इन राज्यों के विस्तारवादी चरण के दौरान अपनी उदार तटस्थता के लिए कीमत मांगी।
- इसके बाद दक्कन राज्यों के प्रति मुगलों का रवैया तेजी से बदल गया, जिसकी परिणति 1656 और 1657 में गोलकुंडा और बीजापुर पर आक्रमण के रूप में हुई।
- बीजापुर के मामले में, 1656 में मुहम्मद आदिल शाह की मृत्यु, तथा उसके परिणामस्वरूप बीजापुर में उत्पन्न अव्यवस्था, तथा कर भुगतान में बकाया राशि और हाल के युद्ध में गोलकुंडा का साथ देने को आक्रमण के बहाने के रूप में इस्तेमाल किया गया।
- तदनुसार, शाह बेग खान, काजी मुहम्मद हाशिम और कृष्ण राव के नेतृत्व में मुगल सेना कर्नाटक में प्रवेश कर चुकी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि शाहजहाँ के उद्देश्य अभी भी अस्पष्ट थे, क्योंकि अब उसने औरंगज़ेब को बीजापुर के मामलों को निपटाने के बाद गोलकुंडा पर विजय प्राप्त करने का निर्देश दिया था।
- बीजापुर के संबंध में शाहजहाँ ने औरंगजेब को निर्देश दिया कि यदि संभव हो तो वह सम्पूर्ण राज्य को अपने अधीन कर ले; अन्यथा पुराने अहमदनगर क्षेत्र को पुनः प्राप्त कर ले, तथा शेष क्षेत्र को डेढ़ करोड़ रुपये के हर्जाने तथा सम्राट की प्रभुता की मान्यता, अर्थात् उसके नाम पर खुतबा और सिक्का पढ़े जाने पर छोड़ दे।
- इन राज्यों के साथ अंतिम समझौते औरंगज़ेब द्वारा रखी गई पूर्ण विलय की माँगों से कम थे, और ऐसा प्रतीत होता है कि शाहजहाँ ने शुरू में इस पर सहमति जताई थी। औरंगज़ेब को संदेह था कि बादशाह के रवैये में यह बदलाव उसके कट्टर प्रतिद्वंद्वी दारा के कहने पर हुआ था। कुल मिलाकर, ऐसा प्रतीत होता है कि दक्कन में शाहजहाँ के उद्देश्य अभी भी सीमित थे, और जब औरंगज़ेब ने पूर्ण विजय की नीति अपनाने की कोशिश की, तो वह घबरा गया।
- शाहजहाँ द्वारा दक्कन को एक बार फिर से युद्ध की आग में झोंकने की कार्रवाई, जिसने 1636 में इतने बड़े प्रयासों के बाद जो हासिल किया था, उसे निष्फल कर दिया, संदिग्ध बुद्धिमत्ता मानी जा सकती है। अपने इस कदम से उसने दक्कन के दो राज्यों के पूर्ण विलय को एजेंडे में शामिल कर लिया–ऐसा कुछ जिसे पूर्ववर्ती मुग़ल बादशाहों और खुद उसने भी बड़ी सख़्ती से टाला था।
- इस प्रकार, एक तरह से कहें तो, यह शाहजहाँ ही था जिसने दुविधा पैदा की थी, जिसे औरंगजेब अपने लंबे शासनकाल में कभी हल नहीं कर सका - कि 1636 की संधियाँ समाप्त हो चुकी थीं, फिर भी दक्कन राज्यों के पूर्ण विलय ने समस्याओं को हल करने की बजाय और अधिक समस्याएं उत्पन्न कर दीं।
- उपरोक्त निष्कर्ष शाहजहाँ की राजनीतिक दूरदर्शिता की प्रतिष्ठा पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं, जो उसने पहले दक्कन संकट से कुशलतापूर्वक निपटने के कारण अर्जित की थी। अपने शासनकाल के उत्तरार्ध में, शाहजहाँ ने बल्ख अभियान को कमतर आँका, जबकि कंधार के बाद के अभियान भी उसकी प्रतिष्ठा में कोई वृद्धि नहीं कर पाए। लेकिन उसकी सबसे बड़ी भूल दक्कन के प्रश्न को फिर से खोलना था, जिसे उसने 1636 में बड़ी सावधानी से सुलझाया था।

दक्कन राज्यों का सांस्कृतिक योगदान

- मुगलों की तरह, **दक्कनी शासक भी संस्कृति के महान संरक्षक थे और उन्होंने सहिष्णुता की व्यापक नीति अपनाई जिससे एक समग्र संस्कृति को बढ़ावा मिला। अली आदिल शाह (1580) हिंदू और मुस्लिम संतों के साथ विचार-विमर्श आयोजित करने के बहुत शौकीन थे।** उन्हें सूफी कहा जाता था।
- अकबर से बहुत पहले, आदिल शाह ने कैथोलिक मिशनरियों को अपने दरबार में आमंत्रित किया था। उनके पास एक उत्कृष्ट पुस्तकालय था, जिसके लिए उन्होंने प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान **वामन पंडित को नियुक्त किया था।** उनके उत्तराधिकारियों ने भी संस्कृत और मराठी का संरक्षण जारी रखा।
- **आदिल शाह के उत्तराधिकारी , इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय (1580-1627)** नौ वर्ष की आयु में (बीजापुर की) गद्दी पर बैठे। **वे गरीबों के प्रति बहुत संवेदनशील थे और उन्हें अबला बाबा, यानी गरीबों का मित्र, की उपाधि प्राप्त थी।**

- इब्राहीम आदिल शाह द्वितीय संगीत के बहुत शौकीन थे; उन्होंने किताब-ए-नवरस (नौ रसों की पुस्तक) नामक एक पुस्तक की रचना की।
- इस ग्रंथ में उन्होंने संगीत की विभिन्न विधाओं या रागों का वर्णन किया है। अपने गीतों में उन्होंने संगीत और विद्या की देवी सरस्वती की मुक्त कंठ से आराधना की है। अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण, उन्हें जगद्गुरु कहा जाने लगा।
- आदिल शाह द्वितीय ने आगे चलकर नौरसपुर नामक एक नई राजधानी बनाई; जहाँ उन्होंने बड़ी संख्या में संगीतकारों को (बसने के लिए) आमंत्रित किया। उन्होंने हिंदू संतों और मंदिरों सहित सभी को संरक्षण प्रदान किया। इसमें विठोबा की पूजा के केंद्र पंढरपुर को अनुदान देना भी शामिल था, जो महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन का केंद्र बन गया।
- गोलकुंडा साहित्यकारों के लिए एक लोकप्रिय बौद्धिक स्थल था। **सुल्तान मुहम्मद कुली कुतुब शाह** (जो अकबर के समकालीन थे) साहित्य और वास्तुकला दोनों के बहुत शौकीन थे। सुल्तान मुहम्मद कुतुब शाह ने दक्खिनी उर्दू, फ़ारसी और तेलुगु में लिखा और एक विशाल संग्रह छोड़ा।
- वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शायरी में धर्मनिरपेक्षता का पुट डाला। कुतुब शाह ने न केवल ईश्वर और पैगंबर (उनकी प्रशंसा) के बारे में लिखा, बल्कि उन्होंने प्रकृति, प्रेम और अपने समय के सामाजिक जीवन के बारे में भी लिखा।

उर्दू और अन्य भाषाएँ

- **इस काल में उर्दू का दक्खिनी रूप में विकास** एक महत्वपूर्ण घटना थी। मुहम्मद कुली कुतुब शाह के उत्तराधिकारियों और उस समय के कई अन्य कवियों और लेखकों ने उर्दू को एक साहित्यिक भाषा के रूप में अपनाया। **बीजापुर दरबार में भी उर्दू को संरक्षण प्राप्त था**। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में फलने-फूलने वाले कवि नुसरती ने कनक नगर के शासक राजकुमार मनोहर और मधु मालती के बारे में एक प्रेम कथा लिखी। अठारहवीं शताब्दी तक उर्दू धीरे-धीरे दक्कन से उत्तर भारत में फैल गई।
- कुतुब शाह के उत्तराधिकारियों और उनके समय के कई अन्य कवियों और लेखकों ने उर्दू को साहित्यिक भाषा के रूप में अपनाया। उर्दू भाषा के अलावा, फ़ारसी, हिंदी और तेलुगु भी मुहावरों और शब्दावली के लिए महत्वपूर्ण थीं।

चित्रकारी

- हाल के शोध से पता चलता है कि **दक्कन चित्रकला की शुरुआत लगभग 1560 में हुई थी, मुगल चित्रकला के साथ ही**। मुगलों की तरह, दक्कन के चित्रकारों ने भी फ़ारसी चित्रकला और सल्तनत/बहमनी काल के दौरान चित्रकला के शुरुआती रूपों, साथ ही चित्रकला की स्वदेशी परंपराओं को आत्मसात किया।
- दक्कन चित्रकला की सभी शैलियों में, **बीजापुरी चित्रकला को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है**। बीजापुरी चित्रकला को मिली महान प्रसिद्धि मुख्यतः **इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय** (1580-1627) के संरक्षण और व्यक्तित्व के कारण है। यह वह काल था जब दक्कन के तीनों राज्यों, अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुंडा में सर्वश्रेष्ठ दक्खनी कलाकृतियाँ निर्मित हुईं।

वास्तुकला

- 1591-92 में, **कुली कुतुब शाह ने हैदराबाद शहर की स्थापना की**; उन्होंने कई इमारतें भी बनवाईं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध **चार मीनार है।** इसमें चार ऊँचे मेहराब हैं, जो चारों दिशाओं की ओर हैं। इसकी मुख्य सुंदरता **चार मंजिला और 48 मीटर ऊँची चार मीनारें हैं**। मेहराबों की दोहरी स्क्रीन पर सुंदर नक्काशी की गई है।
- गोल **गुम्बज (बीजापुर के सुल्तान मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा), जिसका निर्माण 1656 में हुआ था**, अब तक का सबसे बड़ा एकल गुंबद है। गोल गुम्बज के वास्तुकार **दाबुल के याकूत** थे । इसके सभी अनुपात सामंजस्यपूर्ण हैं, विशाल गुंबद को कोने पर ऊँची, पतली मीनारों द्वारा संतुलित किया गया है। कहा जाता है कि विशाल मुख्य कक्ष के एक ओर से फुसफुसाहट की आवाज़ दूसरी ओर से स्पष्ट रूप से सुनी जा सकती है।
- **इब्राहिम रौज़ा, एक और प्रसिद्ध बीजापुरी इमारत है, जिसमें आदिल शाही वंश के इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय का मकबरा है।** इसका निर्माण 17वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ था और इसमें इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय और उनकी पत्नी ताज सुल्ताना की कब्रें हैं।
- **भारत के सबसे उत्कृष्ट किलों में से एक माना जाने वाला गोलकुंडा किला उस समय की भव्य 'नवाबी' संस्कृति का प्रतीक है।** गोलकुंडा किले की वर्तमान भव्यता का श्रेय **मोहम्मद कुली कुतुब शाह को जाता है।**

- इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि दक्कनी राज्यों ने न केवल सांप्रदायिक सद्भाव के उत्कृष्ट मानकों को बनाए रखा, बल्कि संगीत, साहित्य, चित्रकला और वास्तुकला के क्षेत्र में भी योगदान दिया।

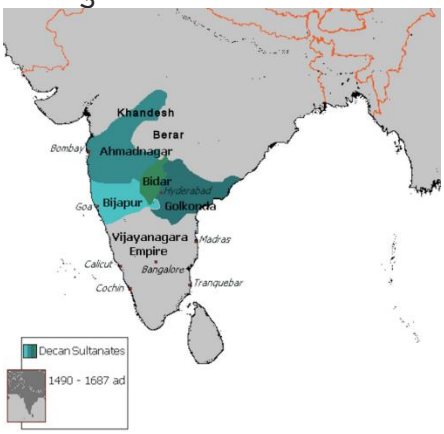

दक्कनी राज्यों

कुतुब शाही राजवंश

- **बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद गठित सल्तनतों में से एक।**
- गोलकुंडा के गवर्नर सुल्तान कुली कुतुब शाह ने गोलकुंडा के कुतुब शाही राजवंश की स्थापना की।
- इब्राहिम कुली कुतुब शाह वली ने अहमदनगर के हुसैन निजाम शाह प्रथम की बेटी से विवाह किया, और विजयनगर साम्राज्य के खिलाफ दक्कन सुल्तानों के गठबंधन बनाने में अग्रणी भूमिका निभाई, जिसके परिणामस्वरूप 1565 में तालिकोटा की लड़ाई में विजयनगर सेना की हार हुई। मुहम्मद कुली कुतुब शाह ने हैदराबाद शहर की स्थापना की और अपनी हिंदू प्रेमिका भागमती के नाम पर इसका नाम भाग्यनगर रखा।
- **1634 में अब्दुल्ला कुतुब शाह ने आंध्र तट पर अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापार विशेषाधिकार प्रदान करते हुए गोल्डन फ़रमान जारी किया।**
- अब्दुल्ला कुतुब शाह के शासनकाल के दौरान, गोलकुंडा साम्राज्य को 1635 में मुगल सम्राट शाहजहाँ की अधीनता स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

आदिल शाही राजवंश

- **दक्कन में बहमनी साम्राज्य के दो प्रमुख उत्तराधिकारी राज्यों में से एक।**
- इस राजवंश ने 17वीं शताब्दी में मुगलों के दक्षिण की ओर बढ़ने का कड़ा प्रतिरोध किया, जब तक कि 1686 में भारतीय सम्राट औरंगजेब ने बीजापुर पर कब्जा करके इसे समाप्त नहीं कर दिया।
- **राजवंश के संस्थापक यूसुफ आदिल शाह ने शिया धर्म की शुरुआत की; गोवा पुर्तगालियों से हार गए।**
- गोलकुंडा, बीदर और अहमदनगर के साथ, इस राजवंश ने 1565 में तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर साम्राज्य को उखाड़ फेंका।
- **इब्राहीम आदिल शाह शिया धर्म से सुन्नी धर्म में वापस आ गये।**

निज़ाम शाही राजवंश

- **निजाम शाही राजवंश लगातार युद्ध में लगा हुआ था। बुरहान शाह ने विजयनगर के हिंदू राज्य के साथ गठबंधन किया,** लेकिन उनके उत्तराधिकारी हुसैन शाह ने इस गठबंधन में शामिल होकर 1565 में इसे उखाड़ फेंका।
- उत्तर से मुगलों के आक्रमण का बीजापुर की विधवा रानी **चांद बीबी** ने बहादुरी से प्रतिरोध किया , लेकिन 1596 में बरार को सौंप दिया गया और 1600 में रानी की मृत्यु के बाद अहमदनगर पर अधिकार कर लिया गया।
- **यह राजवंश 1633 में दौलताबाद के पतन तक जीवित रहा।**

The Maratha Empire

मराठा साम्राज्य

- मराठा **साम्राज्य**, जिसे मराठा संघ भी कहा जाता है, एक प्रारंभिक आधुनिक भारतीय साम्राज्य था और बाद में एक संघ बन गया जिसने 18वीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े हिस्से को नियंत्रित किया।
- **मराठा शासन औपचारिक रूप से 1674 में** भोंसले वंश के शिवाजी के छत्रपति के रूप में **राज्याभिषेक के साथ शुरू हुआ।**
- मुगल वंश **की क्षीण होती छाया** में उभरने वाली सबसे महत्वपूर्ण शक्ति मराठा थे। 16वीं और 17वीं शताब्दी में **मराठों के उत्थान में कई कारकों का योगदान था ।**
- **मराठा देश के भौतिक वातावरण**, जैसे **पहाड़ी क्षेत्र और घने जंगल**, ने संभवतः मराठों में कुछ विशिष्ट गुणों को जन्म दिया।
  - उदाहरण के लिए, इस कठिन भूभाग ने मराठा सैनिकों को गुरिल्ला रणनीति में निपुण बना दिया।
- मराठों **ने बीजापुर और अहमदनगर के दक्कन सल्तनतों की प्रशासनिक और सैन्य प्रणालियों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया**, जिससे उन्हें प्रशासन का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ, जिससे मराठा राज्य के उद्भव और संगठन में और अधिक सुविधा हुई।
- इसके अलावा, **तुकाराम, रामदास, वामन पंडित और एकनाथ जैसे आध्यात्मिक नेताओं के प्रभाव में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के प्रसार ने उनके बीच सामाजिक एकता को** बढ़ावा दिया और शाहजी भोंसले और उनके पुत्र शिवाजी द्वारा अत्यंत आवश्यक राजनीतिक एकता प्रदान की गई।
- मुगल साम्राज्य के विघटन के अवसर का लाभ उठाते हुए मराठों ने उत्तर की ओर अपना विस्तार शुरू किया और मालवा, गुजरात और बुंदेलखंड पर कब्जा कर लिया, तथा समय के साथ मुगलों की सत्ता के लिए एक कठिन चुनौती पेश की।

Shivaji Maharaj Family Tree

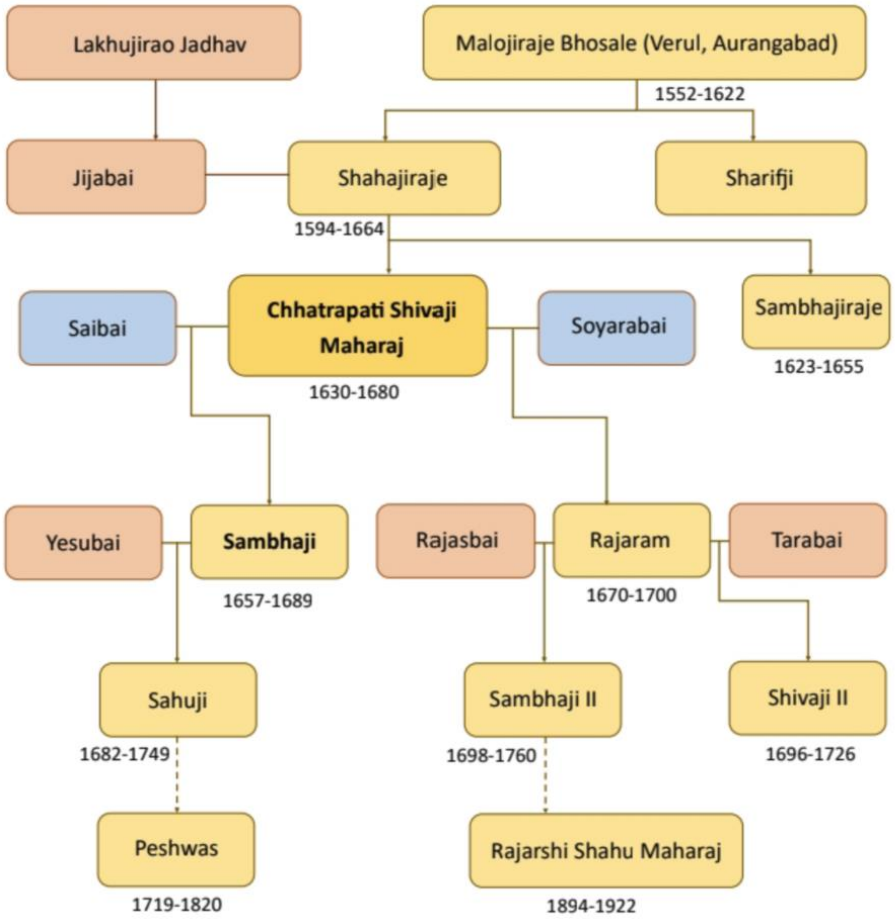

शिवाजी और मराठों का उदय

Shivaji Raje Bhonsle (c. 1674 – 1680 CE)

- **छत्रपति शिवाजी महाराज का** जन्म **19 फरवरी, 1630** को **शिवनेरी (पूना) में** हुआ था । **उनके पिता शाहजी भोंसले और माता जीजा बाई थीं।**
- शिवाजी अपने व्यक्तित्व के विकास पर जीजाबाई (उनकी मां), दादाजी कोणदेव (उनके शिक्षक), सूफी संत पीर शेख याकूब, गुरु रामदास, तुकाराम (भक्ति संत), रत्नागिरी के हजरत बाबा, रामायण और महाभारत से बहुत प्रभावित थे।
- छत्रपति शिवाजी महाराज को **लगभग 1637 ई. में अपने पिता से पूना की जागीर विरासत में मिली थी। लगभग 1647 ई. में अपने संरक्षक दादाजी कोंडदेव** की मृत्यु के बाद , उन्होंने उनकी जागीर का पूर्ण प्रभार संभाला।
- छत्रपति शिवाजी महाराज ने 18 वर्ष की अल्पायु में ही अपनी वीरता सिद्ध कर दी थी, जब **उन्होंने बीजापुर के शासक से पूना के निकट कई पहाड़ी किलों - राजगढ़, कोंडाना और तोरणा - पर विजय प्राप्त की थी** (लगभग 1645-1647 ई. के बीच)।
- लगभग 1646 ई. में उन्होंने **बीजापुर के शासक से तोरणा पर कब्जा कर लिया** और लूट के माल से रायगढ़ का किला बनवाया।
- लगभग 1656 ई. में, छत्रपति शिवाजी महाराज ने **मराठा सरदार चंद्र राव मोरे से जावली पर विजय प्राप्त की** । जावली की विजय ने उन्हें मावला क्षेत्र का निर्विवाद स्वामी बना दिया।
- लगभग 1657 ई. में उन्होंने **बीजापुर राज्य पर आक्रमण किया और कोंकण (उत्तर) क्षेत्र में कई पहाड़ी किलों पर कब्जा कर लिया।**
- लगभग 1654 ई. तक, शिवाजी ने **पश्चिमी घाट और कोंकण तट के किलों पर कब्ज़ा कर लिया था।** शिवाजी और उनके बड़े भाई ने **आदिल शाह की आक्रमणकारी सेनाओं को पराजित किया** और अपने पिता को रिहा करवाया।
- **उन्होंने दमन में पुर्तगाली बस्ती पर** भी छापा मारा और उनसे कर प्राप्त किया।
- **Battle of Pratapgarh (c. 1659 CE)**
- बीजापुर के सुल्तान **(आदिल शाह) ने छत्रपति शिवाजी महाराज के विरुद्ध** एक प्रमुख बीजापुर सरदार **अफ़ज़ल ख़ान को भेजा** । लेकिन **छत्रपति शिवाजी महाराज ने अफ़ज़ल ख़ान की** निर्भीकता से हत्या कर दी। मराठा सैनिकों ने पन्हाला के शक्तिशाली किले पर कब्ज़ा कर लिया और दक्षिण कोंकण तथा कोल्हापुर जिलों में व्यापक विजय अभियान चलाया। **छत्रपति शिवाजी महाराज की सैन्य विजयों ने उन्हें मराठा क्षेत्र में एक महान व्यक्ति बना दिया।**
- **कोल्हापुर का युद्ध:**
- **यह युद्ध बीजापुर के आदिल शाह के प्रतिनिधि जनरल रुस्तमजमाँ और शिवाजी** के बीच हुआ । शिवाजी की जीत **से औरंगज़ेब घबरा गया** , लेकिन वह अब भी शिवाजी को एक पहाड़ी चूहे से ज़्यादा कुछ नहीं समझता था।
- **पवनखिंड का युद्ध (लगभग 1660 ई.):**
- **सिद्दी जौहर (बीजापुर के आदिल शाह का प्रतिनिधित्व) और शिवाजी** के बीच लड़ा गया । शाहजी के माध्यम से शिवाजी और आदिल शाह के बीच एक युद्धविराम हुआ, जिससे **शिवाजी के राज्य की स्वतंत्रता को औपचारिक रूप से मान्यता मिल गई।**
- लगभग **1660 ई. में, औरंगज़ेब ने दक्कन के मुग़ल गवर्नर शाइस्ता ख़ाँ को** शिवाजी के विरुद्ध भेजा। **शिवाजी को मुग़ल सेना के हाथों हार का सामना करना पड़ा और उन्होंने पूना भी खो दिया , लेकिन युद्ध** लगभग 1663 ई. तक जारी रहा। लगभग **1663 ई. में, शिवाजी ने शाइस्ता ख़ाँ के शिविर पर एक साहसिक रात्रि आक्रमण किया, जिसमें ख़ाँ घायल हो गया और उसका पुत्र मारा गया** । इस साहसिक आक्रमण से ख़ाँ की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची और औरंगज़ेब ने उसे वापस बुलाकर दंड स्वरूप **बंगाल भेज दिया ।**
- लगभग **1664 ई. में, शिवाजी ने सूरत के समृद्ध बंदरगाह को लूट लिया** । एक महत्वपूर्ण मुगल व्यापारिक शहर, सूरत की इस लूट से **औरंगज़ेब क्रोधित हो गया** और **उसने मराठा शक्ति को नष्ट करने के लिए आमेर के राजा जय सिंह और दिलेर खान को भेजा।** उन्होंने व्यापक तैयारी की और **पुरंदर किले को घेरने में सफल रहे,** जहाँ शिवाजी ने अपने परिवार और खजाने को ठहराया था। शिवाजी ने जय सिंह के साथ बातचीत शुरू की और लगभग 1665 ई . **में पुरंदर की संधि पर हस्ताक्षर किए गए।**

- इस संधि के अनुसार, **शिवाजी को अपने 35 किलों में से 23 किले मुगलों को सौंपने पड़े** तथा शेष 12 किले मुगल साम्राज्य की सेवा और वफादारी की शर्त पर शिवाजी को छोड़ने पड़े।
- दूसरी ओर, **मुगलों ने बीजापुर राज्य के कुछ हिस्सों पर शिवाजी के अधिकार को मान्यता दे दी**। चूँकि शिवाजी ने मुगलों की व्यक्तिगत सेवा से इनकार कर दिया था, इसलिए **उनके नाबालिग बेटे संभाजी को 5000 का मनसब प्रदान किया गया।**
- कुछ किंवदंतियों के अनुसार, लगभग **1665 ई. में, शिवाजी अपने पुत्र के साथ आगरा आए थे, लेकिन** औरंगजेब ने उन्हें अपमानित किया और उन्हें नज़रबंद कर दिया **। ऐसा माना जाता है कि औरंगज़ेब की योजना शिवाजी को कंधार** भेजने की थी , लेकिन शिवाजी पालकी उठाने वाले का वेश धारण करके **अपने पुत्र के साथ भाग निकले ।**
- औरंगजेब क्रोधित हो गया और उसने उसे **बरार के राजा और जागीर की उपाधि दे दी।**
- लगभग 1667 और 69 ई. के बीच, शिवाजी ने अपनी सेना का गठन किया और अपनी गतिविधियों को सीमित रखा। **लगभग 1670 ई. में, उन्होंने अपने अधिकांश खोए हुए किलों को पुनः प्राप्त कर लिया और सूरत पर दूसरी बार आक्रमण किया।**
- उन्होंने **सलहेर के युद्ध (लगभग 1672 ई.) में मुगलों को पराजित किया** और **रायगढ़ में अपना राज्याभिषेक किया** तथा **महाराजा छत्रपति की उपाधि धारण की।**
- **लगभग 1676 ई** . के अंत में शिवाजी ने दक्षिण भारत के कर्नाटक क्षेत्र में विजय की एक लहर शुरू की और **वेल्लोर और गिन्जी के किलों पर कब्जा कर लिया** , जो नौ वर्षों तक मराठाओं की राजधानी रहे।
- छत्रपति शिवाजी महाराज का **लगभग 1680 ई. में रायगढ़ में** (53 वर्ष की आयु में) बुखार के कारण निधन हो गया। उन्होंने जिस मराठा साम्राज्य की स्थापना की, उसने डेढ़ शताब्दी तक पश्चिमी भारत पर अपना प्रभुत्व बनाए रखा।
- शिवाजी ने **संस्कृत को बढ़ावा दिया** , लेकिन **सभी धर्मों का सम्मान किया और जबरन धर्मांतरण का विरोध किया** ।

Sambhaji (c. 1681 – 1689 CE)

- **छत्रपति शिवाजी महाराज की मृत्यु के बाद** उनके पुत्रों **संभाजी और राजाराम** के बीच उत्तराधिकार का युद्ध हुआ, जिसमें संभाजी विजयी हुए।
- कई **मराठा सरदारों ने संभाजी का समर्थन न करके** शिवाजी के दूसरे पुत्र **राजाराम का समर्थन किया। इस आंतरिक संघर्ष ने मराठा शक्ति को कमज़ोर कर दिया।**
- **औरंगजेब के विद्रोही पुत्र शहजादा अकबर ने उसके यहां शरण ली** और **1689 ई. में संगमेश्वर में हुए एक युद्ध में मुगल सेनापति मुकर्रब खान ने उसे पराजित कर दिया** तथा अपने निजी सलाहकार कवि कलश के साथ उसकी हत्या कर दी गई ।
- **संभाजी की विधवा, येसुबाई रायगढ़ के किले की रक्षा नहीं कर सकी** और **उसे उसके बेटे शाहू के साथ बंदी बना लिया गया।**

राजाराम (लगभग 1689-1707 ई.)

- **संभाजी का छोटा भाई** , जो **कभी गद्दी पर नहीं बैठा** क्योंकि उसका दावा था कि वह शाहू की ओर से शासन कर रहा है। **उसने अपना मुख्यालय गिन्जी में स्थानांतरित कर दिया** ।
- मुगलों द्वारा गिन्जी पर विजय प्राप्त करने के बाद, **वह विशालगढ़ और फिर सतारा भाग गए, तथा पेशवा रामचंद्र पंत को हुकूमत पन्हा (राजा का दर्जा) दे दिया।**
- उनके शासनकाल के दौरान, रामचन्द्र पंत, प्रह्लाद निराजी और धनाजी जाधव जैसे समर्पित मराठा नेताओं ने मुगलों के बीच कहर बरपाया।
- **लगभग 1700 ई. में उनकी मृत्यु हो गई; उनकी विधवा ताराबाई ने अपने शिशु पुत्र शिवाजी द्वितीय के नाम पर शासन संभाला।**
- लगभग उसी समय, **मराठों के बीच गृहयुद्ध** की उम्मीद में **ज़ुल्फ़िकार खान ने शाहू को रिहा कर दिया** ।
- जैसी कि उम्मीद थी, मुगलों ने मराठों को **दो प्रतिद्वंद्वी खेमों** में विभाजित करने में सफलता प्राप्त की - **एक ताराबाई के नेतृत्व में** और **दूसरा संभाजी के पुत्र शाहू के नेतृत्व में** ।

- **ताराबाई ने शाहू को महाराष्ट्र से बाहर करने के लिए धनाजी जाधव को भेजा**, लेकिन धनाजी को शाहू ने जीत लिया।
  - लगभग 1707 ई. में, बालाजी विश्वनाथ नामक एक चितपावन ब्राह्मण की मदद से, शाहू खेड़ और **गिरिजाघर के युद्ध में ताराबाई को हराने में सफल रहे।**
  - **वह कोल्हापुर चली गईं और कोल्हापुर राजघराने की** स्थापना की ।

शाहू (लगभग 1707 – 1749 ई.)

- उनके शासनकाल के दौरान, **सतारा और कोल्हापुर राज्य अस्तित्व में आए** । लगभग 1710 ई. तक, दो अलग-अलग रियासतें एक स्थापित तथ्य बन चुकी थीं, जिसकी पुष्टि अंततः लगभग 1731 ई. में वार्ना की संधि द्वारा हुई ।
- इस **काल में चितपावन ब्राह्मण मंत्रियों के एक वंश का उदय भी हुआ, जिन्हें पेशवा (मुख्यमंत्री) की उपाधि प्राप्त थी** और मराठा राज्य की **केंद्रीय सत्ता पर उनका नियंत्रण हो गया** , जिससे भोंसले केवल नाममात्र के रह गए। वास्तव में, इस वंश के पहले प्रमुख व्यक्ति **बालाजी विश्वनाथ** थे , जिन्होंने शाहू को सत्ता में आने में मदद की थी।
- लगभग **1719 ई. में, पेशवा बालाजी विश्वनाथ की सलाह पर, शाहू ने फारुख सियार को फाँसी देने में सैयद बंधुओं की सहायता की** और उसकी माँ को रिहा करवाया। **इसके तुरंत बाद, उन्होंने स्वराज/मराठा भूमि की स्वतंत्रता की घोषणा की।**

Rajaram II /Ramraja (c. 1749 – 1777 CE)

- वह **शाहू का दत्तक पुत्र** था । ताराबाई ने उसे राजाराम के पोते के रूप में प्रस्तुत किया और राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली।
- हालाँकि, वह केवल एक ढोंगी था; **पेशवा बाजी राव ने उसे नाममात्र छत्रपति के रूप में बनाए रखा।**
- छत्रपति की शक्ति लगभग पूरी तरह से पेशवा की शक्ति से ढक गयी थी।

कोल्हापुर का शाही घराना

Shivaji II (c. 1710 – 1714 CE)

- वह **ताराबाई और राजाराम के पुत्र** थे और रानी ताराबाई के अधीन थे।

Sambhaji II (c. 1714 – 1760 CE)

- वह **राजाराम की दूसरी पत्नी राजाबाई का पुत्र** था जिसने शिवाजी और ताराबाई को उखाड़ फेंका था।
- लगभग 1713 ई. में **उन्होंने अपने चचेरे भाई शाहू के साथ वार्ना की संधि पर हस्ताक्षर किए,** जिसके तहत **भोंसले परिवार की दो रियासतों (सतारा और कोल्हापुर) को औपचारिक रूप दिया गया।**
- अंग्रेजों ने लगभग 1765 ई. और लगभग 1792 ई. में कोल्हापुर के विरुद्ध अभियान भेजे, और लगभग 1812 ई. में मराठा संघ के पतन के बाद राज्य ने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली।

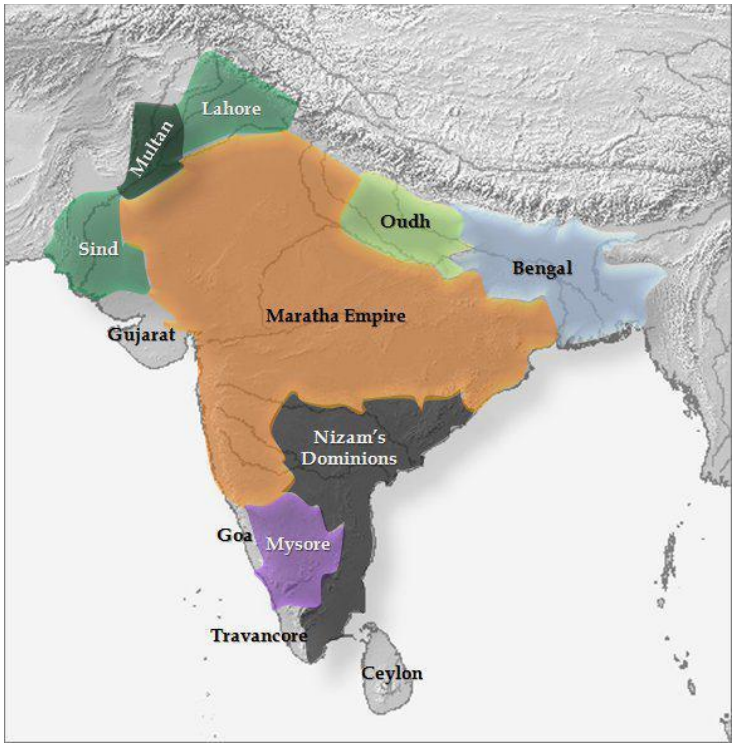

पेशवा का कार्यालय (लगभग 1640-1818 ई.)

- 'पेशवा' शब्द संभवतः फ़ारसी भाषा से आया है, जिसका अर्थ है 'सर्वोच्च', और इसे **दक्कन में मुस्लिम शासकों द्वारा प्रचलित किया गया** था ।
- **पेशवा के कर्तव्य प्रधानमंत्री के समान थे।**

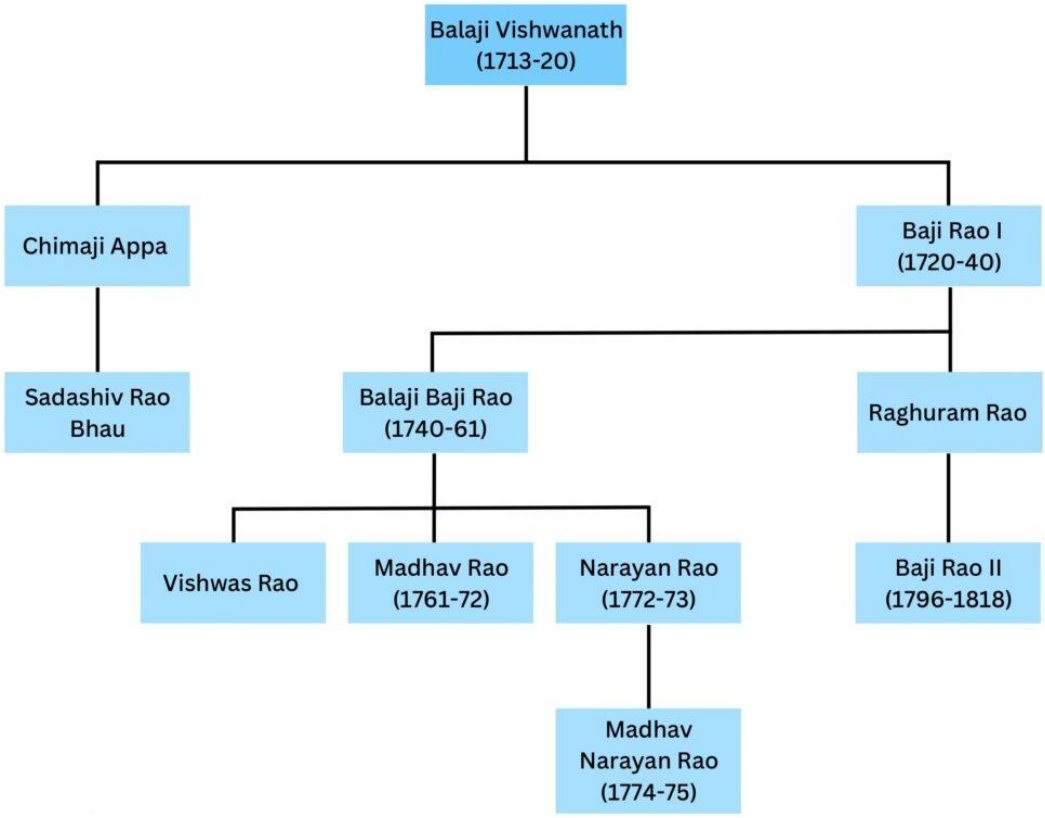

सोनोपंत दबीर (लगभग 1640-1652 ई.)

- प्रथम **अनौपचारिक** पेशवा

Shyampant Kulkarni Ranzekar (c.1652–1657 CE)

- Was **Peshwa under Shahji Bhonsle**

मोरोपंत त्रिंबक पिंगले (सी.1657-1683 ई.)

- **छत्रपति शिवाजी द्वारा** पेशवा नियुक्त किया गया था ।

Moreshwar Pingale (c.1683–1689 CE)

- क्या पेशवा **संभाजी के अधीन था?**

Ramchandra Pant Amatya (c.1689–1708 CE)

- **राजाराम के अधीन** पेशवा , और जब राजाराम को लगभग 1689 ई. में गिन्जी भागना पड़ा, तो उन्होंने **जाने से पहले पंत को हुकूमत पन्हा (राजा का दर्जा) दिया।**
- वह एक **योग्य प्रशासक** थे क्योंकि उन्होंने मुगलों के आगमन, वतनदारों (मराठों के अधीन स्थानीय क्षत्रप) से विश्वासघात और खाद्यान्न की कमी जैसी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों जैसी कई चुनौतियों के बीच राज्य का प्रबंधन किया।
- **उन्होंने "छाया/प्रॉक्सी राजा"** के रूप में कार्य किया , तथा महान मराठा योद्धा संताजी घोरपड़े और धनाजी जाधव से सैन्य सहायता प्राप्त की।
- लगभग **1698 ई. में, राजाराम ने अपनी पत्नी ताराबाई को पेशवा का पद देने की पेशकश की,** और उन्होंने खुशी-खुशी पद छोड़ दिया। ताराबाई ने उन्हें मराठा राज्य के वरिष्ठ प्रशासन में एक महत्वपूर्ण पद प्रदान किया।
- **उन्होंने आज्ञापत्र लिखा** , जिसमें उन्होंने युद्ध, किलों के रखरखाव और प्रशासन की विभिन्न तकनीकों की व्याख्या की।
- **चूँकि वह शाहूजी के विरुद्ध ताराबाई के प्रति वफ़ादार थे, इसलिए 1707 ई. में शाहूजी के आगमन के बाद उन्हें दरकिनार कर दिया गया।**

Balaji Vishwanath Bhatt (c.1713–1719 CE)

- वे कोंकण क्षेत्र **के श्री वर्धन भट्ट परिवार** से थे । **इतिहास में उन्हें पेशवा के पद को वंशानुगत बनाने** और मराठा प्रशासन में इसे सबसे महत्वपूर्ण और शक्तिशाली पदों में से एक बनाने के लिए जाना जाता है।
- उन्होंने गृहयुद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और शाहू के लिए सभी मराठा नेताओं का समर्थन प्राप्त करके **शाहू को मराठा शासक बनने में मदद की ।**
- लगभग 1719 ई. में बालाजी विश्वनाथ को **तत्कालीन मुगल सम्राट फर्रुखसियर से कुछ अधिकार प्राप्त हुए, जैसे शाहू को मराठा राजा के रूप में मान्यता देना** तथा कर्नाटक और मैसूर सहित दक्कन के छह मुगल प्रांतों से **चौथ और सरदेशमुखी वसूलने की अनुमति ।**
- **चापेकर बंधु और नाना साहब इसी परिवार से थे।**
- **कान्होजी आंग्रे** (नौसेना के एडमिरल और ताराबाई के सहयोगी) के साथ बातचीत की और धीरे-धीरे कान्होजी को शाहू की नौसेना का एडमिरल (सरखेल) बनने के लिए राजी करने में सफल रहे।
- **Assisted Saiyyad brothers in dethroning Farrukh Siyar from Delhi.**

बाजी राव प्रथम (लगभग 1720-1740 ई.)

- **बालाजी विश्वनाथ के ज्येष्ठ पुत्र,** जो बीस वर्ष की अल्पायु में ही पेशवा बने। वे **सभी नौ पेशवाओं में सबसे प्रसिद्ध थे और उन्हें "थोराले" के नाम से भी जाना जाता था,** जिसका अर्थ है 'ज्येष्ठ' बाजीराव। **शिवाजी के बाद वे गुरिल्ला रणनीति के सबसे महान प्रतिपादक थे।**
- अपने जीवनकाल में, **उन्होंने कभी कोई युद्ध नहीं हारा** और **मराठा शक्ति उनके अधीन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची । उन्होंने उत्तर की ओर विस्तार की नीति** बनाई ताकि मराठा ध्वज कृष्णा से अटक तक फहराए।
- उन्होंने साझा दुश्मन मुगलों के खिलाफ हिंदू सरदारों का समर्थन हासिल करने के लिए **हिंदू-पदपदशाही (हिंदू साम्राज्य) के विचार का प्रचार किया और उसे लोकप्रिय बनाया।**
- **दक्कन में उसका कट्टर प्रतिद्वंद्वी निज़ाम-उल-मुल्क था**, जो कोल्हापुर के राजा के साथ मिलकर बाजीराव और शाहू के खिलाफ लगातार षड्यंत्र रचता रहा। हालाँकि, बाजीराव ने पालखेड़ और भोपाल में हुए युद्ध में निज़ाम को हरा दिया और उसे दक्कन के छह प्रांतों का चौथ और सरदेशमुखी देने के लिए मजबूर कर दिया।
- **लगभग 1722 ई. में उन्होंने पुर्तगालियों से साल्सेट और बेसीन पर कब्जा कर लिया।**
- उन्होंने लगभग 1728 ई. में **प्रशासनिक राजधानी को सतारा से पुणे स्थानांतरित कर दिया ।**
- उनसे संबंधित दो प्रसिद्ध पंक्तियाँ हैं:
- **शाहू (बाजीराव से):** "तुम योग्य पिता के योग्य पुत्र हो।"
- **बाजीराव (शाहू से):** "हम जड़ पर प्रहार करेंगे और शाखाएं स्वयं ही टूटकर गिर जाएंगी।"
- उन्होंने **मराठा सरदारों के बीच संघ की व्यवस्था शुरू कीइस प्रणाली के तहत ,** प्रत्येक मराठा सरदार को एक क्षेत्र सौंपा गया था जिसका स्वायत्त रूप से प्रशासन किया जा सकता था।
- परिणामस्वरूप, कई मराठा परिवार प्रमुख हो गए और भारत के विभिन्न हिस्सों में **अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया । ये थे बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोंसले, इंदौर में होल्कर, ग्वालियर में सिंधिया और पूना में पेशवा।**

Balaji Baji Rao I/ Nana Sahib I (c.1740–61 CE)

- बालाजी बाजी राव उन्नीस वर्ष की छोटी उम्र में **अपने पिता के बाद पेशवा बने और शाहूजी ने उन्हें पेशवा नियुक्त किया।**
- उनके शासनकाल के दौरान ही **मराठा राजा शाहू की लगभग 1749 ई. में** बिना किसी संतान के मृत्यु हो गई। उनके मनोनीत उत्तराधिकारी, **रामराजा** को **पेशवा बालाजी बाजीराव ने सतारा में बंदी बना लिया और** मराठा संघ की सर्वोच्च सत्ता पेशवा के हाथों में चली गई (लगभग 1750 ई. के **संगोला समझौते** द्वारा)।
- उन्होंने **बंगाल के नवाब अलीवर्दी खान को हराया** और भारतीय उपमहाद्वीप का एक तिहाई हिस्सा मराठों के अधीन हो गया।
- पेशवा ने लगभग 1752 ई. में **मुगल सम्राट के साथ एक समझौता किया ।**

- इस समझौते के अनुसार, **पेशवा ने मुगल सम्राट को आश्वासन दिया कि वह मुगल साम्राज्य की आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से रक्षा करेगा,** जिसके लिए उत्तर-पश्चिम प्रांतों का चौथ और आगरा और अजमेर प्रांतों का कुल राजस्व मराठों द्वारा एकत्र किया जाएगा।
- **इस समझौते का सम्मान करते हुए, मराठों ने** [पानीपत का तीसरा युद्ध](#) **(लगभग 1761 ई.)** लड़ा, जब [अहमद शाह अब्दाली](#) ने भारत पर आक्रमण किया, **जिसमें मराठों की हार हुई।** इस युद्ध में कई मराठा सरदार और हज़ारों सैनिक मारे गए। **इस युद्ध का दुखद अंत सुनकर बालाजी बाजीराव भी शहीद हो गए।**
- पानीपत की हार **ने मराठों के विस्तार को रोक दिया और साम्राज्य को खंडित कर दिया** । युद्ध के बाद, मराठों ने फिर कभी एकजुट होकर युद्ध नहीं लड़ा। इसके अलावा, भोंसले परिवार की कुछ शाखाएँ कोल्हापुर और नागपुर में स्थानांतरित हो गईं, जबकि मुख्य वंश दक्कन के गढ़, सतारा में ही रहा।

Madhav Rao (c.1761–1772 CE)

- वह एक **उल्लेखनीय पेशवा** थे जिन्होंने **11 वर्षों की छोटी सी अवधि में मराठा साम्राज्य की खोई हुई किस्मत को पुनः स्थापित किया।**
- उन्होंने **निज़ाम को हराया, मैसूर के हैदर अली को कर देने के लिए मजबूर किया** , तथा रोहिल्लाओं को हराकर तथा राजपूत राज्य और जाट सरदारों को अपने अधीन करके **उत्तरी भारत पर पुनः नियंत्रण स्थापित किया ।**
- **लगभग 1772 ई. में वह सम्राट शाह आलम को दिल्ली वापस ले आये।**
- मराठा साम्राज्य का अर्ध-स्वतंत्र राज्यों में विभाजन हुआ। इनमें सबसे महत्वपूर्ण गायकवाड़ (गायकवार), होल्कर और सिंधिया थे।

Raghunath Rao (c.1772–1773 CE)

- माधव राव की मृत्यु (लगभग 1772 ई.) के बाद, **नाना साहब के छोटे भाई रघुनाथ राव और माधव राव के छोटे भाई** नारायण राव के बीच सत्ता के लिए संघर्ष शुरू हो गया ।

नारायण राव (लगभग 1772-1773 ई.)

- लगभग 1773 ई. में **रघुनाथ राव के आदेश पर** उनकी हत्या कर दी गई।

Raghunath Rao (c.1773–1774 CE)

- सिंहासन पर कब्जा कर लिया लेकिन सम्राट द्वारा **मान्यता नहीं दी गई और उसे उखाड़ फेंका गया।**

Sawai Madhav Rao (c.1774–1795 CE)

- **नारायण राव के पुत्र** , जो पेशवा के रूप में राज्याभिषेक के समय **मात्र 40 दिन के थे। साम्राज्य का प्रबंधन नाना फड़नवीस** , एक कुशल प्रशासक और उत्कृष्ट योद्धा, द्वारा बारह सदस्यीय रीजेंसी परिषद, जिसे बारभाई परिषद कहा जाता था, की सहायता से किया जाता **था।**
- हताश होकर, **रघुनाथ राव मदद के लिए अंग्रेजों के पास गए, जिसके परिणामस्वरूप प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (लगभग 1775-82 ई.) हुआ** । तालेगांव के प्रसिद्ध **युद्ध (लगभग 1776 ई.) में, नाना फड़नवीस ने अंग्रेजों को पराजित किया** और प्रसिद्ध **पुरंधर की संधि (लगभग 1776 ई.) और सालबाई की संधि (लगभग 1782 ई.) पर** हस्ताक्षर किए गए। इस संधि ने वस्तुतः यथास्थिति बहाल कर दी, सिवाय इसके कि **अंग्रेजों ने साल्सेट को अपने पास रखा और रघुनाथ राव का पक्ष छोड़ दिया।**
- लगभग 1800 ई. में नाना फड़नवीस की मृत्यु के **बाद मराठा ब्रिटिशों के विरुद्ध टिक नहीं सके** और अपना पुराना गौरव पुनः प्राप्त नहीं कर सके।

बाजीराव द्वितीय (सी.1796-1818 ई.)

- **रघुनाथ राव के पुत्र** और **अंतिम पेशवा** ।
- **सबसे कमजोर और अयोग्य पेशवा जिसने अंग्रेजों के साथ बेसिन की** अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर किए (लगभग 1802 ई.), जिसने अंग्रेजों को न केवल मराठा क्षेत्र बल्कि दक्कन और पश्चिमी भारत पर भी प्रभावी नियंत्रण प्रदान किया।
- **1818 ई. में तीसरे आंग्ल-मराठा युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी ने** उन्हें पराजित किया , जिसके बाद मध्य महाराष्ट्र में पेशवा के क्षेत्र को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बॉम्बे प्रांत में मिला लिया गया और उन्हें पेंशन दे दी गई।

- **नाना साहब (उर्फ धोंडू पंत) बाजी राव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे और उन्होंने 1857 के प्रसिद्ध विद्रोह में भाग लिया था।** मुगल साम्राज्य के पतन के बाद मराठा भारत में एक महान शक्ति के रूप में उभरे। हालाँकि, मराठा भारत में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना को रोकने में सफल नहीं हो सके। इसका एक प्रमुख कारण **होलकर, सिंधिया और भोंसले जैसे मराठा सरदारों में एकता का अभाव** था । इसके अलावा, अंग्रेजों की तुलना में **उनकी सेना कम सुसज्जित थी और अभी भी पुरानी युद्ध पद्धतियों पर निर्भर थी** ।

पेशवाओं का प्रशासन

- **हुज़ूर दफ़्तर पूना में स्थित पेशवाओं के सचिवालय का नाम था** । सामंती प्रभु पेशवा-प्रथा के अंतर्गत स्वायत्त रूप से जागीरों को नियंत्रित करते थे।
- पाटिलों **का काम गाँव को अलग-अलग प्रशासनिक इकाइयों में बाँटना था** । कुलकर्णी उन्हें गाँव के अभिलेखों पर नज़र रखने में मदद करते थे।
- यह माना जाता था कि धन का निरीक्षण **पोटर्स द्वारा किया जाएगा। किसान बलूट प्रणाली** के तहत भुगतान की प्रक्रिया करते हैं , हालाँकि, उन्हें आमतौर पर कटाई के बाद प्रति वर्ष कृषि उत्पादन के लिए धन का लेनदेन करना होता है।
- तरफ, परगना, सरकार और सूबा वास्तव में बड़ी प्रशासनिक इकाइयों के रूप में अस्तित्व में थे।

मराठा संघ

- राजाराम भोंसले द्वारा **जागीर या सरंजाम प्रणाली का पुनरुत्थान वास्तव में मराठा संघ** का स्रोत है ।
- सरंजाम **प्रणाली मराठा साम्राज्य में भूमि अनुदान प्रणाली थी** । यह प्रणाली 17वीं और 18वीं शताब्दी में प्रचलित थी। इस प्रणाली के तहत **सैन्य कमांडरों और अन्य अधिकारियों को** उनकी सेवा के बदले भूमि प्रदान की जाती थी। अधिकारियों को उनके वेतन के बदले में भू-राजस्व दिया जाता था।
- **सरंजामदार के** नाम से जाने जाने वाले अधिकारी , **क्षेत्र में शामिल गांवों से राजस्व एकत्र करने के** हकदार थे ।
- यह प्रणाली भारत के अधिकांश भागों में प्रचलित थी, विशेषकर **दक्कन क्षेत्र में।**
- **बालाजी राव प्रथम** के शासनकाल में इस संगठन की नींव पड़ी। इस दौरान, साहू ने अपने कई मराठा सरदारों को **प्रांत के विशिष्ट क्षेत्रों में चौथ या सरदेशमुखी जैसे कर वसूलने के लिए** अधिकार पत्र भेजे।
- मराठा परिसंघ **चार शक्तिशाली मराठा जागीरदारों में संगठित था:**
- **Raghuji Bhonsle of Berar,**
- **बड़ौदा के गायकवाड़,**
- **इंदौर के होल्कर और**
- **ग्वालियर के सिंधिया।**

बड़ौदा के गायकवाड़:

- गायकवाड़, जिन्होंने **लगभग 1720 ई. में प्रसिद्धि प्राप्त की** , शुरुआत में **न केवल भोंसले, बल्कि शक्तिशाली दाभाड़े परिवार के भी अधीन** थे । हालाँकि, शाहू की मृत्यु के बाद, जब पेशवाओं की शक्ति और बढ़ गई, तो गायकवाड़ों की स्थिति भी बेहतर हो गई। **1750 के दशक के प्रारंभ तक, गुजरात के राजस्व के एक बड़े हिस्से पर उनके अधिकार को पेशवा द्वारा मान्यता दे दी गई । इस प्रकार गायकवाड़ों ने बड़ौदा में** अपनी राजधानी स्थापित की ।
- लगभग 1752 ई. में, उन्होंने **गुजरात प्रांत के मुगल गवर्नर को** राजधानी अहमदाबाद से बाहर निकाल दिया, जिससे क्षेत्र में व्यापार और उपभोग के नेटवर्क में पुनःसंरेखण हुआ।
- सबसे प्रमुख शासकों में से एक **दामाजी (लगभग 1768 ई.)** थे , जिनके **बाद फतेह सिंह (लगभग 1771-89 ई.) शासक बने** ।
  - **फतेह सिंह 1770 के दशक के अंत और 1780 के दशक के प्रारंभ में पेशवा के कब्जे से बाहर निकल आये और उन्होंने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ समझौता किया** , जिसके परिणामस्वरूप अंततः उनके मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप बढ़ गया।
  - इस प्रकार, लगभग 1800 ई. तक, गायकवाड़ों के बीच उत्तराधिकार के निर्धारण में पेशवा के स्थान पर अंग्रेज अंतिम मध्यस्थ थे, जो 19वीं शताब्दी में उनके अधीन शासक बन गए।
- **इसी वंश के सयाजी राव ने डॉ. अंबेडकर को छात्रवृत्ति दी थी।**

इंदौर के होल्कर:

- होलकरों के मामले में, उनकी स्थिति और संपत्ति में उल्लेखनीय और तीव्र वृद्धि हुई। हालाँकि शुरुआत में उनकी राजनीतिक शक्ति बहुत कम थी, लेकिन लगभग **1730 के दशक तक उनके प्रमुख शासक, मल्हार राव होलकर ने अपनी स्थिति मजबूत कर ली और मालवा, पूर्वी गुजरात और खानदेश में चौथ संग्रह का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त करने में सफल रहे।**
- थोड़े ही समय में मल्हार राव ने इंदौर में अपनी रियासत को मजबूत कर लिया और बाद में उनके उत्तराधिकारियों ने महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों के साथ-साथ बुरहानपुर के महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र पर भी नियंत्रण कर लिया।
- **उनके बाद, राजवंशीय भाग्य का नियंत्रण काफी हद तक उनके बेटे की विधवा, अहिल्या बाई के पास आ गया,** जिन्होंने लगभग 1765 से 1794 ई. तक शासन किया और होल्करों को महान गौरव दिलाया।

The Bhonsles of Nagpur:

- नागपुर के भोंसले स्पष्ट रूप से **सतारा शासकों के अधीन थे।**
- इस वंश के एक महत्वपूर्ण शासक **रघुजी भोंसले (लगभग 1727-55 ई.)** थे , जो 1740 और 1750 के दशक के प्रारंभ में **बंगाल और बिहार पर मराठा आक्रमण के लिए जिम्मेदार थे।**
- उसने **नवाब अलीवर्दी** खान से उड़ीसा पर कब्ज़ा कर लिया

ग्वालियर के सिंधिया:

- **पानीपत के तीसरे युद्ध (लगभग 1761 ई.) के बाद के दशकों में** सिंधियाओं ने उत्तर भारत में अपना एक प्रमुख स्थान बना लिया। होल्करों की तरह, **सिंधिया भी मुख्यतः मध्य भारत में स्थित थे, पहले उज्जैन में और बाद में (18वीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश से) ग्वालियर में।**
- **महादजी सिंधिया** (लगभग 1761-94 ई.) के लम्बे शासनकाल के दौरान, जो एक प्रभावी और नवोन्मेषी सैन्य कमांडर थे, परिवार की किस्मत मजबूत हुई।
  - महादजी ने हिंदू और मुस्लिम सैनिकों की समान संख्या वाली एक शक्तिशाली **यूरोपीय शैली की सेना का** गठन किया , जिसमें बड़ी संख्या में यूरोपीय अधिकारी, सैनिक और तोपची नियुक्त किए। उन्होंने आगरा के पास अपनी आयुध फैक्ट्रियाँ भी स्थापित कीं।
  - मुगल बादशाह **शाह आलम द्वितीय ने 1780 के दशक के मध्य में उन्हें नायब-ए-मुनैब** , यानी अपने मामलों का **उप-शासक नियुक्त** किया और उनका प्रभाव न केवल दिल्ली और आगरा प्रांतों में, बल्कि राजस्थान और गुजरात में भी देखा गया, जिससे वे उस युग के सबसे शक्तिशाली मराठा नेता बन गए। यहाँ तक कि ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी

भी उनसे निपटने में बहुत सतर्क रहते थे। लेकिन तत्कालीन पेशवा, पुणे के नाना फड़नवीस और इंदौर के होल्कर के साथ उनके संबंध तनावपूर्ण थे।

- अंततः, **महादजी द्वारा उत्पन्न गति को उनके उत्तराधिकारी दौलत राव सिंधिया** (लगभग 1794-1827 ई.) द्वारा कायम नहीं रखा जा सका, जिन्हें अंग्रेजों ने पराजित कर दिया और उन्हें उत्तर तथा पश्चिम दोनों ओर अपने प्रदेश सौंपने के लिए मजबूर होना पड़ा।
- यहां ध्यान देने योग्य एक दिलचस्प बात यह है कि मुगल प्रतीकों का **मुगल पतन के दौर में भी विशेष महत्व था**। शाही शक्ति के पतन के बावजूद मुगल सम्मान और उपाधियों की मुगल प्रणाली, साथ ही मुगल-व्युत्पन्न प्रशासनिक शब्दावली और राजकोषीय प्रथाएं जारी रहीं। उदाहरण के लिए, अंग्रेजों से ग्वालियर को वापस लेने के बाद, महादजी सिंधिया ने मुगल सम्राट द्वारा स्वीकृत शहर पर अपना नियंत्रण रखने का ध्यान रखा। **समान रूप से, उन्होंने शाह आलम द्वारा उन्हें दिए गए विशेषाधिकारों और उपाधियों, जैसे अमीर अल-उमरा (अमीरों का मुखिया) और नाइब वाकील-ए मुतलक (उप रीजेंट) की उत्साहपूर्वक रक्षा की**। इस मामले में, वह अकेले नहीं थे, क्योंकि मुगलों के प्रति निष्ठा के सभी दिखावे को पूरी तरह से त्यागने वाले राज्यों के उदाहरण 18वीं शताब्दी में दुर्लभ हैं।

Maratha Royal Family Tree
SOLAR DYNASTY
?
SISODIA RAJPUT DYNASTY
?
BHOSALE DYNASTY
Maloji Bhosale
Sardar
Jijabi
Shahaji
Sharifiji
Venkoji
Rajas of Tanjore
Sambhaji Mohite
Shivaji
Chhatrapati
1674-1680
Saibai
Soyarabai
Hambirrao Mohite
Shivaji's Top General
BHAT DYNASTY
Balaji Vishwanath
Peshwa
1713-1720
Sambhaji I
Chhatrapati
1680-1689
Tarabai
Regent
1700-1707
Rajaram I
Chhatrapati
1689-1700
Rajasbai
Baji Rao I
Peshwa
1720-1740
Kashibai
Mastani
Chimaji Appa
(General)
Shahu I
Chhatrapati
1707-1749
Shivaji II
Chhatrapati
1700-1707
Raja of Kolhapur
1710 -1714
ADOPTED
?
GAEKWAD DYNASTY
SHINDE DYNASTY
SATARA BRANCH
KOLHAPUR BRANCH
Balaji Rao
Peshwa
1740-1761
Raghunat Rao
Peshwa
1773-1774
Shamsher Bahadur
Ruler of Banda
Sadashiv Rao
(General)
Pilaji Rao
Maharaja of Baroda
1721-1732
Ranoji Rao
Sardar
Rajaram II
Chhatrapati
1749-1777
Sambhaji II
Raja of Kolhapur
1714-1760
Vishwas Rao
Madhav Rao I
Peshwa
1761-72
Narayan Rao
Peshwa
1772-73
Nawabs of Banda
Damaji Rao
Maharaja of Baroda
1732-1768
Pratap Rao
Mahadaji
Maharaja of Gwalior
1768-1794
ADOPTED
Shahu II
Chhatrapati
1777-1808
ADOPTED
Shivaji III
Raja of Kolhapur
1760-1812
Madhav Rao
Peshwa
1774-1795
Baji Rao II
Peshwa
1796-1818
ADOPTED
Daulat Rao
Maharaja of Gwalior
1794-1827
Pratap Singh
Chhatrapati 1808-18
Raja of Satara
1818-39
Sambhaji III
Raja of Kolhapur
1812-1821
Shahaji I
Raja of Kolhapur
1822-1838
Nana Saheb
Rebel Leader
Several generations
Several generations
Jankoji Rao
Maharaja of Gwalior
1827-1843
Appa Saheb
Chhatrapati*
Raja of Satara
1839-1848
Shivaji IV
Raja of Kolhapur
1821-1822
Raja of Kolhapur 1838-1848
Shivaji V
Chhatrapati*
Raja of Kolhapur
1848-1866
Title of Chhatrapati passed to Kolhapur line
Jayaji Rao
Maharaja of Gwalior
1843-1886
Rajaram II
Chhatrapati*
Raja of Kolhapur
1866-1870
Malhar Rao
Maharaja of Baroda
1870-1875
ADOPTED
Shivaji VI
Chhatrapati*
Raja of Kolhapur
1871-1883
Sayaji Rao
Maharaja of Baroda
1875-1939
Madhavrao
Maharaja of Gwalior
1886-1925
Several generations / adoptions
Shahu I
Chhatrapati*
Maharaja of Kolhapur
1883-1922
Fatehsinhrao
Rajaram III
Chhatrapati*
Maharaja of Kolhapur
1922-1940
Pratap Singh Rao
Maharaja of Baroda**
1939-1951
Jiwajirao
Maharaja of Gwalior**
1925-1961
Shivaji VII
Chhatrapati*
Maharaja of Kolhapur
1940-1947
Fatehsinhrao
Maharaja of Baroda**
1951-1988
Ranjitsinh Pratapsinh
Maharaja of Baroda**
1988-2012
Sangramsinh
Madhavrao
Maharaja of Gwalior**
1961-2001
Shahaji II
Chhatrapati*
Maharaja of Kolhapur**
1947-1983
Samarjitsinh
Maharaja of Baroda**
2012-
Priyadarshini
Jyotiraditya
Maharaja of Gwalior**
2001-
Udayanraje Bhosale
Current Head of Satara Branch
Shahu II
Chhatrapati*
Maharaja of Kolhapur**
1983-
Notes:
* Title of "Chhatrapati" ceased to exist in 1818
** All other Indian noble titles ceased to exist in 1949
(use of titles after these date is ceremonial only)

Shivaji's Administration

- शिवाजी एक **उत्कृष्ट प्रशासक** थे । उन्होंने एक सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था की नींव रखी। शिवाजी एक प्रखर योद्धा थे जिन्होंने **मुगल शासन को चुनौती दी और अफजल खान तथा औरंगजेब** के साथ विजय प्राप्त की । शिवाजी का मराठा साम्राज्य महाराष्ट्र से लेकर कर्नाटक और तमिलनाडु तक फैला हुआ था।
- **शिवाजी का राज्य दो भागों में बँटा हुआ था: मुल्क-ए-कादिम (प्राचीन क्षेत्र) या स्वराज (अपना राज्य), और भूमि का एक अनिर्दिष्ट क्षेत्र जिस पर चौथ कर दिया जाता था लेकिन वह शिवाजी के अधिकार क्षेत्र में नहीं था।** मराठा साम्राज्य को स्वराज्य या मुल्क-ए-कादिम के नाम से जाना जाता था।
- प्रशासन को सुदृढ़ बनाने के लिए, **शिवाजी ने जागीर प्रथा को समाप्त कर दिया** और अपने अधिकारियों को नकद वेतन देना शुरू कर दिया। जागीरदारी प्रथा को समाप्त करने के बावजूद, उन्होंने **विद्यालयों और मंदिरों के लिए भूमि अनुदान प्रदान किया ।**
- मराठों की प्रशासनिक व्यवस्था **मुगलों और दक्कनी राज्यों** (अहमदनगर के मलिक अंबर और बहमनी साम्राज्य के महमूद गवन द्वारा अपनाई गई) की प्रशासनिक व्यवस्था से बहुत अधिक प्रभावित थी।

Shivaji's Administration

केंद्रीय प्रशासन

- राजा **सरकार की धुरी था** , जिसकी **सहायता के लिए अष्टप्रधान नामक एक मंत्रिपरिषद होती** थी । प्रत्येक मंत्रिपरिषद सीधे शिवाजी के प्रति उत्तरदायी था और एक विभाग का प्रमुख होता था। शिवाजी के अधीन, ये पद **न तो वंशानुगत थे और न ही स्थायी, बल्कि इनका स्थानांतरण भी अक्सर होता रहता था** ।
- **पेशवा** - पंत प्रधान, जो वित्त और सामान्य प्रशासन का कार्यभार संभालते थे। बाद में, पेशवा का पद और अधिक शक्तिशाली हो गया और प्रधान मंत्री के रूप में कार्य करने लगा। गुप्तचर विभाग पर विशेष ध्यान दिया गया और एक केंद्रीकृत गुप्तचर विभाग बनाया गया।
- **Sar-i-Naubat or Senapati** – Military commander, a honorary post.
- **Amatya/Majumdar** – Accountant General.
- **वाकेनाविस** - खुफिया और पुलिस, चौकियां, ऐतिहासिक अभिलेखागार और घरेलू मामले।
- **सुरनवीस या चिटनीस या सचिव** - महासचिव जो आधिकारिक पत्राचार की भी देखरेख करते थे।
- **सुमंत/दबीर** - समारोहों और विदेशी मामलों के मास्टर।
- **Nyayadish** – Justice.
- **पंडित राव** - दान और धार्मिक मामले।
- ऊपर से नीचे तक **अधिकारियों का पदानुक्रम इस प्रकार था:**
- **Peshwa → Majumdar → Sachiv → Mantri**
- यह ध्यान देने योग्य है कि **पंडित राव और न्यायधीश को छोड़कर सभी मंत्रियों ने युद्ध में भाग लिया था। अष्टप्रधान** शिवाजी **की रचना नहीं थी और इनमें से कई अधिकारी जैसे पेशवा, मजूमदार, वक़ई नवीस, दबीर और सुरनवीस पहले भी दक्कनी शासकों के अधीन मौजूद थे** ।
- प्रत्येक अष्टप्रधान को **आठ सहायकों द्वारा सहायता प्रदान की जाती** थी , जिनके नाम थे **दीवान, मजूमदार, फडनीस (जो किलों के कमांडरों के पत्रों का जवाब देते थे), सबनीस, कारखानी, चिटनीस (जो सभी राजनयिक पत्राचारों को संभालते थे और सभी शाही पत्र लिखते थे), जमादार, और पोतनीस (जो शाही खजाने की आय और व्यय की देखभाल करते थे)।**

प्रांतीय और स्थानीय प्रशासन

- प्रांतीय प्रशासन भी **मुख्यतः दक्कनी और मुगल व्यवस्था पर आधारित था।** शिवाजी ने कुछ प्रांतों का पुनर्गठन और नामकरण किया।
- प्रांतों **को प्रांत कहा जाता था** , जो **सूबेदार के अधीन होते थे। सरसूबेदार** सूबेदार के कार्यों पर नियंत्रण और पर्यवेक्षण करता था।
- **प्रान्तों के बाद तरफ़ आते थे** , जिनका **मुखिया एक हवलदार होता था। मौज़ा या गाँव प्रशासन की सबसे निचली इकाई थे** ।

- **ग्रामीण क्षेत्र में पुलिस अधिकारी को फौजदार** और **शहरी** क्षेत्र में **कोतवाल कहा जाता था।**
- मराठों के अधीन, **कर्म-आधारित ब्राह्मण कुलीन वर्ग, जिन्हें कामविशदार कहा जाता था,** केंद्रीय नौकरशाही और स्थानीय प्रशासन का संचालन करते थे और उन्हें कर निर्धारण और वसूली के व्यापक अधिकार प्राप्त थे। वे अभिलेख रखते थे, मुकदमों का निपटारा करते थे और उच्च अधिकारियों को स्थानीय परिस्थितियों की जानकारी देते थे।
- दिलचस्प बात यह है कि **ब्रिटिश जिला कलेक्टर का कार्यालय कामविशदार के आधार पर बनाया गया था।**

Prants (province) → *Subedar* (Governor) supervised by *Sarsubedar*

↓

Tarfs (District) → *Havaldar* (Law and order)

↓

Parganas (sub- districts) → *Deshpande* (Account and record keeper) and *Deshmukh* (Law and order)

↓

Mauzas (Village) → *Kulkarni* (Account and record keeper) and *Patil* (Law and order)

Maratha Provincial and Lower Administration

Province (*pranta*)

- Officer in charge of a Prant was variously designated as *Subhedar, Karkun or Mukhya Deshadhikari.*
- Over several Prants was sometimes placed an officer called *Sarsubhedar*, to supervise the work of the *Subhedars.*
- *Subahdar* was assisted by 8 officers (**ashthapradhan system at pranta level**) –
  ① *Diwan*
  ② *Mazumdar*
  ③ *Fadnis*
  ④ *Sabnis*
  ⑤ *Karkhanis*
  ⑥ *Chitnis/Sachiv* (secretary)
  ⑦ *Jamadar*
  ⑧ *Potnis*

District (*taraf*)

- Officer in charge of a Taraf was styled as *Havildar, Karkun* or, in some rare instances, *Paripatyagar.*

Sub-district (*paragana*)

- *Deshpande* – Account and record keeper
- *Deshmukh* – law and order

Village (*mauza*)

- *Kulkarni* – Account and record keeper
- *Patil* – Law and order

सेना प्रशासन

- शिवाजी एक **सैन्य प्रतिभा** थे और उनकी सेना बहुत सुव्यवस्थित थी। **मराठा कमांडो कार्रवाई के अग्रदूत थे** । सेना में **पैदल सेना** यानी मावली पैदल सैनिक; **घुड़सवार सेना** यानी घुड़सवार और उपकरण धारक; और **नौसेना शामिल थी।**
- साधारण **सैनिकों को नकद भुगतान किया जाता था** , लेकिन **बड़े सरदारों और सैन्य कमांडरों को जागीर अनुदान (सरंजाम या मोकासा) के माध्यम से भुगतान किया जाता था।**
- **पगा नामक नियमित स्थायी सेना** में लगभग 30,000 से 40,000 घुड़सवार होते थे, **जिनकी देखरेख हवलदार करते थे** , जिन्हें निश्चित वेतन दिया जाता था। **घुड़सवार सेना के सबसे निचले प्रमुख को नायक कहा जाता था** ।
- वास्तव में, **सभी युद्ध के घोड़े राज्य के थे** । मराठा घुड़सवार सेना में दो विभाग थे:
- **बारगिर्स** : राज्य द्वारा सुसज्जित और भुगतान किया गया
- **सिलहदार** : कुलीनों द्वारा अनुरक्षित।

- मराठे **गुरिल्ला युद्ध के लिए प्रसिद्ध थे, साथ ही एक नवीन हथियार, बाघ नाका, जिसका अर्थ है बाघ का पंजा, के** प्रयोग के लिए भी । पैदल सेना अत्यधिक गतिशील और हल्की थी, और **मावली पैदल सैनिकों ने** पैदल सेना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- दिलचस्प बात यह है कि ज़रूरत पड़ने पर **किसान अंशकालिक सैनिकों के रूप में भी काम करते थे,** क्योंकि वे आठ महीने खेतों में काम करते थे और चार महीने युद्ध ड्यूटी करते थे। शिवाजी ने एक **शक्तिशाली नौसेना** भी बनाई थी ।
- अपने शासनकाल के अंत तक, शिवाजी के पास लगभग 240 किले थे और ये किले मराठों के सैन्य अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। प्रत्येक किले को आपसी नियंत्रण और विश्वासघात से बचाव के लिए **समान पद के तीन अधिकारियों (सबनीस, कर्दादार, सर-ए-नौबत) के अधीन रखा गया था।**

जारी रखें	पैदल सेना की सबसे छोटी इकाई
Havaldar	पांच नाइकों का सिर
जुमलेदार	दो से तीन हवलदारों का मुखिया
हजारा	दस जुमलेदारों का सिर
सरनोबत (सेनापति)	ऐसे सात हजारी का नेतृत्व, **सेना का प्रभारी (सेना प्रमुख)**
किलादार	किलों के अधिकारी
घुराव	बंदूकों से लदी नावें
गैलिवेट	नौकायन नौकाएँ 40-50 नाविक
पाइक	पैदल सैनिक

नौसेना

- **कोंकण** विजय के बाद शिवाजी ने एक मजबूत नौसेना का निर्माण किया ।
- उनका बेड़ा **घुरब** (बंदूकधारी नौकाएं) और **गैलीवेट** (दो मस्तूलों और 40-50 चप्पुओं वाली नौकाएं) से सुसज्जित था।
- उनके बेड़े में मुख्य रूप से मालाबार तट की **कोली** समुद्र-भयभीत जनजाति शामिल थी ।
- **उन्होंने अपनी नौसेना में मुसलमानों को** भी नियुक्त किया। दौलत खान उनके एडमिरलों में से एक थे।
- शिवाजी ने अपनी नौसैनिक शक्ति का इस्तेमाल देशी और यूरोपीय व्यापारियों, दोनों को परेशान करने के लिए किया। हालाँकि, वे जंजीरा के सिद्दियों के आतंक को नहीं रोक पाए, जो बीजापुर सल्तनत और बाद में मुगलों के लिए काम करते थे।
- पेशवाओं ने पश्चिमी तट की रक्षा के लिए एक मजबूत बेड़ा भी बनाए रखा था।

न्यायिक प्रशासन

- शिवाजी के शासनकाल में न्याय व्यवस्था सरल, आदिम और अपरिष्कृत थी। यह व्यवस्था प्राचीन हिंदू नियमों पर आधारित थी।
- सर्वोच्च न्यायालय राजा का **'हज़ार मजिल्स' था।**
- पंचायतें समुदायों के विभिन्न पक्षों के बीच विवादों को निपटाती थीं, और **गांव के 'पाटिल' आपराधिक मामलों पर निर्णय लेते थे।**

राजस्व प्रशासन

- शिवाजी की राजस्व प्रणाली भी काफी हद तक मुगलों और दक्कनी राज्यों जैसे अहमदनगर के मलिक अंबर की प्रणाली पर आधारित थी।

- **भूमि को लाठी नामक मापक छड़ से मापा जाता था** और उसे **तीन श्रेणियों** में वर्गीकृत किया जाता था - धान के खेत, बगीचे की भूमि और पहाड़ी भूभाग।
- **शिवाजी ने मौजूदा देशमुखों और कुलकर्णियों की शक्तियों को काफी कम कर दिया** और अपने स्वयं के **राजस्व अधिकारी नियुक्त किए जिन्हें कारकुन कहा जाता था**। शिवाजी ने **राजस्व खेती को सख्ती से हतोत्साहित किया**।
- मराठों ने राजस्व और प्रशासनिक अभिलेखों में **'मोदी लिपि'** नामक एक **विशेष लिपि का प्रयोग किया।**
- **चौथ और सरदेशमुखी राजस्व के** दो प्रमुख स्रोत थे और यह ध्यान देने योग्य बात है कि ये कर मराठा साम्राज्य में नहीं, बल्कि मुगल साम्राज्य या दक्कन सल्तनत के पड़ोसी क्षेत्रों में एकत्र किए जाते थे।
- **चौथ:** मराठा आक्रमणों से बचने के लिए मराठों को दिया जाने वाला एक चौथाई **(भूमि राजस्व का 1/4 भाग)** ।
- **सरदेशमुखी दस प्रतिशत का अतिरिक्त कर** था , अर्थात उन भूमियों पर **मानक भूमि राजस्व का 1/10 भाग,** जिन पर मराठों ने वंशानुगत अधिकार का दावा किया था।

निष्कर्ष

- शिवाजी एक योग्य सेनापति और कुशल राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने एक शक्तिशाली मराठा साम्राज्य की नींव रखी। उन्होंने मराठा साम्राज्य के प्रभाव को दक्कन से कर्नाटक तक फैलाया और उसे पूरे भारत के स्तर तक पहुँचाया।
- **उन्होंने एक कुशल प्रशासनिक प्रणाली की स्थापना की, आय के लिए एक प्रामाणिक राजस्व प्रणाली स्थापित की, और चौथ और सरदेशमुखी** , नकदी आधारित सेना आदि के माध्यम से साम्राज्य के आर्थिक आधार को व्यापक बनाया।
- शिवाजी एक सच्चे रचनात्मक प्रतिभावान और राष्ट्र-निर्माता थे। जागीरदार से छत्रपति तक उनका अद्भुत उत्थान अद्भुत था। उन्होंने मुगल साम्राज्य के एक प्रमुख शत्रु रहते हुए भी मराठों का एकीकरण किया। वे एक निडर सैनिक और कुशल प्रशासक थे।

Religious Movements

Bhakti Movement

- मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर **समाज में हुई मौन क्रांति** थी जिसे भक्ति आंदोलन के नाम से जाना जाता है। 'भक्ति' शब्द **'ईश्वर के प्रति समर्पण या उत्कट प्रेम' का प्रतीक है** । हालाँकि, भक्ति की अवधारणा के साथ-साथ इसका अर्थ भी समय के साथ विकसित हुआ है।
- भारतीय-आर्यों और पवित्र ग्रंथों, यानी वेदों के समय से ही, एक परंपरा के रूप में भक्ति के अर्थ बदलते रहे हैं। वैदिक काल, जिसमें ऋषि या द्रष्टा (एक दूरदर्शी व्यक्ति जो वैदिक देवताओं के विभिन्न देवताओं के साथ और उनके बारे में अनुष्ठानों की एक जटिल प्रणाली के माध्यम से संवाद करने में सक्षम था; इन अनुष्ठानों के सटीक प्रदर्शन से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता था) की केंद्रित छवि थी, में भक्ति आंदोलन के बीज अवश्य थे, लेकिन यह स्पष्ट रूप से सही चित्रण नहीं था।
- **'व्यक्तिगत ईश्वर की आराधना'** की यह प्रक्रिया **छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान बौद्ध और जैन धर्म के विधर्मी आंदोलनों के उदय** के साथ शुरू हुई । उदाहरण के लिए, महायान बौद्ध धर्म के अंतर्गत, बुद्ध की पूजा उनके अवलोकित (दयालु) रूप में शुरू हुई। **विष्णु की पूजा भी लगभग उसी समय शुरू हुई, जिसे गुप्त राजाओं ने काफी हद तक लोकप्रिय बनाया** , जिन्होंने दिव्य प्रतिमाओं (पूजा) और पुराणों (देवताओं के बारे में पौराणिक रचनाओं) की पूजा के माध्यम से देवताओं के समूह (विष्णु, ब्रह्मांडीय राजा; शिव, महान योगी और तपस्वी; और उनकी स्त्री समकक्ष, शक्ति, या दिव्य ऊर्जा) का समर्थन किया। गुप्त राजाओं ने इन देवताओं को समर्पित मंदिर भी बनवाए और विभिन्न भक्ति समूहों को संरक्षण दिया।
- हालाँकि, जिसे आज **भक्ति आंदोलन के रूप में जाना जाता है, उसकी उत्पत्ति 7वीं और 12वीं शताब्दी ईस्वी में दक्षिण भारत में हुई थी। दक्षिण भारत** में ही भक्ति एक धार्मिक परंपरा से **धार्मिक समानता और व्यापक सामाजिक भागीदारी की धारणाओं पर आधारित एक लोकप्रिय आंदोलन के रूप में विकसित हुई। इसकी विशेषता इसके कवि-संतों, शैव नयन्नार** और **वैष्णव आलवारों** की रचनाएँ हैं , जिन्होंने **पल्लवों , पांड्यों और चोलों के अधीन** भक्ति आंदोलन का प्रचार किया। उन्होंने जैनों और बौद्धों द्वारा प्रचारित तपस्या की अवहेलना की और यह प्रचार किया कि ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति ही मोक्ष का एकमात्र साधन है।
- **उन्होंने ईश्वर के प्रति भावुक भक्ति प्रेम की प्रशंसा की** और इस तथ्य पर बल दिया कि मोक्ष (पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति) नियमों, विनियमों या सामाजिक व्यवस्था का पालन करके नहीं, बल्कि **ईश्वर के प्रति सरल भक्ति के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।**
- भक्ति संत आमतौर पर **निचली जातियों से आते थे, एक ऐसे धर्म का प्रचार करते थे जो कर्मकांड-मुक्त और जाति-भेद के बिना सभी के लिए खुला था, महिलाओं को सभाओं में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते थे** और **स्थानीय भाषाओं में शिक्षा देते थे।** भक्ति के इन विचारों को विद्वानों के साथ-साथ संतों ने भी उत्तर भारत तक पहुँचाया।

Alvars and Nayanars

- नयनार **और अलवार तमिल कवि-संत थे** जिन्होंने 5वीं-10वीं शताब्दी के दौरान भारत के दक्षिण भाग में भक्ति आंदोलन के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- **आलवारों ने** भगवान विष्णु को अपना विश्वास और भक्ति प्रदान की
- **आलवारों** की कविता प्रेम के माध्यम से ईश्वर भक्ति की प्रतिध्वनि है, और ऐसी भक्ति के उन्माद में उन्होंने सैकड़ों गीत गाए जिनमें भावना की गहराई और अभिव्यक्ति की प्रसन्नता दोनों समाहित थीं।
- उनके भजनों के संग्रह को **दिव्य प्रबंध के** नाम से जाना जाता है । आलवारों से उत्पन्न भक्ति साहित्य ने एक ऐसी संस्कृति की स्थापना और पोषण में योगदान दिया है जो कर्मकांड-प्रधान वैदिक धर्म से अलग हो गई और मोक्ष के एकमात्र मार्ग के रूप में भक्ति में ही अपनी जड़ें जमा लीं।
- **नयनार समुदाय ने** भगवान शिव के प्रति अपनी आस्था और भक्ति अर्पित की

- नयनारों में, कवि **नानाचम्पंतर, अप्पार** और **चुंतरामूर्ति** (जिन्हें अक्सर "तीन" कहा जाता है) को दक्षिण भारतीय मंदिरों में उनकी छवियों के माध्यम से संतों के रूप में पूजा जाता है।
- 10वीं सदी में **नांबी अंदर नांबी ने** नयनारों के भजनों को **तेवरम नामक संकलन में संग्रहित किया।**

Feature	Alvars (Vaishnavite Saints)	Nayanars (Shaivite Saints)
Religious Affiliation	**Vaishnavism** (Devotion to Vishnu)	**Shaivism** (Devotion to Shiva)
Time Period	6th-9th century CE	6th-9th century CE
Key Saints	**Nammalvar - Composed** philosophical hymns on Vishnu **Andal** - Only female Alvar, composed Tiruppavai **Periyalvar** - Praised Krishna's childhood **Thirumangai Alvar** - Last Alvar, promoted temple culture	**Appar (Tirunavukkarasar)** - Originally a Jain (Dharmasena), later became a Shaivite saint **Sambandar** - Child prodigy, known for his devotional hymns **Sundarar** - Composed hymns in praise of Shiva **Manikkavachakar** - Composed Tiruvachakam, focusing on inner devotion
Major Literature	**Divya Prabandham** (4000 Tamil **verses, called "Tamil Veda")** **Tiruppavai** (By Andal, recited during Margazhi month)	**Tirumurai** (12-volume collection of Shaivite texts, including Tevaram and Tiruvachakam) **Tevaram** (Hymns by Appar, Sambandar, and Sundarar, foundation of Tamil Shaivism) **Tiruvachakam** (By Manikkavachakar, focusing on deep Shaiva devotion)
Key Characteristics	**Emphasized surrender (prapatti)** to Vishnu **Opposed caste barriers,** encouraged inclusivity Strengthened **temple culture and idol worship**	Rejected **orthodox Brahmanical rituals** **Opposed Jainism & Buddhism** in Tamil society **Promoted Shaiva bhakti** through devotional hymns

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन

- दिलचस्प बात यह है कि **मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन का विकास, जिसने 12वीं-17वीं शताब्दी के दौरान देश के उत्तरी भागों में गति पकड़ी , दक्षिणी भक्ति आंदोलन से भिन्न है** ।
- **उत्तर भारत में** भक्ति आंदोलन में दक्षिण के किसी आचार्य से जुड़े **सामाजिक-धार्मिक आंदोलन** शामिल थे, और कभी-कभी इसे दक्षिण में शुरू हुए आंदोलन की निरंतरता के रूप में देखा जाता है। हालाँकि दोनों क्षेत्रों की परंपराओं में समानताएँ थीं, **फिर भी प्रत्येक संत की शिक्षाओं में भक्ति की अवधारणा अलग-अलग थी** ।
- उत्तर मध्यकालीन भक्ति आंदोलन पर भारत में इस्लाम के प्रसार **का प्रभाव** पड़ा । इस्लाम की विशिष्ट विशेषताएँ जैसे **एकेश्वरवाद या एक ईश्वर में विश्वास , मानव-जाति की समानता और भाईचारा, तथा कर्मकांडों और वर्ग-भेद का निषेध, निश्चित रूप से इस युग के भक्ति आंदोलन को प्रभावित करते थे। इसके अलावा,** सूफी गुरुओं के उपदेशों ने **रामानंद, कबीर और नानक** जैसे भक्ति सुधारकों की सोच को आकार दिया , क्योंकि भक्ति आंदोलन ने भी समाज में कुछ सुधारों की शुरुआत की।
- भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के कारणों के बारे में भी मतभेद हैं। कुछ विद्वान भक्ति आंदोलन के उदय को **सामंती उत्पीड़न और राजपूत-ब्राह्मण वर्चस्व के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया** मानते हैं । कबीर, नानक, चैतन्य और तुलसीदास जैसे **भक्ति संतों के काव्य में सामंतवाद-विरोधी स्वर** इस बात का प्रमाण माना जाता है।
- हालाँकि, कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रारंभिक मध्यकाल में हुए **सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों ने इस आंदोलन के उद्भव के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि कारण प्रदान किए।**
- उनके अनुसार, 13वीं और 14वीं शताब्दी के दौरान, निर्मित वस्तुओं, विलासिता की वस्तुओं और अन्य हस्तशिल्प वस्तुओं की माँग बढ़ी, जिसके कारण कारीगरों का शहरों की ओर पलायन हुआ। इस आंदोलन को समाज के इन वर्गों का समर्थन प्राप्त हुआ क्योंकि ये समूह ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा उन्हें दिए गए निम्न दर्जे से असंतुष्ट थे, और इसलिए वे भक्ति की ओर मुड़े क्योंकि यह समानता पर केंद्रित थी।
- यद्यपि भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति के बारे में कोई एकमत नहीं है, **फिर भी इस तथ्य पर सभी एकमत हैं कि भक्ति आंदोलन समानता के संदेश और व्यक्तिगत रूप से कल्पित सर्वोच्च ईश्वर के प्रति भक्तिपूर्ण समर्पण पर केंद्रित था।**

- भक्ति आंदोलन भी दो अलग-अलग वैचारिक धाराओं में विभाजित है - **'सगुण' (वे कवि-संत जिन्होंने गुणों या रूपों वाले ईश्वर की स्तुति करते हुए पद्य रचे) और 'निर्गुण' (वे जो गुणों या रूपों से परे ईश्वर की स्तुति करते हैं)**।
  - उदाहरण के लिए, **तुलसीदास जैसे सगुण भक्तों ने जाति व्यवस्था और ब्राह्मणों की सर्वोच्चता को बरकरार रखा और एक व्यक्तिगत ईश्वर में समर्पण और सरल विश्वास के धर्म का प्रचार किया, जिसमें मूर्ति पूजा के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता थी**।
  - दूसरी ओर, **कबीर जैसे निर्गुण भक्तों ने वर्णाश्रम और जाति-भेद पर आधारित सभी रूढ़ियों को अस्वीकार कर दिया**। उन्होंने नए मूल्यों का समर्थन किया, जिससे नए समूहों और नए अपरंपरागत या प्रोटेस्टेंट संप्रदायों का उदय हुआ। **निर्गुण भक्तों को एकेश्वरवादी भक्ति संत भी कहा जाता है**, जिन्होंने भक्ति संतों के ईश्वर के साथ व्यक्तिगत अनुभव को अधिक महत्व दिया। उन्होंने **ब्राह्मणों के अधिकार को अस्वीकार किया और जाति व्यवस्था तथा मूर्तिपूजा की प्रथा पर प्रहार किया।**
    - वे सभी **भक्ति की वैष्णव अवधारणा,** नाथपंथी **आंदोलन और सूफीवाद** से प्रभावित थे , और उनके विचार तीनों परंपराओं का संश्लेषण प्रतीत होते थे।
    - यद्यपि उन्होंने भक्ति की अवधारणा को वैष्णव धर्म से ग्रहण किया था, फिर भी उन्होंने उसे **निर्गुण स्वरूप प्रदान किया।** उन्होंने अपने ईश्वर को विभिन्न नामों और उपाधियों से पुकारा, परन्तु **उनका ईश्वर अवतरणीय, निराकार, शाश्वत और अनिर्वचनीय था**।
    - एकेश्वरवादी संत कवि एक-दूसरे की शिक्षाओं और प्रभाव से भी परिचित थे, और अपनी कविताओं में वे अक्सर एक-दूसरे और अपने पूर्ववर्तियों का उल्लेख इस प्रकार करते थे कि उनके बीच वैचारिक समानता का पता चलता था।
- यद्यपि इन दोनों शाखाओं के बीच अंतर वास्तव में महत्वपूर्ण हैं, फिर भी उनकी व्यापक **समानताओं को** कम नहीं किया जा सकता है:
  - दोनों ने ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति, रहस्यमय प्रेम पर ध्यान केंद्रित किया **, तथा ईश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध पर विशेष ध्यान दिया।**
  - दोनों ही ब्राह्मण पुरोहित वर्ग द्वारा बनाए गए और पोषित **अनुष्ठानों के घोर आलोचक** थे । वास्तव में, कई संत कवि, विशेष रूप से उत्तरी क्षेत्रों में, स्वयं निम्न जाति के थे।
  - एक और समानता यह थी कि वे कुलीन पुरोहित वर्ग की पवित्र भाषा संस्कृत के बजाय, आम जनता की **स्थानीय या क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते थे** । उन्होंने अपनी कविताएँ उत्तर भारत में बोली जाने वाली लोकप्रिय भाषाओं और बोलियों में रची थीं। इससे उन्हें अपने विचारों को आम जनता और विभिन्न निम्न वर्गों तक पहुँचाने में मदद मिली।

Category	Saguna Bhakti	Nirguna Bhakti 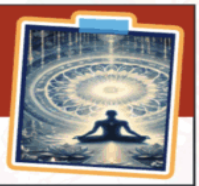
Meaning	Worship of a personal god with form **(Saguna)**	Worship of a formless, abstract divine presence **(Nirguna)**
Concept of God	God has attributes and a physical form (e.g., Rama, Krishna, Shiva, Vishnu, Devi)	God is formless, beyond attributes (Brahman, Supreme Consciousness)
Expression	Bhajans, Kirtans, and devotional hymns praising gods and goddesses	Mystical and philosophical poetry emphasizing unity and inner devotion
Prominent Saints	**Tulsidas** (Ramcharitmanas - Rama) **Mirabai** (Krishna devotion) **Surdas** (Krishna bhakti, Sursagar) **Chaitanya Mahaprabhu** (Vaishnavism) **Ramanuja** (Vishishtadvaita) **Sant Eknath** (Marathi Bhakti) **Tyagaraja** (Carnatic devotional music)	**Kabir** (Dohas - Nirguna Brahman) **Guru Nanak** (Sikhism, unity of God) **Dadu Dayal** (Sant tradition) **Ravidas** (Equality, against caste discrimination) **Namdev** (Varkari sect, devotion to formless God) **Bulleh Shah** (Sufi-Nirguna tradition)
Literary Works	**Ramcharitmanas** (Tulsidas) **Sursagar** (Surdas) **Bhakti Songs** of Mirabai **Alvar & Nayanar** Hymns (Tiruvaymoli, Thevaram)	**Bijak** (Kabir) **Guru Granth Sahib** (Sikh scripture) **Dohas of Kabir** and Rahim **Abhangas of Namdev** and Tukaram

भक्ति आंदोलन के प्रमुख नेता

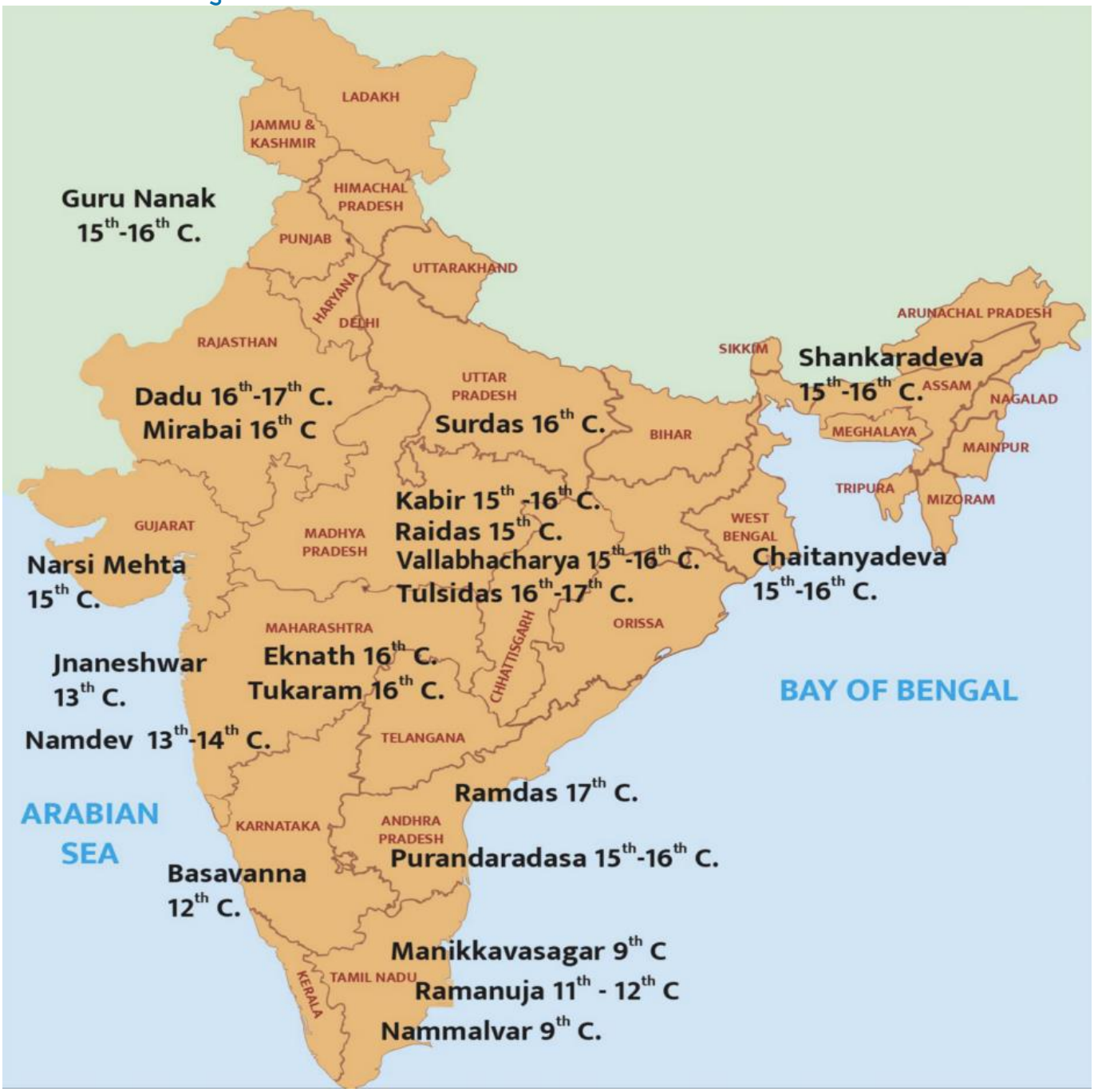

Shankaracharya (c. 788 – 820 CE)

- महान विचारक, प्रतिष्ठित दार्शनिक और **9वीं शताब्दी के हिंदू पुनरुत्थानवादी आंदोलन के नेता**, जिन्होंने हिंदू धर्म को एक नई दिशा दी।
- उनका जन्म **कालडी (केरल)** में हुआ था और उन्होंने **अद्वैत (अद्वैतवाद) दर्शन** और **निर्गुणब्रह्म (गुणरहित ईश्वर) का प्रतिपादन किया ।**
- अद्वैत में **जगत की वास्तविकता को नकारा जाता है और ब्रह्म को ही एकमात्र वास्तविकता माना जाता है। मूल ब्रह्म ही उसे वास्तविकता प्रदान करता है** ।
- **अद्वैत के लिए दी गई उपमा साँप और रस्सी** की प्रसिद्ध उपमा है । अंधेरे में, हम रस्सी को साँप समझ सकते हैं और कुछ समय के लिए उसे असली साँप मान सकते हैं। लेकिन जल्द ही हमें एहसास होता है कि वह वास्तव में केवल एक रस्सी है। एक बार जब हम इसे रस्सी के रूप में जान लेते हैं, तो हमें साँप दिखाई नहीं देता। रस्सी कभी अस्तित्व में नहीं थी, वह विशुद्ध रूप से हमारे मन में थी। इसी प्रकार, यद्यपि हमारे चारों ओर केवल ब्रह्म ही विद्यमान है, हम संसार को देखते हैं, जो कि हमारे मन द्वारा ब्रह्म का एक पाठ मात्र है। लेकिन एक बार जब हम आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं और देखते हैं कि यह सदैव ब्रह्म ही था, तो हमें संसार दिखाई नहीं देता।

- उनके प्रसिद्ध उद्धरणों में शामिल है, **"ब्रह्म सत्यम जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मात्र नापरहा",** जिसका अर्थ है, **"परमात्मा ही वास्तविकता है, आभास का संसार माया है"।**
- उनके अनुसार **केवल ज्ञान ही मोक्ष की ओर ले जा सकता है।**
- भगवद्गीता, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों पर भाष्य लिखा और निम्नलिखित पुस्तकें लिखीं:
  - Upadesh Shastri
  - विवेक चूड़ामणि
  - Bhaja Govindum Stotra
- **Established mathas at Sringiri, Dwarka, Puri, and Badrinath.**

रामानुज (लगभग 1017–1137 ई.)

- 12वीं शताब्दी में **आधुनिक चेन्नई के निकट श्रीपेरम्बदूर** में जन्मे ।
- उन्होंने **शंकर के मायावाद का विरोध किया** और **विशिष्ट अद्वैतवाद (योग्य अद्वैतवाद) के दर्शन की वकालत की**, और **श्रीवैष्णव संप्रदाय की** स्थापना की ।
- उनके अनुसार, **ईश्वर सगुण ब्रह्म है।** सृजन **प्रक्रिया और सृष्टि की सभी वस्तुएँ सत्य हैं,** परंतु शंकराचार्य के अनुसार मायावी नहीं हैं। इसलिए, **ईश्वर, आत्मा, पदार्थ, सत्य हैं।** परन्तु **ईश्वर आंतरिक पदार्थ है और शेष सब उसके गुण हैं** ।
- विशिष्ट अद्वैत में **भी द्वैतवाद की तरह जगत और ब्रह्म को दो समान रूप से वास्तविक सत्ताएं माना गया है** , लेकिन **यहां जगत ब्रह्म से अलग नहीं है बल्कि ब्रह्म से ही निर्मित है।**
- विशिष्ट अद्वैतवाद में, **ब्रह्म सर्वज्ञ गुणों वाला एक सगुण ईश्वर है।** उसने जगत की रचना की है, लेकिन उसने स्वयं अपने भीतर से जगत की रचना की है। इस प्रकार, जगत ब्रह्म के साथ अंश का समग्र से संबंध, या **'योग्य प्रभाव'** का आधार से संबंध (अतः योग्य अद्वैतवाद) रखता है।
  - इसके लिए प्रसिद्ध उपमा है **समुद्र और लहर - ब्रह्म समुद्र है और संसार के सभी पदार्थ, जड़ और चेतन, इस समुद्र पर लहरों के समान हैं** । सभी लहरें अंततः समुद्र ही हैं, लेकिन जब तक हम लहर को देखते हैं, तब तक हम उसे समुद्र से भिन्न समझते हैं। लहर केवल नाम और रूप की होती है। इसके लिए अन्य उपमाएँ दी गई हैं: **सोना और सोने के आभूषण, मिट्टी और मिट्टी के बर्तन, मकड़ी और उसका जाला आदि।**
- रामानुज द्वारा परिभाषित ब्रह्म एक **पूर्णतः सगुण ईश्वर** है । रामानुज ब्रह्म को **विष्णु या उनके किसी अवतार के** रूप में मानते थे । विष्णु में सगुण ईश्वर के सभी गुण विद्यमान हैं, जैसे सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमानता आदि। विष्णु मनुष्यों के प्रति अपने प्रेम से जगत की रचना करते हैं और हर कदम पर जगत का संचालन करते हैं। मनुष्यों का कर्तव्य है कि वे भगवान विष्णु से प्रेम करें और उनकी पूजा करें ताकि जब हमारी पूजा परिपक्व हो जाए, तो वे हमें मुक्ति प्रदान करें।
- विशिष्ट अद्वैत में धर्म का अभ्यास **द्वैतवाद के समान है, और अंतर केवल इतना है कि मानवजाति को शुद्ध द्वैतवादी पूजा की तुलना में उच्च दर्जा प्राप्त है** और वह ईश्वर के अधिक निकट है।
  - इस प्रकार विशिष्ट अद्वैत में, यद्यपि जगत और ब्रह्म दोनों को समान रूप से वास्तविक माना जाता है, तथापि उन्हें द्वैतवाद की तरह दो अलग-अलग सत्ताएं नहीं माना जाता है।
- **उन्होंने प्रभातिमार्ग या ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण के मार्ग की** भी वकालत की। उन्होंने दलितों को वैष्णव धर्म की ओर आकर्षित किया और भक्ति द्वारा मोक्ष की वकालत की।
- उन्होंने लिखा है:
  - Sribhashya
  - वेदांत एक
  - Gita Bhasya
  - Vedantasara

Madhavacharya (c. 1238 – 1317 CE)

- 13वीं शताब्दी में **कन्नड़ क्षेत्र के माधव ने द्वैत या जीवात्मा और परमात्मा के द्वैतवाद का** प्रचार किया।
- इस दर्शन के अनुसार, **जगत भ्रम नहीं, अपितु यथार्थ है, जो वास्तविक भेदों से परिपूर्ण है** । माधव के अनुसार, **ब्रह्म और जगत दो समान रूप से वास्तविक सत्ताएँ हैं और इनका आपस में कोई संबंध नहीं है।**

- द्वैतवाद के ईश्वर हिंदू ईश्वर, **विष्णु** हैं । विष्णु ने संसार की रचना की है, और संसार ईश्वर से पृथक और ईश्वर से निम्नतर स्थिति में है, दोनों के बीच कोई संबंध नहीं है। विष्णु संसार और सभी विश्व घटनाओं को नियंत्रित करते हैं, और सभी व्यक्तियों का कर्तव्य ईश्वर की पूजा और प्रार्थना करना है।
- **ईश्वर, आत्मा और पदार्थ सभी प्रकृति में अद्वितीय हैं,** और इसलिए वे एक दूसरे से अभिन्न हैं।
- उन्होंने **ब्रह्म सम्प्रदाय की भी स्थापना की।**

Nimbarka

- रामानुजम के युवा **समकालीन** जिन्होंने **द्वैत अद्वैत दर्शन** और **भेदाभेद (अंतर/गैर-अंतर) के दर्शन का प्रतिपादन किया।**
- उनके अनुसार **ब्रह्म या सर्वोच्च आत्मा स्वयं को विश्व की आत्माओं में रूपांतरित कर लेती है, जो ब्रह्म से वास्तविक, पृथक और भिन्न हैं** ।
- विशिष्ट अद्वैत की तरह, **भेदाभेद संप्रदाय भी मानता है कि जगत और ब्रह्म दोनों समान रूप से सत्य हैं, और जगत ब्रह्म का ही एक अंश है** । अंतर केवल बल पर है।
- यहाँ समुद्र और लहर, मिट्टी और घड़े आदि की उपमा का प्रयोग किया गया है। भेद-अभेद का एक विशिष्ट उपमा **सूर्य और सूर्य किरण** है । सूर्य किरण को सूर्य से अलग नहीं कहा जा सकता, वह सूर्य से उत्पन्न होती है और उससे जुड़ी होती है। फिर भी वह सूर्य नहीं है, वह सूर्य का एक अंश मात्र है, सूर्य का प्रतिबिंब है, और वह सूर्य का केवल एक अंश ही दिखाती है।
- अतः **जगत भी ब्रह्म की ही एक अभिव्यक्ति है, किन्तु वह बहुत छोटी अभिव्यक्ति है, तथा ब्रह्म से उसका अंतर बहुत बड़ा है।**
- **तेलंगाना क्षेत्र में वैष्णव भक्ति** के प्रचारक ।
- **कृष्ण और राधा के उपासक और ब्रज (मथुरा)** में अपना आश्रम स्थापित किया ।
- He also founded the **Sanak Sampradaya.**

Vallabhacharya (c. 1479 – 1531 CE)

- **उनका जन्म 15वीं शताब्दी में बनारस** में हुआ था और **वे कृष्णदेव राय** के दरबार में रहते थे **।**
- उन्होंने **शुद्धाद्वैत (शुद्ध अद्वैतवाद)** का प्रतिपादन किया । शुद्धाद्वैत में, विशिष्टाद्वैत की तरह, **जगत् को वास्तविक अस्तित्व माना गया है, और ब्रह्म को भी** । लेकिन कहा जाता है कि **ब्रह्म का जगत में कोई परिवर्तन नहीं होता, जगत् ब्रह्म के एक पहलू के रूप में विद्यमान है, बिना किसी परिवर्तन के, यह ब्रह्म का एक अंश है** ।
- **हम इसे एक सिक्के के दो पहलू** मान सकते हैं , एक तरफ ब्रह्म और दूसरी तरफ जगत। **इसमें कोई परिवर्तन नहीं है** - जगत उस सिक्के का एक हिस्सा है जो ब्रह्म है।
- इसलिए इसे **'शुद्ध अद्वैत'** कहा जाता है क्योंकि **कहा जाता है कि केवल एक ही है और कोई परिवर्तन नहीं है।**
- हालाँकि, हम देखते हैं कि यद्यपि शुद्धाद्वैत स्वयं को **अद्वैतवाद** कहता है , यह **जगत और ब्रह्म, दोनों की उपस्थिति को समान रूप से वास्तविक मानता है।** अतः, **दो वास्तविकताएँ हैं** । इसलिए, भले ही हम कहें कि यह ब्रह्म का एक अंश है, **जगत ब्रह्म से भिन्न वास्तविकता के रूप में विद्यमान है** , मानो सिक्के का दूसरा पहलू।
- अतः यह वास्तव में **विशिष्ट अद्वैत की एक शाखा है,** जिसमें **यह जगत और ब्रह्म दोनों को समान रूप से वास्तविक सत्ता मानता है, हालाँकि यह इस अभेद पर अधिक बल देता है** कि **जगत ब्रह्म का एक अविभाज्य, अपरिवर्तित पहलू है।** इस प्रकार यह रामानुज के विशिष्ट अद्वैत की तुलना में **शुद्ध अद्वैत** की ओर अधिक झुकाव रखता है ।
- इसका दर्शन **पुष्टिमार्ग है।**
- उन्होंने **रुद्र सम्प्रदाय की स्थापना की।**
- उनके अनुसार, ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है और ब्रह्मांड में जो कुछ भी है उसका कारण है। **सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे,** जो नेत्रहीन थे, लेकिन उत्तर भारत में कृष्ण भक्ति आंदोलन को लोकप्रिय बनाने में उनका बहुत बड़ा योगदान था।

बसवन्ना

- वह **12 वीं सदी के प्रशासक, दार्शनिक, कवि और** शिव-केंद्रित भक्ति आंदोलन के लिंगायत संत थे।

- उन्होंने अपनी कविता के माध्यम से सामाजिक जागरूकता बढ़ाई, जिसे लोकप्रिय रूप से **वचना के** रूप में जाना जाता है ।
- **उन्होंने अनुभव मंडप** (या, "आध्यात्मिक अनुभव का हॉल") जैसे नए सार्वजनिक संस्थानों की शुरुआत की , जिसमें सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के पुरुषों और महिलाओं का खुले तौर पर जीवन के आध्यात्मिक और सांसारिक प्रश्नों पर चर्चा करने के लिए स्वागत किया जाता था।
- **वे विशिष्टाद्वैत** के प्रचारक थे ।
- बसवन्ना की साहित्यिक कृतियों में **कन्नड़ भाषा में वचन साहित्य** शामिल है ।
- उन्हें **भक्तिभंडारी, बसवन्ना या बसवेश्वर के नाम से भी जाना जाता है।**

Vidyapati (c. 1352 – 1448 CE)

- विद्यापति **14वीं शताब्दी के मैथिली कवि थे जो शिव** को समर्पित अपनी कविताओं के लिए जाने जाते थे , जिन्हें वे **उगना कहकर संबोधित करते थे।**

The Bhakti Movement in Maharashtra

- महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन पंढरपुर के अधिष्ठाता देवता **विठोबा या विट्ठल के मंदिर के इर्द-गिर्द केंद्रित था, जिन्हें कृष्ण का अवतार** माना जाता था । इसीलिए इसे **पंढरपुर आंदोलन** के नाम से भी जाना जाता है , जिसके कारण महाराष्ट्र में महान सांस्कृतिक और सामाजिक विकास हुआ, जैसे मराठी साहित्य का विकास, महिलाओं की स्थिति में सुधार, जातिगत बाधाओं का टूटना आदि।
- महाराष्ट्र में, भक्ति आंदोलन ने **भागवत पुराण और शिव नाथपंथियों से प्रेरणा ली।** भक्ति आंदोलन मुख्यतः दो संप्रदायों में विभाजित है:
  - **वरकारी: पंढरपुर के भगवान विठ्ठल के** सौम्य भक्त , जो अपने दृष्टिकोण में अधिक भावुक, सैद्धांतिक और अमूर्त हैं।
  - **धारकरी: भगवान राम के भक्त** रामदास **के पंथ के वीर अनुयायी** , जो अपने विचारों में अधिक तर्कसंगत, व्यावहारिक और ठोस हैं।
- हालाँकि, दोनों विचारधाराओं के बीच अंतर केवल दिखावटी है, और **मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य के रूप में ईश्वर की प्राप्ति दोनों का सामान्य लक्ष्य है।**
- The great saints belonging to the Vithoba cult were **Jnaneswar, Jnanadeva, Namdeva, and Tukaram.**

Jnaneswar or Jnanadeva/ Gnaneshwar (c. 1275 – 1296 CE)

- महाराष्ट्र के 13 **वीं शताब्दी के अग्रणी भक्ति संत** , जिनकी **भगवद्गीता पर ज्ञानेश्वरी नामक टीका ने** महाराष्ट्र में भक्ति विचारधारा की नींव रखी।
- उनके अनुयायी **वारकरी के** नाम से जाने जाते हैं ।
- वे **धार्मिक गीतों या भजनों और प्रार्थनाओं के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति प्राप्त करने में विश्वास करते हैं।**
- वे **भगवान विठोबा की पूजा करते हैं जिन्हें वे भगवान विष्णु** का अवतार मानते हैं ।
- **जातिगत भेदभाव के विरुद्ध तर्क देते हुए** उनका मानना था कि ईश्वर को पाने का एकमात्र रास्ता भक्ति है।

नामदेव (लगभग 1270 – 1350)

- वे **14वीं शताब्दी के महाराष्ट्र के एक कवि-संत** थे , जो वारकरी संप्रदाय से संबंधित थे। उन्होंने सामुदायिक भजन गायन सत्रों के दौरान विभिन्न वर्गों और जातियों के लोगों को आकर्षित किया।
- यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि जहां **उत्तर भारतीय एकेश्वरवादी परंपरा में उन्हें निर्गुण संत के रूप में याद किया जाता है, वहीं महाराष्ट्र में उन्हें वारकरी परंपरा (वैष्णव भक्ति परंपरा) का हिस्सा माना जाता है।**
- **उन्हें हिंदू धर्म में दादूपंथ परंपरा के** पांच पूजनीय गुरुओं में से एक माना जाता है , अन्य चार **दादू, कबीर, रविदास और हरदास हैं।**
- परंपरा के अनुसार, **नामदेव एक दर्जी थे** जिन्होंने संत बनने से पहले डाकूगिरी शुरू कर दी थी। उनकी मराठी कविताओं में ईश्वर के प्रति गहन प्रेम और समर्पण की भावना झलकती है।

- पूजा सत्रों के दौरान उनके साथियों में **कान्होपात्रा** (एक नर्तकी), **सेना** (एक नाई), **सावता** (एक माली), **चोखामेला** (एक अछूत), **जनाबाई** (एक दासी), **गोरा** (एक कुम्हार), **नरहरि** (एक सुनार) और **ज्ञानेश्वर** (जिसे ज्ञानदेव के नाम से भी जाना जाता है, एक ब्राह्मण) शामिल थे।
- **ऐसा माना जाता है कि उनके अभंगों को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया था।**

संत एकनाथ (लगभग 1533 - 1599 ई.)

- वे **16वीं शताब्दी के** वारकरी **संप्रदाय के एक प्रमुख मराठी संत, विद्वान और धार्मिक कवि थे।**
- मराठी साहित्य के विकास में, एकनाथ को **उनके पूर्ववर्ती - ज्ञानेश्वर और नामदेव - और बाद के तुकाराम और रामदास के बीच एक सेतु के रूप में देखा जाता है।**
- उन्होंने **भारूड़ नामक मराठी धार्मिक गीत का एक नया रूप** प्रस्तुत किया । मराठी में एकनाथ की शिक्षाओं ने मराठी साहित्य का ज़ोर आध्यात्मिकता से हटाकर कथात्मक रचनाओं पर केंद्रित करने का प्रयास किया।
- ऐसा माना जाता है कि वह एक **पारिवारिक व्यक्ति** थे और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धार्मिक जीवन जीने के लिए मठों में रहना या संसार से त्यागपत्र देना आवश्यक नहीं है।

Tukaram (c. 1608 – 1650 CE)

- तुकाराम **महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के 17वीं सदी के कवि-संत** थे , जो समतावादी वारकरी भक्तिवाद परंपरा का भी हिस्सा थे और **जन्म से शूद्र** थे ।
- तुकाराम **अपने अवंगों (दोहों) के लिए जाने जाते** हैं , जो गाथा भक्ति कविता का निर्माण करते हैं, और आध्यात्मिक गीतों के साथ समुदाय उन्मुख पूजा करते हैं जिन्हें कीर्तन के रूप में जाना जाता है।
- **उनकी कविताएँ हिंदू भगवान विष्णु के अवतार विठ्ठल या विठोबा को समर्पित थीं।**
- वह **शिवाजी के समकालीन थे और मराठा राष्ट्रवाद, 'परमार्थ'** के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए जिम्मेदार थे ।

समरद रामदास (लगभग 1608 - 1681 ई.)

- उनका **जन्म लगभग 1608 ई. में हुआ** था और वे **शिवाजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे।**
- उन्होंने शिवाजी को **स्वराज की** स्थापना के लिए प्रेरित किया ।
- उन्होंने विभिन्न विज्ञानों और कलाओं के अपने विशाल ज्ञान को आध्यात्मिक जीवन के सिद्धांतों के साथ जोड़ते हुए **दासबोध की रचना की।**
- **वे भगवान राम** के भक्त थे और उन्होंने पूरे भारत में **आश्रम स्थापित किए।**

गैर-सांप्रदायिक भक्ति आंदोलन

- 14वीं और 15वीं शताब्दी में, **रामानंद, कबीर और नानक भक्ति पंथ के महान प्रचारक बनकर उभरे।** हालाँकि उन्होंने पुराने गुरुओं से प्रेरणा ली, फिर भी उन्होंने एक नया मार्ग दिखाया। प्रारंभिक सुधारकों के विपरीत, **वे किसी विशेष धार्मिक पंथ से जुड़े नहीं थे और न ही कर्मकांडों और समारोहों में विश्वास करते थे** । उन्होंने **बहुदेववाद की निंदा की और एक ईश्वर में विश्वास किया । उन्होंने सभी प्रकार की मूर्तिपूजा का** भी खंडन किया । उन्होंने आम लोगों को सदियों पुराने अंधविश्वासों को त्यागने और भक्ति या शुद्ध भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करने में मदद की।
- उन्होंने **सभी धर्मों की मौलिक एकता पर बहुत जोर दिया।**

रामानंद (लगभग 1400-1476 ई.)

- **ऐसा माना जाता है कि वे 15वीं शताब्दी के पूर्वार्ध** में रहे थे , **प्रयागराज में जन्मे थे और मूलतः रामानुज के अनुयायी थे** । बाद में, उन्होंने अपना स्वयं का संप्रदाय स्थापित किया और **बनारस तथा आगरा में हिंदी में अपने सिद्धांतों का प्रचार किया।** वे इसे **दक्षिण भारतीय भक्ति और उत्तर भारतीय वैष्णव भक्ति परंपराओं के बीच की कड़ी मानते थे।**
- रामानंद ने उत्तर भारत में वही किया जो रामानुज ने दक्षिण भारत में किया था। उन्होंने **रूढ़िवादी पंथ की बढ़ती औपचारिकता के विरुद्ध आवाज़ उठाई और प्रेम एवं भक्ति के सिद्धांत** पर आधारित वैष्णव धर्म के एक नए संप्रदाय की स्थापना की । उनका सबसे उत्कृष्ट योगदान **अपने अनुयायियों के बीच जाति-भेद का उन्मूलन** है ।
- वे भक्ति के पात्र के रूप में **विष्णु को नहीं, बल्कि राम को मानते थे । वे राम और सीता की पूजा करते थे** और उत्तर भारत में राम पंथ के संस्थापक माने जाने लगे।

- एकेश्वरवादी भक्ति संतों की तरह, उन्होंने भी **जातिगत पदानुक्रम को अस्वीकार किया** और पंथ को लोकप्रिय बनाने के प्रयास में स्थानीय भाषाओं में उपदेश दिए। **उनके अनुयायियों को तुलसीदास की तरह रामानंदी कहा जाता है।**
- उन्होंने **भक्ति पर जोर** दिया और ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग दोनों से परहेज किया।
- इससे दो विचारधाराएं उत्पन्न हुईं:
- **रूढ़िवादी स्कूल - नाभादास, तुलसीदास** द्वारा प्रतिनिधित्व
- **उदारवादी - कबीर, नानक और अन्य** द्वारा प्रतिनिधित्व
- अन्य अनुयायियों में शामिल हैं:
- **रैदासा** - एक मोची जिसके गीत गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं
- **कबीर** - एक जुलाहा जिसने उपदेश दिया कि राम, रहीम और अल्लाह सभी एक ही हैं
- **सेना** - एक नाई
- **साधना** - एक कसाई
- **धन्ना** – एक किसान
- **Naraharai** –A goldsmith
- **पीपा** – एक राजपूत राजकुमार

कबीर

- **रामानंद के शिष्यों** में सबसे प्रसिद्ध थे कबीर। वे **15वीं शताब्दी के** भक्ति कवि और संत थे, जिनके **पद** सिख **धर्मग्रंथ, आदि ग्रंथ में पाए जाते हैं।**
- उनका **जन्म बनारस के पास एक ब्राह्मण विधवा के घर हुआ** था, लेकिन उनका पालन-पोषण एक मुस्लिम दंपत्ति ने किया, जो पेशे से बुनकर थे। वे जिज्ञासु प्रवृत्ति के थे और बनारस में रहते हुए उन्होंने हिंदू धर्म के बारे में बहुत कुछ सीखा और इस्लामी शिक्षाओं से भी परिचित हुए।
- उन्होंने **मूर्तिपूजा और कर्मकांडों की निंदा की और ईश्वर के समक्ष मनुष्य की समानता पर बहुत ज़ोर दिया** । उन्होंने **ईश्वर की भक्ति को मोक्ष का एक प्रभावी साधन** माना और आग्रह किया कि इसे प्राप्त करने के लिए व्यक्ति का **हृदय शुद्ध होना चाहिए, जो क्रूरता, बेईमानी, पाखंड और कपट से मुक्त हो।**
- यद्यपि वे योगाभ्यासों से परिचित थे, फिर भी उन्होंने सच्चे ज्ञान के लिए न तो तप और न ही पुस्तकीय ज्ञान को महत्वपूर्ण माना। उन्होंने जाति व्यवस्था, विशेषकर अस्पृश्यता की कड़ी निंदा की।
- **कबीर का उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों में सामंजस्य स्थापित करना और दोनों संप्रदायों के बीच सद्भाव स्थापित करना था** । उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों को "एक ही मिट्टी के बर्तन" बताकर सभी धर्मों की अनिवार्य एकता पर ज़ोर दिया। उनके लिए "राम और अल्लाह, मंदिर और मस्जिद" एक ही थे।
- उन्हें महानतम रहस्यवादी संत माना जाता है और **उनके अनुयायी कबीरपंथी कहलाते हैं।** कबीर से प्रभावित लोगों में बनारस के चर्मकार **रैदास** , पंजाब के खत्री व्यापारी **गुरु नानक और** राजस्थान के जाट किसान धन्ना शामिल थे।
- **कबीर की रचनाओं के संकलनों में बीजक सर्वाधिक प्रसिद्ध है।**

गुरु नानक (लगभग 1469 - 1539 ई.)

- प्रथम **सिख गुरु और** सिख धर्म के संस्थापक , जो एक **निर्गुण भक्ति संत और समाज सुधारक भी थे।**
- उनका **जन्म लगभग 1469 ई. में रावी नदी के किनारे तलवंडी (जिसे अब ननकाना कहा जाता है) गाँव में एक खत्री परिवार में हुआ** था । उनके पिता एक लेखाकार थे, और नानक ने भी अपने पिता के पदचिन्हों पर चलने के लिए फ़ारसी का प्रशिक्षण लिया था, लेकिन उनका झुकाव रहस्यवाद की ओर था।
- वह **जाति के सभी भेदों के साथ-साथ धार्मिक प्रतिद्वंद्विता और अनुष्ठानों के विरोधी थे, उन्होंने ईश्वर की एकता का प्रचार किया और इस्लाम और हिंदू धर्म दोनों की औपचारिकता और कर्मकांड की निंदा की।**
- उन्होंने चरित्र **और आचरण की शुद्धता पर बहुत जोर** दिया , क्योंकि यह ईश्वर तक पहुंचने की पहली शर्त है, तथा मार्गदर्शन के लिए गुरु की आवश्यकता है।

- कबीर की तरह उन्होंने भी **एक मध्यम मार्ग की वकालत की** जिसमें आध्यात्मिक जीवन को गृहस्थ के कर्तव्यों के साथ जोड़ा जा सके।

दादू दयाल (लगभग 1544-1603 ई.)

- दादू दयाल उत्तर भारत में **निर्गुण संत परंपरा** के प्रमुख प्रतिनिधियों में से एक हैं । वे **गुजरात के एक संत** थे , जिन्होंने अपने आध्यात्मिक जीवन का अधिकांश भाग राजस्थान में बिताया।
- 'दादू' का अर्थ है 'भाई' और 'दयाल' का अर्थ है 'दयालु व्यक्ति'। बाद में, **उनके अनुयायी दादूपंथी कहलाए,** जिन्होंने इस क्षेत्र में **थम्बा** नामक आश्रम स्थापित किए ।
- परंपरा के अनुसार, वह एक धनी व्यापारी का पालक पुत्र था, जिसने उसे साबरमती नदी में तैरते हुए पाया था। ऐसा माना जाता है कि **सम्राट अकबर उसके अनुयायियों में से एक थे।**
- दादू का मानना था कि ईश्वर के प्रति भक्ति धार्मिक या सांप्रदायिक संबद्धता से ऊपर होनी चाहिए, और **भक्तों को गैर-सांप्रदायिक या निपख बनना चाहिए** ।

नाथपंथी, सिद्ध और योगी

- उन्होंने सरल, तार्किक तर्कों का उपयोग करते हुए **रूढ़िवादी धर्म और सामाजिक व्यवस्था के अनुष्ठान और अन्य पहलुओं की निंदा की।**
- उन्होंने संसार के **त्याग को प्रोत्साहित किया ।**
- उनके लिए **मोक्ष का मार्ग ध्यान में निहित है और इसे प्राप्त करने के लिए वे योगासन, श्वास व्यायाम और ध्यान** जैसे अभ्यासों के माध्यम से मन और शरीर के गहन प्रशिक्षण की वकालत करते थे।

वैष्णव आंदोलन

- गैर-सांप्रदायिक आंदोलन के अलावा, **उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन भगवान विष्णु के दो अवतारों, राम और कृष्ण की पूजा के इर्द-गिर्द विकसित हुआ** ।
- **राम** भक्ति आंदोलन के अग्रणी प्रकाशपुंज संत-कवि **तुलसीदास** थे । वे एक महान विद्वान थे और उन्होंने भारतीय दर्शन और साहित्य का गहन अध्ययन किया था।
- उनकी महान कविता, **रामचरितमानस, जिसे लोकप्रिय रूप से तुलसीकृत रामायण कहा जाता है** , आज भी हिंदू भक्तों के बीच बहुत लोकप्रिय है, जिसमें उन्होंने श्री राम की छवि को सर्वगुण संपन्न और सर्वशक्तिमान, विश्व के भगवान और सर्वोच्च वास्तविकता (परमब्रह्म) के अवतार के रूप में चित्रित किया है।
- दूसरी ओर, **कृष्ण** भक्ति आंदोलन के अनुयायियों ने लगभग 1585 ई. में **हरिवंश के अधीन राधा बल्लभ संप्रदाय की स्थापना की। 16वीं शताब्दी के आरंभ में, एक लोकप्रिय भक्ति संत, वल्लभाचार्य ने** कृष्ण भक्ति पंथ को लोकप्रिय बनाया। उनके **बाद सूरदास** (लगभग 1483-1563 ई.) **और मीराबाई** (लगभग 1503-1573 ई.) आए।
- **सूरदास ने ब्रजभाषा में सूरसागर की रचना की , जो भगवान कृष्ण** और उनकी प्रेमिका राधा के आकर्षण पर आधारित छंदों से भरा है । राणा सांगा की पुत्रवधू **मीराबाई कृष्ण की बहुत बड़ी भक्त** थीं और अपने भजनों के लिए राजस्थान में लोकप्रिय हुईं।
- बाद में, वैष्णवों के बीच राम भक्ति आंदोलन और कृष्ण भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक कई संप्रदायों और पंथों में विभाजित हो गए।
- दिलचस्प बात यह है कि **बंगाल का वैष्णव भक्ति आंदोलन उत्तर भारत और दक्षिण के अपने समकक्षों से बहुत अलग था।** यह भागवत पुराण की वैष्णव भक्ति परंपरा **, सहजिया बौद्ध और नाथपंथी परंपराओं** से प्रभावित था । ये परंपराएँ **भक्ति के गूढ़ और भावनात्मक पहलुओं** पर केंद्रित थीं ।
- बारहवीं शताब्दी में, **जयदेव** इस परंपरा के एक महत्वपूर्ण भक्ति संत थे। उन्होंने कृष्ण और राधा के संदर्भ में प्रेम के रहस्यमय आयाम पर प्रकाश डाला।
- **चैतन्य** इस क्षेत्र के एक अन्य लोकप्रिय भक्ति संत थे, जिन्हें कृष्ण का अवतार भी माना जाता था।

Chaitanya Mahaprabhu

- बंगाल के प्रसिद्ध संत, तपस्वी हिंदू भिक्षु और **समाज सुधारक**, जिन्होंने **16वीं शताब्दी में कृष्ण पंथ को लोकप्रिय बनाया**।
- **उन्हें गौरांग और विश्वम्भर के** नाम से भी जाना जाता था । वे **केशव भारती** के शिष्य थे ।
- उनके साथ, बंगाल में भक्ति आंदोलन एक सुधार आंदोलन के रूप में विकसित होने लगा क्योंकि इसने जाति के आधार पर सामाजिक विभाजन पर सवाल उठाया। **उन्होंने संकीर्तन/कीर्तन प्रणाली** (उत्साही नृत्य के साथ सामूहिक भक्ति गीत) को लोकप्रिय बनाया।
- उन्होंने संसार का त्याग कर दिया, तपस्वी बन गये और अपने विचारों का प्रचार करते हुए पूरे देश में घूमते रहे।
- उन्होंने **मानव के सार्वभौमिक भाईचारे की घोषणा की और धर्म और जाति पर आधारित सभी भेदभाव की निंदा की तथा प्रेम और शांति पर जोर दिया।**
- उन्होंने अन्य लोगों, विशेषकर गरीबों और कमजोरों के दुखों के प्रति गहरी सहानुभूति दिखाई और उनका मानना था कि प्रेम और भक्ति, गीत और नृत्य के माध्यम से एक भक्त भगवान की उपस्थिति को महसूस कर सकता है।
- उन्होंने सभी वर्गों और जातियों के शिष्यों को स्वीकार किया और आज भी बंगाल में उनकी शिक्षाओं का व्यापक रूप से पालन किया जाता है।
- उन्होंने जिस वैष्णव धर्म का प्रचार किया उसे '**गुडिक वैष्णव धर्म**' कहा जाने लगा ।
- **चैतन्य की जीवनी कृष्णदास कविराज द्वारा लिखी गई थी।**

Narsingh Mehta

- **गुजरात** के संत जिन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम को दर्शाते हुए गुजराती में गीत लिखे।
- Author of **Mahatma Gandhi's favorite bhajan** – "**Vaishanava jan ko**"

Saint Tyagaraja (c.1767–1847 CE)

- **वह कर्नाटक संगीत के महानतम संगीतकारों** में से एक थे, जिन्होंने हजारों भक्ति रचनाएं रचीं, जिनमें से अधिकांश तेलुगु में थीं और **भगवान राम की स्तुति में थीं।**
- वह एक सफल संगीतकार थे और उन्होंने प्रसिद्ध **पंचरत्न कृतियों** (अर्थात पांच रत्न) की रचना की थी।
- **शास्त्रीय भक्ति संगीत परंपरा** के विकास में उनका बहुत प्रभाव था ।

Shankar Dev

- वह **ब्रह्मपुत्र घाटी में वैष्णव धर्म का प्रचार करने वाले पहले व्यक्ति** थे ।
- **वह एक शरणधर्म और वीरपुरुषमार्ग** के संस्थापक थे ।
- उन्हें अतीत के सांस्कृतिक अवशेषों के आधार पर **संगीत (बोरगीत)**, **नाट्य प्रदर्शन (अंकिया नाट, भोना)** और नृत्य (**सत्त्रिया**), साहित्यिक भाषा (**ब्रजावली**) के नए रूपों को विकसित करने का श्रेय दिया जाता है।

Purandaradasa

- He was a **Haridasa philosopher from Karnataka**.
- उन्हें **कर्नाटक संगीत का जनक माना जाता है।**
- उनकी सबसे उल्लेखनीय कृतियों में से एक है **दास साहित्य**।
- उन्होंने **राग मायामालवगोला को** इस क्षेत्र में शुरुआती लोगों द्वारा सीखे जाने वाले पहले स्केल के रूप में प्रस्तुत किया - एक ऐसी प्रथा जिसका आज भी पालन किया जाता है।
- उनके अधिकांश कीर्तन सामाजिक सुधार से संबंधित हैं और समाज में दोषों को इंगित करते हैं।

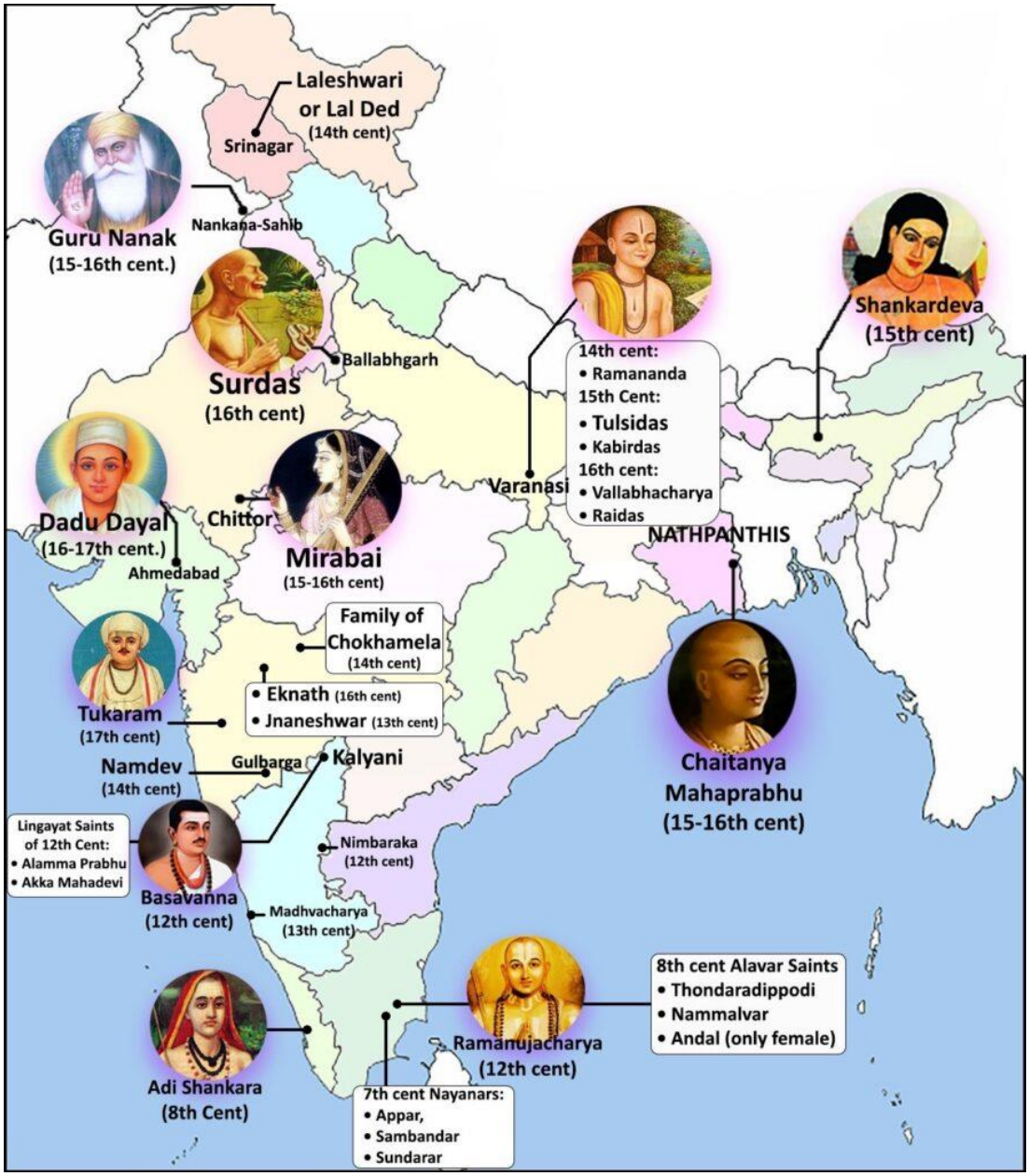

भक्ति आंदोलन का महत्व

- मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन का जबरदस्त प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए, भक्ति आंदोलन ने **हिंदी, मराठी, बंगाली, कन्नड़ आदि क्षेत्रीय भाषाओं के विकास को गति** प्रदान की । चूँकि विभिन्न प्रचारक **क्षेत्रीय भाषाओं** में बोलते और लिखते थे , इसलिए इन भाषाओं का विकास हुआ।
- चूंकि **भक्ति संतों ने जाति व्यवस्था और महिलाओं की निम्न स्थिति की निंदा की थी** , इसलिए निम्न वर्गों और महिलाओं को अधिक महत्व का दर्जा दिया गया।
- इसके अलावा, भक्ति आंदोलन ने **लोगों को जटिल कर्मकांडों से मुक्त एक सरल धर्म दिया** । साथी मनुष्यों के प्रति दान और सेवा से भरे जीवन का नया विचार विकसित हुआ।
- सूफीवाद और भक्ति परंपरा के संश्लेषण से हिंदू और मुस्लिम, दोनों समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा मिला। सूफीवाद और भक्ति परंपरा के एक-दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव के कारण, आम जनता को भी एक-दूसरे की धार्मिक परंपराओं और प्रथाओं को समझने का अवसर मिला, जिसके परिणामस्वरूप न केवल एक-दूसरे की परंपराओं के प्रति प्रशंसा बढ़ी, बल्कि एक-दूसरे के प्रति सम्मान भी विकसित हुआ। वास्तव में, एक नई भाषा के रूप में **उर्दू का उदय** इस पारस्परिकता और संश्लेषण का एक बेहतरीन उदाहरण है।

भक्ति आंदोलन में महिलाएँ

- भक्ति आंदोलन में महिला संत कवियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी, **इनमें से कई महिलाओं को पुरुष-प्रधान आंदोलन में स्वीकृति के लिए संघर्ष करना पड़ा** । ईश्वर के प्रति अपनी पूर्ण भक्ति, **अपनी उत्कृष्ट कविता और**

अपने समकालीनों के साथ आध्यात्मिक समानता के दृढ़ आग्रह के माध्यम से ही वे स्वीकृति प्राप्त करने और ईश्वर तक अधिक समतावादी पहुँच प्राप्त करने में सक्षम हुईं।

- चूंकि अधिकांश भक्ति कविताएं आम लोगों की रोजमर्रा की परिचित भाषा पर आधारित थीं, इसलिए यह जानकर आश्चर्य नहीं हुआ कि **महिला भक्तों ने उन्हीं मुद्दों पर अधिक लिखा, जैसे घर में उनके सामने आने वाली बाधाएं, पारिवारिक तनाव, पति की अनुपस्थिति, अर्थहीन घरेलू काम और विवाहित जीवन की पाबंदियां, जिसमें विवाहित महिला के रूप में उनकी स्थिति भी शामिल है** ।
- कई मामलों में, **महिला संतों ने पति और घरों को पूरी तरह से छोड़कर पारंपरिक महिलाओं की भूमिकाओं और सामाजिक मानदंडों को खारिज कर दिया, भटकने वाली भक्त बनना चुना** , जबकि अन्य उदाहरणों में, उन्होंने अपनी घरेलू भूमिकाओं को त्यागे बिना भक्ति के साथ जुड़ने की कोशिश की। दिलचस्प बात यह है कि पितृसत्तात्मक विचारधारा के अनुरूप, जिसने पवित्र और कर्तव्यपरायण पत्नी को आदर्श माना, इन महिलाओं ने अपनी भक्ति और अपने कर्तव्यों को "प्रेमिका" या "पत्नी" के रूप में अपने दिव्य प्रेमी या पति को हस्तांतरित कर दिया। वास्तव में, **6 वीं से 13 वीं शताब्दियों तक आंदोलन के शुरुआती विकास में महिलाओं की कहीं अधिक संख्या में भाग लिया** , जबकि बाद की शताब्दियों के दौरान, पुरुष भक्तों और संतों ने भक्ति दृश्य पर प्रभुत्व किया।
- **कुछ महिला भक्त हैं:**
  - **अक्कमहादेवी: 12वीं शताब्दी** ईस्वी के दौरान , **कर्नाटक के दक्षिणी क्षेत्र** से संबंधित अक्कमहादेवी, जिन्हें अक्का या महादेवी के नाम से भी जाना जाता है , ने खुद को **शिव के** एक उत्साही भक्त के रूप में स्थापित किया, जिन्हें वे **चेन्नामल्लिकार्जुन के नाम से संबोधित करती थीं।**
  - **जनाबाई:** उनका जन्म लगभग **13वीं शताब्दी में महाराष्ट्र** में एक निम्न जाति के शूद्र परिवार में हुआ था। उन्होंने भक्ति कवियों में सबसे प्रतिष्ठित संत **नामदेव** के घर में काम किया । उन्होंने घरेलू कामों और एक निम्न जाति की महिला होने के नाते उन पर लगे प्रतिबंधों पर केंद्रित 300 से ज़्यादा कविताएँ लिखीं।
  - **मीराबाई या मीरा:** वह एक उच्चवर्गीय शासक **राजपूत परिवार से थीं।** मीराबाई की कविताओं में बचपन में **भगवान कृष्ण के दर्शन का वर्णन मिलता है।**
    - उस समय से, मीरा ने प्रतिज्ञा की कि वह सदैव उनकी दुल्हन रहेंगी। हालाँकि, उनकी इच्छा के विरुद्ध, कम उम्र में ही मेवाड़ के राणा सांगा के साथ उनका विवाह कर दिया गया। इन वृत्तांतों के केंद्र में मीराबाई के उस परिवार के भीतर के संघर्ष हैं, जिसमें उनका विवाह हुआ था, जिसमें उनके ईर्ष्यालु पति द्वारा उन्हें मारने के असफल प्रयास और उनकी भाभियों द्वारा मीराबाई की भटकते संतों की संगति में बाधा डालने के प्रयास शामिल हैं।
    - अंततः, मीराबाई अपने पति और परिवार को छोड़कर अपने दिव्य पति कृष्ण से जुड़े विभिन्न स्थानों की तीर्थयात्रा पर निकल पड़ीं। यहाँ भी उन्हें शुरू में एक महिला होने के कारण अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन मीराबाई की भक्ति, धर्मपरायणता और बौद्धिक कुशाग्रता के कारण अंततः उन्हें वृंदावन के संतों के समुदाय में शामिल कर लिया गया।
    - **मीराबाई की कविता कृष्ण के साथ एक अनोखे रिश्ते को चित्रित करती है क्योंकि उन्हें न केवल कृष्ण की समर्पित दुल्हन के रूप में चित्रित किया गया है** , बल्कि कृष्ण को मीरा का अनुसरण करते हुए भी चित्रित किया गया है।
  - **बहिनाबाई या बहिना: वह 17वीं सदी की महाराष्ट्र** की एक कवि-संत थीं , जिन्होंने अबंगा, महिलाओं के लोकगीतों के रूप में रचनाएं कीं, जिनमें महिलाओं के कामकाजी जीवन, विशेष रूप से खेतों में, का चित्रण किया गया।

भारत में सूफी आंदोलन (सूफीवाद)

सूफी आंदोलन

- भारत में सूफी आंदोलन (सूफीवाद) एक नाटकीय आंदोलन रहा है जो **सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र** से अत्यधिक जुड़ा हुआ है । अपरंपरागत मुस्लिम संत इसके अग्रदूत थे।
- **'सूफी'** शब्द **'सूफ'** से बना है , जिसका अरबी में अर्थ ऊन होता है, और यह उन साधारण लबादों का संदर्भ देता है जो शुरुआती मुस्लिम संन्यासी पहनते थे। इसका अर्थ **'पवित्रता' भी है, और इस प्रकार इसे पवित्रता** के ऊपर ऊन पहनने वाले के रूप में समझा जा सकता है ।
- **सूफी पंथ या सूफीवाद इस्लाम का एक रहस्यवादी रूप है** , एक ऐसी विचारधारा जो **ईश्वर की आध्यात्मिक खोज पर केंद्रित है और भौतिकवाद से दूर रहती है** । यह इस्लामी रहस्यवाद का एक रूप है जो तप पर ज़ोर देता है।
- सूफियों को ऐसे लोग माना जाता था जो अपने **हृदय को पवित्र रखते थे और अपनी तप साधना के माध्यम से ईश्वर से संवाद करने का प्रयास करते थे। सूफी, वली, दरवेश और फकीर** शब्दों का प्रयोग उन मुस्लिम संतों के लिए एक-दूसरे के स्थान पर किया जाता है जिन्होंने तप साधना, चिंतन, त्याग और आत्म-त्याग के माध्यम से अपनी सहज क्षमताओं का विकास करने का प्रयास किया।
- **ईश्वर, मनुष्य, और ईश्वर व मनुष्य के बीच प्रेम का संबंध, सूफीवाद का मूल है।** रूह **(आत्मा), क़ुर्बत (ईश्वरीय निकटता), ह़ुलुल (ईश्वरीय आत्मा का समावेश), इश्क (ईश्वरीय प्रेम), और फ़ना (आत्म-विनाश) के विचार** सूफीवाद के सिद्धांत के केंद्र में हैं। इस प्रकार सूफीवाद **इस्लाम के आंतरिक या गूढ़, रहस्यमय पक्ष का** प्रतिनिधित्व करता है ।
- सूफी संतों ने सभी धार्मिक और सांप्रदायिक भेदभावों को पार करते हुए, **व्यापक मानवता के हित** में कार्य किया । सूफी **ईश्वर को सर्वोच्च सौंदर्य** मानते थे और मानते थे कि व्यक्ति को उसकी स्तुति करनी चाहिए, उसके विचारों में आनंदित होना चाहिए और केवल उसी पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। **उनका मानना था कि ईश्वर माशूक है और सूफी आशिक हैं।**
- सूफीवाद ने **ईश्वर प्राप्ति के प्रभावी साधन के रूप में प्रेम और भक्ति** पर बल दिया । ईश्वर प्रेम का अर्थ **मानवता प्रेम** था , और इसलिए उनका मानना था कि मानवता की सेवा ईश्वर सेवा के समान है। सूफीवाद में, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने के लिए **आत्म-अनुशासन को एक आवश्यक शर्त माना जाता था। जहाँ रूढ़िवादी मुसलमान बाह्य आचरण पर बल देते हैं, वहीं सूफी आंतरिक पवित्रता पर बल देते हैं** । सूफीवाद द्वारा बल दिए गए अन्य विचार हैं ध्यान, अच्छे कर्म, पापों का प्रायश्चित, प्रार्थना और तीर्थयात्रा, उपवास, दान, और तप साधना द्वारा **वासनाओं का दमन ।**
- **इस्लाम भारत में सातवीं शताब्दी ई. में सऊदी अरब के व्यापारियों के रूप में आया, जो भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्रों के साथ व्यापार करते थे** । इसके बाद, उत्तर में यह **धर्म मुल्तान और सिंध में पहुँचा, जब आठवीं शताब्दी ई. में मुहम्मद बिन कासिम ने इन क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया।**
- **सूफीवाद या रहस्यवाद का उदय 8वीं शताब्दी में हुआ** , और आरंभिक ज्ञात सूफियों में **रबिया अल-अदविया, अल-जुनैद और बायज़ीद बस्तमी शामिल थे। हालाँकि, यह 11वीं शताब्दी के अंत तक दिल्ली सल्तनत के शासनकाल के दौरान** एक सुविकसित आंदोलन के रूप में विकसित हो गया था ।
- **अल ह़ुजविरी,** जिन्होंने स्वयं को उत्तर भारत में स्थापित किया, लाहौर में दफनाये गये तथा उन्हें उपमहाद्वीप का सबसे बुजुर्ग सूफी माना गया।
- **दो व्यापक सूफी सम्प्रदाय** थे :
- **बशरा** - वे लोग **जो इस्लामी कानूनों का पालन करते थे** । बशरा को **'मस्त कलंदर'** भी कहा जाता था । ये घुमक्कड़ साधु होते थे जिन्हें बाबा भी कहा जाता था। ये कोई लिखित विवरण नहीं छोड़ते थे।
- **बेशारा** - जो **अधिक उदार थे।**

- 12वीं शताब्दी तक, **सूफ़ी सिलसिले** (अर्थात, आदेश, जो मूलतः **पीर, यानी गुरु और मुरीद, यानी शिष्यों के बीच एक अटूट श्रृंखला का** प्रतिनिधित्व करते थे) में संगठित हो गए थे। इनमें से चार सबसे लोकप्रिय सिलसिले थे: **चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरिया और नक्शबंदी** ।
- **सूफ़ी , सूफ़ी पीर द्वारा निर्देशित मार्ग** पर चलने के महत्व पर ज़ोर देते हैं , जिससे व्यक्ति ईश्वर से सीधा संवाद स्थापित कर सकता है। **खानकाह (धर्मशाला)** विभिन्न सूफ़ी सम्प्रदायों की गतिविधियों का केंद्र था। **खानकाह का नेतृत्व शेख, पीर या मुर्शिद (शिक्षक) करते थे, जो अपने मुरीदों (शिष्यों) के साथ रहते थे** । समय के साथ, खानकाह **शिक्षा और उपदेश के महत्वपूर्ण केंद्रों** के रूप में उभरे ।
- जब पीर की मृत्यु हो जाती थी, तो उनकी दरगाह, यानी मकबरा या दरगाह, उनके शिष्यों और अनुयायियों का केंद्र बन जाती थी। मुरीद (शिष्य) ईश्वर से एकाकार होने की इस प्रक्रिया में मक़ामत (विभिन्न चरणों) से गुज़रता है।
- कई सूफ़ियों ने अपनी ख़ानक़ाहों में **समा या संगीत सभा का** आनंद लिया । दरअसल, **कव्वाली का** विकास इसी काल में हुआ। **सूफ़ी संतों की समाधियों की ज़ियारत या तीर्थयात्रा जल्द ही एक महत्वपूर्ण अनुष्ठानिक तीर्थयात्रा के रूप में उभरी** ।
- अधिकांश सूफ़ी **चमत्कारों** में विश्वास करते थे । लगभग सभी पीर अपने चमत्कारों से जुड़े हुए थे।

चिश्ती सिलसिले

- चिश्ती सिलसिले की **स्थापना भारत में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने की थी, जो संभवतः** मुइज़ुद्दीन मुहम्मद गौरी के आक्रमण के बाद भारत चले आये थे , और लगभग 1206 ई. में अजमेर में बस गये थे।
- मुईनुद्दीन चिश्ती का तर्क था कि **ईश्वर के प्रति सर्वोच्च भक्ति संकटग्रस्त लोगों के दुखों का निवारण करना, असहायों की ज़रूरतें पूरी करना और भूखों को भोजन कराना है।** लगभग 1235 ई. में उनकी मृत्यु के बाद उनकी प्रसिद्धि और बढ़ गई, जब तत्कालीन सुल्तान मुहम्मद तुगलक उनकी कब्र पर आए , जिसके बाद 15वीं शताब्दी में मालवा के महमूद खिलजी ने मस्जिद और गुंबद का निर्माण करवाया। **मुगल सम्राट अकबर के समर्थन के बाद दरगाह का संरक्षण अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुँच गया।**
- दिल्ली में चिश्तियों **की उपस्थिति कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (जिनके नाम पर कुतुब मीनार का नाम रखा गया है) द्वारा स्थापित की गई थी** , जो लगभग 1221 ई. में ट्रांसऑक्सियाना स्थित अपने गृहनगर से दिल्ली आकर बस गए थे। दिल्ली में उनकी उपस्थिति सुहरावर्दी के लिए एक ख़तरा थी, जिन्होंने उन पर आरोप लगाने की कोशिश की ताकि उन्हें छोड़ने के लिए मजबूर किया जा सके, लेकिन दिल्ली के सुल्तान **इल्तुतमिश ने** इन प्रयासों को विफल कर दिया, जिससे अंततः सुहरावर्दी को झुकना पड़ा।
- **चिश्ती लोग निम्नलिखित बातों में विश्वास करते थे:**
- **जीवन में सादगी, विनमता और ईश्वर के प्रति निस्वार्थ भक्ति। सांसारिक संपत्ति का त्याग,** वे इंद्रियों पर नियंत्रण के लिए महत्वपूर्ण मानते थे, जो आध्यात्मिक जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक था।
- **ईश्वर और व्यक्तिगत आत्मा के बीच प्रेम का बंधन** , तथा सभी के प्रति परोपकार का रवैया अपनाना।
- **विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच सहिष्णुता** , तथा धार्मिक विश्वासों की परवाह किए बिना अनुयायियों को स्वीकार करना।
- सरल भाषा का प्रयोग तथा सुल्तानों से **अपने भरण-पोषण के लिए कोई अनुदान स्वीकार करने से इंकार करना ।**
- मुईनुद्दीन चिश्ती के अलावा, अन्य महत्वपूर्ण चिश्ती थे **बाबा फ़रीदुद्दीन गंज-ए-शकर, जिन्होंने** मुल्तान और लाहौर के बीच मार्ग पर हरियाणा के हांसी में खुद को स्थापित किया, **और निज़ामुद्दीन औलिया,** जो 14वीं शताब्दी में राजनीतिक परिवर्तन और उथल-पुथल के दौर में रहते थे।
- मुबारक खिलजी और गयासुद्दीन तुगलक जैसे विभिन्न सुल्तानों के साथ उनके संबंध संघर्षपूर्ण रहे, क्योंकि उन्होंने दिल्ली में सुल्तान के दरबार के विभिन्न समूहों और गुटों के साथ खुद को शामिल न करने की सख्त नीति अपनाई, जिससे उन्हें इन विरोधी गुटों की शत्रुता का सामना करना पड़ा। लेकिन साथ ही, उन्होंने जनता का सम्मान भी अर्जित किया।
- दूसरी ओर, **नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी (निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य)** एक अन्य चिश्ती संत थे जिन्होंने उस काल के राजनीतिक मामलों में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

- 13वीं शताब्दी में **, शेख बुरहानुद्दीन ग़रीब द्वारा दक्कन में चिश्ती संप्रदाय की स्थापना की गई थी।** 14वीं और 16वीं शताब्दी के बीच, कई चिश्ती सूफ़ी गुलबर्गा चले गए, और पिछली प्रथा के विपरीत, कुछ चिश्तियों ने शासक वर्ग से अनुदान और संरक्षण स्वीकार करना शुरू कर दिया। **दक्कन का बीजापुर शहर सूफ़ी गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा, और इस क्षेत्र के प्रसिद्ध पीरों में से एक मुहम्मद बंदा नवाज़ थे।**

सुहरावर्दी वंश

- सिलसिला की स्थापना **शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी ने बगदाद में की थी और भारत में इसकी स्थापना बहाउद्दीन ज़कारिया ने की थी।**
- चिश्तियों के विपरीत, सुहरावर्दी **सुल्तानों से भरण-पोषण अनुदान स्वीकार करते थे** । जहाँ चिश्ती दिल्ली, राजस्थान और पश्चिमी गंगा के मैदानों के कुछ हिस्सों में सक्रिय थे, और बाद के वर्षों में गंगा के मैदान के पूर्वी क्षेत्रों (बिहार और बंगाल) और दक्कन में, वहीं सुहरावर्दी पंजाब और सिंध में सक्रिय थे।
- **उनका मानना था कि**
  - एक सूफी के पास **संपत्ति, ज्ञान और हल** (रहस्यमय ज्ञान) के तीन गुण होने चाहिए, क्योंकि वे मानते थे कि गरीबों की बेहतर सेवा के लिए यह आवश्यक है। इसलिए, **वे अत्यधिक तपस्या या आत्म-पीड़ा में विश्वास नहीं करते थे, और मुस्लिम अभिजात वर्ग के साथ घुलमिल जाते थे और राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते थे** ।
  - उन्होंने **धार्मिक विश्वास के बाह्य रूपों के पालन** पर जोर दिया तथा **इल्म (विद्वता) को** रहस्यवाद के साथ संयोजित करने की वकालत की।

नक्शबंदी सिलसिला

- इस संप्रदाय की स्थापना भारत में **ख्वाजा बहाउद्दीन नक्शबंदी** ने की थी और बाद में **उनके उत्तराधिकारियों शेख बाकी बिल्लाह और शेख अहमद सरहिंदी ने इसका प्रचार किया** ।
- इस संप्रदाय के मनीषियों ने इस बात पर जोर दिया:
  - **शरीयत का पालन और सभी नवाचारों या बिद्दत की निंदा।** उन्होंने इस्लाम **को सभी उदारवादी और उनके अनुसार, 'गैर-इस्लामी' प्रथाओं से मुक्त करने का प्रयास किया।**
  - उन्होंने **समा (धार्मिक संगीत) सुनने और संतों की समाधियों की तीर्थयात्रा की प्रथा का विरोध किया, तथा हिंदुओं और शियाओं के साथ मेलजोल का कड़ा विरोध किया** ।
    - वास्तव में, यह प्रसिद्ध सूफी संत **बाबा फरीद** थे , जिन्होंने कहा था कि भक्ति संगीत ईश्वर के करीब आने का एक तरीका है।
  - उन्होंने **अकबर की उदार नीतियों की आलोचना की,** जैसे अकबर द्वारा अनेक गैर-मुस्लिमों को दिया गया उच्च दर्जा, जजिया कर वापस लेना और गौहत्या पर प्रतिबंध।
  - चिश्तियों के विपरीत, **उनका मानना था कि मनुष्य और ईश्वर के बीच का संबंध दास और स्वामी का है** , न कि प्रेमी और प्रेमिका का।

कादरी सिलसिला

- **पंजाब में प्रचलित** क़ुदरिया सिलसिला , मुग़ल शासन के दौरान **शेख अब्दुल कादिर और उनके पुत्रों, शेख़ नियामतुल्लाह, मुखदूम मुहम्मद जिलानी और मियाँ मीर की शिक्षाओं के अंतर्गत शुरू हुआ था,** जिन्होंने मुग़ल राजकुमारी जहाँआरा और उनके भाई दारा को शिष्य बनाया था। एक अन्य प्रमुख पीर **शाह बदख़्शानी थे।**
- इस आदेश के पीआईआर ने निम्नलिखित का समर्थन किया:
  - **वहदत अल वजूद की अवधारणा** का अर्थ है **" अस्तित्व की एकता" या "अस्तित्व की एकता",** अर्थात, ईश्वर और उसकी रचना एक और समान हैं।
  - उन्होंने **रूढ़िवादी तत्वों को खारिज कर दिया और** घोषणा की कि जो काफिर वास्तविकता को समझ लेता है और उसे पहचान लेता है, वह आस्तिक है और जो आस्तिक वास्तविकता को नहीं पहचानता, वह काफिर है।
- यह ध्यान देने योग्य है कि मध्यकाल में, जबकि इस्लाम में उदारवादी और रूढ़िवादी विचारों के बीच निरंतर तनाव बना रहा, **सूफ़ी दोनों पक्षों में थे** । उदाहरण के लिए, चिश्ती थे **जो उदारवादी दृष्टिकोण रखते थे और स्थानीय परंपराओं को**

आत्मसात करने के पक्ष में तर्क देते थे, जबकि **नक्शबंदी सिलसिले के समर्थक थे जो शरीयत के रूढ़िवादी दृष्टिकोण को मानते थे** और तर्क देते थे कि अन्य सिलसिले इस्लाम की पवित्रता को कमज़ोर कर रहे हैं। लेकिन **अधिकांश सूफ़ियों ने उदारवादी विचारों से सहमति जताई जो उलेमा द्वारा इस्लामी कानूनों की संकीर्ण परिभाषा के विरुद्ध थे।**

	Chishti	Suhrawardi	Qadri	Naqshbandi
Founder in India	Khwaja Moinuddin Chisti	Shaikh Bahauddin Zakanya	Niyamma d-ulla-Qadiri	Khwaja Baqi Billah
Period of Origin in	1192	Same timeline as Chishti order	16th Century	16th Century
Principle	Aloof from the Royal patronage, Popularised love, tolerance, openness and music	Accepted royal Service, didn't belief in living a life of poverty, rejected Music	Relies strongly upon adherence to the fundament als of Islam.	Orthodox Sect, philosophy of Wahadat-ul-Shahdud,
Notable saints	-Khwaja Qutbuddin Bakhtiyar Khaki -Nizamuddin Auliya -Amir Khusrow	-Shaikh Shihabuddin Suharwadi -Hamid-ud-din Nagori -Shaikh Fakhruddin Ibrahim Iraqi	- Shaikh Muhamma d al Hasaini - Shaikh Abdul Qadir -Mulla Shah	-Shaikh Ahmad Sirhindi 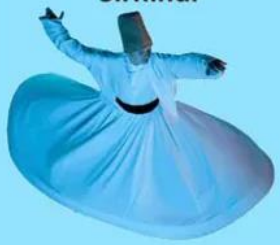

सूफी आंदोलन का प्रभाव

- सूफीवाद की इन उदार और अपरंपरागत विशेषताओं का **मध्यकालीन भक्ति संतों पर गहरा प्रभाव** पड़ा । बाद के काल में, मुगल सम्राट अकबर ने सूफी सिद्धांतों की सराहना की, जिसने उनके धार्मिक दृष्टिकोण और धार्मिक नीतियों को आकार दिया। सूफी आंदोलन के साथ-साथ, **हिंदुओं के बीच भक्ति आंदोलन भी मजबूत हो रहा था और प्रेम और निस्वार्थ भक्ति के सिद्धांतों** पर आधारित इन दो समानांतर आंदोलनों ने हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों समुदायों को एक-दूसरे के करीब लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
- **सूफीवाद ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में जड़ें जमा लीं और जनता पर गहरा सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला।** इसने सभी प्रकार की धार्मिक औपचारिकताओं, रूढ़िवादिता, झूठ और पाखंड के विरुद्ध विद्रोह किया और एक ऐसी नई विश्व व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जिसमें आध्यात्मिक आनंद ही एकमात्र और अंतिम लक्ष्य हो। ऐसे समय में जब राजनीतिक सत्ता के लिए संघर्ष एक पागलपन था, सूफी संतों ने लोगों को उनके **नैतिक दायित्वों** की याद दिलाई । कलह और संघर्ष से त्रस्त दुनिया में, **उन्होंने शांति और सद्भाव लाने का प्रयास किया।**
- सूफीवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने हिंदू-मुस्लिम पूर्वाग्रहों की धार को कुंद करने में मदद की और इन दोनों धार्मिक समुदायों के बीच **एकजुटता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया**। ये सूफी संत आज भी न केवल मुसलमानों द्वारा, बल्कि बड़ी संख्या में हिंदुओं द्वारा भी पूजनीय हैं, और उनकी समाधियाँ दोनों समुदायों के लिए लोकप्रिय तीर्थस्थल बन गई हैं।

महत्वपूर्ण सूफी शब्द

- **सूफी, पीर, मुर्शिद** - संत
- **मुरीद** – अनुयायी
- **खानकाह** - वह स्थान जहाँ सूफ़ी रहते थे, धर्मशालाएँ
- **खलीफा** – शिष्य
- **ज़िक्र** - ईश्वर के नाम का पाठ
- **तौबा** - बुरे कर्मों पर पश्चाताप
- **फ़ना** - सर्वशक्तिमान के साथ आध्यात्मिक विलय
- **उर्स** – मृत्यु
- **वही** - संगीत सभा
- **वर** - जो मुफ्त में नहीं दिया गया उसे स्वीकार न करना
- **जुलाद** – दयालुता
- **फ़क्र** - गरीबी
- **सुहर** - सहिष्णुता का पालन करना
- **सुकर** - दायित्व की स्वीकृति
- **भय** - भय का प्रतीक है।
- **तवक्खुल** - संतोष का पालन करना
- **रिज़ा** - मोक्ष प्राप्त करने के लिए समर्पण
- **ज़ियारत** - कब्रों पर जाने की प्रथा
- **बा-शरा** - जो **इस्लामी कानून का पालन करते थे।**
- **बे-शरा** - जो **शरीअत कानून से बंधे नहीं हैं**

सिख आंदोलन (सिख धर्म)

सिख आंदोलन

- सिख आंदोलन की उत्पत्ति **मध्यकालीन काल** में हुई थी जब संत उपदेशक **गुरु नानक ने** सिख धर्म की स्थापना की थी, जो एक छोटे धर्म के रूप में शुरू हुआ, लेकिन सदियों से एक प्रमुख धर्म के रूप में विकसित हुआ।
- **नानक वंश में दस मान्यता प्राप्त जीवित गुरु** थे ।
- इसका विकास उत्तरोत्तर गुरुओं के माध्यम से हुआ, जो उसी दिव्य प्रकाश के रूप में प्रकट हुए और दसवें गुरु, **गुरु गोबिंद सिंह द्वारा खालसा की स्थापना के साथ अपने चरम पर पहुंच गया।**
- सिख धर्म का जन्म ऐसे समय में हुआ जब **भारत में हिंदू धर्म और इस्लाम की दो प्रमुख धार्मिक परंपराओं के बीच संघर्ष बढ़ रहा था ।**
- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक को आम तौर पर दो परस्पर विरोधी परंपराओं के बीच **सामंजस्य स्थापित करने वाले के रूप में चित्रित किया जाता है।**
- **गुरु नानक को 1496** में **सुल्तानपुर** में ज्ञान की प्राप्ति हुई । ज्ञान प्राप्ति के बाद, उन्होंने प्रेम और भाईचारे का संदेश फैलाने के लिए व्यापक यात्राएँ कीं।
- सोलहवीं शताब्दी में गुरु नानक के उत्तराधिकारियों के शासनकाल में उनके अनुयायियों की संख्या में वृद्धि हुई। वे कई **जातियों से संबंधित थे, लेकिन व्यापारियों, कृषकों, कारीगरों और शिल्पकारों की संख्या प्रमुख थी** । उनसे अनुयायी समुदाय के सामान्य कोष में योगदान देने की भी अपेक्षा की जाती थी।

- **सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत तक, रामदासपुर (अमृतसर)** शहर **हरमंदर साहिब (स्वर्ण मंदिर)** नामक केंद्रीय गुरुद्वारे के आसपास विकसित हो चुका था। यह वस्तुतः स्वशासित था, और आधुनिक इतिहासकार सत्रहवीं शताब्दी के आरंभिक सिख समुदाय को 'राज्य के भीतर एक राज्य' के रूप में संदर्भित करते हैं।

गुरु नानक (लगभग 1469-1539 ई.)

- सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म **तलवंडी** (पाकिस्तान में लाहौर के पास) में हुआ था, जिसे अब पाकिस्तान में **ननकाना साहिब के** नाम से जाना जाता है और वे 1469 में बेदी गोत्र के थे।
- गुरु नानक ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा **संस्कृत** और **फ़ारसी** में प्राप्त की । वे भक्ति आंदोलन के महानतम संतों में से एक थे।
- गुरु नानक **(1469-1539)** पहले गुरु थे।
- **वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार कर दिया** और ईश्वर के बारे में नई धारणा का प्रचार किया कि वह सर्वोच्च, सार्वभौमिक, सर्वशक्तिमान, सत्यवादी, निराकार, निर्भय, घृणा रहित, स्वयंभू, सभी चीजों का शाश्वत निर्माता, शाश्वत और पूर्ण सत्य है।
- **उन्होंने जातिगत भेदभाव और पवित्र नदियों में स्नान जैसे रीति-रिवाजों की निंदा की** और महिलाओं सहित सभी मनुष्यों की समानता को बढ़ावा दिया। उनका तर्क था कि जाति और सम्मान का आकलन व्यक्ति के कर्मों से होना चाहिए। उन्होंने न्याय, धार्मिकता और स्वतंत्रता की अवधारणाओं पर ज़ोर दिया।
- **धर्म के बारे में उनकी अवधारणा अत्यंत व्यावहारिक और कठोर नैतिक थी।** उन्होंने लोगों को स्वार्थ, झूठ और पाखंड का त्याग करके सच्चाई, ईमानदारी और दयालुता का जीवन जीने का आह्वान किया। उन्होंने लोगों को आचरण और उपासना के सिद्धांतों का पालन करने की सलाह दी: **सच (सत्य), हलाल (वैध कमाई), खैर (दूसरों की भलाई की कामना), नियत (सही इरादा),** और प्रभु की सेवा। **"संसार की अशुद्धियों के बीच पवित्र रहो"** उनकी प्रसिद्ध उक्तियों में से एक थी।
- उनके दर्शन में तीन मूल तत्व शामिल हैं: **एक अग्रणी करिश्माई व्यक्तित्व (गुरु), विचारधारा (शब्द) और संगठन (संगत)।**
- उन्होंने **मूर्ति पूजा का खंडन किया और तीर्थयात्रा के पक्षधर नहीं थे, न ही वे अवतारवाद के सिद्धांत को स्वीकार करते थे** । उन्होंने **औपचारिकता और कर्मकांड की निंदा की।**
- उन्होंने **लंगर (सामुदायिक रसोई) की अवधारणा पेश की।**

- गुरु नानक के तीन महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं:
  - Contemplation of One God (nam- japna);
  - अपनी आजीविका कमाना (किरत करना) और
  - अपनी कमाई को दूसरों के साथ बांटना (वंड छकना)।
- उनकी मुख्य शिक्षाओं को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:
  - एक सच्चे प्रभु में विश्वास
  - नाम की पूजा
  - नाम उपासना में गुरु की आवश्यकता
- **ईश्वर की अवधारणा निर्गुण (गुण रहित) और निरंकार (निराकार) के रूप में की गई है**

बाबा गुरु नानक

गुरु अंगद (लगभग 1539-1552 ई.)

- उनका असली नाम **भाई लहना था।**
- उन्होंने पंजाबी भाषा की **गुरुमुखी लिपि को मानकीकृत और लोकप्रिय बनाया ।**
- उन्होंने सिख धर्म के आधार को मजबूत करने के लिए नए धार्मिक संस्थानों की स्थापना की और कई नए स्कूल खोले।
- उन्होंने गुरु का लंगर नामक संस्था को लोकप्रिय बनाया और उसका विस्तार किया।
- उन्होंने **शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के लिए मल्ल अखाड़े की परंपरा शुरू की** ।

गुरु अमरदास (लगभग 1552-74 ई.)

- उन्होंने **लंगर में सुधार किया और** उसे अधिक महत्व दिया।
- अपने आध्यात्मिक साम्राज्य को **22 भागों में विभाजित किया जिन्हें मंजी कहा जाता था** , प्रत्येक भाग सिख और **पीरी प्रणाली** के अंतर्गत था ।
- लंगर सामुदायिक रसोई प्रणाली को मजबूत किया गया।
- **हिंदू समाज की सती प्रथा** (अपने मृत पति की चिता पर पत्नी को जिंदा जलाने की प्रथा) के खिलाफ प्रचार किया, **विधवा-पुनर्विवाह की वकालत की, और महिलाओं से पर्दा** (महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला घूंघट) त्यागने को कहा।
- अकबर से यमुना और गंगा नदियों को पार करते समय गैर-मुस्लिमों के लिए टोल-टैक्स (तीर्थयात्री कर) हटाने के लिए कहा।

गुरु रामदास (लगभग 1574-81 ई.)

- **आनंद कारज के चार लावण (छंद) की रचना की, जो** रूढ़िवादी और पारंपरिक हिंदू वैदिक प्रणाली से अलग सिखों के लिए एक विशिष्ट विवाह संहिता है।
- **अकबर** के साथ उनके बहुत **अच्छे संबंध** थे । अकबर ने उन्हें **ज़मीन का एक टुकड़ा दिया था जहाँ बाद में हरमंदिर साहिब का** निर्माण हुआ। दिलचस्प बात यह है कि हरमंदिर साहिब की पहली ईंट **हाजी मियां मीर (एक मुसलमान) ने रखी थी। गुरु रामदास ने चक रामदास या रामदासपुर, जिसे अब अमृतसर** कहा जाता है, की भी आधारशिला रखी थी ।
- **अंधविश्वास, जाति व्यवस्था और तीर्थयात्राओं की कड़ी निंदा की।**

Guru Arjun Dev (c.1581–1606 CE)

- **आदि ग्रंथ अर्थात गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन किया** और इसे श्री हरमंदिर साहिब में स्थापित किया।
- **अमृतसर, तरन और करतारपुर का निर्माण पूरा हुआ।**
- **जहाँगीर द्वारा** अपने विद्रोही पुत्र खुसरो की सहायता करने के कारण उन्हें फाँसी दे दी गई, और इस प्रकार उन्हें **सिख धर्म का पहला शहीद और शहीदान-दे-सरताज** (शहीदों का मुकुट) कहा गया।

Guru Har Govind (c.1606–1644 CE)

- **गुरु के रूप में सबसे लंबा कार्यकाल** । उन्होंने **सिखों को एक उग्रवादी समुदाय में बदल दिया** , **अकाल तख्त की** स्थापना की और अमृतसर को मजबूत किया।
- **शासक जहांगीर और शाहजहां के खिलाफ युद्ध छेड़ा** और संग्राम में मुगल सेना को हराया।
- Took the title of **Sachcha Padshah**.
- अपना मुख्यालय करतारपुर स्थानांतरित कर दिया।
- **मिरी और पिरी** (दो चाकू रखना) की अवधारणा के स्वामी थे ।

गुरु हर राय (लगभग 1644-1661 ई.)

- दारा शिकोह (औरंगजेब के भाई और सिंहासन के लिए उनके प्रतिद्वंद्वी) **को शरण दी , और इस प्रकार औरंगजेब द्वारा सताया** गया , जिसने गुरु और गुरु ग्रंथ साहिब के खिलाफ इस्लाम विरोधी ईशनिंदा के आरोप लगाए।

Guru Har Kishan (c.1661–1664 CE)

- उन्हें जबरन आरोप लगाकर औरंगजेब की राजधानी **दिल्ली बुलाया गया ।**
- परंपरा के अनुसार, **आठ वर्ष की अल्पायु में ही** चेचक के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी, जो उन्हें एक महामारी के दौरान बीमार लोगों का इलाज करते समय हो गई थी।

गुरु तेग बहादुर (लगभग 1665-1675 ई.)

- **औरंगज़ेब के विरुद्ध विद्रोह किया** , लेकिन औरंगज़ेब **ने उन्हें फाँसी दे दी और 1675 ई. में दिल्ली के चाँदनी चौक में जनता के सामने उनका सिर कलम कर दिया गया।** आज उनकी शहादत स्थल पर शीशगंज साहिब गुरुद्वारा स्थित है।
- उन्होंने **बंदा बहादुर को** सिखों का सैन्य नेता नियुक्त किया।
- **बिहार और असम में सिख धर्म के प्रसार का** श्रेय उन्हें दिया जाता है ।

Guru Gobind Singh (c.1675–1708 CE)

- **मानव रूप में अंतिम सिख गुरु** , जिन्होंने सिखों की गुरुपद गुरु ग्रंथ साहिब को सौंपी। उनकी **मृत्यु एक अफ़गान द्वारा किए गए चाकू के घावों से हुई जटिलताओं के कारण हुई** , जिसके बारे में माना जाता है कि उसे मुग़ल गवर्नर **वज़ीर खान ने भेजा था।**

- उनका जन्म पटना में हुआ था और उन्होंने सिखों को योद्धा समुदाय के रूप में संगठित किया और लगभग 1699 ई. में उन्हें **खालसा कहा।**
- खालसा वे **पुरुष** और महिलाएं हैं जिन्हें सिख धर्म में बपतिस्मा दिया गया है और जो सिख आचार संहिता और परंपराओं का पालन करते हैं, साथ ही **पांच क पहनते हैं - केश (बिना कटे बाल)**, **कंघा (लकड़ी की कंघी)**, **कड़ा (लोहे का कंगन)**, **कचेरा (सूती अंडरवियर), और किरपान (लोहे का चाकू)।**
- सिखों में एकता की भावना पैदा करने के लिए गुरु जी ने **कुछ प्रथाएँ** शुरू कीं जिनका सिखों को पालन करना था। ये प्रथाएँ इस प्रकार थीं:
- दोधारी तलवार द्वारा बपतिस्मा के माध्यम से दीक्षा,
- बिना कटे बाल पहनना,
- हथियार लेकर चलना, और
- नाम के एक भाग के रूप में सिंह उपनाम को अपनाया गया।
- **उन्होंने पांच व्यक्तियों को चुना जिन्हें पंज** प्यारे कहा जाता था , और उनसे अनुरोध किया कि वे उन्हें **पाहुल (अमृत चक्र)** पिलाएं ।
- **देसवान पद्शान का ग्रंथ** का पूरक ग्रंथ संकलित किया ।

11th Sikh Guru

- गुरु नानक के बाद नौ गुरु हुए और उनका **कोई जीवित मानव उत्तराधिकारी नहीं** है , लेकिन सिखों की पवित्र पुस्तक **, गुरु ग्रंथ साहिब को** 11वां सिख गुरु और शाश्वत माना जाता है।
- सिख गुरुओं के भजनों के अलावा, गुरु ग्रंथ साहिब में मुस्लिम और हिंदू संतों की रचनाएं भी शामिल हैं, जिनमें से कुछ हिंदू समाज की तथाकथित निचली जाति से संबंधित हैं।
- इसलिए, **सिख पवित्र ग्रंथ को सिख धर्म की सार्वभौमिक भावना का एक अनूठा उदाहरण माना जा सकता है।**

सिख धर्म की शिक्षाएँ

- सिख धर्म की शिक्षाएँ इस प्रकार हैं:
- **ईश्वर - सिख धर्म एक ईश्वर की एकेश्वरवादी अवधारणा** में विश्वास करता है , जो पारलौकिक और अन्तर्निहित है; अवैयक्तिक और व्यक्तिगत; निर्गुण और सर्गुण है।
- **आत्मा - ईश्वर और आत्मा के बीच** एक समान संबंध है , जिसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है कि **'प्रभु आत्मा में और आत्मा प्रभु में निवास करती है।'** मनुष्य के जीवन का उद्देश्य स्वयं के वास्तविक स्वरूप की पुनः खोज करना है जो ईश्वर से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है, किन्तु सांसारिक आकांक्षाओं में लिप्तता उसके अहंकार को पुष्ट करती है तथा पृथकता की इस मिथ्या धारणा को बल प्रदान करती है।
- **ईश्वरीय इच्छा -** सिख धर्म में, ईश्वरीय इच्छा (हुकम) की अवधारणा का एक विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। ईश्वरीय इच्छा सर्वव्यापी और सर्वव्यापी है और मानव मन की समझ से परे विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। न केवल सृष्टि, बल्कि ब्रह्मांड का पालन भी ईश्वरीय इच्छा के अनुसार होता है।
- **ईश्वरीय कृपा -** इसे अक्सर शास्त्रों में कृपा, करम, प्रसाद, मेहर, दया या बख्शीस कहा जाता है। चतुराई से ईश्वर को नहीं समझा जा सकता, लेकिन कृपा से उन्हें प्राप्त किया जा सकता है।
- **मोक्ष - आत्मा की अमरता की कल्पना लौकिक जगत में मूल्यों की शाश्वतता की प्राप्ति के अर्थ में भी की जाती है। कर्म और पुनर्जन्म का मनुष्य के नैतिक जीवन से गहरा संबंध है।**

सिख संस्थान

- सिख धर्म के अनुयायी पवित्र स्थानों पर सिखों के पवित्र ग्रंथ और शाश्वत गुरु, गुरु ग्रंथ साहिब का आशीर्वाद लेने आते हैं।
- सबसे पवित्र सिख तीर्थस्थलों और धरोहरों की सूची और संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है:

Takhts

- **सिखों के पूजा स्थलों को** तख्त के नाम से जाना जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है **'दिव्य शक्ति का स्थान'।**

- वहाँ केवल **पाँच तख्त हैं।**
- ऐसा कहा जाता है कि 'तख्त' वे स्थान हैं जहां गुरुओं द्वारा विभिन्न **सामाजिक और राजनीतिक समझौते किए गए थे।**

पाँच तख्त	विवरण
अकाल तख्त साहिब	इसकी **स्थापना गुरु हरगोबिंद सिंह ने की थी।**
Takht Sri Keshgarh Sahib	यह वह स्थान है जहां **खालसा पंथ की** उत्पत्ति हुई।
तख्त श्री दमदमा साहिब	यह वह स्थान है जहां गुरु गोविंद सिंह ने **गुरु ग्रंथ साहिब** का पूर्ण संस्करण लिखा था।
Takht Sri Hazur Sahib	यह वह स्थान है जहाँ **गुरु गोबिंद सिंह ने अंतिम सांस ली थी**। यह महाराष्ट्र के 'पवित्र शहर' नांदेड़ में **गोदावरी नदी के तट** पर स्थित है ।
Takht Sri Patna Sahib	यह **गंगा नदी के तट पर स्थित है।**

Gurdwaras

- गुरुद्वारा का अर्थ है **'गुरु का द्वार'।**
- भारत में कई गुरुद्वारे हैं लेकिन केवल पांच तख्त हैं।
- लाखों लोग, खासकर सिख, गुरुओं की स्मृति में गुरुद्वारों में जाते हैं। इसलिए, तीर्थयात्रा की दृष्टि से गुरुद्वारों का बहुत महत्व है।
- भारत में दो लोकप्रिय गुरुद्वारे हैं:
  - **अमृतसर, पंजाब में स्वर्ण मंदिर**
    - गुरुद्वारे के मुकुट पर लगे सोने के गुंबद के कारण इसे स्वर्ण मंदिर कहा जाता है।
    - यह सिखों के लिए सबसे पवित्र स्थान है।
    - इस शहर की स्थापना चौथे सिख गुरु, गुरु रामदास ने 1577 में अकबर द्वारा उपहार स्वरूप दी गई भूमि पर की थी।
    - पाँचवें गुरु अर्जुन देव ने मंदिर का निर्माण पूरा कराया।
    - जब महाराजा रणजीत सिंह ने मंदिर के ऊपरी आधे हिस्से को पहले तांबे से और फिर शुद्ध सोने की परत से ढकवाया, तो इसे स्वर्ण मंदिर के रूप में जाना जाने लगा।
  - **दिल्ली में बंगला साहिब**
    - यह भारत की सबसे प्रभावशाली और आकर्षक इमारतों में से एक है और सिख धर्म के इतिहास से गहराई से जुड़ी हुई है।
- **भारत में अन्य सिख तीर्थस्थल निम्नलिखित हैं:**
  - Gurudwara Paonta Sahib, Himachal Pradesh
  - Gurudwara Rakab Ganj Sahib, New Delhi
  - Gurudwara Sis Ganj Sahib, Delhi
  - Hemkund Sahib, Uttarakhand

Saarthi

THE COACH

1 : 1 MENTORSHIP BEYOND THE CLASSES

- **Diagnosis** of candidates based on background, level of preparation and task completed.
- **Customized solution** based on Diagnosis.
- One to One **Mentorship.**
- Personalized schedule **planning.**
- Regular **Progress tracking.**
- **One to One classes** for Needed subjects along with online access of all the subjects.
- Topic wise **Notes Making sessions**.
- One Pager **(1 Topic 1 page)** Notes session.
- **PYQ** (Previous year questions) Drafting session.
- **Thematic charts** Making session.
- **Answer-writing** Guidance Program.
- **MOCK Test** with comprehensive & swift assessment & feedback.

Ashutosh Srivastava
(B.E., MBA, Gold Medalist)
Mentored 250+ Successful Aspirants over a period of 12+ years for Civil Services & Judicial Services Exams at both the Centre and state levels.

Manish Shukla
Mentored 100+ Successful Aspirants over a period of 9+ years for Civil Services Exams at both the Centre and state levels.

WALL OF FAME

UTKARSHA NISHAD
UPSC RANK - 18

SURABHI DWIVEDI
UPSC RANK - 55

SATEESH PATEL
UPSC RANK - 163

SATWIK SRIVASTAVA
SDM RANK-3

DEEPAK SINGH
SDM RANK-20

ALOK MISHRA
DEPUTY JAILOR RANK-11

SHIPRA SAXENA
GIC PRINCIPAL (PCS-2021)

SALTANAT PARWEEN
SDM (PCS-2022)

KM. NEHA
SUB REGISTRAR (PCS-2021)

SUNIL KUMAR
MAGISTRATE (PCS-2021)

ROSHANI SINGH
DIET (PCS-2020)

AVISHANK S. CHAUHAN
ASST. COMMISSIONER
SUGARCANE (PCS-2018)

SANDEEP K. SATYARTHI
CTO (PCS-2018)

MANISH KUMAR
DIET (PCS-2018)

AFTAB ALAM
PCS OFFICER

ASHUTOSH TIWARI
SDM (PCS-2022)

CHANDAN SHARMA
Magistrate
Roll no. 301349

YOU CAN BE THE NEXT....

8009803231 / 8354021661

D 22&23, PURNIYA CHAURAHA, NEAR MAHALAXMI SWEET HOUSE, SECTOR H, SECTOR E, ALIGANJ, LUCKNOW, UTTAR PRADESH 226024

MRP:- ₹380